शक्ति साधनायें

आशिर्वाद

परमपूज्य गुरुदेव

डा. नारायणदत्त श्रीमाली

संकलन व पी.डी.एफ. निर्माण

अजय कुमार उत्तम

प्रथम भाग

Scanned by CamScanner

किसी के भी भूतकाल की एक एक घटना देखना सम्भव है

फाक्स बहिनें, जो किसी के भी अतीत को--भूतकाल को पढ़ लेती है एक विशेष तन्त्र के माध्यम से --

भूतकाल को पढ़ लेना कोई आश्चर्यजनक घटना नहीं रही है, विज्ञान के अनुसार हमारे जीवन में जो भी क्षण घटित होते है, वे सब समय-पटल पर पूर्ण रूप से अंकित हो जाते है। चाहे हम कितना ही छुपा कर काम करें परन्तु समय की नजरों से वह कार्य छुपा नहीं रह सकता। आवश्यकता इस बात की है, कि कोई ऐसी विधियां कोई ऐसी तरकीब खोजी जाय जिसके माध्यम से समय पटल को पहिचान सकें और उस पर अंकित घटनाओं को पढ़ सकें।

विदेशों में इस पर बहुत ज्यादा कार्य होने लगा है और पश्चिम के वैज्ञानिक आश्चर्यचकित रह गये है, कि एक विशेष प्रयोग के माध्यम से किसी के भी भूतकाल को आसानी से जाना जा सकता है, पहिचाना जा सकता है, और समझा जा सकता है।

आज व्यक्ति दोहरे चरित्र का हो गया है, वह गोपनीय ढंग से कुछ अलग प्रकार के कार्य करता है और समाज में सार्वजनिक रूप से उसका व्यवहार और चरित्र कुछ अलग प्रकार का होता है। आम व्यक्ति उसके दोहरे चरित्र को भांप नहीं सकता, कौन व्यक्ति रात के अंधेरे में क्या करता है, इसके बारे में कोई पूरी जानकारी नहीं मिल सकती, और इस प्रकार से व्यक्ति का चरित्र और उसके कार्य दबे-छुपे रह जाते है।

मैंने देखा है, कि जो नेता नारी स्वतंत्रता के हिमायती होते हैं, वे ही घर में अपनी पत्नी पर अत्याचार करते रहते है, बाहर से उजले वस्त्र पहिनने वाले व्यक्ति अन्दर से चरित्र हीन देखे गये है। बाहर गरीबों के मसीहा बनने का ढ़ोंग करने वाले स्वयं में पूर्ण रूप से अय्यासी होते है, इनके इस प्रकार के चरित्र को जानने का तरीका केवल इस साधना के द्वारा ही संभव है।

आप कल्पना करे, कि इस साधना को (विदेशों में साधना को "प्रयोग" शब्द से संबोधित किया जाता है) सम्पन्न करने पर नित्य नवीन तथ्य आपके सामने उजागर हो सकते हैं, जिस पत्नी को आप पवित्र कहते हुए नहीं थकते उसने शादी से पूर्व या शादी के बाद क्या क्या गुल खिलाये है, यह आप इस साधना से समझ है, आपकी पुत्री बिलम्ब से आने पर जो बहाने बनाती है वे बहाने कितने सही है, यह आप केवल इस साधना को सिद्ध कर के ही जान सकते है, आपका मित्र किस प्रकार के व्यक्तित्व का है, आप उसके साथ पार्टनर शिप में व्या-

Scanned by CamScanner

पार कर रहे है, उसके मन में क्या बातें है, आपके पति किस चरित्र के है, आपका बेटा कहना क्यों नहीं मान रहा है, आदि ऐसी सैकड़ों उलझने और रहस्य है, जिन्हें हम और किसी भी तरीके से नहीं जान सकते, इन सबको जानने का केवल एक ही तरीका है, जो कि भूतकाल में झांक कर एक क्षण में ही कच्चा चिट्ठा खोल कर रख देती है।

आप स्वयं कल्पना करें, कि आप किसी अधिकारी से मिलने पर या किसी नेता के जीवन की गोपनीय घटनाएं लिख कर उनके सामने रख देने पर वह आपसे और आपके व्यक्तित्व से आपके ज्ञान और आपकी साधना से कितना अधिक प्रभावित हो जायेगा, यह आप अनुमान लगा सकते है, यही नहीं अपितु इसके बाद तो आपका किसी भी प्रकार का कोई भी कार्य सम्पन्न करने के लिए वह स्वयं ही तैयार रहेगा।

वास्तव में ही यह साधना अपने आप में अत्यन्त महत्वपूर्ण और दिव्य है।

फाक्स बहिनें

इन दिनों पश्चिम में फाक्स बहिनों की धूम है, लोग उन्हें ऊंची रकम देकर अपने पास बुलाते है, और अपने विरोधियों के भूतकाल की घटनाओं को उनके द्वारा जान लेते है। अपने पति या पत्नी के चरित्र के बारे में फाक्स बहिनों के माध्यम से घटनाओं का आकलन कर लेते है।

फाक्स बहिने मूलतः लन्दन की रहने वाली है, परंतु स्वतन्त्रता से पूर्व उनके पिता भारत में अच्छे पद पर थे, और इन दोनों का जन्म भारत में ही हुआ था। बाद में यह परिवार लन्दन में जाकर बस गया।

फाक्स बहिनों को गूढ़ विद्याओं के बारे में बहुत अधिक रुचि थी, और इसी भावना की वजह से वे १९७४ में भारत आई और लगभग चार वर्षों तक जोशी मठ के एक आश्रम में रही, वहीं पर उनकी भेंट एक उच्चकोटि के योगी से हुई और ये बहिनें उस योगी से प्रभावित हो कर उनसे दीक्षा प्राप्त कर ली और उसके साथ ही रहने लगी।

वह योगी कई श्रेष्ठ विधाओं और साधनाओं का जानकार था, उसने इन्हें श्रेष्ठ और उच्च कोटि की साधना:—भूतकाल साधना:—सम्पन्न करवा दी। और फाक्स बहिने कहती है, कि ज्यों ही साधना सम्पन्न की, उनके ललाट पर एक तीव्र प्रकाश सा अनुभव होने लगा कि जैसे दिमाग की खिड़कियां खुल गई हो और हजारों दृश्य स्मृति पटल पर उभरने लगे ये, फाक्स बहिने किसी भी व्यक्ति या स्त्री को देखती और मंत्र का एक या दो बार उच्चारण करती तो उसके भूतकाल की सारी घटनाएं कुछ ही सैकण्डों में वे उसी प्रकार से देख लेती, जिस प्रकार से हम टेलीविजन पर कोई दृश्य, घटना या कहानी देखते है।

इसके बाद फाक्स बहिने पुनः लन्दन चली गयी और आज वहां उनकी लोकप्रियता किसी भी अभिनेत्री या राजनीतिज्ञ से कम नहीं है। अमेरिका और लन्दन के उच्च कोटि के अखबारों ने उनकी जीवनी चित्रों के साथ छापी है, वैज्ञानिकों ने इन दोनों बहिनों पर कठोर परीक्षण कर स्वीकार किया है कि इनमें किसी प्रकार का कोई छल नहीं है, वास्तव में ही इन बहिनों के पास कोई अलौकिक शक्ति है जिसके माध्यम से ये बहिने किसी भी व्यक्ति को देखते ही या किसी का फोटो देखकर तुरन्त उसके भूतकाल का पूरा पूरा ब्यौरा दे देती है।

एक बार फाक्स बहिनें कहीं जा रही थी, और वे दोनों रेलगाड़ी में बैठी परस्पर बातों में मग्न थी, कि उनकी सामने की सीट पर बैठे हुए व्यक्ति पर नजर पड़ी, पहली ही दृष्टि में उन्हें ऐसा लगा कि यह हत्यारा है, और हत्या करने के बाद भाग रहा है।

अगले स्टेशन पर उन्होंने स्टेशन पर तैनात पुलिस

Scanned by CamScanner

को इस बात की सूचना दी और वह हत्यारा पकड़ लिया गया, वास्तव में ही वह एक महीने पहले अपनी पत्नी की हत्या कर भाग गया था, और कहीं अता पता नहीं चल रहा था।

इसी प्रकार एक बार अमेरिका के कुबेर पति सेठ के लड़के का अपहरण हो गया था, पुलिस चारों तरफ उसे ढूंढ़ रही थी पर उसका कुछ भी पता नहीं चल रहा था।

उस सेठ ने फाक्स बहिनों को विशेष विमान से न्यू-यार्क बुलाया उन्होंने उस बालक के चित्र को देखा और उनकी आंखों के सामने पूरा का पूरा भूतकाल उजागर हो गया, उन्होंने बता दिया कि वर्तमान में बालक को कहां छिपा कर रखा गया।

पुलिस ने उस स्थान पर छापा मारा और बालक को प्राप्त कर लिया गया है।

इसी प्रकार एक बार फ्रांस में उच्च कोटि के वैज्ञानिकों ने फाक्स बहिनों का परीक्षण किया, और उसे एक फोटो दे दिया गया, सामने लगभग दस बारह वैज्ञानिक जांच कर्ता बैठे हुए थे, फाक्स बहिनों ने उस फोटों को दो तीन मिनट ध्यान से देखा और फिर बताया कि यह व्यक्ति शराबी है, पेरिस के एम्पायर मौहल्ले में रहने वाला हैं, इसका नाम स्टीवर्ड है और इस समय यह व्यक्ति जेल में बीमार है, इसे टाइफाइड हो गया है।

वास्तव में ही ये सारे तथ्य सही थे और फाक्स बहिनों ने जो कुछ बताया था, वह अपने आप में पूर्णतः प्रामाणिक था, सभी वैज्ञानिकों ने एक स्वर से स्वीकार किया कि फाक्स बहिनों में किसी के भी भूतकाल को परखने की विशेष योग्यता है।

कैसे प्राप्त होती है, यह योग्यता

विदेश में भी नहीं भारत में भी ऐसे कई लोग है, जो किसी को भी देखकर उसके भूतकाल का सही आकलन कर लेते है, और एक एक घटना को स्पष्ट रूप से बता देते है। इसके लिए "कर्ण पिशाचनी साधना" और अन्य कई ऐसी साधनाएं है जिनके माध्यम से भूतकाल को देखा जा सकता हैं।

परन्तु इन सबसे श्रेष्ठ और उत्तम कोटि की साधना है- "देवयानी साधना" वास्तव में ही यह अपने आप में आश्चर्यजनक और द्वितीय साधना है। इन्द्र की पत्नी देवयानी ने स्वयं इसे सिद्ध किया था और इसीलिए इस साधना को बाद में देवयानी साधना के नाम से ही जाना जाता है।

देवयानी साधना

फाक्स बहिनों से सम्पर्क स्थापित करने पर पता चला कि उन्होंने भारत में रह कर उस योगी से देवयानी साधना ही सम्पन्न की थी, जिसकी वजह से उन्हें इन भूतकालीन घटनाओं का सहज ही पता चल जाता है। यह अपने आप में इतनी प्रामाणिक और दिव्य साधना है कि इस साधना के माध्यम से व्यक्ति को श्रेष्ठ योग्यता और अद्वितीय सिद्धि प्राप्त होती ही है।

२०-५-८९ को देवयानी जयन्ती है, यदि साधक इस दिन साधना को सम्पन्न करते है, तो उन्हें पूर्ण सफलता प्राप्त होने की संभावना बनती है।

साधना रहस्य

यह मात्र तीन दिन की साधना है, शास्त्रों में कहा गया है, कि इस साधना को कभी भी सम्पन्न किया जा सकता है, इसके लिए कोई तिथि या मुहूर्त की आवश्यकता नहीं है।

साधक यदि साधना करना चाहे, और यदि उसके लिए सुविधा हो तो उसे देवयानी जयन्ती के अवसर पर २०-२१-२२ मई को यह साधना सम्पन्न कर लेनी

चाहिए ।

साधक को चाहिए कि वह स्नान कर सफेद वस्त्र धारण कर आसन पर बैठ जाय और अपने सामने किसी पात्र में "देवयानी यन्त्र" को स्थापित कर दें । यह यन्त्र अपने आप में महत्वपूर्ण होता है। इस यन्त्र के ऊपर तांत्रिक नारियल स्थापित करें और फिर इन दोनों की संक्षिप्त पूजा करें, पूजन करने के बाद सामने पांच हकीक पत्थर रख दें जो कि पूर्ण सिद्धि में सहायक है ।

इसके बाद साधक एकाग्रचित्त हो कर स्फटिक माला से मंत्र जप प्रारम्भ करे, मंत्र जप से पूर्व और कोई अन्य जटिल विधि विधान नहीं है । यह साधना दिन को या रात्रि को कभी भी सम्पन्न की जा सकती है ।

इस साधना में नित्य तीस माला मंत्र जप होना आवश्यक है। मंत्र जप में साधक उठे नहीं, तीस माला मंत्र जप होने के बाद ही अपने आसन से उठे।

देवयानी मंत्र

ॐ देवयानी ह्रौं भूतकाले प्रत्यक्षं दर्शय फट्

यह मंत्र अत्यन्त गोपनीय और तेजस्वी है, अतः आलोचक और मूर्ख व्यक्ति को यह मंत्र साधना नहीं दी जानी चाहिए

इसी प्रकार दूसरे और तीसरे दिन भी दीपक जला कर मंत्र जप करे, तीसरे दिन मंत्र जप पूरा होने पर उस नारियल को कूट पीस कर वहीं पर पाउडर बना कर अपने पूरे शरीर पर लगा ले और यंत्र को किसी धागे में पिरो कर गले में धारण कर ले । इसके बाद स्वच्छ जल से स्नान कर ले, और कपडे बदल कर पांचों हकीक पत्थरों को पांचों दिशाओं अर्थात् पूर्व, पश्चिम, उत्तर, और दक्षिण दिशा की ओर फेंक दे, पांचवा हकीक पत्थर आकाश की ओर फेंक दे, इस प्रकार यह साधना सम्पन्न होती है।

मंत्र जप पूरा करने के बाद ज्यों ही यंत्र धारण किया जाता है, त्यों ही उसके शरीर में एक नवीन प्रकार की चेतना और प्रकाश सा अनुभव होता है, ऐसा लगता है कि जैसे उसके दिमाग में हजारों बातें और सैकड़ों घटनाएं परस्पर टकरा रही हो, इसके बाद परीक्षण के तौर पर साधक किसी पुरूष या स्त्री के चित्र को या उसको स्वयं को देखे और इसी मंत्र का एक या दो बार उच्चारण करे, तो उस पुरूष या स्त्री का भूतकाल पूरा का पूरा फिल्म की तरह आंखों के सामने चलने लगता है और उसके जीवन की छोटो से छोटी घटना भी स्पष्ट हो जाती है ।

मेरे पिताजी ने जो कि वास्तव में ही उच्च कोटि के साधक और सन्यासी थे, उन्होंने मृत्यु से कुछ दिनों पूर्व ही इस साधना को मुझे सम्पन्न करवाया था और इसके माध्यम से मैंने देश विदेश में जो प्रसिद्धि और सम्मान प्राप्त किया है, उसके मूल में यह देवयानी साधना ही है, जिसे कि मैंने पत्रिका पाठकों के लिए स्पष्ट किया है।

इस साधना को पुरुष या स्त्री कोई भी सम्पन्न कर है । मेरी राय में प्रत्येक पत्रिका पाठक और साधक को यह साधना अवश्य ही सम्पन्न करनी चाहिए क्योंकि इस साधना की विशेषता यह है कि इस साधना में पहली बार में ही सफलता मिल जाती है ।

★ ● ★

अब महाभारत का युद्ध आप भी देख सकते हैं

तंत्र के माध्यम से जिस प्रकार से विश्व के वैज्ञानिक तेजी के साथ आगे बढ़ रहे हैं, और वे जो नये नये आयाम

पूर्व जीवन

अब इसमें तो कोई संदेह नहीं रह गया, कि हमारे जीवन के संबंध पूर्व जन्मों से ही जुड़े होते है, यह अलग बात है, कि मृत्यु को प्राप्त हो कर हम दूसरा शरीर धारण कर लें, परन्तु इससे आत्मा नहीं बदल जाती, आत्मा के संबंध तो ज्यों के त्यों ही रहते है।

देह के संबंध तो स्थूल और महत्वहीन होते है, मूल संबंध तो आत्मा के ही होते है।

इसीलिए इस जन्म में भी हम किसी और को मन ही मन बहुत ज्यादा चाहने लगते है, केवल दो या तीन दिन के परिचय से ही ऐसा लगने लगता है, कि जैसे हम कई कई वर्षो से परिचित हो, उससे बातचीत करने में आनन्द की अनुभूति होती है इच्छा होती है कि उसके पास ज्यादा से ज्यादा समय बिताये, वह मुंह से आज्ञा दे, और हम अपने जीवन को उत्सर्ग कर दें।

पूर्व जन्म के पति पत्नी संबंध, भाई बहिन या प्रेमी प्रेमिका अथवा पिता पुत्र आदि के संबंध ज्यादा महत्वपूर्ण अनुभव होने लगते है। हम अपने पड़ोसी के साथ पिछले १५ वर्षों से रहते है, पर उनसे घनिष्ठता नहीं बन पाती। इसको बजाय सैकड़ों मील दूर बैठे हुए, व्यक्ति को, पुरूष या स्त्री को एक या दो दिन के लिए देखते है, या मिलते है, तो ऐसा लगने लगता है कि जैसे कई कई वर्षो से परिचत हो, और हम उसे भुला नहीं पाते, यह स्थिति पूर्व जन्म के संबंधों संस्कारों की वजह से ही बनती है।

और यह भी निश्चित है, कि पूर्व जन्म में जिससे जो संबंध होता है, वैसा संबंध स्थापित होने पर ही एक तृप्ति सी एक पूर्णता सी अनुभव होने लगती है।

खोज रहे है, वह वास्तव में ही एक क्रांतिकारी घटना है। जो बात भारतीय पिछले कई हजार वर्षो से कहते आ रहे है, वे बातें अब विज्ञान में ढ़ल कर विश्व के सामने आ रही है।

मैं आज की बात तो नहीं कह रहा हूं, परंतु पांच वर्षो बाद जब हमारा तंत्र और हमारी साधनाएं पश्चिम के द्वारा भारत में आयेगी और जब गोरी चमड़ी के लोग उन साधनाओं के माध्यम से सिद्धियां स्पष्ट कर के दिखायेगे, तब हम चौंकेंगे, तब हम इधर उधर दौड़ लगायेंगे, और तब हम इसे सीखने का प्रयत्न करेंगे परन्तु तब तक बहुत देर हो चुकी होगी और वे लोग हम से बहुत आगे निकल चुके होंगे।

आज भी भारतवर्ष में ऐसे कैमरे मिलने लगे है, जिन्हें "अनसीड कैमरे" कहा जाता है। जर्मनी की एक फर्म ने इन कैमरों को तैयार किया है, और इन कैमरों से इनफ्रा किरणें निकलती है, जो सूक्ष्मतम स्थितियों का भी फोटो उतार लेती है। इन कैमरों के माध्यम से यदि कमरे में अदृश्य व्यक्ति बैठे हुए है, तो उनके भी चित्र उतर जाते है।

भारतीय वैज्ञानिकों ने इन कैमरों और इनके शक्तिशाली लेन्सों के द्वारा जो चित्र खींचे है, वे उनके लिए आश्चर्यजनक है, उन्होंने यह अनुभव किया है कि जब हम कमरे में बैठे अपने मृत पिता या, किसी संबंधी रिश्तेदार की चर्चा कर रहे होते हैं, तब उस समय वे मृत आत्माएं भी

अदृश्य सिद्धि दिवस

पिछले कई हजार वर्षों से वैशाख शुक्ल पक्ष नवमी को अदृश्य सिद्धि दिवस मनाया जाता रहा है। इस दिन गुरु अपने शिष्यों को सामने बिठाकर उसे यह अदृश्य सिद्धि साधना सम्पन्न करवाते थे, जिसकी वजह से उन शिष्यों को अपने पूर्व जीवन का भान हो सके, और पूर्व जीवन से इस जीवन में संबंध स्थापित कर सके।

अंग्रेजी पद्धति के अनुसार इस वर्ष १४ मई ८६ रविवार को यह अदृश्य सिद्धि साधना दिवस सम्पन्न हो रहा है, प्रत्येक भारतीय और प्रत्येक साधक को चाहिए कि वह इस दिन का अवश्य ही उपयोग करे, और इस दिन यह अदृश्य सिद्धि साधना सम्पन्न कर।

यह साधना मात्र एक रात्रि की है, यदि हम इस अवसर को चूक जाते है, तो वापिस एक साल बाद ही ऐसा महत्वपूर्ण दिवस प्राप्त हो पाता हैं। अतः अभी से योजना बना कर इस साधना को सम्पन्न करने का निश्चय कर लेना चाहिए।

कमरे में विद्यमान रहती है, और हमारी बातें ध्यान से सुनती है। उस समय और उन क्षणों के चित्र भारतीय वैज्ञानिकों ने लिये है, और इन कैमरों के माध्यम से जो चित्र धुल कर सामने आये है, उनको देखने से पता चलता है, कि कमरे में जो तीन चार लोग बैठे हुए थे, उनके चित्र तो उस फोटो में आये ही है, परन्तु साथ ही साथ उन मृत आत्माओं के चित्र भी फोटों में आ गये है, जिनकी हम चर्चा कर रहे थे, और वे चित्र बिल्कुल स्पष्ट और प्रामाणिक बन पडे है।

वास्तव मे ही यह बात सही है, कि हम जब किसी के बारे में बात कर रहे होते है, तो उस मृत आत्मा की रूह भी कमरे में हमारे आस-पास ही मंडराती रहती है। यह अलग बात है, कि हमने अपनी साधनाओं के माध्यम से उन आत्माओं को देखने की कोशिश की, उन आत्माओं से बातचीत करने की कोशिश की और पश्चिम के वैज्ञानिक इस ज्ञान को मशीनों के माध्यम से स्पष्ट करने की कोशिश कर रहे है। दोनों का प्रयत्न और दोनों का लक्ष्य एक ही है, दोनों की विधियां अलग अलग है।

ये कैमरे जिनकी चर्चा मैंने ऊपर की, इस समय भारत में आयात किये जा सकते है, परन्तु फिलहाल ये कैमरे महंगे है, इनकी कीमत डेढ़ लाख रुपये बैठती है परन्तु वैज्ञानिक निरन्तर प्रयत्न कर रहे है, कि ये कैमरे सस्ते बन सके और शायद तीन चार वर्षों में काफी कम कीमत पर ये कैमरे भारत में उपलब्ध हो सकेंगे, अस्तु।

काल दर्शन

यह बात निश्चित है, कि जो घटना घटित हो जाती है, वे घटनाएं समाप्त नहीं होती, उन घटनाओं को मिटाया भी नही जा सकता, वे काल के स्मृति पटल पर सुरक्षित रहती है। इनमें "इथर" वेव काम करती है और यह इथर पूरे संसार में और ब्रह्माण्ड में फैला हुआ है। हम टेलीविजन पर अमेरिका इंग्लैण्ड या जापान के जो प्रोग्राम देखते हैं, उसका माध्यम ये इथर तरंगे ही है। इथर उन चित्रों को ज्यों का त्यों हजारों मील दूर ले आता है और हम अपने घर के कमरों में बैठे टेलीविजन के माध्यम से उन चित्रों को देख लेते है, अब तो ऐसे टेलीफोन भी बनने लग गये है, जिनके ऊपर चार इन्च चौड़ा और चार इन्च लम्बा टेलीविजन का पर्दा लगा होता है, और जब हम टेलीफोन से बात कर रहें होते है, तो जिनसे हम बात करते है, उनका चित्र भी उस पर्दे पर साफ-साफ देखते रहते है।

परन्तु जापान के वैज्ञानिकों ने एक बिल्कुल नवीन

टेक्नोलोजी ढूंढ निकाली है और उन्होंने जो कैमरा बनाया है, उस कैमरे का नाम "अनसीड" रखा है, इसका तात्पर्य यह है कि जो हम अपनी नंगी आंखों से नहीं देख सकते, उसको भी यह कैमरा देख लेता है और टेलीविजन के पर्दो पर उन दृश्यों को स्पष्ट करने में सहायक होता है।

जापान के वैज्ञानिक इजरा ने पूर्णत दावे के साथ यह स्पष्ट किया है, कि आज से दस हजार वर्ष पहले भी यदि पृथ्वी पर या ब्रह्माण्ड में कहीं पर भी कोई घटना घटित हुई है, तो वे घटनाएं कम्प्यूटर के स्मृति पटल पर जिस प्रकार से मेमोरी में आंकडे सुरक्षित रखे जाते हैं और जब चाहे उन आंकड़ों को देख सकते है, उसी प्रकार जो घटनाएं घटित हो चुकी होती है, उन घटनाओं को भी वापिस इस अनसीड मशीन के द्वारा टेलीविजन के पर्दे पर देख सकते है क्योंकि वे घटनाएं भले ही, पांच दस हजार वर्ष पहले घटित हुई हो, परन्तु वे काल के स्मृति पटल पर सुरक्षित है, वे मिट नहीं सकती हम उन घटनाओं को आज इस अनशीड मशीन के माध्यम से ज्यों का त्यों देख सकते हैं।

और पश्चिम के वैज्ञानिकों के सामने इजरा ने अपनी मशीन से प्रदर्शन किया उसके द्वारा उन्होंने बुद्ध का निर्वाण, त्रेता युग में घटित राम-रावण युद्ध, द्वापर की ऐतिहासिक महाभारत की घटना और उसका युद्ध तथा १९४८ में महात्मा गांधी को गोली लगने की घटनाओं को ज्यों का त्यों टेलीविजन के पर्दे पर देखा, ऐसा लगा कि जैसे ये सारी घटनाएं हमारी आंखों के सामने घटित हो रही हैं।

निकट भविष्य में ही इस मशीन के माध्यम से हम देख सकेंगे कि हमारे दादा या परदादा किस प्रकार के व्यक्ति थे, उनके जीवन में क्या क्या घटनाएं घटित हुई थी। हम स्वयं पूर्व जीवन में कहा पैदा हुए थे, किस प्रकार से हम बड़े हुए थे और हमारे जीवन में क्या क्या घटनाएं हुई थी, इन सब को देखना अब संभव होने लगा है। इस मशीन के माध्यम से हम यह भी देख सकेंगे कि हमारे वर्तमान जीवन से पहले के जीवन में हमारे संबंधी कौन-कौन थे, हमारा विवाह किससे हुआ था, और किन लोगों से हमारे किस किस प्रकार के संबंध थे, ये सब अब इस मशीन से देखा जाना संभव हो सका है।

यह टेक्नोलोजी अभी अपनी प्रारम्भिक स्थिति में है, पांच सात वर्षों में यह टेक्नोलोजी अत्यन्त उन्नत हो सकेगी और इसके माध्यम से हम जीवन के बहुत कुछ रहस्य देख सकेंगे, पहिचान सकेंगे और उसके द्वारा निर्णय ले सकेंगे।

परन्तु यह सब तो अभी भी देख सकते हैं

पश्चिम के इन वैज्ञानिकों का आधार तो भारतीय तंत्र ही है। यह सारा ज्ञान तो मूलतः हमारा ही है, उन्होंने इसे सुधार कर नये रूप में एक चतुर बनिये की तरह रखने का प्रयास किया है। मैं जो बार-बार यह कह रहा हूं, कि यह सब कुछ आज भी देखा जा सकता है। आज भी हम अपने स्थान पर बैठे बैठे संसार में कहीं पर भी होने वाली घटना को अपनी आंखों से देख सकते है। हम अपने पिछले जीवन को और संबंधों को देख सकते है। हम महाभारत के युद्ध को साफ साफ स्पष्ट रूप से देख सकते है, और इस प्रकार हम उन रहस्यों का भी पता लगा सकते है, जो हमारे लिए रहस्यमय है, जिन गुत्थियों को हम सुलझा नहीं सके है, उन गुत्थियों को भी इन साधनाओं के माध्यम से भली प्रकार से सुलझा सकते है शास्त्रों में इस साधना का नाम "अदृश्य सिद्धि" है। और क्या आपको मालूम है, कि **हमारे शास्त्रों ने "अदृश्य सिद्धि दिवस" भी निश्चित किया है,** वैशाख शुक्ल पक्ष **नवमी को कई हजार वर्षों से अदृश्य सिद्धि दिवस मनाया जाता रहा है,** इस वर्ष अंग्रेजी तारीख के अनुसार यह **अदृश्य सिद्धि दिवस १४ मई ८९ को आ रहा है।**

अदृश्य सिद्धि दिवस

शास्त्रों का अध्ययन करने पर पता चलता है, कि प्रति वर्ष इस दिवस को "अदृश्य सिद्धि" दिवस के रूप में

Scanned by CamScanner

मनाया जाता रहा हैं। गुरूकुल में जहां शिष्य अपने गुरू के साहचर्य में रह कर शिक्षा अध्ययन करते थे, तब गुरू आज के दिन साधकों और शिष्यों को अदृश्य साधना सम्पन्न करवाते थे, जिसकी वजह से उनमें भूतकाल या पूर्व जीवन को देखने का ज्ञान प्राप्त हो सके और अपने पिछले जीवन को देख कर इस जीवन को व्यवस्थित कर सकें, उनमें वह क्षमता आ सके, जिसके माध्यम से वे शिष्य आगे चल कर ब्रह्माण्ड में कहीं पर भी घटित होने वाली किसी भी घटना को अपनी साधना के माध्यम से देख सके और उसके अनुसार जीवन को व्यवस्थित कर सके।

आश्चर्य की बात तो यह है, कि यह केवल एक दिन की साधना है, यह अलग बात है कि हम जरूरत से ज्यादा बुद्धियुक्त बन गये है, गुरू के प्रति आस्थाएं कमजोर होने लगी हैं, और इन साधनाओं के बारे में हम संशय-असंशय की स्थिति में झूलते रहते है। हकीकत में देखा जाय तो हम आधे मन से साधना प्रारम्भ करते है ऐसी स्थिति में सफलता संदिग्ध हो जाती है।

आवश्यकता इस बात की है, कि हम बहुत पहले से योजना बना लें और मन में निश्चित कर लें कि मुझे इस तारीख को यह साधना सम्पन्न करनी ही है, और इसके लिए आवश्यक उपकरण को या दूसरे शब्दों में साधना सामग्री को पहले से मंगा कर रख लें।

पश्चिम के वैज्ञानिक जहां इस प्रकार की साधना सामग्री अर्थात् मशीन आदि का मूल्य लाखों रुपयों में स्पष्ट करते है, आज जापान में जो अनसीड केमरा बनाया है उसका मूल्य बीस लाख रूपये के आस-पास बैठता है। जबकि कुछ सौ रुपये की सामग्री के माध्यम से हम इस साधना को सम्पन्न कर लेते हैं और ठीक वही लाभ प्राप्त कर लेते हैं जो वे लाखों रुपयें खर्च करने के बाद प्राप्त कर पाते है।

वास्तव में ही वे साधक सौभाग्यशाली होंगे, जो इस साधना की सामग्री मंगवा कर साधना प्रारम्भ कर लेंगे।
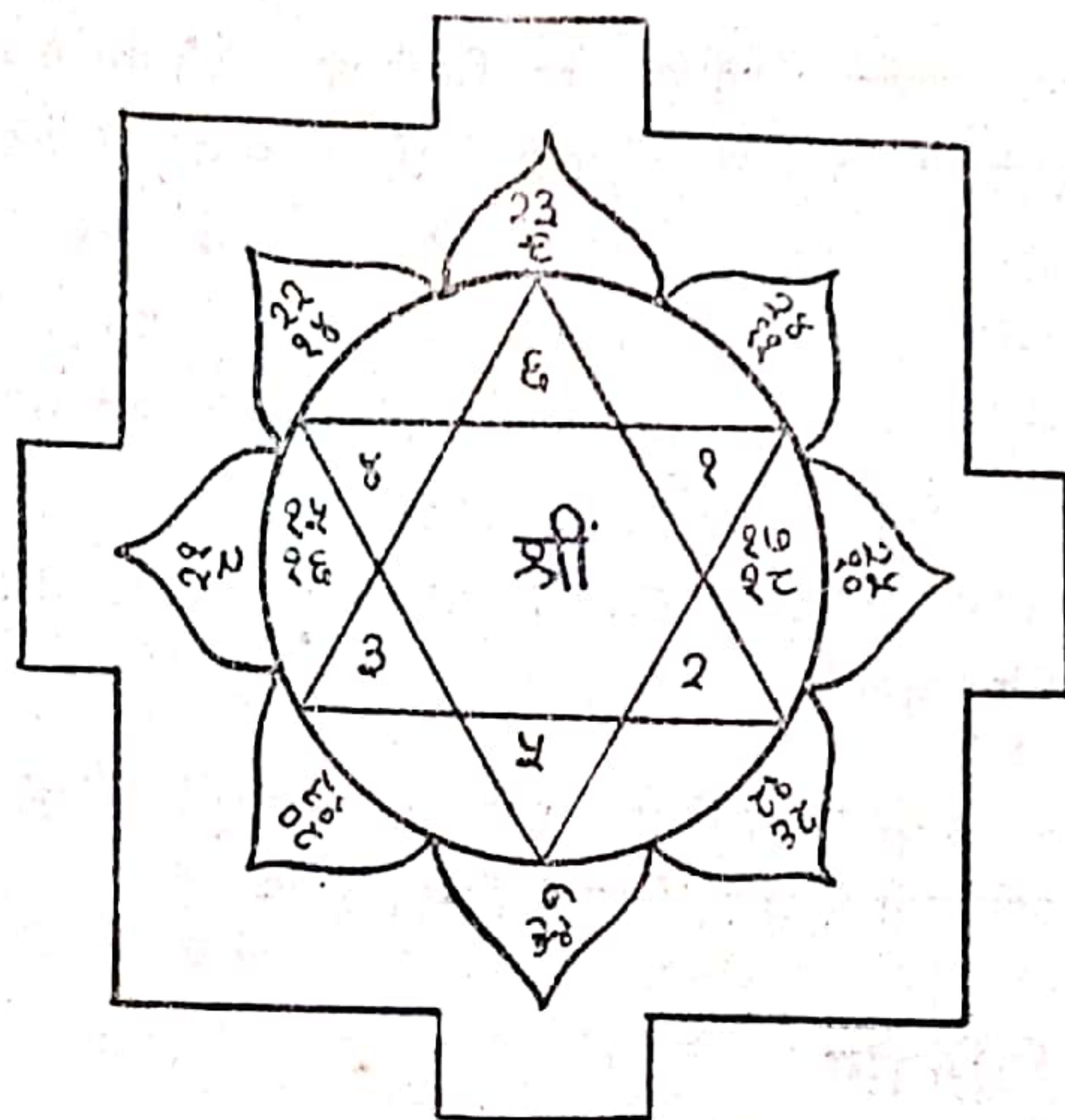
अदृश्य सिद्धि साधना

यह रात्रिकालीन साधना है, १४ मई ८९ रविवार को संक्रांति दिवस है इसी रात्रि को यह साधना सम्पन्न की जाती है। साधक को चाहिए कि वह साधना प्रारम्भ करने से पूर्व कमरे में सफेद आसन बिछा दे और उस पर स्वयं सफेद धोती धारण कर दक्षिण दिशा की ओर मुंह कर बैठ जाय।

फिर अपने सामने कुकुंम या केसर के द्वारा एक पात्र में स्वस्तिक का चिन्ह बनावे और उस पर "अदृश्य सिद्धि गुटिका" रख दें। इसके सामने ही "अदृश्य सिद्धि यंत्र" और "अदृश्य धारणा यंत्र" को भी स्थापित कर दें। इस साधना में मात्र इन तीन उपकरणों की ही जरूरत पड़ती है, इसके बाद सामने पांच तेल के दीपक लगावे इसमें किसी भी प्रकार के तेल का प्रयोग हो सकता है।

साधना प्रारम्भ करने से पूर्व साधक स्नान कर ले,

Scanned by CamScanner

परन्तु स्नान करने के बाद किसी पात्र को बाल्टी या लोटे को छुए नहीं, पहले से ही धो कर सुखाई हुई सफेद धोती को जो पास में ही होनी चाहिए, उसे धारण कर ले और बिना किसी को स्पर्श किये साधना कक्ष में जा कर बैठ जाय, और जिस प्रकार से बताया है, उस प्रकार से स्वास्तिक का चिन्ह बना कर उस पर पर अदृश्य सिद्धि गुटिका और दोनों यन्त्रों को स्थापित कर दे तथा तेल का दीपक लगा दे।

इसमें एकाग्र चित्त से मन्त्र जप महत्वपूर्ण है, सबसे पहले हाथ में जल लेकर विनियोग करें -

विनियोग

ॐ अस्य श्री अदृश्य सिद्धि मन्त्रस्य श्रीमार्कण्डेय ऋषिः। अनुष्टुप-छन्दः। श्री अदृश्य सिद्धि देवता। ह्रां बीजं। ह्रीं शक्ति। ह्रूं कीलकं। श्री अदृश्य देवी प्रीतये मंत्र जपे विनियोगः।

इसके बाद ऋष्यादि न्यास, कर न्यास एवं अंग न्यास करें।

ऋष्यादि न्यास

श्री मार्कण्डेय ऋषये नमः शिरसि।
अनुष्टुप् छन्द से नमः मुखे।
श्री अदृश्य सिद्धि देवतायै नमः हृदि।
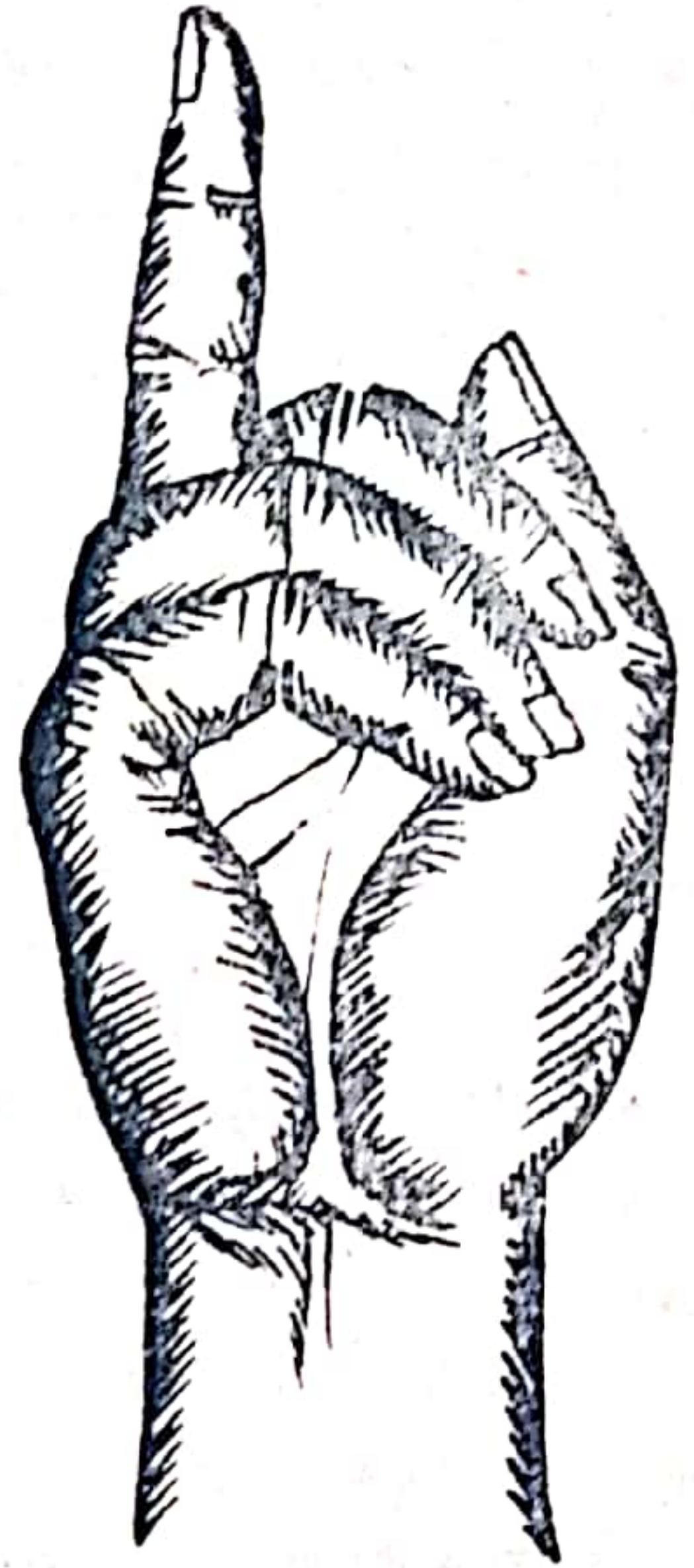
दन्त मुद्रा

ह्रां बीजाय नमः लिंगे।
ह्रीं शक्तये नमः नाभौ।
ह्रूं कीलकाय नमः पादयोः।

श्री अदृश्य सिद्धि देवता प्रीतये जपे विनियोगाय नमः सर्वांगे।

षडंग न्यास

बीज	कर न्यास	अंग न्यास
ह्रां	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
ह्रीं	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
ह्रूं	मध्यामाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
ह्रैं	अनामिकाभ्यां हुं	कवचाय हुं

Scanned by CamScanner

ह्लौं	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र - त्रयाय वौषट्
ह्लः	करतल करपृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

इसके बाद निम्नलिखित अत्यन्त तेजस्वी दुर्लभ गोपनीय महामंत्र का मात्र १०८ बार उच्चारण करें।

अदृश्य सिद्धि महामंत्र

ऐं ह्रीं क्लीं ह्लां ह्लीं ह्लूं जय अदृश्य सिद्धि देव्य त्रिदेश-मणि मुकुट कोटी संघट्टितचरणारविन्दे, गायत्रि, सावित्री, सरस्वति, महाधि-कृताभरण, मधु-कैटभ-महिषासुर-धूम्रलोचन-चण्ड मुण्ड रक्त बोज शुम्भ दैत्य निष्कण्टके, काल-रात्रि, महा-माये, शिवे, नित्ये, इन्द्राग्नि यम निऋति-वरुण वायु सोमेशानप्रधान शक्ति भूते, ब्रह्म–विष्णु शिवस्तुते, त्रिभुवन-धराधारे, ज्येष्ठे, वरदे, रौद्रि, अंबिके, ब्राह्मि माहेश्वरि. कौमारि, वैष्णवि, शङ्खिनि, वाराहो, इन्द्राणि, चामुण्डे, शिवदूति, महाकाली–महालक्ष्मी महासरस्वती स्ववेषे, नाद, मध्य–स्थिते, महाग्रे विषारेण–फणाफणि घटित मुकुट कटकादि रत्न महाज्वाला मय पद बाहु कण्ठो तमांगे, मालांकुने, महा-महिषोपरि गन्धर्व विद्याधराराधिते, नव रत्न निधि कौशे, तत्व स्वरूपे, वाक् पाणि पाद पायूपस्थात्मिके, शब्द रूप स्पर्श रस गन्धादि स्वरूपं, त्वक् चक्षु श्रौत्र जिह्वा घ्राण महा बुद्धि स्थिते, ओंकार ऐंकार ह्रींकार क्लींकार हस्ते।

आं क्रौ आग्नेय नयन पात्रे प्रवेशय प्रवेशय, द्रा शौषय शौषय, द्रीं सुकुमारय सुकुमारय, श्री सर्व प्रवेशय प्रवेशय, मम कार्याणि साधय साधय स्वाहा।

उपरोक्त मन्त्र इतना अधिक महत्वपूर्ण और प्रभावशाली है, कि इस रात्रि को ५१ बार उच्चारण करने के वाद ही आपको विविध दृश्य बिम्ब चित्र दिखाई देने लग जायेंगे और एकाग्रचित्त से दीपक की लौ पर ध्यान केन्द्रित करते हुए १०८ बार मन्त्र जप करने पर यह अदृश्य सिद्धि अवश्य ही प्राप्त होती है, और इसके माध्यम से व्यक्ति वर्तमान जीवन के और पूर्व जीवन के किसी भी प्रकार के दृश्यों को घटनाओं को अपनी आंखों से देख सकता है, समझ सकता है और उसका मन चाहा उपयोग, प्रयोग कर सकता है।

इसी रात्रि को जब १०८ बार मंत्र जप हो जांय तब उस गुटिका और दोनों यंत्रों को किसी सुरक्षित स्थान पर रख दें और आगे चल कर जब कभी दृश्य धुंधले दिखाई देने लगे तो पुनः इस मंत्र का एक या दो बार उच्चारण कर ले तो पुनः वे घटनाएं और दृश्य साफ-साफ दिखाई देने लगेंगे।

वास्तव में ही यह अपने आप में अत्यन्त तेजस्वी, दुर्लभ, गोपनीय और महत्वपूर्ण साधना है, साधकों को चाहिए कि वे वर्ष की यह सर्वश्रेष्ठ साधना अवश्य ही सम्पन्न करें।

संसार की सर्वाधिक तेजस्वी साधना

इन्द्रकृत

सिद्ध सहस्र लक्ष्मी महाविद्या प्रयोग

अभी अभी पिछले दिनों हिरण्मय वासी तपोनिष्ठ योगीराज शैलेन्द्र स्वामी जी से एक अद्‌भुत और आश्चर्यजनक प्रयोग प्राप्त हुआ है; यदि पाठकों ने शास्त्रों का अध्ययन किया हो, तो उन्हें पता चलेगा कि इन्द्रकृत सहस्र लक्ष्मी प्रयोग सर्वथा गोपनीय और दुर्लभ प्रयोग रहा है, यद्यपि इसकी चर्चा कई ग्रन्थों में आई है,

परन्तु इसका विस्तृत वर्णन हमें अभी तक प्राप्त नहीं हुआ था। पत्रिका की टीम इस रहस्य को प्राप्त करने के लिए प्रयत्नशील थी, परन्तु इसकी प्रामाणिक विधि और इसका शुद्ध पाठ प्राप्त नही हो रहा था, पिछले दिनों कुम्भ के अवसर पर योगीराज शैलेन्द्र स्वामी जी से भेंट हुई और हमें ज्ञात था. कि यह विद्या उनके कंठ में सुरक्षित है, हमने उनसे निवेदन किया तो उन्होंने कृपा पूर्वक यह दुर्लभ साधना रहस्य हमें अंकित करवा दिया, इसके लिए पत्रिका, स्वामी जी की आभारी है।

महाविद्या प्रयोग

दस महाविद्या के बारे में तो पत्रिका के पाठक पढ़ ही चुके है, और उनमें से कई साधकों ने उन प्रयोगों को अपनाया भी है, परन्तु देवताओं के अधिपति इन्द्र ने भगवती लक्ष्मी को भी महाविद्या मान कर उसकी साधना, की, और सहस्र रूपेण अर्थात् हजार हजार रूपों में भगवती लक्ष्मी इन्द्र के निवास में स्थापित हुई और इन्द्र देवताओं में सर्वाधिक सुखी, सर्वाधिक ऐश्वर्य सम्पन्न और सर्वाधिक पूर्णता प्राप्त व्यक्तित्व वने।

भगवती लक्ष्मी की साधना लक्ष्मी के रूप में तो कई स्थानों पर प्रचलित है, परन्तु महाविद्या का रूप देकर इस प्रकार की साधना इन्द्र ने ही स्पष्ट की है, और आगे के सभी ऋषियों ने एक स्वर से यह स्वीकार किया है, कि वास्तव में ही यह साधना अपने आप में शीघ्र फलदायक, निश्चित फलदायक और आश्चर्यजनक रूप से फलदायक है।

सर्वाधिक तेजस्वी मंत्र

और मैं यह दावे के साथ यह सकता हूं, कि यह मंत्र अपने आप में अत्यन्त प्रभावयुक्त है, यद्यपि यह साधना अत्यन्त सरल प्रतीत होती है, परन्तु इसका प्रभाव अपने आप में अचूक है। आगे के ऋषियों ने भी इस साधना को सम्पन्न की. इतिहास साक्षी है. कि वशिष्ठ ने साधना को सम्पन्न कर अतुलनीय ऐश्वर्य प्राप्त किया। विश्वामित्र इस साधना को तंत्र मान कर सम्पन्न किया. और वे आश्चर्यचकित रह गये कि तंत्र की अपेक्षा यह जल्दी और पूर्णता के साथ सम्पन्न हो सका। इस साधना के द्वारा भगवती लक्ष्मी साक्षात जाज्वल्यमान स्वरूप में तो प्रगट होती ही है, अदृश्य रूप में भी वे साधक के घर में निवास करती है और उसे सभी दृष्टियों से पूर्णता प्रदान करती है। शंकराचार्य ने स्वयं इस साधना की बेहद प्रशंसा की है, और कहा है कि यह साधना कलियुग में गृहस्थ लोगों के लिए कल्प वृक्ष के समान वरदान स्वरूप है। गुरु गोरखनाथ ने तो अपने सभी शिष्यों को यह साधना सम्पन्न करने की आज्ञा दी थी, जिससे कि उनके शिष्य दरिद्री नहीं रहे, पूर्ण रूप से सम्पन्न व ऐश्वर्यवान बने, जिससे कि पूरे विश्व में अपने ज्ञान का सुविधापूर्वक प्रसार कर सके।

शंकराचार्य के वाद यह साधना एक प्रकार से लुप्त ही हो गई। ग्रन्थों में इस साधना का वर्णन विवरण तो मिलता रहा, परन्तु इस साधना की बारीकियां और इसका प्रभावी प्रामाणिक मंत्र प्राप्त नहीं हो सका। इसके प्रभाव और इसकी प्रामाणिकता के बारे में प्राचीन काल के ग्रन्थ भरे पडे है।

साधना प्रयोग

यह प्रयोग पुष्य नक्षत्र को किया जाना चाहिए, अगले तीन महिनों में पुष्य नक्षत्र इस प्रकार से घटित होते है -

दिनांक	पुष्य नक्षत्र—समय
११-५-८९	गुरू पुष्य-:-दिन भर एवं रात्रि को ११ बजे तक
७-६-८९	दिन भर और रात्रि भर

उपरोक्त दोनों पुष्य नक्षत्र महत्वपूर्ण है, इसके अलावा १४ अप्रेल ८९ को भी पुष्य नक्षत्र सम्पन्न होता है, पर वह दिन के १ बजे तक ही है। मेरी राय में उपरोक्त दोनों मुहूर्तो का प्रयोग करना चाहिए।

इसके अलावा भी साधक कभी भी पुष्य नक्षत्र का प्रयोग कर सकता है, श्रेष्ठ साधक तो पूरे वर्ष भर प्रत्येक पुष्य नक्षत्र को यह प्रयोग सम्पन्न करते है।

साधना सामग्री

इस साधना में पांच पदार्थो की आवश्यकता होती है, जो कि शास्त्र विधि के अनुसार निम्नलिखित है -

१– पूर्णता के लिए– तांत्रोक्त नारियल।
२– समृद्धि के लिए– कल्पवृक्ष फल
३– सिद्धि के लिए– बिल्ली की नाल
४– स्थापन के लिए– महालक्ष्मी चित्र और
५– ऐश्वर्य के लिए– कमल गट्टे की इन्द्र सहस्र लक्ष्मी माल्य

साधक इन पांचों वस्तुओं को कहीं से भी प्राप्त कर सकता है, पर इस बात का ध्यान रहे कि ये सारी वस्तुएं मन्त्र सिद्ध एवं प्रामाणिक हो।

पत्रिका की यह नीति रही है, कि वह उच्च कोटि के योगियों और पंडितों से ऐसी दुर्लभ सामग्री प्राप्त कर आप तक पहुँचाने का प्रयास करती है। हमने इन पांचों वस्तुओं का समन्वित नाम " इन्द्रकृत सिद्ध सहस्र लक्ष्मी महाविद्या पैकेट " रखा है जिसमें ये पांचों वस्तुएं प्रामाणिकता के साथ है और साधक इस पैकेट से ये वस्तुएं प्राप्त कर पूर्णता के साथ साधना सम्पन्न कर सके।

इसके अलावा जलपात्र, केसर, पुष्पों की माला, कुछ खुले पुष्प, नारियल, फल, नेवेद्य आदि पूजन सामग्री भी पहले से ही साधना कक्ष में या पूजा घर में रख देनी चाहिए।

साधना प्रयोग

जिस दिन साधक को साधना करनी हैं, उस दिन साधक स्नान कर पीली धोती धारण करे, स्त्री साधिका हो तो बालों को धो ले और पीठ पर उन बालों को खुला रखे। यदि साधक चाहे तो पति पत्नी दोनों आसन पर बैठ कर इस साधना को सम्पन्न कर सकते है।

सबसे पहले साधक पहले से ही प्राप्त महालक्ष्मी चित्र को फ्रेम में मंढ़वा कर अपने सामने रख दे और उसे जल से धोकर उस पर केसर की बिन्दी लगावे, सामने नैवेद्य अर्पित करे और फिर लक्ष्मी के चित्र के सामने ही एक चावल की ढेरी बना कर तांबे का छोटा सा कलश जल से भर कर स्थापित करे और उस पर लाल कपड़ा रख कर उस कपडे को कलश से बांध दे फिर उस पर चावलों की ढेरी बनाकर तांत्रोक्त नारियल, कल्पवृक्ष फल, और बिल्ली की नाल स्थापित कर दें; फिर इनकी संक्षिप्त पूजा करे और पुष्प अर्पित करे। साथ ही साथ इस कलश के सामने पांच घी के दीपक लगावे। जब तक साधना सम्पन्न करें तब तक घी के दीपक लगे रहने चाहिए। जो पुष्पों की माला लाई हुई है, वह साधक स्वयं धारण कर ले और शास्त्रों में विधान है, कि पहले से ही पान लगा कर मंगवा लेना चाहिए और यह तांबूल अर्थात् पान मुंह में ले कर उसे चबाकर फिर उसे थूक दे, तथा मुंह को धोकर आसन पर बैठ कर मंत्र प्रयोग प्रारम्भ करे।

मंत्र प्रयोग

सबसे पहले हाथ में जल ले कर संकल्प करे कि मैं आज पुष्य नक्षत्र के मुहर्त पर अटूट धन सम्पत्ति, ऐश्वर्य प्राप्त करने के लिए यह दुर्लभ साधना सम्पन्न कर रहा हूं।

विनियोग

ॐ अस्य श्री सर्व महाविद्या महारात्रि गोप-

नीय मन्त्र रहस्याति रहस्यमयी पराशक्ति श्री मदाद्या भगवति सिद्ध लक्ष्मी सहस्राक्षरी सहस्र रूपिणी महाविद्याया श्री इन्द्र ऋषि गायत्र्यादि नाना छन्दांसि, नवकोटि शक्तिरूपा श्री मदाद्या भगवति सिद्ध लक्ष्मी देवता श्री मदाद्य। भगवती सिद्ध लक्ष्मी प्रसादादखिलेष्टार्थे जपे पाठे विनियोगः ।

ऋष्यादि - न्यास

श्री इन्द्र ऋषिभ्यां शिरसे नमः ।

गायत्र्यादि नाना–छन्दोभ्यो नमः मुखे ।

नव कोटि शक्ति रूपा श्रीमदाद्या भगवती सिद्ध लक्ष्मी

प्रसादादखिलेष्टार्थे जपे पाठे विनियोगाय नमः सर्वांगे ।

अंग न्यास

ॐ श्रीं सहस्रारे ।

ॐ ह्रीं नमो माले ।

ॐ क्लीं नमो नेत्र युगले ।

ॐ ऐं नमः हस्त युगले ।

ॐ श्रीं नमः हृदये ।

ॐ क्लीं नमः कटौ ।

ॐ ह्रीं नमः जंगा द्वये ।

ॐ श्रीं नमः पादादि सर्वांगे ।

उपरोक्त लिखित उच्चारण कर फिर चित्र के सामने भगवती लक्ष्मी को श्रद्धा युक्त प्रणाम कर निम्न महाविद्या मन्त्र का २१ बार उच्चारण करें–

सहस्राक्षरी सिद्ध लक्ष्मी महा विद्या मंत्र

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौ श्रीं ऐं ह्रीं क्लीं सौः सौः ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं जय जय महा लक्ष्मी, जगदाद्ये, विजये, सुरा सुर त्रिभुवन निदाने, दयांकुरे, सर्व देव तेजो रूपिणी विरंचि संस्थिते, विधि वरदे, सच्चिदानन्दे, विष्णु देहावृते, महा मोहिनी, नित्य वरदान तत्परे, महा सुधाब्धि वासिनि, महा तेजो धारिणि, सर्वाधारे, सर्व कारण कारिणे, अचिन्त्य रूपे, इन्द्रादि सकल निर्जर सेविते, साम गान गायन परिपूर्णोदय कारिणी, विजये, जयन्ति, अपराजिते, सर्व सुन्दरि, रक्तांशुके, सूर्य कोटि संकाशे, चन्द्र कोटि सुशीतले, अग्निकोटि दहन शीले यम कोटि वहन शीले ओमकार नाद बिन्दु रूपिणि, निगमागम भागदायिनि, त्रिदश राज्य दायिनी, सर्व स्त्री रत्न स्वरूपिणि, दिव्य देहिनि, निर्गुणे सगुणे, सदसद् रूपधारिणी, सुर वरदे, भक्त त्राण तत्परे, बहु वरदे, सहस्राक्षरे, अयुताक्षरे, सप्त कोटि लक्ष्मी रूपिणि, अनेक लक्षलक्ष स्वरूपे अनन्त कोटि ब्रह्माण्ड नायिके, चतुर्विशंति मुनि जन संस्थिते, चतुर्दश भुवन भाव विकारिणे, गगन वाहिनि, नाना मन्त्रराज विराजिते, सकल सुन्दरी गण सेविते, चरणारविन्दे, महा त्रिपुर सुन्दरि, कामेश दयिते, करूणा रस कल्लोलिनि, कल्प वृक्षादि स्थिते, चिन्ता मणि द्वय मध्यावस्थिते, मणि मन्दिरे निवासिनी, विष्णु वक्षस्थल कारिणे, अजिते, अमिले, अनुपम चरिते, मुक्ति क्षेत्राधिष्ठायिनी, प्रसीद प्रसीद, सर्व मनोरथान पूरय पूरय, सर्वारिष्टान छेदय छेदय, सर्व ग्रह पीड़ा ज्वराग्र भयं विध्वंसय विध्वंसय, सर्व त्रिभुवन जातं वशय वशय, मोक्ष मार्गाणि दर्शय दशय, ज्ञान मार्ग प्रकाशय प्रकाशय, अज्ञान तमो नाशय नाशय, धन धान्यादि वृद्धि कुरू कुरू, सर्व कल्याणानि कल्पय कल्पय, मां रक्ष रक्ष, सर्वापद्भ्यो निस्तारय निस्तारय, वज्र शरीरं साधय साधय ह्रीं क्लीं सहस्राक्षरी सिद्ध लक्ष्मी महा विद्यायै नमः ।

पाठक स्वयं इस मन्त्र को पढ़ें और देखें कि यह मन्त्र कितना अधिक तेजस्वी और महत्वपूर्ण है, इस दिन केवल २१ बार इस मन्त्र का उच्चारण करना है, मन्त्र जप पूरा होने पर साधक तांत्रोक्त नारियल, कल्प वृक्ष, फल और बिल्ली की नाल को सुरक्षित रख दें, यदि साधक की कोई दुकान या फैक्टरी हो तो वहां पर भी जल छिड़क दें, कलश के ऊपर जो चावल रखे हुए थे, वे घर में रखे हुए धान्य में मिला दें, माला को पहने रहें या पूजा स्थान में रख दें। ●

Scanned by CamScanner

जिस साधना से जीवन में सब कुछ प्राप्त हो जाता है

गोपनीय दुर्लभ अद्वितीय

चौसठ शक्ति साधना

यह लेख ही नहीं है, अपितु पूरे गृहस्थ जीवन का सौभाग्य है, ये केवल पंक्तियां ही नहीं है, परन्तु इसके

माध्यम से मैं आज कुछ ऐसा रहस्य उद्घाटन करने जा रहा हूं जो अपने आप में दुर्लभ और महत्वपूर्ण है।

मेरे पिताजी सही अर्थों में तांत्रिक थे, और भारत के महत्वपूर्ण राज्य देवनगर के कुल पुरोहित थे। राजपूताने का इतिहास साक्षी है, कि देवनगर की तीन पीढ़ियों को तंत्र और राजनीति में योग्य एवं सिद्ध करने का उत्तरदायित्व मेरे पिताजी पर था, उन्हें तंत्र की गोपनीय सिद्धियों का आश्चर्यजनक ज्ञान था।

देवनगर के महाराजा हरीसिंह जी ने मेरे पिताजी को, जब वे चौदह साल के थे, तो उन्हें बंगाल में मेदिनीपुर जिले में रहने वाले विख्यात तांत्रिक स्वामी हरिहरानन्दजी के पास भेजा था, उस समय स्वामी हरिहरानन्द जी पूरे भारतवर्ष में विख्यात थे। अंग्रेजों ने भी उन्हें सम्मान देते हुए, "सर" की उपाधि प्रदान की थी। जब हरिहरानन्द जी बनारस आये थे तो उन्होंने तत्कालीन अंग्रेज कलेक्टर मिस्टर रूच के सामने जल पर सहज गति से चलने और आकाश में स शरीर उड़ कर दिखाने की क्रिया प्रत्यक्ष करके दिखाई थी, उस समय के बनारस के गजट में स्वयं कलेक्टर ने लिखा था, कि स्वामी हरिहरानन्द एक अचरज भरा व्यक्ति है, जो कार्य हो नहीं सकते, वो कार्य हरिहरानन्द ने कर के दिखा दिये।

स्वामी हरिहरानन्द स्वर्ण विज्ञान के भी सिद्धहस्त आचार्य थे, उन्होंने बनारस में ही श्री मदनमोहन मालवीय के सामने पारद से स्वर्ण बनाकर यह बता दिया था कि स्वर्ण विज्ञान आज भी जीवित है, और उस समय सैकड़ों लोगों के सामने पारे से जो स्वर्ण बनाया था वह बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय के लिए दान स्वरूप दे दिया था। मदनमोहन मालवीय ने भी कहा था कि बंगाल के स्वामी हरिहरानन्दजी पूरे भारतवर्ष के सौभाग्य है, तंत्र के क्षेत्र में वे एक मात्र सिद्ध आचार्य है।

ऐसे तेजस्वी तांत्रिक स्वामी हरिहरानन्दजी के पास मेरे पिता सीखने के लिये महाराजा हरीसिंह जी की आज्ञा से गये थे, और वहां उन्होंने पूरे २६ वर्ष लगाकर अलौकिक शक्तियां और साधनाएं सीखी थीं। उन्होने पूरा ज्ञान मेरे पिताजी को दे दिया था। मेरे पिताजी की मृत्यु १०६ वर्ष की अवस्था में हुई और उस समय भी वे कद काठी से पूर्ण स्वस्थ एवं बलवान थे।

एक दिन बातचीत के प्रसंग में पिताजी ने कहा था, संसार की सर्वाधिक तेजस्वी और अद्भुत साधना:- **चौसठ शक्ति साधना-**है, यह एक ऐसी साधना है, जो गृहस्थ जीवन के लिये वरदान स्वरूप है जो गृहस्थ जीवन का पूर्ण आनन्द लेना चाहते है उनके लिए यह साधना कल्पवृक्ष के समान फलदायक और कामधेनु के समान अमृतदायक है।

यह साधना केवल तीन दिन की साधना है, किसी भी संक्रांति के अवसर पर अर्थात् जब सूर्य एक राशि से दूसरे राशि पर परिवर्तन हो रहा हो तब इस साधना को प्रारम्भ करना चाहिए, और मात्र तीन दिनों में ही यह साधना सम्पन्न हो जाती है।

आने वाले समय में संक्रांति पर्व निम्न तारीखों को हैं, इनमें से किसी भी तारीख से यह साधना सिद्ध की जानी चाहिए। इस साधना से पूरी चौसठ शक्तियां एक साथ सिद्ध हो जाती है, और शून्य में से किसी भी प्रकार की वस्तु प्राप्त कर सकता है, एक पदार्थ को दूसरे पदार्थ में बदल सकता है, और जब वह रात्रि को सोता है, तो शक्तियां स्वयं उसके सिरहाने स्वर्ण रूपये और धन लाकर देती रहती है। यही नहीं अपितु ऐसा साधक शक्तियों को जो भी आज्ञा देता हैं, ये शक्तियां तुरन्त साधक की आज्ञा का पालन करती है।

संक्रांति पर्व

१- १४ अप्रेल ८९

२- १५ मई ८९

३- १५ जून ८९

Scanned by CamScanner

आप इनमें से किसी भी तारीख से साधना प्रारम्भ कर सकते है, और तीन रात्रि साधना सम्पन्न कर इससे संबंधित पूर्ण सफलता प्राप्त कर सकते है। इस साधना से किसी भी प्रकार का भय व्याप्त नहीं होता, ये शक्तियां तो साधक के लिए पूर्ण रूप से सहायक होती है।

साधना सामग्री

इस साधना के लिए कोई विशेष प्रपंच या सामग्री की जरूरत नहीं है, केवल थाली में तांत्रिक नारियल और "चौसठ शक्ति यंत्र" स्थापित कर उनकी पूजा कर शक्ति माला से मंत्र जप प्रारम्भ कर देना चाहिए, उपरोक्त दो पदार्थ अर्थात् तांत्रिक नारियल, चौसठ शक्ति यत्र एवं इसके साथ ही साथ "सिद्ध शक्ति माला" की आवश्यकता होती है और यह सामग्री इस साधना में तो काम आती ही है आगे के जीवन भर के लिए यह सामग्री उपयोगी रहती है।

साधना प्रयोग

संक्रांति के दिन साधक स्नान कर उत्तर दिशा की ओर मुंह कर लाल आसन पर बैठ जाय और स्वयं लाल धोती धारण कर ले। सामने किसी पात्र में चौसठ शक्ति यंत्र और "तांत्रिक नारियल" स्थापित कर दे और सामने तेल के नौ दीपक लगा दे, फिर चौसठ शक्तियों के नाम ले कर उस यंत्र पर अक्षत चढ़ावे, पुष्प समर्पित करें।

चौसठ शक्तियों के नाम

१- पिगंलाक्षी, २- विडालाक्षी, ३- समृद्धि, ४- वृद्धि, ५- श्रद्धा, ६- स्वाहा, ७- स्वधा, ८- मातृका, ९- वसुन्धरा, १०- त्रिलोक-रात्रि, ११- सावित्री, १२- गायत्री, १३ त्रिदशेश्वरी, १४- सुरूपा १५- बहुरूपा, १६- स्कन्द-माता, १७- अच्युत-प्रिया १८- विमला, १९- अमला, २० अरूणी, २१ आरूणी, २२- प्रकृति, २३- विकृति, २४- सृष्टि, २५- स्थिति, २६- संहृति, २७- संध्या, २८- माता २९- सती, ३०- हसी ३१- मर्दिकी, ३२- रंजिका, ३३- परा, ३४- देव माता, ३५- भगवता, ३६- देवकी, ३७– कमलासना, ३८– त्रिमुखा, ३९- सप्त-मुखी, ४०– सुरा, ४१– असुर–विमर्दिना, ४२– लम्बोष्ठी, ४३- ऊर्ध्व–केशी, ४४– बहु शिखा, ४५– वृकोदरी, ४६– रथ–रेखा, ४७- शशि-रेखा, ४८– अपरा, ४९- गगन-वेगा, ५०– पवन वेगा, ५१- भुवन–माला, ५२– मदनातुरा, ५३– अनंगा, ५४– अनंग–मदना, ५५– अनंग-मेखला, ५६– अनंग-कुसुमा, ५७- विश्व-रूपा, ५८– असुर ५९- अक्षोभ्या, ६०- सत्य-वादिनी, ६१- वज्र–रूपा ६२- शुचि–वृता, ६३- वरदा, ६४– वागीशा।

इन चौसठ शक्तियों के नाम से अक्षत, पुष्प चढ़ा कर फिर साधक एकाग्र मन से दीपक की लौ पर नजर रखते हुए निम्न मंत्र की ५१ माला मंत्र जाप नित्य करे, यह मंत्र जाप केवल सिद्ध शक्ति माला से ही सम्पन्न होना चाहिए और मंत्र जप होने के बाद दिन भर साधक उस माला को अपने गले में धारण किये रहे। तीसरे दिन जब मंत्र जप पूरा होगा तो प्रधान शक्ति साधक के सामने निश्चय ही उपस्थित होती है और पूर्ण आशीर्वाद प्रदान करती हुई जीवन भर उसके लिए अनुकूल बनी रहती है।

मंत्र

ह्रीं श्रीं पूर्ण शक्ति स्वरूपायै श्रीं ह्रीं

वास्तव में ही यह अपने आप में दुर्लभ और महत्वपूर्ण साधना है, जो मेरे पिताजी ने मुझे सिखाते हुए कहा था कि यह एक साधना ही जीवन की पूर्णता है और आज आर्थिक क्षेत्र में, समृद्धि के क्षेत्र में तथा सम्मान के क्षेत्र में मेरा जो नाम है, उसके मूल में यही सिद्ध शक्ति साधना है।

Scanned by CamScanner

ग्रह बाधा, पितृ दोष एवं रोग निवारण हेतु

एक अद्भुत

शनैश्चरी अमावस्या प्रयोग

जीवन में मनुष्य को तीन तरह की समस्याओं का सामना करना पड़ता है, जिसकी वजह से उसे कई प्रकार की परेशानियों को भोगना पड़ता हैं, और उनके समाधान के लिए वह प्रयत्न भी करता है।

ग्रह दोष निवारण

अब यह सिद्ध हो चुका है, कि ग्रहों का प्रभाव मानव जीवन पर पड़ता ही है, और उसकी वजह से मानव को विविध प्रकार के कष्ट भोगने पड़ते है, नवग्रहों में भी सूर्य मंगल, राहु और शनि अत्यन्त क्रूर एवं घातक ग्रह है, इनके प्रभाव से विविध प्रकार के कष्ट एवं दुख भोगने पड़ सकते है। शनि की दशा आने पर भगवान राम तक को वनवास भोगना पड़ा। इन ग्रहों की शांति के लिए "शनैश्चरी अमावस्या" का प्रयोग एक दुर्लभ और तुरन्त अनुकूलता देने वाला प्रयोग है।

पितृ दोष

आज की पीढ़ी इस बात को स्वीकार करे या न करे व्यक्ति को पितृ दोष भी भुगतना ही पड़ता है। हमारे माता पिता, बड़ा भाई या अन्य कोई संबंधी जब अकाल मृत्यु को प्राप्त हो जाता है, या मृत्यु के बाद भी उसकी इच्छाएं-भावनाएं बनी रहती है, तो वे उन इच्छाओं की पूर्ति के लिए अपने संबंधियों को यातना दुःख और कष्ट देकर अपनी बात मनवाने का प्रयत्न करते है। मैंने अपने जीवन में अनुभव किया है, कि पितृ दोष की वजह से घर में निरन्तर उपद्रव होते रहते है, लड़के या लड़कियां कहना नहीं मानते, पति या पत्नी को एक एक मिनट में गुस्सा आने लगता है और इस प्रकार के कई कार्य घर में होने लगते है, जिससे सारा वातावरण दूषित हो जाता है। इसका मूल कारण पितृ दोष ही है, और इसका समाधान भी शनैश्चरी अमावस्या प्रयोग से ठीक हो सकता है।

रोग वृद्धि

कभी कभी घर में ऐसी बीमारी घर कर जाती है, कि घर का कोई न कोई सदस्य बीमार बना ही रहता है, और काफी बड़ा बजट उन लोगों की चिकित्सा में व्यय हो जाता है। इलाज कराने पर दो चार दिन तो अनुकूलता दिखाई देती है, इसके बाद फिर वैसा ही दृश्य या वैसी ही स्थिति बन जाती है। इस प्रकार से घर के मालिक को उसकी पत्नी को बहू को, बेटी को, पुत्र को या पोते पोतियों को विविध प्रकार के कष्ट भोगने पड़ते है और इन बीमारियों से कोई छुटकारा दिखाई नहीं देता इसके लिए भी शास्त्रों में शनैश्चरी अमावस्या का प्रयोग

Scanned by CamScanner

बताया है ।

शनैश्चरी अमावस्या

ज्योतिष गणना के अनुसार कई वर्षों बाद शनैश्चरी अमावस्या की स्थिति बनती है । जिस अमावस्या को शनिवार हो उसे "शनैश्चरी अमावस्या" कहते है । **सौभाग्य से इस बार ३ जून ८९ को शनैश्चरी अमावस्या है, इस दिन जेष्ठ कृष्ण अमावस्या है और शनिवार भी है । ऐसा सुयोग काफी समय बाद आया है, सौभाग्य से इसी दिन "शनि जयन्ती" भी है अतः इसका महत्व बहुत अधिक बन गया है ।**

उपरोक्त समस्याओं के समाधान के लिए प्रत्येक साधक को इस मुहूर्त का और इस दिन का प्रयोग करना चाहिए और इससे संबंधित साधना सम्पन्न करनी चाहिए जिससे कि जीवन में रोग, शोक,दुःख, दारिद्रय, पितृदोष आदि से मुक्ति पा सके और परिवार में सभी दृष्टियों से अनुकूलता आ सके ।

साधना सामग्री

इसके लिए कोई विशेष साधना सामग्री की आवश्यकता नहीं होती, घर में जितने भी सदस्य है, उन सभी के नाम की "तांत्रोक्त शनैश्चरी मुद्रिका" प्राप्त कर लेनी चाहिये **जो कि तांत्रोक्त दोष निवारण से सिद्ध और रोगादि बाधाओं से निवृत्ति प्राण प्रतिष्ठा युक्त होनी चाहिए ।** यह मुद्रिका ऐसी होनी चाहिए जिस पर तांत्रोक्त नवग्रह मंत्र के पांच हजार जप सम्पन्न किये हुए हो । इस प्रकार से सिद्ध मुद्रिका इस अदभुत अवसर पर प्रयोग की जाती है , जिस पर व्यय मात्र ६०) आता है ।

इसके लिए आपको पहले से ही व्यवस्था कर के रखनी चाहिए, और पत्रिका कार्यालय को पत्र लिखते समय स्वयं का नाम और परिवार के सदस्यों का नाम लिख भेजे जिनके लिए यह प्रयोग सम्पन्न करना है । पत्र भेजते समय आप उनका नाम उनकी उम्र और उनका आप से क्या संबंध है, जैसे वह आपकी पत्नी है, पुत्र है, पुत्र वधू है, पिता है, या क्या संबंध है, वह लिख कर भेजना चाहिये जिससे कि इन से संबंधित अलग अलग मुद्रिकाएं भेजने की व्यवस्था की जा सके ।

रात्रि को साधना करने के बाद संबंधित मुद्रिकाएं या तो संबंधित व्यक्ति धारण कर ले या अपने अपने सन्दूक में रख दें , अथवा घर का मुखिया इन सभी मुद्रिकाओं को लाल कपड़े में बांध कर एक स्थान पर रख दें, जिससे कि समस्त प्रकार के उपद्रव आर बाधाएं शान्त हो सके ।

साधना प्रयोग

३ जून की रात्रि को साधक स्नान कर शुद्ध वस्त्र धारण कर दक्षिण दिशा की ओर मुंह कर बैठ जांय सामने एक थाली में सभी मुद्रिकाओं को रख दें, और तेल का दीपक लगावे ।

इसके बाद हाथ में जल ले कर संकल्प करें, कि मैं अमुक गोत्र , अमुक जाति, का व्यक्ति अमुक नाम के घर का मुखिया, घर के अमुक नाम के सभी सदस्यों के रोगों, ग्रह बाधाओं और बीमारियों को दूर करने के लिए शनैश्चरी अमावस्या प्रयोग सम्पन्न कर रहा हूं ।

इसके बाद पुनः हाथ में जल ले कर विनियोग करें, विनियोग का तात्पर्य हाथ में जल ले कर निम्न लिखित उच्चारण कर जल छोड़ दें ।

विनियोग

ॐ अस्य श्री बगलामुखी-मन्त्रस्य नारद-ऋषिः। त्रिष्टुप्ः छन्दः बगलामुखी देवता। ह्लीं बीजं। स्वाहा शक्तिः। मम शरीरे एवं समस्त परिवार शरीरे नाना ग्रहोपग्रह सम्पूर्ण रोग-समूह-नाना दुष्ट रोग

शान्त्यर्थं सर्व दुष्ट बाधा कष्ट-कारक-ग्रहस्य उच्चाटनार्थे शीघ्रारोग्य लाभार्थे कार्य सिद्यर्थे मन्त्र जपे विनियोगः ।

ऋष्यादिन्यास

निम्न उच्चारण करते हुए अपने शरीर के अंगों पर दाहिने हाथ से स्पर्श करें–

नारद ऋषये नमः शिरसि ।
त्रिष्टुप्छन्दसे नमः मुखे ।
बगलामुखी देवतायै नमः हृदि ।
ह्लीं बीजाय नमः गुह्ये ।
स्वाहा-शक्तयै नमः पादयोः ।

इसके बाद साधक बताये हुए अंगों को स्पर्श करते हुए अंग न्यास, कर न्यास करें ।

अंग न्यास	कर न्यास	हृदयादि-न्यास
ॐ ह्लीं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
बगला मुखी	तर्जनीभ्यां नमः	शिरसे स्वाहा
सर्व-दुष्टानां	मध्यमाभ्यां नमः	शिखायै वषट्
वांच मुखं स्तम्भय	अनामिकाभ्यां नमः	कवचाय हुम्
जिह्वां कीलय कीलय	कनिष्ठिकाभ्यां नमः	नेत्र-त्रयाय वौषट्
बुद्धि नाशय ह्लीं ॐ स्वाहा	करतल–करपृष्ठाभ्यां नमः	अस्त्राय फट्

ध्यान

फिर हाथ में अक्षत लेकर इन यन्त्रों के सामने चढ़ाते हुए निम्न ध्यान उच्चारण करें–

जिह्वाग्रमादाय करेण देवीं वामेन शत्रून् परि-पीडयन्तीम् ।
गदाभिघातेन च दक्षिणेन पीताम्बराढ्यां द्विभुजां नमामि ।।

इसके बाद मूंगे की माला से (यदि मूंगे की माला न हो तो किसी भी प्रकार की माला से) निम्न मंत्र की ११ माला मंत्र जप करे ।

मंत्र

ॐ ह्लीं बगलामुखीं परिवार स्य देह स्थित नाना रोगान् प्रतिबन्धक ग्रहान् फट् उच्चाटनं कुरू कुरू ह्लीं ॐ स्वाहा ।

दूसरे दिन सुबह उठ कर साधक को चाहिए कि वह सात कुमारी बालिकाओं तथा एक छोटे बालक को पूजन कर भोजन कराये और भोजनोपरान्त उसे यथा शक्ति दक्षिणा दें, भोजन में केवल बेसन के लड्डू हो सकते हैं, इसके अलावा अन्य किसी भी प्रकार का भोजन न दें ।

मैंने अपने जीवन में कई प्रकार की समस्याओं, बाधाओं और अड़चनों के समय कठिन और असाध्य रोगों से लोगों को इस प्रयोग से मुक्ति दिलाई है, किसी भी प्रकार की ग्रह बाधा पितृ बाधा या रोग हो तो निश्चय ही इस प्रयोग से पूर्ण अनुकूलता प्राप्त होती ही है । ●

Scanned by CamScanner

विश्व की सर्वश्रेष्ठ अद्वितीय

सर्वथा पहली बार

कर्ण मातंगी साधना

कर्ण पिशाचिनी साधना के बारे में तो भारत वर्ष के कई साधकों को जानकारी है, और कई शिष्यों ने इस साधना को सिद्ध भी किया है, कर्णपिशाचिनी साधना आज के युग में अत्यन्त महत्वपूर्ण और उपयोगी साधना है।

इस साधना की विशेषता यह है, कि कर्ण पिशाचिनी साधना सिद्ध करने पर किसी भी व्यक्ति, पुरूष या स्त्री को देखते ही उसके बारे में साधक मन ही मन जो प्रश्न पूछता है. उसका तुरन्त उत्तर साधक को उसके कान में मिल जाता है, इसीलिए इस साधना को कर्ण पिशाचिनी साधना कहते है।

यदि चमत्कार को ही नमस्कार है, तो उनके लिए 'कर्ण पिशाचिनी' साधना सर्व श्रेष्ठ साधना है, किसी मंत्री या अधिकारी को देखते ही इस साधना को सिद्ध किया हुआ व्यक्ति अपने मन में एक बार मंत्र का उच्चारण कर मन ही मन प्रश्न पूछता है कि इस सामने खड़े हुए व्यक्ति का क्या नाम है ? या इसके घर का पता क्या है ? अथवा इसकी पत्नी का नाम क्या है ? तो देवी कर्ण पिशाचिनी साधक के कान में एक सैकण्ड में इन प्रश्नों के उत्तर दे देगी, यही नहीं अपितु यदि किसी स्त्री के बारे में उसके भूतकाल या उसकी बीती हुई घटनाओं के बारे में किसी प्रकार का कोई प्रश्न करे, तो तुरन्त उसका उत्तर मिल जाता है, कि इसका चरित्र कैसा है, इसने बचपन से लगाकर अब तक क्या क्या किया है, आदि कई ऐसी बातें है जो सर्वथा रहस्यमय होती है परन्तु इस साधना को सिद्ध करने पर साधक किसी भी रहस्य का उजागर एक ही सैकण्ड में कर लेता हैं।

और जब सामने वाला अपरिचित व्यक्ति या अधिकारी उसके जीवन के अन्तरंग क्षण या उसके जीवन की गोपनीय बातें सामने वाले के मुंह से सुनता है तो आश्चर्य चकित रह जाता है, उसे अपने कानों पर विश्वास नहीं होता कि कोई ऐसी भी साधना है, जिसके द्वारा गोपनीय से गोपनीय तथ्य स्पष्ट हो सकते हैं, और वह सामने वाले के पैरों पर तुरन्त गिर जाता हैं, और उससे मित्रता गांठने की कोशिश करता है, उसका प्रयत्न यही रहता है, कि ऐसे व्यक्ति से मित्रता बनाये रखो, नहीं तो यह कभी भी भाण्डा फोड़ सकता है।

यहां रह कर भारत वर्ष के कई साधकों ने सफलता के साथ यह साधना सिद्ध की है, और आज वे समाज में अत्यन्त महत्वपूर्ण और सम्माननीय स्थान पर है। जब भी यहां शिविर लगते है, और सामान्य साधक जब कर्ण पिशाचिनी सिद्ध साधक को मिलते हैं, और उसके द्वारा अपने जीवन की गोपनीय घटनाओं को सुनते है तो वे भौचक्के से रह जाते है, वास्तव में ही आज के युग में कर्ण पिशाचिनी साधना एक महत्वपूर्ण साधना हैं।

पर आज मैं इससे भी सरल और गोपनीय साधना-"कर्ण मातंगी" साधना का रहस्य स्पष्ट कर रहा हूं, जो कि गोपनीय होने के साथ साथ तुरन्त सिद्ध

Scanned by CamScanner

होती है, जो साधक कर्ण मातंगी साधना सिद्ध कर लेता है, वह किसी भी व्यक्ति के जीवन के अन्तरंग रहस्यों को जान लेता है, उससे कुछ भी छिपा नहीं रहता, साथ ही साथ यह साधना अत्यन्त सरल और सौम्य है, कोई भी पुरूष या स्त्री इस साधना को सिद्ध कर सकता है, एक बार सिद्ध होने पर इस साधना का प्रभाव जीवन भर बना रहता है।

अब तक यह साधना सर्वथा गोपनीय रही है, यद्यपि कई तांत्रिक ग्रंथों में इसका विवरण एवं उल्लेख तो आया है, पर इसके बारे में प्रामाणिक जानकारी नहीं मिली है। इस बार पत्रिका के पन्नों पर मैं इस गोपनीय साधना के रहस्य को स्पष्ट कर रहा हूँ, जिससे कि साधक इसे सम्पन्न कर पूर्ण सफलता प्राप्त कर सके।

साधना रहस्य

यह साधना किसी भी शुक्रवार से प्रारम्भ की जा सकती है और केवल तीन दिन की साधना है। इस साधना में साधक को चाहिए कि वह शुक्रवार की रात्रि को स्नान कर लाल धोती पहिन कर लाल आसन पर दक्षिण दिशा की ओर मुंह कर बैठ जाय और सामने लोहे या स्टील की थाली में "सिद्ध कर्ण मातंगी यंत्र" रख दें। यह यंत्र अत्यन्त मंत्र युक्त एव सिद्ध होना चाहिए, ऐसे यंत्र का निर्माण करने पर व्यय १९५) रू. आ जाता है, आप कहीं से भी इस प्रकार का यंत्र पहले से ही प्राप्त कर के रख ले, अथवा पत्रिका कार्यालय से सम्पर्क स्थापित कर इस यंत्र को मंगवा ले।

इस यंत्र को थाली के मध्य में रख कर सामने एक बड़ा सा तेल का दीपक लगावे और साधक तेल के दीपक की लौ पर दृष्टि स्थिर करते हुए "कर्ण मातंगी मंत्र" की ३१ माला मंत्र जप करे। इस साधना में हरे रंग की हकीक माला का प्रयोग किया जाना चाहिए।

इस प्रकार तीन रात्रि प्रयोग करे, रविवार की रात्रि को जब ३१ माला मंत्र जप पूरा हो जाय तो अपने हाथों से उस तेल के दीपक को बुझा दे और दीपक में जो तेल भरा हुआ है, उसे अपने पैरों की तलहटी में लगा ले, और उसके बाद उठ कर स्नान कर लें।

स्नान करके वापिस अपने आसन पर बैठे, और गले में वह 'कर्ण मातंगी यंत्र' पहिन ले इस यंत्र में किसी भी प्रकार का धागा या चैन पिरोई जा सकती है।

इसके बाद वहीं पर बैठ कर किसी लोहे की थाली में या लोहे के पात्र में अग्नि प्रज्वलित कर तेल और राई मिला कर इसी मंत्र से एक हजार आहुतियां दें।

जब आहुतियां पूर्ण हो जाय तब पुन: स्नान कर ले, और उसी आसन पर बैठ जाय। इसके बाद उस माला से पुन: तीन माला मंत्र जप सम्पन्न करे।

ऐसा करते ही, कमरे में प्रकाश सा अनुभव होता है, और सामने अत्यन्त सौम्य देवी दृष्टिगोचर होती है, जो सुन्दर होने के साथ साथ अत्यन्त सम्मोहक होती है।

वह साधक को वचन देती है, कि तुमने मुझे मन्त्र से, और यज्ञ से सिद्ध किया है, मैं जीवन भर तुम्हारे लिए उपयोगी रहूँगी और तुम जो भी प्रश्न करोगे, मैं उस प्रश्न का उत्तर तुम्हारे कान में कहूँगी।

कर्ण मातंगी मन्त्र

ऐ नमः श्री मातगी अमोघे सत्य वादिनी मम कर्णे अवतर अवतर सत्यं कथय कथय एह्येहि श्रीं मातंग्यै नमः।

प्रातः काल उठकर साधक किसी कुंवारी कन्या को बुला कर उसे भोजन करावे और उसे यथा शक्ति दक्षिणा या लाल वस्त्र भेंट करे, इस प्रकार यह साधना पूर्ण होती है।

साधक इस साधना को अपने घर में या किसी मंदिर में अथवा कहीं पर भी सम्पन्न कर सकता है। इस साधना की विशेषता यह है कि यह तुरन्त सिद्ध होती है और असफलता के अवसर कम होते हैं। साथ ही साथ यह साधना सरल है और इससे साधक को किसी प्रकार की परेशानी या तकलीफ नहीं होती। इससे भी बड़ी बात यह है कि आज के युग में यह साधना अत्यन्त उपयोगी है।

इसके बाद जब भी साधक इसका प्रयोग करना चाहें तब अपने गले में पहने हुए यंत्र को दाहिने हाथ से स्पर्श कर मन ही मन उपरोक्त मंत्र का चार पांच बार उच्चारण करे और कर्ण मातगी का आहवान करे, जब "हां" की ध्वनि प्राप्त हो तब सामने वाले व्यक्ति या सामने रखे हुए फोटो से संबधित साधक मन ही मन जो भी प्रश्न करेगा, कर्ण मातंगी साधक के कान मे तुरन्त उसका उत्तर देगी जो कि पूर्णत: प्रामाणिक और सही होगा। तांत्रिक ग्रन्थों में बताया गया है, कि जो साधक कर्ण मातंगी साधना को सिद्ध कर लेता है, वह पूरे त्रैलोक्य पर शासन करने में समर्थ होता है और सफलता, विजय तथा लक्ष्मी उसके सामने हाथ बांधे खड़ी रहती है। ★

Scanned by CamScanner

नवार्ण साधना प्रयोग

चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से नवरात्रि प्रारम्भ हो रहा है, और भगवती दुर्गा की साधना में नवार्ण मंत्र का विशेष महात्म्य है। नवार्ण मंत्र के बारे में तो अधिकतर लोगों को ज्ञान है, परन्तु उसकी साधना और प्रयोग के बारे में बहुत कम लोगों को जानकारी है।

आगे के पृष्ठों में, मैं सर्वमान्य साधना प्रयोग दे रहा हूँ, जो कि किसी भी साधक के लिए अनुकूल है।

विद्वानों ने कहा है, कि चाहे व्यक्ति शिव उपासक हो, या विष्णु उपासक, वह चाहे किसी भी धर्म का मानने वाला हो, नवार्ण साधना तो उसके जीवन की उन्नति के लिए अनुकूल एवं सुखदायक है ही, इसके नव वर्ण अर्थात नव अक्षर होने से इसका नाम "नवार्ण" पड़ा और इसका प्रत्येक अक्षर अपने आप में विराट शक्ति पुंज लिये हुए है। इस ग्रन्थ में प्रत्येक अक्षर की साधना दी हुई है। इतने विस्तार में फिलहाल जाने की जरूरत नहीं है, परन्तु गुप्त चामुण्डा तंत्र में बताया गया है, कि नवार्ण मंत्र से नव अक्षरों को सिद्ध करने पर नौ लाभ तुरन्त अनुभव किये जा सकते है।

गुप्त चामुण्डा तंत्र के अनुसार नवार्ण मंत्र के ये नौ अक्षर या नौ बीज तथा उनसे संबधित फल प्राप्ति इस प्रकार से है।

१- ऐं

यह बीज नवार्ण मंत्र का पहला और सरस्वती बीज है, इसको सिद्ध करने पर स्मरण शक्ति तीव्र होती है, यदि बालक इस साधना को या इस बीज का उच्चारण करे तो निश्चय ही वह परीक्षा में सफलता प्राप्त करता है, सिर दर्द, माइग्रेन, आधा शीशी, आदि विकार और बीमारियां इस बीज के निरन्तर उच्चारण करने से ठीक हो जाती है, यहीं बीज अच्छा वक्ता बनने में, वाणी के द्वारा लोगों को प्रभावित करने में पूर्ण रूप से समर्थ है।

२- ह्रीं

यह लक्ष्मी बीज है, जो कि सम्पूर्ण विश्व में प्रचलित है। इस बीज की साधना करने से या इसका मंत्र जप करने से दरिद्रता दूर होती है, निरन्तर आर्थिक उन्नति होने लगती है और आर्थिक संबंधी रुके हुए काम ठीक हो जाते है। जो साधक निरन्तर केवल इसी बीज का उच्चारण करता है, उसका व्यापार बढ़ने लगता है, आर्थिक स्रोत मजबूत होते है और अनायास धन प्राप्ति के विशेष अवसर बन जाते है।

३- क्लीं

यह काली बीज है, शत्रुओं का संहार करने, शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने, मुकदमे में सफलता प्राप्त करने,

Scanned by CamScanner

और मन के विकारों, काम, क्रोध, लोभ, मोह, आदि पर नियंत्रण प्राप्त करने के लिए यह महत्वपूर्ण बीज है। जो इस बीज का उच्चारण कर कोर्ट कचहरी में जाता है, तो उस दिन उसके अनुकूल वातावरण बना रहता है। काली को प्रसन्न करने और उसके प्रत्यक्ष दर्शन करने के लिए यह अपने आप में सिद्ध बीज है।

४- चा

यह सौभाग्य बीज है, और इसकी महत्ता शास्त्रों ने एक स्वर से स्वीकार की है। सौभाग्य की रक्षा, पति की उन्नति, पति के स्वास्थ्य और पति की पूर्ण आयु के लिए यह अपने आप में अद्वितीय बीज है। इसी प्रकार यदि पत्नी बीमार हो या उसे किसी प्रकार की तकलीफ हो, तो इस अक्षर का निरन्तर जप करने से या पत्नी को इस बीज मंत्र से सिद्ध करके जल पिलाने से उसके स्वास्थ्य में आश्चर्यजनक अनुकूलता आने लगती है, गृहस्थ जीवन की सफलता के लिए यह बीज मंत्र ज्यादा उपयोगी है।

५- मुं

यह आत्म मंत्र है, आत्मा की उन्नति, कुण्डलिनी जागरण, जीवन की पूर्णता और अन्त में ब्रह्म से पूर्ण साक्षात्कार के लिए यह मंत्र सर्वाधिक उपयुक्त एवं अद्वितीय है। उच्च कोटि के सन्यासी निरन्तर इस मंत्र का जप करते हुए, अपने जीवन को पूर्णता प्रदान करते हैं, जो साधक निरन्तर इस बीज मंत्र का उच्चारण करता रहता है, उसकी कुण्डलिनी शीघ्र ही जाग्रत हो जाती है।

६- डा

यह सन्तान सुख बीज है, और भगवती जगदम्बा का सर्वाधिक प्रिय बीज है यदि पुत्र उत्पन्न न हो रहा हो या संतान बाधा हो, अथवा किसी प्रकार की पुत्र से संबंधित तकलीफ हो तो, इस बीज मंत्र की सिद्धि करने से अनुकूलता प्राप्त होती है। पुत्र के स्वास्थ्य के और उसकी दीर्घायु के लिए भी इसी बीज मंत्र का सहारा लिया जाता है।

७- यैं

यह भाग्योदय बीज है, और मानव जीवन में इस बीज का सर्वाधिक महत्व है, यदि दुर्भाग्य साथ नहीं छोड़ रहा हो, पग पग पर बाधाएं आ रही हों, कोई काम भली प्रकार से सम्पन्न नहीं हो रहा हो तो इस मंत्र को विशेष महत्व दिया गया है। जो साधक निरन्तर इस बीज मंत्र का जप करता रहता है, उसका शीघ्र भाग्योदय हो जाता है, और वह अपने जीवन में सभी दृष्टियों से पूर्ण सफलता प्राप्त कर लेता है।

८- वि

यह सम्मान, प्रसिद्धि, उच्चता। श्रेष्ठता, और सफलता का बीज मंत्र है। किसी प्रकार के पुरस्कार प्राप्त करने, समाज में सम्मान और यश प्राप्त करने, राज्य में उन्नति, और सफलता पाने के लिए इस बीज मंत्र का उपयोग किया जाता है। जो साधक निरन्तर इस बीज का प्रयोग करता है, या इसकी साधना करता है, वह निश्चय ही राज्य सम्मान एवं राज्य उन्नति प्राप्त करने में सफल हो पाता है।

९- च्चे

यह सम्पूर्णता का बीज है, जीवन सभी दृष्टियों से पूर्ण और सफल हो, चाहे स्वास्थ्य धन, परिवार यश, सुख, सौभाग्य, सन्तान, भाग्योदय और सफलता का तत्व हो, इस बीज में सब कुछ समाहित है, इसीलिए इसको "बीज राज" कहा गया है। जो साधक इस बीज मंत्र की साधना करता है, वह निश्चय ही अपने जीवन में पूर्ण सफलता प्राप्त कर सकता है।

नवार्ण मंत्र

इस प्रकार प्रत्येक बीज का अध्ययन करने से नवार्ण मंत्र इस प्रकार से बनता है-

ऐं ह्रीं क्लीं चा मु ंडा यै वि च्चे

शास्त्रों में कहा गया है, कि नवार्ण मंत्र का जप करते समय इसके प्रारम्भ में "ॐ प्रणव" नहीं लगाना चाहिए। जिस प्रकार से मंत्र दिया गया है, उसी प्रकार से मंत्र जप करना चाहिए।

नवार्ण मंत्र सिद्धि नौ दिनों में सवा लाख मंत्र जप करने से सफलता मिलती है। सवा लाख मंत्र का तात्पर्य १२५० मालाएं मंत्र जप करने से सवा लाख मंत्र जप हो जाता है, और इस साधना को किसी भी महीने की त्रयोदशी से प्रारम्भ कर अगले नौ दिनों में यह नवार्ण मंत्र सिद्ध किया जा सकता है। साधना काल में साधक पीली धोती पहिन, उत्तर की ओर मुंह कर सामने भगवती जगदम्बा का चित्र स्थापित कर साधना कर सकता है। साधना के समय तेल का दीपक लगा रहना चाहिए, यह तेल का दीपक अखण्ड होना चाहिए।

शास्त्रों में कहा गया है कि-

वाक् चैव काम शक्तिश्च प्रणवः श्रीश्च कथ्यते ।
तदार्थेषु च मन्त्रेषु प्रणवं नैव योजयेत् ॥

अर्थात जिन मंत्रों के प्रारम्भ में १-ऐं, २- क्लीं, ३-ह्रीं और ४-श्रीं अक्षर लगा हो, उन मन्त्रों के आदि में ॐ नहीं लगाना चाहिए।

नवार्ण मंत्र विनियोग

दाहिने हाथ में जल लेकर निम्न विनियोग का उच्चारण करे और जल को सामने रखे हुए पात्र में छोड़ दें।

ॐ अस्य श्री नवार्ण-मन्त्रस्य ब्रह्म-विष्णु-रूद्रा ऋषयः, गायत्र्युष्णिग्अनुष्टुप्छन्दांसि, श्री महाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वत्यौ देवताः, ऐं बीजं, ह्रीं शक्तिः, क्लीं कीलकं, श्री महाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वती-प्रीत्यर्थे जपे बिनियोगः।

ऋष्यादि-न्यास

निम्न उच्चारण करते हुए बताये हुए शरीर के अंगों को दाहिने हाथ से स्पर्श करना चाहिए।

ब्रह्म-विष्णु-रूद्र ऋषिभ्यो नमः-शिरसि ।
गायंत्र्यष्णिगनुष्टुप्छन्दोभ्यां नमः मुखे ।
महाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वती-देवताभ्यो नमः -हृदि ।
ऐं बीजाय नमः गुह्ये ।
ह्रीं शक्तये नमः पादयोः ।
क्लीं कीलकाय नमः-नाभौ ।

कर न्यास

कर न्यास करने से साधक स्वयं मंत्र मय बन जाता है, उसके बाहर भीतर की शुद्धि हो जाती है तथा दिव्य बल प्राप्त करने से वह साधना में सफलता प्राप्त कर लेता है।

ऐं-अंगुष्ठाभ्यां नमः ।
ह्रीं-तर्जनीभ्यां नमः ।
क्लीं-मध्यमाभ्यां नमः ।
चामुण्डायै-अनामिकाभ्यां नमः ।
विच्चे-कनिष्ठिकाभ्यां नमः ।
ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे-करतल कर पृष्ठाभ्यां नमः ।

हृदयादि न्यास

ऐं- हृदयाय नमः ।
ह्रीं-शिरसे स्वाहा ।
क्लीं-शिखायै वषट् ।
चामुण्डायै-कवचाय हुं ।
विच्चे-नेत्र-त्रयाय वौषट् ।
ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चै-अस्त्राय फट् ।

अक्षर न्यास

ऐं नमः-शिखायां । ह्रीं नमः-दक्षिण नेत्रे । क्लीं नमः-वाम-नेत्रे । चां नमः- दक्षिण-कर्णे । मुं नमः-वाम कर्णे । डां नमः-दक्षिण-नासा-पुटे । यै नमः-वाम-नासा - पुटे । विं नमः -मुखे । च्चे

Scanned by CamScanner

नमः - गुह्ये ।

नवार्ण मंत्र ध्यान

"वाग्"-बीजं हि दीप-समान-दीप्तम् । मायौति-तेजो द्वितीयार्क-बिम्बम् ।

"कामं" च वंश्वानर-तुल्य-रूपम् । प्रतीयमानं तु सुखाय चिन्त्यम् ।

"चा. शुद्ध-जाम्बू-नद-तुल्य-कान्तिम् । "मु" पंचमं रक्त-तर प्रकल्पम् ।

"डा" षष्टमुग्रार्ति–हरे सुनीलम् । "ये" सप्तमं कृष्ण-तरं रिपुघ्नम् ।

"वि" पाण्डुर चाष्टममादि-सिद्धिम् । "च्चै" धूम्र-वर्ण नवमं विशालम् ।

एतानि बीजानि नवात्वकस्य । जपात् प्रवध्य: सकलार्थ–सिद्धिम् ।

नवार्ण मंत्र सिद्धि जीवन की श्रेष्ठ सिद्धि है, स्थूल रूप से नवार्ण मंत्र का अर्थ है, हे चित्त–स्वरूपिणी महा-लक्ष्मी ! हे आनन्दरूपिणी महाकालि ! पूर्णत्व प्रदान करने वाली हे महासरस्वती ! ब्रह्म - विद्या प्राप्त करने के लिए हम साधक तुम्हारा ध्यान करते है, है महाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वती स्वरूपिणी चण्डिके! आपको नमस्कार है । आप मेरे अन्दर अविद्या रूपी रज्जु की दृढ़ गांठ को खोल कर मुझे सभी दृष्टियों से पूर्ण मुक्त कर दें ।

खड्ग माला

नवार्ण मंत्र की सिद्धि खड्ग माला से ही सम्पन्न हो सकती है, 'गुप्त चामुण्डा तंत्र' में स्पष्ट रूप से बताया गया है, कि-

खड्गान विधिवत् सम्पूज्य हस्तेन च धृतेन वै ।
अष्टादश-महा-द्वीपे साम्राज्य-भोक्ता भविष्यति ।

अर्थात् खड्ग माला से विधिवत पूजा, अर्चना कर उससे मंत्र जप कर उस खड्ग माला को जो साधक धारण करता है, वह अठारह द्वीप युक्त महा द्वीप का सम्राट होता है तथा पूर्ण रूप से साम्राज्य सुख को भोगने वाला होता है ।

यह खड्ग माला विशेष मनकों से तैयार की जाती है, और इसका प्रत्येक मनका गु त चामुण्डा तंत्र के अनुसार सिद्ध किया जाता है, जिससे यह माला अत्यन्त तेजस्वी, दिव्य और अपराजिता हो जाती है । उच्च कोटि के सम्राट और ऋषियों ने हमेशा इस माला को धारण किया है, ऐसा जातक जीवन के किसी भी क्षेत्र में असफल नहीं होता । उसे अपने जीवन में धन, सुख, सौभाग्य, स्वास्थ्य, रोग निवृत्ति, शत्रु भय निवारण, भाग्योदय, एवं समस्त सुखों की निरन्तर प्राप्ति होती रहती है ।

गुप्त चामुण्डा तंत्र में बताया है, कि जो वास्तव में ही सौभाग्यशाली होते है, वे साधक ही इस प्रकार की दिव्य और तेजस्वी माला धारण किये रहते है ।

पत्रिका कार्यालय ने पाठकों की सुविधा एवं साधकों की सफलता के लिए कुछ खड्ग मालाओं को तैयार कर-वाया है, एक माला पर व्यय मात्र २४०) रू. आता है। यह माला नवार्ण साधना के लिए तो जरूरी है ही, इसके माध्यम से संसार की कोई भी साधना सम्पन्न की जा सकती है, साथ ही साथ इसका धारण करना भी अपने आप में सौभाग्य माना जाता है ।

खड्ग माला से साधक उपरोक्त नवार्ण मंत्र का जप करे और उस दिन का मंत्र जप पूर्ण होने पर माला के सुमेरू पर तिलक करते हुए निम्न उच्चारण करे -

ॐ अक्ष मालाधिपतये सु सिद्धिं देहि देहि सर्व-मन्त्रार्थ–साधिनि साधय साधय सर्व-सिद्धि परि-कल्पय परि-कल्पय मे स्वाहा ।।

जप समाप्ति के बाद उत्तर न्यास करे अर्थात् प्रारंभ में जिस प्रकार से कर न्यास आदि किया था, उसी प्रकार से सम्पन्न कर अंत में भगवती जगदम्बा को इस प्रकार प्रार्थना करे-

गुह्याति–गुह्य-गोप्त्री त्वं गृहाणास्मत्-कृतं जपम् ।
सिद्धिर्भवतु मे देवि ! त्वत्-प्रसादात् महेश्वरि ।।

उपरोक्त श्लोक को पढ़ कर हाथ में जल ले कर भगवती जगदम्बा के सामने जल गिराते हुए, पूर्ण सफलता की भावना करे ।

धूमावती जयन्ती के अवसर पर

दुर्लभ गोपनीय प्रयोग

धूमावती जयन्ती ज्येष्ठ शुक्ल ८ रविवार अर्थात ११-६-८९ को है उच्च कोटि के साधक पूरे वर्ष भर इस दिन की प्रतीक्षा करते हैं, जब कि वे महाविद्याओं में सर्वश्रेष्ठ महाविद्या को सिद्ध कर सके और इसके माध्यम से भूत प्रेत आदि इतर प्राणियों से मनचाहा कार्य करवा सके और परलोक गत आत्माओं से सम्पर्क स्थापित किया जा सके।

योगीराज सहजानन्द जी के माध्यम से एक अद्वितीय दुर्लभ गोपनीय और महत्वपूर्ण साधना—

धूमावती साधना के बारे में कहा गया है, कि जिस साधक ने जीवन में भले ही अन्य साधनाएं सम्पन्न की हो, भले ही वह उच्चकोटि का योगी और सिद्ध रहा हो, पर उसे अपने जीवन में तब तक पूर्णता प्राप्त नहीं हो सकती, जब तक कि वह धूमावती को सिद्ध न कर दें।

मेरे गुरुदेव धूमावती सिद्ध साधक थे और उन्होंने अत्यन्त गोपनीय एवं दुर्लभ साधना प्रयोग से धूमावती को सिद्ध किया था, इसके माध्यम से वे पृथ्वी लोक के अलावा अन्य लोकों में रहने वाले प्राणियों से संबंधित स्थापित किये हुए ही थे, साथ ही साथ वे किसी भी मनोवांछित आत्मा को वायुमण्डल से बुला कर अपने सामने उपस्थित कर देते थे और उससे मनोवांछित जानकारी प्राप्त कर लेते थे, इन आत्माओं में उच्चकोटि के वैज्ञानिक, संगीतज्ञ, विद्वान और कलाकार होते थे।

जब मेरे गुरुदेव मूड में होते तो, उच्चकोटि के संगीतज्ञों की आत्माओं को बुला लेते, और उनसे घण्टे दो घण्टे संगीत सुनते रहते, उन्होंने मुझे कई बार नृत्य कार्यक्रम भी दिखाये। इसके अलावा इन आत्माओं के माध्यम से वे किसी के भी जीवन के भूत भविष्य, वर्तमान को जान सकते थे, उन्हें न तो पंचांगुली साधना सम्पन्न करने की

Scanned by CamScanner

जरूरत पड़ी और न कर्णपिशाचिनी साधना ही । वे किसी आत्मा को बुला कर किसी के भी जीवन का भूतकाल जान लेते थे । यदि किसी का भविष्यकाल जानना होता था तो उस आत्मा के माध्यम से ही पूरी पूरी जानकारी प्राप्त कर लेते थे , यहीं नहीं अपितु वे इन आत्माओं से घण्टों बतियाते रहते थे, और उनके लिए कुछ भी कठिन और असंभव नहीं था ।

जहां भूत प्रेत थे गुलाम उनके

गुरू के सानिध्य में जाने के बाद मेरी यह आशंका तो निर्मूल हो ही गई कि जीवन में भूत प्रेत होते भी है या नहीं । उनके साथ रह कर मैंने तीन बातों का ज्ञान प्राप्त किया, एक तो यह कि इस संसार में भूत प्रेतों का अस्तित्व है, और जिस प्रकार पृथ्वी तल पर मानव जाति विचरण करती रहती है, ठीक उसी प्रकार हमारे चारों ओर भूत प्रेत भी निरन्तर विचरण करते रहते हैं, और दूसरा ज्ञान यह प्राप्त हुआ कि भूत प्रेत साधक के लिए ज्यादा विश्वास पात्र अनुकूल एवं सुखदायक हैं । जीवन में आदमी तो धोखा दे सकता है, पड़ौसी तो विश्वासघात कर सकता है, परन्तु ये भूत प्रेत अत्यन्त ही सरल, निष्कपट और मददगार होते है । ये कभी भी जीवन में साधक को न तो धोखा देते है, और न विश्वासघात ही करते है । तीसरा ज्ञान मुझे यह हुआ कि मैं लगभग आठ वर्षो तक गुरू के सांनिध्य में उनके ही आश्रम में रहा, और मैंने देखा कि सुबह चार बजे से लगाकर रात को ग्यारह बजे तक ये भूत प्रेत पूरे आश्रम का छोटे से छोटा और बड़े से बड़ा कार्य करते रहते थे, सफाई करना, पानी भरना, गायों का दूध दुहना, आश्रम के सभी शिष्यों के लिए भोजन पकाना और रात को पूरे आश्रम की देख भाल करना आदि सब कार्य इन भूत प्रेतों के जिम्मे था, और पूरे छः वर्षों में एक भी अवसर ऐसा नहीं आया कि किसी काम में कोई न्यूनता रही हो ।

मुझे अच्छी तरह से ज्ञात है, कि आश्रम की आय का कोई साधन नहीं था, गुरूदेव किसी से न तो किसी प्रकार की याचना करते थे, और न किसी से दान आदि ही स्वीकार करते थे । इसके बावजूद भी आश्रम में धन की कोई कमी नहीं रहती थी, सैकड़ों लोग पूज्य गुरूदेव के दर्शन के लिए आते उनको भोजन कराया जाता, गुरूदेव के जन्म दिवस पर तो सैकड़ों लोगों को कम्बल, वस्त्र और यहां तक कि आभूषण भी प्रदान किये जाते । इतना होने के बावजूद भी आश्रम में धन की कोई कमी नहीं रहती थी, उलटे यह चिन्ता रहती थी कि जो बेतहासा धन निरन्तर भूत प्रेतों के माध्यम से आश्रम में आ रहा है, इसको व्यय कहां किया जाय, और कैसे किया जाय ?
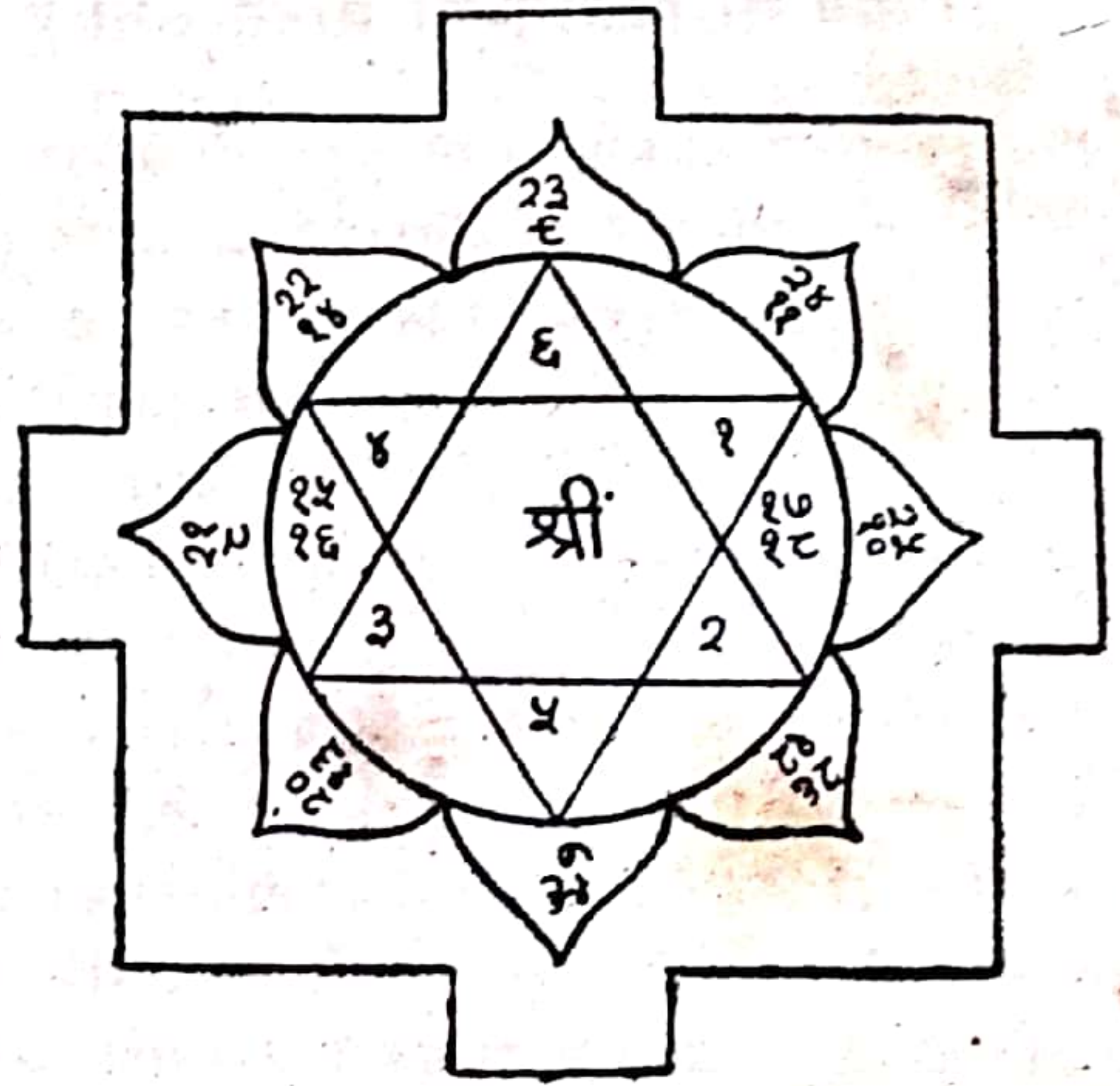
श्रीं
१ 2 3 ४ ५ ६
१५ १६ १७ १८
23

वास्तव में ही धूमावती इस प्रकार की सिद्धियों के लिए अद्वितीय साधना है, और यह पूर्ण रूप से सात्विक सुखदायक, और आनन्दप्रद साधना है । जो गायत्री उपासक है, जो गृहस्थ है, सात्विक जीवन व्यतीत करने वाला व्यक्ति है, उसके लिए यह साधना अत्यन्त महत्वपूर्ण और अनुकूल है ।

Scanned by CamScanner

और अब तो विज्ञान भी मानने लगा है

पश्चिम में जो शोध हो रहे है, उसके आधार पर पश्चिम के वैज्ञानिकों ने यह स्वीकार किया है, कि पृथ्वी तल पर भूत प्रेतों का अस्तित्व निश्चित रूप से है और उनमें जरूरत से ज्यादा बल, साहस, और क्षमता है। यदि वे नियंत्रण में हो जाते है, तो उनके द्वारा असंभव से असंभव कार्य भी सम्पन्न किये जा सकते है। मशीनों के रख रखाव पर जरूरत से ज्यादा व्यय होने लगा है। उनके तोड़ फोड़ की गुंजायस बनी रहती है उन पर कार्य करने वाले मजदूरों की समस्या बराबर चिन्तित बनाये रखती है, इसके बावजूद यदि इन इतर प्राणियों-भूत प्रेत आदि को नियंत्रित और अपने अनुकूल बनाया जाय तो उससे सौ गुना ज्यादा काम हो सकता है, ज्यादा अच्छे तरीके से हो सकता है और बिना किसी अड़चन या बाधा के हो सकता है।

इसके लिए उन्होंने इन इतर प्राणियों को वश में करने के कई प्रयोग आजमाये है, पर उन्होंने भी यह स्वीकार किया है, कि धूमावती प्रयोग के माध्यम से हम ज्यादा अच्छे तरीके से इस कार्य को सम्पन्न कर सकते है, आज पश्चिम में धूमावती प्रयोग पर ७५ से ज्यादा अंग्रेजी में लिखी हुई पुस्तके बाजार में उपलब्ध है, और वहां के वैज्ञानिक, वहां के लोग और वहां के बुद्धिजीवी इस साधना को सिद्ध करने के लिए बेताब है।

गोपनीय प्रयोग

मंत्र महोदधि, मंत्र महार्णव, शाक्त प्रमोद आदि ग्रन्थों में धूमावती साधना के बारे में प्रयोग दिये है, परन्तु मेरा अनुभव यह है कि इस प्रकार के प्रयोग से धूमावती सिद्ध नहीं हो सकती। मैंने प्रारम्भ में इन ग्रन्थों में लिखे हुए तरीके से धूमावती को सिद्ध करने का प्रयत्न किया था, पर मुझे इसमें सफलता नहीं मिली, पर जब मैं गुरुदेव के चरणों में पहुंचा तो लगभग चार वर्षों के बाद उन्होंने अत्यन्त गोपनीय और दुर्लभ एक दिवसीय साधना प्रयोग बताया, जिसके माध्यम से मुझे पहली बार में ही सफलता मिल गई, और इतने वर्ष बीतने के बावजूद भी मेरी साधना में कोई न्यूनता नहीं आई और आज मैं जो इतना बड़ा आश्रम संचालित कर रहा हूँ, नित्य सैकड़ों लोगों को भोजन करवा रहा हूँ, वस्त्र प्रदान कर रहा हूं, यह सब धूमावती साधना के माध्यम से ही संभव है। इसके माध्यम से मेरे आश्रम के सारे कार्य भूत प्रेत आदि करते है, और आश्रम की रक्षा, आश्रम की व्यवस्था और आश्रम के कार्य जिस सुचारू रूप से ये इतर प्राणी कर रहे है, उसको देखते हुए मैं सभी साधकों को सलाह दूंगा कि वे अवश्य ही धूमावती जयन्ती दिवस का उपयोग करे, इस साधना को सिद्ध करे, और जीवन में पूर्ण सफलता प्राप्त करे।
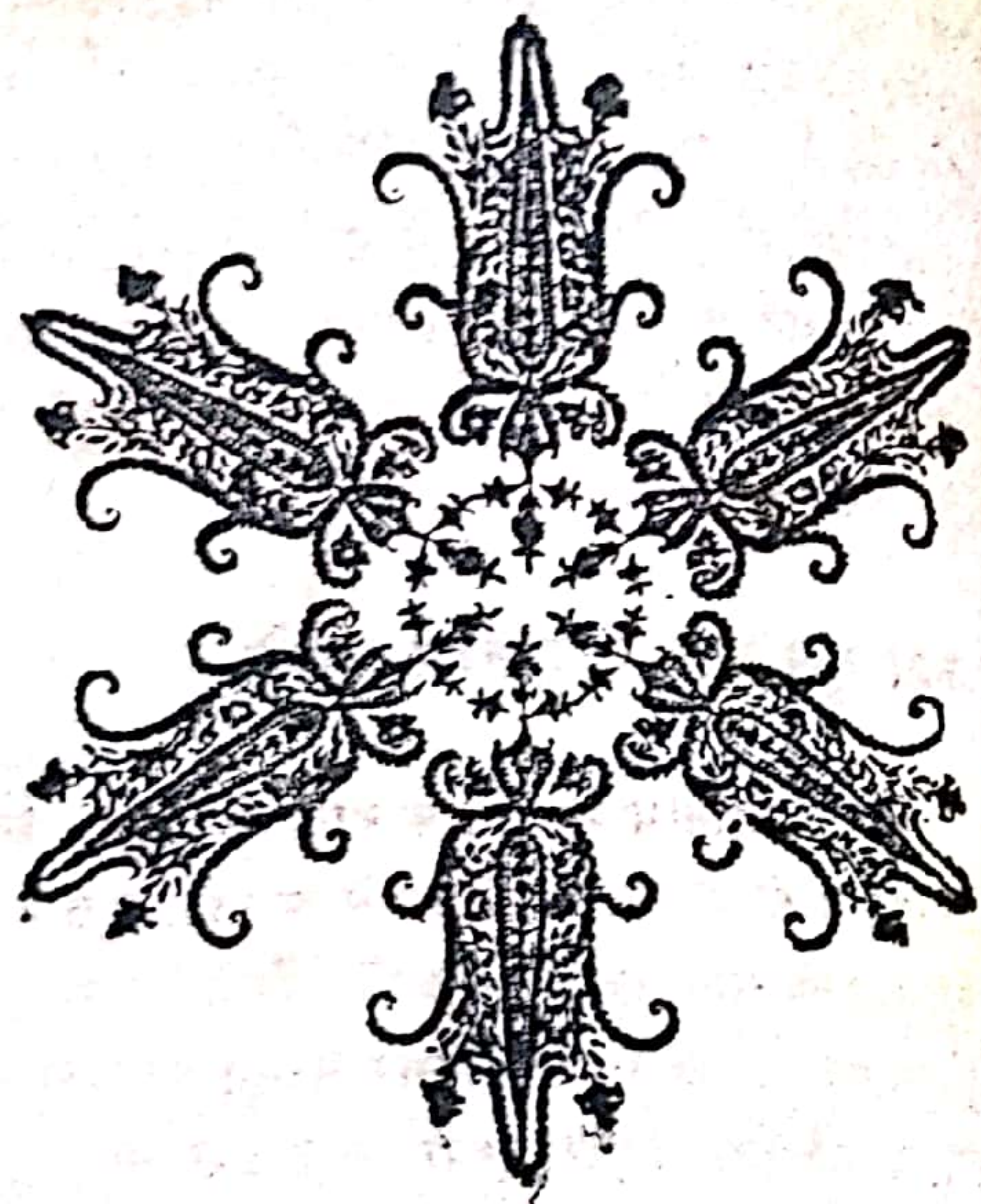
मैं पत्रिका के महत्वपूर्ण पाठकों और साधकों के लिए इस दुर्लभ प्रयोग को स्पष्ट कर रहा हूं, वे स्वयं इस दिन इस प्रयोग को सम्पन्न कर देख सकते है, कि यह प्रयोग कितना अधिक प्रामाणिक, कितना अधिक यथार्थ और कितना अधिक महत्वपूर्ण है, यदि साधक पूर्ण क्षमता और विश्वास के साथ इस एक दिवसीय साधना को सम्पन्न

Scanned by CamScanner

करता है, तो अवश्य ही उसे पूर्ण सफलता प्राप्त होती ही है।

साधना प्रयोग

११-६-८९ धूमावती जयन्ती के दिन साधक ठीक दोपहर को यह प्रयोग सम्पन्न करे। शास्त्रों में विधान है, कि जब व्यक्ति की छाया व्यक्ति के शरीर में ही समाहित हो तब यह साधना प्रारंभ करनी चाहिए। इस दृष्टि से यह समय इस दिन दोपहर को १२ बज कर ४२ मिनट से २ बज कर १० मिनट तक संपन्न होता है, इस अवधि में ही यह प्रयोग संपन्न करना चाहिए।

इसके लिए दुर्लभ और महत्वपूर्ण धूमावती यंत्र (न्यौछावर १९५) रू.) धूमावती चित्र (सर्वथा मुफ्त में) और धूमावती माला ८० रू.) की आवश्यकता होती है। अपने सामने तांबे का एक पात्र स्थापित करे उसके मध्य में पीली सरसों की ढेरी बनावे, सौर उस पर धूमावती यंत्र को स्थापित कर दे। इससे पहले ही धूमावती चित्र को कांच के फ्रेम में मढ़वा कर पीछे स्थापित कर देना चाहिए।

फिर सामने मिट्टी का एक बड़ा सा दीपक रखे, और उसमें सरसों का तेल भर कर रूई की बत्ती बना कर उसको जलावे, दीपक का मुंह साधक की ओर होना चाहिए।

इसके बाद साधक स्नान कर लाल धोती पहिन कर अपने कंधों पर भी लाल धोती ही डाले और धूमावती यंत्र की संक्षिप्त पूजा करे। इस पूजन में उस यंत्र को जल से स्नान करा कर उसे पौछ कर केसर का तिलक करे, उस पर अक्षत (चावल) चढावे और पुष्प समर्पित करे। इसके बाद निम्न प्रकार से अपने शरीर को स्पर्श करता हुआ, अंग न्यास करे।

अंग न्यास

ॐ धां हृदयाय नमः,

आज मैं जो इतना बड़ा आश्रम संचालित कर रहा हूं नित्य सैकड़ों लोगों को भोजन करवा रहा हूं, वस्त्र प्रदान कर रहा हूं ये सब धूमावती साधना के माध्यम से ही संभव है, इसके माध्यम से मेरे आश्रम के सारे कार्य भूत प्रेत आदि करते है, और आश्रम की रक्षा, आश्रम की व्यवस्था और आश्रम के कार्य जिस सुचारू रूप से ये इतर प्राणी कर रहे है, उसको देखते हुए मैं सभी साधकों को सलाह दूंगा कि वो अवश्य ही धूमावती जयन्ती दिवस का उपयोग करे, इस साधना को सिद्ध करे, और जीवन में पूर्ण सफलता प्राप्त करे।

ॐ धीं शिरसे स्वाहा
ॐ धूं शिखायै वषट
ॐ धैं कवचाय हुं
ॐ धौं नेत्रत्रयाय वौषट्
ॐ धः अस्त्राय फट्

इसके बाद कर न्यास करे।

कर न्यास

ॐ धां अगुष्ठाम्यां नमः
ॐ धीं तर्जनी म्यां स्वाहा
ॐ धूं मध्यमाभ्यां वषट्

ॐ धें अनामिकाभ्यां हुं
ॐ धौं कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्
ॐ धः करतल कर पृष्ठाभ्यां फट्

इसके बाद दोनों हाथ जोड़ कर ध्यान करें।

ध्यान

विवर्णा चंचला कृष्णा दीर्घा च मलिनाम्बरा ।।
विमुक्तकुन्तला रूक्षा विधवा विरलद्विजा
काकध्वजरथारूढा विलम्बितपयोधरा ।।
शूर्पहस्तातिरूक्षाक्षा, धूतहस्ता वरान्विता ।।२।।
प्रवृद्धघोणा तु भृशंकुटिला कुटिलेक्षणा ।।
क्षुत्पिपासार्दिता नित्यम्भयदा कलहास्पदा ।।३।।

साधक को दिन को तो इतना ही प्रयोग करना है, उसके बाद साधक खड़े हो कर उपरोक्त ध्यान का इक्यावन बार उच्चारण करे, और फिर दीपक को लगा रहने दे और स्वयं आसन से उठ जाय।

फिर रात्रि को इसका मुहूर्त १२ बज कर ३५ मिनट से २ बज कर ४१ मिनट तक है, इस बीच साधक लाल धोती पहिन कर दक्षिण दिशा की ओर मुंह कर सामने जलते हुए दीपक की लौ पर आंखों को एकाग्र करता हुआ धूमावती माला से निम्न मन्त्र का जप करे, इसमें जप की संख्या निर्धारित नहीं है, इस अवधि में लगातार जितना जप हो जाय उतना बराबर करता रहे।

धूमावती का गोपनीय मंत्र

धूं धूं धूमावती ठः ठः

इस मंत्र का बराबर जप करे, जब दो बज कर ४१ मिनट हो जाय तो साधक को दीपक की लौ में निश्चय ही धूमावती के दर्शन स्पष्ट हो सकेंगे। उस समय साधक हाथ जोड़ कर कहे, कि आप सिद्ध हों, और भूत, प्रेत आदि मेरे नियंत्रण में रहे, ऐसा कह कर उन्हें भक्ति भाव से प्रणाम करे, वह माला गले में धारण कर ले और यंत्र को सुरक्षित स्थान पर रख दें।

इस प्रकार यह साधना संपन्न होती है और धूमावती सिद्ध हो जाती है। इसके बाद साधक धूमावती यन्त्र के सामने धूमावती माला पहिन कर मात्र इक्यावन बार धूमावती मंत्र का उच्चारण करे तो प्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष धूमावती आंखों के सामने साकार उपस्थित हो जाती है, और उससे जो भी निवेदन किया जाता है वह तुरन्त और निश्चय ही पूर्ण होता है।

वास्तव में ही यह साधना अपने आप में दुर्लभ, महत्वपूर्ण और गोपनीय है जिसे मैंने पत्रिका पाठकों के लिए स्पष्ट किया हैं, मुझे विश्वास है कि इस घोर कलियुग में भी इस विशेष दिन पर इस विशेष साधना को संपन्न कर साधक सिद्धि प्राप्त कर आलोचक लोगो को विश्वास दिला सकेंगे कि आज के युग में भी साधना में सिद्धि संभव है, और इस साधना के द्वारा साधक स्वयं सभी दृष्टियों से सम्पन्न, सुखी और सफल हो सकेगा।

एक प्रयोगः गोरखनाथ पद्धति से

किसी भी अमावस्या की आधी रात को साधक काली धोती पहिन कर दोनों पैरों के नीचे एक-एक काले मनको की हकीक माला (प्रत्येक माला की न्यौछावर ६०/रू.) रख कर खड़े हो कर तीन घण्टे निम्न मन्त्र का जप करें, तो निश्चय ही भूत सिद्ध हो जाता है, और वह जीवन भर आज्ञा पालक बना रहता है।

ह्रीं क्रीं भूताय वश्यं फट् ।।

यह अनुभूत और खरा प्रयोग है।

संसार की दुर्लभ

अष्टसिद्धि साधना

प्रयोग

यों तो हमारे शास्त्रों में सैकड़ों साधनाएं दी हुई है, परन्तु "अष्टसिद्धि" साधना तो जीवन का एक अद्वितीय प्रयोग और साधना है। स्वयं विश्वामित्र ने इस साधना को सम्पन्न करने के बाद बताया था कि इससे ज्यादा महत्वपूर्ण और कोई साधना नहीं है, इस साधना को करने के बाद अन्य किसी भी प्रकार की साधना करने की जरूरत नहीं है। इस एक साधना से ही जीवन के सारे मनोरथ पूर्ण हो जाते है, और व्यक्ति जिस प्रकार से चाहता है, उसी प्रकार से सफलता प्राप्त कर लेता है।

महर्षि विश्वामित्र ने इन अष्ट सिद्धियों के नाम इस प्रकार बताये है—

(१) द्वि-लोचना

यह श्रेष्ठ देवी है, सिद्ध से करने से विविध प्रकार के वस्त्र, अलंकार स्वर्ण आदि स्वतः प्राप्त होता रहता है। विश्वामित्र ने इसे सर्वश्रेष्ठ देवी कहा है, जब यह सिद्ध हो जाती है तो हर क्षण साधक के साथ रहती है, और वह जब भी किसी भी पदार्थ की याचना करता है तो वह तुरन्त पूर्ति करती है।

मन्त्र-ध्यान

द्वि-भुजां शुक्ल रूपां च खेलत्खंजन भामिनीं।
द्वि-लोचनां शशिकलां सिन्दूर तिलकोज्ज्वलां॥
तप्त हाटक निर्माण नानालंकार-भूषितां।
दाड़िमी बीज सदृश - दशन - द्युति - शोभनां॥

(२) सिद्धि दा

यह देवी जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में सिद्धि देने वाली है और साधक अपने मन में जिस कार्य की पूर्णता चाहता है, वह कार्य तुरन्त इस देवी के माध्यम से सम्पन्न हो जाता है, इस सिद्धि को सिद्ध करने पर जीवन का कोई भी संकल्प, कोई भीं लक्ष्य अधूरा नहीं रहता और व्यक्ति निरन्तर उन्नति करता रहता है।

मन्त्र-ध्यान

सिद्धिदा शुक्ल चार्वा यज् ज्ञात्वा सिद्धिता व्रजेत्।
कुन्द पुष्प समाभासां द्विभुजां लोल लोचनां॥
शुक्ल वस्त्र परीधानां शुक्लाभरण भूषितां।
सिन्दूर तिलकद्दीप्तां खजनांचित लोचनां॥

(३) कटाक्षा

यह गन्धर्व जाति की अप्सरा है, और इसे सिद्ध करने पर वह प्रेमिका रूप में निरन्तर साधक के साथ रहती है, और प्रत्येक प्रकार से उसे सुख प्रदान करती हुई, साधक को धन वस्त्र आदि से सम्पन्न करती है।

मन्त्र-ध्यान

शुद्ध स्फटिक संकाशां श्वेत वस्त्रोपरिद्-स्थितां।
हास्य युक्तां प्रसन्नास्यां कटाक्ष विशिखोज्ज्वलां॥

कन्दर्प धनुराकार भूतलां परिशोभितां।
मृणाल सदृशाकार बाहु वल्ली विराजिता॥

(४) लोल-लोचना

यह देवी जीवन में भोग, सुख, सौभाग्य धन-धान्य, यश, प्रतिष्ठा, आदि देने में सिद्ध देवी है, इसको सिद्ध करने पर भौतिक दृष्टि से जीवन में किसी प्रकार की कोई कमी नहीं रहती।

मन्त्र-ध्यान

कुन्द पुष्प समाभासां द्वि–भुजा लोल लोचनां।
कटाक्ष विशिखोद्दीप्तां सिन्दूर तिलकोज्ज्वलां॥

दाड़िमी बीज सदृश दशन द्युतिमुज्ज्वलां।
द्वि-भुजां चन्द्र वदनां ध्यायेदात्म विभूतये॥

(५) शशि-शेखरा

यह वायवीय सिद्धि देवी है, इसे सिद्ध करने पर व्यक्तिवायु को मार्ग से आने जाने की सिद्धि प्राप्त हो जाती है। ऐसा साधक सूक्ष्म शरीर से कहीं पर भी विचरण करने में समर्थ होता है, वास्तव में ही यह अपने आप में महत्वपूर्ण सिद्धि है।

मन्त्र-ध्यान

शरच्चन्द्र प्रतीकाशां द्वि-भुजां शशि शेखरां।
लोचन द्वय संयुक्तां खेलत् खंजन गामिनीं॥

सिन्दूर तिलकोद्दीप्तामंजनांचित लोचना।
कटाक्ष विशिखोपेतां मूलता परिशोभितां॥

[६] कुटिला

यह अत्यन्त ही प्रचण्ड देवी है, और शत्रुओं का संहार करने में पूरी तरह से समर्थ है, इसे सिद्ध करने पर जीवन में शत्रु बाधा नहीं रहती और मुकदमे आदि में निश्चित रूप से पूर्ण सफलता प्राप्त होती रहती है। वास्तव में ही प्रत्येक साधक को यह साधना सिद्ध करनी चाहिए, जिससे उसके मार्ग में और जीवन में किसी प्रकार की बाधा या अड़चन न आवे।

मन्त्र-ध्यान

राका चन्द्र प्रतीकाक्षां द्वि भुजां चन्द्र शेखरां।
पूर्ण चन्द्र मुख श्रेणीं कुटिलालक शोभितां॥

हास्य युक्तां प्रसन्नास्यां श्वेत वस्त्र परिच्छदां।
श्वेताभरण शोभाढ्या किशोरी नव यौवनां॥

[७] धनदा

जीवन में अतुलनीय धन, व्यापार वृद्धि और आकस्मिक धन प्राप्ति के लिए यह श्रेष्ठ सिद्ध देवी है, जिसे प्रत्येक साधक सिद्ध करना चाहता है।

मन्त्र-ध्यान

केतकी पुष्प संकासा भूतला परिभूषितां।
नाना कटाक्ष संयुक्तां मत्त-द्विरद-गामिनीम्॥

नानालंकार सुभगां पीत वस्त्र परिच्छदां।
पीत गन्ध प्रलिप्तांगीं सिन्दूर तिलकोज्ज्वलां॥

[८] नवयौवना

पूर्ण आरोग्य, रोग रहित जीवन, आकर्षक शरीर, और निरन्तर यौवन प्रदान करने में समर्थ यह देवी जीवन के लिए आवश्यक है, और सिद्धिदायक है, प्रत्येक साधक को अवश्य ही इसकी साधना सिद्ध करनी चाहिए।

मन्त्र-ध्यान

शुद्ध स्फटिक संकासा हरिद् वस्त्र विनोदिनीं।
नानालंकार सुभगां पीत माल्य परिच्छदां॥

कटाक्ष विशिखाद्दीप्तां सिन्दूर तिलकोज्ज्वलां।
हास्य युक्ता प्रसन्नास्या किशोरीं नव-यौवना॥

उपरोक्त आठों मन्त्र ध्यान अपने आपमें गोपनीय और दुर्लभ है साधक अपने जीवन में इस प्रकार की साधना सिद्ध कर सकता है।

विश्वामित्र ने स्वयं इस साधना को और इनमें से प्रत्येक सिद्धिदायक देवी को सिद्ध कर दुनियां को यह बता दिया था कि जो दृढ़ निश्चयी होते है, जो अपने जीवन में कुछ करना चाहते है, जो स्वयं चमत्कार देखना चाहते है और दुनियां को चमत्कार दिखाना चाहते है, उनके लिए यह "अष्ट सिद्धि साधना" जीवन की श्रेष्ठतम साधना है, कोई अभागा व्यक्ति ही होगा कि इस इस प्रकार की श्रेष्ठ साधना प्राप्त होने के बावजूद भी इन सिद्ध देवियों को अपने वश में न कर सके और सफलता प्राप्त न कर सके।

साधना कब करे ?

तांत्रिक ग्रन्थों में इस साधना को अत्यन्त दुर्लभ, गोपनीय और महत्वपूर्ण बताया है, उन्होंने स्पष्ट रूप से बताया है कि यह साधना केवल शुक्रवार की रात्रि को ही सम्पन्न की जाती है, और इस साधना में तीन शुक्रवार का प्रयोग करना चाहिए।

कहने का भाव यह है कि पहली शुक्रवार की रात को इस साधना को प्रारम्भ करे, अगले शुक्रवार की रात्रि को फिर इसी साधना को करे, और इसके बाद फिर अगले शुक्रवार की रात्रि को यह साधना सम्पन्न कर सिद्धि प्राप्त करे, इस प्रकार से इस साधना में तीन लगातार शुक्रवार का प्रयोग होता है।

साधना सामग्री

इस साधना में निम्न पदार्थों की आवश्यकता होती है, जिसे साधक को चाहिए कि पहले से ही तैयार कर के रखे- (१) जल पात्र, (२) अष्टगन्ध (३) इक्कीस पुष्प (४) दूध का बना हुआ प्रसाद (५) आठ घृत के दीपक।

इसके अलावा संबंधित सिद्ध देवी का यंत्र भी आवश्यक है। इसमें प्रत्येक देवी का अलग अलग यंत्र तैयार होता है, जो कि पूर्ण रूप से सिद्ध और मंत्र चैतन्य होता है। साधक चाहे तो इनमें से किसी एक सिद्ध देवी की साधना सम्पन्न करले, और चाहे तो एक साथ आठों सिद्ध देवियो की साधना प्रारम्भ कर दें।

अधिकतर साधक इन आठो सिद्धियों को एक साथ सम्पन्न करता है, जिससे कि उसके जीवन में सभी दृष्टियों से पूर्णता सफलता और श्रेष्ठता प्राप्त होती है, वास्तव में ही प्रत्येक साधक को यह साधना सिद्ध कर ही लेनी चाहिए।

साधना कैसे करे ?

शुक्रवार की रात्रि को साधक या साधिका स्नान कर

सफेद धोती या सफेद साड़ी पहन ले, अपने शरीर पर सभी वस्त्र सफेद ही धारण करे, फिर सामने किसी पात्र में "अष्टगन्ध" से उस सिद्ध देवी का नाम लिखे, जिसे सिद्ध करना चाहता है, यदि आठों सिद्धियों को एक साथ सम्पन्न करना चाहता है, तो आठों सिद्धियों के नाम किसी सिक्के की सहायता से या चांदी की शलाका से पात्र में लिख दे और उस पर चावल की ढेरी बना कर इस पर संबधित सिद्ध देवी का यत्र स्थापित कर दें।

फिर जल से और अष्टगन्ध से देवी की पूजा करे, और प्रत्येक के सामने एक एक पुष्प समर्पित करे, इस प्रयोग में किसी भी प्रकार के पुष्प काम में लाये जा सकते है।

बाद में आठ पुष्प बिछाकर उस पर आठ दीपक स्थापित करे, जो कि शुद्ध घृत के हो, और दीपको को जला ले, फिर चारों दिशाओं में एक एक पुष्प फेंक दे और एक पुष्प अपने आसन के नीचे रख दे। इस प्रकार २१ पुष्पों का प्रयोग किया जाना है।

इसके बाद जिस देवी को सिद्ध करना है, उसके मंत्र ध्यान का ३६ बार उच्चारण करे। आठों देवियों को सिद्ध करना है, तो आठों मंत्र ध्यान ३६ बार उच्चारण करें।

फिर अगले शुक्रवार को भी इसी प्रकार प्रयोग कर, ३६ बार उच्चारण करे और तीसरे शुक्रवार को भी ऐसा ही करे। इस प्रकार तीनों शुक्रवारों को मिलाकर १०८ बार उच्चारण हो जाता है।

तीसरे शुक्रवार को जब मंत्र जप उच्चारण पूरा हो जाय और उस समय वह संबंधित सिद्ध देवी सामने उप-स्थित हो जाय तो विचलित नहीं हो तथा घबराये नहीं। अपने आसन के नीचे जो पुष्प रखा हुआ है, उसे वहां से हटाकर देवी के दाहिने हाथ में दे दे, इस प्रकार करने पर वह देवी सिद्ध हो जाती है।

तीसरी बार या तीसरे शुक्रवार की रात्रि को जब देवी सिद्ध हो जाय और उसके दर्शन हो जाय तब संबंधित यंत्र सामने पूजा स्थान में स्थापित कर दें, भविष्य में जब भी उस देवी को बुलाना हो, तो उस से सबंधित ध्यान मंत्र उच्चारण करने पर वह देवी प्रत्यक्ष प्रगट हो कर कार्य पूरा कर लेती है।

यदि साधक आठों सिद्ध देवियों को एक साथ सिद्ध करता है, तो भी भविष्य में इन आठों में से जिस देवी को भी अपने सामने बुलाना चाहे या जिस देवी से संबं-धित कार्य सम्पन्न करना चाहे, उस देवी से संबंधित यन्त्र ध्यान का उच्चारण किया जाय तो वह सामने स्पष्ट होती है और साधक का मनोवांछित कार्य तुरन्त पूर्ण कर लेती है।

इस प्रकार यह साधना सिद्ध होती है, और एक बार सिद्ध करने के बाद पूरे जीवन भर वह अष्ट सिद्धि साधना सिद्ध रहती है।

वास्तव में ही इस घोर कलियुग में यह एक चम-त्कारिक साधना है, और यदि साधक प्रामाणिक संबं-धित यन्त्र प्राप्त कर पूर्ण श्रद्धा के साथ साधना सम्पन्न करता है, तो उसे अवश्य ही पूर्ण सिद्धि प्राप्त होती है।

Scanned by CamScanner

सोमवती अमावस्या (३-७-८९) के अवसर पर

सिद्धिदा

सिद्धेश्वरी साधना

इन पंक्तियों के माध्यम से मैं एक विशेष साधना पद्धति पत्रिका पाठकों और साधकों को दे रहा हूं, अपने आप में अदभुत चमत्कारिक यह सिद्धेश्वरी साधना है, जिसके माध्यम से जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में पूर्ण सिद्धि संभव है। बिहार और भारत के दक्षिणी प्रदेश में तो सिद्धेश्वरी साधना को जीवन का प्रमुख आधार माना है। कामाक्षा आदि पीठों में सिद्धेश्वरी साधना को जीवन की समस्त कामनाओं की सिद्धि माना है।

सिद्धेश्वरी साधना का तात्पर्य जीवन में सभी दृष्टियों से पूर्ण सिद्धि प्राप्त करना है। जो अपने जीवन में एक बार सिद्धेश्वरी साधना कर लेता है, उसे अपने जीवन में किसी प्रकार की कोई कमी नहीं रहती। जो श्रेष्ठ साधक है, जो अपने जीवन में तीर की तरह आगे बढ़कर पूर्ण सफलता प्राप्त करना चाहते है, जो अपने जीवन में पूर्ण सिद्धि पुरूष बनना चाहते है, उन्हें अवश्य ही इस अवसर का लाभ उठाना चाहिए और सफलता प्राप्त करनी चाहिए।

यह एक दिन की साधना है, और सोमवती अमावस्या के दिन ही सम्पन्न की जा सकती है।

सबसे पहले साधक श्रद्धा के साथ सिद्धेश्वरी साधना को सम्पन्न करने का निश्चय करें, और भक्ति भाव से इस साधना को सम्पन्न करे। प्रातः काल उठकर शुद्ध जल से स्नान करे, और सफेद धोती धारण करे, अपने कन्धों पर भी सफेद धोती ही डाले फिर अपने पूजा स्थान में उत्तर की ओर मुंह कर बैठ जाय, साधक चाहे तो अपनी पत्नी के साथ भी इस साधना की सिद्धि कर सकता है।

इस साधना को पुरूष या स्त्री कोई भी कर सकता है, उच्चकोटि के योगियों का इस संबंध में यह कथन है, कि चाहे, कितनी ही कठिन समस्या हो, चाहे कैसी ही

Scanned by CamScanner

बाधा हो, इस साधना से तुरन्त सफलता प्राप्त होती है, और जो मन में निश्चय होता है, वह अवश्य ही साधना सम्पन्न होते होते पूरा हो जाता है। कई बार तो साधना के समापन के पूर्व ही अनुकूल समाचार प्राप्त हो जाते है।

साधना विधि

सबसे पहले साधक उत्तर की ओर मुंह कर बैठे और अपने वाम भाग या बांई ओर पांच चावल की ढेरिया बना कर हाथ जोड़ें और उच्चारण करे—

(१) पृथिव्यै नमः (२) आधार शक्तये नमः (३) अनन्ताय नमः, (४) कूर्माय नमः, (५) शेष नागाय नमः, इस प्रकार से इन पांचों को स्थापित करते हुए इनको प्रणाम करें।

फिर हाथ में जल लेकर संकल्प करें, कि मैं समस्त कामनाओं की पूर्ति और पूर्णतः भोग, यश, सम्मान के साथ मनोवांछित कामना पूर्ति के लिए मैं अमुक गौत्र का व्यक्ति अमुक नाम का साधक यह साधना सम्पन्न कर रहा हूं।

फिर दाहिने हाथ की ओर एक लाल वस्त्र बिछाकर उस पर नौ ढेरिया चावल की बनावे और नवग्रहों की स्थापना करते हुए, हाथ जोड़ कर उन्हें प्रणाम करें (१) श्री सूर्याय नमः, (२) श्री चन्द्रमाय नमः (३) श्री भौमाय नमः (४) श्री बुद्धाय नमः (५) श्री गुरूवै नमः (६) श्री शुक्राय नमः (७) श्री शनिश्चर्यै नमः (८) श्री राहवे नमः (९) श्री कैतवै नमः इस प्रकार इन नवग्रहों की सामान्य पूजा करे।

सिद्धेश्वरी प्रयोग

इसके बाद दुर्लभ सिद्धेश्वरी यंत्र को सामने किसी पात्र में स्थापित कर दे और कच्चे दूध से उसे स्नान करावे फिर जल से धो कर उस पात्र को स्वच्छ कर पात्र में कुंकुम का त्रिकोण बनावे और उस पर सिद्धेश्वरी यंत्र को रख दें। यह सिद्धेश्वरी यंत्र अपने आपमें ही अत्यन्त दुर्लभ अद्वितीय और महत्वपूर्ण माना गया है। इसके बाद हाथ में पुष्प लेकर भगवती श्री सिद्धेश्वरी देवी का ध्यान करें—

उद्यन्मार्तण्ड–कान्ति–विगलित--कवरी कृष्ण-वस्त्रावृतांगाम्

दण्डं लिंगं कराब्जैर्वरमथ भुवनं सन्दधतीं त्रिनेत्राम्।

नाना रत्नैर्विभातां स्मित मुख-कसलां सेवितां देव सर्वे

र्माया–राज्ञीं नमौदभूत स-रवि-कल तनूमाश्रर्य ईश्वरी त्वाम्॥

ऐसा कहते हुए हाथ में लिये पुष्प यंत्र को अर्पित कर दें, और भक्तिभाव से इस यंत्र को प्रणाम करे।

इसके बाद शास्त्रों के विधान के अनुसार यंत्र की पूरी पूजा करे, पूरी पूजा से मेरा तात्पर्य-केसर का तिलक करे, अक्षत, पुष्प चढ़ावे, नैवैद्य का भोग लगावे और सामने पांच दीपक तथा अगरबत्ती प्रज्वलित करें। ये पांचों दीपक शुद्ध घृत के होने चाहिए और ये पांचों ही दीप चौबीस घण्टे तक अखण्ड प्रज्जवलित रहेंगे अर्थात् सोमावती अमावस्या को दिन के जितने बजे ये दीप प्रज्जवलित किये है, दूसरे दिन उतने ही बजे तक ये दीप अखण्ड लगते रहने चाहिए।

इसके बाद अपने घर में सिद्धेश्वरी देवी का आहवान निम्न मंत्रों से करे—

Scanned by CamScanner

आह्वान

ॐ एं ह्रीं श्रीं सिद्धेश्वरी सर्व-जन मनोहारिणी दुष्ट मुख स्तम्भिनी, सर्व स्त्री पुरूषकर्षिणी शत्रु भाग्य त्रोटय त्रोटय सर्व शत्रुणां भजय भंजय सर्व शत्रुणां दलय दलय निर्दलय निर्दलय स्तम्भय स्तम्भय उच्चाटय उच्चाटय सर्व जन वशं कुरू कुरू स्वाहा । देवि सिद्धेश्वरि इहागच्छ इहा तिष्ठ मम मनोवांछित कामना सिद्धयर्थ मम सपरिवारं रक्ष रक्ष सिद्धि देही देही नमः

उपरोक्त मंत्र अपने आप में अत्यन्त महत्वपूर्ण है, और साधक को चाहिए कि वह उपरोक्त आह्वान मन्त्र का तीन बार उच्चारण कर, भगवती सिद्धेश्वरी देवी को अपने घर में स्थापित करे ।

इसके बाद नारियल तोड़ कर उसकी गिरी का भोग लगावे, और हाथ में जल ले कर विनियोग करे—

विनियोग

ॐ अस्य श्री सिद्धेश्वरी-कवचस्य वशिष्ठ ऋषिः श्री सिद्धेश्वरी देवता, सकल, कार्यार्थ–सिद्धये जपे विनियोगः

इसके बाद सिद्धेश्वरी कवच के पाठ करने का विधान है, इसमें कोई मंत्र नहीं है, अपितु सिद्धेश्वरी कवच को ही मंत्र माना है । चौबीस घण्टों में १०८ बार सिद्धेश्वरी कवच का पाठ करना ही पूर्ण सिद्धि है ।

प्रत्येक पांच कवच पाठ के बाद एक बार क्षमा-स्तोत्र का पाठ करे इस प्रकार २४ घण्टों में यह प्रयोग सम्पन्न कर दिया जाना चाहिए । साधक चाहे तो प्रत्येक इक्कीस पाठ के बाद कुछ समय के लिए विश्राम कर सकता है ।

पूज्य गुरुदेव

सिद्धेश्वरी कवच

संसार तारिणी सिद्धा पूर्वस्यां पातु मां सदा,
ब्रह्माणी पातु चाग्नेयां दक्षिणे दक्षिण प्रिया ।।१।।

नैऋत्यां चण्ड मुण्डा च पातु मां सर्वतः सदा,
त्रि-रूपा सा मता देवी प्रतीच्यां पातु मां सदा ।।२।।

वायव्यां त्रिपुर पातु ह्य त्तरे रूद्र-नायिका
ईशाने पद्म-नेत्रा च पातु ऊर्ध्वं त्रिलिंगका ।।३।।

दक्ष-पार्श्वे महा-माया वाम पार्श्वे हर-प्रिया
मस्तकं पातु मे देवी सदा सिद्धा मनोहरा ।।४।।

Scanned by CamScanner

भालं मे पातु रूद्राणी नेत्रें भुवन-सुन्दरी
सर्वतः पातु में वक्त्रं सदा त्रिपुर-सुन्दरी
॥५॥

श्मशाने भैरवी पातु स्कन्धा मे सर्वतः स्वयम्,
उग्र पार्श्व महा-ब्राह्मी हस्तौ रक्षतु चाम्बिका
॥६॥

हृदयं पातु वज्रांगी निम्न-नाभिर्नभस्तले,
अग्रतः परमेशानी परमानन्द विग्रहा ॥७॥

पृष्ठतः कुमुदा पातु सर्वतः सर्वदा वतात्
गोपनीयं सदा देवी न कस्मैचित् प्रकाशयेत्
॥८॥

यः कश्चित् श्रृणयादेव तत् कवचं भैरवोदितं,
संग्रामे स जयेत शत्रुं मातंगमिव केशरी ॥९॥

न शस्त्राणि न च अस्त्राणि तद् देहे प्रविशन्ति वौ,
श्मशाने प्रान्तरे दुर्गे घोरे निगड़ बन्धने ॥१०॥

नौकायां गिरि-दुर्गे च संकटे प्राण संशये,
मन्त्र तन्त्र भये प्राप्ते विष वन्हि भयेषु च
॥११॥

दुर्गति सन्तरेद घोरां प्रयाति कमला पदं,
वन्ध्या वा काक वन्ध्या वा मृत वत्सा च यांगना
॥१२॥

श्रुत्वा स्तोत्रं लभेत् पुत्रं स-घनं चिर-जीविनं,
गुरौ मन्त्रै तथा देवे वन्दने यस्य चौत्तमा ॥१३॥

धीर्यस्य समतामेति तस्य सिद्धिर्न संशयः ॥१४॥

इसके बाद साधक "क्षमापन स्तोत्र" करे, जिसे मैं स्पष्ट कर रहा हूं।

क्षमापन स्तोत्र

अपराध सहस्राणि क्रियन्ते हर्निशं मया, ।
दासो यमिति मां मत्वा क्षमस्व परमेश्वरि ॥

आवाहन न जानामि न जानामि विसजनं, ।
पूजा चैव न जानामि क्षमस्व परमेश्वरि ॥

मन्त्र-हीनं क्रिया-हीनं भक्ति-हीनं सुरेश्वरि, ।
यत्पूजित मया देवि परिपूर्ण तदस्तु मे ॥

अज्ञानद्विस्मृते भ्रान्त्या यन्न्यूनमधिकं कृतम् ।
तन्सर्व क्ष्यम्यता देवि प्रसीद परमेश्वरि ॥

सिद्धेश्वरि जगन्मातः सच्चिदानन्द-विग्रहे, ।
गहाणार्चामिमां प्रीत्या प्रसीद परमेश्वरि ॥

गुह्याति-गुह्य गोप्त्री त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपं,
सिद्धिर्भवतु में देवि त्वत्प्रसादात्सुरेश्वरि ॥

एक बार मैं पुनः साधकों को याद दिला दूं कि प्रत्येक पांच सिद्धेश्वरी कवच के पाठ के बाद एक बार क्षमापन स्तोत्र का उच्चारण किया जाता है। क्षमापन स्तोत्र की गणना नहीं की जाती, कुल १०८ सिद्धेश्वरी कवच के पाठ २४ घण्टों में आवश्यक है, जब पाठ समाप्त हो जाय तब श्रद्धायुक्त आरती करे, और सिद्धेश्वरी कवच को पूजा स्थान में स्थापित कर दे।

वास्तव में ही यह प्रयोग संसार का श्रेष्ठतम और अपने आपमें अद्वितीय प्रयोग है, जिसका उपयोग साधकों को करना चाहिए, और मैंने इस गोपनीय प्रयोग को इसी निमित्त पत्रिका के इस अंक में स्पष्ट किया है, मुझे विश्वास है कि साधक इससे लाभ उठायेगे। ●

Scanned by CamScanner

सिद्धि दिवस ३१.८.८६

श्री भुवनेश्वरी खड्ग माला सिद्धि

शास्त्रों में पूर्ण धन और ऐश्वर्य की देवी को भुवनेश्वरी माना है, यही एक महाविद्या है जो आकस्मिक धन प्रदान करने में समर्थ है, शाक्त प्रमोद के अनुसार जो साधक जीवन में एक बार भुवनेश्वरी सिद्ध कर लेता है, उसके जीवन में किसी प्रकार की कोई न्यूनता रहती ही नहीं ।

इस सिद्धि दिवस के अवसर पर निम्न प्रयोग सम्पन्न करने पर स्वयं भुवनेश्वरी प्रत्यक्ष दर्शन देती है, और साधक की समस्त मनोकामनाएं पूर्ण करती है ।

भुवनेश्वरी साधना रहस्य

इस पूरी साधना में "भुवनेश्वरी खड्ग माला" का विशेष महत्व है, इस माला को ही इस साधना में सिद्ध किया जाता है, और माला धारण करने पर हर क्षण भुवनेश्वरी साधक के साथ रहती हुई उसकी प्रत्येक मनोकामना पूर्ण करती है ।

इसको सिद्ध करने पर अन्य समस्त प्रकार की सिद्धियां स्वतः प्राप्त हो जाती है, इसलिए प्रयत्न करके भी साधक को सिद्धि दिवस के अवसर पर यह गोपनीय और दुर्लभ प्रयोग सम्पन्न करना चाहिए ।

सबसे पहले साधक सिद्धि दिवस की रात्रि को स्नान कर सफेद वस्त्र धारण कर सफेद आसन पर उत्तर दिशा की ओर मुंह कर बैठ जाय, और सामने पात्र में "भुवनेश्वरी शक्ति खड्ग माला" रख दे, यह माला जीवन की दुर्लभ और महत्वपूर्ण माला कही जाती है, जिसे १०८ महादेवियों के मन्त्र से सिद्ध की जाती है, इसका प्रत्येक मनका अपने आप में महत्वपूर्ण होता है ।

माला को स्थापन करने के बाद "ॐ भुवनेश्वर्यै नमः" का १०८ बार उच्चारण कर प्रत्येक मनके पर केसर का तिलक करे, और फिर उस पर पुष्प समर्पित करे, और फिर निम्न प्रकार से विनियोग करें ।

विनियोग

ॐ अस्य श्रीभुवनेश्वरी-खड्ग - माला-मन्त्रस्य श्रीप्रकाशात्मा ऋषिः, गायत्री छन्दः, श्रीभुवनेश्वरी देवता, हं बीजं, ई शक्तिः, रं कीलकं, श्रीभुवनेश्वरी-पराम्बा-प्रसन्नार्थे जपे विनियोगः ।

इसके बाद साधक बताये हुए अंगों को दाहिने हाथ से स्पर्श करते हुए, ऋष्यादि न्यास करें ।

ऋष्यादि न्यास

श्री प्रकाशात्मा-ऋषये नमः शिरसि, गायत्री-छन्दसे नमः मुखे, श्रीभुवनेश्वरी-देवतायै नमः हृदि, हं बीजाय नमः गुह्ये, ई शक्तये नमः पादयोः, रं कीलकाय नमः नाभौ, श्रीभुवनेश्वरी-पराम्बा प्रसन्नार्थे जपे विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे ।

और फिर पूर्ण मनोयोग पूर्वक अपने हाथों में पुष्प ले कर इस माला को पुष्प समर्पित करते हुए निम्न ध्यान संपन्न करें ।

Scanned by CamScanner

ध्यान

स्मरेद् रवीन्द्वग्नि-विलोचना तां, सत्-पुस्तकां जाप्य-वटीं दधानाम् ।
सिंहासनां मध्यम-यन्त्र-संस्थां, श्रीतत्त्व-विद्यां पराम्बां भजामि ।।
य एनां सचिन्तयेन्मन्त्री, सर्व-कामार्थ सिद्धिदाम् ।
तस्य हस्ते सदैवास्ति, सर्व-सिद्धिर्न संशयः ।।
तादृशं खड्गमाप्नोति, येन हस्त-स्थितेत वै ।
अष्टादश-महाद्वीपे, सम्राट् भोक्ता भविष्यति ।।

सिद्धि प्रयोग

इसके बाद सामने पात्र में जो भुवनेश्वरी शक्ति खड्ग माला रखी हुई है, उसके सामने निम्न दुर्लभ बीज मंत्र का उच्चारण करते हुए, एक एक पुष्प समर्पित करें, इसी प्रकार निम्न बीज मंत्र का इसी रात्रि को १०८ पाठ करें, और प्रत्येक पाठ की समाप्ति पर एक पुष्प खड्ग माला को समर्पित करें, इस प्रकार १०८ बार पाठ कर १०८ पुष्प समर्पित करें ।

शास्त्रों में कहा गया है, कि भुवनेश्वरी शक्ति खड्ग माला पर १०८ गुलाब के पुष्प समर्पित करें, पर यदि किसी कारण वश गुलाब के पुष्प प्राप्य न हों तो अन्य किसी भी प्रकार के पुष्प का प्रयोग किया जा सकता है ।

भुवनेश्वरी शक्ति खड्ग माला बीज मंत्र

ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं भुवनेश्वरी-हृदय-देवि शिरोदेवि शिखा-देवि कमन-देवि नेत्र-देव्यस्त्र-देवि कराले विकराले उमे सरस्वति श्रीदुर्गे उषे लक्ष्मि श्रुति स्मृति धृति श्रद्धे मेधे रति कान्ति आर्ये श्रीभुवनेश्वरि दिव्यौघ गुरू-रूपिणि सिद्धौघ-गुरू-रूपिणि मानवौघगुरु-रूपिणि श्रीगुरू-रूपिणि परम-गुरु-रूपिणि परात्पर-गुरू-रूपिणी परमेष्ठि-गुरू-रूपिणि अमृत भैरव-सहित – श्रीभुवनेश्वरि हृदय-शक्ति शिरः-शक्ति शिखा-शक्ति कवच-शक्ति नेत्र-भवत्यस्त्र -हृल्लेखे गगने रक्ते करालिके महोच्छूष्मे सर्वानन्द-मय-चक्र-स्वामिनी !

गायत्री-सहित-ब्रह्म-मयि सावित्री-सहित-विष्णु -मयि सरस्वती-सहित-रुद्र-मयि लक्ष्मी-सहित-कुबेर -मयि रति सहित-काम-मयि पुष्टि-सहित-विघ्न-राज-मयि शङ्ख-निधि-सहित - वसुधा-मयि पद्म-निधि-सहित-वसुमति-मयि गायत्र्यादि-सह-श्रीभुवनेश्वरि ह्रां हृदय-देवि ह्रीं शिरो-देवि ह्रूं कवच-देवि ह्रौं नेत्र-देवि ह्र अस्त्र-देवि सर्व सिद्धिप्रद-चक्र-स्वामिनि !

अनङ्ग - कुसुमे अनङ्ग-कुसुमातुरे अनङ्ग-मदने अनङ्ग मदनातुरे भुवन-पाले गगन वेगे शशि-रेखे अनङ्ग वेगे सर्व-रोग-हर चक्र-स्वामिनि !

कराले विकराले उमे सरस्वति श्रीदुर्गे उषे लक्ष्मि श्रुति स्मृति धृति श्रद्धे मेधे रति कान्ति आर्ये सर्व संक्षोभण-चक्र-स्वामिनी !

ब्राह्मि माहेश्वरि कौमारि वैष्णवि वाराही इन्द्राणि चामुण्डे महा-लक्ष्म्यनङ्ग-रूपेऽनङ्ग-कुसुमे मदनातुरे भुवन-वेगे भुवन पालिके सर्व-शिशिरेऽनङ्ग मदनेऽनङ्ग मेखले सर्वाशा-परिपूरक-चक्र-स्वामिनि !

इन्द्र मय्यग्नि-मयि यम-मयि वरूण-मयि वायु-मयि सोम-मयि-शान-मयि ब्रह्म-मयि दण्ड-मयि खड्ग-मयि पाश-मय्यंकुश-मयि गदा-मयि त्रिशूल-मयि पद्म-मयि चक्र-मयि वर-मय्यंकुश-मयि पाश मय्यभय-मयि बटुक-मयि योगिनि-मयि क्षेत्रपाल -मयि-गण-पति मय्यष्ट-वसु-मयि द्वादशादित्य-मय्ये -कादशरुद्र-मयि सर्व-भूत-मय्यमृतेश्वर-सहित-भुवनेश्वरि त्र्यैलोक्य-मोहन -चक्र-स्वामिनि नमस्ते नमस्ते नमस्ते स्वाहा श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ ।।

जब १०८ बार पाठ हो जाय तब पूर्ण श्रद्धा के साथ उस माला को अपने गले में धारण कर ले धारण करते ही पूरे कमरे में एक अनिवर्चनीय प्रकाश सा अनुभव होगा, और ऐसा लगेगा कि जैसे शरीर स्थित सभी चक्र जागृत हो गये हों साथ ही साथ साधक को सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड के विविध दृश्य अनुभव होने लगेंगे, जीवन में साधक को यह शक्ति माला धारण किये रहना चाहिए, इसे धारण करने पर व्यक्ति की कीर्ति चारों ओर फैलती है, और उसे समस्त कार्यों में निश्चय ही सिद्धि प्राप्त होती है, ऐसे साधक के घर में धन की तो निरन्तर वर्षा सी होती रहती है । ●

सहस्राक्षरी

सिद्ध चण्डी महाविद्या प्रयोग

सिद्धाश्रम पंचाग के अन्तर्गत भाद्रपद कृष्ण अष्टमी तदनुसार २४-८-८९ को श्री काली जयन्ती है। साधक इस दिन का मनोयोगपूर्वक इन्तजार करते है।

इस बार पत्रिका में अत्यन्त दुर्लभ गोपनीय और महत्वपूर्ण डामर तंत्र में उल्लिखित सहस्राक्षरी सिद्ध चण्डी महाविद्या प्रयोग प्रस्तुत कर रहा हूं।

वास्तव में ही जो सही अर्थो में साधक है, जो अपने जीवन में साधना क्षेत्र में आगे बढ़ना चाहते है, उनके लिए यह आवश्यक है कि वे कुछ ऐसी श्रेष्ठ साधनाएं सम्पन्न करे जो कि हजारों हजारों वर्षों से प्रचलित रही हो, जिसे कई कई वर्षो से आजमाया हो, और जो हर बार प्रामाणिकता की कसौटी पर खरी उतरी हो।

यह प्रयोग भी अत्यन्त प्राचीन और महत्वपूर्ण है, तंत्र ग्रन्थों के अनुसार यह भगवान शिव द्वारा प्रतिपादित सिद्ध प्रयोग है, जिसे समुद्र मंथन के अवसर पर हलाहल को पचाने के लिए स्वयं भगवान शिव के मुंह से उच्चरित हुआ था।

तांत्रिक ग्रन्थों के अनुसार पूर्ण सिद्धि प्राप्त करने के लिए स्वयं दुर्वासा ने इस प्रयोग को सिद्ध कर उस समय के ऋषि होने की संज्ञा प्राप्त की थी। जब दशरथ का कैकय नरेश से युद्ध हुआ, तो उनके कुलगुरू वशिष्ठ ने इस प्रयोग को सम्पन्न कर उन्हें विजय दिलाई, बाल्मीकी के आश्रम में महर्षि बाल्मीकी ने जब लव कुश को तंत्र साधना सिखाने का उपक्रम किया, तो सबसे पहले इसी साधना को सिखाया था जिससे कि वे हनुमान से भी युद्ध कर सके, और सफलता अर्जित कर सके। वायु पुत्र महावीर तो इस साधना के सिद्धहस्त आचार्य थे, और उनके द्वारा कई ऋषियों ने इस साधना को सम्पन्न किया था।

द्वापर युग में भी जब महा भारत युद्ध प्रारम्भ होने की स्थिति में था, इधर मात्र पांच पाण्डव ही थे, और उधर कौरवों की विशाल सेना थी, ऐसे समय में पूर्ण विजय प्राप्ति के लिए भगवान श्री कृष्ण ने अर्जुन को गुफा में ले जाकर इस साधना को सम्पन्न करवाया और उसके बाद ही महाभारत युद्ध प्रारम्भ किया, अर्जुन स्वयं आगे चल कर कहते हैं, कि मैंने और मेरे भाइयों ने विजय प्राप्त की, पर युद्ध में मैं देख रहा था, कि महाकाली स्वयं आगे बढ़ कर शत्रुओं का संहार कर रही है और हमें विजय पथ की ओर अग्रसर कर रही है।

वर्तमान में भी इस साधना रहस्य की प्रशंसा शंकराचार्य ने तो की ही है, उन्होंने स्वयं एक स्थान पर उल्लेख

Scanned by CamScanner

किया है, कि मेरे पास जितने भी तांत्रिक रहस्य है, उनमें सर्वाधिक महत्वपूर्ण "सहस्त्राक्षरी सिद्ध चण्डी महाविद्या" प्रयोग है, जिसके माध्यम से जीवन में असंभव कार्यों को भी संभव किया जा सकता है। गुरू गोरखनाथ तो इस साधना के बाद ही 'गुरू' शब्द से विभूषित हुए और विश्व में प्रसिद्धि प्राप्त की। वर्तमान में भी स्वामी अरविन्द, कपाली बाबा, स्वामी विशुद्धानन्दजी आदि योगियों ने इस साधना को सम्पन्न कर जीवन में पूर्णता प्राप्त की।

साधना रहस्य

यह साधना सरल है, परन्तु साथ ही साथ महत्वपूर्ण और अचूक भी। काली जयन्ती के अवसर पर रात्रि को यह साधना सम्पन्न की जा सकती है।

साधक सबसे पहले रात को ९ बजे के बाद सर्वथा नग्न हो कर स्नान करे, और फिर बिना किसी अन्य वस्त्र को स्पर्श किये पहले से ही धो कर सुखाये हुए सफेद वस्त्र (धोती) को धारण करें, और फिर सफेद आसन पर दक्षिण की ओर मुंह कर बैठ जाय।

सामने चमत्कारिक 'सहस्राक्षरी सिद्ध चण्डी महायंत्र' को स्थापित कर दे, और उसकी संक्षिप्त पूजा करे, इसके बाद हाथ में जल लेकर अपनी मनोकामना स्पष्ट करता हुआ विनियोग करें।

विनियोग

अस्य श्रीसर्व–महा-विद्या-महा-राज्ञी-सप्तशती-मन्त्र-रहस्याति-रहस्य–मयी-,परा-शक्ति-श्रीमदाद्या-भगवती-सिद्ध–चण्डी सहस्राक्षरी - महा - विद्यायाः श्रीमार्कण्डेय-सुमेधा ऋषी, गायत्र्या-नाना छन्दांसि, नव कोटि-रूपा-श्रीमदाद्या - भगवती सिद्ध-चण्डी देवता, श्रीमदाद्या–भगवती–सिद्ध-चण्डी - प्रसादाद-खिलेष्टार्थे जपे पाठे विनियोगः।

विनियोग के बाद साधक बताये हुए अंगों को स्पर्श करता हुआ, ऋष्यादि न्यास और अंग न्यास करे तत्पश्चात सामने सिद्ध चण्डी चित्र को स्थापित करे, और फिर हाथ जोड़ कर सिद्ध चण्डी चित्र और सहस्राक्षरी सिद्ध चण्डी महायंत्र को प्रणाम करते हुए ध्यान करे।

ऋष्यादि न्यास

श्रीमाकण्डेय–सुमेधा-ऋषिभ्यां शिरसे नमः। गायत्र्यादि-नाना-छन्दोभ्यो नमः मुखे। नव-कोटि-शक्ति-रूपा-श्रींमदाद्या-भगवती-सिद्ध-चण्डी-प्रसादा-दखिलेष्टार्थे जपे पाठे विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।

अङ्ग न्यास

ॐ श्रीं सहस्रारे। ॐ ह्रीं नमो भाले। ॐ क्लीं नमो नेत्र-युगले। ॐ ऐं नमः हस्त-युगले। ॐ श्रीं नमः हृदये। ॐ क्लीं नमः कटौ। ॐ ह्रीं नमः जङ्घा-द्वये। ॐ श्रीं नमः पादादि-सर्वाङ्गे।

ध्यान

ॐ या चण्डी मधु-कैटभादि-दलनी या माहिषो-न्मूलनी,
या धूम्रेक्षण-चण्ड-मुण्ड-मथनी या रक्त–बीजाशनी।
शक्तिःशुम्भ-निशुम्भ-दैत्य-दलनी या सिद्धि–दात्री परा
सा देवी नव-कोटि-मूर्ति-सहिता मां पातु विश्वेश्वरी॥

ध्यान के बाद सामने एक बड़ा तेल का दीपक लगा दे, और फिर दीपक की लौ में भगवती काली के बिम्ब को देखता हुआ, निम्न महाविद्या मंत्र का जप करे। एक रात्रि में इक्यावन मंत्र जप या १०१ मंत्र जप सम्पन्न करे, पूर्णता के लिए १०१ मंत्र जप का विधान है, एक रात में यह प्रयोग सम्पन्न हो सकता है।

Scanned by CamScanner

सहस्राक्षरी सिद्ध चण्डी महाविद्या मंत्र

ॐ ऐं श्रीं ह्सौं श्री ऐं ह्रीं क्लीं सौः सौः ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं जय जय महा-लक्ष्मी, जगदाद्ये, विजये, सुरा-सुर त्रिभुवन-निदाने, दयांकुरे, सर्व देव-तेजो-रूपिणि, विरंच-संस्थिते, विधि-वरदे, सच्चिदा-नन्दे, विष्णु-देहावृते, महा-मोहिनी, मधु-कैटभादि-घोपिणि, नित्य-वरदान-तत्परे, महा - सुधाब्धि-वासिनि, महा-तेजो-धारिणी, सर्वाधारे, सर्व-कारण -कारिणे, अचिन्त्य रूपें, इन्द्रादि - सकल-निर्जर -सेविते, साम-गान-गायनपरिपूर्णोदय कारिणी, विजये, जयन्ति, अपराजिते, सर्व-सुन्दरि, रक्तांशुके, सूर्य-कोटि-संकाशे, चन्द्र-कोटि-सुशींतले अग्नि कोटि-दहन-शीले, यम-कोटि-क्रूरे, वायु कोटि-वहन-शीले, ॐकार-नाद-बिन्दु-रूपिणि, निगमागम-भाग-दायिनी, महिषासुर-दलनि, धूम्र-लोचन-वध-परा-यणे, चण्ड-मुण्ड-शिरच्छेदिनि, रक्त-बीज-रुधिर -शोषिणि, रक्त-पान-प्रिये, योगिनी-भूत-वेताल भैरवादि-तुष्टि-विधायिनि, शुम्भ-निशुम्भ-शिरच्छे-दिनी, निखिलासुर-बल-खादिनि, त्रिदश - राज्य-दायिनि, सर्व स्त्री रत्न-स्वरूपिणि, दिव्य-देहिनि, निर्गुणे, सगुणे, सदसद-रूप-धारिणी, सुर-वरदे, भक्त-त्राण-तत्परे, वद्दु-वरदे, सहस्राक्षरे, अयुताक्षरे, सप्त-कोटि-चामुण्डा-रूपिणि, नवकोटि-कात्यायनी-रूपे, अनेक-लक्षालक्ष-स्वरूपे, इन्द्राणि, ब्रह्माणि, रुद्राणि, ईशानि, भीमे, भ्रामरि. नारसिंही, त्रि-शत -कोटि-देवते, अनन्त-कोटि-ब्रह्माण्ड-नायिके, चतु-र्विशांति-मुनि-जन-संस्थिते, सर्व-ग्रन्थ-राज-विरा-जते, महा-काल-रात्रि, प्रकाश-कला काष्ठादि-रूपिणि, चतुर्दश-भुवन-भाव-विकारणें, गगन-वाहिनि, गामिनि, ॐकार-ह्रींकार-श्रींकार-जूंकार-औकार, सौंकार, ह्रींकार-नाना-बीज-कूट-निर्मित-शरीरे, नाना-मन्त्र-राज-विराजिते, सकल-सुन्दरी-गण-सेवितें, चरणारविन्दे, महा-त्रिपुर-सुन्दरि, कामेश-दयिते, करुणा-रस-कल्लोलिनि, कल्प-वृक्षादि-स्थिते, चिन्ता-मणि - द्वय - मध्यावस्थिते, मणि-मन्दिरे निवासिनि, चापिनि, खड्गिनि, चक्रिणि, गदिनि, शङ्खिनि, पद्मिनि, निखिल-भैरवादि-पते, समस्त-योगिनी परिवेष्ठिते, कालि, कङ्कालि, तोत्तलोत्तले, ज्वालामुखि, छिन्न-मस्तके, भुवनेश्वरि, त्रिपुर-लोक-जननि विष्णु-वक्षस्थल-कारणे, अजिते, अमिते, अनुपम-चरिते, गर्भ-वासादि--दुःखापहारिणि, मुक्ति-क्षेत्राधिष्ठायिनि, शिवे, शान्ते, कुमारि, सप्तदश शताक्षरे, चण्ड चामुण्डे, महा-काली-महा-लक्ष्मी-महा-सरस्वती-त्रि-विग्रहे ! प्रसीद प्रसीद, सर्व-मनोरथान् पूरय-पूरय, सर्वारिष्टान छेदय छेदय, सर्व-ग्रह-पीडा-ज्वराग्र-भय विध्वसय विध्वंसय, सर्व-त्रिभुवन-जातं वशय-वशय, मोक्ष-मार्गाणि दर्शय दर्शय, ज्ञान-मार्ग प्रका-शय, अज्ञान-तमो नाशय नाशय, धन धान्यादि -वृद्धि कुरु कुरु, सर्व-कल्याणानि कल्पय कल्पय, मां रक्ष रक्ष, सर्वापदभ्यो निस्तारय निस्तारय, वज्र-शरीरं साधय साधय ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे स्वाहा ।

साधकों और उच्चकोटि के महर्षियों ने इस एक हजार अक्षर वाले सिद्ध चण्डी महाविद्या मन्त्र की बहुत अधिक प्रशंसा की है, जिस रात्रि को यह मन्त्र जप संपन्न होता है, उसी समय साधक को अनुकूलता प्राप्त होने लग जाती है, डामर तन्त्र के अनुसार इस प्रयोग को संपन्न करने पर निम्न लाभ तुरन्त अनुभव होने लगते हैं ।

१- कितनी भी दरिद्रता हो, कैसा ही दुर्भाग्य हो, फिर भी इस साधना को संपन्न करने पर उनका दुर्भाग्य समाप्त होता है, और वह आर्थिक दृष्टि से उन्नति की ओर अग्रसर होने लगता है ।

२- इस प्रयोग से लक्ष्मी आबद्ध हो कर कई कई पीढ़ियों के लिए लक्ष्मी का निवास घर में हो जाता है ।

३- व्यापार वृद्धि के लिए तो यह अपने आप में श्रेष्ठतम प्रयोग है, यदि इस मन्त्र को भोज पत्र पर लिख उसे किसी फ्रेम में मढ़वा कर दुकान में स्थापित कर दे, तो आश्चर्यजनक उन्नति होने लगती है ।

४- रोग शान्ति के लिए यह संसार का सर्वश्रेष्ठ प्रयोग है, यह प्रयोग सिद्ध करने के बाद पानी का गिलास भर कर उस पर यह मन्त्र पढ़ कर, फूंक दे कर, यह पानी रोगी को पिला दे, तो आश्चर्यजनक रूप से उसका स्वास्थ्य लाभ होने लगता है।

५- यदि इस मन्त्र के द्वारा झाड़ा दिया जाय, या जिसको भूत प्रेत बाधा हो, और उसके सामने इस मन्त्र का उच्चारण किया जाय तो भूत प्रेत उपद्रव समाप्त होते हैं और घर में अनुकूलता प्राप्त होती है।

६- यदि पानी के गिलास पर यह मन्त्र पढ़ कर उस जल को घर में छिड़क दे तो घर का कलह, नित्य होने वाले उपद्रव पूर्ण रूप से समाप्त हो जाते हैं. और जीवन में अनुकूलता तथा सुख सौभाग्य बढ़ने लगता है।

७- शत्रु नाश के लिए यह अमोघ कवच है, जो साधक इस मन्त्र को सिद्ध करने के बाद (काली जयन्ती की रात्रि को १०१ बार पाठ करने पर यह मंत्र सिद्ध हो जाता है) इस मंत्र को भोज पत्र पर लिख कर उसे तावीज में भर कर अपनी बांह पर बांध ले तो वह शत्रुओं पर पूर्ण विजय प्राप्त करता है।

८- चाहे मुकदमा कितना ही विपरीत हो रहा हो, मंत्र उच्चारण कर यदि कोर्ट कचहरी जावे तो वह तुरन्त सफलता और बदलते हुए वातावरण को अनुभव कर सकता है।

९- चाहे कितनी ही कठिन राज्य बाधा आ गई हो, और उससे निकलने का कोई उपाय दिखाई नहीं दे रहा हो तो घर में तेल का दीपक लगा कर साधक किसी भी दिन या किसी भी रात्रि को १०१ पाठ स्वयं करे, या किसी ब्राह्मण से करवा दे तो उसी क्षण से राज्य बाधा समाप्त होती है, और स्थिति अनुकूल अनुभव होने लगती है।

१०- इस प्रयोग के द्वारा ग्रह पीड़ा सभी प्रकार के विघ्न अपने ऊपर किये हुए तांत्रिक प्रयोग आदि समाप्त हो जाते है, यदि दुकान पर या घर पर किसी ने तांत्रिक प्रयोग किया हो तब भी इस प्रयोग से अनुकूलता अनुभव होने लगती है।

११- यदि किसी चित्र के सामने संकल्प ले कर इस मंत्र का जप सम्पन्न करे, तो चित्र वाला व्यक्ति या स्त्री तुरन्त वशीकरण युक्त हो जाती है, इसी प्रकार इसके द्वारा सम्मोहन वशीकरण विद्वेषण आदि प्रयोग भी सम्पन्न होते है।

१२- इस प्रयोग को सम्पन्न करने पर साधक को समस्त प्रकार की सिद्धियां प्राप्त होती है और वह सर्वत्र विजयी होता है।

फल-श्रुति

वास्तव में ही तो इस वर्ष यह प्रयोग प्रत्येक साधक को सम्पन्न करना ही चाहिए। साधना सम्पन्न होने पर जो दुर्लभ 'सिद्ध चण्डी महाविद्या यंत्र' है, उसे अपने घर में श्रद्धापूर्वक स्थापित कर लेना चाहिए, जिससे कि उसके घर में सभी दृष्टियों से निरन्तर उन्नति होती रहे और धन धान्य की समृद्धि होती हुई समस्त प्रकार के संघर्ष समाप्त हो सके। यह यंत्र साधक के लिए तो उपयोगी है ही, आने वाली पीढ़ियों के लिए भी यह यंत्र उपयोगी रहेगा।

तांत्रिक ग्रन्थों के अनुसार इस प्रयोग को काली जयन्ती के अवसर पर या किसी भी मंगलवार की रात्रि को प्रयोग सम्पन्न किया जा सकता है। यदि साधक एक रात्रि में १०१ पाठ किसी वजह से सम्पन्न न कर सके, तो तीन रात्रि में कुल १०१ पाठ सम्पन्न कर इस साधना को सिद्ध कर सकता है।

Scanned by CamScanner

मंत्रमय

कुण्डलिनी जागरण

साधना

श्रावण शुक्ल ६, तदनुसार ७-८-८९ सोमवार को "सिद्धाश्रम पंचांग" के अन्तर्गत शून्य साधना जयन्ती है। यह पर्व अपने आप मे ही अत्यन्त महत्वपूर्ण है, क्योंकि उच्चकोटि के साधक इसी दिन कुण्डलिनी की मंत्रात्मक साधना सम्पन्न करते है।

इस लेख में अत्यन्त गोपनीय कुण्डलिनी का मंत्रात्मक गोपनीय प्रयोग स्पष्ट कर रहा हूं जो कि साधकों के लिए संग्रहणीय, मनन योग्य और प्रयोग करने लायक है।

कुण्डलिनी का जागरण प्रत्येक साधक के लिए आवश्यक ही नहीं अनिवार्य भी है। जब तक मानव शरीर स्थित कुण्डलिनी के चक्रों का जागरण नहीं होता तब तक वह सिद्ध योगी नहीं बन सकता। जब तक शरीर के सभी चक्र चैतन्य नहीं होते, तब तक जीवन में पूर्णता भी नहीं आ पाती।

उपनिषदों में कुण्डलिनी जागरण के बारह तत्व स्पष्ट किये है, जो निम्न प्रकार से है—

१- कुण्डलिनी जाग्रत होने से मानव सही अर्थो में

साधक बनता है, और वह उन्नति की ओर अग्रसर होने लगता है।

२- कुण्डलिनी जाग्रत होने से साधक में यह विशेषता आ जाती है, कि वह अपने शरीर के अन्दर प्राणों को पहुंचाने की क्रिया सम्पन्न कर पाता है, और प्राणों या आत्मा को पहिचान पाता हैं।

३- कुण्डलिनी जागरण से मन:शक्ति पर उसका नियंत्रण हो जाता है, और दसों इन्द्रियों पर वह काबू रख सकता है।

४- कुण्डलिनी जागरण से साधक सहज ही ध्यानावस्था में जा सकता है, और उसकी सहज समाधि लग जाती है।

५- कुण्डलिनी जागरण से उसके शरीर की जड़ता आलस्य, रोग, न्यूनता, और बन्धन समाप्त हो जाता है, और उसका शरीर चैतन्य, स्फूर्तिवान और वेगवान हो जाता है।

६- कुण्डलिनी जागरण से वह शरीर स्थित ब्रह्माण्ड को भेदन करने की क्रिया प्राप्त कर लेता है, जिसके फलस्वरूप संसार में और ब्रह्माण्ड में कहीं पर भी कोई घटना घटित होती हैं तो वह आसानी से उसे जान लेता है।

६- कुण्डलिनी जागरण से राज योग की सिद्धि प्राप्त हो जाती है, और देह शुद्धि मनः शुद्धि और आत्म शुद्धि हो जाती है।

८- कुण्डलिनी जागरण से षटचक्र भेदन की मानसिक क्रियाएं भली प्रकार से सम्पन्न हो जाती है।

९- इस साधना से साधक सहज ही पूरे विश्व में सशरीर या सूक्ष्म शरीर से कहीं पर भी विचरण कर सकता है और उसके लिए कुछ भी अगम नहीं होता।

१०- कुण्डलिनी जागरण से सहस्त्रार भेदन हो जाता है, और वह स्वयं पूर्ण रूप से शिवमय हो जाता है।

११- कुण्डलिनी जागरण आत्मा को परमात्मा से मिलाने की क्रिया है और इसके द्वारा ही सहज ही अपने इष्ट के दर्शन हो जाते है।

१२- कुण्डलिनी जागरण प्रत्येक साधक के लिए अनिवार्य है जिसके द्वारा वह जीवन में सब कुछ प्राप्त करने में सक्षम हो पाता हैं, जो अन्य साधनाओं के माध्यम से संभव नहीं है।

कुण्डलिनी के बारे में काफी उहा पोह है, मैं इस लेख में सरल शब्दों में उन तत्वों का वर्णन कर रहा हूं जिससे कि साधक सहज ही कुण्डलिनी जाग्रत कर सके।

पहले मैं शरीर स्थित ६ चक्रों और उनके स्थान के बारे में स्पष्ट कर रहा हूं।

शरीर स्थित चक्र एवं स्थान

चक्र	स्थान	दल	मातृकायें	रंग	आकार
मूलाधार	गुदा-समीप	४	व श ष स	पीत	चतुष्कोण
स्वाधिष्ठान	लिंग के सामने	६	व भ म य र ल	शुभ्र	अर्ध चन्द्र
मणिपूर	नाभि के सामने	१०	ड ढ ण त थ	रक्त	त्रिकोण
अनाहत	हृदय के सामने	१२	क ख ग घ ङ च छ ज झ ट ठ	धूम्र	षटकोण

Scanned by CamScanner

विशुद्ध	कण्ठ के सामने	१६	अ आ इ अं अः	श्वेत	वर्तुल
आज्ञा	भ्रूमध्य	२	ह क्ष	—	लिंगाकार
सहस्रार	मूर्धन्	१०००	प्रत्येक वर्ण २० बार	—	पूर्णचन्द्र

कुण्डलिनी से संबंधित चक्रों के बारे में जानने के बाद थोड़ा सा यह भी जान लेना चाहिए कि इनके बीज शक्ति और तत्व गुण क्या है। सूक्ष्मता के लिए मैं पाठकों की जानकारी के लिए यह स्पष्ट कर रहा हूं।

चक्र बीज	देवता	शक्ति	तत्वगुण
लं	ब्रह्मा	डाकिनी	गन्ध
वं	विष्णु	राकिनी	रस
रं	रुद्र	लाकिनी	रूप
यं	ईशान	काकिनी	स्पर्श
हं	सदाशिव	शाकिनी	शब्द
ॐ	शम्भु	हाकिनी	महत्
प्रणव	कामनाथ	कामेश्वरी	आत्म

कुण्डलिनी जागरण का सहज क्रिया रूप

कुण्डलिनी जागरण अत्यन्त सरल और सहज है, यदि साधक कुण्डलिनी जागरण का निश्चय कर ही लेता है तो वह दो तीन महीनों के अभ्यास से इसमें पूर्णता प्राप्त कर सकता है। सामान्य साधकों के लिए निम्न नियम अपेक्षित है और यदि वे इन नियमों के अनुसार कुण्डलिनी जागरण की क्रिया करें तो अवश्य ही उन्हें सफलता प्राप्त हो सकती है।

१- साधक को सबसे पहले मन में दृढ़ निश्चय कर लेना चाहिए कि मुझे हर हालत में कुण्डलिनी जागरण सम्पन्न करनी ही है और मैं इसमें पूर्णता प्राप्त कर के ही रहूंगा।

२- साधक को नेती, धोती, वस्ति आदि क्रियाओं के द्वारा देह शुद्धि का अभ्यास कर लेना चाहिए।

३- इसके बाद साधक को आठ प्रकार के प्राणायाम सीख लेने चाहिए जिससे कि सारे शरीर की जड़ता समाप्त हो सके और वह उन्नति की ओर अग्रसर हो सके।

४- साधक को इसके बाद महामुद्रा, महाबन्ध, महावेध, महत् दिव, विपरीत करणी, तारण चालन, शक्ति चालनी मुद्रा आदि का अभ्यास पूर्ण रूप से कर लेना चाहिए।

५- राज योग की विधि के अनुसार कुण्डलिनी जागरण की ओर अग्रसर होना चाहिए।

६- जो साधक कुण्डलिनी जगाना चाहते ही है, उनको चाहिए कि नित्य नियम के अनुसार प्रातः चार बजे उठ जांए और ५ बजे से ८ बजे तक कुण्डलिनी जागरण का अभ्यास सम्पन्न करे।

७- सबसे पहले भस्त्रिका प्राणायाम करे और यह नित्य ५० प्राणायाम तक करना जरूरी है।

Scanned by CamScanner

८- इसके बाद चालिनी मुद्रा दोनों प्रकार से दस दस बार सम्पन्न करे।

९- तत्पश्चात् १०८ तक ताड़न मुद्रा प्राणायाम सम्पन्न करे।

१०- इसके बाद १०८ बार चालन प्राणायाम संपन्न करे।

११- इसके बाद साधक षट चक्र भेदन की मानसिक क्रियाएं सम्पन्न करें और यह अनुभव करे कि शरीर चक्रों का स्पर्श कर रहा है और जाग्रत कर रहा है।

१२- इसके बाद महा मुद्रा का अभ्यास २५ बार करे।

१३- फिर महाबन्ध का अभ्यास भी २५ बार करे।

१४- इसके बाद महा वेध दोनों प्रकार से दस दस बार करे।

१५- साधक को चाहिए कि फिर दस बार विपरीत करणी मुद्रा सम्पन्न करे।

१६- इसके बाद राज योग के अनुसार षटचक्र भेदन की क्रिया सम्पन्न करे।

कुण्डलिनी ध्यान

कुण्डलिनी का अभ्यास करने से पूर्व भगवती मां कुण्डलिनी का दोनों हाथ जोड़कर ध्यान करे—

सिन्दूरारूण विग्रहां त्रि-नयनां माणिक्य मौलि-स्फुरत-

तारा नायक शेखरां स्मित मुखीमापीन वक्षोरूहाम्।

पाणिभ्यां मणि पूर्ण रत्न चषक रक्तोत्पलं विभ्रतीम्,

सौम्यां रत्न घटस्थ स्तव्य चरणां ध्यायेत् परामम्बिकाम्॥

कुण्डलिनी मन्त्र

शारदा तिलक तंत्र में कुण्डलिनी के बारे में विस्तार से दिया हुआ है, उसमें जिस प्रकार से कुण्डलिनी के मूल मंत्र "ऐं ह्रीं श्रीं" का उद्धार बताया है, और इस त्र्यक्षर का विनियोग ध्यान आदि स्पष्ट किया है, वह इस प्रकार है।

वाग्भवं भुवनेशी च श्री-बीजं तथैव च,
त्र्यक्षरों मन्त्र आख्यातः कुण्डलिन्याः सुसिद्धिदः।

ऋषिः शक्तिः समाख्यातो गायत्री छन्द ईरित,
चेतना कुण्डली शक्ति देवतात्रसमीरितः।

वाग्भवं बीजमाख्यातं शक्तिः श्री बीजमुच्यते,
हृल्लेखा कीलकं प्रोक्तं कुण्डलिन्यास्तु चिन्तने।

विनियोगः समाख्यातः सर्वागम-विशारदे,
बीज त्रय-द्विरावृत्या षडंग न्यास ईरितः।

ध्यानं वक्ष्यामि कुण्डल्याः सावधानतया श्रृणु
मूलाधारे त्रिकोणे तु सूर्य कोटि समत्विषि।

प्रसुप्त भुजगाकारः सार्द्ध त्रिवलय स्थितां,
नोवार शुक्र वत् तन्वीं तडित् कोटि-सम-प्रभां।

सूर्य कोटि प्रभां दीप्तां चन्द्र कोटि सुशीतलां,
शिव शक्ति मयीं देवी शंखावर्त क्रमात् स्थितां।

सुषुम्ना मध्य मार्गेण यान्तीं पर शिवावधिं,
ह्रींकार-बीज-रूपेण चिन्तयेद योग वर्त्मना।

उपरोक्त मंत्र में यह पूरी तरह से स्पष्ट है कि कुण्डलिनी का स्वरूप विन्यास और उसका तत्व क्या है, यदि साधक कुण्डलिनी मंत्र का जप ही करता रहता है, तब भी इसके बीज शरीर स्थित चक्रों को स्पर्श कर कुण्डलिनी जागरण सम्पन्न कर लेते है, इसीलिए उपरोक्त मंत्र की महत्ता तांत्रिक ग्रन्थों में स्पष्ट की है जो सामान्य साधक है, उनको इस कुण्डलिनी मंत्र का नित्य पाठ सम्पन्न करना चाहिए।

षट् चक्रों का वर्णन

मानव शरीर में मूलाधार आदि चक्रों की स्थिति जाननी जरूरी है, साथ ही साथ तीन प्रमुख नाड़ियां है, जिनके नाम इडा, पिंगला और सुषुम्णा है. मानव शरीर के पीठ में जो मेरुदण्ड है, उसके वाम भाग में बाहर की ओर इड़ा नाड़ी है और दाहिनी और पिंगला नाड़ी है। इन दोनों नाड़ियों के बीच सुषुम्णा नाड़ी का प्रवाह है।

१- मूलाधार-प्रथम चक्र – यह मूलाधार गुदा और लिंग के बीच में सुषुम्णा नाड़ी से वेष्ठित अधोमुख चक्र है इसका देवता पृथ्वी है, और इसका वर्ण लाल रंग का है, यह चक्र अत्यन्त ही महत्वपूर्ण है और इसके जाग्रत होने से साधक सर्वथा रोग रहित हो कर पूर्ण रूप से काव्य रचना करने का अधिकारी हो जाता है।

२-स्वाधिष्ठान-दूसरा चक्र – मूलाधार के ऊपर लिंग के मूल स्थान में सुषुम्ना नाड़ी के मध्य में ६ दलों का सिन्दूरी रंग का जो कमल है, उसी को स्वाधिष्ठान कहते हैं। इसके देवता भगवान श्री विष्णु है, इसमें ध्यान करने या यह चक्र जाग्रत होने से साधक का काम, क्रोध, लोभ, मोह आदि नष्ट हो जाता है, हृदय का अन्धकार दूर हो कर ज्ञान रूपी सूर्य का उदय होता है और साधक के चेहरे पर एक अपूर्व तेज दिखाई देने लगता है।

३-मणिपूर-तीसरा चक्र – स्वाधिष्ठान के ऊपर नाभि के मूल में बादलों के समान श्याम वर्ण का दस पंखुड़ियों का एक कमल है, जो लाल रंग का है इसी को मणिपूर चक्र कहा गया है। इसके देवता अग्नि देव है, इसका ध्यान करने से साधक में संहार करने की और पालन करने की शक्ति आ जाती है, और उसके कण्ठ में हमेशा हमेशा के लिए सरस्वती विराजमान रहती है।

४- अनाहत चौथा-चक्र – मणिपुर के ऊपर हृदय प्रदेश में बन्धूक पुष्प के समान बारह पंखुड़ियों का लाल रंग का जो कमल है, उसे अनाहत कमल कहा गया है। इसके देवता वायु देव है।

इस चक्र का ध्यान करने से या इस चक्र को जाग्रत करने से साधक के प्राण भगवान शिव से जुड़ जाते है, वह स्वयं बृहस्पति के समान सब शास्त्रों का जानने वाला वचन सिद्ध और ज्ञानियों में श्रेष्ठ होता हुआ परकाया प्रवेश करने की शक्ति प्राप्त करने में सक्षम होता है।

५- विशुद्धः पांचवा चक्र– अनाहत चक्र के ऊपर कंठ देश में सोलह दलों वाले गुलाबी रंग का जो कमल है, इसके देवता भगवान शिव है। इस चक्र को जाग्रत करने से साधक पूर्ण रूप से कवि, ज्ञानी, त्रिकाल दर्शी तथा दीर्घायु प्राप्त होता हुआ लोगों का कल्याण करने वाला होता है।

६- आज्ञाः छठा चक्र – तालु और कण्ठ से आगे भौहों के बीच दो दलों वाला सफेद रंग का आज्ञा चक्र है, जिसके देवता स्वयं गुरुदेव है। इसका ध्यान करने से साधक परकाया, प्रवेश करने वाला, सब कुछ जानने वाला, कालदर्शी, परोपकारी दीर्घायु तथा भगवान शिव के समान उत्पादक, पालक, और संहारक सक्षमता रखने वाला बन जाता है।

७- सहस्रार - सातवां चक्र – आज्ञा चक्र के ऊपर परमचक्र है, और मस्तिष्क के बीच में अधोमुख एक हजार पंखुड़ियों वाला सहस्रार दल कमल है, उसे सहस्त्रार चक्र कहते है। इसके देवता स्वयं शिवमय गुरु है। इसके जाग्रत होने से साधक अपने इष्ट को देवता को पहिचानने

वाला और नये मंत्र उत्पत्ति करने वाला बन जाता है। ऐसे साधक का बार बार जन्म नहीं होता, वह सम्पूर्ण सिद्धियों में सिद्ध बन जाता है।

मंत्रात्मक कुण्डलिनी जागरण

कुण्डलिनी जागरण के दो प्रकार है, एक तो योग द्वारा अपने चक्रों का जागरण करते हुए, कुण्डलिनी को जाग्रत करते है, जो कि कठिन कार्य है, दूसरा प्रकार मंत्रात्मक कुण्डलिनी जागरण प्रक्रिया है, जिसके माध्यम से एक साथ सभी चक्र जाग्रत हो जाते है और व्यक्ति अपनी कुण्डलिनी जाग्रत कर पूर्ण सिद्धि पुरूष बन जाता है। यह विषय सर्वथा गोपनीय रहा है, मैं आगे के पृष्ठों में इस गोपनीय रहस्य को स्पष्ट कर रहा हूं।

सबसे पहले साधक इस अनुष्ठान को प्रारम्भ करने से पूर्व अपने पूजा स्थान में या साधना स्थल पर अपने इष्ट देवता के स्वरूप जैसे गुरूदेव का ध्यान करे और "हूं" मन्त्र से गुरूदेव के ज्ञान को चैतन्य कर अपने अन्दर प्राप्त करने की भावना करें। फिर अपने सामने पूज्य गुरूदेव का चित्र या मूर्ति स्थापित कर **मंत्र सिद्ध परम तेजस्वी कुण्डलिनी यंत्र** की स्थापना करे, यह यंत्र अत्यन्त गोपनीय दुर्लभ और महत्वपूर्ण है। ऐसा यंत्र केवल गुरूदेव से ही प्राप्त हो सकता है। जिस साधक को ऐसा दिव्य यंत्र प्राप्त हो जाता है, वह वास्तव में ही सौभाग्यशाली माना जाता है।

इस यंत्र को स्थापन कर पुरश्चरण स्वरूप "ॐ परमतत्वाय नारायणाय गुरूभ्यो नमः" मंत्र के सवा लाख जप करे जिससे साधक पूर्ण रूप से पवित्र और चैतन्य हो कर कुण्डलिनी जागरण प्रक्रिया में आगे बढ़ सके।

जब ऐसा पुरश्चरण सम्पन्न हो जाय तब कुण्डलिनी जागरण प्रक्रिया प्रारम्भ करे और इसके लिए विनियोग करें।

कुण्डलिनी जागरण विनियोग

ॐ अस्य सर्व सिद्धिद-श्री कुण्डलिनी-महा-मन्त्रस्य भगवान महाकलो ऋषिः, विश्व-व्यापिनी महा-शक्ति-श्री कुण्डलिनी देवता, त्रिष्टुप छन्दः, माया (ह्रीं) बीज, सिद्धिः शक्तिः, प्रणव (ॐ कीलक, चतुर्वर्ग-प्राप्तये जपे विनियोगः।

इसके बाद साधक पूर्ण ज्ञान के साथ ऋष्यादि न्यास करे—

ऋष्यादि न्यास

महाकाल - ऋषये नमः-शिरसि

विश्व व्यापिनी महाशक्ति श्री कुण्डलिनी - देवतायै नमः-हृदि।

त्रिष्टुप् छन्दसे नमः-मुखे।

माया-बीजाय नमः-लिंगे।

सिद्धि शक्तये नमः-नाभौ।

प्रणवकीलकाय नमः-पादयोः।

चतुवर्ग प्राप्तये जपे विनियोग नमः सर्वांगे।

Scanned by CamScanner

इसके बाद साधक को निम्न प्रकार से षडंग न्यास करना चाहिए ।

षडंग न्यास

षडंग न्यास	कर न्यास	अंग न्यास
ह्रां	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
ह्रीं	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
ह्रूं	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
ह्रैं	अनामिकाभ्यां हुं	कवचाय हुं
ह्रौं	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्र त्रयाय वौषट्
ह्रः	करतल करपृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

इसके बाद साधक पूर्ण मनोयोगपूर्वक दोनों हाथ जोड़ कर कुण्डलिनी का ध्यान करे—

ध्यान

ॐ नील तोयद -- मध्यस्थ -- तड़िल्लेखेव भास्वरां,
नीवार - शूक – वत् – तन्वीं पीतां भास्वदनुपमां

तस्याः शिखाया मध्ये च परमोर्ध्व – व्यवस्थितां,
स ब्रह्मा स शिवः सूर्यः शंकरः परम – विराट् ।

मानस पूजा

साधक बिना किसी उपकरणों के कुण्डलिनी का निम्न प्रकार से मानस पूजन करे—

१- लं पृथिव्यात्मकं गन्धं श्रीमहा कुण्डलिनी नमः- अनुकल्पयामि ।
२- हं आकाशात्मकं पुष्पं श्रीमहा कुण्डलिनी नमः अनुकल्पयामि ।
३- यं वाय्वात्मकं धूपं श्रीमहा कुण्डलिनी नमः अनुकल्पयामि ।
४- रं वन्ह्यात्मकं दीपं श्रीमहा कुण्डलिनी नमः कल्पयामि ।
५- वं अमृतात्मकं नैवेद्यं श्रीमहाकुण्डलिनी नमः अनुकल्पयामि ।
६- शं शक्त्यात्मकं ताम्बूलं श्रीमहाकुण्डलिनी नमः अनुकल्पयामि ।

इस प्रकार नित्य करे, और फिर निम्न गोपनीय कुण्डलिनी मंत्र का जप प्रारम्भ करे ।

Scanned by CamScanner

गोपनीय कुण्डलिनी मंत्र

ॐ ऐं ह्रीं ह्रां ह्रीं ह्रू ह्रैं ह्रौं ह्रः जगन्मातः सिद्धि देहि देहि स्वयम्भू-लिंगमाश्रितायै विद्युत् कोटि प्रभायै महाबुद्धि प्रदायै सहस्त्र दल गामिन्यै स्वाहा ।

यह मंत्र सूर्य के समान तेजस्वी है, और जितना भी संभव हो सके, मंत्र जप करते हुए कुल सवा लाख मंत्र जप करते है । इसमें दिनों की संख्या निर्धारित नहीं है, परन्तु सवा लाख मंत्र जप होते ही साधक की कुण्डलिनी निश्चित रूप से जाग्रत हो जाती है और वह पूर्ण रूप से सिद्धि पुरुष बन जाता है ।

नित्य जितना भी मंत्र जप हो, मंत्र जप के बाद वह किया हुआ मंत्र जप कुण्डलिनी को समर्पण कर देना चाहिए ।

जप - समर्पण

गुह्याति-गुह्य-गोप्त्री त्वं गृहाणास्मत् कृतं जपम् ।
त्वत्प्रसादान्मे देवि ! सिद्धिर्भवति महेश्वरि ॥

अन्त में संक्षिप्त कुण्डलिनी की स्तुति कर उस दिन का मंत्र जप सम्पन्न करना चाहिए ।

कुण्डलिनी स्तुति

ॐ नमस्ते देव देवेशि । योगीश-प्राण वल्लभे ।
सिद्धिदे । वरदे । मातः । स्वयम्भू-लिंग-वेष्टिते ॥

ॐ सुप्त - भुजगाकारे । सर्वदा कारण - प्रिये ।
काम-कलान्विते । देवि । ममाभीष्टं कुरुष्व च ॥

ॐ असारे घोर-संसारे भव-रोगात् कुलेश्वरि ।
सर्वदां रक्ष मां देवि ! जन्म-संसार-सागरात् ॥

वास्तव में ही यह प्रयोग अपने आपमें अत्यन्त तेजस्वी और निश्चित सिद्धिप्रदायक है, मुझे एक घुमक्कड़ उच्चकोटि के योगी से यह पूर्ण विधि ज्ञात हुई थी, जिसे मैंने उस समय अपनी डायरी में अंकित कर लिया था, मैंने स्वयं इसका अनुभव किया है और वास्तव में ही यह अपने आप में तेजस्वी प्रयोग है ।

साधकों को चाहिए कि वे अपने जीवन को पूर्णता देने के लिए इस दुर्लभ गोपनीय और महत्वपूर्ण कुण्डलिनी जागरण प्रक्रिया को सम्पन्न कर अपनी कुण्डलिनी जाग्रत कर जीवन का आनन्द प्राप्त करें । ●

Scanned by CamScanner

तांत्रोक्त

१०८ लक्ष्मी सिद्धि जयन्ती

★

सिद्धाश्रम पंचाग के अनुसार ९-९-८९ अर्थात भाद्रपद शुक्ल ९ शनिवार को १०८ लक्ष्मी सिद्धि जयन्ती है। यह अपने आप में विशेष पर्व है, इस अवसर पर पत्रिका में परम गोपनीय तांत्रोक्त लक्ष्मी सिद्धि प्रयोग प्रस्तुत किया जा रहा है, जो कि पूज्यपाद निजानन्द जी के माध्यम से प्राप्त हुआ है।

यह प्रयोग अपने आप में इतना अधिक महत्वपूर्ण है, कि लगभग समस्त तांत्रिक ग्रन्थों में इसकी प्रशंसा की गई है।

★

स्वामी निजानन्द जी अत्यन्त उच्चकोटि के योगी और तन्त्र शास्त्र के सिद्धतम आचार्य हैं, तंत्र के क्षेत्र में उन्होंने कई ग्रन्थ लिखे हैं, और सिद्धाश्रम के आचार्य हैं, सिद्धाश्रम में संपन्न होने वाले यज्ञों में इन्होंने आचार्य के रूप में भी कार्य संपन्न किया है।

इस अवसर पर उन्होंने परम गोपनीय '१०८ लक्ष्मी सिद्धि प्रयोग' बताया है, जो कि प्रत्येक साधक के लिए आवश्यक है।

साधक को इस दिन प्रातः काल उठ कर यह निश्चय करना चाहिए कि आज मैं इस अद्वितीय प्रयोग को सपरिवार संपन्न करूंगा, जिससे कि मेरे घर में महालक्ष्मी पूर्ण रूप से स्थापित हों, और वह जीवन की समस्त बाधाओं को दूर करने में सहायक हो।

उसके बाद साधक गंगा जल से या नदी के तट पर अथवा घर पर शुद्ध जल से स्नान कर के पीले वस्त्र धारण करे, महिला साधिका हो तो पीली कंचुकी और पीली साड़ी पहिने। यों साधक को चाहिए कि यह प्रयोग संभव हो तो अपनी पत्नी और परिवार के साथ संपन्न

Scanned by CamScanner

करें।

यह प्रयोग दिन या रात्रि को कभी भी संपन्न किया जा सकता है, यथासंभव इस प्रयोग को रात्रि को ही संपन्न करना चाहिए।

फिर साधक सामने पूजन सामग्री रख दे, इसमें १- शुद्ध जल पात्र, २- चांदी की थाली या पीतल की थाली, (इस प्रयोग में लोहे या स्टील की थाली का प्रयोग न करें) ३- नारियल, ४- पुष्प और पुष्प मालाएं, ५- गुलाब का इत्र, ६- अबीर गुलाल, ७- केसर, ८-त्रिगंध —कुंकुम, केसर और कपूर को बराबर मात्रा में मिला कर, १०- दूध का बना हुआ प्रसाद, ११- भगवती महा-लक्ष्मी का सुन्दर चित्र, और **१२- सिद्ध १०८ लक्ष्मी यन्त्र और धनदा यन्त्र।**

पूजन प्रयोग

फिर साधक हाथ में जल ले कर संकल्प करे, कि मैं और मेरा परिवार समस्त प्रकार के पुण्यों का फल प्राप्त करने आयु, आरोग्य तथा ऐश्वर्य प्राप्त करने के लिए अपने परिवार के साथ मैं अमुक गोत्र. अमुक पिता का पुत्र: अमुक नाम का साधक यह प्रयोग सम्पन्न कर रहा हूँ।

इसके बाद अपने सामने पात्र में उपरोक्त दोनों यंत्र स्थापित कर दें, और कच्चे दूध से स्नान करा कर फिर जल से धोकर पौंछ लें, तत्पश्चात् वह पात्र अलग रख कर वहीं पर दूसरा पात्र स्थापित करें और उस पात्र में इन दोनों यंत्रों को रख दें।

फिर अपने सामने एक सुन्दर छोटा सा घड़ा चावलों की ढेरी पर या किसी अन्य आधार को लेकर स्थापित करें और घट में दही अक्षत फल पीपल के पत्ते डाल कर जल से भर दें, और उसके ऊपर उस पात्र को रख दें जिसमें दोनों यंत्र रखे हुए है, इसके बाद सामने घी का दीपक और अगरबत्ती लगावे।

तत्पश्चात् ११ पीपल के पत्ते एक डोरी में या धागे में बांध कर दरवाजे पर बांधे और ग्यारह पीपल के पत्ते या वड़ के पत्ते लेकर घड़े के ऊपर से पात्र हटाकर घड़े के मुंह पर ग्यारह पत्ते खड़े रखकर उस पर पुनः पात्र स्थापित कर दें फिर घड़े के मुंह पर कलावा या मोली बांधे।

इसके बाद घड़े के ऊपर त्रिगंध से निम्न मंत्र अंकित करें।

घट लक्ष्मी मंत्र

"ॐ ऐं ऐं ऐश्वर्याय नमः"

इसके बाद अपने सफेद आसन को "क्लीं फट्" शब्द का उच्चारण करते हुए उसे शुद्ध करे और त्रिगंध से ही आसन पर त्रिकोण बनावे जो कि महाकाली, महालक्ष्मी और महा सरस्वती का प्रतीक है, इस आसन पर साधक बैठ जाय और अपना मुंह पूर्व या उत्तर की ओर करें।

इसके बाद घड़े पर केसर से १०८ बिन्दियां लगाये जो कि १०८ लक्ष्मियों का प्रतीक है, तत्पश्चात् पूर्ण श्रद्धा के साथ घी के ९ दीपक सामने लगा दे और ९ अगरबत्ती या धूप लगावे, इसके बाद १०८ घट लक्ष्मी का पूजन करें।

पूजन प्रयोग

सर्व प्रथम दोनों हाथ जोड़ कर भगवती लक्ष्मी का ध्यान करें

ध्यान

पद्मानना पद्मकरां पद्मालाविभूषिताम्।

क्षीरसागरसंभूतां हेमवर्णा – समप्रभाम् ।।
क्षीरवणसमं - वस्त्र–दधानां हरिवल्लभाम् ।
भावेय भक्तियोगेन भार्गवीं कमलां शुभाम् ।।

ध्यान करने के बाद साधक जो सामने लक्ष्मी चित्र स्थापित किया हुआ है, उस चित्र को भी जल से पोंछ कर घट के साथ साथ उसकी भी पूजा करे।

पूजन प्रयोग निम्न प्रकार से है —

आवाहन

सर्वमंगल मांगल्यै विष्णुवक्षः स्थलालये ।
आवाहयामि देवी त्वां क्षीरसागरसंभवे ।।
श्रीलक्ष्मी देव्यै नमः आवाहनं समर्पयामि ।

गन्ध :

कर्पूरागर -कस्तूरी -कुंकुमादि -समन्वितम ।
गन्धं ददाम्यहं देवी सर्वमंगलदायिनि ।।
श्रीलक्ष्मीदेव्यै नमः गन्धं समर्पयामि ।

अक्षत :

अक्षतान् धवलान् देवी शालीयांस्तण्डुलान् शुभान् ।
हरिद्राकुंकुमोपेतान् गृहाण करूणार्णवे ।।
श्रीलक्ष्मी देव्यै नमः अक्षतान् समर्पयामि ।

पुष्प :

मन्दार पारिजाताब्जैः मल्लिकावकुलै रपि ।
केतक्युत्पलकंह्लारैः पूजयामि हरिप्रियै ।।
श्रीलक्ष्मीदेव्यै नमः पुष्पाणि समर्पयामि ।

धूप :

धूपं ददामि ते देवि सुगन्धं च मनोहरम् ।
गृहाण त्वं महालक्ष्मि भक्तानाभीष्टदायिनि ।।
श्रीलक्ष्मीदेव्यै नमः धूपं आघ्रापयामि ।

दीप :

साज्यवर्तित्रयोपेत प्राज्यमंगलदायिनि ।
गृहाण मंगल - दीपं वरलक्ष्मि नमोस्तुते ।।
श्रीलक्ष्मीदेव्यै नमः दीपं दर्शयामि ।

नैवेद्य :

नाना मोदकभक्ष्यैश्च संयुत फललड्डुकैः ।
नैवेद्य गृह्यतां देवी नारायणकुटुम्बिनि ।।
श्रीलक्ष्मीदेव्यै नमः नैवेद्यं निवेदयामि नाना ऋतुफलानि च समर्पयामि ।

नीराजन :

नीराजनं समानीत क्षीरसागर - संभवे ।
गृह्यतामर्पितं भक्त्या गरूड़ध्वजभामिनी ।।
श्रीलक्ष्मी देव्यै नमः नीराजनं दर्शयामि ।

पुष्पांजलि :

पुष्पांजलिं गृहाणेयं पुरूषोत्तमवल्लभे ।
भक्त्या समर्पितं देवि सुप्रीता भव सर्वदा ।।
श्रीलक्ष्मीदेव्यैं नमः पुष्पांजलिं समर्पयामि ।

नमस्कार :

नमोस्तु नालीकनिभाननायै नमोस्तु नारायणवल्लभायै ।
नमोस्तु रत्नाकरसभवायै नमोस्तु लक्ष्म्यै जगता-जनन्यै ।।
सरसिजनिलये सरोजहस्ते ।
धवलतरांशुकगन्धमाल्यशोभे ।।

भगवति हरिवल्लभे मनोज्ञे ।
त्रिभुवनभूतिकरि प्रसीद मह्यम् ।।
पद्मासने पद्मकरे सर्वलोकेकपूजिते ।
नारायणप्रिये देवी सुप्रीता भव सर्वदा ।।
श्रीलक्ष्मीदेव्यै नमः नमस्करोमि ।

विशेषार्घ्य :

गोक्षीरेण युतं देवि गन्धपुष्पसमन्वितम् ।
अर्घ्यं गृहाण वरदे वरलक्ष्मि नमोस्तु ते ।।
श्रीलक्ष्मी देव्यं नमः विशेषार्घ्यं समर्पयामि ।

समर्पण :

अनया पूजया श्री वरलक्ष्मी देवी प्रीयन्ताम् ।

जिन साधकों को संस्कृत का ज्ञान नहीं है वे ऊपर लिखित श्लोक न बोल कर केवल "जलं समर्पयामि" या "गंध समर्पयामि" कह कर पूजन कर सकते है ।

इस प्रकार का पूजन करने के बाद दोनों यंत्रों का पुनः पूजन करे और फिर जो संस्कृत नहीं जानते हैं, उनको चाहिए कि निम्न १०८ लक्ष्मीं मंत्र की १०१ माला मंत्र जप कर लें ।

१०८ लक्ष्मी मंत्र

ॐ ऐं ऐश्वर्याधिपति महालक्ष्म्यै ऐं नमः"

जो थोड़ा बहुत संस्कृत जानते हैं, वे निम्न स्तोत्र के ५१ पाठ कर ले, उपरोक्त दोनों स्थितियों अर्थात साधक या तो १०१ माला मंत्र जप करें या केवल ५१ बार निम्न परम गोपनीय सिद्ध १०८ महालक्ष्मी स्तोत्र का पाठ करें,

१०८ महालक्ष्मी स्तोत्र :

अथात सम्प्रवक्ष्यामि धनदास्तोत्रमुत्तमम् ।
यथोक्तं सर्वतन्त्रपु इदानी तत् प्रकाशितम ।।
नमः सर्वस्वरूपेण नमः कल्याणदायिके ।
महासम्पत्प्रदे देवी धनदाये नमोस्तु ते ।।१।।
महाभोगप्रदे देवि महाकामप्रपूरिते ।
सुखमोक्षप्रदे देवी धनदायै नमोस्तु ते ।।२।।
ब्रह्मरूपे सदानन्दे सदानन्द स्वरूपिणि ।
द्रुतसिद्धिप्रदे देवी धनदाये नमोस्तु ते ।।३।।
उद्यत्सूर्यप्रकाशा भे उद्यदादित्यमण्डले ।
शिवतत्वप्रदे देवी धनदायै नमोस्तु ते ।।४।।
विष्णु रूपे विश्वमते विश्वपालनकारिणि ।
महासत्वगुणाक्रान्ते धनदायै नमोस्तु ते ।।५।।
शिवरूपे शिवानन्दे करुणानन्द विग्रहे ।
विश्वसंहाररूपे च धनदायै नमोस्तु ते ।।६।।
पंचतत्वस्वरूपे च पंचाचार - सदारते ।
साधकाभीष्टवे देवीं धनदायै नमोस्तु ते ।।७।।
इदं स्तोत्र मया प्रोक्त साधकाभीष्टदायकम् ।
यः पठे.पाठयेन्द्वापि स लभेत् सकल फलम ।।८।।
त्रिसन्ध्यं यः पठेन्नित्यं स्तोत्रमेतत् समाहितः ।
स सिद्धिलभते शीघ्र नात्र कार्य विचारणा ।।९।।
इदं रहस्यं परमं स्तोत्र परम दुर्लभम् ।
गोपनीय प्रयत्नेन स्वयोनिरिव पार्वति ।।१०।।
अप्रकाश्यमिदं देवी गोपनीयं परात्परम् ।
प्रपठेन्नात्र सन्देहो धनवान् जायते चिरात् ।।११।।

वस्तुतः यह प्रयोग अत्यन्त सरल है, पूजन करने के बाद साधक भगवती लक्ष्मी की आरती करें और अपने परिवार में नैवेद्य वितरित करें । इसके बाद धनदा यंत्र को घर का मुखिया अपने बाजू में बांध ले और "सिद्ध १०८ लक्ष्मी यंत्र" को पूजा स्थान में स्थापित कर दें, उस घट को जिस का पूजन किया गया था, उसका जल पूरे घर में छिड़क दें और वह घट किसी मन्दिर में जा कर रख दे ।

इस प्रकार यह प्रयोग सम्पन्न होता है. पर यह प्रयोग अत्यन्त धनदायक सिद्धिदायक और तत्क्षण सफलता दायक है, आप इस प्रयोग को सम्पन्न करें और दूसरे दिन से ही इसकी सिद्धि या इसके चमत्कार को अनुभव करें

Scanned by CamScanner

सूक्ष्म शरीर से मन चाहे स्थान पर गतिशील होने के लिए

भुवनेश्वरी साधना

सिद्धाश्रम पञ्चांग के अनुसार १२-९-८९ अर्थात् भाद्रपद शुक्ल १२ मंगलवार को महाविद्याओं में सर्वश्रेष्ठ भुवनेश्वरी जयन्ती दिवस है, जो कि अपने आप में एक महत्वपूर्ण पर्व है।

जो वास्तव में ही साधक हैं, जो साधनाओं की ऊंचाइयों पर पहुंचना चाहते हैं, जो अपने जीवन में कुछ करके दिखाना चाहते हैं, उनको इस दिन का उपयोग कर पूर्ण प्रामाणिकता के साथ भुवनेश्वरी साधना सम्पन्न करनी चाहिए।

य पठेच्छृणुयाद्वापि स योगी नात्र संशयः
स्वच्छन्दमानसो भूत्वा स्तवमेतत्समुद्धरेत् ॥
स दीर्घायुः सुखी वाग्मी वाणी तस्य न संशयः ।
धनवान् गुणवानश्रीमान् धीमानोथ गुरूप्रिये ॥
सर्व्वेषान्तु प्रियो भूत्वा पूजयेत्सर्व्वदा स्तवम् ।
मन्त्र सिद्धि कर स्थैव तस्य देवि न संशयः ।
कुबेरत्वम्भवेत्तस्य तस्याधीना हि सिद्धयः ॥
मृतपुत्रा च या नारी दौर्भाग्यपरिपीड़िता ।
धनधान्यविहीना च रोग शोकाकुला चया ॥
ताभिरेतन्महादेवि भूर्ज्जपत्रे विलेखयेत् ।
सव्ये भुजे च वघ्नीयात्सर्व्वसौख्यवती भवेत् ॥

शाक्त प्रमोद पृ. २१७

'शाक्त प्रमोद' तंत्र की प्रामाणिक और श्रेष्ठ ग्रन्थ है; और सभी विद्वानों ने यह स्वीकार किया है, कि शाक्त प्रमोद में पक्षपात रहित पूर्णता के साथ विवरण दिया हुआ है।

शाक्त प्रमोद के अनुसार जीवन की सर्वश्रेष्ठ और महत्वपूर्ण साधना भुवनेश्वरी साधना ही है, जीवन में अन्य साधनाएं कर सकें या न कर सकें, जीवन में अन्य महाविद्याओं को सिद्ध न कर सके, पर साधक को अपने जीवन में भुवनेश्वरी साधना तो अवश्य ही संपन्न करनी चाहिए।

उपरोक्त शाक्त प्रमोद के प्रामाणिक श्लोक के अनुसार इस दिवस पर भुवनेश्वरी साधना संपन्न करने पर निम्न लाभ निश्चय ही प्राप्त होते हैं—

१– इस साधना को संपन्न करने पर गृहस्थ व्यक्ति भी उसी प्रकार योगी कहला सकता है, जिस प्रकार भगवान श्री कृष्ण पूर्ण गृहस्थ और सोलह हजार रानियों के पति होते हुए भी योगीराज कहलाते थे।

२– इस साधना को सिद्ध करने पर निश्चय ही व्यक्ति में विशेष क्षमता आ जाती है और वह अपने शरीर को लघु रूप बना कर ससार में कहीं पर भी विचरण कर सकता हैं और वापिस अपने मूल आकार में आ सकता है, जिस प्रकार हनुमानजी ने लंका जाते समय अत्यन्त लघु रूप धारण कर लिया था, और समुद्र पार करने के बाद अपने मूल रूप में आ गये थे, यह इस साधना की सर्वश्रेष्ठ विशेषता है।

३– इस साधना को संपन्न करने पर व्यक्ति दीर्घायु, सुखी और वाणी सिद्ध हो जाता है, वह दूसरों को पूर्ण रूप से प्रभावित करने की क्षमता प्राप्त कर लेता है।

४– ऐसा व्यक्ति धनवान तो होता ही है, साथ ही साथ अनेक गुणों से विभूषित हो कर अपने व्यापार को कई गुना बढ़ा देता है।

५– इस साधना की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि दूसरे प्रकार में यह गुरू साधना ही है और इस साधना को संपन्न करने से स्वतः गुरू सिद्धि प्राप्त हो जाती है।

६– इस साधना को संपन्न करने पर संसार में जितने भी मंत्र हों, उन मंत्रों में सिद्धि मिल जाती है, और वह कुबेर के समान धनवान, तथा सम्पत्तिवान बन जाता है।

७– यदि कोई स्त्री दुर्भाग्यशाली हो और उसके पुत्र नहीं हो, या पुत्र आज्ञाकारी न हो तो घर का कोई सदस्य इस साधना को संपन्न करता है, तो उसका दुःख समाप्त हो जाता है, और वह पुत्रवान बन जाती है।

८– इस साधना को सिद्ध करने से 'दस महाविद्याओं में सर्वश्रेष्ठ भगवती भुवनेश्वरी सिद्ध हो जाती है। और उसके साक्षात् दर्शन संभव हो पाते हैं।

९– शास्त्रों में कहा गया है, कि भगवती भुवनेश्वरी आद्य शक्ति है, अतः इसे सिद्ध करने पर महाकाली, महालक्ष्मी और महाशक्ति तीनों महादेवियां स्वतः सिद्ध हो जाती हैं।

वस्तुतः भुवनेश्वरी–साधना जीवन की अनुपम और अद्वितीय साधना है, और शास्त्रों में भुवनेश्वरी साधना के बारे में जितना लिखा गया है उतना और किसी साधना के बारे में नहीं कहा गया है, समस्त तांत्रिकों योगियों और साधकों ने यह स्पष्ट रूप से बताया है, कि भुवनेश्वरी साधना ही जीवन की पूर्ण और प्रामाणिक साधना है।

मैं आगे के पृष्ठों में गोपनीय और परम दुर्लभ भुवनेश्वरी साधना रहस्य को स्पष्ट कर रहा हूं, इसका मंत्र अपने आप में अत्यन्त सरल है और कोई भी कम पढ़ा लिखा साधक भी इस साधना को संपन्न कर सकता है।

साधक प्रातः काल उठ कर स्नान कर सफेद वस्त्र धारण कर स्वयं या अपनी पत्नी के साथ पूजा स्थान में बैठ जाय और अपने सामने **"त्रैलोक्य मोहन भुवनेश्वरी यन्त्र"** को स्थापित कर दें, यह अपने आप में दुर्लभ और अद्वितीय यन्त्र है जिसकी साधकों ने अत्यधिक प्रशंसा की है, इस यंत्र का निर्माण जटिल है, परन्तु

पत्रिका ने बहुत ही कम इस अवसर पर इस प्रकार के यन्त्रों का निर्माण कराया है, जिससे कि साधक ऐसा दुर्लभ यन्त्र अपने घर में स्थापित कर सके, शास्त्र में तो यन्त्र निर्माण के बारे में कहा गया है कि यह यन्त्र जटिल है, कठिन है, और सौभाग्यशाली व्यक्तियों के घर में ही ऐसा यन्त्र स्थापित हो सकता है, इसके बारे में बताया है –

पद्‌ममष्टदलम्बाह्ये वृत्तं षोडशभिर्द्दले:
विलिखेत्वकर्णिकामध्ये षट्‌कोणमतिसुन्दरम्
चतुरस्त्रश्चतुद्‌र्द्वारमेवम्मण्डलमालिखेत्

उपरोक्त पंक्तियों को पढ़ कर आप अनुमान लगा सकेंगे, कि इस यन्त्र का निर्माण कितना अधिक जटिल और कठिन है, इसके साथ ही साथ भगवती भुवनेश्वरी का प्रामाणिक चित्र भी अपने पूजा स्थान में इस दिन स्थापित कर देना चाहिए।

इसके बाद यन्त्र को शुद्ध जल से धो कर पोंछे और किसी दूसरे पात्र में केसर से "ह्रीं" अक्षर लिख कर उस पर यन्त्र को स्थापित करें, यन्त्र को उस पात्र में रख कर उसके चारों कोनों पर भी 'ह्रीं' अंकित करें, और फिर साधक उसकी प्राण प्रतिष्ठा करें।

ॐ आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं हौं हंसः मम शरीरे अमुक देवतायाः प्राणाः इह प्राणाः, जीव इह स्थितः, सर्वेन्द्रियाणि इह स्थितानि, वाक्-मनश्चक्षुः-श्रोत्र-जिह्वा प्राण पाद पायूपस्थानि इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा।

ऐसा करने के बाद तांत्रोक्त रूप से भुवनेश्वरी सिद्ध करने के लिए अपने आसन का शोधन करें, आसन के नीचे जो भूमि है; उस भूमि को दाहिने हाथ से छू कर यह मन्त्र पढ़ें–

ॐ पवित्र-वज्र-भूमे ! हूं फट् स्वाहा।

इसके बाद भूमि को मन्त्र सिद्ध करने के बाद भूमि पर जल अक्षत चढ़ा कर निम्न मन्त्र पढ़ते हुए उसका पूजन करें–

ॐ आधार-शक्त्यै नमः जलाक्षत-चन्दनं समर्पयामि ॥

आधार शक्ति अर्थात भूमि की पूजा करने के बाद आसन का शोधन करे, इसके लिए पहले दाहिने हाथ में जल ले कर निम्न मंत्र पढ़ता हुआ जल जमीन पर छोड़ दें।

ॐ अस्य आसन शोधन मन्त्रस्य श्री मेरु-पृष्ठ ऋषिः, सुतलं छन्दः, कूर्मो देवता, आसनोपवेशने विनियोगः।

विनियोग करने के बाद आसन के ऊपर दाहिना हाथ रख कर नीचे लिखा हुआ मन्त्र उच्चारण करें –

ॐ पृथ्वी ! त्वया धृता लोका, देवि ! त्वं विष्णुना धृता त्वं च धारय मां देवि ! पवित्रं कुरू आसनम् ॥

इसके बाद अपने दाहिनी ओर चावलों की ढेरी बना कर उस पर एक सुपारी रखे और कुंकुम का तिलक करें, उसे भैरव मान कर उसके सामने गुड़ का भोग लगावे, और हाथ जोड़ कर प्रार्थना करें कि वे निरन्तर साधक की रक्षा करते हुए सभी विघ्नों का नाश करें –

ह्रीं तीक्ष्ण-दंष्ट्र ! महाकाय ! कल्पान्त दहनोपम ! भैरवाय नमस्तुभ्यमनुज्ञां दातुमर्हसि ॥

ऐसा करने के बाद साधक अपना रक्षा विधान निम्न प्रकार से करें –

१– तीन बार दोनों हाथों की हथेली से आवाज करते हुए "फट्" शब्द का उचारण करें और बांये पैर की

ऐड़ी से तीन बार भूमि पर प्रहार करें या दूसरे शब्दों में भूमि का ताड़न करें, इससे भूमि पर होने वाले विघ्नों का निवारण होता है।

२– तीन बार 'फट्' बोलने के बाद दोनों हाथ भूमि पर रख कर ही शब्द का उच्चारण करें और फिर अपने दोनों हाथ ऊपर उठा कर आकाश की ओर एक टक दृष्टि से देख कर 'फट्' शब्द का उच्चारण करें, इससे भूमि पर तथा अन्तरिक्ष से होने वाले विघ्नों का नाश होता है।

रक्षा विधान

फिर समस्त विघ्नों का नाश कर अपनी रक्षा का विधान करें और इसके लिए अपने चारों ओर लोहे की कील से गोल घेरा बना दें, घेरा बनाते समय निम्न मंत्र का उच्चारण करें –

ॐ रं अग्नि प्राकाराय नमः

इसका तात्पर्य यह है कि अब साधक सभी प्रकार से सुरक्षित है और उसके चारों ओर अग्नि की दीवार बनी हुई है।

इसके बाद साधक भगवान गणपति को अन्य पात्र में स्थापित कर उनका संक्षिप्त पूजन करें, यदि घर में गणपति की मूर्ति या गणपति का चित्र हो तो उसका भली प्रकार से पूजन करें, और यदि न हो तो गोल सुपारी पर मौली बांध कर उन्हें गणपति मान कर स्थापना कर दें, और उनकी पूर्ण पूजा करें, पूर्ण पूजा में जल से स्नान करा कर कुंकुम अक्षत लगा कर नैवेद्य चढ़ावे और प्रार्थना करें।

इसके बाद साधक को चाहिए कि अपने सामने अपने गुरू की मूर्ति या गुरू का चित्र स्थापित करें, और उनकी पूर्ण पूजा करें, पूजन करते समय प्रत्येक वस्तु समर्पित करते समय "ॐ गुं गुरूभ्यो नमः" का उच्चारण करता रहे।

तत्पश्चात साधक अपने सिर के भीतर स्थित सहस्र दल कमल के बीच में गुरू का चिन्तन करते हुए, उनका निम्न प्रकार से ध्यान करें –

ध्यान

सहस्र दल पङ्कजे सकल शीत रश्मि प्रभम्।
वराभय कराम्बुजं विमल गन्ध पुष्पाम्बरम्॥
प्रसन्न वदनेक्षणं सकल देवता रूपिणम्।
स्मरेत् शिरसि हंसगं तदभिधान पूर्व गुरूम्॥
ब्रह्मानन्दं परम सुखदं केवलं ज्ञान मूर्तिम्।
द्वन्द्वातीतं गगन सदृशं तत्वमस्यादिलक्षम्॥
एकं नित्यं विमलमचलं सर्व धी साक्षि भूतम्।
भावातीतं त्रिगुण रहितं सद्-गुरूं तं नमामि॥
हंसो हंस गुरूः श्रेष्ठः सुखानन्दः सुखात्मनः।
तस्य स्मरण मात्रेण मुक्तिस्तत्र न संशयः॥

इस प्रकार गुरूदेव का पूरा ध्यान कर साधक स्वगुरू, परम गुरू, परापर गुरू और परमेष्ठि गुरू का नाम ले कर पूजन करें, अपने सामने एक पात्र में गंगा जल या शुद्ध जल ले कर रख दें, फिर गुरूदेव के चित्र के सामने ही जल, अक्षत, कुंकुम, पुष्प आदि समर्पित करते हुए उच्चारण करें –

स्वगुरू निखिलेश्वरानन्दाय श्री पादुकां पूजयामि नमः समर्पयामि नमः।
परम गुरू सच्चिदानन्दाय श्री पादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः।
परापर गुरू वेदव्यासाय श्री पादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः।
परमेष्ठि गुरू ब्रह्माय श्री पादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः।

इस प्रकार गुरूदेव को स्मरण कर पञ्चोपचार से पूजन करें और फिर गुरूदेव का मानसिक पूजन निम्न प्रकार से करें –

लं पृथिव्यात्मकं गन्धं समर्पयामि नमः।
हं आकाशात्मकं पुष्पं समर्पयामि नमः।
यं वायुवात्मकं धूपं आघ्रापयामि नमः।
रं वह्न्यात्मकं दीपं दर्शयामि नमः।
वं अमृतात्मकं नैवेद्यं समर्पयामि नमः।
सं सर्वात्मकं ताम्बूलं समर्पयामि नमः।

माला पूजन

इस प्रकार गुरू पूजन कर अपने हाथ में स्फटिक माला ले कर नीचे लिखे मन्त्र से उसको प्रणाम करें –

माले माले महा-माले सर्व-शक्ति स्वरूपिणि।
चतुर्वर्गस्त्वयि न्यस्तः तस्मान्मे सिद्धदा भव॥

माला को प्रणाम करने के बाद गन्ध, अक्षत, पुष्प से निम्न मन्त्र पढ़ता हुए माला का पूजन करें –

मां माले! सर्व-देवानां प्रीतिदा शुभदा भव।
शुभं कुरूष्व मे भद्रे! यशो वीर्यं च सर्वदा॥

इसके बाद माला को दाहिने हाथ में ले कर ध्यान करें कि वह माला साधना में सिद्धि प्रदान करे –

गुह्याति गुह्य-गोप्त्री त्वं, गृहाणास्मत् कृतं जपम्।
सिद्धिर्भवतु मे देवि! त्वत् प्रसादान्महेश्वरि॥

अमृत पान

फिर साधक अपने सामने जो जल का कलश रखा हुआ है, उसका संक्षिप्त पूजन करें, और उसमें से थोड़ा थोड़ा जल ले कर स्वगुरू, परमगुरू, परापर गुरू और परमेष्ठि गुरू पर चढ़ावे और फिर उसी जल से निम्न मंत्र पढ़ता हुआ ग्यारह बार आचमन लें -

अमृत पान मन्त्र

ह्रीं श्रीं शिव शक्ति सदाशिवेश्वर-विद्या कलात्मने अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं लृं लॄं एं ऐं ओं औं अं अः ऐं (मूलं) आत्म तत्वेन स्थूल देहं शोधयामि स्वाहा।

इसके बाद किसी कटोरी में उस अमृत कलश का जल ले कर निम्न मन्त्र पढ़ता हुआ तीन बार अमृतपान करें –

ह्रीं श्रीं माया कला विद्या राग काल नियति पुरूषात्मने कं खं गं घं ङं चं छं जं झं ञं टं ठं डं ढं णं तं थं दं धं नं पं फं बं भं मं क्लीं (मूलं) विद्या तत्वेन सूक्ष्म देहं शोधयामि स्वाहा।

दूसरी बार अमृत पान मन्त्र

ह्रीं श्रीं प्रकृत्यहंकार बुद्धि-मनः श्रोत्र-त्वक् चक्षुर्जिह्वा-घ्राण-वाक्पाणि-पादपायूपस्थ शब्द स्पर्श-रूप-रस गन्धाकाश वायुवग्नि सलिल-भूम्यात्मने यं रं लं वं शं षं सं हं लं क्षं सौः (मूलं) शिव तत्वेन पर-देहं शोधयामि स्वाहा।

तीसरी बार अमृतपान मन्त्र

ह्रीं श्रीं शिव शक्ति सदाशिवेश्वर विद्या कलात्मने माया कला विद्या राग काल-नियति पुरूषात्मने प्रकृत्यहंकार बुद्धि-मनः श्रोत्र-त्वक् चक्षुर्जिह्वा घ्राण वाक् पाणि पाद पायूपस्थ शब्द स्पर्श-रूप-रस गन्धाकाश वायुवग्नि सलिल भूम्यात्मने अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं लृं लॄं एं ऐं ओं औं अं अः कं खं गं घं ङं चं छं जं झं ञं टं ठं डं ढं णं तं थं दं धं नं पं फं बं भं मं यं रं लं वं शं षं सं हं लं क्षं ऐं क्लीं सौः (मूलं) सर्व-तत्वेन तत्व व्याप्तिवतं बीजं शोधयामि स्वाहा।

ऐसा करने पर साधक साधना के लिए सिद्ध होता है, और इसके बाद जो भी साधना की जाती है, वह पूर्ण रूप से सिद्ध होती है।

Scanned by CamScanner

भुवनेश्वरी प्रयोग

अपने सामने जो दुर्लभ भुवनेश्वरी यंत्र रखा है, और जो सामने भुवनेश्वरी चित्र स्थापित किया है, उसके सामने साधक निम्न प्रकार से विनियोग, न्यास एवं ध्यान करें —

विनियोग

ॐ अस्य श्री भुवनेश्वरी हृदय स्तोत्रस्य श्री शत्तिलः ऋषिः। गायत्री छन्दः। श्री भुवनेश्वरी देवता। हं बीजं। ईं शक्तिः। रं कीलकं। सकल-मनोवांछित-सिद्धयर्थं पाठे विनियोगः।

ऋष्यादि न्यास

श्री शक्ति ऋषये नमः शिरसि।
गायत्री छन्दसे नमः मुखे।
श्री भुवनेश्वरी देवतायै नमः हृदि।
हं बीजाय नमः गुह्ये।
ईं शक्तये नमः नाभौ।
रं कीलकाय नमः पादयोः।
सकल-मनोवांछित सिद्धयर्थे पाठे विनियोगाय नमः सर्वांगे।

षडंग न्यास	अंग न्यास	कर न्यास
ह्रीं श्रीं ऐं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
,,	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
,,	मध्यमाभ्यां वषट	शिखायै वषट
,,	अनामिकाभ्यां हुं	कवचाय हुं
,,	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट	नेत्र त्रयाय वौषट
,,	करतल करपृष्ठा-भ्यां फट्	अस्त्राय फट्

इस प्रकार न्यास करने के बाद साधक दोनों हाथ जोड़ कर भगवती भुवनेश्वरीं का ध्यान करें —

भुवनेश्वरी ध्यान

सरोजनयनां चलत् कनक कुण्डलां शैशवीं,
धनुर्जप वटी करामुदित सूर्य कोटि प्रभाम्।
शशांक कृत शेखरां शव शरीर संस्था शिवाम्,
प्रातः स्मरामि भुवनेश्वरीं शत्रु गति स्तम्भनीम्॥

ध्यान करने के बाद साधक स्फटिक माला से मंत्र जप प्रारम्भ करें, पर मंत्र जप से पूर्व भुवनेश्वरी महायंत्र के सामने शुद्ध घृत का दीपक और अगरबत्ती लगा लें।

इसके बाद शान्त मनोयोग पूर्वक भुवनेश्वरी बीज मंत्र का जप करें, यह मन्त्र एक अक्षर का है, और शास्त्रों के विधान के अनुसार यदि भुवनेश्वरी साधना दिवस के दिन इस मन्त्र की १०८ माला मन्त्र जप हो जाता है, तो निश्चय ही भुवनेश्वरी सिद्ध हो जाती है।

पढ़ने में १०८ माला बड़ी लगती है, एक वर्ण का मंत्र होने के कारण इस पूरे मन्त्र जप एवं साधना में चार या पांच घण्टे से ज्यादा समय नहीं लगता।

भुवनेश्वरी मूल मन्त्र

"ह्रीं"

उपरोक्त मन्त्र अपने आप में सर्वश्रेष्ठ और अद्वितीय मन्त्र है, इस मन्त्र को चैतन्य करने के लिए इस मंत्र से पहले पांच बार गुरु मत्र उच्चारण और बाद में भी गुरु मंत्र उच्चारण कर ले, यह सिर्फ एक बार किया जाता है, उसके बाद मंत्र जप प्रारम्भ कर दें।

जब मन्त्र जप संपन्न हो रहा हो, और बीच में ही भगवती भुवनेश्वरी विग्रह के साक्षात् दर्शन सुलभ हो, तो साधक विचलित न हो और जप माला पूरी हो जाय, तब दोनों हाथ जोड़ कर भक्ति भाव से भगवती भुवनेश्वरी के दर्शन कर ले, और प्रणाम कर आशीर्वाद प्राप्त करें, कि वह सिद्ध हो और साधक के जीवन के सारे मनोरथ पूर्ण करे।

Scanned by CamScanner

भगवती तारा की दुर्लभ साधना विधि

महान योगीराज परम पूज्य स्वामी अच्युतानन्द जी महाराज ने अपना सारा समय तारा साधना और उसके विविध प्रयोग प्राप्त करने में ही लगाया है, एक प्रकार से देखा जाय तो तंत्र के माध्यम से तारा सिद्ध करने के जो लुप्त प्रयोग योगीराज जी ने प्राप्त कर साधकों को स्पष्ट किये हैं, वे अपने आप में अन्यतम हैं। यह दुर्लभ साधना विधि भी उनके द्वारा ही हमें प्राप्त हुई है।

तारा साधना महाविद्या तो है ही, पर तांत्रिक ग्रन्थों में स्पष्ट रूप से वर्णित है, कि तारा सिद्ध करने पर साधक को नित्य प्रातः उठने पर उसके सिरहाने दो तोला स्वर्ण स्वतः प्राप्त हो जाता है, जो कि भगवती तारा की कृपा के फलस्वरूप साधक को प्राप्त होता है।

नीचे दिया हुआ, प्रयोग "नाथवासर" क्रम से है। इस क्रम में तांत्रिक विधि के अनुसार प्रकाशा, विमर्शना, आनन्दा, ज्ञाना, सत्या, पूर्णा, स्वभावा, प्रतिमा, और सुभगा, के क्रम से साधना सम्पन्न होती है, जो कि अपने आप में सर्वथा गोपनीय और महत्वपूर्ण है।

तारा जयन्ती के अवसर पर यह दुर्लभ साधना प्रयोग पत्रिका पाठकों को समर्पित करते हुए हमें अत्यन्त प्रसन्नता हो रही है।

यों तो भगवती तारा की साधना नवरात्रि में या महीने की किसी भी अष्टमी से प्रारम्भ की जा सकती है, परन्तु तारा जयन्ती के अवसर पर यदि इस दुर्लभ साधना प्रयोग को सम्पन्न किया जाय तो साधक के लिए यह अपने आपमें ही महत्वपूर्ण चिन्तन है।

यह साधना अत्यन्त सरल प्रतीत होती हुई भी परम गोपनीय, दुर्लभ और महत्वपूर्ण है। कम पढ़ा लिखा साधक भी इस साधना को सम्पन्न कर सकता है। न तो यह साधना पेचीदी है और न इसमें जटिल विधि विधान ही है, इसके बावजूद भी यह साधना तुरन्त फलप्रद एवं शीघ्र सिद्धि दायक है। हमने स्वयं यह अनुभव किया है, कि स्वामी जी की बताई हुई विधि से यदि इस साधना को सम्पन्न किया जाय तो अद्वितीय सिद्धि प्राप्त होती है.

Scanned by CamScanner

और ऐसी साधना सम्पन्न करने वाला सामान्य और गरीब व्यक्ति भी सिद्धि प्राप्त होने के बाद लाखों करोड़ों में खेलने लगता है, यही नहीं अपितु इसके अलावा भी कई प्रकार की सिद्धियां स्वतः प्राप्त हो जाती है जिसके फलस्वरूप वह पूर्ण सफलता प्राप्त कर जीवन में धन, वैभव सुख, सौभाग्य और अद्वितीय सिद्धियां प्राप्त करने में समर्थ सफल हो पाता है।

मेरी राय में जब हमें इतना उच्चकोटि का और अचूक तांत्रोक्त प्रयोग प्राप्त हुआ है, तो हमें इसका अवश्य ही लाभ उठाना चाहिए।

साधना विधि

साधक को चाहिए कि वह जिस दिन भी इस साधना को सम्पन्न करना चाहे, वह चाहे दीपावली का दिन हो, या तारा जयन्ती का अवसर हो, अथवा किसी भी महीने की अष्टमी हो, साधक प्रातःकाल उठकर स्नान कर यह निश्चय कर ले, कि मैं आज पूर्ण रूप से तारा साधना सम्पन्न करूंगा और भगवती तारा को सिद्ध कर जीवन में वह सब कुछ प्राप्त करूंगा जिसका अभाव मैं अनुभव कर रहा हूं। यही नहीं अपितु इस तारा साधना के द्वारा मैं अपनी जन्म जन्म की दरिद्रता समाप्त कर सर्वथा ऋण मुक्त हो कर पूर्ण वैभव युक्त जीवन व्यतीत करूंगा।

साधक इस दिन एक समय भोजन करे, भोजन में भी वह सात्विक आहार ले, और ब्रह्मचर्य का पालन करे। यह साधना दिन को या रात्रि को कभी भी सम्पन्न की जा सकती है, और इसमें चार घण्टे से ज्यादा समय नहीं लगता।

तारा यंत्र

यों तो तारा यंत्र कई ग्रन्थों में स्पष्ट किया हुआ है, परन्तु स्वामीजी के अनुसार इस प्रकार के यंत्रों पर तारा सिद्ध सरलता से सम्पन्न नहीं हो पाती। यदि नाथवासर क्रम से तारा यंत्र का निर्माण हो और भूपुर चक्र के द्वारा उसका निर्माण हो, फिर त्रिवृत के अनुसार उसका अंकन कर षोडश दल का निर्माण करे, और चतुर्दशार रूप से यंत्र निर्माण कर अष्टार चक्र में भगवती तारा को स्थापित करे।

वास्तव में ही इस प्रकार की विधि से निर्मित यंत्र सामान्य यंत्र नहीं होता, अपितु सही शब्दों में कहा जाय तो ऐसा यंत्र 'यंत्रराज' कहलाता है। ऐसे यंत्र के दर्शन भी अपने आपमें दुर्लभ है। जिसके घर में ऐसा यंत्र स्थापित होता है, उसके जीवन में किसी प्रकार का कोई अभाव रह ही कैसे सकता है। वास्तव में ही इस प्रकार से यंत्र का निर्माण और उसका स्थापन अपने आप में ही महत्वपूर्ण है।

ऐसा यंत्र सोने पर, चांदी पर या ताम्र पत्र पर अंकित कर उसमें समस्त त्रिपुर सुन्दरी सहित ३६० शक्तियों का आह्वान करें, और पूर्ण मंत्र सिद्ध कर उसे प्रभाव युक्त बनावे। ऐसा ही यंत्र साधना में उपयुक्त रहता है, और ऐसे ही यंत्र के द्वारा इस प्रकार की साधना सम्पन्न की जा सकती है।

जिस दिन साधना सम्पन्न करनी हो, उस दिन साधक पूर्व या उत्तर की ओर मुंह कर बैठ जाय और अपने सामने लाल रेशमी वस्त्र किसी लकड़ी के बाजोट पर बिछा दे और उस पर पुष्प की पंखुड़ियां बिखेर कर इस यंत्र राज को स्थापित कर दे।

साधना रहस्य

साधक लाल धोती या गुलाबी धोती पहिन कर बैठे और लाल आसन ही बिछा दे। इसके बाद एक अलग पात्र या थाली को दूसरे बाजोट पर रख कर उसके मध्य में कुंकुम से 'श्री तारायै नमः' लिखकर उस पर इस यंत्र को स्थापित कर दें और फिर जल मिश्रित दूध से धीरे धीरे जल चढ़ाता हुआ, यंत्र को स्नान करावे। दूध

Scanned by CamScanner

मिश्रित जल चढाते समय निम्न महादेवियों का उच्चारण करे और प्रत्येक नाम के उच्चारण के साथ नमः जोड़ ले।

१- नित्यायै नमः २- जगन्मूर्त्यै, ३- देव्यै, ४- भगवत्यै, ५- महा-भार्यायै ६- प्रसन्नायै, ७- वरदायै, ८- मुक्ति-दायिन्यै, ९- परमायै, १०- हेतु-भूतायै, ११- हरि-नेत्र-कृतालयायै, १२- विश्वेश्वर्यै, १३- जगद्-धात्र्यै १४- स्थिति कारिण्यै, १५- संहार कारिण्यै, १६- निद्रायै १७- भगवत्यै, १८- अतुलायै, १९- तेजसां निध्ये, २०- स्वाहायै, २१- स्वधायै, २२- वषट्-कारायै, २३- स्वरात्मने, २४- सुधायै, २५- अक्षरायै, २६- त्रिधा-मात्रात्मिकायै, २७- अर्ध-मात्रायै (अर्ध-मात्रा-त्मिकायै), २८- स्वर-स्वरूपिण्यै, २९- अनुच्चार्यायै, सन्ध्यायै, ३०- सावित्र्यै, ३१, जनन्यै, ३२- परायै, ३३- सृष्टि-रूपायै, ३४- जगद्-योन्यै ३५-दिव्यायै, ३६-कार्यै,३७-सिद्धये, ३८-वृद्धये, ३९-दिव्यायै, ४०-वर प्रदायै।

इसके बाद साधक उस यंत्र को अलग ले कर भली प्रकार से शुद्ध वस्त्र से पोंछ ले और दूसरे किसी पात्र के मध्य में "ह्रीं" अक्षर अष्ट गन्ध से लिख कर उस पर इस यंत्र को स्थापित करे और फिर पूर्ण श्रद्धा के साथ अष्ट गन्ध से ही इस यंत्र पर निम्न नामों के साथ "नमः" शब्द लगा कर चालीस बिन्दियां अष्ट गन्ध से लगावे। प्रत्येक बिन्दी लगाते समय निम्न एक नाम का उच्चारण करते हुए ये चालीस बिन्दियां लगावे।

१- इन्दु रूपिण्यै, २- सुखायै, ३- कल्याण्यै, ४- ऋद्ध्यै, ५- सिद्ध्यै, ६- कूर्मिकायै, ७- नैऋत्यै, ८- भूभृतां लक्ष्म्यै (भूभृद्-लक्ष्म्यै), ९- शर्वाण्यै, १०- दुर्गायै ११- दुर्ग-पारायै, १२- सारायै, १३- सर्व-कारिण्यै, १४- क्षान्त्यै (ख्यात्यै), १५- कृत्स्नायै, १६- धूम्रायै १७-अति-सौम्यायै, १८- अति-रौद्रिण्यै, १९- जगत्-प्रतिष्ठायै २०- कृष्णायै (कृत्स्नायै), २१- विष्णुमायायै, २२- चेतनायै, २३- बुद्धि रूपायै, २४- निद्रा-रूपायै, २५- क्षुधा-रूपायै, २६- ज्ञानारूपायै, २७- शक्तिरूपायै, २८- तृष्णा-रूपायै, २९- क्षान्ति-रूपायै, ३०- जाति-रूपायै, ३१- लज्जा, रूपायै, ३२- शान्ति रूपायै, ३३- श्रद्धा-रूपायै, ३४- कान्ति-स्वरूपिण्यै (कान्ति-रूपायै), ३५- लक्ष्मी-रूपायै, ३६- वृत्ति-रूपायै, ३७- धृति-रूपायै, ३८- स्मृति-रूपायै, ३९- दया रूपायै, ४०- सृष्टि-रूपायै।

अष्ट गन्ध से चालीस बिन्दियां लगाने और इन चालीस महाशक्तियों का पूजन करने के बाद यंत्र के सामने शुद्ध घृत का दीपक लगावे और धूप या अगरबत्ती प्रज्वलित करें।

फिर यंत्र पर पुष्प समर्पित करे, और पुष्प माला पहिनाये, साथ ही यन्त्र के सामने घर पर बनाया हुआ प्रसाद समर्पित करे। प्रत्येक नाम के आगे साधक 'नमः' शब्द को जोड़ कर पुष्प समर्पित करे, इसमें किसी भी प्रकार के पुष्पों का प्रयोग किया जा सकता है।

१- बीज-एवरूपिण्यै, २- सम्मोहिन्यै, ३- विद्यायै, ४- स्वर्ग-प्रदायिन्यै, ५- मुक्ति-प्रदायिन्यै, ६- अशेष-जन-हृत्-संस्थायै, ७- नारायण्यै, ८- शिवायै, ९- कला-काष्ठादि-रूपायै, १०- परिणामप्रदायिन्यै, ११- सर्व-मंगल-मांगल्यै, १२- शिवायै, १३- सर्वार्थ-साधिकायै, १४- शरण्यायै, १५- त्र्यम्बिकायै, १६- गौर्यै, १७- सृष्ट्यात्मिकायै। १८- स्थित्यात्मिकायै, १९- लयात्मिकायै, २०- शक्त्यै, २१- सनातन्यै, २२- गुणाश्रयायै २३- गुणमयायै, २४- नारायण-स्वरूपिण्यै, २५- शरणागत-परित्राण-परायणायै, २६- दीन-परित्राण-परायणायै, २७- आर्त-परित्राण-परायणायै, २८- सर्वस्यार्ति-हरायै, २९- देव्यै, ३०- विष्णु-रूपायै, ३१- परात्परायै, ३२- हंस-युक्त-विमानस्थायै, ३३- ब्रह्माणी-रूप-धारिण्यै, ३४- कौशाम्भी-धारिण्यै, ३५-क्षुरिका-धारिण्यै, ३६- शूलधारिण्यै, ३७- चन्द्र-धारिण्यै, ३८- अहि-धारिण्यै, ३९- वर-धारिण्यै, ४०- महा-वृषभ-संरूढायै।

इस प्रकार पुष्प समर्पण करने के बाद साधक उसी आसन पर बैठे बैठे तारा के परम गोपनीय मंत्र को

सोलह माला मंत्र जाप करे।

तारा माला

स्वामी जी के अनुसार इस प्रकार की साधना में विशेष १०८ मनकों से सज्जित तारा माला का ही प्रयोग किया जाना चाहिए, जिसका प्रत्येक मनका मन्त्र सिद्ध हो, इन मनकों में आठ मनके अष्ट सिद्धि मन्त्रों से, नौ मनके नव निधि सिद्धियों से और ९१ मनके देव सिद्धि मन्त्र से आपूरित हो, इस प्रकार प्रत्येक मनका एक विशेष सिद्धि से आपूरित होता है, इसलिए इस प्रकार की माला अत्यन्त सौभाग्यदायक और शीघ्र सिद्धि प्रदायक मानी गई है।

इस माला की सबसे पहले साधक पूजा करे, सुमेरु पर केसर का तिलक करें, और बाद में प्रत्येक मनके पर केसर का तिलक कर उन पर अक्षत और पुष्प समर्पित करें, तत्पश्चात् हाथ में जल ले कर साधक उच्चारण करे, कि मैं अमुक गोत्र, अमुक पिता का पुत्र, अमुक नाम का साधक तारा सिद्धि के लिए मन्त्र जप संपन्न कर रहा हूं, और यह साधना मैं भगवती तारा को प्रसन्न करने के लिए तथा जीवन में स्वर्ण, भोग, वैभव एवं सौभाग्य प्राप्त करने के लिए सम्पन्न कर रहा हूं, ऐसा कह कर हाथ में लिया हुआ जल किसी पात्र में छोड़ दें।

इसके बाद साधक तारा माला से निम्न मन्त्र की सोलह माला मन्त्र जाप वहीं बैठे बैठे सम्पन्न करें।

तारा मन्त्र

॥ ऐं ओं ह्रीं क्रीं हूं फट् ॥

उपरोक्त मन्त्र का जाप पूरी आस्था और विश्वास के साथ सम्पन्न करें, मन्त्र जप करते समय साधक की दृष्टि सामने रखे हुए यन्त्र के मध्य में होनी चाहिए।

मंत्र जप पूरा होने के बाद यदि स्मरण हो तो तारा की अथवा भगवती लक्ष्मी की आरती सम्पन्न करें, और घर के सदस्यों को प्रसाद वितरित करें, इसके बाद किसी कुंवारी कन्या को अथवा किसी ब्राह्मण को भोजन संपन्न करावे, और उसे यथोचित दान-दक्षिणा दे कर इस साधना की संपन्नता अनुभव करें, ऐसा करने पर यह साधना सम्पन्न होती है।

वास्तव में ही यह गोपनीय साधना अत्यन्त महत्वपूर्ण है, और यह साधना करने से साधक की समस्त कामनाएं पूर्ण होती है, वह इस लोक में सभी भोगों को प्राप्त कर अन्त में देवी की सायुज्य मुक्ति प्राप्त करता है। 卐

तारा की नौ कलाएं

तारा साधना सम्पन्न करने पर भगवती लक्ष्मी से सम्बन्धित निम्न नौ सिद्धियां या नौ कलाएं स्वतः साधक के साथ हो जाती है।

१. विभूति– विभूति का तात्पर्य निरन्तर उन्नति और गरीबों की सहायता करने का गुण स्वतः ही साधक के जीवन में आ जाता है।

२. नम्रता– ऐसी साधना करने पर यह गुण स्वतः ही आ जाने से व्यक्ति की प्रशंसा होने लगती है।

३. कान्ति– इससे साधक के चेहरे पर भव्यता और प्रभाव उत्पन्न हो जाता है।

४. तुष्टि– ऐसा साधक कभी भी अपुत्रवान नहीं रहता और पूर्ण पारिवारिक सुख मिलता है।

५. कीर्ति– तारा सिद्ध करने वाले की कीर्ति चारों ओर फैलने लगती है।

६. सिद्धि– इससे साधक कई विभिन्न साधनाओं में सिद्धि प्राप्त करता है।

७. पुष्टि– ऐसा साधक सभी दृष्टियों से पुष्ट, स्वस्थ व उन्नतिप्रद बना रहता है।

८. सृष्टि– तारा सिद्ध करने पर साधक नवीन सिद्धियों को जन्म देने वाला बन जाता है।

९. ऋद्धि– साधना पूर्ण होने पर उसके घर में सभी प्रकार से उन्नति होने लगती है, और वह पूर्ण रूप से विद्वान, धनवान और कीर्तिवान बन जाता है।

Scanned by CamScanner

बालक बालिकाओं की श्रेष्ठ शिक्षा के लिए

एक दिवसीय

सरस्वती साधना सिद्ध करें

सिद्धाश्रम पंचांग और शास्त्रीय प्रमाणों के अनुसार इस वर्ष ७-१०-८९ तदनुसार आश्विन शुक्ल ७, शनिवार को **"सरस्वती साधना दिवस"** है और भारतवर्ष के साधक पिछले कई हजार वर्षों से इस दिवस का उपयोग अपनी शिक्षा के लिए और बालक बालिकाओं की पूर्ण शिक्षा तथा सफलता के लिए सम्पन्न करते आ रहे है। इसीलिए भावी पीढ़ी की दृष्टि से यह दिवस प्रत्येक साधक के लिए महत्वपूर्ण है।

हम सब चाहते है, कि भौतिक दृष्टि से हमने भले ही उन्नति की हो या न की हो, कई परिस्थितयों की वजह से हमने शिक्षा में सफलता पाई हो न पाई हो, परन्तु अब, जब कि हम जागरूक है, सावधान है, और साधना के क्षेत्र में अग्रगण्य है तो हम क्यों न उन साधनाओं को सिद्ध कर दे, जिसकी वजह से हम अपने बालकों को श्रेष्ठ शिक्षा दे सके।

हमने अनुभव किया है, कि कई बार अच्छी व्यवस्था अच्छा स्कूल और अच्छी शिक्षा देने के बावजूद भी हमारे बालक उस प्रकार के अंक परीक्षा में प्राप्त नहीं कर पाते, जिसकी हमें उम्मीद होती है। हमारी इच्छा और आकांक्षा होती है, कि हमारे बालक आई० ए० एस० या उच्चपदस्थ अधिकारी बने अथवा वे जो शिक्षा प्राप्त कर रहे है उसमें बुद्धि का विकास हो, और साधना में सफलता प्राप्त करे, यह तभी संभव हो सकता है जब हम उनको साधनात्मक बल भी साथ ही साथ प्रदान करें।

और यही समय इस दृष्टि से उनके लिए सर्वाधिक उपयुक्त है, क्योंकि अब उनकी पढ़ाई प्रारम्भ हुई है और यदि हम अभी से कोई ऐसा प्रयोग उनके लिए कर दे तो वे निश्चय ही अभी से शिक्षा के क्षेत्र में उन्नति कर सकेंगे अच्छे अंक प्राप्त कर सकेंगे और साधना में पूर्ण सफलता प्राप्त कर सकेगे।

इसीलिए इस सरस्वती दिवस की हमें आवश्यकता है, हम इस दिवस को स्वयं साधना करे, और यह साधना अपने बालकों के लिए सम्पन्न करे, जिससे कि उनको साधनात्मक बल प्राप्त हो सके। सरस्वती दिवस वास्तव में ही पूरे वर्ष का श्रेष्ठतम दिवस होता हैं, जब विद्यार्थी स्वयं अपने लिए इस दिवस का उपयोग करे, या माता पिता अपने बालक बालिका के लिए इस दिवस का उपयोग कर उन्हें पूर्ण सफलता देने में सहयोगी बने।

साधना विधि

साधक को चाहिए कि सुबह यथासंभव जल्दी उठ जाय और स्नान कर अपने बालक बालिकाओं को भी उठा दें, तथा उन्हे भी सुन्दर, सुसज्जित वस्त्र पहिना कर

पूजा स्थान में या कमरे में किसी स्थान पर बिठा दें।

इसके बाद सामने सरस्वती का चित्र स्थापित करे, यह चित्र पहले से ही बाजार से खरीद कर प्राप्त करले, या पत्रिका कार्यालय को लिखने पर साधना सामग्री के साथ निशुल्क भेजने की व्यवस्था की जा सकती है।

तत्पश्चात् सामने थाली में कुंकुम से स्वस्तिक का चिन्ह बनावे या अक्षर अंकित करे, तथा इस पर महा सरस्वती यंत्र स्थापित कर दे।

महा सरस्वती यंत्र अपने आप में अत्यन्त सिद्ध महत्वपूर्ण और प्रभावकारी यंत्र होते हैं, जो कि बालक के नाम से ही मंत्र सिद्ध किये जाते है। अतः जो साधक अपने बालक बालिका को यह यंत्र पहिनाना चाहे उसे चाहिए की वह पत्रिका मिलते ही हमें पूर्ण विवरण के साथ लिख भेजें। जिससे कि उनके लिये यह महा सरस्वती यंत्र सिद्ध करके भेजा जा सके।

इसके लिए बालक बालिका का नाम (२) उसके पिता का नाम (३) इसकी उम्र या जन्म तारीख (४) वर्तमान में वह कौन सी कक्षा में पढ़ रहा है, या कौन सी परीक्षा देने जा रहा है आदि विवरण पूर्ण रूप से लिख भेजे जिससे कि प्रत्येक बालक के लिए उसके नाम से यह महा सरस्वती सिद्ध कर भेज सके।

इस प्रकार के धारण करने योग्य प्रत्येक "महा सरस्वती यंत्र" पर व्यय मात्र ६०)रू. आता है जो कि अग्रिम आवश्यक है।

यदि आप इस तारीख को अपने घर पर न हो तो आपकी पत्नी ऐसा प्रयोग करें बालक के गले में यंत्र पहिना सकती है।

साधना विधि मे जैसा कि मैंने ऊपर बताया कि स्वस्तिक का चिन्ह थाली में बना कर उस पर वे सभी यंत्र रख दे जो अपने पुत्र पुत्रियों को पहिनाने हैं, और फिर उस पर कुंकुम का तिलक करे तथा संभव हो तो पुष्प समर्पित करे।

इसके बाद बालक सामने रखे हुए महा सरस्वती चित्र की पूजा करे, उस पर केसर या कुंकुम लगावे तथा नैवेद्य चढ़ावे, और फिर सामने दीपक लगा कर बालक हाथ जोड़ कर सरस्वती को प्रणाम करता हुआ निवेदन करे, कि मैं आपके इस दुर्लभ, यंत्र को धारण कर रहा हूँ मुझे परीक्षा में सफलता प्राप्त हो, मेरी बुद्धि का विकास हो, तथा मैं निरन्तर श्रेष्ठ अंक प्राप्त करता हुआ, उन्नति की ओर अग्रसर होऊं।

ऐसा कहने के बाद अपने से संबंधित यंत्र में किसी प्रकार का कोई धागा या चैन पिरो कर उस यंत्र को गले में धारण कर ले, और फिर उठ कर अपने से जो बड़े भाई या माता पिता है, उन्हें प्रणाम करे।

फिर संभव हो तो पुनः आसन पर बैठ कर अपने घर में रखी हुई किसी प्रकार की माला से सरस्वती मंत्र की एक माला मंत्र जप करे।

सरस्वती मंत्र

॥ ॐ ऐं सरस्वत्यै नमः ॥

ऐसा करने पर उस दिन की साधना सम्पन्न हो जाती है, यदि बालक में श्रद्धा हो और साधना के प्रति रूचि हो तो वह इस मंत्र की एक माला नित्य मंत्र जाप कर सकता है।

इस यंत्र को पूरे वर्ष भर अपने गले में पहिने रहें। ऐसा करने पर उसकी बुद्धि का विकास निरन्तर होता रहता है, तथा वह शिक्षा के क्षेत्र में पूर्ण उन्नति करता हुआ कक्षा में श्रेष्ठ अंक प्राप्त कर अपने माता पिता का नाम रोशन करने में समर्थ सफल हो पाता है।

वस्तुतः यह प्रयोग स्वयं बालक को करना चाहिए, पर यदि बालक छोटा हो तो उसकी मां या उसके पिता यह प्रयोग सम्पन्न कर बालक का भविष्य संवार सकते हैं।

●●

धन त्रयोदशी—२७-१०-८६

तांत्रोक्त

धनेश्वरी आबद्ध सिद्ध साधना

कार्तिक कृष्ण १३ तदनुसार २७-१०-८९ को धन त्रयोदशी है, पूरे भारतवर्ष के लोग धन त्रयोदशी को भगवती लक्ष्मी की पूजा साधना करते है और कुछ विशेष प्रयोग सम्पन्न करते है, जिससे कि अगले पूरे वर्ष तक उसके घर में लक्ष्मी का निवास बना रहे।

इस बार धन त्रयोदशी विशेष योगों से निर्मित है क्योंकि हस्त नक्षत्र पर होने के कारण इसका महत्व और बढ़ गया है तथा इस दिन अमृत सिद्धि योग होने के कारण इसका महत्व और भी बढ़ गया है तथा इस दिन अमृत सिद्धि योग होने के कारण अपने आपमें एक महत्वपूर्ण दिवस हमारे सामने आया है।

नीचे मैं एक अत्यन्त गोपनीय और दुर्लभ प्रयोग दे रहा हूं, यह प्रयोग मुझे अपने पिताजी से प्राप्त हुआ था वे लक्ष्मी से संबंधित साधनाओं में अग्रगण्य थे और उन्होंने अपने गुरू से यह साधना प्राप्त की थी।

मेरे पूज्य पिता स्वर्गीय हरी शंकर जी गढ़वाल में रहने वाले प्रसिद्ध पंडित थे और कई वर्षों तक वह एक सिद्ध योगी के संपर्क रहे थे। काफी वर्षों तक उनकी सेवा करने के फलस्वरूप उनसे कई विद्याएं मेरे पूज्य पिताजी को प्राप्त हुई थी, यद्यपि हमारा घर और हमारे पूर्वज अत्यन्त साधारण थे, परन्तु इतना होने के बावजूद भी हम करोड़ों में खेले और जीवन की पूर्ण समृद्धता अनुभव की।

यद्यपि मेरे पिताजी ज्यादा पढ़े लिखे नहीं थे परन्तु विविध साधनाओं को सम्पन्न करने से उन्हें कई प्रकार की सिद्धियां प्राप्त हो गई थी। यह विद्या भी मुझे अपने पिताजी से ही प्राप्त हुई थी। मैंने स्वयं तो यह साधना सम्पन्न की ही है अपने मित्रों को भी सम्पन्न कराई है, और जिन जिन मित्रों ने यह साधना सम्पन्न की है, उन्हें अनायास धन प्राप्त हुआ है।

Scanned by CamScanner

यही नहीं अपितु इसके फलस्वरूप मुकदमें की परेशानी, विवाह बाधा, मकान की न्यूनता, पारिवारिक झंझट, ग्रह बाधा और आर्थिक अभाव भी दूर हुए है और आज वे सभी समाज में सम्माननीय तथा सम्पन्न है। मैंने यह अनुभव किया है, कि इस साधना को सम्पन्न करने से आर्थिक बाधा तो रहती ही नहीं, और घर की गरीबी पूर्ण रूप से समाप्त हो जाती है। इस साधना को सम्पन्न करने से जीवन में पूर्ण वैभव, धन, सुख, तथा भाग्योदय प्राप्त होने लगता है।

पत्रिका पाठकों के लिए और विशेष कर साधकों के लिए यह गोपनीय साधना मैं आगे के पृष्ठों में दे रहा हूं, मुझे विश्वास है कि इस साधना को सम्पन्न कर निश्चय ही साधक मेरे कथन से सहमत होंगे।

इस साधना को सम्पन्न कब करे ?

पिताजी के अनुसार यह साधना या अनुष्ठान सूर्य ग्रहण, चन्द्र ग्रहण अथवा धन, त्रयोदशी को सम्पन्न किया जा सकता है। इसके अलावा किसी भी रवि पुष्य योग और दीपावली की रात्रि को भी सम्पन्न किया जा सकता है। यह एक रात्रि की साधना है और इस साधना को संपन्न करने से साधक के सारे मनोरथ पूर्ण होते है।

अनुष्ठान विधि

मेरी राय में यदि धन त्रयोदशी की रात्रि को यह साधना सम्पन्न करे, तो ज्यादा उचित रहता है, सबसे पहले साधक पूजा स्थान में पीला आसन बिछा कर पूर्व या उत्तर दिशा की और मुंह कर के बैठ जाय और और साधना सामग्री की व्यवस्था पहले से ही कर ले।

साधना सामग्री में १) जल पात्र, २) गंगाजल या कुए का जल, ३) दूध ४) घी ५) शहद, ६) चीनी, ७) पंचामृत (दूध, घी शहद दही शक्कर) ८) कुंकुम या केसर ९) चावल, १०) पुष्प तथा पुष्प माला ११) नैवेद्य १२) धूप या अगरबत्ती १३) दीपक, १४) नारियल १५) फल तथा १६) दक्षिणा।

साधक को यह पूजन सामग्री पूजा स्थान में रखने के साथ साथ "अष्ट गन्ध" को भी तैयार करके रख देना चाहिए। शास्त्रों के अनुसार निम्न आठ वस्तुओं को पीस कर पानी में घोल कर स्याही बना ले जिसे "अष्ट गन्ध" कहा जाता है, इस बारे में पत्रिका में पहले भी बताया जा चुका है। अष्ट गन्ध में निम्न आठ वस्तुएं होती है- १) चन्दन, २) अगर, ३) केसर, ४) कुंकुम, ५) रोचन, ६) शिला रस, ७) जटामासी, ८) कपूर - इन आंठों वस्तुओं को बराबर मात्रा लेकर पीस कर पाउडर बना कर पानी में घोल कर स्याही बना कर साधना में प्रयुक्त की जा सकती है। यदि साधक इस प्रकार की व्यवस्था न कर सके तो पत्रिका कार्यालय से सम्पर्क स्थापित कर अष्ट गन्ध प्राप्त किया जा सकता है।

इसके अलावा साधक को चाहिए, कि जिस दिन यह साधना सम्पन्न करे, उस दिन वह सात्विक जीवन व्यतीत करे, ब्रह्मचर्य का पूर्ण पालन करे, दिन में एक बार भोजन करे तथा भूमि शयन करे। इसके अलावा इस बात का ध्यान रखे कि यह प्रयोग या अनुष्ठान किसी को बतावे नहीं तथा गोपनीय रखे।

प्रयोग विधि

उपरोक्त सारी सामग्री तैयार करने के बाद साधक सफेद कागज लेकर चार इन्च लम्बा तथा चार इन्च चौड़ा कागज का टुकड़ा बनावे, इस प्रमाण के ४१ कागज के टुकडे तैयार करके रख दे और फिर साधक स्नान कर पीली धोती पहिन कर रात्रि को आठ बजे के बाद कभी भी आसन पर बैठ जाय और सामने एक उत्तम भगवती लक्ष्मी का चित्र यदि घर में हो तो स्थापित कर दे, यदि न हो तो बाजार से दो चार

दिन पहले ही लक्ष्मी का चित्र प्राप्त कर उसे मढ़वा कर पूजा स्थान में रख दें। साधक के घर में मृग छाला हो तो आसन के ऊपर बिछा दें और मृग छाला न हो तो ऊनी आसन अथवा आसन के ऊपर कम्बल बिछा कर बैठ सकता है।

फिर साधक अपने सामने लकड़ी का एक बाजोट रखें और उस पर पीला कपड़ा बिछा दें। इसके ऊपर एक थाली रखें जो कि चांदी की या पीतल की हो सकती है। लोहे अथवा स्टील की नहीं होनी चाहिए। फिर इस थाली के मध्य में निम्न 'धनेश्वरी यंत्र' का अंकन अष्ट गन्ध से चांदी की शलाका के द्वारा करे। चांदी की शलाका साधक पहले से ही तैयार कर के रख दे या किसी सुनार से चांदी का पतला सा तार तैयार कर अपने पास रख दें, जिसके द्वारा इस यंत्र का अंकन थाली में करें।

धनेश्वरी यंत्र

श्रीं ऐं ह्रीं श्रीं

ऐं	४		१	मः
	६	५	७	
ह्रीं	२		३	न
ध				यैं

श्व ने

इस यंत्र को भली प्रकार से अंकन करने के बाद इस यंत्र के ऊपर "धनेश्वरी आबद्ध सिद्ध यंत्र" को स्थापित कर दें, यह यंत्र ताम्र पत्र पर अंकित महत्वपूर्ण और दुर्लभ होता है, जो कि अपने आपमें ही पूर्ण भाग्योदय-कारक, धनप्रदायक तथा सौभाग्यशाली माना गया है।

शास्त्रों में वर्णित इस प्रकार के यंत्र को आप कहीं से भी प्राप्त करले, अथवा समय रहते, पत्रिका कार्यालय से सम्पर्क स्थापित करने पर इस प्रकार का दुर्लभ यंत्र प्राप्त किया जा सकता है, यह यंत्र धनेश्वरी साधना से सिद्ध और लक्ष्मी आबद्ध मंत्र से आपूरित होता है, जिसकी वजह से यह साधना पूर्ण सम्पन्न होती है, और आने वाली पीढ़ियों के लिए यह यंत्र सौभाग्यशाली बना रहता है।

इसके बाद एक अलग पात्र में इस "धनेश्वरी आबद्ध सिद्ध यंत्र" को रख कर जल से स्नान करावे और फिर पंचामृत से स्नान करा कर पुनः उसी थाली में स्थापित कर दे, जिस थाली में अष्ट गन्ध से धनेश्वरी यंत्र अंकन किया था।

इसके बाद इस ताम्र पत्र पर अंकित यंत्र को पुष्प समर्पित करे, पुष्प माला पहिनाए सामने धूप दीप लगावे, नारियल समर्पित करे, तथा भोग लगावे। इस प्रकार का प्रत्येक कार्य करते समय साधक "ॐ धनेश्वर्यै आगच्छ आगच्छ आबद्ध आबद्ध सिद्धयै नमः" मंत्र का उच्चारण करता रहे, सम्पूर्ण पूजन इसी मंत्र के उच्चारण से किया जाता है।

इसके बाद इस यंत्र को अपने प्राणों से लक्ष्मी के प्राणो से परस्पर जोड़ता हुआ निम्न प्राण प्रतिष्ठा करे। इसमें साधक अपने बांये हाथ को हृदय पर रखे तथा दाहिने हाथ में पुष्प की पंखुड़ियां और थोड़े से अक्षत ले कर इस ताम्र पत्र पर अंकित यंत्र पर धीरे धीरे चढ़ाता हुआ, निम्न प्राण प्रतिष्ठा मंत्र को तीन बार उच्चारण करे। इस प्राण प्रतिष्ठा मंत्र में जहां जहां पर "मम" शब्द आया है, वहां वहां साधक अपने नाम का उच्चारण करे।

ओं आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं हंसः सो हं मम प्राणाः इह प्राणाः ओं आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं षं स हं हंसः सोहं सर्व इन्द्रियाणि इह मम प्राणाः ओं आ ह्रीं क्रीं यं रं लं वं शं षं सं हं हंसः सोहं मम वाङ्-मन-चक्षु- श्रोत्र जिहवा घ्राण-प्राणा इहागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा।

इसके बाद साधक के पास कागज के जो ४१ टुकडे रखे हुए है, उसमें से प्रत्येक टुकडे पर चांदी की सलाका से अष्ट गन्ध के द्वारा धनेश्वरी यंत्र का अंकन करे धनेश्वरी यंत्र ऊपर छपा हुआ है। इसके बाद उन ४१ टुकड़ों को एक दूसरे के ऊपर रख कर इन टुकड़ों की पूजा करे, कुंकुम अक्षत, पुष्प समर्पित करे और फिर तीन बार उपरोक्त विधि से ही प्राण प्रतिष्ठा मंत्र का उच्चारण करे।

इसके बाद साधक निम्न स्तोत्र मंत्र का ४१ बार पाठ करे, पाठ के समय घी का दीपक बराबर लगा रहना चाहिए। जो साधक संस्कृत पढे लिखे नहीं हैं, वे भी धीरे धीरे इस स्तोत्र का उच्चारण कर सकते है। मैंने अनुभव किया है, कि जिस तरीके से भी उच्चारण हो, उच्चारण से और पूरे ४१ बार पाठ करने से निश्चय ही साधना में सफलता प्राप्त होती हैं।

पाठ के बाद उन ४१ कागज के टुकड़ों को जिन पर धनेश्वरी यंत्र अंकित है, किसी डिब्बी में बन्द करके रख दें; तथा ताम्र पत्र पर अंकित यंत्र को भी अपने पूजा स्थान में बना रहने दें।

पाठ के बाद उस ताम्र पत्र पर अंकित यंत्र की सात प्रदक्षिणा करे और फिर साधना पूर्ण समझे।

मैंने अनुभव किया है कि इसका लाभ तुरन्त प्रतीत होता हैं, और कई बार मैंने यह भी अनुभव किया है कि दूसरे दिन से ही साधक को आर्थिक व्यापारिक दृष्टि से चमत्कारिक अनुभव होने लगते हैं।

नीचे मैं ऊपर वर्णित स्तोत्र मंत्र को शुद्धता से प्रकाशित कर रहा हूं।

धनेश्वरी आबद्ध स्तोत्र

नमस्ते सर्व भूतानां जननीमब्धि-सम्भवाम्।
श्रियमुन्निद्र-पद्माक्षीं विष्णु-वक्षः-स्थल-स्थितां॥

पद्मालयां पद्म - करां पद्म-पत्र - निभेक्षणाम्।
वन्दे पदम-मुखीं देवीं पद्म-नाभ-प्रियामहम्॥

त्वं सिद्धिस्त्वं स्वधा स्वाहा सुधा त्वं लोक-पावनी।
सन्ध्या रात्रिः प्रभा भूतिर्मेधा श्रद्धा सरस्वती॥

यज्ञ-विद्या महा विद्या गुह्य-विद्या च शोभने।
आत्म-विद्या च देवि! त्वं विभुक्ति-फल-दायिनी॥

आन्विक्षिकी त्रयी वार्ता दण्ड-नीतिस्त्वमेव च।
सौम्याऽसौम्यैर्जगद्-रूपैस्त्वयैतद् देवि! पूरितम्॥

का त्वन्या त्वामृते देवि! सर्व-यज्ञ-मयं वपुः।
अध्यास्ते देव-देवस्य योगी-चिन्त्यं गदा-भृतः॥

त्वया देवि! परित्यक्तं सकलं भुवन - त्रयम्।
विनष्ट-प्रायमभवत् त्वयेदानीं समेधितम्॥

दाराः पुत्रास्तथाऽऽगार-सुहृद्धान्य-धनादिकम्।
भवत्येतन्महाभागे! नित्यं त्वद्-वीक्षणान्नृणाम्॥

शरीरारोग्यमैश्वर्यमरि - पक्ष-क्षयः सुखम्।
देवि! त्वद्-दृष्टि-दृष्टानां पुरुषाणां न दुर्लभम्॥

त्वमम्बा सर्व-भूतानां देव-देवो हरिः पिता।
त्वयैतद् विष्णुना चाम्ब! जगद् व्याप्तं चराचरम्॥

मा नः कोशं तथा गोष्ठं मा गृहं मा परिच्छदम्।
मा शरीरं कलत्रं च त्यजे सर्वथा पावनि॥

मा पुत्रान् मा सुहृद्-वर्गान् मा पशून् मा विभूषणं।
त्यजेथा मम देवस्य विष्णोर्वक्षः स्थलाश्रये॥

सिद्धाश्रम पंचांग—कमला जयन्ती—३०-१०-८६

तंत्र क्षेत्र में

कमला साधना

एक बार सनत कुमार समस्त लोकों का भ्रमण करते हुए विष्णु लोक में जा पहुंचे, वहां उन्होंने भगवान विष्णु के साथ पलंग पर आसीन वस्त्र एवं आभूषणों से विभूषित महामाया भगवती कमला के दर्शन किये तो भक्ति भाव से गदगद हो कर सनत कुमार उनकी स्तुति करने लगे।

हे, भगवती! तुम लक्ष्मी स्वरूपा हो, तुम्हारी कृपा से मुझको सम्पूर्ण ज्ञान प्राप्त हो, हे, लक्ष्मी! आप कृपा कर मेरी वाणी और मेरे मन को सही रास्ते पर गतिशील करे, मुझे ओज, तेज बल, बुद्धि क्षमता और वैभव प्राप्त हो। महामाया कमला को पाकर स्वयं आदिदेव भगवान तीनों रूपों में प्रगट हो कर समस्त लोकों का सृजन, पालन, और संहार करते हैं, वही आद्या शक्ति मेरा कल्याण करे। जिनकी कृपा दृष्टि से कमल से उत्पन्न ब्रह्मा तथा अन्य प्रमुख देवता शक्ति प्राप्त करते है, जो वर देने वाली भगवती लक्ष्मी प्रसन्न हो कर सुख प्रदान करती है, उस महामाया पूर्ण लक्ष्मी भगवती कमला को मैं प्रणाम करता हूँ, और जो प्राणी सिर झुका कर आपको हृदय से नमन करते है, उनकी कभी भी दुर्गति नहीं होती, ऐसे साधक निश्चय ही पूर्ण सिद्धि प्राप्त कर अनन्त लोक तक वैभव सम्पन्न हो कर धन, धान्य, सम्मान, प्रसिद्धि कीर्ति और सुख को प्राप्त करते है। मैं आपका क्या वर्णन करूं, आप को हजार-हजार बार नमस्कार है।

वास्तव में ही लक्ष्मी की साधना तंत्र मार्ग से ही संभव है, और यह कमला साधना के द्वारा सहज संभव है। कमला तंत्र में तो स्पष्ट रूप से बताया गया है, कि जीवन में अतुलनीय धन, वैभव प्राप्त करने के लिए कमला साधना आवश्यक है, क्योंकि इस साधना के द्वारा ही जीवन में वह सब कुछ प्राप्त हो सकता है, जो कि आज के मनुष्य को चाहिए।

सबसे बड़ी बात यह है, कि कमला साधना एक तरफ जहाँ पूर्ण मानसिक शान्ति और सिद्धि प्रदान करती है, वहीं दूसरी और इसके माध्यम से अतुलनीय वैभव, और अनायास धन प्राप्ति होती रहती है। तंत्र में इसके द्वादश

नाम स्पष्ट हुए हैं। यदि कोई साधक केवल इन द्वादश नामों का उल्लेख या उच्चारण ही नित्य कर लेता है, तो भी उसे पूर्ण सिद्धि प्राप्त हो जाती है। फिर यदि कोई कमला जयन्ती के अवसर पर एक बार भली प्रकार से कमला साधना सम्पन्न कर लेता है, तो उसके जीवन में किसी प्रकार का कोई अभाव रह ही कैसे सकता है।

कमला के द्वादश नामों में है— १) महालक्ष्मी, २) ऋणमुक्ता, ३) हिरण्मयी, ४) राजतनया ५) दारिद्रय हारिणी, ६) कांचना, ७) जया, ८) राजराजेश्वरी, ९) वरदा १०) कनकवर्णा, ११) पद्मासना, १२) सर्वमांगल्य युक्ता।

कमला प्रयोग

यदि तांत्रिक दृष्टि से कमला साधना सम्पन्न की जाती है, तो निश्चय ही साधक आश्चर्यजनक उपलब्धियां अनुभव करने लगता है। जो तंत्र के क्षेत्र में थोड़ी बहुत भी रूचि रखते है, वे कमला तंत्र के नाम से परिचित है, और वे यह भी जानते है, कि यह तंत्र कितना अधिक महत्वपूर्ण और दुर्लभ है। एक प्रकार से देखा जाय तो कमला तंत्र सर्वथा गोपनीय हो रहा है, मगर जो साधक पूर्ण निष्ठा के साथ इस कमला तंत्र को सम्पन्न कर लेता है। उसे जीवन में समस्त सुख, वैभव और सौभाग्य प्राप्त हो जाता है। दरिद्रता तो हमेशा हमेशा के लिए समाप्त हो जाती है, अनायास धन प्राप्ति की संभावनाएं बन जाती हैं, और साधक अपने जीवन में सभी दृष्टियों से पूर्णता प्राप्त करता हुआ, सही अर्थो में वैभव युक्त बन जाता है।

इस वर्ष ३०-१०-८९ को कमला जयन्ती है, साधक को चाहिए कि वे प्रातः काल उठ कर स्नान कर अपने पूजा स्थान में बैठ जाए और फिर साधना प्रारम्भ करें। साधना प्रारम्भ करने से पूर्व पूजन सामग्री अपने सामने रख दें, जिसमें जल पात्र, केसर, अक्षत, नारियल, फल, दूध का प्रसाद, पुष्प, आदि हो। कमला साधना में अष्ट गन्ध का प्रयोग ज्यादा महत्वपूर्ण माना गया है, अतः साधकों को चाहिए कि वे पहले से ही अष्ट गन्ध प्राप्त कर उसे घोल कर अपने सामने रख दें।

कमला यंत्र

तांत्रोक्त कमला साधना का आधार 'कमला यंत्र' ही है। क्योंकि यह पूर्ण रूप से प्रभाव युक्त और सिद्धिदायक है। कमला तंत्र में यंत्र के बारे मे बताया है, कि वह पूर्ण विधि के साथ षटकोण सहित अष्टदलों से युक्त महत्वपूर्ण यंत्र हो।

अनुक्तकल्पे यन्त्रन्तु लिखेत्पद्मन्दाष्टकम् ॥
षटकोणकर्णिकान्तत्र वेदद्वारोपशोभितम् ॥

यह यंत्र ताम्र पत्र पर अंकित हो, साथ ही साथ कमला तंत्र में बताया गया है, कि जब तक "तंत्रोद्धार" सम्पन्न यन्त्र न हो तो उसका प्रभाव नहीं होता, तंत्रोद्धार में बारह तथ्य स्पष्ट किये है, बताया है, कि इन तत्वों को सम्पन्न करके ही यंत्र का प्रयोग करना चाहिए।

कमला तंत्र के अनुसार १) यह शुद्धता के साथ विजय काल में अंकित किया जाना चाहिए, २) इसका पूर्ण रूप से मन्त्रोद्धार हो, ३) यह वाग् बीज से सम्पुटित हो, ४) लज्जा बीज के द्वारा इसका अभिषेक हो, ५) श्री बीज के द्वारा यह मंत्र सिद्ध हो, ६) कामबीज के द्वारा यह वशीकरण युक्त हो, ७) पद्मबीज के द्वारा यह प्रभाव युक्त हो, ८) जगत बीज के द्वारा यह शीघ्र सिद्धिदायक हो, ९) रूपबीज के द्वारा यह आकर्षण युक्त हो, तथा १०) मनु बीज के द्वारा मन पर नियंत्रण प्रदान करने वाला हो, ११) ऐं बीज के द्वारा वैभव प्रदान युक्त हो, तथा १२) रमा बीज के द्वारा यह सिद्धिदायक हो।

तारम्पूर्व्व लिखित्वा परमलममलं व्वाग्भवम्बी
जगन्य।

Scanned by CamScanner

लज्जाश्री बीजपूर्वं व्वशकरपतमंकामबीजम्य
रस्तात् ।।
ह्रौं पश्चाद्योजनीयं नुयुतमय जगत्पूर्विकाया
प्रसूत्या ।
न्डेतं रुपन्नमोन्तन्निखिलमनुविदंम्मन्त्रमुक्तं रमायाः।।

वास्तव में ही कमला यंत्र पूर्ण रूप से सिद्ध करना अत्यन्त पेचीदा और श्रमसाध्य कार्य है। इस प्रकार का यंत्र पूजा स्थान में स्थापित कर साधना प्रारम्भ करे। ऐसा यंत्र जहां उनके स्वयं के जीवन के लिए तो सौभाग्यदायक रहेगा ही, आने वाली कई कई पीढ़ियों के लिए भी वह यंत्र भाग्योदयकारक बना रहेगा।

इस प्रकार के यंत्र को जल से और फिर दूध, दही, घी, शहद, शक्कर–पंचामृत से स्नान करा कर पुनः शुद्ध जल से धो कर लकड़ी का बाजोट बिछा कर उस पर पीला वस्त्र स्थापित कर इस यंत्र को प्रतिस्थापित करना चाहिए। फिर साधक अलग पात्र में गणपति को स्थापन करे, दूसरे लकड़ी के बाजोट पर नवग्रहों को स्थापित करे और फिर एक थाली रख कर उस पर नया पीला वस्त्र बिछा दें, कपड़े के ऊपर सिन्दूर से सोलह बिन्दियां लगावे सबसे ऊपर चार बिन्दियां लगा दें, फिर उसके नीचे चार बिन्दियां लगावे, इस प्रकार चार लाइनों में १६ बिन्दियां स्थापित हो जाती है, तत्पश्चात प्रत्येक बिन्दी पर एक लौंग तथा एक इलायची रख कर फिर इसका अष्ट गन्ध से पूजन करे। और हाथ जोड़ कर ध्यान पढ़े–

उद्यन्मार्तण्ड - कान्ति - विगलित कवरीं कृष्ण
वस्त्रांव् तागाम्
दण्डं लिंगं कराब्जैर्वरमथ भुवनं सन्दधतीं त्रिनेत्राम।
नाना रत्नैर्विभाता स्मित-मुख-कमलां सेवितां
देव-सर्व
मांया राज्ञीं नमो भूत् स-रवि-कल-तनुमाश्रये
ईश्वरी त्वाम् ।।

जो साधक संस्कृत पढ़े लिखे नहीं है, उनको चिन्ता नहीं करनी चाहिए और धीरे धीरे शब्द उच्चारण करते हुए यह ध्यान पढ़ सकते है।

फिर अपने सामने ॐ गंधायै नमः इस मंत्र से गंध स्थापित करे, और पुष्प तथा अक्षत अपने सिर पर चढ़ा ले।

इसके बाद ताम्र पत्र पर अंकित "कमला यंत्र" को जहां सोलह बिन्दियां लगाई हुई है, उसके ऊपर पूर्ण श्रद्धा के साथ स्थापित करे, और अष्टगन्ध से इस यंत्र पर सोलह बिन्दियां लगा दे। ये सोलह बिन्दियां सोलह लक्ष्मी की प्रतीक मानी जाती है।

इसके बाद दोनों हाथों में पुष्प तथा अक्षत लेकर निम्न मंत्र से अपने घर में भगवती कमला का आह्वान करते हुए यंत्र पर पुष्प अक्षत समर्पित करे—

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं कान्हेश्वरी सर्व-जन-मनोहारिणी, सर्व-मुख-स्तम्भिनी, सर्व-स्त्री पुरुषाकर्षिणी वन्दी-शृंखलात्रोटय त्रोटय सर्व-शत्रूना भंजय-भंजय द्वेषि दलय दलय निर्दलय निर्दलय सर्व-शत्रूणां स्तम्भय मोहनास्त्रेण द्वेषि उच्चाटय उच्चाटय सर्व वशं कुरु कुरु स्वाहा। देवि सर्व सिद्धेश्वरि कामिनी-गणेश्वरि इहागच्छ इह तिष्ठ ममोपकल्पितां पूजां गृहाण मम सपरिवारं रक्ष रक्ष नमः।।

इसके बाद साधक सामने शुद्ध घृत का दीपक लगावे उसका पूजन करे, तत्पश्चात् सुगन्धित अगरबत्ती प्रज्वलित करे, ऐसा करने के बाद साधक इस यंत्र पर कुंकुम समर्पित करे, पुष्प तथा पुष्प माला पहनावे, अक्षत चढ़ावे, तथा नैवेद्य का भोग लगावे। सामने ताम्बूल, फल, और दक्षिणा समर्पित करे।

Scanned by CamScanner

तत्पश्चात् साधक को चाहिए कि वह निम्न दुर्लभ स्तोत्र का पांच बार पाठ करे जो कि महत्वपूर्ण है, इसके द्वारा उस यंत्र का साधक के प्राणों से सीधा संबंध स्थापित हो जाता है, और साधना सम्पन्न करने पर साधक को ओज, तेज, बल, बुद्धि, तथा वैभव प्राप्त होने लग जाता है।

इस स्तोत्र का उच्चारण सनत कुमार ने भगवती लक्ष्मी को प्रसन्न करने के लिए किया था। कमला उपनिषद में भी इस लघु स्तोत्र का अत्यन्त महत्वपूर्ण प्रयोग है—

वाचं में दिशतु श्री देवी मनो में दिशतु वैष्णवी। ओजस्तेजो बल दाक्ष्य बुद्धिर्वैभवमस्तु में। त्वत्प्रसादाद भगवति। प्रज्ञानं मे ध्रुवं भवेत्। शन्नो दिशतु श्री देवी महा-माया वैष्णवी शक्तिराद्या। यामासाद्य स्वय मादि-देवो भगवान् परावरज्ञस्त्रिघा सम्भिन्नों लोकांस्त्रीन् सृजत्यवत्यत्ति च ।यद् भू विक्षेप बलमा पन्नो हयब्ज-योनिस्तदितरे चामरा मुख्याः सृष्टि चक्र प्रणेतरः सम्बभूवुः। या वै वरदा स्वोपाया सु प्रसन्ना सुखयति सहस्त्र पुरुषान् ये लोकाः सन्तत मानमन्ति शिरसा हृदयेन चतामेकां लोक-पूज्यां न ते दुर्गतिं यान्ति भूताः ।।

वास्तव में ही यह कमला उपनिषद जो कि ऊपर स्पष्ट किया है, वह अपने आपमें महत्वपूर्ण है, यदि साधक नित्य इसके ग्यारह पाठ करता है, तो भी उसके जीवन में धन, वैभव, यश, सम्मान प्राप्त होता रहता हैं।

प्रयोग में इसका पांच बार पाठ करके, फिर "कमला माला" का पूजन करना चाहिए। यह कमला माला विशेष मंत्रों से सिद्ध और सूर्य उपनिषद से संगुफित होती है, जो कि वास्तव में ही अत्यन्त महत्वपूर्ण मानी गई है, इस माला को पहले से ही प्राप्त करके रख देनी चाहिए।

इसके बाद साधक घी के सोलह दीपक लगा ले, निम्न कमला मंत्र की सोलह माला मंत्र जाप उसी आसन पर बैठे बैठे कर ले।

कमला तंत्र

इस दीपावली पर्व पर और पत्रिका के इस अंक का यह श्रेष्ठतम प्रयोग है, जिसे दीपावली के दूसरे दिन संपन्न किया जाता है। सामान्य हिन्दी पढ़ा लिखा, साधक भी इस प्रयोग को सम्पन्न कर लेता है।

यह प्रयोग सर्वथा गोपनीय दुर्लभ और महत्वपूर्ण रहा है। वास्तव में ही इस प्रयोग को सम्पन्न करने से व्यक्ति निकट भविष्य में ही आश्चर्यजनक उपलब्धियां अनुभव करने लगता है, और उसे विश्वास हो जाता है, कि आज के युग में भी तंत्र साधना शीघ्र सिद्धिप्रदायक एवं प्रभाव पूर्ण है।

ऐसा महत्वपूर्ण प्रयोग प्राप्त करने के बावजूद भी यदि कोई साधक इस लघु साधना को सम्पन्न नहीं करता, तो इससे बड़ा दुर्भाग्य और क्या हो सकता है?

कमला मंत्र

ॐ ऐं ईं ह्रीं श्रीं क्लीं ह्सौ जगत्प्रसूत्यै नमः ।।

जब सोलह माला मंत्र जाप हो जाय तब भगवती लक्ष्मी की विधि विधान के साथ आरती सम्पन्न करें, और उस यंत्र को पूजा स्थान में ही स्थापित रहने दे, तथा कमला माला को इस यंत्र के सामने या यंत्र के ऊपर स्थापित कर दें। भविष्य में जब भी कमला मंत्र का जप करना हो तो इसी कमला माला से उपरोक्त मंत्र की एक माला फेरे।

वस्तुतः यह मंत्र और यह तांत्रिक प्रयोग अपने आपमें ही दुर्लभ और महत्वपूर्ण है, साधकों को चाहिए कि वे अवश्य ही इस साधना को सम्पन्न करे और अनुभव करे कि आज के युग में भी साधनाएं कितनी शीघ्र और अचूक फल प्रदान करने में समर्थ है। ★

Scanned by CamScanner

अन्धों को ज्योति प्रदान करने वाला

सूर्य सिद्धि प्रयोग

(४-११-८९)

तांत्रिक ग्रन्थों में कुछ ऐसी विशिष्ट साधनाएं हैं, जो अपने आपमें अद्वितीय कहीं जा सकती है। उन ऋषियों ने अपने ज्ञान से ऐसे मंत्र और ऐसी साधनाएं ढूंढ निकाली, जो मानव जाति के कल्याण के लिए है।

कार्तिक शुक्ल ६ को 'सूर्य सिद्धि दिवस' पूरे भारतवर्ष में मनाया जाता हैं, इस वर्ष यह दिवस ४-११-८९ को सम्पन्न हो रहा है। पूरे वर्ष में यह एक मात्र दिवस है, जब साधक भगवान सूर्य की आराधना कर अपने नेत्रों की ज्योति प्राप्त करता है, और अपने जीवन के अन्धकार को प्रकाश में बदलने का प्रयत्न करता है।

"शतानिक उपनिषद" में एक अत्यन्त तेजस्वी और दुर्लभ प्रयोग दिया है, जो कि भगवान सूर्य से संबंधित है। कलियुग में सूर्य और अग्नि प्रत्यक्ष देवता हैं, हमारे वेदों में जिन देवताओं की गणना की गई है, उनमें से अन्य देवता तो हमें दिखाई दे या न दें, अथवा साधना सम्पन्न करने पर उनके दर्शन न हो सकें परन्तु भगवान सूर्य और अग्नि तो प्रत्यक्ष देवता हैं, और कलियुग में भी साधक जब चाहे, इन देवताओं के दर्शन कर सकता है।

यों तो मानव शरीर व्याधियों और बीमारियों का घर है, परन्तु इनमें सबसे अधिक दुःखदायी अन्धापन है। जब व्यक्ति की नेत्र ज्योति क्षीण हो जाती है, या उसे दिखाई नहीं देता, तो उसे पग-पग पर ठोकरें खानी पड़ती हैं, उसे दूसरों के आश्रित रहना पड़ता है, छोटे से

Scanned by CamScanner

छोटे काम के लिए लोगों का मोहताज होना पड़ता है, न तो वह प्रकृति और दुनियां की सुन्दरता को देख सकता है, और न वह ऐश आराम भोग-विलास चित्रपट दृश्य आदि का आनन्द ले सकता है, सही अर्थों में कहा जाय तो उसका पूरा जीवन अन्धकार में डूबा हुआ होता है, उसे जीवन से किसी प्रकार का कोई रस नहीं रहता, उसे अपने दैनिक कार्यों और आवश्यक कार्यों के लिए भी दूसरों की सहायता लेनी पड़ती है।

यह अन्धापन कई कारणों से व्याप्त हो जाता है, जिन में निम्न पांच कारण प्रमुख है -

१- किसी विशेष बीमारी की वजह से आंखों की रोशनी समाप्त हो जाती है।

२- वृद्धावस्था के कारण जब शरीर शिथिल हो जाता है, तब व्यक्ति को कम दिखाई देने लगता है, या बिल्कुल दिखाई नहीं देता।

३- आकस्मिक दुर्घटना आदि की वजह से भी नेत्रों की ज्योति समाप्त हो सकती है।

४- गलत दवा का उपयोग करने से या गलत आप-रेशन होने से दैवी प्रकोप से अथवा दुर्घटना से भी आंखों की ज्योति समाप्त हो सकती है।

५- रतौधी, मोतिया बिन्द, फूला, आदि अन्य आँखों की बीमारियों से भी नेत्र ज्योति कमजोर हो जाती है और व्यक्ति को मजबूरन अन्धता का शिकार होना पड़ता है।

इसमें कोई दो राय नहीं कि आज विज्ञान बहुत आगे बढ़ गया है, और आंखों के अच्छे से अच्छे आपरेशन होने लगे है, परन्तु फिर भी विज्ञान इस दुनियां से अन्धता को समाप्त नहीं कर सका है। आज भी करोड़ों व्यक्ति अन्धे-पन के शिकार है. और वे एक प्रकार से देखा जाय तो हमारी दुनियां से कटे हुए है।

हमारे महाऋषियों को इन तथ्यों का बहुत समय पहले से ही ज्ञान था, और उन्होंने अन्धता को 'मृत्यु' ही कहा है। मृत्यु होने पर तो आदमी एक बार हो समस्त दुखों से मुक्त हो जाता है, परन्तु अन्धे व्यक्ति को तो रोज मरना पड़ता है, इसीलिए उन्होंने कुछ ऐसी विधियां ढूंढ निकाली जिसकी वजह से यह अन्धता समाप्त हो सके।

सिद्धाश्रम के योगियों ने भी इस तथ्य की ओर पूरा ध्यान दिया, काफी वर्षों से वे इस प्रयत्न में थे, कि कोई ऐसी विधि या कोई ऐसा उपाय ढूंढ निकाला जाय जिसकी वजह से लोगों का अन्धापन समाप्त हो सके और वे वापिस रोशनी प्राप्त कर सके। वे वापिस दुनिया का यहां के राग-रंग का आनन्द ले सके, वे दूसरों के आश्रित नहीं रहे, और उन्हें दैनिक कार्यों के लिए किसी का मोह-ताज न होना पड़े।

यद्यपि पत्रिका के पिछले अंकों में हमने चाक्षुषोप-निषद की चर्चा की थी और एक प्रयोग दिया था, जिसका वर्णन शास्त्रों में था, पाठकों ने उस प्रयोग से काफी लाभ उठाया, यह उनके नित्य आने वाले पत्रों से स्पष्ट है।

परन्तु जैसा कि मैंने अभी बताया कि जिस प्रकार से विज्ञान में निरन्तर खोज होती रहती है, और विज्ञान की प्रगति आगे बढ़ती रहती है, ठीक उसी प्रकार से ज्ञान के क्षेत्र में भी नित्य नवीन शोध होती रहती है, सिद्धाश्रम के उच्चकोटि के योगी बराबर इसी खोज में रहते है और वे उन विधियों को ढूंढते है, उनका परी-क्षण करते है, और उनका प्रयोग कर उनकी सत्यता असत्यता का ज्ञान प्राप्त करते है, ऐसी ही नवीनतम शोध 'सूर्य साधना' है जो कि मूल रूप से तो शतानिक उप-निषद में वर्णित है परन्तु ऋषियों ने उस शतानिक उप-निषद में बताई हुई जटिल विधि को आसान किया, अपने ज्ञान और साधना के बल पर उसमें शोध किया, और वे विधियां, वे तथ्य और वे प्रयोग ढूंढ़ निकाले, जो आज के समय में ज्यादा उपयोगी है, ज्यादा सार्थक है और जिसका प्रयोग सामान्य साधक भी आसानी से कर सकता है।

Scanned by CamScanner

इस साधना प्रयोग को किसी भी रविवार को किया जा सकता है, पर यदि अवसर और सुविधा मिले तो "सूर्य सिद्धि" दिवस के अवसर पर इस प्रयोग को प्रारम्भ करना चाहिए, इस प्रयोग को जो अन्धता का शिकार है, वह पुरूष या स्त्री सम्पन्न कर सकता है, यदि यह संभव न हो तो उसका पुत्र, पुत्री, या पुत्रवधू सम्पन्न कर सकती है, अथवा किसी योग्य पंडित अथवा ब्राह्मण से भी इस प्रयोग को सम्पन्न करवाया जा सकता है।

शतानिक उपनिषद में तो स्पष्ट रूप से बताया गया है, कि जो अन्धे है, या जिनकी नेत्र ज्योति क्षीण है, या जिन्हें आंखों की कोई बीमारी है, वे तो सूर्य सिद्धि दिवस के अवसर पर इस प्रयोग को प्रारम्भ करे ही, परन्तु जो सभी दृष्टियों से स्वस्थ है, उनको भी चाहिए कि वे इस दुर्लभ प्रयोग को इस अवसर पर सम्पन्न करे, जिससे कि भविष्य में उन्हें अन्धता का शिकार न होना पड़े। दुर्भाग्यवश किसी दुर्घटना में उनकी आंखों को कोई क्षति न पहुंचे और उन्हे आंखों से संबंधित किसी प्रकार की बीमारी न हो। सिद्धाश्रम के योगियों ने भी प्रत्येक साधक, पुरूष या स्त्री को सलाह दी है, कि वे सूर्य सिद्धि दिवस के अवसर पर अवश्य ही इस प्रयोग को सम्पन्न करे, जिससे कि मृत्यु तक उनकी आंखें स्वस्थ व सुन्दर रह सके, और वह अपने जीवन में इस दुनिया का पूरा पूरा आनन्द ले सके।

सिद्धाश्रम के योगी विश्रवा का तो यह कहना है, कि इस प्रयोग से केवल आंखों की ज्योति ही नहीं प्राप्त होती आखों से संबधित बीमारी ही नहीं समाप्त होती, अपितु जिस पुरुष या स्त्री की आंखें छोटी हो, अथवा असुन्दर हो, तो इस प्रयोग से उसकी आंखें हिरणी की तरह सुन्दर और आकर्षक बन जाती है, तथा उसकी सुन्दरता में चार चांद लग जाते हैं, इसलिए सौन्दर्य वृद्धि में भी यह प्रयोग आवश्यक एवं उपयोगी है।

साधना समय

साधना का तात्पर्य कोई जटिल विधि विधान या क्रिया नहीं है, जिस प्रकार से व्यक्ति अपने इलाज के लिए अस्पताल जाता है, वहां पर घण्टे दो घण्टे इन्तजार करना पड़ता है, ठीक उसी प्रकार से इसके लिए भी साधक को घण्टे दो घण्टे का समय निकालना पड़ता है, और जिस प्रकार से हम डाक्टर की सलाह के अनुसार औषधि लेते हैं, उसी प्रकार से योग्य व्यक्ति, गुरू की सलाह से साधना ज्ञान प्राप्त करते हैं, और उस साधना को सम्पन्न कर अपने जीवन में पूर्णता प्राप्त करते हैं।

इस साधना को किसी भी रविवार से प्रारंभ किया जा सकता है, पर यदि सुविधा हो तो "सूर्य सिद्धि दिवस" से इस साधना को प्रारम्भ करना चाहिए, इस वर्ष यह सूर्य सिद्धि दिवस ४-११-८९ को आ रहा है, यह साधना, दिन को ही सम्पन्न की जाती है, अतः साधकों को चाहिए कि वे प्रातः काल इस साधना को सम्पन्न करें।

शास्त्रों में सूर्य सिद्धि दिवस को इन्द्राक्षी प्रयोग कहा गया है, नीचे मैं इस एक दिन की साधना को स्पष्ट कर रहा हूं।

सूर्य सिद्धि हेतुः इन्द्राक्षी प्रयोग

प्रातः काल उठ कर साधक स्नान कर सफेद वस्त्र धारण कर ले, यदि स्त्री साधिका हो तो बालों को धो ले और बाल खुले रखे, उसके बाद सूर्य उगने पर साधक लोटे में जल ले कर पूर्व दिशा की ओर सूर्य के सामने खड़े हो कर भगवान सूर्य को अर्घ्य दे, अर्थात् लोटे से जल को सूर्य के सामने जमीन पर धार बांधते हुए छोड़े और उसके बाद जहां जल गिरा है, उसकी सात प्रदक्षिणा करे, तत्पश्चात् साधक अपने पूजा स्थान में या कमरे में आ कर आसन पर बैठ जाय, पूर्व दिशा की ओर मुंह करे, सफेद आसन बिछा हुआ हो और सामने किसी पात्र में 'सूर्य सिद्धि युक्त इन्द्राक्षी यंत्र' को स्थापित करे, यह धातु निर्मित मंत्र सिद्ध दुर्लभ यंत्र होता हैं जिसको स्पर्श करने से ही अनुकूल फल प्राप्त होने लगता है।

इस यंत्र को पहले से ही प्राप्त कर लेना चाहिए, इस

Scanned by CamScanner

यंत्र का अंकन केवल रविवार को ही किया जाता है, और फिर चाक्षुषोपनिषद में वर्णित विधि से इसे मंत्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त किया जाता है, जिसकी वजह से यह यंत्र अपने आपमें तेजस्वी और सिद्धिदायक बन जाता है, शास्त्रों में तो कहा गया है, कि जिसके घर में इस प्रकार का यंत्र रहता है, उसके घर में आंखों की बीमारी व्याप्त नहीं होती और भगवान सूर्य घर के सभी सदस्यों के आंखों की रक्षा करते है।

इस प्रकार के यंत्र को किसी थाली में रख कर कुंकुम से अक्षत और पुष्प से संक्षिप्त पूजा करे, और हाथ में जल ले कर निम्न प्रकार से विनियोग करे।

विनियोग

ॐ अस्य श्री इन्द्राक्षी-स्तोत्र-महा-मन्त्रस्य श्री शचि-पुरन्दर ऋषिः, अनुष्टुप छन्दः, श्रीइन्द्राक्षी दुर्गा देवता, महा-लक्ष्मीः बीजं, भुवनेश्वरी शक्तिः, भवानी कीलकं, मम श्रीइन्द्राक्षी-प्रसाद-सिद्धयर्थे जपे विनियोगः।

विनियोग के बाद साधक या साधिका इस प्रकार के दुर्लभ यंत्र के सामने घी का दीपक लगा दे और दोनों हाथ जोड़ कर ध्यान करे।

ध्यान

नेत्राणां दशभिः शतै परिवृतां अत्युग्र-चर्माम्बराम्,
हेमाभां महतीं विलम्बित-शिखामायुक्त-केशान्वि-
ताम्।
घण्टा-मण्डित-पाद-पदम्-युगलां, नागेन्द्र - कुम्भ-
स्तनीम्,
इन्द्राक्षी परिचिन्तयामि मनसा कल्पोक्त-सिद्धि-
प्रदाम् ॥

नीचे मैं दुर्लभ इन्द्राक्षी मंत्र को स्पष्ट कर रहा हूँ, जो कि आंखों की रक्षा के लिए और नेत्र ज्योति प्रदान करने के लिए अत्यधिक महत्वपूर्ण है।

इन्द्राक्षी मन्त्र

ॐ नमो भगवति, माहेश्वरि, महा-चिन्तामणि, सकल - सिद्धेश्वरि, सकल-जन-मनोहारिणि, काल-रात्रि, अनले, अजिते, अभये, महा-घोर-प्रति-हत-विश्व-रूपिणि, मधु-सूदनि, महा-विष्णु-स्वरू-पिणि, नेत्र-शूल-कर्ण-शूल-कटि-शूल-पक्ष-शूल-पाण्डु-रोगादीन् नाशय नाशय। वैष्णवि ! ब्रह्मास्त्रेण विष्णु चक्रेण रुद्र-शूलेन यम-दण्डेन वरुण-पाशेन वासव-वज्रेण सर्वान् अरीन् भजय भजय यक्ष ग्रह राक्षस-ग्रह स्कन्द ग्रह-विनायक-ग्रह-बालग्रह-चोर -ग्रह-कूष्माण्ड-ग्रहादीन् निग्रह निग्रह, राज-यक्ष्म -क्षय-रोग-ताप-ज्वर-निवारिणि ! मम सर्व-ज्वरं नाशय, सर्व-ग्रहान् उच्चाटय उच्चाटय, हुं फट् स्वाहा।

उपरोक्त सामान्य मंत्र ही नहीं है, अपितु सही शब्दों में कहा जाय तो यह मंत्रराज है, इसका इस साधना में ५१ बार पाठ करना चाहिए, ऐसा करने पर यह साधना सिद्ध हो जाती है।

यदि कोई साधक इस प्रकार से न कर सके तो नित्य इस मन्त्र का एक बार पाठ करे, तब भी कुछ ही दिनों में उसे आश्चर्यजनक फल प्राप्त होने लगता है, उसकी खोई हुई रोशनी पुनः प्राप्त हो जाती है।

साधकों को चाहिए कि वे ऐसे दुर्लभ इन्द्राक्षी यंत्र के सामने यह प्रयोग सम्पन्न कर अनुभव करे, कि यह कितना श्रेष्ठ प्रयोग हैं, आप अपने अन्धे माता-पिता के लिए या किसी के भी लिए यह प्रयोग सम्पन्न कर सकते है, और वास्तव में ही जिनकी नेत्र ज्योति कमजोर हो आप उनको इस यंत्र के बारे में इस मंत्र के बारे में जानकारी दे कर समाजोपयोगी कार्य कर सकते है।

Scanned by CamScanner

वायु गमन एवं अदृश्य सिद्धि हेतु

दुर्लभ

छिन्नमस्ता साधना

(१३-११-८६)

दस महाविद्याओं में छिन्न मस्ता साधना को सर्वाधिक प्रमुखता दी गई है। ये दस महाविद्या साधनाएं हैं- १-महाकाली, १-तारा, ३-षोडसी त्रिपुर सुन्दरी, ४-भुवनेश्वरी, ५- त्रिपुर भैरवी, ६- धूमावती, ७- बगला मुखी; ८- मातंगी ९-कमला और १०- छिन्न मस्ता महा देवी।

चित्रों में यदि छिन्न मस्ता को देखा जाय तो उसका अत्यन्त भयानक रूप दिखाई देता है, नृत्य करती हुई देवी जिसके एक हाथ में खड्ग और दूसरे हाथ में तलवार है; जिसका सिर कटा हुआ तीसरे हाथ में है और चौथे हाथ में पाश है, सिर से खून के फव्वारे निकल रहे है, और पास खड़ी हुई दो योगिनियां उस उछलते हुए खून को अपने मुंह से पी रही है।

परन्तु यह अपने आपमें एक महत्वपूर्ण साधना हैं, और प्राचीन काल से ही इस साधना को दस महाविद्याओं में सर्वाधिक प्रमुखता दी गई हैं, क्योंकि यही एक मात्र ऐसी साधना है, जो वायुगमन प्रक्रिया की श्रेष्ठतम साधना है।

वायुगमन प्रक्रिया

मैंने ऊपर शीर्षक के अन्तर्गत छिन्न मस्ता साधना की दो विशेषताएं स्पष्ट की है जिसमें एक वायुगमन प्रक्रिया है, दस महाविद्याओं में केवल यही एक ऐसी साधना है, जिससे साधक अपने शरीर को सूक्ष्म आकार देकर आकाश में विचरण कर सकता है, और वापिस पृथ्वी पर उसी रूप और आकार में आ सकता हैं, प्राचीन शास्त्रों में सैकड़ों स्थानों पर वर्णन आया है, कि नारद आदि ऋषि जब चाहे तब ब्रह्माण्ड के किसी भी लोक में चले जाते थे, विचरण करते थे, और कुछ ही क्षणों में वापिस आ जाते थे।

Scanned by CamScanner

आज का विज्ञान भी इस बात को स्वीकार करने लगा है कि यदि शरीर में विशेष वर्णो (या अक्षरों-जिन्हें अक्षर मंत्र कहा जाता है) की ध्वनि का निरन्तर गुंजरण किया जाय तो शरीर स्थित भूमि तत्व का लोप हो जाता हैं, और वह शरीर वायु से भी हलका हो कर आकाश में ऊपर उठ जाता है। जब उसी वर्ण या मंत्र का विलोम मंत्र जप या विलोम क्रम किया जाता है, तो वापिस शरीर में भूमि तत्व का प्रादुर्भाव होने लगता है. और मनुष्य पुनः अपने मूल स्वरूप में पृथ्वी पर उतर आता है।

रूस और अमेरिका में पिछले तीस वर्षो से इस चिन्तन पर शोध हो रहा है, और अब जा कर उन्हे इस क्षेत्र में सफलता मिली है। उन्होने यह स्वीकार किया है कि बिना भारतीय शास्त्र अथवा बिना भारतीय तंत्र को समझे इस क्षेत्र में पूर्ण सफलता नही मिल सकती।

जनवरी ८९ के विशेषांक में इस संबंध में काफी कुछ प्रकाश डाला गया है, कि विज्ञान किस प्रकार से भारतीय तंत्र का सहारा लेने लगा है और इसके माध्यम से वे किस प्रकार से सफलता प्राप्त कर रहे है।

जब भूमि तत्व का लोप हो जाता है, तो मनुष्य का शरीर गुरुत्वाकर्षण से मुक्त हो जाता है, और वह ऊपर उठकर शून्य में विचरण करने लग जाता है ऐसी स्थिती में उसका शरीर हवा से भी सूक्ष्म हो जाने की वजह से पृथ्वी के किसी भी भाग पर एक स्थान से दूसरे स्थान में जाने में उसे सुविधा होती है और वह मनोवांछित स्थान पर कुछ ही क्षणों में जा कर पुनः लौट आता है।

इस प्रकार की सिद्धि के लिये भारतीय तंत्र में एक मात्र "छिन्नमस्ता साधना" को ही प्रमुखता दी है।

अदृश्य सिद्धि

यद्यपि विशेष रूप से तैयार की हुई 'पारद गुटिका' से व्यक्ति अदृश्य हो सकता है, परन्तु रसायन का क्षेत्र अपने आप में अलग है और अब भारतवर्ष में पारद संस्कार करने वाले व्यक्ति बहुत कम रह गये है जो कि सभी बावन संस्कार संपन्न कर सके, और अदृश्य गुटिका को तैयार कर सके। मैंने स्वयं अपने जीवन में अदृश्य गुटिका के सभी संस्कारों को सीखा है, और मैं यह दावे के साथ कह सकता हूं कि पारे के कुछ विशेष संस्कार सम्पन्न कर उसके द्वारा गुटिका तैयार की जा सकती है, जिसे 'अदृश्य गुटिका' कहते है, और उसे मुंह में रखते ही व्यक्ति अदृश्य हो जाता है।

परन्तु यही क्रिया मंत्र साधना के माध्यम से आसानी से हो सकती है, यह कोई जटिल क्रिया पद्धति नहीं है, यदि साधक निश्चय कर ही ले, और इस तरफ पूरा प्रयत्न करे तो छिन्न मस्ता साधना की विशेष क्रिया के द्वारा वह अपने शरीर को अदृश्य कर सकता है। ऐसी स्थिति में वह तो प्रत्येक व्यक्ति या प्राणी को देख सकता है, परन्तु दूसरे व्यक्ति उसको नहीं देख सकते। वह जब छिन्न मस्ता मंत्र का विलोम मंत्र जप संपन्न करता है, तभी वह पुनः साकार होता है, और लोग उसे देख पाते है।

ये दोनों ही क्रियाएं या ये दोनों ही साधनाएं अपने आपमें अत्यन्त उच्च और महान है, ये ही दो ऐसी साधनाएं है, जिसकी वजह से पूरा संसार भारत के सामने नतमस्तक रहा है। तिब्बत के भी कई लामा इस प्रकार की विद्या को सीखने के लिए भारतवर्ष में आते रहे और उन्होंने श्रेष्ठ साधकों से छिन्न मस्ता साधना का पूर्ण प्रामाणिक ज्ञान प्राप्त कर इन महानताओं में सफलताएं प्राप्त की, और अपने अपने क्षेत्र में अद्वितीय सिद्ध हो सके।

दृढ़ संकल्प

इस प्रकार की साधना के लिए दृढ़ संकल्प-शक्ति चाहिए। जो साधक अपने जीवन में यह निश्चय कर लेते है, कि मुझे अपने जीवन में कुछ कर के दिखाना है मुझे अपने जीवन में साधनाओं में सफलता पानी ही है, और कुछ ऐसी साधनाएं सम्पन्न करनी है, जो अपने आप में

अद्वितीय हो, जो अपने आपमें अचरज भरी हो और जिन साधनाओं को सम्पन्न करने से संसार दांतों तले उंगली दबा कर यह अहसास कर सके, कि वास्तव में ही भारतीय तंत्र अपने आपमें अजेय और महान है, उन साधकों को दृढ़ निश्चय के साथ छिन्नमस्ता साधना में भाग लेना चाहिए।

सरल साधना

यह पूर्ण रूप से तांत्रिक साधना है, परन्तु तंत्र के नाम से घबराने की जरूरत नहीं है, तंत्र तो अपने आपमें एक सुव्यवस्थित क्रिया है, जिसके माध्यम से कोई भी साधना भली प्रकार से सम्पन्न हो पाती है, तंत्र के द्वारा निश्चित और पूर्ण सिद्धि प्राप्त होती ही है, जो साधक सौम्य हो, सरल हो, और अपने जीवन में किसी भी प्रकार के देवी देवताओं को मानते हो, वे साधक भी छिन्न मस्ता साधना सम्पन्न कर सकते हैं, और मैं तो यहां तक जोर दे कर कहूंगा, कि उन्हें अपने जीवन में निश्चय ही छिन्न मस्ता साधना सम्पन्न करनी चाहिए।

यों तो पूरे वर्ष में कभी भी किसी भी शुभ दिन से छिन्न मस्ता साधना प्रारम्भ की जा सकती है, परन्तु कार्तिक शुक्ल १५ अर्थात् १३-११-८९ को छिन्न मस्ता जयन्ती है, अतः इस दिन तो छिन्न मस्ता साधना प्रारंभ करनी ही चाहिए, मैं महान योगीराज भूर्भुआ बाबा से प्राप्त उस गोपनीय और दुर्लभ छिन्न मस्ता साधना को पत्रिका साधकों के सामने स्पष्ट कर रहा हूँ, जो कि अभी तक सर्वथा गोपनीय रही है परन्तु जो प्रामाणिक है और निश्चय ही सफलता देने वाली है।

छिन्न मस्ता साधना प्रयोग

साधक छिन्न मस्ता के दिन (या किसी भी दिन) स्नान करके पूजा स्थान में बैठ जाय और सामने लकड़ी के बाजोट पर कलश स्थापन कर दे, उसके बाद साधक कलश के सामने नौ चावलों की ढेरियां बनाकर उस पर एक-एक सुपारी रख कर उन नौ ग्रहों की पूजा करे, और फिर एक अलग पात्र में गणपति को स्थापन कर उसकी संक्षिप्त पूजा करे।

इसके बाद अपने सामने एक लकड़ी के बाजोट पर नया पीला वस्त्र बिछावें तथा कपड़े के ऊपर शुद्ध घी से सोलह रेखाएं नीचे से ऊपर की ओर खीचें। इन रेखाओं के मध्य में सिन्दूर लगावे, सिन्दूर के ऊपर प्रत्येक रेखा पर नागरबेल का पान रखें इन सोलह स्थानों पर पान रख कर अक्षत और अक्षत के ऊपर लोंग या इलायची रख कर इन रेखाओं के पीछे श्रेष्ठ "छिन्न मस्ता यंत्र को" स्थपित करें। यह यंत्र तांबे पर बना हुआ, पूर्ण रूप से प्रभावयुक्त ओर मंत्र सिद्ध होना चाहिए फिर अपने हाथ में पुष्प और अक्षत लेकर निम्न प्रकार से भगवती श्री छिन्न मस्ता देवी का ध्यान करे।

छिन्न मस्ता ध्यान

प्रत्यालीढपदां सदैव दधतीं छिन्नं शिर कर्तृका न्दिग्वस्त्रां स्वकबन्ध शोणित सुधा धाराम्पिबन्तीमुदा नागाबद्ध शिरोमणिन्त्रि नयनां हृद्युत्पलालं कृतां रत्यासक्त मनोभवो परिद्दढान्ध्यायेज्जवा-सन्निभाम्।

इस प्रकार ध्यान कर जो हाथ में पुष्प और अक्षत है, वे अपने सिर पर चढ़ा ले, इसके बाद सामने शंख पात्र स्थापित कर 'ॐ शंखायै नमः' उच्चारण करते हुए उस शंख में जल, अक्षत, और पुष्प डाले फिर इस शंख को दोनों हाथों में लेकर भगवती छिन्न मस्ता का ध्यान करते हुए निम्न मंत्र से उसका आह्वान करें।

छिन्न मस्ता आह्वान

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं छिन्नमस्ता सर्व-जन-मनो हारिणी, सर्व-मुख स्तंभिनी, सर्व-स्त्री-पुरुषा कर्षिणी वन्दी शंखेनात्रोटय त्रोटय सर्व-शत्रूणां भंजय-भंजय द्वेषिं दलय दलय निर्दलय निर्दलय सर्व शत्रूणां स्तम्भय स्तम्भय मोहनास्त्रेण द्वेषिं उच्चाटय उच्चाटय सर्व-वशं कुरु कुरु स्वाहा। देवि छिन्नमस्ता कामिनी

Scanned by CamScanner

गणेश्वरि इहागच्छ इह तिष्ठ ममोपकल्पितां पूजां गहाण मम सपरिवार रक्ष रक्ष नमः ।

ऐसा कह कर हाथ में लिये हुए पुष्प और अक्षत को इन सोलह घृत धाराओं के सामने चढ़ा दें।

फिर हाथ में जल लेकर निम्न विनियोग पढ़ कर जल छोड़ दें।

ॐ अक्षय श्री छिन्न मस्ता देवी जगत निवासनी अदृश्य सिद्धि शून्य गमन विजयै मम सिद्धि देहि देहि प्राण देहि देहि शून्यता देहि देहि मम अमुक गौत्र अमुक शर्मा हं गुरूत्वाकर्षण शक्ति नाशय शून्य सिद्धि प्राप्तर्थं शक्ति स्याद विनियोग ।

इस साधना में छिन्न मस्ता यंत्र का विशेष महत्व है क्योंकि वह महा छिन्न मस्ता प्रयोग से सिद्ध किया हुआ होना चाहिए, और उसके प्रत्येक अक्षर से प्राण प्रतिष्ठा की हुई होनी चाहिए, फिर इस यंत्र को अलग पात्र में जल से धो कर स्नान करा कर इस पर कुंकुम की सोलह बिन्दियां लगावे, और निम्न मन्त्र उच्चारण करता हुआ, उस यंत्र में लघु प्राण प्रतिष्ठा पुनः करें।

लघु प्राण प्रतिष्ठा

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं औं हंसः सौहं, सौहं हंस छिन्नमस्ता प्राणा इह प्राणाः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्री ॐ आं ह्रीं क्रो यं रं लं वं शं षं सं हं औं हंसः सोहं, सोहं हंसः छिन्नमस्ता जीव इह स्थितः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ आं ह्री क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं औं हंसः सोहं, सोहं हंसः शिवः श्री चक्रस्य सर्वेन्द्रियाणि वाङ्मनश्चक्षुः श्रोत्रजिव्हाघ्राणा-दीनि इहैवागत्य अस्मिन् चक्रे सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा ।

लघु प्राण प्रतिष्ठा करने के बाद यंत्र की संक्षिप्त पूजा करे, उस पर पुष्प समर्पित करे अक्षत और भोग लगावे फिर यंत्र के सामने एक त्रिकोण बना कर उस पर चावल की ढेरी बनावे और शुद्ध घृत का दीपक लगा दें, फिर इस दीपक की चन्दन पुष्प, धूप दीप नैवैद्य से पूजन करे, और पूजन के तुरन्त बाद दोनों हाथों से दीपक बुझा दें और प्रणाम करे तत्पश्चात् छिन्न मस्ता के मूल मंत्र का इक्यावन माला मंत्र जप करे ।

छिन्न मस्ता मूल मन्त्र

श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं व ज्र वै रो च नी ये हूं हूं फट् स्वाहा ।।

जब इक्यावन माला मंत्र जप हो जाय तब भगवती देवी की आरती करे, और क्षमा स्तोत्र का उच्चारण करें।

आवाहनं न जानामि न जानामि विसर्जनं
पूजां चैव न जानामि क्षमस्व परमेश्वरि
मन्त्र-हीनं क्रिया-हीनं भक्ति-हीन सुरेश्वरि,
यत्पूजितं मया देवी परिपूर्ण तदस्तु मे ।।

इस प्रकार प्रयोग सम्पन्न होता है, साधक को नित्य इसी प्रकार प्रयोग करना चाहिए, ग्यारह दिन तक प्रयोग करने पर शून्य सिद्धि एवं अदृश्य सिद्धि प्राप्त हो जाती है, यदि एक दिन प्रयोग करता है, तो छिन्न मस्ता सिद्धि प्राप्त हो जाती है।

वास्तव में ही यह शिष्य वर्ष है, और प्रत्येक साधक को इस दुर्लभ प्रयोग को अवश्य ही सम्पन्न कर सफलता प्राप्त करनी चाहिए।

Scanned by CamScanner

तांत्रोक्त

बला-अति बला

श्री सिद्धेश्वरी प्रयोग
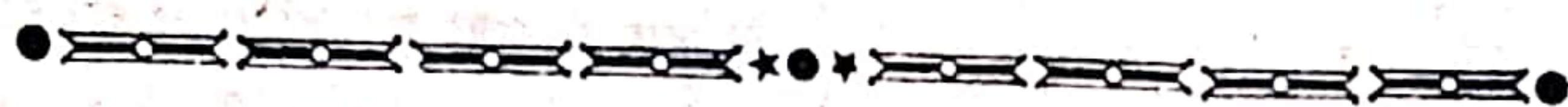
१-१२-८६

तांत्रिक ग्रन्थों में दस महाविद्याओं को अत्यधिक महत्व दिया है परन्तु उच्चकोटि के तांत्रिको ने बला अति-बला सिद्धेश्वरी पटल को दस महाविद्याओं की आधारभूता शक्ति माना है इसीलिए सिद्धेश्वरी साधना पटल को पिछले हजारो वर्षों से प्रमुखता दी गई है।

समस्त सिद्धियों की आधारभूता सिद्धेश्वरी पटल भगवान गोरखनाथ की प्राणस्वरूपा आराध्या रही है, यह प्रयोग अभी तक सर्वथा गोपनीय रहा है महायोगी गोरखनाथ की आराध्या बला अति बला सिद्धेश्वरी ही थी।

यह दुर्लभ प्रयोग सिद्धाश्रम के उच्चतम योगीराज अच्युतानन्द जी से प्राप्त हुआ हैं जो महायोगी गोरख नाथ के ही प्राणस्वरूप माने जाते हैं।

इस सिद्धेश्वरी दिवस पर यह दुर्लभ प्रयोग देते हुए, हम अत्यन्त गौरव से योगीराज के प्रति पूर्ण श्रद्धा व्यक्त करते है, कि उनके द्वारा पहली बार भारतवर्ष के साधकों को यह दुर्लभ प्रयोग प्राप्त हो रहा है।

सिद्धेश्वरी पटल, सिद्धेश्वरी साधना आदि का प्रचलन और प्रयोग तो भारतवर्ष के कई प्रान्तों में देखने को मिला है, विशेष कर बिहार उड़ीसा, बंगाल आदि में सिद्धेश्वरी को कुल देवी के रूप में मान्यता मिली हुई है

Scanned by CamScanner

ग्रोर वे इसकी साधना भी सम्पन्न करते है, परन्तु बला-अतिबला सिद्धेश्वरी प्रयोग सर्वथा नूतन दुर्लभ और गोपनीय प्रयोग है।

ऐसा कहा जाता है, कि सिद्धेश्वरी दस महाविद्याग्रों की ग्राधारभूता शक्ति रही है। सिद्धेश्वरी की ज्योति से ही दस महाविद्याओं की आधारभूता शक्ति बनी है। सिद्धेश्वरी की ज्योति से ही दस महाविद्याग्रों की उत्पत्ति ग्रोर प्रादुर्भाव हुआ।

इसीलिए तांत्रिक ग्रन्थों में सिद्धेश्वरी साधना को सर्वाधिक प्रमुखता दी गई और यहां तक कहा गया कि कोई भी साधक तब तक सिद्ध नहीं कहला सकता, जब तक वह सिद्धेश्वरी सिद्ध न कर ले।

यों तो बला अति बला सिद्धेश्वरी साधना किसी भी शुक्ल पक्ष की ग्रष्टमी से प्रारम्भ की जा सकती है, सिद्धेश्वरी दिवस के अवसर पर तो छोटे से छोटा और मामूली से मामूली साधक भी इस साधना को सम्पन्न करने की इच्छा रखता है, इसलिए प्रत्येक साधक को इस दिन यह साधना ग्रवश्य ही सिद्ध करनी चाहिए।

शास्त्रों के अनुसार मार्ग शीर्ष शुक्ल ३ को सिद्धेश्वरी साधना दिवस माना गया है। ग्रंग्रेजी तिथि के अनुसार इस वर्ष १-१२-८९ को सिद्धेश्वरी साधना दिवस है।

साधक प्रातः काल उठ कर कुए के जल से स्नान करे, यदि यह संभव न हो तो, जल में थोड़ा सा गंगाजल मिला कर उससे स्नान करे, यदि पास में नदी या तालाब हो तो उसके तट पर जा कर स्नान कर भगवान सूर्य को सात बार जल से ग्रर्घ्य दे, या ग्रपने घर पर ही सूर्य को ग्रर्घ्य दे कर सात प्रदक्षिणा कर भगवान सूर्य से याचना करे, कि वह साधक को पूर्ण तेजस्विता प्रदान करे, जिससे कि वह सिद्धेश्वरी साधना सम्पन्न कर सके।

इसके बाद साधक अपने साधना कक्ष को अपने हाथ से धोए, स्वच्छ करे, और फिर सफेद ऊनी आसन के ऊपर एक मीटर लम्बा ग्रोर आधा मीटर चौड़ा सफेद रेशमी वस्त्र बिछावे और बिछे हुए रेशमी वस्त्र के चारों कोनों पर कुंकुम से पंच कोण बनावे, साधक चाहे तो त्रिकोण भी बना सकता है। फिर ग्रासन के मध्य में त्रिकोण बनाकर उसके बीच में बिन्दी लगावे और फिर पूर्व की ओर मुंह कर साधक सफेद धोती धारण कर प्रसन्न चित्त बैठ जाय, इसके बाद ग्रपने सिर की चोटी के दो भाग करते हुए, बांये भाग में गांठ लगावे और दाहिने भाग को खुला छोड़ दें।

इसके बाद अपने सामने तांबे का पात्र चावल की ढेरी पर स्थापित करे, और अपने आसन के बांई ग्रोर कुंकुम से एक ही पंक्ति में पांच त्रिकोण बनावे ग्रोर इस पर एक एक चावल कीं ढेरी बनावे और निम्न उच्चारण करे -

१- ॐ प्रीतिव्यै नमः २- ॐ ग्राधारशक्तये नमः, ३- ॐ अनन्ताय नमः ४- ॐ कूर्माय नमः, ५- ॐ शेषनागाय नमः, इस प्रकार करने के बाद इन पांचों की कुंकुम, अक्षत ग्रोर ग्रोर पुष्प से पूजन करे और फिर ग्रपने सामने एक चावल की ढेरी बना कर उस पर तांबे का पात्र स्थापित करे, और हाथ में जल लेकर संकल्प ले।

मैं ग्रमुक गोत्र, अमुक पिता का पुत्र, ग्रमुक नाम का साधक आज ग्रमुक तिथि ग्रमुक वार को बला अति बला सिद्धेश्वरी साधना सम्पन्न कर रहा हूं।

फिर अपने दाहिनी ओर एक चावल की ढेरी पर तांबे का कलश स्थापित करे उसमें गंगाजल डाले ग्रोर उसके मुंह पर पीपल, बड़ या किसी भी वृक्ष के पांच या ग्यारह पत्ते रख कर उस पर नारियल रखे। नारियल के ऊपर लाल कपड़ा लपेट ले और मौली से बांध ले।

फिर कलश के सामने ही एक लकडे के बाजोट पर सफेद कपड़ा बिछा कर नौ चावल की ढेरियां बनावे

Scanned by CamScanner

प्रत्येक पर सुपारी रखें और फिर नौ ग्रहों की स्थापना करे- १- ॐ सूर्याय नमः, २- ॐ चन्द्रमायै नमः ३- ॐ भौमाय नमः, ४- ॐ बुधाय नमः, ५- ॐ गुरुवर्यै नमः ६- ॐ शुक्रायै नमः, ७- ॐ शनैश्चरायै नमः ८- ॐ राहवे नमः, ९- ॐ केतवे नमः। इस प्रकार उच्चारण कर नौ ग्रहों की संक्षिप्त पूजा करे तथा सामने शुद्ध घृत का दीपक प्रज्जवलित करे, अगरबत्ती लगावे और नैवेद्य चढ़ावे,

इसके बाद अपने सामने एक लकड़ी के बाजोट पर सफेद रेशमी वस्त्र बिछावे, और उस रेशमी वस्त्र के मध्य में रक्त चन्दन से (यह बाजार में आसानी से मिल जाता है) अथवा कुंकुम से निम्न कोण बनावे।

१- **बिन्दु**, २- **त्रिकोण**, ३- **षटकोण**, ४- **वृत्त**, ५- **अष्टदल**, ६- **पंचकोण** (यदि साधकों को इसमें कुछ अड़चन आती हो, तो पत्रिका कार्यालय को पत्र लिख कर पूछ सकते है, उन्हें कागज पर ये ६ प्रकार के यंत्र बना कर भेज दिये जायेगे अथवा सिद्धेश्वरी यन्त्र के साथ इन कोणों को कागज पर अंकित कर भेजने की व्यवस्था की जा रही है, यों ये कोण बनाना सरल है)

फिर सामने बिछे हुए रेशमी वस्त्र के बांई और ऊपर से नीचे की ओर कुंकुम की आठ रेखाएं खींचें, इसी प्रकार कपडे के दाहिनी ओर भी कुंकुम की आठ रेखाएं खीचे, इन्हें षोडश मातृकाएं कहा गया है, फिर प्रत्येक रेखा का सक्षिप्त पूजन करे (यहां संक्षिप्त पूजन से तात्पर्य कुंकुम समर्पित करना, अक्षत चढ़ाना, पुष्प समर्पित करना और नैवेद्य प्रदान करना होता है)

फिर मध्य में जो छः यन्त्र कुंकुम से बनाये थे, उसके ऊपर भव्य ताम्र पत्र पर निर्मित "सिद्धेश्वरी यंत्र" को स्थापित करे, यह यंत्र अत्यधिक महत्वपूर्ण, दुर्लभ और महत्वपूर्ण होता है। इसका निर्माण गोरखनाथ प्रणीत बला अति बला पद्धति से ही सम्पन्न होना चाहिए, तभी यह यंत्र तेजस्वी बनता है, और तभी इस साधना में सिद्धि प्राप्त होती है, वास्तव में ही इस यंत्र की रचना प्रक्रिया और निर्माण विधि अत्यन्त जटिल होती है, सौभाग्यशाली साधकों के घर में ही यह 'दुर्लभ सिद्धेश्वरी यंत्र' स्थापित हो पाता है, जिसका लाभ वह स्वयं तो उठाता ही है, आने वाली पीढ़ियां भी उस दुर्लभ यंत्र से लाभ उठाती है।

फिर इस यंत्र की पूजा करे, अलग पात्र में यंत्र को रख कर गंगाजल से स्नान करावे, और फिर दूध, दही, घी, शहद, और शक्कर से अलग अलग स्नान करावे, फिर इन पांचों चीजों को मिलाकर पंचामृत से स्नान करावे, फिर शुद्ध जल से यंत्र को धोकर अन्त में गंगाजल से यंत्र को स्नान कराते हुए उसे पवित्र करे, और स्वच्छ वस्त्र से पोंछ दें, और पुनः इस यन्त्र को साधक के सामने ही कपडे पर बने हुए यंत्र के ऊपर रखे हुए पात्र में स्थापित कर दें।

इसके बाद इस यंत्र पर रक्त चन्दन से या केसर से सोलह बिन्दियां लगावे, और लाल पुष्पों की माला पहनावे। यदि यह संभव न हो तो यन्त्र के सामने लाल पुष्प समर्पित करे। फिर सामने दूध का बना हुआ प्रसाद समर्पित करे, लौंग इलायची रखे और यन्त्र के सामने शुद्ध घृत का दीपक लगा कर निम्न सिद्धेश्वरी ध्यान उच्चारण करें।

उद्यन्मार्तण्ड-कान्ति-विगलित-कवरीं कृष्ण- वस्त्रावृतांगाम्,
दण्डं लिंगं कराब्जैर्वरमथ भुवनं सन्दधतीं त्रिनेत्राम्।
नाना-रत्नैर्विभातां स्मित-मुख-कमलां सेवितां देव-सर्वैर्माया-राज्ञीं नमो भूत स रवि-कल-तनुमाश्रये ईश्वरी त्वाम्।।

ध्यान के बाद अपने दोनों हाथों में पुष्प और अक्षत ले कर अपने सिर पर रखे, अपने ललाट पर केसर का तिलक करे और अपने सीने के मध्य में हृदय पटल पर केसर का तिलक करे, पुष्प समर्पित करे।

इसके बाद दाहिनी और शंख पात्र या शंख स्थापित करे, और बांई ओर घण्टा स्थापित करे, फिर इन दोनों की पूजा करे।

इसके बाद अपने दोनों हाथों में पुष्प ले कर मध्य में स्थापित सिद्धेश्वरी यंत्र का निम्न मन्त्र से आह्वान करे।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं कान्हेश्वरी सर्व जन मनोहारिणी सर्व-मुख-स्तम्भिनी, सव-स्त्री-पुरुषाकर्षिणी शंखेना-त्रोटय त्रोटय सव-शत्रूणां भजय-भंजय द्वेषि दल दलय निर्दलय निर्दलय सर्व-शत्रूणां स्तम्भय स्तम्भय मोहनास्त्रेण द्वेषि उच्चाटय सर्व-वशं कुरू कुरू स्वाहा। देवि सर्व-सिद्धेश्वरि कामिनी-गणेश्वरि इहागच्छ इह तिष्ठ ममोपकल्पितां पूजां गृहाण मम सपरिवार रक्ष रक्ष नमः।

ऐसा कह कर हाथों में लिये हुए पुष्प भगवती सिद्धेश्वरी के यन्त्र के सामने समर्पित कर दे।

अंग पूजा

अपने बांये हाथ में पुष्प और अक्षत ले कर यन्त्र के ऊपर चढ़ाते हुए, निम्न प्रकार से उच्चारण करे जिससे कि इस यन्त्र में इन प्रसिद्ध देवियों की स्थापना प्राण प्रतिष्ठा हो सके।

ॐ कालिकायै नमः। ॐ सिद्धेश्वर्ये, नमः ॐ तारायै नमः, ॐ भगवत्यै नमः ॐ बगला-मुख्यै नमः, ॐ कुंजिकायै नमः, ॐ शीतलायै नमः ॐ त्रिपुर्ण्यै नमः ॐ मात्रिकायै नमः, ॐ लक्ष्म्यै नमः, ॐ दिगीशायै नमः।

विश्व दैव्यै स्थापन प्राण प्रतिष्ठा

फिर हाथ में पुष्प ले कर एक एक नाम का उच्चारण करते हुए एक एक पुष्प यंत्र पर समर्पित करे।

१- ॐ ऐं ह्रीं श्रो हिलि हिलि वन्दी दैव्यै नमः, २- ॐ गीर्वे नमः ३- सम्मोहिन्यै नमः, ४- ॐ मोहिन्यै नमः ५- ॐ विमोहिन्यै नमः, ६- ॐ वस्वादि -- षडगेम्यो नमः, ७ ॐ ब्रह्मणेभ्यो नमः ८- ॐ विष्णवेभ्यो नमः, ९- ॐ शिवायै नमः, १०- ॐ उर्वश्यै नमः ११- ॐ घौषायै नमः, १२- ॐ सहजन्यै नमः, १३- ॐ सुकेशिन्यै नमः १४- ॐ तिलोत्तमायै नमः १५- ॐ गुप्तव्यै नमः, १६- सुप्तव्यै नमः १७- ॐ सिद्ध कन्याभ्यो नमः १८- किन्नरीभ्यो नमः, १९- ॐ नाग कन्याभ्यो नमः, २०- ॐ ॐ विद्या-धरीभ्यो नमः, २१- किंपुरूषेभ्यो नमः, २२- ॐ यक्षिणी भ्यो नमः २३- ॐ पिशाचीभ्यो नमः, २४- ॐ ब्रह्माण्यै नमः, २५- ॐ वैष्णव्यै नमः, २६- ॐ इष्ट शान्तयै नमः, २७- ॐ गुणायै नमः, २८- ॐ क्रिया-शान्त्यै नमः २९- ॐ ज्ञान-शक्तये नमः, ३०- ॐ रजोगुणायै नमः

फिर इसके बाद यन्त्र पर एक एक रक्त पुष्प या लाल रंग के पुष्प चढ़ाते हुए षोडश शक्तियों की स्थापना करे।

षोडश शक्ति स्थापना-प्राण प्रतिष्ठा

१- ॐ हुं कार्येभ्यो नमः, २- ॐ खेचरीभ्यो नमः ३- ॐ चण्डाख्यायै नमः, ४- ॐ अक्षोहिण्यै नमः, ५- ॐ हूं कार्ये नमः, ६- ॐ क्षे कार्ये नमः, ७- ॐ पंच-भैरवाभ्यो नमः, ८- ॐ सिद्धेश्वर्यै नमः, ९- ॐ तारायै नमः, १०- ॐ भगवत्यै नमः, ११- ॐ बगलामुख्यै नमः, १२- ॐ कुंजिकायै नमः १३- ॐ शीतलायै नमः १४- ॐ त्रिपुर्ण्यै नमः १५- ॐ मातृत्रिकायै नमः १६- ॐ लक्ष्म्यै नमः, ।

इसके बाद चावलों को पीले रंग में रंग कर निम्न

लक्ष्मी मातृकाओं की स्थापना थोडे थोडे चावल चढाते हुए करे—

लक्ष्मी मातृका स्थापना-प्राण प्रतिष्ठा

१- ॐ ऐं ह्रीं हिलि हिल वन्दी-दैव्यै नमः, २- ॐ संमौहिन्यै नमः, ३- ॐ मौहिन्यै नमः, ४- ॐ विमोहिन्यै नमः, ५- ॐ वस्त्रादि-षडंगेभ्यो नमः, ६- ॐ ब्रह्माणभ्यो नमः, ७- ॐ विष्णवेभ्यो नमः, ८- ॐ शिवायै नमः ९- ॐ उर्वश्यै नमः, १०- ॐ मेनकायै नमः, ११- ॐ रम्भायै नमः १२- ॐ घृताच्यै नमः, १३- ॐ मंजुघोषायै नमः, १४- ॐ सहजन्यै नमः १५- ॐ सुकेशिन्यै नमः १६- ॐ महा भैरवीभ्यो नमः १७- ॐ इन्द्राण्यै नमः १८- ॐ असितांगाय नमः १९- ॐ संहारिण्यै नमः, २०- ॐ छिन्नमस्तिकायै नमः।

ऐसा करने के बाद यन्त्र के चारों ओर शुद्ध घृत के सोलह दीपक लगा ले और सामने दूध का बना हुआ प्रसाद समर्पित कर दे। इसके बाद निम्न सिद्धेश्वरी कवच का सोलह बार पाठ करे। ऐसा करने पर यह एक दिन की साधना सिद्ध हो जाती है।

यह कवच अत्यन्त महत्वपूर्ण और दुर्लभ है, साधक चाहे तो अपनी नित्य पूजा में भी इस स्तोत्र मंत्र पाठ का प्रयोग कर सकते है। तांत्रिक साधकों ने इस स्तोत्र को मंत्र स्वरूप ही माना है, जिस प्रकार से दुर्गा सप्तसती का प्रत्येक श्लोक मंत्र माना गया है, इसी प्रकार सिद्धेश्वरी कवच का निम्न स्तोत्र के प्रत्येक अक्षर को मंत्र माना है।

स्वामी जी से प्राप्त मैं इस स्तोत्र को आगे के पृष्ठों में स्पष्ट कर रहा हूं, पहले हाथ में जल लेकर विनियोग करे, अर्थात् हाथ में जल लेकर छोड़ दे और फिर सोलह बार इस स्तोत्र का पाठ करे।

विनियोग

ॐ अस्य श्री सिद्धेश्वरो-कवचस्य वशिष्ठ ऋषिः श्री सिद्धेश्वरी देवता, सकल कार्यार्थ-सिद्धये पाठे विनियोग।

सिद्धेश्वरी कवच

संसार-तारिणी सिद्धा पूर्वस्यां पातु मां सदा,
ब्रह्माणी पातु चाग्नेयां दक्षिणे दक्षिण प्रिया ।।१

नेऋत्यां चण्ड-मुण्डा च पातु मां सर्वतः सदा,
त्रि-रूपा सा मता देवी प्रतीच्यां पातु मां सदा ।।२

वायव्यां त्रिपुरा पातु ह्युत्तरे रूद्र – नायिका,
ईशाने पदम - नेत्रा च द्वै पातु त्रिलिंगका ।।३

दक्ष - पार्श्वे महा-माया वाम - पार्श्वे हर–प्रिया,
मस्तकं पातु में देवी सदा सिद्धा मनोहरा ।।४

भालं में पातु रूद्राणी नेत्रे भुवन - सुन्दरी,
सर्वतः पातु में वक्त्रं सदा त्रिपुर सुन्दरी ।।५

श्मशाने भैरवी पातु स्कन्धौ में सर्वतः स्वयम्,
उग्र पार्श्वौ महा - बाह्मा हस्तौ रक्षतु चाम्बिका ६।।

हृदयं पातु वज्रांगी निम्न – नाभिर्नभस्तले,
अग्रतः परमेशानी परमानन्द विग्रहा ।।७

पृष्ठतः कुमुदा पातु सर्वतः सर्णदा वतात्,
गोपनीयं सदा देवी न कस्मैचित् प्रकाशयेत् ।।८

यः कश्चित् शृणुयादेयत् श्रवणं भैरवोदितं,
संग्रामे स जयेत शत्रुं मातंगमिव केसरी ।।९

न शस्त्राणि न च अस्त्राणि तद्-देहे प्रविशन्ति वै,
श्मशाने प्रान्तरे दुर्गे घोरे निगड़ - बन्धने ।।१०

नौकायां गिरि-दुर्गे च संकटे प्राण संशये,
मन्त्र तन्त्र भये प्राप्ते विष वन्हि-भयेषु च ।।११

दुर्गाति सन्तरेद् घोरां प्रयाति कमला-पदं,
वन्ध्या वा काक-वन्ध्या वा मृत वत्सा च यांगना ।।१३

श्रुत्वा स्तोत्रं लभेत् पुत्रं स-धनं चिर-जीवनं,
गुरौ मन्त्रे तथा देवे वन्दने यस्य चोत्तमा ।।१३

धोर्यस्य सयतामेति तस्य सिद्धिर्न संशयः ।।१४

इस प्रकार कवच स्तोत्र का पाठ करने के बाद आरती करे और "फिर स्तोत्र" का पाठ करे—

अपराध - सहस्राणि क्रियन्ते हर्निशं मया,
दासौ यमिति मां मत्वा क्षमस्व परमेश्वरि ।।१

आवाहनं न जानामि न जानामि विसर्जनं,
पूजां चैव न जानामि क्षमस्व परमेश्वरि ।।२

मन्त्र - हीनं क्रिया - हीनं भक्ति हीनं सुरेश्वरि,
यत्पूजितं मया देवि परिपूर्ण तदस्तु में ।।३

अज्ञानाद्विस्मृते भ्रान्त्या यम्न्यूनमधिकं कृतम्,
तत्सर्वं क्षम्यतां देवि प्रसीद परमेश्वरि ।।४

सिद्धेश्वरि जगन्मातः सच्चिदानन्द विग्रह,
गृहाणार्चामिमां प्रीत्या प्रसीद परमेश्वरि ।।५

गुह्याति-गुह्य गोप्त्री त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपं,
सिद्धिर्भवतु मे देवि त्वत्प्रसादात्सुरेश्वरि ।।६

जालन्धर पीठ सिद्ध

धूमावती सिद्ध साधना

२४-१२-८६

यों तो दस महाविद्याओं में धूमावती को काफी महत्व दिया है, क्यों कि यह शत्रुओं का मर्दन करने के लिये विख्यात रही है। पत्रिका के पिछले अंको में मांत्रोक्त धूमावती साधना को स्पष्ट किया है, पर इस बार धूमावती से संबंधित एक अत्यन्त दुर्लभ और गोपनीय तांत्रोक्त रहस्य प्राप्त हुआ है, जो कि आगे के पृष्ठो में स्पष्ट कर रहा हूं।

जालन्धर नाथ चोरासी सिद्धों में माने गये है, और गुरु गोरखनाथ की टक्कर के योगी रहे है, उन्होंने अपने जीवन में धूमावती पर एक ही ग्रन्थ की रचना की थी, और उसी की दुर्लभ पाण्डुलिपी हमें प्राप्त हुई है, जो कि धूमावती साधना की श्रेष्ठतम विधि है।

आगे की पंक्तियों में महायोगी सिद्ध जालन्धरनाथ द्वारा प्रणीत तांत्रोक्त धूमावती साधना को इस महत्वपूर्ण दिवस पर स्पष्ट कर रहा हूं।

पौष कृष्ण १२ को धूमावती सिद्धि दिवस माना गया है, जो कि अंग्रेजी तारीख के अनुसार इस वर्ष २४-१२-८९ को स्पष्ट हो रहा है, यह दिन अपने आपमें साधकों के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण है।

जालन्धर नाथ धूमावती साधना के सिद्धतम आचार्य थे, उन्होंने सर्वथा नवीन पद्धति से धूमावती सिद्ध की थी, कहते है, कि उनके नेत्रों में अग्नि का प्रत्यक्ष प्रभाव था, और वे तीक्ष्ण दृष्टि से लोहे को भी देख लेते थे तो वह भी पिघल कर पानी बन जाता था।

इसी परम्परा में गढवाल की राजधानी टिहरी के

राजगुरू भेदानन्द जी आते है, जिन्होंने कुछ ही वर्ष पहले शरीर त्यागा है. वे धूमावती के सिद्धतम आचार्य थे और पूरे गढ़वाल में ही नहीं, अपितु पूरे भारतवर्ष में उनका प्रभाव रहा है।

वे कई महत्वपूर्ण घरानों के राजकुमारों को तांत्रोक्त दीक्षा और साधना सिद्ध कराने के लिए नदी के किनारे ले जाते और वहां उन्हें यह साधना सिद्ध करवाते पूरे भारतवर्ष में योगीराज भेदानन्द जी को ही जालन्धर पीठ सिद्ध धूमावती साधना का पूर्णता के साथ ज्ञान था।

इस बात के तो सैंकड़ों प्रत्यक्ष दर्शी गवाह है, कि वे नदी के किनारे धोती ओढ़कर सो जाते थे, और अन्दर धूमावती मन्त्र जप करते, यों उन्हें धूमावती पूर्ण रूप से सिद्ध थी।

एक निश्चित संख्या में मन्त्र जप करने के बाद वे चेहरे से धोती हटा कर जिस शत्रु को भी देख लेते, वह वहीं पछाड़ खा कर गिर जाता, और उसकी तत्काल मृत्यु हो जाती। भेदानन्द जी ने नदी के किनारे ही हरे भरे विशाल पेड़ पर इस प्रकार का मन्त्र जाप कर दृष्टि डाली थी, तो वह पेड़ अन्दर ही अन्दर सूख कर ठूंठ हो गया था, और उसके पत्ते झड़ गये थे, ऐसा लगा था, कि जैसे यह पेड़ अपने जीवन में कभी हरा भरा रहा ही न हो, वह पेड़ आज भी नदी के किनारे सूखे ठूंठ की तरह खड़ा हुआ है।

धूमावती दस महाविद्याओं में एक प्रमुख महाविद्या हैं, जिसे सिद्ध करना साधक का सौभाग्य माना जाता है। जो साधक अपने जीवन में निश्चिन्त और निर्भीक रहना चाहता है, जो अपने जीवन में निरन्तर उन्नति करना चाहता है, जिस साधक में थोड़ा बहुत भी दम खम होता हैं, वह धूमावती साधना अवश्य ही सिद्ध करता है।

धूमावती साधना

महायोगी सिद्ध जालन्धर नाथ जी ने धूमावती सिद्धि के छः प्रमुख लाभ बताये है, जो कि केवल धूमावती साधना से ही प्राप्त हो सकते है। अन्य किसी भी प्रकार के देवी देवता या महाविद्या साधना करने पर ये लाभ प्राप्त नहीं हो सकते, जालन्धर नाथ अनुभव गम्य सिद्ध योगी थे, और उनका कथन अपने आप में प्रामाणिक कथन माना जाता हैं। उनके अनुसार निम्न छः लाभ केवल धूमावती के द्वारा ही संभव है।

१- धूमावती सिद्ध करने पर साधक का शरीर वज्र की तरह मजबूत और लोहे कीं तरह सुदृढ़ हो जाता है। उस पर सर्दी गर्मी भूख प्यास या किसी भी प्रकार के रोग का प्रभाव व्याप्त नहीं होता।

२- धूमावती सिद्ध करने पर व्यक्ति का शरीर वज्र की तरह मजबूत हो जाता है और उस पर बन्दूक, तलवार, या शस्त्र आदि का कोई भी प्रभाव व्याप्त नहीं होता।

३- धूमावती सिद्ध होने पर उसकी आंखों में साक्षात् अग्नि देव उपस्थित रहते है, वह तीक्ष्ण दृष्टि से जिस शत्रु को भी देख कर मन ही मन धूमावती मंत्र का उच्चारण करता है, वह शत्रु तत्क्षण भस्म हो जाता है, और निश्चय ही उसका प्राणान्त हो जाता है, वह किसी पेड़, किसी पक्षी या जिस किसी पर भी तीक्ष्ण दृष्टि डालता है, वह निश्चित रूप से समाप्त हो जाता है।

४- ऐसे साधक की आंखों में प्रबल सम्मोहन एवं आकर्षण शक्ति आ जाती है, जिसके फलस्वरूप वह किसी भीं पुरूष या स्त्री को हमेशा हमेशा के लिए अपने वश में कर सकता है।

५- ऐसी साधना करने वाले, की रक्षा धूमावती स्वयं करती रहती है, वह यदि शत्रुओं के बीच अकेला भी चला जाता है, तो उसका बाल भी बांका नहीं होता, चाहे कितने ही विरोधीं हो, आलोचक या निन्दक हो, उसके सामने प्रभावहीन एवं निस्तेज हो रहते है, और जब वह बोलता है तो व्यक्ति उसके समर्थन में ही रहता है, जिनको बडे प्रतिष्ठान के कार्य संभालने होते है, उनके लिए तो यह साधना वरदान स्वरूप है।

६- धूमावती सिद्ध करने पर उसके जीवन में शत्रु

Scanned by CamScanner

नहीं रह पाते, उसमें श्राप देने की अदभुत क्षमता आ जाती है, और यदि वह नहीं भी चाहता, तब भी उसका जो विरोधी या शत्रु होता है, उसका अपने आप पतन होने लग जाता है, ऐसा व्यक्ति वाद विवाद में या मुक-दमों में निश्चय ही पूर्ण सफलता प्राप्त करता है।

यों तो इस महाविद्या साधना के अगणित लाभ है, परन्तु जो व्यक्ति आज के जीवन में उन्नति चाहता है, जो व्यक्ति शत्रुओं पर प्रहार कर विरोधियों को अपने अनु-कूल बनाना चाहता है, जो अपने जीवन में निरन्तर उन्नति चाहता है, उसके लिए यह साधना अवश्य ही उपयोगी और अनुकूल है।

साधना रहस्य

यों तो इसके लिए धूमावती दिवस का प्रचलन तांत्रिक ग्रन्थों में हैं हो, जो कि पौष कृष्ण द्वादशी हैं परन्तु कोई भी साधक किसी भी मंगलवार से भी यह साधना प्रारम्भ कर सफलता अर्जित कर सकता हैं। इस साधना को कोई भी सम्पन्न कर सकता हैं तथा दिन या रात्रि में कभी भी यह साधना सम्पन्न की जा सकती है।

साधकों को चाहिए कि वे इस दिवस का महत्व समझे और इस दिन धूमावती साधना को अवश्य ही सम्पन्न करें।

साधना प्रयोग

मैं आगे के पृष्ठों में उस गोपनीय रहस्य को स्पष्ट कर रहा हूं जो महा सिद्ध जालन्धर नाथ जी ने धूमावती की सिद्ध करने के समय प्रयोग किया था।

साधक स्नान कर काली धोती धारण कर, व्याघ्र चर्म अथवा मृग चर्म पर बैठ जाय, यदि यह संभव न हो तो, ऊनी आसन बिछा कर दक्षिण दिशा की ओर मुंह कर बैठ जाय। सामने लकड़ी का बाजोट बिछा कर काला कपड़ा बिछा दें और उसके ऊपर लोहे की अथवा स्टील की थाली रख दे, इस थाली के अन्दर पूरी तरह से काजल लगा दें।

इसके बाद साधक चांदी की शलाका से या तिनके की सहायता से एक वृद्धी स्त्री का चित्र अंकित करें जिसके बाल बिखरे हुए हो, और जिसके गले में नरमुण्ड की माला धारण की हुई हो, यह धूमावती का प्रतीक चिन्ह है।

इसके बाद साधक एक दूसरी स्टील की थाली में ग्यारह तेल के दीपक लगावे, इसमें किसी भी प्रकार के तेल का प्रयोग किया जा सकता है, इस साधना में अगरबत्ती आदि की आवश्यकता नहीं होती।

इसके बाद साधक थाली में जो धूमावती का चित्र बनाया है, उसके सिर के चारों ओर ग्यारह हकीक नग रखे, धूमावती के बांये पैर के पास लघु नारियल स्थापित करे और दाहिने पैर के पास सियारसिंगी स्थापित करे। धूमावती के वक्षस्थल पर या हृदय पर मोती शंख रखें और उसके चारों और पांच रूद्राक्ष के दाने रखें।

इसके बाद साधक हाथ में जल ले कर संकल्प ले, कि मैं अमुक गौत्र अमुक पिता का पुत्र अमुक नाम का साधक पूर्ण क्षमता के साथ जालन्धर पीठ सिद्ध धूमावती को सिद्ध कर रहा हूं, ऐसा कह कर जमीन पर छोड़ दे।

इसके बाद हाथ में जल ले कर निम्न मन्त्र पढे, उसे विनियोग कहते है—

विनियोग प्रयोग

ॐ अस्य मातृकामन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिर्गायत्री छन्दो मातृकासरस्वती देवता ह्लो बीजानि स्वरा-शक्तयस्तदुभयकोलकमभीष्ट सिध्यर्थे विनियोगः।

विनियोग के बाद निम्न अंगो को स्पर्श करते हुए,अंग न्यास करे -

अंग न्यास

ॐ धां हृदयाय नमः
ॐ धीं शिरसे स्वाहा
ॐ धूं शिखायै वषट्
ॐ धैं कवचाय हुं
ॐ धौं नेत्र त्रयाय वौषट
ॐ धः अस्त्राय फट्

Scanned by CamScanner

इसके बाद साधक करन्यास करे, इसमें जिन जिन अंगूठे या उंगली का वर्णन है, उसको देखते हुए उच्चारण करे, इसे करन्यास कहते है ।

कर न्यास

ॐ घां अंगुष्ठाभ्यां नमः
ॐ घीं तर्जनीभ्यां स्वाहा,
ॐ घूं मध्यमाभ्यां वौषट
ॐ घें अनामिकाभ्यां हुं
ॐ घौं कनिष्ठिकाभ्यां वौषट
ॐ घः करतलकर पृष्ठांभ्यां फट्

इसके बाद बांये हाथ में थोडे से चावल ले कर इन चावलों को कुंकुम से रंग कर यंत्र पर निम्न मंत्र पढ़ते हुए थोड़े थोड़े डाले जिससे की प्राण प्रतिष्ठा प्रयोग सम्पन्न किया जा सके ।

प्राण प्रतिष्ठा

ग्रां ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं ॐ क्षं सं हसः ह्रीं ॐ हं सः श्री मद्धमावत्या प्राणा इह प्राणाः ।। ग्रां ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं ॐ क्षं सहसः ह्रीं ॐ हंसः श्री मावत्या जीवन इह स्थितः ॐ ह्रीक्रों-यं रं लं वं शं षं सं हं ॐ क्ष सं हं सः ह्रीं ॐ हंसः श्री मद्धमावत्यास्सर्वेन्द्रियाणि इह स्थितानि । ग्रां ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं ॐ क्ष सं हंसः श्री मद्धमा-वत्या वाड्मनश्चक्षूश्श्रोत्रघ्राणप्राणा इहागत्य सुख श्चिरान्तिष्ठन्तु स्वाहा ।।

इसके बाद साधक दोनों हाथों में पुष्प ले कर धूमावती यंत्र पर चढ़ाते हुए निम्न प्रकार से ध्यान करें ।

धूमावती ध्यान

विवर्णा चंचला दृष्टा दीर्घा च मलिनाम्बरा ।
विमुक्तकुन्तला रूक्षा विधवा विरलद्विजा ।
काकध्वजरथारूढा विलम्बित पयोधरा ।
शूप्यहस्तातिरूक्षा च धूतहस्ता वरान्विता ।
प्रवृद्धघोंणा तु भृशंकुटिला कुटिलेक्षणा ।
क्षुत्पिपासार्दिता नित्यम्भयादा कलहास्पदा ।।

इसके बाद साधक सफेद हकीक माला से निम्न धूमावती मंत्र की २१ माला मंत्र जप करे, इस अवधि में साधक उठे नहीं और पूरी २१ माला मंत्र जप होने के बाद ही उठे, साथ ही साथ इस बात का भी ध्यान रखे कि जो ग्यारह तेल के दीपक लगाये वे बराबर जलते रहे।

धूमावती मंत्र

धूं धूं धूमावती ठः ठः

जब मंत्र जप पूरा हो जाय तब साधक थाली में जो कुछ तांत्रोक्त सामग्री है, उसके मध्य में वह हकीक माला भी रख दे और वह सारी सामग्री घर के बाहर दक्षिण दिशा की ओर जमीन में गाड़ दे । अथवा नदी या तालाब में विसर्जित कर दे, यदि साधक दिन में साधना कर रहा है तो रात्रि को यह सामग्री विसर्जित कर सकता है, अथवा दिन में भी इस पूरी सामग्री को जो थाली में है, वह जमीन में गाड़ सकता है अथवा नदी, तालाब या समुद्र में विसर्जित कर सकता है ।

ऐसा करने पर यह धूमावती साधना पूर्ण रूप से सिद्ध हो जाती हैं । यद्यपि यह साधना दिखने में अत्यन्त सरल प्रतीत होती है परन्तु इसकी विधि और इसका प्रयोग अपने आप में महत्वपूर्ण है, जिन जिन लोगों ने भी इस साधना को सम्पन्न किया हैं उन्हें उपरोक्त बताये लाभ प्रतीत हुए हैं ।

वास्तव में ही साधकों का सौभाग्य हैं कि उन्हें जालन्धर नाथ जी द्वारा प्रणीत इतनी दुर्लभ साधना प्राप्त हुई है, उन्हें अवश्य ही इस दिन का उपयोग करते हुए यह साधना सम्पन्न करनी चाहिए ।

इस साधना में वर्णित सभी सामग्री जालन्धर नाथ द्वारा प्रणित मंत्रों से सिद्ध एवं प्राण प्रतिष्ठायुक्त होनी चाहिए तभी पूर्ण अनुकूलता प्राप्त हो सकती है ।

Scanned by CamScanner
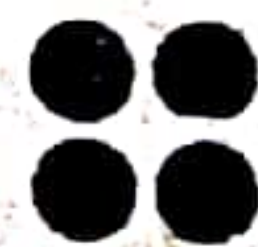
भुवनेश्वरी रहस्य साधना

१७-१२-८९

तांत्रिक ग्रन्थों में भगवती भुवनेश्वरी को आद्या शक्ति कहा गया है, यों तो भगवती के दस प्रमुख स्वरूप है, जिन्हे दस महाविद्याएं कहा गया है

काली तारा महा-विद्या षोडशी भुवनेश्वरी।
भैरवी छिन्नमस्ता च विद्या धूमावती तथा।।
बगला सिद्ध-विद्या च मातंगी कमलात्मिका।
एता दश महा-विद्या सिद्ध-विद्या प्रकीर्तिता।।

अर्थात १- काली, २- तारा, ३- षोडशी, ४- भुवनेश्वरी, ५- भैरवी ६- छिन्नमस्ता, ७- धूमावती, ८- बगला, ९- मातंगी, १०- कमला, इन दस स्वरूपों को महाविद्या कहा गया है।

पर इन दस महाविद्याओं में भी भुवनेश्वरी को आद्या शक्ति या मूल प्रकृति कहा गया है, और इसीलिए तांत्रिक ग्रन्थों में स्पष्ट किया गया है, कि जिसने अपने जीवन में भगवती भुवनेश्वरी को सिद्ध नहीं किया वह साधक हो ही नही सकता।

सिद्धाश्रम पंचांग के अनुसार पौष कृष्ण ५ तदनुसार इस वर्ष १७-१२-८९ को भगवती "भुवनेश्वरी दिवस" है, इस दिन इसको सिद्ध करने पर सम्पूर्ण सिद्धि और सफलता प्राप्त होती है।

भुवनेश्वरी तो सही अर्थों में जीवन का आधार है, वह सम्पूर्ण जीवन को जगमगाहट प्रदान करने वाली और सम्पूर्ण जीवन को आलोकित करने वाली है, भौतिक जीवन में तो भुवनेश्वरी का सर्वाधिक महत्व है।

महर्षि अगस्त्य ने तो भुवनेश्वरी के बिना जीवन की कल्पना ही नहीं की है, महर्षि अगस्त्य ही नहीं अपितु

विश्वामित्र, कणाद, स्वामी शंकराचार्य, योगाचार्य और गुरु गोरखनाथ तक ने यह स्वीकार किया है, कि भौतिक और आध्यात्मिक जीवन में पूर्णता एक मात्र भुवनेश्वरी साधना से ही संभव है।

गुरु गोरखनाथ ने तो भुवनेश्वरी सिद्ध करने के बाद अपने ज्ञान बल और साधना बल से यह अनुभव किया था कि हमें अपने जीवन में अन्य देवी देवताओं की साधना करनी ही नहीं है, यदि कोई साधक पूर्ण रूप से भुवनेश्वरी साधना सम्पन्न कर लेता है, तो उसके जीवन में किसी भी दृष्टि से कोई अभाव नहीं रहता।

तंत्र सार एक महत्वपूर्ण ग्रन्थ है, जिसको अत्यन्त ही प्रामाणिक माना जाता है, उसमें भगवती भुवनेश्वरी साधना के दस लाभ स्पष्ट रूप से वर्णित किये है।

१- भुवनेश्वरी साधना से निरन्तर आर्थिक, व्यापारिक और भौतिक उन्नति होती ही रहती है, जो अपने भाग्य में दरिद्र योग लिखा कर लाया है, जो व्यक्ति जन्म से ही दरिद्री है, वह भी भुवनेश्वरी साधना कर अपनी दरिद्रता को समृद्धि में बदल सकता है।

२- भुवनेश्वरी साधना ही एक मात्र कुण्डलिनी जागरण साधना है, इसी साधना से स्वतः शरीर स्थित चक्र जागृत होने लगते हैं, और अनायास उसकी कुण्डलिनी जागृत हो जाती है, और ऐसा होने पर उसका सारा जीवन जगमगाने लग जाता है।

३- एक मात्र भुवनेश्वरी साधना ही ऐसी है, जो जीवन में भौतिक उन्नति और आध्यात्मिक प्रगति एक साथ प्रदान करती है।

४- भुवनेश्वरी को आद्या मां कहा गया है, फलस्वरूप भुवनेश्वरी साधना से योग्य संतान प्राप्त होती है, और पूर्ण संतान सुख प्राप्त होता है।

५- भुवनेश्वरी साधना इच्छित साधना हैं, यदि पूर्ण रूप से भुवनेश्वरी को सिद्ध कर लिया जाय तो व्यक्ति जो भी इच्छा या आकांक्षा रखता है, वह इच्छा अवश्य ही सम्पन्न होती है।

६- भुवनेश्वरी सम्मोहन स्वरूपा है, तंत्र सार के अनुसार भुवनेश्वरी साधना करने से पुरूष या स्त्री का सारा शरीर एक अपूर्व सम्मोहन अवस्था में आ जाता है, जिसके व्यक्तित्व से लोग प्रभावित होने लगते है, और वह जीवन में निरन्तर उन्नति करता रहता हैं।

७- भुवनेश्वरी भोग और मोक्ष दोनों को एक साथ प्रदान करने वाली है, यही एक मात्र ऐसी साधना है जिसको सम्पन्न करने पर जीवन में सम्पूर्ण भोगों की प्राप्ति होती है, तो जीवन के अन्त में पूर्ण मोक्ष प्राप्ति भी होती है।

८- भुवनेश्वरी "रोगान शेषा" है, अर्थात् भुवनेश्वरी साधना करने पर असाध्य रोग भी समाप्त हो जाते है, और जीवन में अथवा परिवार में किसी प्रकार का कोई रोग व्याप्त नहीं होता।

९- "तोड़ल तंत्र" में बताया है, कि भुवनेश्वरी शत्रु संहारिणी है, इसकी साधना करने वाले साधक के शत्रु स्वतः ही समाप्त हो जाते है, यहां तक कि जो भी व्यक्ति इस प्रकार के साधक के प्रति दुराग्रह या शत्रु भाव रखते है, वे अपने आप समाप्त होते रहते है, और उनका जीवन बरबाद हो जाता है।

१०- भुवनेश्वरी को योग माया कहा गया है, इसकी साधना कर जीवन में धर्म, अर्थ, काम, और मोक्ष चारों पुरूषार्थो की प्राप्ति निश्चित रूप से होती है।

इन सारे तथ्यों को केवल एक ऋषि या केवल एक साधक ने ही स्वीकार नहीं किया है, अपितु जिन जिन योगियों या महर्षियों ने इस साधना को सम्पन्न किया है उन्होंने यह अनुभव किया है कि यदि साधक अपने जीवन में इस साधना को सम्पन्न नहीं करता, तो वह जीवन ही

बेकार चला जाता है। उसके जीवन में कोई रस नहीं रहता, और यदि सिद्धाश्रम के द्वारा वर्णित इस सिद्धि दिवस का उपयोग नहीं किया जाता, तो ऐसा महत्वपूर्ण दिन वापिस एक पूरे वर्ष के बाद ही प्राप्त हो सकता है।

यों तो तांत्रिक ग्रन्थों में बताया जाता है, कि भुवनेश्वरी साधना को किसी भी गुरूवार से प्रारम्भ की जा सकती है, पर यदि भुवनेश्वरी सिद्धि दिवस का ही उपयोग किया जाय तो सिद्धि मिलने में ज्यादा सुविधा एवं अनुकूलता प्राप्त होती है।

यों तो भुवनेश्वरी साधना की अनेक विधियां शास्त्रों में प्रचलित है, पत्रिका के पिछले अंकों में भी हमने मंत्रात्मक दृष्टि से भुवनेश्वरी साधना का विस्तार से विवरण दिया था, और उस प्रकार से साधना सम्पन्न कर सैकड़ों साधकों ने लाभ उठाया भी है, परन्तु इस बार सर्वथा गोपनीय, महत्वपूर्ण और दुर्लभ साधना प्रयोग दे रहे है। जो कि अपने आप में "तंत्रात्मक प्राणस्वरूपा भुवनेश्वरी साधना" कहा जाता है।

तंत्रात्मक भुवनेश्वरी साधना

इस दुर्लभ भुवनेश्वरी प्रयोग को महर्षि विश्वामित्र ने अपने योग बल से प्राप्त किया था, और उन्होंने इसे "भुवनेश्वरी पंजर सिद्धि" के शब्द से सम्बोधित किया है, पंजर का तात्पर्य है, चारों तरफ से रक्षा करने वाला प्रयोग। जिस प्रकार कोई पक्षी पिंजरे में बैठ जाता है, तो वह चारों तरफ से सुरक्षित रहता है, बिल्ली आदि किसी प्रकार का अन्य प्राणी उसको हानि नहीं पहुँचा सकता। उसी प्रकार से यह प्रयोग भी पूर्णतः पंजर है, जिससे कि इस साधना को सिद्ध करने वाले साधक को किसी प्रकार की हानि नहीं होती और वह निश्चिन्तता से आगे बढ़ता हुआ साधना को पूर्ण कर लेता है।

इस साधना की दूसरी विशेषता यह है, कि अन्य प्रकार से साधनाएं करने पर भले ही असफलता मिल

कहते हैं, कि इस प्रयोग को प्राप्त करने के लिए वशिष्ठ को स्वयं अपने पैरों से चल कर विश्वामित्र के द्वार तक जाना पड़ा और इसे प्राप्त करने के लिए शिष्यता भी स्वीकार करनी पड़ी।

जाय, परन्तु यह साधना प्रयोग अपने आपमें अचूक है, अभेद्य है, इस प्रकार से भुवनेश्वरी तांत्रिक प्रयोग करने पर साधक को निश्चय ही सिद्धि और सफलता मिलती है और ऊपर भुवनेश्वरी साधना के जो लाभ बताये है, वह साधक को स्वतः प्राप्त होने लगते है।

यह प्रयोग अत्यन्त गोपनीय और दुर्लभ रहा है, कहते है, कि इस प्रयोग को प्राप्त करने के लिए वशिष्ठ को स्वयं अपने पैरों से चल कर विश्वामित्र के द्वार तक जाना पड़ा और इसे प्राप्त करने के लिए शिष्यता भी स्वीकार करनी पड़ी। इस प्रयोग को प्राप्त करने के बाद वशिष्ठ ने कहा-"मैं यदि अपना पूरा जीवन भी दाव पर लगा कर इस विद्या को प्राप्त कर लेता तो भी यह सौदा महंगा नही था"।

गुरु गोरखनाथ तो इस विद्या के अन्यतम आचार्य थे और उन्होंने अपने ज्ञान बल से विश्वामित्र की आत्मा को अपने सामने प्रतिष्ठित कर उनसे ही यह दुर्लभ भुवनेश्वरी पिंजर" प्रयोग प्राप्त किया, और उसके बाद ही यह साधना प्रयोग उनके शिष्यों के द्वारा जनसाधारण में प्रचलित हुआ, फिर भी यह साधना रहस्य गोपनीय बना रहा, क्योंकि गुरू अपने शिष्य को कण्ठस्थ करा देता, और इसी प्रकार यह विद्या आगे बढ़ती रही।

गोरखनाथ की परम्परा में ही योगी अवधूत हुए

Scanned by CamScanner

जिन्होंने इस दुर्लभ साधना प्रयोग को अपने गुरु से प्राप्त कर ताड़ पत्रों पर अंकित किया, जिससे कि यह सुलभ हो सका।

वास्तव में ही प्रयोग अत्यन्त सरल और संक्षिप्त होते हुए भी पूर्ण एवं प्रभावशाली है। जो साधक इस साधना प्रयोग को सम्पन्न करता है, वास्तव में ही वह जीवन में बहुत कुछ प्राप्त कर लेता है।

"मैं यदि अपना पूरा जीवन दांव पर लगा कर इस विद्या को प्राप्त कर लेता तो भी यह सौदा महंगा नहीं था"।

सविधि तांत्रोक्त भुवनेश्वरी साधना रहस्य

साधक प्रातः काल उठ कर स्नान संध्या आदि से निवृत्त हो कर पूर्व की ओर मुंह कर आसन पर बैठ जाय, इस साधना में सफेद ऊनी आसन या मृग चर्म का प्रयोग किया जाना चाहिए। साधक स्वयं सफेद धोती धारण करे, साधिका यदि इस साधना को सम्पन्न करना चाहें तो सफेद साड़ी पहिने, प्रातः काल अपने सिर के बाल धो ले और बिना तेल लगाये बालों को खुला रखे।

इसके बाद साधक अपने सामने "तांत्रोक्त सिद्ध भुवनेश्वरी यंत्र" को स्थापित करें, जो कि महर्षि विश्वामित्र द्वारा प्रणीत प्राण संजीवनी मुद्रा से सिद्ध एवं प्राण प्रतिष्ठा युक्त हो। वास्तव में ही इस प्रकार से प्राण प्रतिष्ठित यन्त्र ही प्रयोग में लाया जा सकता है, यद्यपि इस प्रकार से प्राण प्रतिष्ठा करना अत्यन्त कठिन कार्य है, और बहुत कम पंडित ही इस प्रकार के यन्त्र को प्राण प्रतिष्ठित एवं मन्त्र सिद्ध कर पाते है, पर ऐसा यंत्र कई कई पीढ़ियों के लिए साधक के लिए लाभ दायक बना रहता है।

अपने सामने लकड़ी का बाजोट बिछा कर उस पर सफेद रेशमी वस्त्र बिछाएं और उस पर थाली रखे, थाली के चारों कोनों पर कुंकुम से पंच कोण बनावे और थाली के मध्य में त्रिकोण अंकित करे। इसके बाद थाली के मध्य में ही इस प्रकार का मन्त्र सिद्ध यन्त्र स्थापित करे, और उसे 'ॐ भुवनेश्वर्यै नमः" मन्त्र का उच्चारण करते हुए शुद्ध जल से स्नान करावे, इसके बाद इसी नाम का उच्चारण करता हुआ, उसे दूध से, दही से, घृत से मधु से, और शर्करा से स्नान करावे, फिर इन पांचों चीजों को मिला कर पंचामृत से स्नान करावे, स्नान कराते समय बराबर इसी मंत्र का उच्चारण करता रहे। इसके बाद पुनः शुद्ध जल से यंत्र को स्नान करा कर अलग किसी पात्र में रख दें, और उस पात्र का जल अलग कटोरे में ले कर एक तरफ रख दें, जिसे पूजा समाप्त होने के बाद जमीन में गाड़ दें।

इसके बाद उस थाली को मांज कर पोंछ कर सिन्दूर से मध्य में पंच कोण बनावे और थाली के अन्दर ही चारों कोनो पर सिन्दूर से ही त्रिकोण अंकित करे और मध्य में चावल की ढेरी बना कर उस पर यंत्र को स्थापित करे।

इसके बाद यंत्र पर सिन्दूर से ही दस बिन्दियां लगावे और यंत्र पर अक्षत तथा पुष्प चढ़ाने के बाद सुगन्धित पुष्पों की माला यंत्र पर अर्पित करे।

इसके बाद सामने अगरबत्ती के शुद्ध घृत का दीपक प्रज्वलित करें और यंत्र पर जहां दस स्थानों पर सिन्दूर की दस बिन्दियां लगाई थी, वहां से थोड़ा थोड़ा सिन्दूर लेकर अपने ललाट के मध्य में तिलक करे।

इसके बाद थाली में जो चारो कोनों पर त्रिकोण बनाये है, उनमें से प्रत्येक त्रिकोण पर छोटी छोटी चावल की ढेरियां बना कर प्रत्येक पर एक एक लघु नारियल

स्थापित करे, और लघु नारियल पर सिन्दूर का तिलक करे। यंत्र के सामने दस हकीक नग पत्थर रख दे, जो कि मंत्र सिद्ध हो, और प्रत्येक हकीक नग पर सिन्दूर का तिलक करे, यह दस महा शक्तियों के प्रतीक चिन्ह है। इसके बाद यंत्र के बांई ओर चावल की ढेरी बनाकर "मोती शंख" स्थापित करें और दाहिनी ओर चावल की ढेरी बना कर "सिद्धि फल" स्थापित करें। फिर इन दोनों की संक्षिप्त पूजा करें, सिन्दूर का तिलक करे और पुष्प समर्पित करें।

इसके बाद यंत्र के सामने दूध का बना हुआ प्रसाद अर्पित करें तथा एक पात्र में पंचामृत बना कर रखें (पंचामृत दूध, दही घी, शहद और शक्कर को मिला कर बनाया जाता है) इसके पास ही पानी से भरा हुआ, लोटा रख दें, और फिर प्रयोग प्रारम्भ करें।

भुवनेश्वरी तांत्रोक्त सपर्या प्रयोग

साधक सबसे पहले अपनी चोटी के गांठ लगावे, अपने अंगूठे से अपने ललाट पर सिन्दूर का तिलक करे, और फिर सिन्दूर का तिलक अपने सिर के मध्य भाग में हृदय पर तथा नाभि पर भी करें। इसके बाद हाथ में जल लेकर संकल्प करें।

विनियोग

ॐ अस्य श्री भुवनेश्वरी पंजर मंत्रस्य श्री शक्तिः ऋषिः। गायत्री छन्दः। श्री भुवनेश्वरी देवता। हं बीजं। ईं शक्तिः। रं कीलकं। सकल-मनो-वांछित-सिद्धयर्थे पाठे विनियोगः॥

ऐसा कह कर हाथ मे लिया जल जमीन पर छोड़ दे और इसके बाद न्यास करे।

ऋष्यादि न्यास

श्री शक्ति-ऋषये नमः शिरसि।
गायत्री-छन्दसे नमः मुखे।
श्री भुवनेश्वरी-देवतायै नमः हृदि
हं बीजाय नमः गुह्ये।
ईं शक्तये नमः नाभौ।
रं कीलकाय नमः पादयोः।
सकल-मनो-वांछित-सिद्धयर्थे पाठे विनियोगाय नमः सर्वांगे।

न्यास का तात्पर्य है कि इसमें शरीर के जिन जिन अंगो का वर्णन आया है, साधक मंत्र का उच्चारण करते हुए शरीर के उस उस अंग को दाहिने हाथ से स्पर्श करे, जिससे कि भगवती भुवनेश्वरी पूर्ण रूप से शरीर के सभी अंगो में समाहित हो सके।

इसके बाद साधक षडंग न्यास करे।

षडंग न्यास

षडंग न्यास	अंग-न्यास	कर-न्यास
ह्रीं श्रीं ऐं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
"	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
"	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
"	अनामिकाभ्यां हुं	कवचाय हुं
"	कनिष्ठकाभ्यां वषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
"	करतल करपृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

इस प्रकार से न्यास करने के बाद दोनों हाथ जोड़ कर भगवती भुवनेश्वरी का ध्यान करे।

ध्यान

ध्यायेद् ब्रह्मादिकानां कृत-जनि-जननी योगिनीं योग-योनिम्।
देवानां जीवनायोज्ज्वलित-जय-पर ज्योतिरूपांग-धात्रीम्।
शंख चक्रं च बाणं धनुरपि दधतीं दोश्चतुष्का-म्बुजातैः।
मायामाद्यां विशिष्टां भव-भव-भुवनां भू-भवा भार-भूमिम्।

महर्षि अगस्त्य ने तो भुवनेश्वरी के बिना जीवन की कल्पना ही नहीं की हैं, महर्षि अगस्त्य ही नहीं अपितु विश्वामित्र, कणाद, स्वामी शङ्कराचार्य, योगाचार्य और गुरू गोरखनाथ तक ने यह स्वीकार किया है, कि भौतिक और आध्यात्मिक जीवन में पूर्णता एक मात्र भुवनेश्वरी साधना से ही संभव है।

ध्यान करने के बाद साधक सफेद स्फटिक माला से वही पर बैठे बैठे निम्न दुर्लभ गोपनीय मंत्र की २१ माला मंत्र जप करें।

भगवती भुवनेश्वरी तांत्रोक्त पिंजर महामंत्र

ॐ क्रों श्रीं ह्लीं ऐं सौं ह्रीं नमः

जब मंत्र जप पूरा हो जाय तब साधक दस बत्तियां लगा कर भगवती भुवनेश्वरी कीं आरती सम्पन्न करे, या जगदम्बा या दुर्गा की आरती स्मरण हो तो उसे करे, इसके बाद भगवती भुवनेश्वरी के सामने जो प्रसाद चढ़ाया हुआ हैं, वह थोड़ा सा स्वयं भक्षण करे. और अपने परिवार वालों को बांटे।

इसके बाद पूर्ण सिद्धि के लिये किसी पात्र में समिधाये (लकड़ियां) जला कर इसी मंत्र की पूरी एक सौ आहुतियां दे दें तब यह प्रयोग पूर्ण माना जाता है।

भुवनेश्वरी यंत्र के आस पास जो लघु नारियल आदि सामग्री है, उसे एक सफेद रेशमी वस्त्र में बांध कर घर के भण्डार गृह में या जहां धनराशि आदि रखी जाती है, अथवा तिजोरी में सम्मानपूर्वक स्थापित कर दें और यंत्र को पूजा स्थान में सफेद रेशमी वस्त्र बिछाकर स्थापित करे।

इसके बाद यदि श्रद्धा हो तो एक ब्राह्मण को या एक कुंवारी कन्या को भोजन करा दें, अथवा मन्दिर में दान दक्षिणा आदि भिजवा दें।

इस प्रकार यह प्रयोग सम्पन्न होता है अपने आप में यह महत्वपूर्ण और दुर्लभ और गोपनीय प्रयोग हैं। पत्रिका पाठकों के लिए यह दिन वरदान स्वरूप है, उन्हें चाहिए कि वे इस दिन का उपयोग करते हुए, भगवती भुवनेश्वरी की इस दुर्लभ गोपनीय साधना को पूर्णता के साथ सम्पन्न करे।

Scanned by CamScanner

स विधि

श्री पदमावती सिद्धि प्रयोग

(५-१२-८६)

जब कुबेर ने भगवान शिव की हजारों वर्ष तक तपस्या की और जब भगवान शिव प्रत्यक्ष प्रकट हुए तो कुबेर ने उनके सामने अपनी इच्छा प्रकट की, कि मैं जीवन में इतना अधिक धन, द्रव्य, भोग और ऐश्वर्य प्राप्त करना चाहता हूं जितना संसार में किसी के पास न हो।

तब भगवान शिव ने कुबेर को अपना शिष्य बना कर उसे श्री पदमावती सिद्धि प्रयोग समझाया जो कि सर्वथा रहस्यमय और गोपनीय था। इस साधना को सम्पन्न कर कुबेर देवताओं के कोषाधिपति बन सके।

"विश्व सार तंत्र के अनुसार" ऐसा प्रयोग न जीवन में बन सका है, और न भविष्य में बन सकेगा, यदि सारे तंत्रों का निचोड़ निकाला जाय तो भी यह तंत्र प्रयोग सर्वश्रेष्ठ और अद्वितीय कहा जा सकता है।

पदमावती सिद्धि दिवस के अवसर पर मैं विश्व सार तन्त्र में वर्णित उस दुर्लभ प्रयोग को पाठकों के लिये प्रस्तुत कर रहा हूं जो कि सर्वथा गोपनीय तो रहा ही है, पर जिसे भगवान शिव ने स्वयं कुबेर को बताया था।

वास्तव में ही पदमावती धन धान्य, ऐश्वर्य एवं अतुल सम्पदा की देवी है, भगवती लक्ष्मी स्वयं इसकी मात्र अंशी भूत स्वरूपा है, इसीलिए शास्त्रों में पदमावती साधना को अत्यन्त श्रेष्ठतम महत्व दिया है।

Scanned by CamScanner

सिद्धाश्रम पंचांग के अनुसार प्रत्येक वर्ष मार्ग शीर्ष शुक्ल ७ तदनुसार ५-१२-८९ को 'पदमावती सिद्धि दिवस'' हैं. जिस दिन प्रत्येक साधक, साधना कर अपने जीवन में पूर्णता और सफलता प्राप्त कर सकता है।

तांत्रोक्त प्रयोग

इस बार पत्रिका के इन पन्नों पर पर मैं पदमावती के उस दुर्लभ तांत्रोक्त प्रयोग को स्पष्ट कर रहा हूं जो कि निश्चय ही अब तक गोपनीय रहा है। तांत्रोक्त प्रयोग कीं यह विशेषता होती है कि उसमें मंत्र जप तो होता ही है, पर क्रिया पद्धति मुख्य रूप से महत्व रखती है, तंत्र में केवल मंत्र जप ही पर्याप्त नही होता, अपितु उसमें जिन साधनाओं और उपकरणों की आवश्यकता होती है,उनका प्रयोग भी आवश्यक माना जाता है।

यह पदमावती प्रयोग भी तांत्रोक्त पद्धति है, यदि मैं सत्य कहूं तो वास्तव में ही इसके समान आर्थिक उन्नति प्रदान करने वाला अन्य कोई प्रयोग इस संसार में नहीं है जिस प्रयोग से दरिद्र कुबेर अतुलनीय सम्पदा के स्वामी हो सके, जिस प्रयोग से विश्वामित्र सर्वश्रेष्ठ धनाधिपति हो सके, जिस प्रयोग से वशिष्ठ ने इतनी क्षमता प्राप्त करली, कि वह दशरथ जैसे प्रतापी राजा को कर्ज दे सके जिस प्रयोग से गुरू गोरखनाथ लाखों शिष्यों का नित्य भण्डारा करने में समर्थ हो सके, और जिस प्रयोग से स्वामी शंकराचार्य ने स्वर्ण वर्षा कर के बता दिया, वह प्रयोग किस प्रकार से कमजोर हो सकता है।

एक नहीं सैकड़ो तान्त्रिकों ने पदमावती प्रयोग को जीवन का अद्वितीय खजाना कहा है, जिन जिन योगियों ने, साधकों ने या व्यक्तियों ने यह साधना सम्पन्न की है, उन लोगों ने स्वीकार किया है कि यह साधना सिद्ध होते होते धन धान्य की वर्षा होने लगती है, कई गुना व्यापार बढ़ जाता है, रुके हुए पैसे प्राप्त होने लग जाते है, और अनायास ही भाग्योदय हो जाता है, ऐसा लगता है कि जैसे लक्ष्मी स्वयं घर में आ कर बैठ गई हो।

भगवान शिव ने स्वयं पार्वती को इस प्रयोग का रहस्य बताते हुए कहा है, कि यह प्रयोग हमेशा गुप्त रखना चाहिए, इसके माध्यम से जिस प्रकार से धन की वर्षा होती है, उससे व्यक्ति को भ्रमित न हो कर, स्वयं के जीवन को तो सुखमय बनाना ही चाहिए, दान, पुण्य आदि करके भी समाज में यश और सम्मान प्राप्त करना चाहिए।

विश्व सार तंत्र के अनुसार

विश्व सार तंत्र में इस प्रयोग से संबंधित कुछ हिदायते दी है, जिनका प्रयोग साधक को करना चाहिए, वे निम्न प्रकार से है-

१– पदमावती प्रयोग, पदमावती दिवस के दिन अथवा किसी भी शनिवार या मंगलवार से प्रारंभ किया जा सकता है। यदि पदमावती दिवस के दिन इस प्रयोग को किया जाता है, तो एक ही दिन में प्रयोग सम्पन्न हो जाता है, पर यदि इस दिन के अलावा अन्य किसी मंगलवार या शनिवार से यह प्रयोग प्रारम्भ किया जाता है तो पांच दिन तक यह प्रयोग सम्पन्न करना चाहिए।

२– यह प्रयोग घर के किसी अलग कमरे में करे, पर इस बात का ध्यान रखे कि जब तक प्रयोग सम्पन्न हो तब तक उस कमरे में अन्य कोई न जाए, अथवा यह प्रयोग एकांत स्थान में नदी के किनारे अथवा शून्य स्थान पर करे, जहां पर लोगों का आना जाना नहीं के बराबर हो।

३– प्रयोग प्रारम्भ करने के एक दिन पहले घर में किसी कुवारी कन्या जिसकी आयु ग्यारह वर्ष से बड़ी न हो, और जो अभी रजस्वला न हुई हो, उसे घर में बुला कर उसका संक्षिप्त पूजन करे, उसे भोजन, करावे और यथोचित वस्त्र आदि भेट स्वरूप दें।

Scanned by CamScanner

४– यह प्रयोग या तो ब्रह्म मुहूर्त में अर्थात सुबह चार बजे के आस पास से प्रारम्भ करे या रात्रि में यह प्रयोग सम्पन्न करे, जिस समय सर्वथा एकांत हो, और लोगों का शोरगुल न हो।

५– यह प्रयोग सम्पन्न करने के बाद किसी ब्राह्मण को घर में बुला कर घी और गुड़ से बने हुए पुवे आदि का भोजन करावे अथवा मन्दिर में घी और गुड़ चढ़ा दें फिर भी इस विश्व सार तंत्र में बताया हैं, कि घर में ब्राह्मण को बुलाकर भोजन कराना ज्यादा श्रेष्ठ है।

६- यदि यह प्रयोग लगातार तीन दिन कर दें, तो वह सभी शास्त्रों का ज्ञाता और भगवती पदमावती के पुत्र के समान होता है।

७- यदि इस प्रयोग को पूरे पांच दिन सम्पन्न किया जाय और अपने सामने गुरूदेव का चित्र स्थापित कर उन्हें साक्षात् शिव और उनकी पत्नी को साक्षात् पार्वती मान कर अभेद भाव से इस मन्त्र का जप पांच दिन तक करे तो वह समस्त प्रकार की सम्पत्ति निश्चय ही प्राप्त करता है।

मेरे कहने का तात्पर्य यह है, कि विश्व सार तंत्र के अनुसार साधक पदमावती सिद्धि दिवस को एक दिन तो प्रयोग करे ही, पर वह चाहे तो पदमा-वती दिवस से आगे तीन दिन या पांच दिन तक भी प्रयोग कर सकता है।

इस प्रकार का प्रयोग चलते समय, यदि साधक दिन को या रात्रि को कोई दूसरा प्रयोग भी हाथ में लिया हुआ हो तो उसे भी सम्पन्न कर सकता है, इसमें कोई बाधा नही है।

८- इस प्रयोग को सम्पन्न करने पर धन धान्य की वृद्धि तो निरन्तर होती ही है, आर्थिक रूप से वह अत्यन्त समृद्ध तेजस्वी और सौभाग्यशाली भी बन जाता है, ऐसे साधक के समस्त पाप कट जाते है, उसका दुर्भाग्य समाप्त हो जाता है।

९- यदि पुष्य नक्षत्र में इस मंत्र को गोरोचन से लिख कर कांच में मंढ़वा कर दुकान में या घर में रख दें तो निरन्तर उन्नति होती रहती है।

१०- यदि एक कागज पर पुष्य नक्षत्र के दिन यह मंत्र लिख कर उसे गेहूं के आटे में मसल कर उसकी छोटी छोटी गोलियां बना कर मछलियों को वे गोलियां खिला दी जाय तो वशीकरण सिद्ध हो जाता है, उसके चेहरे पर एक विशेष प्रकार की सम्मोहन शक्ति आ जाती है, और वह सर्वत्र विजयी होता है।

११- यदि मंगलवार के दिन किसी कागज पर इस मन्त्र को लिख कर उसके नीचे शत्रु का नाम लिख कर जमीन में गाड़ दें या श्मशान में जा कर उस कागज को जला दें तो शत्रु का मारण निश्चित रूप हो जाता है।

१२- यदि पुष्य नक्षत्र के दिन भोज पत्र पर गोरोचन से मन्त्र को लिख कर उसे मसल कर उसे दूध बने से हुए पेडे या प्रसाद में मिला कर जिसको भी वह प्रसाद खिला दिया जाता है, वह निश्चित रूप में वश में हो जाता हैं और जीवन भर गुलाम की तरह कार्य करता है।

१३- यदि रविवार के दिन पुष्य नक्षत्र हो, और गोरो-चन से इस मंत्र को कागज पर लिख कर कार्यालय में अथवा फैक्टरी में वह मंढ़वा कर लटका दिया जाय तो कर्मचारियों की समस्या समाप्त हो जाती है, उस फैक्टरी में हड़ताल नहीं होती और किसी प्रकार की बाधा या अड़चन उपस्थित नहीं होती।

१४- यदि इस मन्त्र को पुष्य नक्षत्र के दिन भोज पत्र पर लिख कर अपने घर के भण्डार गृह में रखे, तो उसके घर में निरन्तर उन्नति होती रहती है।

Scanned by CamScanner

पर इन सब के लिए आवश्यक है, कि साधक पहले इस पदमावती साधना को सिद्ध करे, तभी उसे उपरोक्त लाभ प्रतीत होते है ।

पदमावती प्रयोग

इस साधना को पुरूष या स्त्री कोई भी सम्पन्न कर सकता है, पर रजस्वला स्त्री को उन दिनों में यह प्रयोग सम्पन्न नहीं करना चाहिए , इसी प्रकार पुरूष को साधना काल में भूमि शयन करना चाहिए ब्रह्मचर्य का पूरा पालन करना चाहिए ।

पदमावती महायंत्र

विश्व सार तंत्र के अनुसार इस साधना का प्रमुख भाग पद्मावती महायंत्र है, जो कि धातु निर्मित हो और विश्व सार तंत्र के अनुसार ही मंत्र सिद्ध और प्राण प्रतिष्ठा युक्त हो ।

विश्व सार तंत्र में इस महायंत्र को सिद्ध करने की गोपनीय विधि स्पष्ट की हैं, जो कि अत्यन्त जटिल, कठिन और श्रम साध्य है , उसमें बताया गया है, कि इस महायन्त्र को "वाग्भव" बीज से सम्पुटित कर "लज्जा" बीज से युक्त कर 'रमा" बीज से कीलक कर "काम" बीज से सिद्ध करना चाहिए , तभी यह यंत्र सिद्ध होता है, और ऐसा ही महायत्र साधक के लिए उपयोगी होता है ।

साधक को चाहिए कि वह इस प्रकार का अद्वितीय महायन्त्र सम्पन्न कर ले, या किसी योग्य पडित से तैयार करवा ले अथवा समय रहते पत्रिका कार्यालय से सम्पर्क स्थापित कर इस प्रकार का महायंत्र प्राप्त कर ले, क्योंकि इस प्रकार के महायंत्र को सिद्ध करना कठिन है, और ऐसे बहुत ही कम महायंत्र सिद्ध हो सकते है ।

साधना प्रयोग

जब साधक विश्व सार तंत्र के अनुसार तांत्रोक्त पद-मावती साधना सम्पन्न करना चाहें तो वह या तो प्रातः काल ब्रह्म मुहूर्त में अर्थात चार बजे के आस पास साधना प्रारम्भ करे या रात्रि को ९ बजे के बाद इस साधना को म्पन्न करे ।

साधक स्नान कर अपने पूजा स्थान में सफेद ऊनी आसन बिछा कर पूर्व की ओर मुंह कर बैठ जाय और सामने पूज्य गुरूदेव का सुन्दर चित्र स्थापित कर दें, यदि वह गुरूमाता और गुरूदेव दोनों का चित्र प्राप्त कर साधना स्थल पर स्थापित करे तो ज्यादा महत्वपूर्ण माना गया है, इन दोनों को भगवान शिव और साक्षात् पार्वती समझ कर मन ही मन बिना किसी संशय के अभेद भाव से उन्हें शिव पार्वती मान कर उनकी पूर्ण पूजा करे, पूजा में चित्र को स्नान करावे, फिर उसे पौंछ कर केसर का तिलक करे, सामने अगरबत्ती लगावे, घी का दीपक प्रज्वलित करें, और सुन्दर पुष्पों का हार चित्र को पहनावे इसके बाद गुरू मंत्र की एक माला मन्त्र जप करे, और गुरू आरती पूर्ण भक्ति भाव से सम्पन्न करें. यह इस प्रयोग में आवश्यक है ।

इसके बाद एक थाली में केसर से स्वस्तिक का चिन्ह बना कर उसमें इस दुर्लभ 'पदमावती महायंत्र' को स्थापित करें, और उसे दूध, दही, घी, शहद, और शक्कर से स्नान कराने के बाद पंचामृत से स्नान करावे, और फिर शुद्ध जल से धो कर पौंछ कर किसी दूसरी थाली में केसर का स्वस्तिक बना कर उसमें इस यंत्र को स्थापित करें ।

Scanned by CamScanner

तत्पश्चात् यंत्र की संक्षिप्त पूजा करें, केसर का तिलक लगावे अक्षत अबीर गुलाल तथा पुष्प समर्पित करे, सामने दूध का बना हुआ नैवेद्य चढ़ावे और शुद्ध घृत का दीपक प्रज्वलित करें।

इसके बाद इस पदमावती महायंत्र के ऊपर 'वाग्भव यंत्र' को स्थापित करे, यंत्र के बाईं ओर 'लज्जा यंत्र' स्थापित करे, यन्त्र के दाहिनी ओर 'लक्ष्मी यन्त्र' स्थापित करे और यंत्र के नीचे की ओर 'काम यंत्र' स्थापित करें। इस प्रकार इस यन्त्र के चारों तरफ ये चार यंत्र स्थापित करने आवश्यक माने गये है, इनमें चारों ही यंत्र अपने आपमें अत्यन्त दुर्लभ और मन्त्र सिद्ध होने चाहिए. साथ ही साथ ये प्राण प्रतिष्ठा युक्त होने चाहिये जिससे साधक को तुरन्त अनुकूलता प्राप्त हो सके।

विनियोग

इसके बाद हाथ में जल ले कर संकल्प करें कि मैं अमुक गोत्र, अमुक पिता का, अमुक नाम का साधक पूर्ण पदमावती साधना को सिद्ध करना चाहता हूं और ऐसा कहते हुए जल किसी पात्र में छोड़ दें।

इसके बाद पुनः हाथ जल ले कर विनियोग करें—

ॐ अस्याश्चतुरक्षरी-विष्णु-वल्लभायाः मंत्रस्य श्री भगवान् शिव ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, वाग्भवी शक्तिः देवता, वाग्भवं (ऐं) बीजं, लज्जा (ह्रीं) शक्तिः, रमा (श्रीं) कीलक, काम-बीजात्वकं (क्लीं) कवच, मम सु-पाण्डित्य-कवित्व-सर्व-सिद्धि-समृद्धये मंत्र जपे विनियोगं।

विनियोग के बाद कमल गट्टे की माला से निम्न मंत्र की २१ माला मंत्र जाप करें, इसमें कमल गट्टे की माला का ही प्रयोग होता है, जो कि मंत्र सिद्ध होनी चाहिए।

पद्मावती मूल मंत्र

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं ॐ

जब मंत्र जप पूरा हो जाय तब साधक विश्राम करे, यदि साधक चाहे तो इसके बाद पदमावती स्तोत्र का पाठ कर सकता हैं, **यद्यपि इस साधना में यह अनिवार्य नहीं है, फिर भी इस स्तोत्र की भी तांत्रिक क्षेत्र में अत्यन्त महत्ता है।**

मैं केवल साधकों की जानकारी के लिए ही इस स्तोत्र को आगे की पंक्तियों में दे रहा हूं, यद्यपि मंत्र जाप सम्पन्न करने पर उस दिन की साधना पूर्ण मानी जाती है।

पद्मावती स्तोत्र

ऐंकारी मस्तके पातु वाग्भवी सर्व-सिद्धिदा।
ह्रीं पातु चक्षुर्मध्ये चक्षु-युग्मे च शांकरी ॥१॥

जिह्वायां मुख - वृत्ते च कर्णयोर्दन्तयोरपि।
ओष्ठाधरो दन्त-पंक्ती तालु-मूले हने पुनः ॥२॥

पातु मां विष्णु-वनिता लक्ष्मीः श्री विष्णु-रूपिणी ।
कर्ण-युग्मे भुज द्वन्द्वे स्तन द्वन्द्वे च पार्वती ।।३।।

हृदये मणि-बन्धे च ग्रीवायां पार्श्वयोर्द्वयोः ।
पृष्ठ-देशे तथा गुह्ये वामे च दक्षिणे तथा ।।४।।

उपस्थे च नितम्बे च नाभौ जंघा-द्वये पुनः ।
जानु - चक्रे पद - द्वन्द्वे घटिके गुलि - मूलके ।।५।।

स्वधा तु प्राण शक्त्या वा सीमन्ते मस्तके तथा ।
सर्वांगे पातु कामेशी महादेवी समुन्नतिः ।।६।।

पुष्टिः पातु महा माया उत्कृष्टिः सर्वदा वतु ।
ऋषिः पातु सदा देवी सर्वत्र-शम्भु-वल्लभा ।।७।।

वाग्भवी सर्वदा पातु, पातु मां हर-गेहिनी ।
रमा पातु महा-देवी, पातु माया स्वराट् स्वयं ।।८।।

सर्वांगे पातु मां लक्ष्मी विष्णु-माया सुरेश्वरी ।
विजया पातु भवने जया पातु सदा मम ।।९।।

शिव-दूती सदा पातु सुन्दरी पातु सर्वदा ।
भैरवी पातु सर्वत्र भेरुण्डा सर्वदा वतु ।।१०।।

त्वरिता पातु मां नित्यमुग्र-तारा सदा वतु ।
पातु मां कालिका नित्यं काल-रात्रिः सदा वतु ।।११।।

नव-दुर्गाः सदा पान्तु कामाख्या सर्वदा वतु ।
योगिन्यः सर्वदा पान्तु मुद्राः पान्तु सदा मम ।।१२।।

मातरः पान्तु देव्यश्च चक्रस्था योगिनी-गणा ।
सर्वत्र सर्व - कार्येषु सर्व - कर्मसु सर्वदा ।।१३।।

पातु मां देव-देवी च लक्ष्मीः सर्व समृद्धि दा ।
इति ते कथितं दिव्यं कवचं सर्व-सिद्धये ।।१४।। ★

Scanned by CamScanner

तन्त्र साधना की पीठ पद्धति

बगलामुखी सिद्धि

३१–१२–८६

बगलामुखी का शुभ नाम "बल्गा मुखी" है, जिस प्रकार से हम घोड़े के मुंह पर लगाम लगा कर उसे नियन्त्रण में रखते हैं उसी प्रकार से बल्गामुखी के द्वारा समस्त शत्रुओं के मुंह पर लगाम लगाते हुए उन्हें अपने नियन्त्रण में रख पाते हैं।

तांत्रोक्त साधना में बगलामुखी की कई विधियां प्रचलित हैं, पर बगला-मुखी के सिद्धतम आचार्य मत्स्येन्द्र नाथ थे, जिन्होंने पीठ पद्धति से बगलामुखी सिद्ध कर यह बता दिया था, कि इसके माध्यम से असम्भव कार्यों को भी संभव किया जा सकता है।

आगे की पंक्तियो में, जगत् गुरू मत्स्येन्द्र नाथ द्वारा प्रणीत बगलामुखी साधना की पीठ पद्धति स्पष्ट कर रहा हूं, जो कि पूरे संसार में पहली बार प्रकाशित हो रही है।

यह महत्वपूर्ण नहीं है, कि बगलामुखी साधना सिद्ध की जाय, महत्वपूर्ण तो यह है कि उसे किस उपाय या किस विधि से सिद्ध की जाती है, 'तोड़ल तंत्र' में बताया है, कि दस महाविद्याओं में बगला मुखी सर्वश्रेष्ठ महाविद्या है, जो कि साधक को समस्त प्रकार से पूर्णता देने में सहायक है।

Scanned by CamScanner

"प्रपंच सार तंत्र" में बगला मुखी साधना के बारे में बताया है, कि यह साधना तांत्रोक्त पद्धति से ही सिद्ध की जानी चाहिए, जिससे कि इसके माध्यम से साधक को पूर्ण सफलता और सिद्धि प्राप्त हो सके।

'रूद्रयामल तंत्र' में स्पष्ट रूप से बताया है कि बगला मुखी साधना की पीठ पद्धति अपने आपमें सर्वाधिक महत्वपूर्ण और दुर्लभ है जिसे महायोगी राज जगद्गुरू मत्स्येन्द्र नाथ ने योग विद्या से स्वयं भगवती बगला मुखी को अपने सामने प्रत्यक्ष कर उसकी गोपनीय विधि और रहस्य प्राप्त किया था।

कहते है, कि मत्स्येन्द्र नाथ को पीठ पद्धति के द्वारा जब बगला मुखी सिद्ध हुई तो वह नित्य मत्स्येन्द्र नाथ के सामने आकर उपस्थित होती और मत्स्येन्द्रनाथ स्वयं उसे अपने हाथों से भोजन कराते।

जगद्गुरू मत्स्येन्द्रनाथ ने ताड पत्रों पर वल्गा सिद्ध साधना पद्धति पर एक ग्रन्थ लिखा है, जो आज भी तांत्रिक क्षेत्र में अद्वितीय ग्रन्थ माना जाता है, इस महा-विद्या को सिद्ध करने के लिए इससे ज्यादा महत्वपूर्ण और कोई ग्रन्थ नहीं है। यह ग्रन्थ पूर्णतः गोपनीय और दुर्लभ रहा, तिब्बत के मठों मे जरूर इसकी प्रतिलिपि प्राप्त हैं, और जब राहुल सांकृत्यायन तिब्बत गये और उन्होंने तिब्बत के मठों में भारतीय तांत्रिक ग्रन्थों की खोज की तो उन्हें स्वामी मत्स्येन्द्र नाथ लिखित उपरोक्त ग्रन्थ की प्रतिलिपि देखने को मिली, वे चाहते थे, कि इस दुर्लभ ग्रन्थ की प्रतिलिपि भारतवर्ष पहुँच जाय परन्तु वे अपने प्रयास में असफल ही रहे।

तिब्बत के कई लामा इसी पीठ पद्धति से बगला मुखी को सिद्ध कर अद्वितीय आचार्य और सिद्ध योगी बने है। सपर्या तंत्र में बौद्ध लामा ने पीठ पद्धति के द्वारा मत्स्येन्द्रनाथ बगला मुखी साधना के निम्न आठ लाभ या प्रयोग बताये है जो कि अपने आप में अद्वितीय है। आज भी ये लामा इसी पद्धति से साधना सिद्ध कर इन सिद्धियों को प्राप्त करते है।

बगला मुखी साधना के लाभ

सपर्या तंत्र में लिखित बौद्ध याचमी के अनुसार गुरू मत्स्येन्द्र नाथ प्रणीत बगला मुखी साधना सिद्ध करने पर निम्न लाभ स्पष्ट प्राप्त होते है, और इन लाभों का प्रयोग या उपयोग साधक कभी भी सम्पन्न कर सकता है।

१- इस प्रकार की साधना सिद्ध करने पर साधक निश्चय ही अपने शरीर को वायु से भी शून्य कर आकाश में विचरण कर सकता हैं और एक स्थान से दूसरे स्थान तक जा सकता है।

२- इस साधना के द्वारा साधक दुर्गम्य बर्फीले पहाड़ों पर नंगे पांव एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाने पर उसे किसी प्रकार की कठिनाई या बाधा उपस्थित नहीं होती और वह निश्चिन्त निर्भीक हो कर पूरे संसार में कहीं पर भी विचरण करने में समर्थ होता है।

३- इस साधना को सिद्ध करने पर साधक मृत्यु पर पूर्णतः नियंत्रण प्राप्त कर लेता है, एक प्रकार से ऐसे व्यक्ति को 'इच्छा मृत्यु सिद्धि' पुरूष कहा जाता है, महा-भारत कालीन भीष्म पितामह ने यही साधना सिद्ध की थी, ऐसा कुछ ग्रन्थों में आलेख है।

४- इस साधना से साधक जीवन के किसी भी प्रकार के तत्वों पर पूर्णतः अधिकार रखता है, वह अकेला ही हजारों शत्रुओं पर भारी पड़ता है, उसका शरीर वज्र की तरह मजबूत और सुदृढ़ हो जाता है, फलस्वरूप उस पर किसी भी प्रकार का शस्त्र प्रहार नहीं हो सकता, यही नहीं अपितु शत्रु न तो उस पर हावी हो सकते है, न उसको पीड़ा पहुंचा सकते है, और न उसके लिए परे-शानी पैदा कर सकते है।

५- ऐसे साधक के चारों ओर सुदर्शन चक्र की तरह "वल्गा चक्र" घूमता रहता है, जो प्रत्येक प्रकार की आपत्ति और बाधाओं से उसे बचाता है, एक प्रकार से ऐसा चक्र चौबीसों घण्टे उसकी रक्षा करता रहता है,

Scanned by CamScanner

वास्तव में ही ऐसा साधक इस संसार में अजेय माना जाता है।

६— ऐसे साधक को राज्य बाधा व्याप्त नहीं होती, आज के युग के सदर्भ में देखा जाय तो ऐसे साधक पर पुलिस, इन्कम टेक्स, या अन्य किसी भी प्रकार की राज्य बाधा नहीं आती, वह स्वतंत्र रूप से अपने व्यापार को सम्पन्न कर सकता हैं, जीवन में निरन्तर उन्नति कर सकता है, और आगे सफलताओं को प्राप्त करता हुआ इच्छा मृत्यु वरण कर सकता हैं।

उपरोक्त छः लाभों के अलावा भी ऐसा साधक समाज में पूजनीय और सम्माननीय होता है। ऐसे साधक के चेहरे पर एक विशेष प्रकार का ओज दिखाई देता है, जिसकी चका चौंध से उससे मिलने वाला व्यक्ति निस्तेज हो जाता है, ऐसे व्यक्ति के शरीर में कामदेव का निवास होता है, फलस्वरूप उसका व्यक्तित्व चुम्बकीय और आकर्षण युक्त वन जाता है, वह किसी को भी सम्मोहित करने की क्षमता रखता है, ऐसे साधक के जीवन में किसी प्रकार की कोई बाधा उपस्थित नहीं होती और वह सिद्ध योगी की श्रेणी में आता है। इस प्रकार की साधना सिद्ध करने पर साधक को जगदगुरू मत्स्येन्द्रनाथ के साक्षात् दर्शन होते है और साधना सिद्ध करने के बाद गुरू मत्स्येन्द्र नाथ स्वयं उसे "वलगा दीक्षा" प्रदान करते है।

वास्तव में हो बगला मुखी साधना जीवन की अद्वितीय और आश्चर्यजनक साधना है, हकीकत में देखा जाय तो भारतीय साधक अभी तक इसके महत्व और मूल्य को समझ नहीं सके है पर जिस दिन इस साधना की पीठ पद्धति समझ लेगे उस दिन पूरे भारतवर्ष में क्रांति सी आ जायेगी और साधक अपने जीवन म जो भी और जिस प्रकार से भी चाहेगा, उस प्रकार से कार्य सम्पन्न कर सकेगा।

सिद्धाश्रम ने पौष शुक्ल ३ को "बगला मुखी सिद्धि दिवस" माना है, अंग्रेजी तारीख के अनुसार इस वर्ष ३१-१२-८९ को आता है, अतः भारत के प्रत्येक साधक को चाहिए कि वे इस साधना को इस महत्वपूर्ण दिवस पर अवश्य ही सम्पन्न करें।

यों तो तांत्रिक ग्रन्थों के अनुसार किसी भी रविवार या मंगलवार से इस साधना को प्रारम्भ किया जा सकता है, परन्तु जिन साधकों के पास समय हो, वे बगला मुखी सिद्धि दिवस के दिन इस साधना को सम्पन्न करें। यह साधना पुरूष या स्त्री कोई भी सम्पन्न कर सकता है। यह साधना दिन या रात्रि को कभी भी सम्पन्न की जा सकती है।

साधना प्रयोग

जिस दिन यह साधना प्रारम्भ करनी है, साधक उससे एक दिन पहले किसी पेड़ की हरी डाली लाकर अपने पूजा स्थान में स्थापित करदे, और उसके पास ही लकड़ी का बाजोट बिछा कर उस पर तांबे का कलश स्थापित कर दें। इस कलश में पीपल या वड़ के पांच पत्ते रख कर, उसके ऊपर नारियल रखें, और फिर कलश को समुद्र का प्रतिनिधि मान कर उससे प्रार्थना करें कि मैं कल बगला मुखी साधना सिद्ध करना चाहता हूँ, आप मेरे लिए सहायक हो इसी प्रकार किसी पात्र में मिट्टी का ढ़ेर बना कर उसमें हरे पेड़ की छोटी डाली लगा दें, उसकी संक्षिप्त पूजा करे और कहे कि मैं इस अवसर पर समस्त संसार की बनस्पति को आमन्त्रित करता हूं, कि वे मेरे जीवन को हरा भरा रखते हुए, मुझे अपने जीवन में पूर्णतः सफलता प्रदान करें।

इसके बाद जिस दिन साधना सम्पन्न करनी हो, उस दिन प्रातः काल साधक ब्रह्म मुहूर्त में ही उठ जाय, और सूर्योदय से पहले ही स्नान करके पूर्व दिशा की ओर मुंह कर संध्या प्राणायाम करें और गायत्री मन्त्र की एक माला मन्त्र जप करें, इसके बाद हाथ में जल पात्र ले कर सूर्य उगने पर भगवान सूर्य को अर्घ्य दें, और फिर जहां अर्घ्य का जल गिरा है, उसकी सात प्रदक्षिणा करे, और भगवान से प्रार्थना करें, वे उसे तेज, वल, साहस और

Scanned by CamScanner

शक्ति प्रदान करें, जिससे कि वह साधना में पूर्ण सफलता प्राप्त करें।

इसके बाद साधक पीली धोती पहिन कर पीले आसन पर पूर्व या उत्तर की ओर मुंह कर बैठ जाय, इस साधना में पीले पुष्पों का ही प्रयोग होता है, साधना से दो दिन पहले ही रूई को पीले रंग में रंग कर उसे सुखा दें, और फिर उसकी वत्ती बना कर घृत का दीपक लगावे, यह सूर्योदय से दूसरे दिन सूर्योदय तक अर्थात चौबीस घण्टे अखण्ड दीपक जलता रहना चाहिए।

इसके बाद कांसी की थाली ले कर उसमें चांदी की शलाका से अष्ट गन्ध के द्वारा एक स्त्री का चित्र बनावे, जो कि खड़ी हुई हो, और जिसका एक पैर मनुष्य की छाती पर हो, और उसके हाथों में तलवार हों, चाहे चित्र अच्छा बने या गलत, इस बात की चिन्ता न करें, साधक चाहें तो पत्रिका कार्यालय से भगवती बगला मुखी देवी का चित्र प्राप्त कर सकता है, और उस चित्र को देख कर अष्ट गन्ध के द्वारा थाली में चांदी की शलाका से भगवती बगला मुखी का चित्र अंकन करें।

इसके बाद सामने लकड़ी के बाजोट पर इस थाली को स्थापित कर दें, और थाली के पीछे अपने गुरू का चित्र स्थापित करें, यदि गुरू स्वयं उपस्थित हो तो उनको सम्मान पूर्वक अपने पास बिठाये, यदि ऐसा न हो तो गुरू के चित्र को स्थापित करें, और उन्हें पूर्ण योगीराज मान कर उनकी विधि विधान के साथ पूजा करें, और गुरू आरती सम्पन्न करें।

पीठ पद्धति सिद्ध बगला मुखी यन्त्र

इसके बाद मत्स्येन्द्र नाथ प्रणीत पीठ पद्धति से युक्त भगवती बगलामुखी का ताम्र पत्र पर अंकित मन्त्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त महा यन्त्र उस थाली में स्थापित करें, यह यन्त्र आप पहले से तैयार करवा कर सिद्ध करवा सकते हैं, या पत्रिका कार्यालय से प्राप्त कर सकते हैं।

फिर "ॐ बगलामुखी देव्यै नमः" शब्द का उच्चारण करते हुए इस यन्त्र के ऊपर तीन 'गौरी शंकर रुद्राक्ष' स्थापित करें, बांये हाथ की ओर दो लघु 'नारियल' तथा दाहिने हाथ की ओर दो तांत्रिक नारियल स्थापित करें, यन्त्र के नीचे के भाग में तीन "त्रिरूप रुद्राक्ष" स्थापित करें।

इसके बाद एक अलग लकड़ी के बाजोट पर पीला कपड़ा बिछा कर उस पर सुपारी रख कर उसे महायोगी मत्स्येन्द्रनाथ मान कर उसकी संक्षिप्त पूजा करें, और उनका आह्वान कर निवेदन करें कि वे आ कर साधना में सिद्धि प्रदान करें।

इसके बाद साधक हाथ में जल ले कर संकल्प करें कि मैं अमुक गोत्र, अमुक पिता का पुत्र, अमुक नाम का साधक गुरू आज्ञा से भगवान सूर्य या दीपक की साक्षी में मत्स्येन्द्र नाथ प्रणीत पीठ पद्धति से बगला मुखी साधना सिद्ध कर रहा हूं – ऐसा कह कर हाथ में लिया हुआ जल किसी पात्र में छोड़ दें।

विनियोग

इसके बाद दाहिने हाथ में जल ले कर निम्न विनियोग का उच्चारण करते हुए जल पात्र में छोड़े –

ॐ अस्य श्री बगलामुखी - मन्त्रस्य नारद-ऋषिः। त्रिष्टुप छन्दः। बगलामुखी देवता। ह्लीं बीजं। स्वाहा शक्तिः। मम शरीरे (यजमानस्य शरीरे वा) नाना-ग्रहोपग्रह-प्रयोग-ग्रह-प्रवेश-ग्रह-प्रयोग - सम्पूर्ण-रोग - समूह-वात्तिक-पैत्तिक-श्लैष्मिक-द्वन्द्वाजादि-नाना–दुष्टरोग-जन्मज–पातकजादि-शान्त्यर्थो सर्व-दुष्ट बाधा-कष्ट-कारक-ग्रहस्य उच्चाटनार्थो शीघ्रारोग्य-लाभार्थो एवं मम अन्य-अभीष्ट-कार्य-सिध्यर्थे जपे विनियोगः।

इसके बाद साधक ऋष्यादि न्यास करें, इसमें जहां जहां पर शरीर के अंगों का वर्णन है, वहां वहां दाहिने हाथ से स्पर्श करते हुए उच्चारण करें –

Scanned by CamScanner

ऋष्यादि न्यास

नारद–ऋषये नमः शिरसि
त्रिष्टुप्छन्दसे नमः मुखे।
बगलामुखी-देवतायै नमः हृदि।
ह्लीं बीजाय नमः गुह्ये।
स्वाहा शक्तयै नमः पादयोः।

इसके बाद साधक निम्न प्रकार से न्यास करे, न्यास का तात्पर्य है कि शरीर के जिन अंगों का वर्णन विवरण है, उसे देखते हुए या स्पर्श करते हुए सम्बन्धित मन्त्र का उच्चारण करें।

न्यास

अंग न्यास	कर न्यास	हृदयादि न्यास
ॐ ह्लीं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
बगलामुखी	तर्जनीभ्यां नमः	शिरसे स्वाहा
सर्व-दुष्टानां	मध्यमाभ्यां नमः	शिखायै वषट
वाचं मुखं स्तम्भय	अनामिकाभ्यां नमः	कवचाय हुं
जिह्वां कीलय कीलय	कनिष्ठिकाभ्यां नमः	नेत्र-त्रयायवौषट
बुद्धि नाशय ह्लीं ॐ स्वाहा	करतल-करपृष्ठाभ्यां नमः	अस्त्राय फट्

इसके बाद दोनों हाथों में पीले पुष्प और पीले अक्षत ले कर यन्त्र पर चढ़ाते हुए निम्न प्रकार से ध्यान करें।

ध्यान

मध्ये सुधाब्धि-मणि-मण्डप-रत्न वेद्यां,
सिंहासनोपरि-गतां परिपीत-वर्णाम्।
पीताम्बराभरण - माल्य - विभूषितांगीं,
देवीं स्मरामि धृत-मुद्गर-वैरि-जिह्वाम्॥
जिह्वाग्रमादाय करेण देवीं वामेन शत्रुन् परि-पीडयन्तिम्।
गदाभिघातेन च दक्षिणेन पीताम्बराढ्यां द्विभुजां नमामि॥

ऐसा करने के बाद साधक "मत्स्येन्द्र नाथ प्रणीत सिद्ध मूंगे की माला" से निम्न मन्त्र की २१ माला मन्त्र जप करें।

मत्स्येन्द्रनाथ सिद्ध मन्त्र

ॐ ह्लीं बगलामुखी सर्व दुष्टानां वाचं मुखं अमुक-साधक आवाहित सिद्ध सिद्धि देहि देहि आकर्षण सम्मोहन प्रदय प्रदय ह्लीं ॐ स्वाहा।

इसके बाद साधक किसी पात्र में या हवन कुण्ड में एक हजार आहुतियां दें, इसमें चन्दन, पीपल, बड़ या पलास की लकड़ी का ही प्रयोग किया जाना चाहिए।

हवन सामग्री में घी, शहद, चीनी, दूध,(दूर्वा) कच्चा धान, कुम्हार के चाक की मिट्टी तथा पीले सरसो का तेल मिला कर इसके द्वारा ही उपरोक्त मन्त्र से हवन करें।

हवन के बाद उसी दिन या दूसरे दिन पांच कुंवारी कन्याएं तथा एक बटुक (जिसकी उम्र ८ वर्ष से ज्यादा न हो और कन्याओं की उम्र १२ वर्ष से ज्यादा न हो) का पूजन कर उन्हें भोजन करावें, भोजन में चने के दाने से बनी हुई मिठाई अवश्य होनी चाहिए, भोजन के बाद इन सभी को यथा शक्ति वस्त्र, दक्षिणा आदि देते हुए उनके पैर छू कर उन्हें प्रणाम करें।

यह एक दिन का प्रयोग है, जो किसी भी मंगलवार या रविवार अथवा बगलामुखी सिद्धि दिवस के अवसर पर सम्पन्न हो सकता है।

वास्तव में ही यह प्रयोग अपने आप में अद्वितीय है, और साधक को इसका अवश्य ही लाभ उठाना चाहिए, साधना के बाद थाली में रखी हुई जो सामग्री तथा तांत्रिक नारियल आदि हैं, उसे नदी या तालाब में विसर्जित कर दें तथा मूंगे की माला को धारण कर ले, ऐसा करने पर यह साधना सिद्ध होती है।

Scanned by CamScanner

दुःख दारिद्रय और भय को समूल मिटाने में सहायक

स्वर्ण रेखा साधना प्रयोग

जीवन में तीन प्रबल शत्रु है, जो पूरे जीवन को बरबाद करने मे सहायक है, इनमें १) दुःख, २) दरिद्रता, और ३) भय जैसी बाधाएं है। यदि ये तीनों ही न हों तो जीवन पूर्ण रूप से सुख सौभाग्यमय बन सकता है।

अगर हकीकत में देखे तो हमारा पूरा जीवन भय ग्रस्त रहता है, कहीं कोई दुर्घटना न हो जाय, कहीं कोई राज्य बाधा न आ जाय कोई अचानक विपत्ती न जाय, किसी बालक की अकाल मृत्यु न हो जांय आदि सामाजिक पारिवारिक और व्यक्तिगत स्तर के कई प्रकार के भय है, जिनसे यह जीवन बराबर आक्रांत बना रहता है।

दूसरी समस्या दरिद्रता है, घर में पांच पचीस हजार होने से ही सम्पन्नता नही आ पाती, आजकल तो लड़की के विवाह में लाख दो लाख खर्च हो जाना मामूली बात हो गई है। हम चाहे कितना ही परिश्रम करें परन्तु जो सम्पन्नता आनी चाहिए वह आ नही पाती, हम अपने पूरे जीवन से जितनी ही अधिक दरिद्रता को समाप्त करने का प्रयास करतेहै, उतनी ही परेशानियां बढ़ती जाती है, और दरिद्रता हमारा पिण्ड नहीं छोड़ती।

और हमारा तीसरा प्रबल शत्रु है, दुःख। हम जीवन भर किसी न किसी वजह से दुःखी बने रहते है, कोई न कोई समस्या, कोई न कोई अड़चन कोई न कोई कठिनाई आती ही रहती है, कभी शारीरिक रोग हो जाता है तो कभी घर से बीमारी समाप्त ही नहीं होती, तो कभी बच्चों की शिक्षा सही ढंग से नहीं हो पाती, तो कभी घर में लड़की बड़ी हो जाती है और उसका विवाह नहीं हो पाता, इस प्रकार पूरे जीवन भर कोई न कोई दुख बना ही रहता है।

और इन तीनों ही बाधाओं से छुटकारा पाना सहज संभव नहीं है, हम जितना ही ज्यादा समस्याओं से मुक्ति चाहते है, उतनी ही ज्यादा अड़चनें और परेशानियां जीवन में आती ही रहती है।

मेरे पिताजी पूरे जीवन भर इन तीनों परेशानियों से झूंझते रहे, जिन्दगी के अंतिम दिनों में उनकी भेंट एक साधु से हो गई थी, जो कई दिनों से श्मशान में आकर टिका था, मेरे पिताजी नित्य उसको खाना पहुंचाने जाते और घटे दो घटे उनके साथ व्यतीत करते, उनकी सेवा करते, यों भी पिताजी को साधुओं की सेवा करने में आनन्द आता था।

मेरे पिताजी की सेवाओं से प्रसन्न हो कर जाते जाते साधु ने मेरे पिताजी को दरिद्रता, दुःख और भय से पूर्णतः मुक्ति देने के लिए चमत्कारिक प्रयोग दिया था, और पिताजी ने वह प्रयोग घर पर आकर किया, जिसे "स्वर्ण रेखा प्रयोग" कहा जाता है।

उसके बाद पिताजी तीस वर्षो तक और जीवित रहें, पूरे सुख आनन्द और मस्ती के साथ जीवन में धन की

कोई कमी नहीं रही, उन्हें तत्कालीन महाराजा ने राज दरबार में बुला कर अपने हाथों से सम्मान प्रदान किया था। वास्तव में ही उनके जीवन का शेष भाग और हमारे आज तक का जीवन अत्यन्त आनन्द सौभाग्य सुख और सम्पन्नता के साथ व्यतीत हो रहा है, इन सब का मूल कारण यह 'स्वर्ण रेखा अप्सरा साधना प्रयोग' ही है।

स्वर्ण रेखा साधना प्रयोग

यह अपने आप में अनूठा प्रयोग है, जिसे मैं समस्त पत्रिका के भाई बहिनों के लिए पूर्ण विधि के साथ स्पष्ट कर रहा हूँ।

किसी भी शुक्रवार की शाम को साधक जो इस प्रयोग को करना चाहे, वह पानी का लोटा भर कर किसी मजार पर या किसी की कब्र पर चला जाय, कब्र प्रत्येक गांव या शहर में होती ही है। वह चाहे समाधि हो, चाहे दरवेश हो, चाहे दरगा हो। उस पर एक हाथ लम्बा एक हाथ चौड़ा हरे रंग का कपड़ा चढ़ा दें। साथ ही साथ हीने के इत्र की शीशी साथ में ले जाय और वह कब्र पर छिड़क दें, यदि संभव हो, तो वह लौटे का जल आस पास छिड़क दें।

उसके बाद घर आवे और स्नान कर के पूजा स्थान में बैठ जाय, तथा एक थाली में कुंकुम से निम्न यंत्र बनावे।

स्वर्ण रेखा यन्त्र

००	० ० ०	००

फिर उस यंत्र पर "स्वर्ण रेखा ताबीज" को रखे, यह ताबीज चमत्कारिक होता है जो कि पहले से ही तैयार किया हुआ हो, और इसके सामने ही एक हकीक का नग रख दे।

और फिर वहीं पर बैठे बैठे हकीक माला से निम्न मंत्र की इक्यावन माला मंत्र जप करते समय तेल का दीपक लगा रहना चाहिए।

स्वर्ण रेखा मंत्र

॥ ॐ ऐं ऐं श्रीं श्रीं ह्रीं ह्रीं फट् ॥

मंत्र जप समाप्ति के बाद वह ताबीज गले में पहिन ले और हकीक नग को दक्षिण दिशा की ओर फेंक दें। जिस माला से मंत्र जप किया था, वह माला और यंत्र तीसरे दिन अर्थात् रविवार की शाम को उस मजार पर जा कर चढ़ा दें।

ऐसा करने पर यह चमत्कारिक साधना पूरी होती है और उसी दिन से घर में चमत्कार होने लगते है। साधक इसके एक महीने के भीतर भीतर जो कुछ अनुभव करेंगे, वह आश्चर्यजनक और अदभुत होगा, उनके जीवन में दुःख दरिद्रता और भय की समाप्ति होगी ही, जीवन में निरन्तर हर दृष्टि से उन्नति होती ही रहेगी। इस प्रयोग को साल में एक बार कर ले तो और ज्यादा अच्छा रहता है।

पत्रिका पाठकों और साधकों के लिए एक सुविधा प्रदान की जाती है, कि वे इस पत्रिका के अंतिम पन्नों में प्रकाशित प्रपत्र को भर कर पत्रिका का एक सदस्य बना कर मुफ्त में 'स्वर्ण रेखा यंत्र' और 'हकीक नग' प्राप्त कर सकते है, इसके लिए किसी प्रकार की धनराशि भेजने की जरूरत नहीं है पर यह गारण्टी है कि यह अपने आपमें अद्भुत आश्चर्यजनक प्रयोग है, आप स्वयं एक बार आजमा कर देखिए, तब आपको भरोसा होगा, कि यह स्वर्ण रेखा प्रयोग किस प्रकार से खुशहाली और आश्चर्यजनक परिपरिवर्तन लाता है।

★

सिद्धाश्रम पंचांग : १८-१-९०

- यदि आप जीवन में पूर्ण सफलता चाहते हैं
- यदि आप पूर्ण पौरूषवान और पुरूष बनना चाहते हैं,
- यदि आप किसी भी प्रकार के नशे से छुटकारा चाहते हैं,
- यदि आप संसार की अद्वितीय सुन्दरी बनना चाहती हैं,
- यदि आप बुढ़ापे में भी रोग रहित प्रबल पुरुष बनना चाहते हैं

तो

मातंगी सिद्धि साधना सम्पन्न करें

दस महाविद्याओं में मातंगी को सर्वाधिक प्रमुखता दी गई है, क्योंकि यह केवल साधना ही नहीं है, अपितु सही अर्थों में पूरे जीवन का कायाकल्प है, इसीलिए सिद्धाश्रम के योगियों ने वर्ष का एक दिन इस अद्वितीय साधना के लिए समर्पित किया है, इसीलिए सिद्धाश्रम के योगियों ने स्वीकार किया है, कि यदि साधक सब काम छोड़ कर केवल इस दिन का उपयोग कर लेता है, तो उसके जीवन में किसी प्रकार की न्यूनता रह ही नहीं सकती।

जिन साधकों ने तांत्रोक्त मातंगी साधना संपन्न की है, उन्होंने विचित्र अनुभव प्राप्त किये है, योगीराज दिव्यानन्दजी ने स्वीकार किया है, कि दस महाविद्याओं में सर्वश्रेष्ठ साधना मातंगी साधना ही है, कुमारी रूपाबेला ७० वर्ष की उम्र में भी अपने आपको पूर्ण क्षमतावान अनुभव करती रही क्योंकि उसने प्रारम्भ में ही दीक्षा लेते समय मातंगी दीक्षा ही प्राप्त की थी। योगीराज अरविन्द इस बात को स्वीकार करते है, कि मातंगी साधना के द्वारा हम जीवन की सारी कमियों को दूर कर जीवन की पूर्णता प्राप्त कर सकते है, वह सब हम अपने अनुभव में ला सकते है, जो कुछ हमारे जीवन में न्यूनता है।

जिन साधकों ने और योगियों ने मातंगी साधना संपन्न की है, उन्हें कई प्रकार के लाभ हुए है, और यदि उन लाभों की गणना की जाय तो एक बहुत बड़ा पोथा तैयार हो जायेगा विश्वामित्र संहिता में मातंगी साधना

के १०८ लाभ स्पष्ट किये है, आज के युग में भी जिन लोगों ने मातंगी साधना सम्पन्न की है, और उन्हें जो लाभ हुए है, वे निम्न प्रकार से है।

यदि आप काया कल्प चाहते है तो

तंत्र रूप से सम्पूर्ण जीवन का काया कल्प मातंगी साधना के द्वारा ही संभव है। हमारे जीवन में कई प्रकार की न्यूनताएं हो सकती है, हमारा कद छोटा हो या हम बहुत अधिक दुबले पतले हो, अथवा जरूरत से ज्यादा मोटे हो गये हो, या हमारा चेहरा सुन्दर नहीं हो अथवा शरीर में पौरूषता का प्रभाव दिखाई नहीं दे रहा हो तो ऐसी स्थिति में एक मात्र मातंगी साधना ही इन सारी समस्याओं को दूर कर जीवन में पूर्णता दे सकती है। इस साधना को सम्पन्न करने पर एक प्रकार से सारे शरीर का काया कल्प सा हो जाता है।

यदि आप व्यसन से मुक्ति चाहते है तो---

हो सकता है, आपको शराब की लत पड़ गई हो और चाहते हुए भी उस लत से अपने आपको मुक्त नहीं कर पा रहे हो, आपका सारा जीवन और शरीर खोखला हो रहा हो अथवा सिगरेट पीने की आदत पड़ी हुई हो और सिगरेट आपका पिण्ड नहीं छोड़ रही हो, अथवा आप नींद की गोलियां लिये बिना भली प्रकार से सो नहीं पा रहे हो, अथवा आपको जुआ खेलने की आदत हो, और आप उस आदत से चाहते हुए भी छुटकारा नहीं पा रहे हो, तो इसके लिए यही एक मात्र ऐसी साधना है, जिससे कि आप इन दुर्गुणों से बच सकते है, जिससे कि आप इन समस्याओं से मुक्ति पा सकते है, जिससे कि आप अपने शरीर को खोखला बनाने से बच सकते है।

और कोई दवा या औषधि जीवन में नहीं है जो कि कि इन व्यसनों से मुक्ति दिला सके, इसके लिए तो यही एक मात्र उपाय है; जिसके द्वारा आप पूर्णतः व्यसन मुक्त हो कर नये सिरे से अपने जीवन को सफलता और उन्नति की ओर अग्रसर कर सकते है।

यदि आप पूर्ण पुरूष बनना चाहते है, तो

हो सकता है बचपन की गलत संगति और बुरी आदतों की वजह से आपको यौवन रोग हो गया हो, अथवा आप पूर्ण रूप से कामवासना में संतुष्टि अनुभव नहीं कर रहे हो, अथवा आप हीन भावना से ग्रस्त हो, अथवा पौरूपता की दृष्टि से किसी प्रकार की न्यूनता अनुभव कर रहे हो, अथवा कोई ऐसा रोग हो गया हो जिसे आप प्रगट नहीं कर सकते तो इसके लिए नीम हकीम के पास जाने से या कामोत्तेजक दवाइयां लेने से कुछ भी नहीं होगा, डाक्टरों के पास जाने से इस समस्या का समाधान नहीं है, जब आप आयु की वजह से या रोग की वजह से स्त्री को सतुष्ट नहीं कर पायेगे, तो अवश्य ही आपका जीवन बेस्वाद, बेमानी और हीन भावना से ग्रस्त हो जायेगा।

और निश्चय ही इस समस्या का समाधान मातंगी साधना ही है, यदि एक बार आप मातंगी साधना संपन्न कर लेते है, तो निश्चय ही इन समस्याओं से आप मुक्ति पा सकेंगे और जीवन का वास्तविक आनन्द अनुभव कर सकेंगे, पूर्ण पौरूषवान बन कर जीवन में पूर्णता प्राप्त कर सकेंगे, जीवन का आनन्द ले सकेंगे, और एक प्रकार से अपने आपमें सक्षमता अनुभव कर सकेंगे।

यदि आप सौन्दर्यमयी बनना चाहती है तो-

यह नहीं हैं, कि यह साधना केवल पुरूषों के लिए ही है अपितु यदि स्त्री साधिका इस साधना को संपन्न करती है, तो वह भी ऊपर लिखे हुए लाभ प्राप्त कर सकती है, एक प्रकार से काया कल्प कर अपने सिर के ऊपर सफेद होते हुए बालों को पुनः काला बना सकती है, चेहरे की झुर्रिया मिटा सकती है, शरीर में आश्चर्यजनक परिवर्तन ला सकती है, और अपने थुल थुल शरीर से छुटकारा पा कर दुबली पतली सुन्दर आकर्षक बन सकती है।

इस साधना के द्वारा शरीर स्थित सभी रोग तो

समाप्त होते ही है और साथ ही साथ इसके द्वारा शरीर मे एक विशेष प्रकार का चुम्बकीय आकर्षण आ जाता है, सारा शरीर एक निश्चित अनुपात में ढ़ल जाता है, आंखों में तीखापन और चेहरे पर गुलाबी रंगत आ जाती है, इस साधना के बाद यदि आप अपने आपको दर्पण में देखती है, तो सहसा विश्वास नहीं होगा कि आप वही स्त्री है, जो काली, मोटी, बेडौल और सफेद बालों वाली दय-नीय थी।

स्त्रियों के लिए यह सौभाग्यदायक साधना है, जब वह अपने शरीर की समस्त कमियों को दूर कर जीवन में पूर्णता और सफलता प्राप्त कर सकती है. वास्तव में ही यह साधना आप लोगों के लिए सौभाग्यदायक है।

सिद्धाश्रम ने प्रत्येक वर्ष माघ कृष्ण तृतीया को 'मातंगी सिद्धि दिवस' माना है, जो कि अंग्रेजी तिथि के अनुसार इस वर्ष १८-१-९० को सम्पन्न हो रही है। इस दिन इस प्रयोग को सम्पन्न किया जा सकता है, यदि स्त्री और पुरूष दोनों चाहे तो यह साधना सम्पन्न कर सकते है, यहां तक कि घर के प्रत्येक सदस्य को यह साधना सम्पन्न करनी, चाहिए क्योंकि जो इस साधना को संपन्न करता है, वही अनुकूलता प्राप्त कर पाता है।

साधना प्रयोग

देखा जाय तो इतनी महत्वपूर्ण और दुर्लभ साधना होते हुए भी यह अत्यन्त सरल और सुगम साधना है, इस साधना को कम पढ़ा लिखा व्यक्ति सम्पन्न कर सकता है, सौभाग्यवती या विधवा स्त्री यह साधना कर सकती है, वृद्ध या बालक रोगी या जवान कोई भी इस साधना को सम्पन्न कर सकता है। वास्तव में ही यदि सिद्धाश्रम के योगियों ने संसार के स्त्री पुरुषों की न्यूनताओं अभावों को अनुभव कर यह दिवस मातंगी साधना के लिए रखा है, तो उन्हें चाहिए कि वे इस दिन का पूरा पूरा उपयोग करे।

साधक प्रातः काल उठकर स्नान कर यदि संध्या वंदन आदि का ज्ञान हो तो संध्या करे, स्त्री साधिका हो तो स्नान कर बालों को खुला पीठ पर छोड़ दें, और फिर अपने स्थान में आसन पर बैठ जाय।

इसके बाद सामने गुरु और गुरू माता का चित्र सामने रखे, उन्हें भगवान शिव और पार्वती मानते हुए, उनकी भली प्रकार से पूजा करे, और प्रार्थना करे, कि हमें या मुझे मातंगी साधना में सफलता प्रदान करे, इसके बाद साधक गुरू मंत्र की पांच माला मंत्र जप करे।

मातंगी महायंत्र

इस साधना का आधार मातंगी हमायंत्र है, "शाक्त प्रमोद" में मातंगी यंत्र के बारे में स्पष्ट करते हुए लिखा है–

प्रणवंच ततो कूँमायांमबीजच कूर्च्चकम्॥
मातंगी ङेयुता चास्त्रं वन्हिजायावधिर्म्मुनः॥

अर्थात् यह यंत्र अपने आपमें विशेष तरीके से संपन्न होना चाहिए यह तांत्रोक मातंगी साधना है, इसीलिए इसका अंकन पूर्ण प्रामाणिकता के साथ होना आवश्यक है।

जब यंत्र का भली प्रकार से अंकन हो जाय तब प्रणव मुद्रा से उसे सिद्ध करना चाहिए, "मायाबीज" से सम्पुटित करना चाहिए, 'कामबीज" से पूर्णता देनी चाहिए और "मनु बीज" से साधक के लिए पूर्ण रूप से सहायक बनाना चाहिए।

उपरोक्त श्लोक का यही अर्थ हैं, और इतनी सब क्रियाएं करने पर ही यह यंत्र पूर्ण से सिद्ध होता है जो कि साधक के लिए सभी दृष्टियों से उपयोगी होता है, ऐसे यंत्र का उपयोग ही करना चाहिये।

परन्तु एक यंत्र से केवल एक साधक ही साधना संपन्न

Scanned by CamScanner

कर सकता है, यदि पति और पत्नी दोनों साधना संपन्न करना चाहते है तो इन दोनों को अलग अलग यंत्र प्राप्त करने चाहिए। साधक कहीं से भी इस प्रकार का महायंत्र सिद्ध करवा कर प्राप्त कर सकता है, अथवा पत्रिका कार्यालय से संबंध स्थापित कर इस प्रकार का महायंत्र समय रहते प्राप्त कर सकता है।

फिर सामने लकड़ी के एक बाजोट पर पीला रेशमी वस्त्र बिछा कर उस पर चावल की ढेरी बना कर इस महायंत्र को पूर्ण श्रद्धा के साथ स्थापित करे, और इसकी संक्षिप्त पूजा करे, संक्षिप्त पूजा में जल, कुंकुम, अक्षत पुष्प और नैवेद्य-समर्पण है।

इसके बाद साधक सामने दीपक लगाये, जो शुद्ध घृत का हो, और यह दीपक उसी स्थान पर चौबीस घण्टे अखण्ड रूप से जलते रहना चाहिए।

इस महायंत्र की पूजा करने के बाद साधक "मातंगी माला" से ही मंत्र जप सम्पन्न करे, इसमें अन्य किसी प्रकार की माला का प्रयोग नहीं किया जा सकता, विविध मनको से युक्त और विविध प्रणवों से सम्पुटित मातंगी माला का ही प्रयोग किया जाता है, जो कि अपने आपमें अद्वितीय होती है और जिसका प्रत्येक मनका पूर्ण रूप से मंत्र सिद्ध होता है।

फिर आसन पर बैठ कर उपरोक्त माला से ग्यारह माला मंत्र जप करे।

मातंगी महामंत्र

ॐ ह्रीं क्लीं हूं मातंग्यै फट् स्वाहा

इस प्रकार इस मंत्र की ग्यारह माला मन्त्र जप करे, और माला को यंत्र के ऊपर पहिना दें, इसके बाद इसी दिन रात्रि को साधक या साधिका पुनः इसी यंत्र के सामने ग्यारह माला मंत्र जप करे, तब यह साधना पूर्ण मानी जाती है। विश्वामित्र संहिता में बताया गया है, कि इसके बाद साधक नित्य उपरोक्त मंत्र की एक माला मंत्र जप करे और पूरे एक महीने तक करे, उसमें यह आवश्यक नहीं है कि अपने घर में ही यह मंत्र जप करे, वह यदि यात्रा में है या किसी अन्य स्थान पर है तो यंत्र को साथ में रखने की आवश्यकता नही है केवल मातंगी माला अपने साथ में रखे और जब भी समय मिले स्नान करके या हाथ पैर धो कर शुद्ध वस्त्र धारण कर इस माला का मंत्र जाप कर ले।

जब एक महीना पूरा हो जाय तब घर में किसी कुंवारी कन्या को बुला कर उसे भोजन करावे और किसी पात्र में छोटी छोटी लकड़ियां जला कर उपरोक्त मंत्र की १०८ आहुतियां दे दे, फिर कुंवारी कन्या का पूजन करे और उसे यथोचित वस्त्र, द्रव्य आदि भेंट स्वरूप दे।

इस प्रकार यह साधना पूर्ण होती हैं और साधक इस एक महीने के भीतर भीतर अनुकूल फल प्राप्त करने में सक्षम हो पाता है, आवश्यकता है इसके प्रति पूर्ण श्रद्धा और विश्वास के साथ साधना और मंत्र जप की।

सिद्धाश्रम पंचांङ्ग : १०-१-९०

सम्पूर्ण जीवन का संतुलन

शाकम्भरी साधना प्रयोग
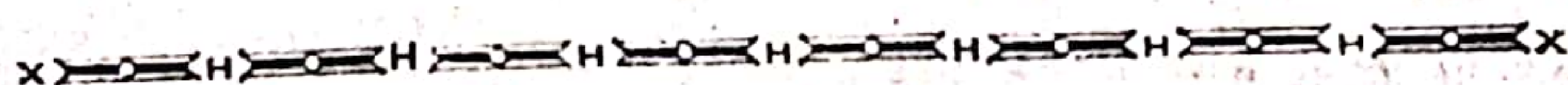
जीवन जीना कोई बहुत महत्वपूर्ण नहीं है, जीवन तो प्रत्येक मनुष्य जी लेता है, ठीक उसी प्रकार से जिस प्रकार से पशु अपना जीवन जी लेते हैं, भूख प्यास नींद, कामवासना, संतान उत्पति और मृत्यु, ये सब क्रिया कलाप तो पशु भी करते है और मनुष्य को भी करने पड़ते है, इन दोनों में कोई विशेष अन्तर नहीं है।

अन्तर इतना ही है, कि मनुष्य चाहे तो अपने जीवन का प्लानिंग कर सकता है, अपने जीवन को संतुलित बनाने के लिए योजना बना सकता है, अपने बिगड़ते हुए जीवन को व्यवस्थित कर सकता है, और अपने जीवन को उन उंचाइयों पर पहुंचा सकता है, जहां मानव का स्वप्न है।

संतुलित जीवन

संतुलित जीवन की कोई बंधी बंधाई परिभाषा नहीं है, शास्त्रों में यह बताया गया है, कि जिससे भी जीवन सुखमय हो सके, जिससे भी जीवन में आनन्द प्राप्त हो सके, और जिससे जीवन में पूर्णता आ सके, वह संतुलित जीवन है। फिर भी योग वशिष्ठ ने संतुलित जीवन के चौदह सूत्र बताये है और जो इन चौदह सूत्रों को परिपूर्ण नहीं कर पाता, उसका जीवन अधूरा और अपूर्ण कहलाता है।

अपूर्ण जीवन अपने आपमें अकाल मृत्यु है, क्योंकि

उसे फिर मल मूत्र भरी जिन्दगी में आना पड़ता है, इस जीवन में यदि व्यक्ति चाहे, तो अपने जीवन को साधना के द्वारा पूर्णता दे सकता है, अपने जीवन में जो न्यूनताएं है, जो कमिया है, उनको परिपूर्ण कर सकता है, और ऐसे ही संतुलित जीवन की कामना हमारे ऋषियों ने की है।

योग वशिष्ठ के अनुसार संतुलित जीवन के निम्न चौदह सूत्र है–

१– सुन्दर रोग रहित स्वस्थ देह।

२– पूर्ण आयु प्राप्ति।

३– मन में प्रसन्नता और आनन्द का अतिरेक।

४– सफल और पूर्ण गृहस्थ जीवन।

५– सौभाग्यशाली और उन्नति करने वाले पुत्र पुत्रियां।

६– आनन्ददायक मनोहारिणी सुन्दर स्वभाव वाली पत्नी।

७– शत्रु रहित सम्पूर्ण जीवन।

८– राज्य में सम्मान और निरन्तर उन्नति।

९– निरन्तर व्यापार वृद्धि और आर्थिक दृष्टि से सम्पन्नता।

१०– तीर्थ यात्राएं व्रत, उद्यापन, मन्दिर निर्माण और सामाजिक कार्य।

११– शुभ एवं श्रेष्ठ कार्यो में व्यय।

१२– वृद्धता का निवारण और चिरकालीन यौवन प्राप्ति।

१३– अपने जीवन में गुरू और इष्ट से साक्षात्कार।

१४– मृत्यु के उपरान्त सद्गति और पूर्ण मोक्ष प्राप्ति।

उपरोक्त एक दो नहीं अपितु पूरे के पूरे चौदह सूत्र यदि जीवन पर लागू होते है, तो वह संतुलित जीवन है। यदि इनमें से कुछ भी न्यूनता है, यदि इनमें से कोई एक बिन्दु भी कमजोर है, तो वह सम्पूर्ण जीवन संतुलित जीवन नहीं कहा जा सकता।

इसीलिए सिद्धाश्रम ने वर्ष में एक दिन मनुष्य के लिए यह अवसर दिया है कि वह पूर्ण संतुलित जीवन प्राप्त करें, उसके जीवन में यदि अब तक कोई भी न्यूनता रही हो, यदि उसके जीवन में किसी भी प्रकार का असंतुलन रहा हो तो इस दिन के प्रयोग से वह असमानता और असंगति निश्चित रूप से दूर हो जाती है और वह थोडे ही दिन में संतुलित जीवन प्राप्त कर लेता है, ऐसे ही प्रयोग को "शाकम्भरी प्रयोग" कहा गया है।

मार्कण्डेय पुराण में ऋषि ने भगवती दुर्गा की साधना करते हुए कहा है, कि तुम सही रूप में शाकम्भरी बन कर मेरे जीवन में आओ, जिससे कि मैं अपने जीवन मे सभी दृष्टियों से पूर्ण संतुलन प्राप्त कर सकूं, मेरा जीवन पुत्र पौत्र धन-धान्य, यश समृद्धि से परिपूर्ण हो और किसी प्रकार की कोई न्यूनता न रहे।

ऋषि ने दुर्गा सप्तशती में जहां शाकम्भरी देवी का वर्णन किया है, वहां स्पष्ट रूप से उल्लेख किया है कि भले ही मैं भगवती दुर्गा के अन्य रूपों का स्मरण न करूं भले ही मुझे आराधना, साधना या पूजन विधि का ज्ञान न हो, भले ही मैं पवित्रता के साथ मंत्र उच्चारण न कर सकूं, परन्तु मेरे जीवन पर भगवती शाकम्भरी सदैव ही पूर्ण कृपा दृष्टि बनाये रखें, जिससे कि मैं इस जीवन में ही धर्म अर्थ काम और मोक्ष इन चारों पुरूषार्थो की प्राप्ति करता हुआ समाज में सम्मान और यश अर्जित करता हुआ पूर्ण सफलता प्राप्त कर सकूं।

वास्तव में ही यह 'शाकम्भरी दिवस' प्रत्येक व्यक्ति के लिए आवश्यक ही नहीं अनिवार्य भी है, क्योंकि जब हम अपने जीवन पर दृष्टि डालते है तो जीवन में कई न्यूनताएं एवं असंगतियां दिखाई देती है, पुत्र का आज्ञाकारी

Scanned by CamScanner

न होना, पति पत्नी में कलह, विविध प्रकार के रोग, मानसिक तनाव, बन्धु बान्धवों मे विरोध, निरन्तर शत्रु भय, अचानक आने वाली राज्य बाधाएं आदि ऐसी सैकड़ों समस्याएं है, जिनसे हमें निरन्तर झूंझना पड़ता है, हमारी शक्ति का बहुत बड़ा हिस्सा इस प्रकार की समस्याओं के निराकरण में और झूंझने में व्यतीत हो जाता है, हम अपने जीवन में जो कुछ नया करना चाहते जो कुछ सृजन करना चाहते है, वह नहीं कर पाते, और एक प्रकार से देखा जाय तो सारा जीवन हाय-तौबा उखाड़ पछाड़, आशा निराशा और विविध प्रकार के रोगों से लड़ने तथा मानसिक संताप में ही व्यतीत हो जाता है।

उनके लिए यह शाकम्भरी दिवस एक वरदान की तरह है, जीवन की एक अमूल्य पूंजी है, जो इस अवसर का उपयोग नहीं कर पाता, वह वर्ष का एक अत्यन्त महत्वपूर्ण अवसर चूक जाता है, वह जीवन के सौभाग्य से वंचित रह जाता है, वह जीवन का एक बहुत बड़ा हिस्सा खो देता है।

इसीलिए सिद्धाश्रम ने और हमारे ऋषियों ने इस महत्वपूर्ण अवसर के दिवस पर शाकम्भरी प्रयोग सिद्ध करने की सलाह दी है, जिससे कि हमारा जीवन संतुलित रह सके, यों तो यह वर्ष मे किसी भी शुक्रवार को संपन्न किया जा सकता है, परन्तु यदि शाकम्भरी जयन्ती के अवसर पर इस प्रयोग को सम्पन्न किया जाय तो निश्चय ही पूर्ण अनुकूलता और सुख प्राप्त होता है, निश्चय ही हमारे जीवन मे जो कमियां हैं, वे दूर हो पाती है, और हम सभी दृष्टियों से सफलता के पथ पर अग्रसर हो सकते है।

यह प्रयोग एक चैलेन्ज है, आज के युग में भी इस साधना का प्रभाव तुरन्त देखा जा सकता है, कई बार तो अनुभव में यह आया है, कि हम ज्यों ही प्रयोग सम्पन्न करते है, त्यों ही जीवन में अनुकूलता प्रारम्भ होने लगती है और जीवन की जो कुछ न्यूनताएं है, जीवन की जो कुछ कमियां है, वे अपने आप ठीक होने लगती है। वास्तव में ही यह प्रयोग मानव जाति के लिए वरदान स्वरूप है।

शाकम्भरी प्रयोग

साधक इस दिन प्रातःकाल उठ कर स्नान कर पीली धोती धारण करे, स्त्री साधिका हो तो पीली साड़ी और पीली कंचुकी पहिने और अपने बालों को धो कर पीठ पर फैला दे। फिर पूजा स्थान में या पवित्र स्थान पर बैठ जाय और सामने एक लकड़ी का बाजोट रख कर उस पर पीला रेशमी वस्त्र बिछा दें, और उस पर अत्यन्त दुर्लभ और महत्वपूर्ण "शाकम्भरी महायंत्र" को स्थापित करे।

शास्त्रों में "शाकम्भरी यंत्र" को बनाने की विशेष विधि बताई है, सामान्य रूप से इस प्रकार के यंत्र का प्रारम्भ पूर्व भाग से प्रारम्भ हो कर दक्षिण, पश्चिम और उत्तर भाग से होता हुआ सम्पन्न हो, साथ ही साथ इसमें जितनी रेखाएं अंकित है, उन रेखाओं को प्रामाणिकता के साथ अंकन करें।

इसके बाद जो शाकम्भरी यंत्र रहस्य को जानता हो, उसे चाहिए कि वह १०८ महादेवियों की स्थापना विशेष विधान के साथ उस यंत्र में स्थापित करें, जिससे कि यह यंत्र सभी दृष्टियों से पूर्ण सौभाग्यशाली बन सके, तत्पश्चात् इसमें मार्कण्डेय ऋषि प्रणीत प्राण प्रतिष्ठा प्रयोग सम्पन्न करे, और यंत्र के सामने पुष्प तथा नैवेद्य समर्पित करे, साथ ही इस यंत्र के पीछे भगवती शाकम्भरी देवी का चित्र सुन्दर फ्रेम में मढ़वा कर स्थापित करे और उसकी संक्षिप्त पूजा करें।

इतना करने के बाद साधक हाथ जोड़ कर निम्न पंक्तियों का २१ बार उच्चारण करे, जो कि अत्यन्त महत्वपूर्ण है।

शाकम्भरी रहस्य

सिद्धिद ऋद्धि दात्री च सदा सिद्धिनिषेवणी
मालता माल्य युक्ता च दुर्गा दुर्गति नाशिनी ।।
बुद्धिदा बुद्धि-दात्री च सदा संकट-नाशिनी ।
जननी लोक-माता च कुलज्ञा कुल-पालिनी ।।
दया रूपा हृदिस्था च पूज्या च कुल पूजनी ।
सदाराध्या सदाध्येया सदा संकट-नाशिनी ।।
माया-रूपा स्वरूपा च भक्तानुग्रह कारिणी ।
कुलार्चिका महा-देवी देवांना सुख दायिनी ।।
सर्व-स्वरूपा सर्वा च सर्वेषां सुखदा मता ।
कल्याणि कल्प-रूपा च कल्याणी सेविता सदा ।।

श्रद्धापूर्वक उपरोक्त पक्तियों का २१ बार पाठ करें इसे "शाकम्भरी रहस्य" बताया गया है जो कि अत्यन्त महत्वपूर्ण है। ये मात्र पंक्तियां नहीं है. अपितु प्रत्येक पंक्ति अपने आप में मंत्र है, प्रत्येक पंक्ति का अपने आपमें प्रभाव है। अतः साधक को चाहिए कि वह इन पंक्तियों का २१ बार उच्चारण करे।

इसके बाद "मरगज माला" से शाकम्भरी मंत्र की ११ माला मंत्र जाप करे। यह शाकम्भरी मंत्र जीवन का श्रेष्ठतम मत्र और प्रभावशाली मंत्र कहा गया है। अनुभव में यह आया है, कि साधक को मंत्र जप समाप्त होते होते अनुकूल फल की उपलब्धि होने लगती है, और वह जीवन में जो भी चाहता है वह प्राप्त हो जाता हैं।

मन्त्र जप से पूर्व साधक हाथ में जल लेकर संकल्प करें कि मैं आज शाकम्भरी अवसर के दिवस पर शाकम्भरी की पूजा करता हुआ, भगवती शाकम्भरी के यंत्र को अपने घर में स्थापित करता हुआ, भगवती शाकम्भरी को अपने शरीर में समाहित करता हुआ, निम्न उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए मंत्र जप सम्पन्न कर रहा हूँ और हाथ में जल लिये लिये ही साधक जो भी इच्छाएं हो, साधक के जीवन की जो भी न्यूनताएं हों, और साधक अपने जीवन में जो भी चाहता हो, उसका उल्लेख कर दें। और फिर वह हाथ में लिया हुआ जल जमीन पर छोड़ दे।

इसके बाद निम्न शाकम्भरी मन्त्र की ११ माला मंत्र जप करे, जैसा कि मैं ऊपर बता चुका हूं कि इसमें 'मरगज माला' का ही प्रयोग किया जाता है, और मंत्र जप के बाद साधक को यह माला गले में धारण करनी चाहिए अथवा जीवन में जब भी बाधा नजर आ रही हो, जब भी कोई परेशानी हो, तब घण्टे दो घण्टे के लिए यदि यह माला गले में धारण कर ली जाती है, तो वह तनाव वह बाधा अपने आप दूर होने लगती है, या उसका कोई न कोई रास्ता प्राप्त हो जाता है।

शाकम्भरी महामंत्र

ॐ ऐं क्लीं शाकम्भरी महादेव्यै क्लीं क्लीं ऐं फट्

मंत्र जप के बाद यदि साधक को स्मरण हो, तो किसी दुर्गा या भगवती की आरती सम्पन्न करे, और जो शाकम्भरी देवी के चित्र के सामने भोग लगाया हुआ है वह भोग परिवार में वितरित कर दें।

इसके बाद किसी थाली या हवन कुण्ड में लकड़ियां जला कर शुद्ध घृत से उपरोक्त मंत्र की १०८ आहुतियां दे। यज्ञ समाप्ति के बाद किसी कुंवारी कन्या को अपने घर पर बुला कर उसे भोजन करावे, और यथोचित वस्त्र दक्षिणा आदि दे।

इस प्रकार यह प्रयोग सम्पन्न होता है, वास्तव में ही देखा जाय तो यह प्रयोग अत्यन्त सरल हैं, मुझे तो आश्चर्य होता है, कि जब हमारे पास इतनी श्रेष्ठ साधना है, तो फिर साधक क्यों परेशान और दुःखी रहते है, तो फिर साधक के जीवन में क्यों न्यूनताएं रहती है। तो फिर साधक क्यों मानसिक तनाव से ग्रस्त रहता हैं ?

मुझे विश्वास है, कि पत्रिका का प्रत्येक पाठक इस प्रयोग को अवश्य ही सम्पन्न कर जीवन में पूर्णता प्राप्त करेगा, यही नहीं अपितु अपने परिचितों, और मित्रों और संबंधियों को भी इस प्रयोग के लिए प्रेरित करेगा।

Scanned by CamScanner

आप

समस्त संसार को सम्मोहित कर सकते हैं

षोडशी साधना के द्वारा

२४-१-९०

षोडसी त्रिपुर सुन्दरी दस महाविद्याओं में से एक प्रमुख महाविद्या है। जो कि वशीकरण और सम्मोहन विद्या की अद्वितीय सिद्धिदात्री है, देवताओं ने षोडसी साधना करके अपने स्वरूप को अद्वितीय सम्मोहित और सौन्दर्ययुक्त बना लिया था।

अगली पंक्तियों में मैं योगी गोपीनन्द जी के द्वारा प्रणीत तांत्रोक्त षोडसी साधना रहस्य स्पष्ट कर रहा हूं, जो कि किसी भी ग्रन्थ में पहली बार प्रकाशित हो रहा है।

सिद्धाश्रम ने माघ कृष्ण १३ को "षोडसी त्रिपुर सुन्दरी सिद्धि दिवस" माना है, जो कि अंग्रेजी तिथि के अनुसार इस वर्ष २४-१-९० को सम्पन्न हो रहा है। यद्यपि षोडसी साधना के कई प्रकार है और सैकड़ों ग्रन्थों में षोडसी साधना की विधियां प्रामाणिकता के साथ प्रस्तुत की है।

परन्तु इस क्षेत्र में अन्यतम आचार्य, योगीराज गोपीनन्द जी है, जिन्होंने सिद्धाश्रम प्रणीत तांत्रोक्त रूप से षोडसी साधना सम्पन्न कर एक नवीन विद्या को विश्व के सामने रखा है।

षोडसी शब्द क्यों ?

भारतवर्ष के अधिकतर साधकों और गृहस्थ शिष्यों ने षोडसी दीक्षा प्राप्त की है, यद्यपि इसके दो भेद है, लघु षोडसी और वृहद् षोडसी परन्तु, वृहद षोडसी के द्वारा जीवन में परिपूर्णता और समृद्धि स्वाभाविक है।

भगवद् पाद शंकराचार्य ने वृहद षोडसी दीक्षा प्राप्त करने के बाद ही अपनी विजय यात्रा प्रारम्भ की थी। उनके गुरू ने स्पष्ट रूप से शंकराचार्य को बताया था, कि यदि जीवन में विजय प्राप्त करनी है, यदि जीवन में सर्वश्रेष्ठ बनना है,

Scanned by CamScanner

और यदि जीवन में करोड़ों लोगों के दिलो पर शासन करना है तो साधक को षोडसी साधना सम्पन्न करनी ही चाहिए। इसके सोलह अक्षर अपने आपमे सोलह मन्त्रों का संयुक्त स्वरूप है. और जो इन सोलह मंत्रों या सोलह अक्षरों के माध्यम से यह साधना सम्पन्न कर लेता है, उसे जीवन में किसी प्रकार की कोई न्यूनता रह ही नहीं सकती।

बृहच्चय संहिता में षोडसी के सोलह अक्षरों का विन्यास पूर्णता के साथ किया है, और प्रत्येक अक्षर की विशेषता को भली प्रकार से स्पष्ट किया हैं कि यदि साधक चाहे तो षोडसी के प्रत्येक अक्षर की साधना कर सकता है, और वह चाहे तो पूरे सोलह अक्षरों से संबंधित मंत्र की साधना सम्पन्न कर सकता है।

योगी राज गोपीनन्दजी ने भी इसके प्रत्येक अक्षर की महत्ता को स्वीकार करते हुए कहा है कि मानव जीवन की पूर्णता के लिए षोडसी साधना जीवन की अद्वितीय साधना है, मैं इसके प्रत्येक अक्षर का विन्यास बृहच्चय संहिता के अनुसार स्पष्ट कर रहा हूँ।

मंत्र विन्यास

१- ह्रीं : शरीर की पुष्टता और तेजस्विता प्राप्ति।

२- क : समस्त संसार में पूर्ण विजय प्राप्त करने की दिव्यता।

३- ए : समस्त शरीर को सुन्दर आकर्षण और सम्मोहन प्राप्ति के लिए।

४- ई : विश्व के प्रत्येक स्त्री पुरुष को पूर्ण रूप से अपने अधीन बनाने और उस पर सम्मोहन करने का प्रतीक।

५- ल : सभी विद्याओं में पूर्ण पारंगतता और कवित्व प्राप्ति के लिए।

६- ह्रीं : सुन्दर एवं यौवनवती स्त्रियों में सभी दृष्टियों से पूर्ण लोकप्रिय होने के लिए।

७- ह : सम्पूर्ण रूप से रोग रहित पूर्ण यौवन प्राप्ति के लिए।

८- स : दीर्घायु और अंतिम क्षण तक वेगवान एवं यौवनवान बने रहने के के लिए।

९- क : संसार के किसी भी स्त्री या पुरुष को तत्क्षण सम्मोहित करने के लिए।

१०- ह : अतुलनीय धन, वैभव और सुख प्राप्ति के लिए।

११- ल : समस्त प्रकार से पूर्ण विजय प्राप्ति के लिए।

१२- ह्रीं : अद्वितीय यश सम्मान कीर्ति एव प्रसिद्धि प्राप्ति का प्रतीक।

१३- स : स्त्री साधिका हो तो हमेशा सोलह वर्ष की यौवनवती बने रहने के लिए और पुरुष साधक हो तो अद्वितीय यौवनवान बनने के लिए।

१४- क : समस्त प्रकार की विद्याओं और साधनाओं में सिद्धि प्राप्ति के लिए।

१५- ल : बलवान, स्वस्थ और समस्त विश्व का, और विश्व के प्रत्येक स्त्री पुरुष का तत्क्षण अपने अनुकूल बनाने के लिए।

१६- ह्रीं : धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की पूर्ण प्राप्ति के लिए।

इस प्रकार हम देखते है, कि षोडसी मंत्र केवल एक मंत्र ही नहीं है, अपितु इसका प्रत्येक अक्षर अपने आपमें मंत्र राज है। यदि इसके प्रत्येक अक्षर की साधना संपन्न की जाय तभी साधक को उससे संबंधित पूर्ण सफलता

और सिद्धि प्राप्त होती है परन्तु यदि कोई साधक पूरे सोलह अक्षरों के साथ साधना सम्पन्न कर लेता है, तो फिर उसके जीवन में किसी प्रकार की कोई न्यूनता रह ही नहीं सकती।

ऐसे साधक की वृद्धता और शारीरिक क्षीणता अपने आप समाप्त हो जाती है वह पूर्ण रूप से यौवनवान बन जाता है और उसके चेहरे पर एक ऐसा तेज आ जाता है, कि वह संसार के किसी भी पुरुष या किसी भी स्त्री को एक ही क्षण में अपने वश में कर सकता है और जीवन भर उसे अपनी आज्ञा के अनुसार संचालित कर सकता है।

कहते है, कि भगवान श्री कृष्ण ने बचपन से ही इस साधना को सम्पन्न कर लिया था, और उनके चेहरे को देखने पर भगवान शिव ने स्वयं कहा था कि 'श्री कृष्ण के चेहरे पर तो षोडशी स्वयं सम्पूर्ण बीज मंत्रों के साथ बैठी हुई है,' इसलिए यदि श्री कृष्ण मनुष्य तो क्या पशु पक्षी जड़ और चेतन को भी अपने वश में कर दे तो अतिशयोक्ति नहीं है।

वास्तव में ही यह साधना सम्पूर्ण रूप से आकर्षण और वशीकरण साधना है, यदि स्त्री साधिका इस साधना को सम्पन्न कर लेती है, तो वह जीवन भर सोलह वर्ष की युवती के समान सुन्दर और आकर्षक बनी रहती है, तथा उसके चेहरे पर एक ऐसा भोलापन एक ऐसा आकर्षण बनता है जो किसी को भी अपनी ओर खींचने में समर्थ हो पाता है।

इसी लिए तो संसार के समस्त योगियों और ऋषियों ने षोडसी साधना को जीवन की अपूर्व और अद्वितीय साधना कहा है। इसके माध्यम से जीवन के समस्त भोग और ऐश्वर्य तो प्राप्त होते ही है, साथ ही साथ वह स्वयं इतना यौवन और आकर्षण सम्मोहन और वेग प्राप्त कर लेता है, कि उसके लिए जीवन में कुछ भी असंभव नहीं होता।

इसीलिए सिद्धाश्रम ने इस महत्वपूर्ण दिवस को सर्वाधिक महत्व दिया है और सिद्धाश्रम का प्रत्येक योगी इस दिन की प्रतीक्षा करता रहता है, जबकि वह पूर्ण विधि विधान के साथ इस साधना को सम्पन्न करे, यही नहीं, अपितु भारत वर्ष के हजारों लाखों साधक इस साधना को सम्पन्न करते है, और अपने क्षेत्र में अद्वितीय रूप से लोकप्रिय हो कर जीवन में पूर्णता प्राप्त करते है।

योगीराज गोपीनन्दजी ने सिद्धाश्रम में प्रचलित षोडसी साधना को कृपा पूर्वक हमें देने का अनुग्रह किया है, जो कि इस षोडसी साधना का श्रेष्ठतम स्वरूप है। इस प्रकार से साधना करने पर निश्चय ही पूर्ण सिद्धि और सफलता प्राप्त होती है। यह साधना का श्रेष्ठतम स्वरूप है।

साधना रहस्य

यह साधना सरल है, और कोई भी साधक पुरुष या स्त्री इस साधना को सम्पन्न कर सकता है, यों तो इस साधना को वर्ष में कभी भी सम्पन्न किया जा सकता है, परन्तु यदि "षोडसी दिवस" के अवसर पर यह साधना सम्पन्न की जाय तो उसे आश्चर्यजनक रूप से सफलता प्राप्त होती है। यह एक दिन की साधना है, जिसे मैं आगे की पंक्तियों में स्पष्ट कर रहा हूं।

इस साधना में "तांत्रोक्त षोडसी महायंत्र" का विशेष महत्व है. अगर यों कहा जाय कि इस साधना का आधार ही यह महायंत्र है, जो कि विशेष रूप से अंकित होता है, इसका प्रत्येक पंक्ति अपने आपमें विशेष प्रभाव युक्त होनी चाहिये। इसकी प्रत्येक पंक्ति अपने आपमें विशेष प्रभाव युक्त होती हैं। यह महायंत्र सिद्धाश्रम नियमों के अनुसार मंत्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त होना चाहिए इसके अलावा इस महायंत्र का चक्रेश्वरी पारायण के अनुसार प्राण प्रतिष्ठा होनी चाहिए, न्यास एवं वाग्देवता प्रयोग से सम्पुटित होना चाहिए. साथ ही साथ इसमें द्वादश कलाओं की स्थापना कर इसे पूर्ण रूप से प्रभावयुक्त बनाना चाहिए।

Scanned by CamScanner

इस यंत्र को बनाना और फिर इसे मंत्र सिद्ध करना अत्यधिक कठिन माना गया है, इसलिए साधक को चाहिए कि वह इस दिवस से बहुत पहले ही इस प्रकार का महायंत्र प्राप्त कर ले, जिससे कि समय रहते इस पर प्रयोग सम्पन्न किया जा सके।

षोडसी सिद्धि दिवस के अवसर पर रात्रि को साधक स्नान कर पीली रेशमी वस्त्र धोती की तरह पहिने और पीले आसन पर पूर्व या उतर दिशा की ओर मुंह कर बैठ जाय। सामने किसी लकड़ी के तख्ते पर पीला रेशमी वस्त्र बिछा कर उस पर इस महायंत्र को पूर्ण श्रद्धा के साथ स्थापित करे, और फिर इसकी संक्षिप्त पूजा करे।

इसके बाद साधक इस महायंत्र के सामने चावल की सोलह ढेरियां बना कर प्रत्येक ढेरी पर एक एक शुद्ध घृत का दीपक प्रज्वलित करे, दीपक का मुंह साधक की ओर होना चाहिए, फिर साधक पूर्ण निष्ठा के साथ 'षोडशी महा माला'' से निम्न का मंत्र का जप रात्रि में सम्पन्न करे। रात्रि का प्रारम्भ सूर्यास्त से दूसरे दिन सूर्योदय तक माना जाता है और इसमें केवल षोडसी माला का ही प्रयोग किया जा सकता हैं जो तांत्रोक्त रूप से सिद्ध और प्राणश्चेतना युक्त हो।

फिर साधक इसी माला से निम्न मंत्र की १०८ माला सम्पन्न करे, यह सारी क्रिया और मंत्र जप एक ही रात्रि में सम्पन्न हो जाता चाहिए।

षोडसी महायंत्र

ह्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ॥

जब मन्त्र जप पूरा हो जाय, तब साधक इस महायंत्र के सामने दूध का बना हुआ प्रसाद चढावे और फिर उस प्रसाद का सेवन वही पर बैठे बैठे स्वयं कर ले, इस प्रसाद को वितरित नहीं किया जा सकता, और न घर के सदस्यों को ही दिया जा सकता है।

इसके बाद मुंह धो कर साधक इस माला को गले में धारण कर ले और यदि भगवती दुर्गा की आरती स्मरण हो तो उस आरती को सम्पन्न करे।

इस प्रकार से यह प्रयोग सम्पन्न होता है, सम्पन्न होने के बाद इस महायंत्र को अपने पूजा स्थान में पूर्ण श्रद्धा और सम्मान के साथ स्थापित करना चाहिए और इस सुन्दर अद्वितीय माला को अपने गले में धारण कर ले, माला का स्पर्श शरीर से होते रहना चाहिए, जिससे कि शरीर चैतन्यतायुक्त और यौवनयुक्त बना रहे।

साधक स्वयं इस साधना को सम्पन्न करने के कुछ ही दिनों में आश्चर्यजनक अन्तर अनुभव करेगे, वह यह अनुभव करेगा कि वास्तव में ही उसके चेहरे में कुछ ऐसा आकर्षण या सम्मोहन आ गया है जिससे कि जो भी उससे मिलता है वह उससे प्रभावित होने लगता है, वह चाहे अधिकारी मंत्री हो, शत्रु हो, पुरूष या कोई भी स्त्री हो।

यथासंभव उस माला को साधक गले में धारण किये रहे, और जब भी उसे अनुकूलता मिले, तो वह उपरोक्त मंत्र की एक माला मंत्र जप कर ले, यद्यपि अनिवार्य नहीं है।

इस प्रकार का महायंत्र आप कहीं से भी प्राप्त कर सकते है, पत्रिका तो हमेशा साधकों का ही हित सम्पादन करती है, अतः बहुत ही कम ऐसे महायंत्र तैयार करवाने की व्यवस्था हो रही है, यदि साधक चाहें तो इस प्रकार का महायंत्र समय रहते प्राप्त कर सकते है।

इस साधना की सफलता और श्रेयता की सूचना समय समय पर पत्रिका कार्यालय को अवश्य दे।

Scanned by CamScanner

वर्तमान जीवन में

सारी समस्याओं का समाधान

महाविद्या साधनाओं से ही है

महाविद्या का तात्पर्य है, संसार की सर्वोच्च शक्ति, महाविद्या का तात्पर्य है साधक के जीवन की समस्याओं का पूर्ण रूप से समाधान करना और महाविद्या साधना का तात्पर्य है कि साधक जो भी इच्छा मन में धारण करके साधना सम्पन्न करे, तो साधना सम्पन्न होते-होते उसकी समस्या का समाधान हो ही जाता है।

वर्तमान आपा-धापी के युग में प्रतिस्पर्धा और जटिलताओं से भरे जीवन में महाविद्या साधना का महत्व अद्वितीय है, विभिन्न कार्यों के लिए विभिन्न महाविद्या साधना का प्रयोग भारतीय महर्षियों ने स्पष्ट किया गया है।

और हम पहली बार प्रामाणिकता के साथ इन महाविद्या साधनाओं की साधना से संबंधित विवेचन स्पष्ट कर रहे हैं।

दस महाविद्याएं संसार की प्रत्येक समस्या की आधारभूत शक्ति हैं, जो कि ब्रह्मा, विष्णु, महेश और अन्य देवताओं से भी ऊंची, अद्वितीय तथा तुरन्त सहायता करने में सहायक हैं, जो साधक पूर्ण मनोयोग से इन दस महाविद्या साधनाओं को या इनमें से कोई भी एक महाविद्या साधना सम्पन्न कर लेता है, तो निश्चय ही उसके संबंधित मनोवांछित कार्य सफल, सिद्ध होते हैं, इन दस महाविद्याओं के नाम हैं— १-काली, २-तारा, ३-छिन्नमस्ता

Scanned by CamScanner

४-धूमावती, ५-बगलामुखी, ६-कमला, ७-त्रिपुर-भैरवी, ८-भुवनेश्वरी, ९-त्रिपुर सुन्दरी और १०-मातंगी।

साधकों के लिए मैं इनमें से प्रत्येक साधना को स्पष्ट कर रहा हूं जिससे कि साधक संबंधित साधना को सिद्ध कर पूर्णता और सफलता प्राप्त कर सकें।

१-काली महाविद्या साधना

यह सर्वप्रमुख उग्र और तुरन्त प्रभाव देने वाली महाविद्या है, जिसे गृहस्थ और योगी भली प्रकार से सम्पन्न कर सकते हैं, इस प्रकार की साधना से किसी प्रकार का अहित नहीं होता अपितु साधक की मनोकामना, साधना पूर्ण होते-होते सम्पन्न हो जाती है।

प्रयोजन

महाकाली को प्रसन्न करने और उसके प्रत्यक्ष दर्शन करने, मुकदमे में पूर्ण रूप से सफलता प्राप्त करने और न्यायाधीश के विचार अपने अनुकूल बनाने, शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने और शत्रुओं को समाप्त करने, राज्य-बाधा तथा अन्य किसी भी प्रकार के भय और आने वाले संकट को दूर करने के लिए तथा गृहस्थ जीवन की बाधाएं, घर का कलह तथा परिवार के किसी सदस्य की बीमारी को जड़-मूल से समाप्त करने में काली साधना अत्यन्त गोपनीय तथा शीघ्र प्रभावदायक है।

समय

इस साधना को किसी भी रविवार से प्रारम्भ किया जा सकता है, साधक चाहे तो रात्रि को अथवा दिन को यह साधना सम्पन्न कर सकता है, यों अष्टमी, चतुर्दशी, अमावस्या अथवा पुष्य नक्षत्र में भी यह साधना प्रारम्भ की जा सकती है।

इस साधना में सवा लाख मंत्र जप सम्पन्न किया जाता है, यह मंत्र जप तीन, पांच, नौ अथवा ग्यारह दिनों में सम्पन्न होना चाहिए, पर इसके लिए यह ध्यान रखना चाहिए कि पहले दिन जिस समय साधना प्रारम्भ करें नित्य उसी समय साधना सम्पन्न होनी चाहिए, इस साधना को पुरुष या स्त्री कोई भी सम्पन्न कर सकता है।

साधना सामग्री

इसमें **"महाकाली यंत्र"** **"महाकाली चित्र"** की विशेष आवश्यकता पड़ती है, साधक को **"काली हकीक माला"** से यह साधना सम्पन्न करनी चाहिए, काले आसन पर दक्षिण दिशा की ओर मुंह कर यह साधना सम्पन्न होती है।

साधक महाकाली यन्त्र को जल से स्नान करा कर फिर उस पर सिन्दूर अर्पित करें और फिर निम्न मन्त्र का जप प्रारम्भ करें, वाक् सिद्धि अर्थात् आप जो कहें वह हो जाय, ऐसी पूर्णता के लिए भी यह साधना सम्पन्न होती है।

काली मन्त्र

।। ॐ ह्रीं ह्रीं हूं हूं क्रीं क्रीं क्रीं दक्षिण
कालिके क्रीं क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं ।।

यदि पूर्ण अनुष्ठान (सवा लाख मन्त्र जप) न करें और नित्य एक माला मंत्र जप करें तब भी साधक को विशेष अनुकूलता और ऊपर लिखी हुई सुविधाएं एवं लाभ प्राप्त होता रहता है।

२- तारा-साधना उपासना

जीवन की श्रेष्ठ और महत्वपूर्ण साधनाओं में तारा महाविद्या अपने आपमें एक साधना उपासना है, जो साधक या व्यक्ति अपने जीवन में कुछ करके दिखाना चाहता है, उन्नति के पथ पर अग्रसर होना चाहता है उसे निश्चय ही अपने जीवन में एक बार तारा साधना सम्पन्न करनी चाहिए।

मूल रूप से बुद्धि, ज्ञान, शक्ति, विजय और जीवन की पूर्णता के लिए तारा साधना को आवश्यक माना गया है, इस साधना से अकाल मृत्यु और दुर्घटना का निराकरण तो होता ही है, साथ ही साथ समस्त प्रकार के भय से मुक्ति मिल जाती है।

इससे भी बड़ी बात यह है, कि अद्वितीय और आकस्मिक आर्थिक उन्नति, व्यापार वृद्धि तथा जीवन की सफलता के लिए इस साधना को आवश्यक माना गया है।

समय

यह साधना किसी भी बुधवार या पुष्य नक्षत्र से प्रारम्भ की जा सकती है, इस साधना में गुलाबी धोती, या गुलाबी वस्त्र धारण करने चाहिए, यह साधना दिन या रात्रि को कभी भी सम्पन्न हो सकती है।

यह साधना सवा लाख मन्त्र जप से सम्पन्न होती है, पर शीघ्र सफलता के लिए यदि तीन दिन में २१० माला जप कर लें, तब भी सफलता मिल जाती है।

साधना सामग्री

इसमें ताम्र पत्र पर अंकित **"तारा यंत्र"** और **"तारा चित्र"** की अनिवार्यता महर्षियों ने मानी है, इसके लिए प्रामाणिक और शुद्ध **"स्फटिक माला"** से ही मंत्र जप होना चाहिए, इस साधना की विशेषता यह है कि कई बार तो साधना सम्पन्न होते-होते अनुकूल फल प्राप्त होने लग जाता है, साधक चाहे तो घी का दीपक लगा सकता है और तारा यंत्र का संक्षिप्त पूजन कर साधना प्रारम्भ कर सकता है।

तारा मंत्र

।। ऐं ओं ह्रीं स्त्रीं हूं फट् ।।

३-षोडशी (त्रिपुर सुन्दरी)

पूरे भारतवर्ष में षोडशी साधना को महत्व दिया जाता है, क्योंकि यह विजय की साधना है, क्योंकि यह

Scanned by CamScanner

पुरुषार्थ, पराक्रम, आनन्द और सिद्धिदायक साधना है, क्योंकि यह स्त्रियों के लिए सौभाग्यदायिनी तथा पुरुषों के लिए पूर्ण पुरुषार्थ प्राप्ति की साधना है, यदि व्यक्तित्व में किसी प्रकार की न्यूनता हो, तो यह साधना अपने आपमें अद्वितीय है, पति-सुख, पुत्र-प्राप्ति, पति की दीर्घायु, गृहस्थ-सुख, और प्रत्येक प्रकार की सिद्धि के लिए इस साधना को महत्व दिया गया है।

समय

इस साधना को दिन या रात्रि में किसी भी दिन से प्रारम्भ किया जा सकता है, फिर भी यदि किसी भी शुक्रवार से यह साधना प्रारम्भ करें, तो ज्यादा उचित रहता है।

प्रयोजन

जीवन के प्रत्येक कार्य की पूर्णता, विवाह, पति-सुख गृहस्थ-सुख, पौरुष-प्राप्ति और बीमारियों से मुक्ति के लिए यह साधना अद्वितीय है।

इस साधना को किसी भी शुक्रवार से प्रारम्भ करना चाहिए, साधक उत्तर की ओर मुंह कर सफेद धोती या सफेद वस्त्र धारण कर साधना प्रारम्भ करें, पूर्ण सफलता के लिए सवा लाख मंत्र जप आवश्यक माना गया है, पर योगियों एवं विद्वानों के अनुसार यदि तीन दिन में २१० माला मंत्र जप कर लें, तब भी सफलता मिल जाती है।

साधना सामग्री

इस साधना में **"षोडशी त्रिपुर सुन्दरी महायंत्र"** की आवश्यकता होती है, साथ ही साथ **"सफेद हकीक माला'** से इस साधना को सम्पन्न किया जाता है, पर इस बात का ध्यान रहे, कि यह सफेद हकीक माला पहले किसी अन्य मंत्र जप में उपयोग नहीं की हुई हो।

त्रिपुर सुन्दरी मंत्र

॥ ह्रीं कएईल ह्रीं हसकलह ह्रीं सकल ह्रीं ॥

४- भुवनेश्वरी

भारत के समस्त साधनात्मक ग्रन्थों में भुवनेश्वरी साधना को अत्यन्त महत्व दिया है. क्यों कि यह सौम्य साधना है और गृहस्थ के लिए आवश्यक ही नहीं अपितु अनिवार्य साधना है।

प्रयोजन

जीवन में साधक जिस प्रकार की पूर्णता चाहता हो, किसी क्षेत्र में जिस ऊंचाई तक पहुँचना चाहता हो और जीवन में पूर्ण आनन्द, सौभाग्य, ऐश्वर्य तथा सम्पन्नता चाहता हो तो उसके लिए भुवनेश्वरी साधना अत्यधिक सहायक है।

यदि साधक अन्य कोई भी साधना न करें पर यदि वह भुवनेश्वरी साधना सम्पन्न कर लेता है तो निश्चय ही उसके सारे मनोरथ सभी दृष्टियों से पूर्ण हो जाते हैं।

समय

यह विशिष्ट साधना किसी भी सोमवार अथवा शुक्रवार को प्रारम्भ की जा सकती है पीले वस्त्र धारण कर प्रातः साधना प्रारम्भ करें, सर्वप्रथम देवी का ध्यान कर सुगन्धित पुष्प अर्पित करें और २१ माला बीज मंत्र का जप करें, तीन, पांच अथवा सात शुक्रवार को साधना सम्पन्न करना ही फलदायक है।

सामग्री

इस साधना हेतु **'भुवनेश्वरी यंत्र'** तथा **'कामेश्वरी माला'** आवश्यक है, पति-पत्नी दोनों एक ही माला से जप सम्पन्न कर सकते हैं।

भुवनेश्वरी मन्त्र

॥ ऐं ह्रीं श्रीं ॥

Scanned by CamScanner

५- छिन्नमस्ता साधना

यह साधना मूल रूप से तांत्रिक साधना है, इसे पूरे विश्वास एवं श्रद्धा के साथ सम्पन्न करना चाहिए, छिन्नमस्ता महाविद्या के नाभि में योनि चक्र स्थित है, तम और रज इसकी विशेष शक्तियां हैं।

प्रयोजन

शत्रुओं की बाधा पूर्ण रूप से समाप्त करने, व्यापार तथा नौकरी में राजकीय बाधा, शत्रु स्तम्भन में यही साधना पूर्ण रूप से प्रभावकारी है।

बार-बार कार्यों की पूर्णता में रुकावट एवं तीव्र वशीकरण हेतु यह साधना तत्काल फल देने वाली मानी गई है, इस साधना को कृष्ण पक्ष में मंगलवार के दिन अर्धरात्रि के पश्चात् सम्पन्न करना चाहिए, अपनी बाधा, समस्या को कुंकुम से लिख कर सामने बाजोट के नीचे रखें, किसी व्यक्ति विशेष पर प्रयोग हेतु उसका चित्र रखें।

साधना सामग्री

इसमें "छिन्नमस्ता यंत्र" तथा "रक्ताभ माला" आवश्यक है, अपने सामने बाजोट पर पीला वस्त्र बिछाकर उस पर सिन्दूर से रंगे चावलों की ढेरी बनाकर उस पर यंत्र को स्थापित करें, तथा आगे एक तिल तथा दूसरी सरसों की ढेरी बनाकर एक-एक सुपारी स्थापित करें।

छिन्नमस्ता मन्त्र

॥ ॐ श्रीं ह्रीं ह्रीं क्लीं ऐं वज्रवैरोचनीये
ह्रीं ह्रीं फट् स्वाहा ॥

साधना का तात्पर्य वैराग्य नहीं, उस मूल शिव तत्व को प्राप्त करना है, जिससे जीवन का मूल स्वरूप पूर्ण हो सके, जीवन इच्छानुसार जी सकें।

६- त्रिपुर भैरवी साधना

पल-पल संकट से गुजर रहे, अपनी समस्याओं से जकड़े हुए, विश्व हो या व्यक्ति, अधिष्ठाता दक्षिण मूर्ति काल भैरव ही हैं, और उनकी शक्ति प्रचण्ड रूप वाली 'त्रिपुर भैरवी' ही है।

प्रयोजन

यह साधना भय का विनाश कर आत्म-विश्वास, आत्म-शक्ति जाग्रत करने की साधना है, मानसिक भय हो अथवा शारीरिक दुर्बलता, भूत-प्रेत बाधा हो अथवा बल, वीर्य, तेज में क्षीणता हो, इस साधना से इस प्रकार के सारे संकट दूर हो जाते हैं।

"रुद्रयामल तंत्र" में कहा गया है, किसी भी प्रकार का प्रबल तांत्रिक प्रयोग अथवा मूठ किसी व्यक्ति पर की गई हो तो त्रिपुर भैरवी साधना करने से वह विपरीत तांत्रिक प्रभाव पूर्ण रूप से समाप्त हो ही जाता है।

समय

इस साधना को किसी भी रविवार को सूर्योदय से पहले ही स्नान आदि से निवृत्त हो कर प्रारम्भ करना चाहिए।

साधना सामग्री

इस साधना के लिए 'भैरव मूर्ति' 'त्रिपुर भैरवी यंत्र' तथा "विजय माला" की विशेष आवश्यकता रहती है इसके अतिरिक्त सिन्दूर, लाल पुष्प तथा फल आदि की भी व्यवस्था पहले से ही कर लेनी चाहिए।

सर्वप्रथम भैरव मूर्ति (सालिग्राम), त्रिपुर भैरवी यंत्र को पहले दूध से फिर जल से स्नान करा कर पोंछ कर, सिन्दूर और लाल पुष्प अर्पित करें, पहले गुरु एवं भैरव का पूजन कर फल अर्पित करें, फिर विजय माला से ११ माला निम्न मंत्र का जप कर पुष्प अर्पित कर इच्छाओं की पूर्ति तथा दुर्बलताओं के नाश की प्रार्थना कर फल के दो टुकड़े कर देवी को भोग लगाकर प्रार्थना कर प्रसाद स्वरूप उसी स्थान पर बैठे हुए ग्रहण करें।

त्रिपुर भैरवी मन्त्र

॥ हसैं हसकरी हसैं ॥

Scanned by CamScanner

७- धूमावती साधना

इस महाविद्या का स्वरूप अत्यन्त तीव्र एवं डरावना है, अत्यन्त क्रोध मुद्रा वाली, तीव्र रुक्ष नेत्र एवं खुले केश का रूप भयप्रद है, इसलिए इसका प्रभाव भी तीव्र एवं अभय स्वरूप है, देवी के इस बाह्य स्वरूप का कारण, तीव्र प्रचण्ड शक्ति के कारण ही है।

प्रयोजन

धन, सम्पत्ति के स्थायित्व हेतु, प्रचण्ड से प्रचण्ड शत्रु को पराजित करने हेतु तथा आपत्ति के निवारण हेतु यह साधना अभीष्ट फलदायक है, इसके अलावा पुत्र लाभ एवं सन्तान स्वास्थ्य रक्षा हेतु भी यही साधना शास्त्र सम्मत है।

'फेत्कारिणी तंत्र' के अनुसार जो साधक भारी विपत्ति में, महारोग में, युद्ध में, शत्रु उच्चाटन में धूमावती साधना करता है तो उसे तत्काल सफलता मिलती ही है मनुष्य स्वरूप शत्रु क्या, अदृश्य यक्ष, राक्षस, सर्प सभी प्रकार के शत्रु इसके स्मरण मात्र से दूर हो जाते हैं।

साधना सामग्री

इस साधना में प्राणश्चेतना मंत्रों से सिद्ध 'धूमावती यंत्र' और 'काली हकीक माला' आवश्यक है।

समय

यह साधना कृष्ण पक्ष के किसी भी गुरुवार को प्रारम्भ की जा सकती है, अर्धरात्रि में नग्न बैठ कर सामने ताम्र पात्र में जल रख कर, यंत्र स्थापित कर गुरु ध्यान एवं शिव पूजन कर ग्यारह माला मंत्र जप कर चारों दिशाओं में जल छिड़कने से सर्वबाधा मुक्ति मिलती है, शत्रु नाश एवं मुकदमे में विजय प्राप्त होती है।

धूमावती मंत्र

॥ धूं धूं धूमावती ठः ठः ॥

८- कमला महाविद्या

कमला महाविद्या लक्ष्मी की अधिष्ठात्री देवी है. यह महाविष्णु की शक्ति एवं जगत् की आधारभूत देवी है, सुवर्ण कान्तिमयी स्वरूप की यह देवी अभय, आत्मविश्वास एवं आधार स्वरूपा देवी मानी गई है जिसकी कृपा बिना जीवन कष्टप्रद, अभावग्रस्त और नर्क समान हो जाता है।

प्रयोजन

कमला साधना दरिद्रता, अभाव को दूर कर पुरुषार्थ को प्रबल करने, अभीष्ट धन को प्राप्त करने, धन-सम्पत्ति, स्वर्ण को स्थायी रूप से, निरन्तर भाव से अपने पास स्थिर रखने की साधना है, जो साधक कमला साधना सिद्ध कर लेता है उसका आत्मविश्वास तो जाग्रत होता ही है,

Scanned by CamScanner

धन प्राप्ति के, व्यापार वृद्धि के, लाभ के, अनायास धन प्राप्ति अर्थात् सट्टा, लाटरी, जुएं इत्यादि में सफलता के नये मार्ग भी खुल जाते हैं, इस साधना में तो जीवन का सांसारिक आनन्द है, फल प्राप्ति है।

दीर्घायु प्राप्त करने, अभीष्ट धन एवं मान-सम्मान प्राप्त करने, राजपद प्राप्त करने की साधना, कमला साधना ही है।

साधना सामग्री

इस साधना में ताम्र पत्र निर्मित **'कमला महालक्ष्मी यंत्र'** तथा **'कमलगट्टा माला'** आवश्यक है।

समय

किसी भी बुधवार को सूर्योदय के पश्चात् स्नान, ध्यान कर, प्रतिदिन पांच माला कमला बीज मंत्र का जप करने से कुछ ही समय में फल प्राप्ति प्रारम्भ हो जाती है, २१ दिन मंत्र जप करने के बाद यंत्र को तिजोरी में अथवा स्वर्णादि आभूषणों के साथ रखना चाहिए, इसके पश्चात् 'श्रीं' मंत्र का जप तो प्रतिदिन करना ही चाहिए।

कमला बीजमंत्र

।। ॐ ऐं श्रीं ह्रीं क्लीं ।।

६- बगलामुखी साधना

श्री बगलामुखी को त्रिशक्ति भी कहा गया है क्योंकि यह काली, कमला और भुवनेश्वरी का संयुक्त स्वरूप है, यह विष्णु पत्नी होते हुए विष्णु की रक्षा करने वाली 'स्तम्भन शक्ति' कही गई है, श्री बगला को ब्रह्मास्त्र भी कहा गया है क्योंकि दुःख, कष्ट, अनिष्ट को दूर करने, शत्रुओं का स्तम्भन, दमन करने, विपरीत व्यक्तियों को अपने अनुरूप वशीकरण करने हेतु इसके समान कोई साधना ही नहीं है।

दस महाविद्या साधना तो शक्ति जाग्रत कर स्वयं शक्तिमान होकर शिवभाव को उदय कर शिवत्व बोध प्राप्त करना है, शक्ति प्राप्त किये बिना तो जीवन का कोई अर्थ ही नहीं है, शक्तिमान को ही सर्वत्र योग्य, आदरणीय माना जाता है।

श्री बगलामुखी तामसी देवी नहीं अपितु पीताम्बरा, रक्षाकारक, अभय सिद्धि देने वाली, उपास्य भाव से साधना की जाने वाली देवी है।

प्रयोजन

प्रबल से प्रबल शत्रु हो, दिन प्रतिदिन अपमान का जीवन हो, उन्नति का कोई मार्ग न मिल रहा हो, कष्ट बढ़ते ही जा रहे हों तो बगलामुखी साधना ही एक मात्र उपाय है, इस साधना से बाहर ही नहीं अपितु घर में भी शान्ति का प्रादुर्भाव होता है, कैसी भी राजकीय समस्या हो, काम अटका हुआ हो पैसे रुके हुए हों, कोई बार-बार विरोध कर रहा हो, इस साधना से तत्काल फल मिलता है।

साधना सामग्री

इस साधना में **'बगलामुखी यंत्र'** तथा **'हरिद्रा माला'** आवश्यक है।

समय

किसी भी मंगलवार की अर्द्धरात्रि को प्रारम्भ की जाने वाली इस साधना को शिवालय में, एकान्त स्थान अथवा गुरु आज्ञा से गुरु सामीप्य में अथवा अपने घर में शिवलिंग स्थापित कर ब्रह्मचर्य का पालन करते हुए साधना करनी चाहिए।

Scanned by CamScanner

पीले रंग का इसमें विशेष महत्व है, साधक पूर्व की ओर मुंह कर पीले वस्त्र धारण कर, सामने बाजोट पर हल्दी से रंगे चावलों की ढेरी बनाकर उस पर बगलामुखी यंत्र स्थापित कर, देवी का ध्यान कर पीले पुष्प अर्पित कर हरिद्रा माला से प्रतिदिन एक माला मन्त्र जप करें।

बगलामुखी मंत्र

।। ॐ ह्लीं बगलामुखी सर्व दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तंभय जिह्वां कीलय बुद्धि नाशय ह्लीं ॐ स्वाहा ।।

१०- मातंगी महाविद्या

मातंगी, वाणी और विलास की देवी है, मातंगी का स्वरूप शान्त, आनन्दमयी, सहज, मन्द मुस्कानयुक्त, अभय कारक है, मातंगी मन को उद्वेलित करने वाली देवी है।

प्रयोजन

जीवन में सरसता, आनन्द, भोग-विलास की प्राप्ति हेतु मातंगी साधना ही उचित है सुयोग्य पति की प्राप्ति हेतु कन्याओं के लिए यह साधना आवश्यक है, गृहस्थ जीवन में पूर्ण सुख, प्रेम, सहजता मातंगी साधना से प्राप्त हो सकती है।

आप जो बोलें वह दूसरों पर पूरा प्रभाव डाले और दूसरे आपकी बात को पूरा महत्व दें, आपकी वाणी में, दृढ़ता, प्रभाव हो, कहे अनुसार कार्य होना, ऐसी सिद्धि मातंगी साधना से ही संभव है।

साधना सामग्री

इस साधना में **'मातंगी यंत्र'** तथा **'सिद्धि माला'** की विशेष आवश्यकता रहती है।

समय

कृष्ण पक्ष में किसी भी गुरुवार को रात्रि में दस बजे के बाद इस साधना को प्रारम्भ करें, सर्वप्रथम यंत्र को सामने स्थापित कर यंत्र पर कुंकुम, केसर, गुलाल एवं श्वेत पुष्प अर्पित करें, धूप (लोबान) पूजा स्थान में जलाएं तथा पांच माला निम्न मंत्र का जप करें।

मातंगी मंत्र

।। ॐ ह्रीं क्लीं हूं मातंग्यै फट् स्वाहा ।।

ये दश महाविद्याएं शिव की शक्ति के स्वरूप हैं इनमें सौम्य स्वरूप भी है और रौद्र स्वरूप भी, रौद्र को अनुभव किये बिना माधुर्य एवं सौम्यता को अनुभव नहीं किया जा सकता है, काली, तारा, छिन्नमस्ता, बगलामुखी, धूमावती शक्ति के कठोर स्वरूप को प्रकट करती हैं वहीं भुवनेश्वरी, षोडशी, त्रिपुर भैरवी, मातंगी, कमला शक्ति के सौम्य स्वरूप हैं।

शक्ति का प्रवाह शिव से साधक की ओर ही है और जो साधक इन दस महाविद्याओं की साधना करता है उसे सिद्धि प्राप्त होने से कोई नहीं रोक सकता है।

नोट-हमने यद्यपि दस महाविद्या साधना में प्रत्येक महाविद्या के बारे में स्पष्ट किया है, लेकिन फिर भी यह बहुत कम है, एक-एक महाविद्या के बारे में ग्रन्थ लिखा जा सकता है।

सुधि-पाठक किसी भी प्रकार की जानकारी, विशेष विवरण जानना चाहें तो अवश्य लिखें और आपको सहयोग देकर हमें प्रसन्नता ही होगी-सं०

Scanned by CamScanner

सन्तान की श्रेष्ठता, आरोग्य, उज्ज्वल भविष्य हेतु

षष्ठी देवी साधना

संतान को भगवान का स्वरूप ही माना गया है, क्योंकि देव कृपा, साधना और कर्मवान व्यक्ति को ही योग्य संतान प्राप्त होती है, संतान योग्य हो कर अपने जीवन में पूर्ण विकास करे, सदा स्वस्थ और निरोगी रहे, इसी कारण षष्ठी देवी की साधना-उपासना की जाती है और आज भी संतान होने पर छठे दिन जिसे **"छठी महोत्सव"** कहा जाता है, मूल रूप से षष्ठी देवी की पूजा ही है।

यह देवी भगवती के मूल प्रकृति के छठे अंश से प्रकट होने के कारण षष्ठी कहलाती है, देवी की पूजा से पुत्रहीन व्यक्ति सुयोग्य पुत्र को, प्रियाहीन प्रिया को, दरिद्र व्यक्ति धन को तथा कर्मशील व्यक्ति अपने कर्मों के श्रेष्ठ फल प्राप्त करता है।

पूजा-विधान

देवी की पूजा शुक्ल और कृष्ण, दोनों पक्षों की षष्ठी तिथि को की जा सकती है, इसमें **'षष्ठीदेवी की मूर्ति' 'सालिग्राम की प्रतिमा** जल कलश आवश्यक है, यह पूजन अपने घर में ही करना चाहिए, प्रातः स्नान कर सर्वप्रथम कार्तिकेय स्वरूप सालिग्राम, जो विष्णु स्वरूप है, का ध्यान कर प्रतिमा पर चन्दन अर्पित करना चाहिए, तत्पश्चात् ताम्र पात्र में षष्ठी देवी की मूर्ति रख कर सुगन्धित जल देवी के ऊपर अर्पित करना चाहिए, और यह ध्यान करना चाहिए— "सुन्दर पुत्र, कल्याण और दया प्रदान करने वाली, जगत् माता चित्र स्वरूपिणी भगवती षष्ठी की मैं उपासना करता हूं", जल अर्पित करने के पश्चात् देवी को पुष्प तथा प्रसाद अर्पित करना चाहिए।

तत्पश्चात् बीज मंत्र द्वारा एक माला उसी स्थान पर बैठकर जप करना चाहिए।

षष्ठी बीज मन्त्र

॥ ॐ ह्रीं षष्ठी देव्यै स्वाहा ॥

इसके पश्चात् अपने मन में जो भी इच्छाएं हैं, उनका ध्यान करते हुए निम्न स्तोत्र का पांच बार पाठ करें–

स्तोत्र

नमो देव्यै महा देव्यै सिद्धयै शान्त्यै नमो नमः।
शुभायै देवसेनायै षष्ठी देव्यै नमो नमः॥
वरदायै पुत्रदायै धनदायै नमो नमः।
सुखदायै मोक्षदायै षष्ठीदेव्यै नमो नमः॥
शक्तेः षष्ठांशरूपायै सिद्धायै च नमो नमः।
मायायै सिद्धयोगिन्यै षष्ठीदेव्यै नमो नमः॥
पारायै पारदायै च षष्ठीदेव्यै नमो नमः।
सारायै सारदायै च पारायै सर्व कर्मणाम्॥
बालाधिष्ठातृदेव्यै च षष्ठीदेव्यै नमो नमः।
कल्याणदायै कल्याण्यै फलदायै च कर्मणाम॥
प्रत्यक्षायै च भक्तानां षष्ठीदेव्यै नमो नमः।
पूज्यायै स्कन्दकान्तायै सर्वेषां सर्व कर्मसु॥
देवरक्षणकारिण्यै षष्ठीदेव्यै नमो नमः।
शुद्धसत्वस्वरूपायै वन्दितायै नृणां सदा॥
हिंसाक्रोधवर्जितायै षष्ठीदेव्यै नमो नमः।
धनं देहि प्रियां देहि पुत्रं देहि सुरेश्वरि॥
धर्मं देहि यशो देहि षष्ठीदेव्यै नमो नमः।
भूमि देहि प्रजां देहि देहि विद्यां सुपूजिते॥
कल्याणं च जयं देहि षष्ठीदेव्यै नमो नमः॥

षष्ठी देवी की उपासना से श्रेष्ठ संतान की प्राप्ति तो होती ही है, इसके अतिरिक्त नियमित पूजा से परिवार के बालकों में रोग, कमजोरी इत्यादि भी नहीं रहती, बालक योग्य, गुणवान तथा श्रेष्ठ मार्ग पर चलने वाले, माता-पिता के आज्ञाकारी होते हैं। ●

Scanned by CamScanner

आदि शक्ति महादुर्गा पूजा-साधना-उपासना

शक्ति का तात्पर्य है प्रकृति, माया अर्थात् जिसने प्रकृति के माया के विशाल भण्डार में से एक अंश को भी अपने अधीन कर लिया, वही शक्ति युक्त है, जहां शक्ति है, वहां दुःख, दुर्वेष्णा, दारिद्रय, दुर्भाग्य, अधर्म, अन्याय, आलस्य नहीं हो सकता, जहां शक्ति है वहां सौभाग्य, सम्पन्नता, शुद्धि, सिद्धि, बुद्धि, विद्या, ज्ञान, ऐश्वर्य, अग्नि, अजेयता है, शक्ति अग्नि तत्व की स्वामिनी है, जो शान्त नहीं रह सकती, इसीलिए उपनिषद में कथन है, कि महादेव ही शक्ति के रूप में ईश्वर हैं, शक्ति के बिना शव रूप हैं, शक्ति बिना किसी भी प्रकार का कार्य सम्पन्न हो ही नहीं सकता, तो फिर इस आधारभूत शक्ति की साधना-उपासना साधक पूर्ण रूप से सम्पन्न क्यों नहीं करता ?

शक्ति सगुण और निर्गुण, दोनों स्वरूपों में है, शक्ति के स्वरूप–तृप्ति, श्रद्धा, भक्ति, तुष्टि, पुष्टि कान्ति, लज्जा तो हैं ही इस महाशक्ति का स्वरूप ही लक्ष्मी, सरस्वती, गायत्री है, जब शक्ति सर्व सम्पन्न रूप में होती है, तो यह अपनी प्रकृति के अनुसार लक्ष्मी कहलाती है, तो चण्डी, काली, तारा, गौरी, छिन्नमस्ता, भुवनेश्वरी, धूमावती, वगलामुखी, मातंगी, भैरवी इत्यादि अपने गुणों के अनुसार नाम धारण करती है ।

शक्ति और साधक

जिस प्रकार अग्नि केवल हवा में नहीं रह सकती, उसी प्रकार शक्ति भी शक्तिमान के बिना अर्थात् साधक के बिना नहीं रह सकती, यह तो उससे जुड़ी हुई एक विशेष शक्ति है, जो केवल जन्म से ही उसके साथ हो, आवश्यक नहीं, अपितु उसकी साधना, इच्छा के अनुरूप प्रवाहित होती है ।

शक्ति, साधक को गतिशील बनाती है, जिस प्रकार अग्नि तीव्र होने पर, ऊपर उठती है, उसी प्रकार साधक के भीतर शक्ति तत्व का विकास होने पर वह अपने जीवन में ऊपर ही उठता जाता है, अपने दुर्भाग्य पर, अपनी दीनता पर, अपने आपको हीन समझने वाले साधक को तो शक्ति कभी प्राप्त हो ही नहीं सकती, जब वह स्वयं उठ खड़ा होता है, साधना करता है तो उसके भीतर छिपी शक्ति का विस्फोट होता है, और यह निश्चित है, कि एक शक्ति दूसरी शक्ति से जुड़ी है, तभी तो शक्ति साधक की पूर्णता करती है, माया और प्रकृति को उसके वश में करती है, यह महाशक्ति ही मायाधीश्वरी है, आद्या नारायणी शक्ति है, नारायण की महालक्ष्मी है, शिव की पार्वती है, गणेश की ऋद्धि-सिद्धि है, सूर्य की ऊषा है, इसके बिना तो सब कुछ अधूरा है ।

आदिशक्ति - महादुर्गा

दुर्गा को ही आदिशक्ति माना गया है, जिससे सभी शक्तियों का प्रादुर्भाव हुआ है और यही परब्रह्म-स्वरूपा, परम तेज स्वरूपा, सर्वेश्वरी, विश्व जननी, मूल प्रकृति, ईश्वरी है, आदि देवी दुर्गा से ही मरुद्गण, गन्धर्व अप्सरा, इन्द्र अग्नि, अश्विनी कुमार की उत्पत्ति हुई, और देवी के तेज स्वरूप में महाकाली के अतिरिक्त, धूमावती इत्यादि का प्रादुर्भाव हुआ, जो सब संसार की शत्रु बाधा को नष्ट करने मे समर्थ हैं ।

Scanned by CamScanner

दुर्गा की साधना सभी प्रकार के साधकों को अवश्य ही करनी चाहिए, जिससे अष्ट सिद्धियां, विजय, लक्ष्मी, दीर्घायु प्राप्त होती है, जिससे किसी भी प्रकार की रोग-बाधा, कष्ट-बाधा दूर हो जाती है, दुर्गा साधना हेतु वर्ष की चारों नवरात्रि के अतिरिक्त किसी भी पक्ष की अष्टमी अथवा मंगलवार को प्रारम्भ की जा सकती है ।

दुर्गा पूजा का मूल आधार **'शक्ति का धातु यन्त्र'** ही है अतः इस दुर्गा यन्त्र को जो चार द्वार, तीन वृत्त, आठ कमल, षट्कोण वाले विदुमय श्रीचक्र से पूर्ण हो, तथा प्राण प्रतिष्ठा युक्त हो, उसे अपने सामने लाल वस्त्र बिछा कर, मध्य में ताम्र पात्र रख कर, चावल का आसन देकर, यन्त्र को घी तथा दूध से शुद्ध कर, फिर जल धारा से स्वच्छ कर, सुगन्धित पुष्प के ऊपर स्थापित करना चाहिए ।

तत्पश्चात् साधक सर्वप्रथम पुष्पांजलि अर्पित कर, देवी का ध्यान करे कि शंख, चक्र, कृपाण, त्रिशूल धारण किये हुए त्रिनेत्री, सिंह पर आरूढ़, अपने तेज से तीनों लोकों को परिपूर्ण करने वाली, जिसके चारों ओर देवता स्थित हैं, और सिद्धि की इच्छा रखने वाले सेवारत हैं, उन जया-दुर्गा का मैं ध्यान करता हूं ।

अपने पूजा स्थान में एक ओर घी का दीपक अवश्य जलाएं फिर नवदुर्गा चक्र स्थापित कर, नौ पुष्प चढ़ाएं और नवपीठ शक्तियों का पूजा निम्न मन्त्रों से सम्पन्न करें—

ॐ प्रभायै नमः ।
ॐ मायायै नमः ।
ॐ जयायै नमः ।
ॐ सूक्ष्मायै नमः ।
ॐ विशुद्धायै नमः ।
ॐ नन्दिन्यै नमः ।
ॐ सुप्रभायै नमः ।
ॐ विजयायै नमः ।
ॐ सर्वसिद्धिदायै नमः ।

इसके पश्चात् सामने जल अर्पित करें, अष्ट सिद्धियों की स्वामिनी दुर्गा के अष्टाक्षर मन्त्र का जप **'स्फटिक माला'** से सम्पन्न करें, प्रथम पूजन के दिन पांच माला मंत्र जप आवश्यक है ।

दुर्गा मन्त्र

॥ ॐ ह्रीं दुं दुर्गायै नमः ॥

दुर्गा साधना का यह प्रयोग पूर्ण हो जाने पर दुर्गा आरती सम्पन्न करें, तथा पुनः एक सुगन्धित पुष्पों की माला अवश्य चढ़ाएं ।

दुर्गा पूजा साधना-आराधना का क्षेत्र एवं महिमा अत्यन्त विशाल है, क्योंकि इसकी साधनाओं के विविध स्वरूपों में शान्तिकारक, पुष्टिकारक तथा लक्ष्मी प्रदायक प्रयोग तो है ही, देवी के विभिन्न मंत्रों का विभिन्न प्रकार की तांत्रिक सामग्रियों सहित स्तम्भन, मोहन, मारण, आकर्षण, वशीकरण एवं उच्चाटन में भी प्रयोग किया जाता है ।

महाकाली, महालक्ष्मी, महासरस्वती

व्यक्ति वही पूर्ण है, जिसमें बल पराक्रम हो, धन-धान्य अर्थात् पैसा हो, ज्ञान एवं वाणी में सिद्ध हो, और इन तीनों गुणों का साक्षात् स्वरूप महाकाली, महालक्ष्मी, महासरस्वती हैं, जो कि देवी के तीन प्रधान स्वरूप हैं ।

नवार्ण मंत्र

॥ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे ॥

इन साधनाओं को सम्पन्न करने से पहले साधक को देवी की मूल दुर्गा साधना को अवश्य ही सम्पन्न करना चाहिए । ●

Scanned by CamScanner

आइये

अदृश्य अशरीरी शक्ति को वश में करें

और

बाधाएं समाप्त करें भूत वर्तमान भविष्य की

और

दास बना दीजिए किसी भी शत्रु को

साधना का तात्पर्य है अपने भीतर सिद्धि, शक्ति उत्पन्न करना, जब बाहरी बाधाएं कम हो जाती हैं अथवा पूर्ण रूप से दूर हो जाती हैं, तभी तो व्यक्ति अपनी उन्नति कर सकता है, अपनी शक्ति का सही उपयोग कर साधारण स्थिति से श्रेष्ठता की ओर बढ़ सकता है।

बाधाएं निमंत्रण दे कर नहीं आती हैं, बाधाएं तो अकस्मात सामने आ जाती हैं, यदि शत्रु प्रबल हो जांय तो किस समय हानि पहुँचा दें इसका अनुमान लगाना कठिन है, हर समय शंका कुशंका से ग्रस्त रहता है, जीवन साधारण बन कर रह जाता है, इसीलिए तो साधना की जाती है जिससे शक्ति का उद्भव हो सके, शक्ति के मार्ग में किसी प्रकार की बाधा, उसके प्रवाह को रोक देती है, और जब यह शक्ति प्रवाह रुक जाता है तो साधक को भीतर ही भीतर नष्ट करने लगता है, इसलिए हर स्थिति में बाधाओं का निराकरण आवश्यक है और जब ये बाधाएं आपकी जानकारी में हों, अर्थात् आपको मालूम हो कि अमुक व्यक्ति अथवा व्यक्तियों का समूह आपके विरुद्ध कार्य कर रहा है, आप अपने मार्ग पर बढ़ रहे हैं, लेकिन इस युग में तो किसी को भी दूसरों की उन्नति सुहाती नहीं है, और वे आपके विरुद्ध षड्यन्त्र करते हैं, कई बार तो आप जिन्हें अपना मित्र तथा शुभचिन्तक समझते हैं, वे ही आपको हानि पहुंचाने में सबसे आगे रहते हैं।

जीवन में अक्सर धोखे होते रहते हैं, लेकिन यदि आप को मालूम है कि अमुक आपका शत्रु है, तो फिर उसका उपाय क्यों नहीं किया जाय, शत्रु की शक्ति को ही क्यों न

Scanned by CamScanner

इतना क्षीण बना दिया जाय कि वह आपके विरुद्ध कार्य ही न कर सके, यही तो साधना है, सिद्धि का मार्ग है, साधना सिद्धि का तात्पर्य यह नहीं है, कि आप घर की छत पर बैठ गये और स्वर्ण वर्षा होने लगे, साधना का तो तात्पर्य है कि आपके कार्य के मार्ग में कठिनाई नहीं हो, आत्म शक्ति, इच्छा शक्ति, कार्य शक्ति, तीव्रतम रूप से जाग्रत हो, जो कार्य करें, वह सहज पूरा हो जाय और आपको अपना लक्ष्य मिल जाय।

अद्भुत तांत्रिक वार्ताली साधना

वार्ताली साधना, शिव साधना का एक प्रमुख भाग है, आदि देव शिव की यह विशेष शक्ति-शत्रु हन्ता, मारण, विद्वेषण, स्तम्भन की शक्ति है, जब शत्रु अत्यन्त प्रबल हो जांय और सामान्य प्रभाव से वश में न आएं तो तंत्र शास्त्र की इस प्रमुख साधना का प्रयोग करना चाहिए।

इस साधना का प्रयोग निम्न कार्यों के लिए भी किया जा सकता है—

- जब व्यापार में निरन्तर हानि हो रही हो और कार्य बहुत प्रयास करने पर भी पूरे नहीं हो रहे हों।
- जब राज्य बाधाएं बढ़ने लगें और किसी भी प्रकार का कार्य हर दृष्टि से रुक जाय, यह बाधा किसी भी प्रकार की हो सकती है।
- जब आपके अधिकारी आपके अनुकूल न हों, और आपको तंग करने का प्रयास करते ही रहें।
- जब किसी कार्य द्वारा मान हानि, अपयश की आशंका हो।
- किसी मुकदमे में हार की संभावना हो, और मुकदमा निपट ही नहीं रहा हो।
- जब मानसिक अशान्ति बढ़ जाय और आगे बढ़ने का कई मार्ग न मिले।
- जब शत्रु प्रत्यक्ष, अप्रत्यक्ष रूप से हानि पहुंचाने लगें।
- घर पर किसी प्रकार का तांत्रिक प्रयोग आपके विरुद्ध किये जाने लगें और घर में हर समय कलह, रोग का वातावरण रहने लगे।
- घर पर भूत-प्रेत-पिशाच का डर हो, अदृश्य आत्माएं अपना प्रकोप दिखाने लगें।

इन सब विपरीत स्थितियों के निराकरण हेतु वार्ताली साधना ऐसी तीव्र, अचूक, शक्ति प्रदायक, तुरन्त फल प्रदायक साधना है, जो प्रबल से प्रबल शत्रु को भी आपके वश में कर देती है।

साधना कब करें ?

यह साधना मूल रूप से तो कृष्ण पक्ष में ही सम्पन्न की जाती है, तथा यह रात्रि साधना है, सर्वोत्तम समय कृष्ण पक्ष की अमावस्या की रात्रि है, साधना के समय किसी प्रकार का विघ्न न हो, आप अपने पूर्ण मनोयोग से फल प्राप्ति की, शक्ति प्राप्ति की इच्छा के साथ ही साधना सम्पन्न करें, साधना में भावना का भी स्थान प्रबल है, दृढ़ भावना, दृढ़ इच्छा शक्ति होनी ही चाहिए।

साधना प्रयोग

इस साधना हेतु कुछ विशेष कार्यों की आवश्यकता है, उसी अनुरूप कार्य होना चाहिए, साधना काल में जो-जो वस्तुएं आवश्यक हैं, उन वस्तुओं की व्यवस्था पहले से ही कर लेनी चाहिए, साधना काल में बीच में उठना एक प्रकार से साधना में विघ्न है।

Scanned by CamScanner

एक समय में एक विशेष कामना, इच्छा पूर्ति, अथवा एक विशेष कार्य हेतु ही साधना सम्पन्न करनी चाहिए, साधना प्रारम्भ करने से पहले जो कार्य पूर्ण करना चाहते हैं, उस कार्य का संकल्प अवश्य लेना चाहिए, भिन्न-भिन्न लक्ष्यों की पूर्ति का एक साथ प्रयास करने से एक भी लक्ष्य पूरा नहीं होता, यह बात हमेशा याद रखनी चाहिए।

साधना सामग्री

इस साधना हेतु आवश्यक सामग्री में—घी, दूध, ताम्र पात्र में जल, रक्त चन्दन, अगरबत्ती, केसर, ज्ञन्दन, सुगन्धित पुष्प, के अतिरिक्त ताम्र पत्र पर अंकित प्राण प्रतिष्ठायुक्त **'वार्ताली पूजन यन्त्र'** तथा **'वार्ताली स्तंभन यंत्र'** आवश्यक है।

इन सभी सामग्रियों का उपयोग कैसे किया जाय, यह आगे स्पष्ट किया जा रहा है।

वार्ताली साधना प्रयोग

अमावस्या की रात्रि को प्रथम प्रहर के पश्चात् अर्थात् १० बजे के बाद स्नान कर शुद्ध वस्त्र धारण कर ऊनी आसन पर स्थान ग्रहण करें, एक थाली में सभी सामग्री अपने पास रख दें।

सर्व प्रथम अपने सामने लकड़ी के पीढ़े पर, लाल वस्त्र बिछाकर घी का दीपक जला कर गुरु पूजन कर, साधना की मानसिक आज्ञा प्राप्त कर, अपने इष्ट देव का पूजन करें तथा शिव का पूजन प्रारम्भ करें, जब यह कार्य पूर्ण हो जाय तो अपने मन को स्थिर कर साधना की ओर अग्रसर हों।

सर्वप्रथम अपने सामने वार्ताली पूजन यन्त्र को घी से एक अलग थाली में अच्छी तरह लेप कर उसके उपरान्त दूध और जल की धारा से धोकर स्वच्छ जल से पोंछ कर पीठ के मध्य में चावलों की ढेरी बना कर उस पर पुष्प की एक पंखुड़ी रखें उसके पश्चात् निम्न मंत्र बोलते हुए यन्त्र को उस पंखुड़ी पर स्थापित करें—

ॐ ग्लों वार्तालिय कैलाशाचल मध्य स्थितितायै नमः।

तत्पश्चात् यन्त्र पर रक्त चन्दन, हल्दी, अगर, केसर, चढ़ाएं।

वार्ताली स्तम्भन यन्त्र
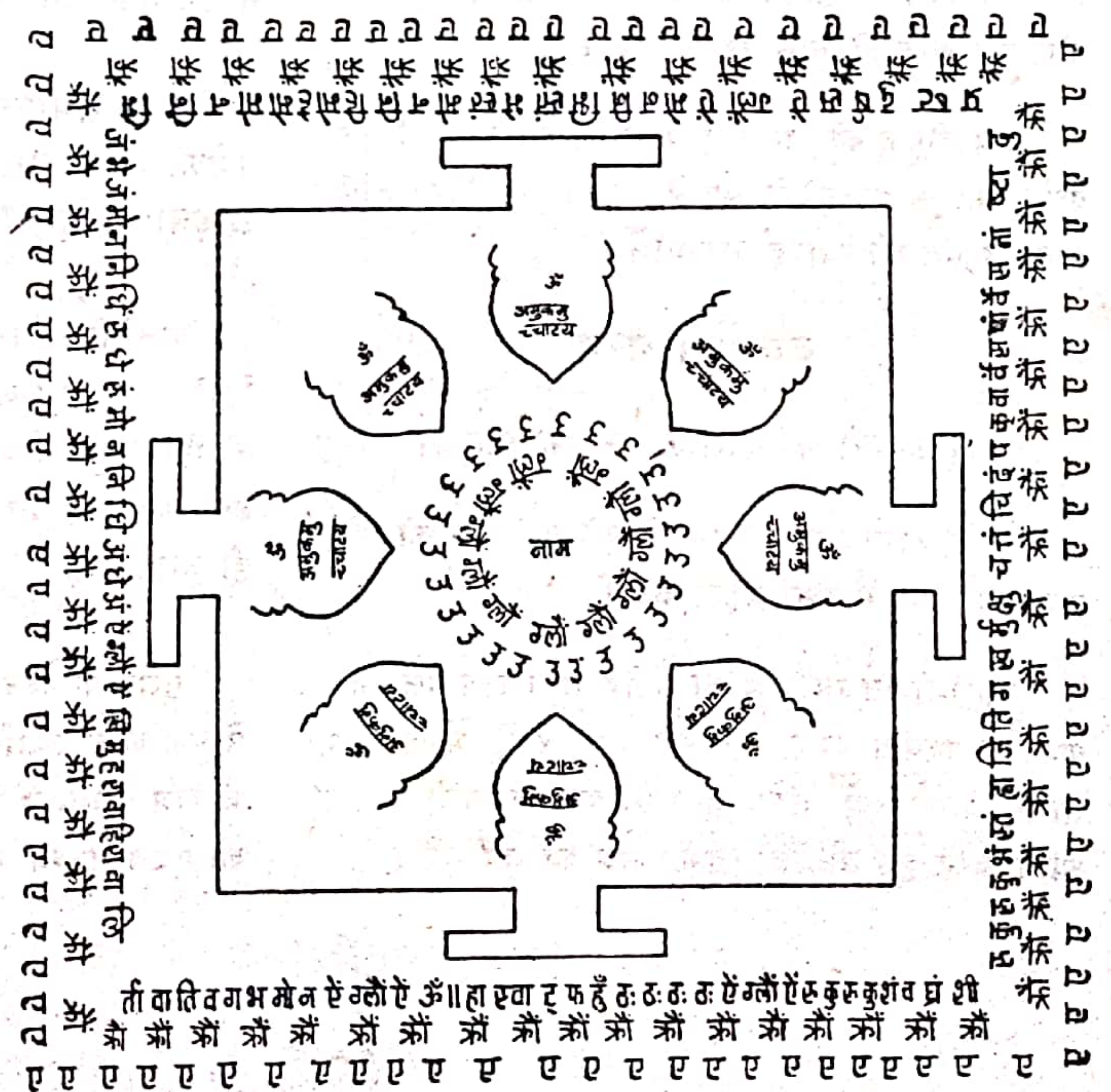
अब वार्ताली देवी का ध्यान करें— रक्तवर्णीय, त्रिनेत्री, सिंह पर स्थित, शत्रुओं में प्रबल भय देने वाली, साधक के हृदय में स्थित होने वाली, मुण्ड माला धारण किये हुए वार्ताली देवी का मैं ध्यान करता हूं, मेरी कामना पूर्ण करें।

इसके पश्चात् क्रमानुसार सामने नौ पीठ शक्तियों— जया, विजया, जिता, अपराजिता, नित्या, विलासिनी, दोग्धी, अघोरी तथा मंगला की स्थापना पूजा करें।

अब स्तंभन संबंधी साधना हेतु एक कागज पर हल्दी से चित्र में दिया हुआ वार्ताली स्तंभन यन्त्र बना कर अपने बायीं ओर रखें और उसके आगे तेल का दीपक जलाएं, इसके बाद सिन्दूर द्वारा पूजन करें तथा अपने दोनों हाथों में पुष्प लेकर चढ़ाएं तथा दाएं हाथ में जल ले कर संकल्प कर अपनी जो विशेष इच्छा हो वह जोर से बोल कर जल को भूमि पर छोड़ दें।

अब दीपक को अपने हाथ में ले कर वार्ताली पूजन यंत्र के सामने आरती के रूप में घुमाते हुए निम्नलिखित वार्ताली मंत्र को ग्यारह बार बोलें।

वार्ताली मन्त्र

॥ ॐ क्रीं क्रीं वार्ताली क्रीं क्रीं फट् ॥

इसके पश्चात् सामने पात्र में रखे हुए जल को थोड़ा चरणामृत रूप में स्वयं ग्रहण करें।

वार्ताली स्तंभन यन्त्र की गणेश तथा क्षेत्रपाल, भैरव पूजन के पश्चात् गणेश के सामने प्रसाद रखें, भैरव के भी सामने प्रसाद रखें तथा हाथ धो कर वार्ताली देवी का ध्यान करते हुए वार्ताली स्तंभन मंत्र का जप करें।

वार्ताली कार्य सिद्धि मंत्र

॥ ॐ क्रों वाराह्य वार्तालीय नमः ॥

इस मन्त्र की ग्यारह माला जप उसी स्थान पर बैठ कर करना है. कामना पूर्ति हेतु पुष्प, तिल, तथा सुरा अर्पित करनी चाहिए।

इस साधना में कुछ विशेष बातें हैं—शत्रु स्तम्भन कार्य हेतु मन्त्र जप **'हरिद्रा माला'** से करना चहिए।

शुभ कार्य हेतु **'स्फटिक माला'** से मंत्र जप करना चाहिए।

किसी कार्य की विजय सिद्धि हेतु **'रुद्राक्ष माला'** से मंत्र जप करना चाहिए।

पूजन समाप्त होने पर पुनः क्रमशः गुरु, शिव, गणेश, भैरव, वार्ताली का ध्यान कर अपना स्थान छोड़ना चाहिए।

वार्ताली स्तंभन यन्त्र लिखे कागज के नीचे अपने विरोधी का नाम अवश्य लिखा होना चाहिए, इस कागज को एक मिट्टी के पात्र में गुग्गल, तिल, सरसों तथा पुष्प डाल कर जला देने से प्रबल से प्रबल शत्रु का भी नाश हो जाता है।

पूजन के पश्चात् वार्ताली यन्त्र को अपने पूजा स्थान में एक ओर स्थापित कर दें तथा जब भी किसी प्रकार की शत्रु बाधा, अथवा कोई अन्य बाधा आये तो अमावस्या को पूजन अवश्य करना चाहिए। ●

दुर्गा को प्रत्यक्ष किया जा सकता है इन तांत्रिक क्रियाओं से

भगवती दुर्गा की पूजा-आराधना के संबंध में जितने ग्रन्थों की रचना की गई है, संभवतया किसी अन्य के संबंध में इतनी अधिक रचना नहीं है इसका कारण भगवती दुर्गा की आधारभूत शक्ति जिसमें सम्पूर्ण विश्व की सगुण-निर्गुण शक्तियों का स्वरूप है। अलग-अलग स्वरूपों में अलग-अलग कार्य हैं, भगवती दुर्गा ही जगत पालक, माया-धीश्वरी है तथा संहारकारिणी आद्या-शक्ति भी है।

जीवन में सृजन और विखण्डन दोनों ही प्रक्रियाएं साथ-साथ चलती रहती हैं, इन दोनों के बिना जीवन प्रक्रिया चल ही नहीं सकती, शुद्ध भावों से शक्तियों का विकास साधक के लिए महत्वपूर्ण है, वहीं कष्ट, पीड़ा, शोक, और दुःखों का नाश भी आवश्यक है, इसीलिए मंत्र ज्ञाता हो चाहे तंत्र ज्ञाता, साधना किसी भी स्वरूप में साधक करें, उसे देवी भगवती दुर्गा की साधना के बिना सिद्धि प्राप्त नहीं हो सकती।

भगवती दुर्गा ही मूल प्रकृति, ईश्वरी, परब्रह्म स्वरूपा, परमतेज स्वरूपा, सर्वेश्वरी, सर्वाधार है।

देवी और इष्ट

साधना में इष्ट का बड़ा महत्व है, साधक जानते हैं कि वह अपने इष्ट स्वरूप को जिसे भी मानें, उसका अत्यन्त प्रबल होना आवश्यक है, तभी वह अपने कार्यों में सफल हो सकता है, अपने व्यक्तित्व को, तेज को प्रबल बना सकता है, इष्ट बिना ज्ञान नहीं, शक्ति नहीं, पूर्णता नहीं।

ऋग्वेद में लिखा है, कि भगवती दुर्गा ही सभी उपास्य देवों में प्रधान है, देवी शक्ति से ही ब्रह्मा, विष्णु तथा रुद्र उत्पन्न हुए, इन्द्र, अग्नि तथा स्वास्थ्य के देव अश्विनी कुमारों को धारण किये हुए हैं, यह परम-शक्ति देवी तो—

"निःशेषदेवगणशक्तिसमूहमूर्त्या"

अर्थात् इस जगत में देवी के अतिरिक्त दूसरा कौन है, सब कुछ है जो भगवती दुर्गा का ही स्वरूप है, प्रकृति, माया, शक्ति सब देवी के पर्यायवाची हैं, इसीलिए जब

तक इष्ट स्वरूप दुर्गा प्रबल नहीं है, तो साधक की सब साधनाएं अधूरी हैं, यदि तत्काल कोई साधना सफल भी हो जाय तो जब तक इष्ट स्वरूप भगवती दुर्गा सिद्ध न हो जाय तब तक वह साधना-फल स्थायी नहीं रह सकता, क्योंकि साधना का आधार-शक्ति और शक्ति की आधार-भूत देवी भगवती जगदम्बा ही है।

साधक अलग-अलग नामों से अलग-अलग स्वरूप से पूजा करता है, पूजा लक्ष्मी स्वरूप में करें अथवा ज्ञान स्वरूप सरस्वती स्वरूप में करें, चण्डी, काली स्वरूप में करें, मूल स्वरूप तो दुर्गा साधना ही है।

यह सब तो देवी के असंख्य स्वरूप हैं, साधक अपनी समझ के अनुसार साधना करता है और जब वह इस परम-तत्व तक पहुँच जाता है, तो उसे सिद्धि प्राप्त होती ही है, अलग-अलग कार्यों हेतु अलग-अलग स्वरूपों में पूजा का शास्त्रोक्त विधान है, उसी रीति के अनुसार पूजा साधना सम्पन्न की जा सकती है।

मूल प्रश्न यह है कि क्या भगवती दुर्गा को प्रत्यक्ष रूप से सिद्ध किया जा सकता है जिससे साधक को वह वरदहस्त प्राप्त हो जाय, अंधेरे में छलांग लगाने से कुछ लाभ नहीं है, साधक के लिए आवश्यक है, कि श्री गुरु-कृपा का फल प्राप्त कर उनके बताये गये निर्देशों के अनुसार साधना कार्य सम्पन्न करें, तो उसे सहज, सरल साधना मार्ग प्राप्त होता है।

१- सर्व सिद्धि प्रदायक प्रत्यक्ष दुर्गा सिद्धि प्रयोग

यह प्रयोग किसी भी दिन सम्पन्न किया जा सकता है, दुर्गा पूजा के लिए किसी भी प्रकार के मुहूर्त की आवश्यकता नहीं रहती, देवी रहस्य तन्त्र के अनुसार-दुर्गा पूजा में न तो कोई विशेष विधान है, न विघ्न है और न कठिन आचार।

प्रातः सूर्योदय से पहले उठ कर साधक स्नान कर शुद्ध पीले वस्त्र धारण कर अपने पूजा स्थान को स्वच्छ करें, जल से धोकर स्थान शुद्धि और भूमि शुद्धि कर अपना आसन बिछाएं, आसन पर बैठ कर ध्यान करें, अपने चित्त को एकाग्र करें, कार्य सिद्धि साधना के संबंध में पूरे विश्वास के आधार पर कार्य करते हुए, संकल्प लें।

अपने सामने साधक सिंह पर स्थित देवी का एक बड़ा चित्र (तस्वीर) स्थापित करें, और एक ओर घी का दीपक तथा दूसरी ओर धूप अगरबत्ती इत्यादि जलाएं।

अब बांएं हाथ में जल लेकर दाएं हाथ से अपने मुख, शरीर इत्यादि पर छिड़कते हुए निम्न मन्त्रों के उच्चारण के साथ तत्व-न्यास सम्पन्न करते हुए, थोड़ा जल दोनों आंखों में लगा कर भूमि पर छोड़ दें।

ॐ आत्म तत्वाय नमः।
ॐ ह्रीं विद्या तत्वाय नमः।
ॐ दुं शिव तत्वाय नमः।
ॐ गुं गुरु तत्वाय नमः।
ॐ ह्रीं शक्ति तत्वाय नमः।
ॐ श्रीं शिव शक्ति तत्वाय नमः।

इस साधना में शुद्ध मंत्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त **"दुर्गा यंत्र"** का महत्व विशेष रूप से है, सामने बाजोट (चौकी) पर पीला वस्त्र बिछा कर उस पर पुष्प की पंखुड़ियों का आसन बनाएं, तथा दुर्गा यंत्र को दुग्ध धारा से फिर जल धारा से धो कर, साफ कपड़े से पोंछ कर—

ॐ ह्रीं वज्रनख दंष्ट्रायुधाय महासिंहाय फट्।

इस मंत्र का उच्चारण करते हुए दुर्गा यंत्र को पुष्प के आसन पर स्थापित कर अबीर, गुलाल, कुंकुम, केसर, मौली, सिन्दूर अर्पित करें, इसके पश्चात् एक पुष्प-माला देवी के चित्र पर चढ़ाएं तथा दूसरी माला इस देवी यंत्र के सामने रख दें।

Scanned by CamScanner

अब दुर्गा की शक्तियों का पूजन कार्य सम्पन्न करें, सामने दुर्गा यन्त्र के आगे 'नौ गोमती चक्र' स्थापित करें, प्रत्येक चक्र के नीचे पुष्प की एक-एक पंखुड़ी रखें, तथा चावल को कुंकुम से रंग कर मंत्र जप करते हुए इन नौ शक्तियों का पूजन सम्पन्न करें।

ॐ प्रभायै नमः। ॐ मायायै नमः।
ॐ जयायै नमः। ॐ सूक्ष्मायै नमः।
ॐ विशुद्धायै नमः। ॐ नन्दिन्यै नमः।
ॐ सुप्रभायै नमः। ॐ विजयायै नमः।
ॐ सर्वसिद्धिदायै नमः।

अब गणेश पूजन कर देवी का पूजन सम्पन्न करें, अपने हाथ में धूप लेकर २१ बार धूप करें, फिर अपने स्थान पर पालथी मार कर बैठें, और दुर्गा अष्टाक्षर मंत्र का जप प्रारम्भ करें।

प्रत्यक्ष दुर्गा सिद्धि मंत्र

॥ ॐ ह्रीं दुं दुर्गायै नमः ॥

शारदा तिलक में लिखा है, कि शान्त हृदय से चित्त में शान्ति तथा एकाग्रता रखते हुए, साधक इस मन्त्र की ११ माला का जप उसी स्थान पर बैठ कर करें तो उसे साक्षात् स्वरूप में प्रगट हो कर अष्ट-सिद्धि वरदान देती है, साधक को जो वर प्राप्त होता है, उससे साधक भैरव के समान हो जाता है, उसे अभय का वह स्वरूप प्राप्त हो जाता है कि उसके मन से भय, डर पूर्ण रूप से समाप्त हो जाता है, शरीर की व्याधियों का निवारण तथा दीर्घायु प्राप्ति के लिए भी यही विधान सर्वश्रेष्ठ है।

पूजा के पश्चात् साधक देवी की आरती सम्पन्न कर तथा ताम्र पात्र में रखे जल को आचमनी में ले कर ग्रहण करें तो उसके भीतर शक्ति का प्रादुर्भाव होता है।

२- चाथर्वणाय संहिता चण्डिका दुर्गा सिद्धि प्रयोग

दुर्गा का यह स्वरूप विशेष प्रबल तथा ज्वलनशील दाहक प्रयोग माना गया है, जो साधक राज्य-बाधा, शत्रु-बाधा, मुकदमे इत्यादि से विशेष दुःखी हो, चिन्ताओं का भार बढ़ता ही जा रहा हो, तो उसे इस स्वरूप की साधना अवश्य करनी चाहिए।

देवी दुर्गा कल्याणी स्वरूप है, जिनके तीव्र प्रभाव से दुष्टात्माओं का नाश हो जाता है और प्रबल से प्रबल शत्रु भी वश में होकर दास स्वरूप बन जाता है।

यह प्रयोग एक तांत्रिक प्रयोग है और रात्रि को ही सम्पन्न किया जाता है, इसके लिए कुछ विशेष सामग्री तथा विशेष अनुष्ठान की आवश्यकता रहती है, सामग्री सहित सभी व्यवस्था पहले से कर लेनी चाहिए, एक बार साधना प्रारम्भ करने के पश्चात् बीच में उठने का विधान वर्जित है।

रात्रि साधना स्वरूप

साधना सायंकाल के पश्चात् स्नान कर शुद्ध लाल वस्त्र धारण करें, अपने पूजा स्थान में अथवा एकान्त कमरे में यह प्रयोग सम्पन्न कर सकते हैं, आसन ऊनी कम्बल अथवा मृगछाला हो सकता है, अपने सामने देवी का विकराल स्वरूप का चित्र स्थापित कर सिन्दूर से चित्र पर तिलक कर स्वयं भी तिलक लगाएं और आसन ग्रहण करें।

अपने सामने **"चण्डी यन्त्र"** शुद्ध रूप से धो कर घी लगा कर पोंछ कर काले तिलों की ढेरी पर स्थापित करें, एक ओर एक कलश स्थापित कर उस पर नारियल रखें, सर्वप्रथम कलश पूजन सम्पन्न कर भैरव का ध्यान कर मौली बांध कर एक सुपारी भैरव स्वरूप स्थापित करें, अब एक ओर धूप तथा दूसरी ओर दीपक जला कर एक कटोरे में देवी के सामने खीर का प्रसाद रखें, अब इस साधना में साधक वीर मुद्रा में बैठ कर पूजन कार्य प्रारम्भ करें, साधक का मुंह दक्षिण दिशा की ओर होना चाहिए, सर्वप्रथम देवी से प्रार्थना कर पूजन की आज्ञा प्राप्त कर ध्यान करें।

ध्यान मन्त्र

ॐ ह्लः ॐ सौं ॐ ह्लौं ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं श्रीजयजय चण्डिका चामुण्डे चण्डिके मम सकल मनोरथं देहि सर्वोपद्रवं निवारय निवारय नमो नमः॥

अपने सामने यन्त्र के चारों ओर **'२१ तांत्रोक्त फल'** एक वृत्त में स्थापित करें, ऊपर लिखे ध्यान मन्त्र को बोलते हुए काले तिल और सरसों सिन्दूर, मिलाकर प्रत्येक बार ध्यान मन्त्र का जप कर एक तांत्रोक्त फल पर चढ़ाएं, इस प्रकार २१ तांत्रोक्त फलों पर यह प्रयोग सम्पन्न करना है, ये २१ तांत्रोक्त फल जीवन की २१ बाधाओं के स्वरूप हैं, जब यह प्रयोग पूर्ण हो जाय तो अपने ललाट पर चंदन से त्रिपुण्ड तिलक बनाएं तथा चण्डिका महा मन्त्र का जप कार्य प्रारम्भ करें।

चण्डी महा मन्त्र

॥ ॐ ऐं ह्रीं क्लीं फट् ॥

इस प्रकार ११ माला जप कर पूजन कार्य सम्पन्न करें तथा यह मन्त्र जप **मौन** रूप से नहीं अपितु जोर-जोर से बोल कर सम्पन्न करना चाहिए, इस मन्त्र जप के मध्य में ही देवी के चण्डी स्वरूप के दर्शन होते हैं, साधक उसी मुद्रा में जप कार्य सम्पन्न करता रहे।

जब साधना पूर्ण हो जाय तो नमस्कार इत्यादि सम्पन्न कर आरती उतार कर, सामने रखे हुए खीर के प्रसाद को ग्रहण करना चाहिए।

तांत्रोक्त फल, सरसों तथा तिल को दूसरे दिन किसी एकान्त स्थान पर जाकर गाड़ देना चाहिए, यह सर्व दुःख नाशक चण्डी सिद्धि प्रयोग सम्पन्न करने से भय, बाधा का पूर्ण रूप से नाश हो जाता है।

इस मास के व्रत, पर्व, त्यौहार—(मार्च-९१)

५- रंग पंचमी
७- शीतला सप्तमी
१२- पाप मोचनी एकादशी
१७- नवरात्रि प्रारम्भ
२०- श्री पंचमी
२३- दुर्गाष्टमी
२४- राम नवमी
२६- कामदा एकादशी
२८- महावीर जयंती
२९- पूर्णिमा व्रत
३०- हनुमान जयंती

Scanned by CamScanner

★ क्या बाधाओं का पूर्व ज्ञान हो सकता है ?

★ क्या आने वाली बाधाओं को शान्त किया जा सकता है ?

हां ! यह संभव है

वरूथिनी सिद्धि प्रयोग से

यह कहा जाता है कि जीवन है, तो उसके साथ सुख-दु:ख चलते ही रहते हैं, कभी सुख आयेगा तो कभी दु:ख, यह दृष्टिकोण एक अत्यन्त ही निराशावादी दृष्टिकोण है, थोड़ी देर के लिए यह मान लें कि जीवन में अनचाहे दु:ख पीड़ाएं और कुछ आकस्मिक घटनाएं भी घट सकती हैं, तो क्या ऐसा कोई उपाय नहीं, जिससे जीवन की दु:खदायी घटनाओं की जानकारी हो सके और उनके बारे में कुछ उपाय किया जा सके।

जीवन में यह सत्य है, कि परिवार में एकदम बीमारी आ जाय, परिवार के सदस्य का एक्सीडेन्ट हो जाय, जिस व्यक्ति पर भरोसा करें वह व्यक्ति आपको घाटा पहुँचा दे, कोई अचानक आपको धोखा दे दे, कोई शत्रु आपके विरुद्ध विशेष षड्यन्त्र बना दे, कहीं अकस्मात् रूप से कोई ऐसा कार्य हो जाय, जिससे आपकी प्रतिष्ठा पर हानि पहुंचे।

ये सब स्थितियां जीवन में सुख का नाश कर दु:ख में वृद्धि करती हैं, और जीवन की उन्नति को पीछे धकेलती है, इन स्थितियों के कारण आप जो श्रम करते हैं, वह श्रम आपको पूर्ण रूप से फलदायी नहीं रहता।

साधना ही इसका उत्तर है

कुछ साधनाएं वृद्धि की साधनाएं होती हैं, जिनको सही तरीके से गुरु आशीर्वाद से सम्पन्न करने से जीवन में उन्नति प्राप्त होती है।

कुछ साधनाएं जिनमें कुछ विशेष तन्त्र प्रयोग भी शामिल है, शत्रु नाश, बाधा निवारण, मारण-प्रयोग, स्तम्भन एवं वशीकरण प्रयोग की साधनाएं होती हैं, जिसमें साधक अपने कार्यों हेतु बाधाओं के नाश के लिए कार्य करता है।

कुछ विशेष साधनाएं रक्षा साधनाएं होती हैं, जो कि भविष्य में आने वाली बाधाओं के संबंध में एक कवच का रूप बन जाती हैं, जिससे यदि बाधाएं आएं भी, तो आप पर प्रभाव न डाल सकें,

Scanned by CamScanner

इन बाधाओं की आपको पूर्व जानकारी हो जाय, जिससे समय रहते, उचित उपाय किया जा सके।

वरूथिनी साधना सिद्धि

यह महत्वपूर्ण वरूथिनी देवी साधना विशेष प्रयोग दिवस के दिन सम्पन्न की जाती है, और इसका विधान अत्यन्त सरल है, और विशेष बात यह है कि यह साधना गृहस्थ व्यक्तियों के लिए है क्योंकि गृहस्थ को ही अपने जीवन में पग-पग पर बाधाओं का सामना करना पड़ता है, अपने घर परिवार कार्य के अतिरिक्त समाज में रहते हुए उसे सब कार्य निभाने पड़ते हैं, वह चारों ओर से जिम्मेदारियों के तारों से बंधा एक कुशल नट की भांति जीवन जीता है, जहां थोड़ा पैर चूका कि परेशानियां, दस गुना बढ़ जाती हैं।

'योगिनी हृदय तंत्र' के अनुसार—ब्रह्मा ने सृष्टि रचना के साथ जिन विशेष शक्तियों की उत्पत्ति की, उनमें प्रमुख **'वरूथिनी'** है।

'अष्टादस निकाय' में इस साधना का जो वर्णन मिलता है, वह निश्चय ही इस साधना के पूर्ण स्वरूप को स्पष्ट करता है।

शाक्तगम साहित्य में **'श्री विद्यार्णव'** × ग्रंथ में भी इस साधना के सिद्धान्त तथा उपासना के संबंध में विवरण है, यह ग्रंथ प्रकाशित ही नहीं हुआ, इस ग्रन्थ की एक हस्तलिखित प्रति जम्मू रघुनाथ मन्दिर पुस्तकालय में है, यह ग्रंथ शंकराचार्य द्वारा लिखा गया है।

इसमें लिखा है कि यदि कोई साधक वरूथिनी सिद्धि प्राप्त कर लेता है, तो वह सम्पूर्ण ज्ञाता बन जाता है, उसे भविष्य की सिद्धि प्राप्त हो जाती है।

साधक में सूर्यत्व प्रबल हो जाता है, उसका मस्तिष्क अत्यन्त तीव्र तथा विशेष विचारशील हो जाता है।

अपने कार्यों के गुण अवगुण का ज्ञान हो जाता है, और उसके सामने अपना मार्ग स्पष्ट रहता है, कोई भी विपरीत स्थिति आने पर सिद्धि प्राप्त साधक को पूर्ण जानकारी हो जाती है और वह उसकी निवृत्ति का मार्ग ढूंढ़ लेता है।

× यह ग्रंथ श्रीनगर से प्रकाशित है।

शक्ति संचार के तीव्रत्व में एक तादात्म्य हो जाता है, जिससे उसकी शक्ति एक सही दिशा में अग्रसर रहती है, व्यर्थ के कार्यों में उसकी शक्ति का नाश नहीं होता।

गुण युक्त द्रव्य युक्त गुण दोनों की ही प्राप्ति संभव हो जाती है।

साधना प्रयोग

वरूथिनी साधना एक तांत्रिक प्रयोग है, इस प्रयोग में साधक को कुछ विशेष सावधानियां भी रखनी पड़ती हैं।

साधक एकादशी के दिन भोजन ग्रहण न करें, साधना के दिन शारीरिक रूप से पूर्ण स्वस्थ हो।

साधना के दिन साधक के मन में विशेष उत्साह हो, यह उत्साह शक्ति गुरु ध्यान कर साधक अवश्य ही प्राप्त कर सकता है।

साधना के समय किसी भी प्रकार का विघ्न न हो, इसलिए जिस कमरे में साधना करें, उस कमरे के दरवाजे अच्छी तरह से बन्द कर दें।

पूजा के दौरान यदि कोई दरवाजा खटखटाये या बाहर कोई आवाज हो तो भी दरवाजा न खोलें।

साधना सामग्री

इसकी साधना प्रक्रिया थोड़ा जटिल है, लेकिन क्रमबद्ध रूप से करने में साधक सरलता पूर्वक प्रयोग सम्पन्न कर सकता है, जिसमें मंत्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त **'बाधा निवारण यन्त्र'** **'दो जोड़ी दो मुखी रुद्राक्ष'** तथा **'२१ हकीक पत्थर'** आवश्यक है।

इस साधना में किसी प्रकार की माला की आवश्यकता नहीं है।

Scanned by CamScanner

साधना विधान

सर्वप्रथम गुरु पूजन कर २१ बार गुरु मन्त्र का जप करें, इसी प्रकार भैरव पूजन कर सुपारी रूप में अथवा शुद्ध भैरव लिंग प्राप्त हो या तो भैरव गुटिका का पूजन कर अपने सामने एक ओर स्थापित कर दें।

भैरव पूजा में २१ बार निम्न मंत्र का पाठ करें।

मन्त्र

।। ॐ भं भैरवाय नमः ।।

अब अपने सामने एक ताम्र पात्र में पुष्प रख कर **बाधा निवारण यंत्र** जो कि ताम्रपत्र पर अंकित हो, शुद्ध जल से धो कर उस पर स्थापित करें और सिन्दूर चढ़ाएं, इसके साथ ही पूजा स्थान में धूप अवश्य जला दें, ध्यान कर अपनी बाधाओं के नाश की प्रार्थना कर वज्र मुद्रा अर्थात् दोनों घुटने टिका कर पैर पीछे करके बैठें तथा बाधा निवारण हेतु निम्न मन्त्र का २१ बार जप करें—

उग्रं वीरं महाविष्णुं ज्वलन्तं सर्वतोमुखम्।
नृसिंह भीषणं भद्रं मृत्युं मृत्युं नमाम्यहम् ।।

पहले से ही सिन्दूर से रंग कर रखे हुए चावलों को प्रत्येक बार मंत्र जप के समय, पात्र में रखे यन्त्र पर फेंकते रहें।

इसके पश्चात् दोनों दो मुखी रुद्राक्षों को अपने सामने यंत्र पात्र के बाहर सफेद चावल की ढेरी पर रखें और उस पर चंदन चढ़ाएं, शिव का ध्यान करें, अपने पैरों को सीधा कर पालथी मार कर बैठ जांय, दाएं हाथ में जल ले कर बारी-बारी से रुद्राक्षों पर चढ़ाते रहें तथा प्रत्येक रुद्राक्ष पर इक्यावन बार यह प्रयोग सम्पन्न सम्पन्न करें।

मन्त्र

।। ॐ तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि तन्नो रुद्रः प्रचोदयात् ।।

यह पूजन कार्य सम्पन्न करने के पश्चात् अपने सामने तीन लाइनों में २१ हकीक पत्थर रखें तथा प्रत्येक हकीक पत्थर पर तिल तथा सरसों चढ़ा दें, साथ ही एक मिट्टी के दिये में तेल भर कर दीपक जला दें, अब मंत्र जप प्रारम्भ करें तथा अपने हाथ में थोड़े तिल और सरसों ले लें, इस समय अपनी मुद्रा दूसरी ओर कर दें, मंत्र जप के समय दिये की ओर देखना नहीं है, अर्थात् दीपक आपके पीठ पीछे हो।

मन्त्र

।। सर्वा बाधा प्रशमनम् त्रैलोकस्याखिलेश्वरी
एवमेव त्वया कार्यं मस्मद वैरी विनाशनम् ।।

मंत्र जप प्रारम्भ करने से पहले अपनी सारी बाधाओं को एक कागज पर लिख कर उस पर लाल डोरा बांध कर अपने पास दीपक के साथ रख दें जब १०१ बार मंत्र जप पूर्ण हो जाय तो यह कागज उस दीपक की लौ में भस्म कर दें तथा जोर से फूंक मार कर दीपक को बुझा दें, अब अपने सामने से हकीक पत्थर, तिल, सरसों तथा कागज की राख आदि को एक लाल कपड़े में बांध दें और इसे अलग कोने में रख दें।

जब यह सारी साधना सम्पन्न हो जाय तो केवल गुरु के सम्मुख अर्पित किया हुआ प्रसाद ही ग्रहण करें अन्य प्रसाद जो कि भैरव गुटिका के सामने अर्पित है, श्वान अर्थात् किसी कुत्ते को खिला दें।

लाल कपड़े में बांधे गये हकीक पत्थर, तिल, सरसों तथा राख सहित दूर एक गड्ढा खोद कर गाड़ दें घर आ कर पुनः स्नान कर शुद्ध श्वेत वस्त्र पहिन कर गुरु आरती तथा शिव आरती सम्पन्न करें।

यह साधना अत्यन्त प्रभावकारी एवं महत्वपूर्ण साधना है, रक्षा कवच की यह महत्वपूर्ण साधना साधक को बाधाओं की अति होने पर, जीवन में हर समय चिन्ता रहने पर, हर समय आशंका रहने पर अवश्य ही सम्पन्न करनी चाहिए। ●

Scanned by CamScanner

१६-५-६१

अक्षय तृतीया

जो कि अक्षय लक्ष्मी प्रदायक दिवस है

एक बेमिसाल साधना दिवस

शास्त्रों में लक्ष्मी को समुद्र मन्थन के पश्चात् उत्पन्न होने वाला एवं सबसे उत्तम रत्न माना गया है, जिसका वरण भगवान विष्णु ने स्वयं किया, लक्ष्मी की इतनी अधिक महत्ता क्यों? लक्ष्मी के बिना सब कुछ अधूरा क्यों? क्या लक्ष्मी स्थायी रह सकती है? क्या इस संबंध में शास्त्रों में विरोधाभास है? आइये देखें लक्ष्मी स्वयं क्या कहती है।

प्रत्येक व्यक्ति की यही इच्छा रहती है, कि उसके पास लक्ष्मी का स्थायी आवास हो, और उसे किसी भी प्रकार से आर्थिक दृष्टि से, पूर्ण सिद्धि प्राप्त हो, लक्ष्मी का तात्पर्य केवल धन ही नहीं है, यह तो लक्ष्मी का एक अत्यन्त छोटा सा रूप है, लक्ष्मी के लिए एक गुण तो बहुत ही लघु पड़ जायेगा, महाकाव्यों में, आदि ग्रन्थों में लक्ष्मी के विभिन्न स्वरूपों का, विभिन्न नामों का जो वर्णन आया है, उसे पूर्ण रूप से प्राप्त करना ही सही रूप में लक्ष्मी को प्राप्त करना है।

लक्ष्मी का तात्पर्य है–सौभाग्य, समृद्धि, धन-दौलत, अच्छी किस्मत, सफलता, सम्पन्नता, प्रियता, लावण्य, आभा, कान्ति तथा राजकीय शक्ति–ये सब लक्ष्मी के स्वरूप हैं, और इन्हीं गुणों के कारण भगवान विष्णु ने भी लक्ष्मी को अपनी पत्नी बनाया, जब इन सब गुणों का समावेश होता है, और जो इनको प्राप्त कर लेता है, वही वास्तविक रूप से लक्ष्मीपति है।

मनुष्य क्या है–आदि पुरुष भगवान विष्णु का अंश, उनकी सृष्टि का एक लघु स्वरूप, फिर क्या कारण है कि उसके पास लक्ष्मी का एक छोटा सा भी स्वरूप नहीं है, यह सत्य है कि लक्ष्मी के ये स्वरूप यदि किसी व्यक्ति के पास हो जांय तो वह पूर्ण पुरुष हो जाता है, यह संभव है।

Scanned by CamScanner

लक्ष्मी जीतने की वस्तु नहीं है, जिसे जुए से प्राप्त किया जा सके, लक्ष्मी तो मन्थन अर्थात् प्रयत्न, अथक प्रयत्न, गहनतम साधनाओं का वह सुन्दर परिणाम है, जो साधक को उसकी साधनाओं के, उसके कार्यों के श्रीफल के रूप में उसे प्राप्त होती है, उस लक्ष्मी को वह अपने पास स्थायी भाव से रख सकता है, आवश्यकता इस बात की है कि वह कुछ करे, और इस कुछ करने के लिए उसके पास उचित मार्ग होना चाहिए, और यह उचित मार्ग उसे गुरु के निर्देश से प्राप्त हो सकता है ।

केवल धन की प्राप्ति ही सब कुछ नहीं है, धन तो लक्ष्मी का एक अंश है, क्या धन से रूप, सौन्दर्य प्राप्त कर सकते हैं? क्या धन से कान्ति, आभा प्राप्त कर सकते हैं? क्या धन से सौभाग्य प्राप्त कर सकते हैं?

जो व्यक्ति लक्ष्मी का अर्थ केवल धन, मुद्रा और पैसे ही लेते हैं तो बहुत बड़ी गलती करते हैं, पूर्ण लक्ष्मी होने का तात्पर्य केवल पैसा ही नहीं है, अपितु सौभाग्य में भी वृद्धि हो, राजकीय सुख एवं शक्ति प्राप्त हो, वह जो कार्य करे, उसी के अनुरूप उसे यश प्राप्त हो–और यह यश श्रेष्ठ दिशा में होना चाहिए, लक्ष्मी के सम्बन्ध में जितने ग्रन्थ लिखे गये हैं, उतने ग्रन्थ शायद ही किसी अन्य विषय पर लिखे गये हों, जब व्यक्ति लक्ष्मी को पूर्ण रूप से प्राप्त कर लेता है, तो वह पूर्णता की ओर अग्रसर हो सकता है, भौतिक सुख पूर्ण रूप से प्राप्त होने पर ही वह ज्ञान और वैराग्य के मार्ग पर बढ़ सकता है ।

मेरा तो यह कहना है, कि यदि कंगाल, निर्धन व्यक्ति घर छोड़ कर साधना की ओर, हिमालय की ओर, सन्यास की ओर भागता है, तो उसका वैराग्य शुद्ध वैराग्य नहीं है, यह तो सत्य से भागना है, क्या आंखों के आगे हाथ रख देने से सूर्य छिप सकता है? सूर्य तो अपनी जगह स्थिर है, व्यक्ति अपनी आंखों के सामने पर्दा कर देता है, उसी प्रकार जो लक्ष्मी को तुच्छ कहते हैं, उसके संबंध में निन्दात्मक वाक्य लिखते हैं, वे व्यक्ति वास्तव में डरपोक, निर्बल और कायर हैं, जो जीवन में कुछ प्राप्त करने में असमर्थ होने पर इस जीवन के महत्व को ही नकारना चाहते हैं, लेकिन सत्य तो सूर्य की भांति है, जो छिप नहीं सकता।

लक्ष्मी की साधना एवं पूजन कब

जैसा कि मैंने ऊपर लिखा है, कि धन कमाना ही केवल लक्ष्मी की साधना नहीं है, यह तो आपकी आजीविका तथा जीवन-चक्र को चलाने हेतु किये गये साधारण प्रयत्न हैं जिस प्रकार यदि अग्नि के ऊपर राख का आवरण आ जाय और समय पर उसे चैतन्य नहीं किया जाय, तो धीरे-धीरे वह अग्नि ही बुझ जाती है, और यदि फूंक मार कर राख हटा कर अग्नि को घी की आहुति दी जाय, तो वह एकदम से प्रबल हो कर ज्वाला रूप में प्रज्ज्वलित हो जाती है ।

लक्ष्मी का भी ऐसा ही विधान है, यदि साधना नहीं करेंगे, इसके लिए प्रयत्न नहीं करेंगे, इसको तीव्र नहीं करेंगे, तो धीरे-धीरे यह बुझ जायेगी, शान्त हो जायेगी, और जीवन में केवल राख बचेगी।

दीपावली के अवसर पर लक्ष्मी का पूजन विशिष्ट माना जाता है, वह दिवस तो लक्ष्मी दिवस है, इसके अतिरिक्त विशेष बात यह है, कि लक्ष्मी का वार अर्थात् दिवस मूल रूप से बृहस्पतिवार है, और शुक्ल पक्ष का ही महत्व है, यह मुहूर्त अक्षय लक्ष्मी का सबसे सिद्ध मुहूर्त कहा गया है ।

जो साधक उचित समय पर अर्थात् उचित मुहूर्त पर विधि-विधान सहित साधना करता है, तो उसे फल की प्राप्ति निश्चित रूप से होती है ।

अक्षय तृतीया का अदभुत् मुहूर्त

अक्षय तृतीया का महत्व भी उतना ही है, जितना दीपावली का सिद्ध मुहुर्त है, इस वर्ष अक्षय तृतीया दिनांक १६-५-६१ को आ रही है, और इसमें विशेष बात यह है, कि यह शुक्ल पक्ष में है,

Scanned by CamScanner

और इस दिन बृहस्पतिवार भी है, जो कि लक्ष्मी पूजा का सर्वोत्तम मुहुर्त है

इसे अक्षय तृतीया इसलिये कहा गया है, कि इस दिन जो स्त्रियां सौभाग्य कामना हेतु पूजन करती हैं, उन्हें पूर्ण सौभाग्य प्राप्त होता है, जो व्यक्ति इस दिन लक्ष्मी साधना सम्पन्न करता है, उसे लक्ष्मी अक्षय रूप से प्राप्त होती है, अर्थात् लक्ष्मी का उसके यहां स्थायी रूप से आवास हो जाता है, गांवों में तो इस मुहुर्त की इतनी अधिक मान्यता है, कि इस दिन विवाह के लिए किसी पंडित को मुहुर्त दिखाने की आवश्यकता नहीं है, विवाह के लिये तो इसे पूर्ण मुहुर्त माना गया है, जीवन यात्रा प्रारम्भ करने के यह सौभाग्य दिवस है, अक्षय लक्ष्मी प्राप्त करने का पूर्ण दिवस है, शारीरिक सौन्दर्य, लावण्य, आभा प्राप्त करने का दिवस है, व्यक्तित्व में शक्ति प्राप्त करने का दिवस है।

शाक्त प्रमोद में लिखा है, कि जो साधक अक्षय तृतीया के महत्व को जानते हुए भी पूजा साधना नहीं करता वह दुर्भाग्यशाली है।

"वृहद रस सिद्धांत महाग्रन्थ" में अक्षय तृतीया के संबंध में लिखा है, कि यह दिवस जीवन रस की अक्षय खान है, उसमें से जितना प्राप्त कर सको, उतना ही यह रस बढ़ता जाता है।

गृहस्थ तो पत्नी को भी गृह लक्ष्मी कहता है, उसके लिए अक्षय तृतीया अनंग साधना का दिवस है।

पूजा में क्या आवश्यक है

अक्षय तृतीया के पूजन में मंगल घट, **'अक्षय लक्ष्मी शंख'**, श्वेत पुष्प, शुद्ध घी का दीपक, तथा **'दो मोती'**,शंख रक्त चन्दन तथा इसके लिए **'कमलगट्टा माला'** आवश्यक ही है।

इस अक्षय लक्ष्मी प्रदायक दिवस का साधना विधान अत्यन्त सरल है, और सही बात यह है, कि प्रत्येक गृहस्थ को इसे सम्पन्न करना चाहिए, लक्ष्मी का विशेष स्वरूप गृहस्थ से ही जुड़ा रहता है, और गृहस्थ व्यक्ति ही अपने जीवन में, इच्छाओं, कामनाओं के साथ बाधाओं, मय यश-अपयश, सौभाग्य-दुर्भाग्य से जुड़ा होता है, इस कारण गृहस्थ तथा गृहस्थ जीवन में प्रवेश करने वाले व्यक्ति के लिये यह आवश्यक है।

अक्षय तृतीया अनंग दिवस है, कामना दिवस है, यह जीवन के उस भाग को पूर्णता प्रदान करता है, जो सृष्टि संचालन में सहायक है, इस दिन पूजा करने से कन्याओं को श्रेष्ठ वर की प्राप्ति होती है।

पूजा का विधान

- सर्व प्रथम तो यह आवश्यक है, कि आपका घर साफ सुथरा एवं स्वच्छ होना चाहिए, जहां गन्दगी होती है वहां लक्ष्मी वास नहीं होता।
- अपने पूजा स्थान में, साधना स्थल में, अथवा जिस कमरे में पूजा करें, उस जगह में आपको शान्ति अनुभव हो, अपना ध्यान केन्द्रित कर सके।
- पति-पत्नी दोनों साथ-साथ पूजा कर सकते हैं, इस विशेष दिन यदि किसी कार्य वश पति घर में नहीं है, तो पत्नी, पति के नाम का संकल्प भर कर साधना सम्पन्न कर सकती है।
- साधना पूजा स्थान में सुगन्धित महकता हुआ वातावरण रखें इसके लिए सुगन्धित अगरबत्ती पूजा से पहले ही जला लें, उस स्थान पर इत्र इत्यादि छिड़कें।
- साधक, सामग्री की पूर्व व्यवस्था कर साधना स्थल पर स्थान ग्रहण करें, और पूर्ण प्रेम से, प्रसन्न मन से, देवी का पूजन क्रम प्रारम्भ करें।

अपने सामने एक बाजोट पर पीला सुन्दर रेशमी वस्त्र बिछाकर उसके बीचोंबीच चावल की ढेरी बनाकर उस पर पुष्प रखें और फिर मंगल घट अर्थात् कलश स्थापित कर दें, शुद्ध जल से आधे भरे इस कलश पर नारियल स्थापित करें, अब पूजा स्थान में घी का दीपक जला दें, एक ओर सुगन्धित धूप जला दें, अब इस मंगल घट के सामने चावल की ढेरी बनाकर दोनों मोती शंख स्थापित करें, इन मोती शंखों के आगे एक बड़ा विशिष्ट

Scanned by CamScanner

मंत्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त अक्षय लक्ष्मी शंख स्थापित करें, प्रत्येक के ऊपर चन्दन तथा केसर का टीका लगायें एक-एक पुष्प रखें, मौली चढ़ायें, तथा मंगल घट के पास पूजा हेतु आवश्यक प्रसाद नैवेद्य अर्पित करें।

ये दोनों मोती शंख अक्षय लक्ष्मी के विभिन्न स्वरूपों के रूप हैं, और पूजा विधान में इनका विशेष महत्व है।

अब साधक मूल पूजा प्रारम्भ करता है, लेकिन उसके पहिले विशेष बात तो आवश्यक है, कि इस सब व्यवस्था के पश्चात् साधक अपने आसन पर जिस प्रकार भी आराम से बैठ सकता है, पहले कम से कम दस मिनट तक गुरु का ध्यान करें, मस्तिष्क में विचारों का प्रवाह चलता रहेगा— उसे चलने दें, अपनी आंखें बन्द रखें, और अपने संकल्प को दोहराएं, न कि लक्ष्य को, धीरे-धीरे एक अपूर्व शान्ति पूरे शरीर एवं मन में छा जायेगी और यही समय है कि आप साधना प्रारम्भ करें।

मन कहीं और दौड़ रहा है, और साधक पूजन कर रहा है, तो साधना में सफलता कैसे मिल सकती है ?

अब आप दाएं हाथ में जल लेकर संकल्प लें कि— **"हे अक्षय लक्ष्मी ! अपनी ग्यारह शक्तियों सहित यहां स्थित हो कर मेरा पूजन सफल करें, और अभीष्ट सिद्धि प्राप्त करने हेतु आपकी शरण में यह साधक आपको अपना पूजन समर्पित कर रहा है",** ऐसा बोल कर जल छोड़ दें और पुष्प चढ़ाएं।

अब मध्य में रखे हुए कलश में से नारियल हटा कर उसमें थोड़ा दूध, दही, घी, शहद अथवा शक्कर और एक पुष्प डालें, तथा नारियल पुनः स्थापित कर दें।

अब अक्षय लक्ष्मी के ग्यारह स्वरूपों का पूजन प्रारम्भ होता है, प्रत्येक मोती शंख के आगे बीज मन्त्र का सम्पुट देते हुए उस पर पुष्प, चावल, कुंकुम, चन्दन तथा सुपारी अर्पित करें, प्रत्येक बार अर्पण के समय नीचे दिये गये मंत्र का क्रमानुसार जप करें, इस प्रकार प्रत्येक अक्षय लक्ष्मी सिद्ध मोती शंख के आगे पांच बार मंत्र उच्चारण होगा, क्रम इस प्रकार से है—

ॐ श्रीं अनुरागाय अक्षय लक्ष्मी बाणाय श्रीं नमः
ॐ ह्रीं सर्वादाय अक्षय लक्ष्मी बाणाय ह्रीं नमः
ॐ श्रीं विजयाय अक्षय लक्ष्मी बाणाय श्रीं नमः
ॐ कमले वल्लभाय अक्षय लक्ष्मी बाणाय कमले नमः
ॐ कमलाल्ये मदाय अक्षय लक्ष्मी बाणाय-
कमलाल्ये नमः
ॐ प्रसीद हर्षाय अक्षय लक्ष्मी बाणाय प्रसीद नमः
ॐ प्रसीद बलाय अक्षय लक्ष्मी बाणाय प्रसीद नमः
ॐ श्रीं तेजसे अक्षय लक्ष्मी बाणाय श्रीं नमः
ॐ ह्रीं वीर्याय अक्षय लक्ष्मी बाणाय ह्रीं नमः
ॐ श्रीं ऐश्वर्याय अक्षय लक्ष्मी बाणाय श्रीं नमः
ॐ महालक्ष्म्यै शक्त्यै लक्ष्मी बाणाय महालक्ष्म्यै नमः

इस प्रकार पूजन पूरा करने से अक्षय लक्ष्मी अपने सम्पूर्ण प्रभाव के साथ साधक को आशीर्वाद-अभय प्रदान करती है, साधक अपने दोनों हाथों में पुष्प ले कर प्रत्येक मोतीशंख पर तथा अक्षय लक्ष्मी शंख पर अर्पित करें और ग्यारह माला लक्ष्मीबीज मन्त्र का जप करें—

लक्ष्मी बीज मन्त्र

॥ ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद
प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं महालक्ष्म्यै नमः ॥

अब एक थाली में स्वास्तिक कुंकुम से बना कर उस पर दीपक अथवा आरती रख कर पूर्ण मनोयोग से लक्ष्मी की आरती सम्पन्न करें, तथा आरती के पश्चात् मानसिक रूप से गुरु ध्यान कर गुरु आशीर्वाद प्राप्त कर अपना स्थान छोड़ें।

यह पूजा साधना अत्यन्त ही प्रभावकारी एवं हर साधक के लिए उपयोगी ही है, इसका विशेष मुहूर्त इस बार कई वर्षों बाद शुद्ध रूप में आया है। ●

कालाष्टमी

रात्रि को काली और कालभैरव की एक साथ साधना होती है इस दिन

क्योंकि यह शत्रु हन्ता प्रयोग है

"काल" अपने आपमें एक साधारण शब्द नहीं है, यह तो अपने भीतर एक पूरा संसार समाये हुए है, काल एक गतिमान तत्व है, और काल गति का, जीवन का अन्त भी है, यह विरोधाभास अद्भुत है, जो इस काल की गति को नहीं पहिचान सकता और इसको अपने अनुकूल नहीं कर पाता, वह काल के आधीन हो कर अन्त प्राप्त करता है।

जहां कालाध्यक्ष सूर्य हैं, वहां कालकंठ, काल-भक्ष शिव हैं, जो काल को अपने आधीन कर महा-काल बन गये, काल-चक्र जीवन का समय चक्र है, और कालरात्रि वह रात्रि, वेला है, जिसमें साधक काल-चक्र को अपने आधीन कर सकता है, कालहर-शिव को प्रसन्न कर सकता है, काल भैरव का अभय वर प्राप्त कर सकता है, काल की देवी काली की सम्पूर्ण सुकृपा प्राप्त कर सकता है, जिससे उसके काल-चक्र में अर्थात् जीवन-चक्र में स्थितियां अनुकूल बनती हैं, कालहरणम् अर्थात् उसके समय का नाश नहीं होता, अपितु वह काल को अपने आधीन कर देता है।

कालाष्टमी तो महापर्व है

काली का शाब्दिक रूप से अर्थ है–शिव पत्नी पार्वती, और काल भैरव का तात्पर्य है शिव, और इन दोनों तत्वों से ही यह काल-चक्र चलता है, जिसके जीवन में शिव-तत्व और शक्ति-तत्व नहीं है, उसका जीवन एक फुस्स सा है, मानों गुब्बारे में केवल हवा ही हवा भरी है जो बाहर से बड़ा दिखाई देता है, थोड़ी सुई चुभाई कि हवा निकल गई और वास्तविक स्थिति में आ गये, यह तो जीवन नहीं है, जीवन में होना चाहिए मूल रूप से शिव भाव, अर्थात् शुभ, मांगलिक, सौभाग्य, प्रसन्नता, समृद्धि, स्वस्थता, शिवम् अर्थात् कल्याण, मंगल और गुरु का दरबार है–शिव लोक, जहां यह सब भाव प्राप्त होते हैं, तथा काली तत्व है,–तेज, अग्नि, संहार, क्षमता, तीव्रता।

जब तक जीवन में इन दोनों का संगम नहीं है, जीवन कुछ भी नहीं है, बस केवल जीवन को काटना है, उसे किसी तरह बिताना है, जीवन जीना नहीं है, कालाष्टमी–काल भैरव और काली की सिद्धि का वह दिवस है जिसके बिना जीवन में कुछ भी नहीं है, दोनों काली और काल

Scanned by CamScanner

भैरव एक दूसरे के बिना अधूरे हैं, यह दिवस शत्रुहन्ता दिवस है

आपका शत्रु कोई व्यक्ति विशेष हो, यह आवश्यक नहीं, आपके जीवन के दुःख, आपके सबसे बड़े शत्रु हैं, शरीर का रोग आपका शत्रु है, कार्य की बाधाएं आपकी शत्रु हैं, निर्धनता आपकी शत्रु है, निर्बलता आपकी शत्रु है, कलह आपका शत्रु है, इनका नाश होना ही चाहिए, मधुर सरस जीवन के लिए यह आवश्यक है, काम करें और उसका फल प्राप्त हो, शरीर स्वस्थ रहे, सुगन्ध फैलती रहे, कीर्ति बढ़ती रहे, तो जीवन वास्तविक रूप से जीवन है।

कालाष्टमी मुहूर्त

इस वर्ष कालाष्टमी का यह मुहूर्त ऐसा ही सिद्ध मुहूर्त आया है, जो कि काली और काल भैरव दोनों की संयुक्त सिद्धि का मुहूर्त है, इस साधना के सहस्र प्रकार हैं, तांत्रिक प्रयोग भी हैं और मांत्रिक प्रयोग भी, साधक को अपनी कामना, इच्छा के अनुसार प्रयोग सम्पन्न करना चाहिए, केवल आजमाने के उद्देश्य से किये गये प्रयोग में अभीष्ट सिद्धि प्राप्त नहीं हो सकती।

यदि साधक अपने हृदय के समस्त द्वार खोल कर समर्पित भाव से यह साधना सम्पन्न करता है, तो उसे साधना में सफलता अवश्य प्राप्त होती है, उसके मन में प्राप्त करने की इच्छा होनी चाहिए, शिव और शक्ति दोनों तत्वों को अपने भीतर उतार लेने की इच्छा होनी चाहिए, और कालाष्टमी का यह दिवस उसके लिए पूर्ण प्रभावकारी मुहूर्त है जिससे चूकना ही नहीं चाहिए।

पूजन-प्रक्रिया, साधना-विधि इतनी कठिन नहीं है, कठिन है अपने आपको एकाग्र कर साधना के लिए प्रवृत्त होना और इस काल-चक्र में अर्थात् साधना के समय सब कुछ भूल कर साधना करना ही महत्वपूर्ण है।

साधना का यह अद्भुत विधान

इस साधना में सर्वप्रथम काली का पूजन किया जाता है, फिर भैरव का पूजन किया जाता है, फिर दोनों का संयुक्त पूजन किया जाता है, और इसके पश्चात् मंत्र जप का विशेष विधान है, जो इस विधि से पूजन पूर्ण करता है, उसके जीवन में भय का पूर्ण रूप से नाश हो जाता है, और लक्ष्मी तथा प्रसिद्धि उसके अधीन हो जाती है, वह जो कामना ले कर कार्य करता है, उसमें उसके प्रयास पूर्ण रूप से सफल रहते हैं।

यह साधना रात्रि साधना है, क्योंकि रात्रि में ही काली और काल भैरव अपने तीव्रतम रूप में जाग्रत रहते हैं, जब साधक शान्ति और एकान्त को अनुभव करें, तथा साधना में विघ्न न हो, तब उसे रात्रि में यह साधना प्रयोग प्रारम्भ करना चाहिए।

Scanned by CamScanner

साधना के आवश्यक तत्व

इस महासाधना में सामग्री विशेष महत्वपूर्ण है, और उसमे भी महत्वपूर्ण बात यह है, कि इस साधना में प्रयोग लाई गई सामग्री किसी अन्य साधना में प्रयोग नहीं की जा सकती, काली और काल भैरव दोनों का प्रयोग इस साधना से पूरे वर्ष सम्पन्न किया जा सकता ।

इस साधना में आग्नेय योगपीठ मंत्र सिद्ध **'महाकाली यंत्र' 'अभीष्ट सिद्धि अष्ट भैरव गुटिका' 'शक्ति चैतन्य काली हकीक माला', '११ तांत्रोक्त नारियल'** के अतिरिक्त पुष्प, अक्षत, अष्टगन्ध सिन्दूर, पंचगव्य, नैवेद्य, ग्यारह सुपारी, मौली (कलावा), गुलाल, अबीर, तिल, सरसों इत्यादि आवश्यक है ।

साधना की प्रक्रिया

रात्रि को प्रथम प्रहर के पश्चात् साधक स्नान कर, काले वस्त्र धारण कर अपने पूजा स्थान में जाय, और एक कलश में जल से स्थान-शुद्धि, आसन-शुद्धि, सम्पन्न करे, उसके पश्चात् एक बड़ा तेल का दीपक जला ले, दूसरी ओर धूप अगरबत्ती, जलाये और फिर गुरु ध्यान कर आसन पर बैठे ।

साधना के लिए आवश्यक सामग्री की व्यवस्था पहले से कर लें, जिससे उसे बीच में उठना न पड़े, उसका ध्यान न बंटे, सामने एक लकड़ी के बाजोट (पीढ़े) पर लाल वस्त्र बिछा कर चारों ओर मौली बांध दें, एक ताम्रपात्र में काली यन्त्र, पुष्प रख कर स्थापित करें और उसके पास दूसरी सफेद अर्थात् स्टील की थाली या चांदी की थाली में अभीष्ट सिद्धि अष्ट भैरव गुटिका स्थापित करें ।
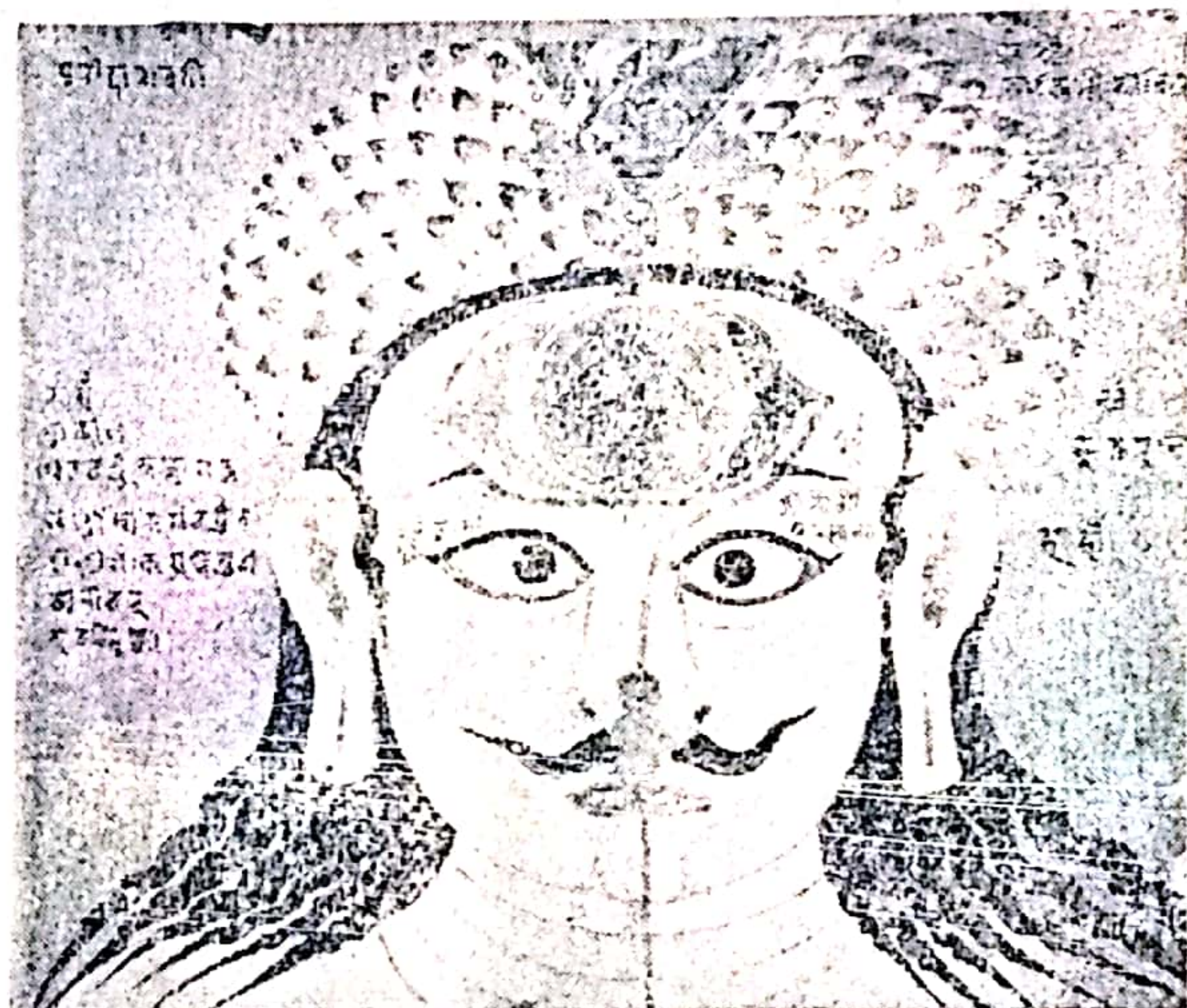
गुरु ध्यान कर, मन को एकाग्र कर, अपने दोनों हाथों में पुष्पांजलि स्वरूप बना कर पुष्प रखें और यह प्रार्थना करें, कि "अभीष्ट सिद्धि प्राप्ति हेतु मैं अमुक (अपना नाम) मन, वचन, कर्म देह से समर्पित हूं और मेरा यह पूजन, समर्पण स्वीकार करें" एसा बोलकर पुष्प अर्पित कर दें ।

अब पहले महाकाली का ध्यान सम्पन्न करें अपने बांएं हाथ में, सामने रखे कलश में से जल लेकर अपने शरीर के अंगों—सिर, मस्तक, नेत्र, नाक, कंठ, वक्षस्थल, दोनों हाथों पर लगाएं और जल छोड़ दें ।

अब कुंकुम, केसर तथा दूध, दही से यंत्र पूजन करें और उस पर पुष्प चढ़ाएं, यन्त्र रखे हुए पात्र के चारों ओर एक गोल घेरा बना कर उस पर आठ सरसों की ढेरी बनाएं, प्रत्येक ढेरी पर एक-एक सुपारी रखें, अब देवी की इन शक्तियों का भी पूजन करें, तथा हाथ में पुष्प की पंखुड़ियां लेकर देवी की निम्न शक्तियों का नाम लेते हुए नमन करें तथा पुष्प अर्पित करते रहें ।

Scanned by CamScanner

ॐ कात्यै नमः, ॐ कपालिन्यै नमः, ॐ कुरुकुल्लायै नमः, ॐ विरोधिन्यै नमः, ॐ विप्र चित्तायै नमः, ॐ उग्रायै नमः, ॐ दीप्तायै नमः, ॐ नीलायै नमः, ॐ धनायै नमः, ॐ वलाकिकायै नमः, ॐ मात्रायै नमः, ॐ मुद्रायै नमः, ॐ चित्रायै नमः, ॐ ब्रह्मै नमः, ॐ नारायणायै नमः, ॐ माहेश्वर्यै नमः, ॐ चामुण्डायै नमः, ॐ कौमार्यै नमः, ॐ अपराजितायै नमः, ॐ वाराह्यै नमः, ॐ नरसिंहायै नमः।

इस प्रकार पूजन सम्पन्न कर पुनः देवी से प्रार्थना करें और अब भैरव और भैरवियों का पूजन प्रारम्भ करें।

भैरव पूजन में आठ दिशाओं में आठ सरसों की ढेरी बना कर उस पर आठ तांत्रोक्त नारियल स्थापित करें, इसके पश्चात् एक तांत्रोक्त नारियल अपने पास में बांयीं ओर, दूसरा दायीं ओर, तथा एक तीसरा नारियल अपने पीछे रखें, इन सब की पूजा सिन्दूर से करें और लाल पुष्प चढ़ाते हुए, निम्न प्रकार से ध्यान करें।

ॐ ऐं ह्रीं अं असितांगभैरवाय नमः, ॐ ऐं इं रुरुभैरवाय नमः, ॐ ऐं ह्रीं उं चण्डभैरवाय नमः, ॐ ऐं ह्रीं ऋं क्रोधभैरवाय नमः, ऐं ह्रीं लृं उन्मत्त-भैरवाय नमः, ॐ ऐं ह्रीं एं कपालिभैरवाय नमः, ॐ ऐं ह्रीं आं भीषणभैरवाय नमः, ॐ ऐं ह्रीं अं संहारभैरवाय नमः, ॐ ऐं ह्रीं वामांगभैरवाय नमः, ॐ ऐं ह्रीं दक्षिणभैरवाय नमः, ॐ ऐं ह्रीं शुद्धि-भैरवाय नमः।

इस प्रकार अष्ट भैरव और अपने दाएं, बांएं तथा पीछे पूजन सम्पन्न करें, ये सभी मंत्र शत्रु नाश के, बाधा-हरण के लिए, प्रबलतम मंत्र है, साधक बिना किसी चिन्ता के यह कार्य सम्पन्न करें।

अब काली और भैरव दोनों का संयुक्त पूजन दीपक से सम्पन्न करें संयुक्त पूजन में निम्न विधान है—

ॐ श्रीं भैरव्यै नमः	ॐ श्रीं भैरवी नमः
ॐ मं महाभैरव्यै नमः	ॐ महा भैरवी नमः
ॐ सिं सिंहभैरव्यै नमः	ॐ सिंह भैरवी नमः
ॐ धूं धूम्रभैरव्यै नमः	ॐ धूम्र भैरवी नमः
ॐ भीं भीमभैरव्यै नमः	ॐ भीम भैरवी नमः
ॐ उं उन्मत्तभैरव्यै नमः	ॐ उन्मत्त भैरवी नमः
ॐ वं वशीकरणभैरव्यै नमः	ॐ वशीकरण भैरवी नमः
ॐ नं मोहन भैरव्यै नमः	ॐ मोहन भैरवी नमः।

इस प्रकार पूजन सम्पन्न किया जाता है, इस पूजन क्रम में जो शक्ति का प्रवाह होता है, वह अद्भुत ही कहा जा सकता है, इसे साधक स्वयं अनुभव कर सकता है, इसके पश्चात् काली हकीक माला से पांच माला काली मन्त्र का जप सम्पन्न किया जाता है।

काली सप्ताक्षर मन्त्र

॥ क्रीं हूं ह्रीं फट् स्वाहा ॥

यह काली का मन्त्र है और इसके ऋषि भैरव हैं, इस प्रकार इस मन्त्र से काली और भैरव दोनों की साधना सम्पन्न की जाती है।

अब मन्त्र जप सहित सारा अनुष्ठान पूर्ण हो जाय तो यन्त्र इत्यादि को तो अपने पूजा स्थान में स्थापित कर देना चाहिए तथा दो अलग-अलग काले कपड़ों में काली के सामने स्थापित की गई सुपारी तथा सरसों की ढेरियां बांध दें, और दूसरे काले कपड़े में भैरव गुटिका के सामने स्थापित ग्यारह तांत्रोक्त नारियल और तिल बांध दें।

उसी रात्रि को इसे अपने घर के बाहर गाड़ दें, और फिर पीछे मुड़ कर न देखें।

यह साधना शक्ति की ऐसी साधना है जो साधक के जीवन में पूर्ण परिवर्तन ला सकती है, वह जो इच्छा कामना करता है, साधना में जिस प्रकार का संकल्प लेता है वह संकल्प अवश्य पूरा होता है। ●

Scanned by CamScanner

१४-५-१९९१

कुहू अमावस्या

जिस दिन जय-विजय

प्रयोग सम्पन्न किया जा सकता है

कुछ व्रत, पर्व, महोत्सव विशिष्ट होते हैं और इनका महत्व साधनाओं की दृष्टि से इतना अधिक होता है, कि साधक इन विशेष पर्वों पर केवल कुछ करने की प्रतिज्ञा संकल्प ही ले लेता है, तो भी उसे उस विशेष कार्य के संबंध में सफलता मिल ही जाती है।

मनुष्य पर सर्वाधिक प्रभाव चन्द्र ग्रह का पड़ता है, इसका कारण चन्द्रमा का पृथ्वी के सबसे निकट होना है, व्यक्ति के भीतर भी चन्द्र-तत्व सबसे अधिक विद्यमान है, चन्द्रमा का तात्पर्य है, शीतलता, मधुरता, श्रेष्ठता, कोमलता, ये सब तत्व व्यक्ति के भीतर अवश्य होने चाहिए, लेकिन केवल इन तत्वों की प्रधानता से जीवन का कष्टप्रद मार्ग नहीं कट सकता, कठिनाइयां अपने आप में एक कठोर तत्व हैं, जिसके लिए व्यक्ति को प्रबल होना ही पड़ता है, केवल सौन्दर्य रस, माधुर्य रस ही जीवन का तात्पर्य नहीं है, जीवन में चन्द्र-तत्व अर्थात् कोमलता आवश्यक है, तो कठोरता भी उतनी ही आवश्यक है, विजय प्राप्त करने के लिए, जीवन का मार्ग सरल बनाने के लिए कुछ कठोर करना ही पड़ता है।

अमावस्या ही क्यों ?

जय-विजय, पराक्रम, बल, तेज, तीव्रता की जितनी भी साधनाएं हैं, उनमें अमावस्या का मुहुर्त ही सिद्ध मुहुर्त माना गया है, अमावस्या एक विशेष तंत्र प्रयोग दिवस है, जिस दिन रात्रि को ही साधना सम्पन्न की जाती है, अमावस्या की रात्रि को काल-रात्रि कहा गया है, जिस दिन प्रभाव "यम तत्व" का अर्थात् जो सम्पूर्ण है, विजय प्रद है, तीक्ष्ण है, वही तत्व प्रबल रहता है।

अमावस्या की रात्रि को निर्बल से निर्बल साधक भी पूजा साधना सम्पन्न करता है, तो उसमें विशेष आत्म-विश्वास आ जाता है, शरीर में पराक्रम भाव बढ़ने लगता है, तथा अपनी बाधाओं पर, अपने शत्रुओं पर उसे विजय प्राप्त होती है।

जीवन में आगे बढ़ने की क्रिया दूसरों का नाश करने की क्रिया नहीं है, अथवा गलत को सही करने की प्रक्रिया नहीं है, यह तो अपने ज्ञान, बुद्धि का पूर्ण उपयोग करते हुए, अपनी शक्तियों को जाग्रत कर, बाधाओं को हटाकर उन्नति करने की प्रक्रिया है, बाधा चाहे व्यक्ति रूप में हो अथवा किसी अन्य रूप में, इसका नाश करना तो आवश्यक ही है, और इस प्रकार की साधना के लिए कुहू अमावस्या का मुहुर्त अपने आप में अत्यन्त सिद्ध एवं प्रबल मुहुर्त है।

इस रात्रि को साधक जब साधना सम्पन्न करता है, तो उसे ऐसा लग सकता है, कि मानों उसके शरीर में अन्दर ही अन्दर कोई विखण्डन प्रक्रिया हो रही है, शरीर

Scanned by CamScanner

टूटता हुआ सा अनुभव होता है, और यही इस विशेष साधना का महत्व है, यह प्रक्रिया ही उसे श्रेष्ठता की ओर ले जाती है, आत्म-बल का तेज भरने लगता है, और ऐसे में साधक कोई विशेष संकल्प कर कुहू अमावस्या का प्रयोग सम्पन्न करता है, तो उसे निश्चित तौर पर सफलता मिलती है।

कुहू अमावस्या सिद्धि दिवस

- यह सिद्धि दिवस मूल रूप से शक्ति दिवस है, इस रात्रि को शक्ति से संबंधित कोई भी प्रयोग सम्पन्न किया जा सकता है।
- शक्ति का यह प्रयोग शारीरिक शक्ति को उन्नत करने के लिए, अर्थात् किसी विशेष स्वास्थ्य बाधा को दूर करने के लिए किया जा सकता है।
- यह विशेष प्रयोग अपने किसी प्रबल शत्रु को शान्त करने के लिए तथा अपने अनुकूल बनाने के लिए किया जा सकता है।
- यदि किसी कार्य में मन एकाग्र नहीं हो पाये और कार्य पूर्णता का मार्ग न दिखाई दे, तो इस प्रयोग को करने से शक्ति का जागरण होता है।
- यदि किसी प्रकार का तांत्रिक प्रयोग किसी व्यक्ति विशेष पर किया हुआ हो, जिसके कारण उसका स्वास्थ्य बिगड़ गया हो, तो कुहू अमावस्या प्रयोग से यह बाधा दूर हो सकती है।
- यह प्रयोग कोई भी स्त्री अथवा पुरुष, विवाहित अथवा अविवाहित कर सकते हैं।
- वाणी संबंधी दोष इस साधना से दूर होता है, एक प्रकार से वाक् सिद्धि प्राप्त होती है, आवाज में प्रभाव एवं मिठास उत्पन्न होता है।
- कुहू अमावस्या के अनुष्ठान को "कुहनिका" कहते हैं, इसका तात्पर्य है, अपने कार्य की पूर्ति हेतु, अपने स्वार्थ की पूर्ति हेतु कड़ी साधना का अनुष्ठान।

साधना प्रयोग

यह सरल साधना इस विशिष्ट अमावस्या की रात्रि का प्रथम प्रहर बीत जाने के पश्चात्, अर्थात् १० बजे के पश्चात् सम्पन्न की जाती है, इसके पहले साधक अपनी दिनचर्या नियमित रूप से सम्पन्न कर सकता है।

इस विशेष प्रयोग में इस बात का महत्व है, कि जिस कार्य की पूर्ति हेतु अथवा जिस संकल्प को ले कर अनुष्ठान सम्पन्न किया जाय, उसे गुप्त ही रखना चाहिए, यदि संकल्प के बारे में पहले से ही प्रकट कर दिया जाता है, तो सिद्धि प्राप्त नहीं हो पाती है।

साधक किसी शान्त स्थान का अनुष्टान के लिए चयन करें जिससे कि उसे साधना में विघ्न न हो, सायंकाल से उस स्थान को साफ स्वच्छ कर, गुरु पूजन कर, गुरु मन्त्र का शान्त भाव से जप करें, इससे मन में चेतना उत्पन्न होती है, एकाग्रता प्राप्त होती है, इच्छा शक्ति के द्वार खुलते हैं, और गुरु-कृपा से साधना में सफलता प्राप्त होती है।

कुहू सिद्धि देवी पूर्ण रूप से शक्ति साधना है, "ह्रीं" बीज मन्त्र है, इस देवी की आठ शक्ति स्वरूप हैं, जिनका पूजन विधि के अनुसार करना चाहिए।

इस विशेष साधना में साधक को साधना में बैठने के पश्चात् प्रयोग पूरा करके ही उठना चाहिए, इसलिए आवश्यक साधना सामग्री की व्यवस्था पहले से ही कर लेनी चाहिए।

इस साधना में जल पात्र, दीपक के अतिरिक्त साधना-पूजन की सामग्री–कुंकुम, सिन्दूर, पुष्प, नैवेद्य, सुपारी आवश्यक है, इसके साथ **"आठ शक्ति चक्र" "आठ सिद्धि फल"** तथा मन्त्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त **"जय विजय कुहू यन्त्र"** आवश्यक है।

सायंकाल के पश्चात् साधक स्नान कर धुली हुई स्वच्छ गहरे रंग अर्थात् लाल या काली रंग की धोती पहिन लें,

Scanned by CamScanner

और साधना स्थल पर जा कर गुरु चित्र के सामने आसन पर बैठ कर गुरु पूजन कर, गुरु मन्त्र का शान्त भाव से जप प्रारम्भ करें, पूजा स्थान में ही अगरबत्ती तथा तेल का दीपक अवश्य जला लें, पूरे प्रयोग के समय यह दीपक जलते रहना चाहिए, दीपक की लौ का मुंह साधक की ओर होना चाहिए।

अपने सामने एक ताम्र पात्र में पुष्प का आसन बना कर उस पर मंत्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त **'जय विजय कुह यंत्र'** स्थापित करें, तथा उस पर कुंकुंम, सिन्दूर इत्यादि अर्पित करें, फिर अपने हाथ में जल ले कर जिस कार्य को पूरा करना चाहते हैं, उसका संकल्प लें और जल छोड़ दें।

पुनः जल ले कर पात्र के चारों ओर जल का घेरा बनाएं तथा शक्ति मुद्रा में बैठ कर देवी को ध्यान करें—

"हे अष्टसिद्धियों की अधिष्ठात्री देवी! जिसके शरीर से अग्नि का प्रवाह है, जय विजय स्वरूप दो चक्र हैं, मुझ साधक को पूर्ण सफलता प्रदान करें, मैं आपकी शक्तियों का पूजन करता हूं।"

अब साधक अपने सामने आठ पान के पत्ते रखें, प्रत्येक पत्ते पर एक-एक शक्ति चक्र स्थापित करें, एक-एक पुष्प रखें तथा प्रत्येक पत्ते पर सिन्दूर की टीकी लगाएं और प्रत्येक शक्ति का ध्यान करते हुए उस पर एक-एक सिद्धि फल चढ़ाएं, यह क्रम निम्न प्रकार से होना चाहिए–
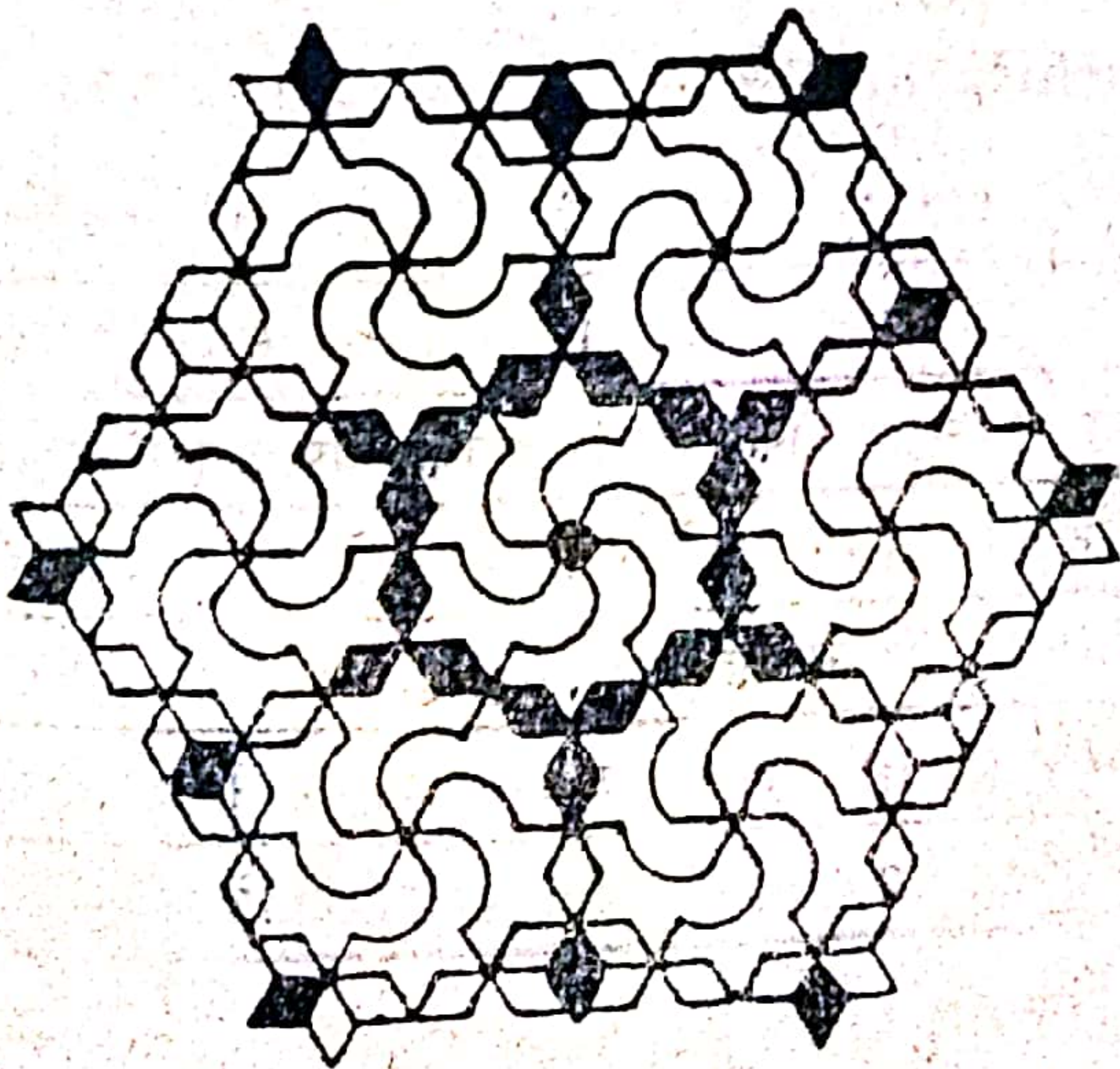
ॐ ब्राह्मी नमः
ॐ कौमारी नमः
ॐ वैष्णवी नमः
ॐ वाराही नमः
ॐ इन्द्राणी नमः
ॐ चामुण्डा नमः
ॐ महालक्ष्मी नमः
ॐ व्योमेश्वरी नमः
ॐ सप्त दीपेश्वरी नमः
ॐ कामेश्वरी नमः
ॐ माहेश्वरी नमः ॥

इस प्रकार प्रत्येक शक्ति का पूजन करते हुए उस पर सिन्दूर, कुंकुंम, चावल तथा पुष्प चढ़ाएं, प्रत्येक मन्त्र का ग्यारह-ग्यारह बार जप करें, अब दीपक को उठा कर सामने रखे हुए यन्त्र के आगे रख दें और साधक **'स्फटिक माला'** से मूल मन्त्र का जप प्रारम्भ करें—

मन्त्र

॥ ऐं हस्ख्फ्रें जय विजयायै नमः ॥

जब इस मन्त्र की पांच मालाएं सम्पन्न हो जांय तो साधक अपने स्थान पर खड़े हो कर पुष्प पंखुड़ियां यंत्र पर तथा सामने ग्यारह शक्तियों के शक्ति चक्र पर अर्पित करें, इसके पश्चात् देवी की आरती सम्पन्न कर सामने चढ़ाया हुआ प्रसाद ग्रहण कर पूजा स्थान से प्रस्थान करें।

यह साधना सरल होते हुए भी अपने अभीष्ट मुहूर्त एवं प्रभाव के कारण प्रबल ऊष्मा देने वाली है।

ऐसा भी देखने में आया है, कि इस साधना को सम्पन्न करते-करते साधक को अत्यधिक गर्मी का अनुभव होता है, पसीना आने लगता है, लेकिन साधक इन सब बातों को भूल कर पूजन तथा साधना सम्पन्न करता रहे।

दूसरे दिन प्रातः यंत्र को तो अपने पूजा स्थान में स्थापित कर देना चाहिए, तथा शक्ति चक्र एवं सिद्धि चक्र को एक साथ एक लाल कपड़े में बांध कर अपने व्यापार स्थल पर, अपने ऑफिस में अथवा अपने टेबल की दराज में रख देना चाहिए। ●

लक्ष्मी के मूल स्वरूप
की
साधना का रहस्य

कमला तंत्र

से ही
लक्ष्मी सिद्धि संभव है

कमला अर्थात् लक्ष्मी आधारभूत सिद्धि दात्री देवी है, लक्ष्मी साधना जीवन निर्माण में महत्वपूर्ण है, जिसके बिना न चिन्तन, न मन, और न ही तन को पूर्णता मिल पाती है।

लक्ष्मी की सफलता के साथ पूर्ण सिद्धि—जीवन का इन्द्रधनुष है, इस कमला साधना के तंत्र स्वरूप का विशेष चैतन्य रूप, जो हर साधक के लिए फल प्रदायक है—

एक बार नारद ऋषि समस्त लोकों का भ्रमण करते हुए विष्णु लोक पहुंचे उन्होंने भगवान, विष्णु के साथ विराजमान महामाया भगवती कमला के दर्शन किये तो पूर्ण भक्ति से गद्-गद् हो कर उसकी स्तुति करने लगे —

"हे भगवती! तुम लक्ष्मी स्वरूपा हो, तुम्हारी कृपा से मुझको सम्पूर्ण ज्ञान प्राप्त हो, हे लक्ष्मी ! आप कृपा कर मेरी वाणी और मेरे मन को सही रास्ते पर गतिशील करें, मुझे ओज, तेज, बल, बुद्धि, क्षमता और वैभव प्राप्त हो, महामाया कमला को पाकर स्वयं आदिदेव भगवान तीनों रूपों में प्रगट हो कर समस्त लोकों का सृजन, पालन, और संहार करते हैं, वही आद्या शक्ति मेरा कल्याण करें, जिनकी कृपा दृष्टि से कमल से उत्पन्न ब्रह्मा तथा अन्य प्रमुख देवता शक्ति प्राप्त करते हैं, जो वर देने वाली भगवती लक्ष्मी प्रसन्न हो कर सुख प्रदान करती हैं, उस महामाया, पूर्ण लक्ष्मी भगवती कमला को मैं प्रणाम करता हूं, और जो प्राणी सिर झुका कर आपको हृदय से नमन करते हैं, उनको कभी भी दुर्गति नहीं होती, ऐसे साधक निश्चय ही

Scanned by CamScanner

पूर्ण सिद्धि प्राप्त कर अनन्त लोक तक वैभव सम्पन्न हो कर धन, धान्य सम्पन्न, प्रसिद्धि, कीर्ति और सुख को प्राप्त करते हैं, आपका क्या वर्णन करूं, आप को हजार-हजार बार नमस्कार है।"

वास्तव में लक्ष्मी की साधना तंत्र मार्ग से ही संभव है, और यह कमला साधना के द्वारा सहज है, **कमला तंत्र** में तो स्पष्ट रूप से लिखा है, कि जीवन में अतुलनीय धन-वैभव प्राप्त करने के लिए कमला साधना आवश्यक है, क्योंकि इस साधना के द्वारा ही जीवन में वह सब कुछ प्राप्त हो सकता है, जो कि आज के मनुष्य को चाहिए।

सबसे बड़ी बात यह है, कि कमला साधना एक तरफ जहां पूर्ण मानसिक शान्ति और सिद्धि प्रदान करती है, वहीं दूसरी ओर इसके माध्यम से अतुलनीय वैभव, और अनायास धन प्राप्ति होती रहती है, तंत्र में इसके द्वादश नाम स्पष्ट हुए हैं, यदि कोई साधक केवल इन द्वादश नामों का उल्लेख या उच्चारण ही नित्य कर लेता है, तो भी उसे पूर्ण सिद्धि प्राप्त हो जाती है, फिर यदि कोई कमला जयन्ती के अवसर पर एक बार भली प्रकार से कमला साधना सम्पन्न कर लेता है, तो उसके जीवन में किसी प्रकार का कोई अभाव रह ही कैसे सकता है?

कमला के द्वादश नाम हैं—

१-महालक्ष्मी, २-ऋणमुक्ता, ३-हिरणमयी, ४-राजतनया, ५-दारिद्रय हारिणी, ६-कांचना, ७-जय, ८-राजराजेश्वरी, ९-वरदा, १०-कनकवर्णा, ११-पद्मासना, १२-सर्वमांगल्य युक्ता।

कमला तंत्र साधना प्रयोग

यदि तांत्रिक दृष्टि से कमला साधना सम्पन्न की जाती है, तो निश्चय ही साधक आश्चर्यजनक उपलब्धियां अनुभव करने लगता है, तंत्र क्षेत्र के जानकार इस तंत्र को विशेष महत्व देते हैं, एक प्रकार से यह निश्चित है, कि इस गोपनीय तंत्र साधना को जो पूर्ण निष्ठा के साथ सम्पन्न कर लेता है, उसे जीवन में समस्त सुख, वैभव, और सौभाग्य प्राप्त हो जाता है, दरिद्रता तो हमेशा-हमेशा के लिए समाप्त हो जाती है, अनायास धन प्राप्ति की संभावनाएं बन जाती हैं, और साधक अपने जीवन में सभी दृष्टियों से पूर्णता प्राप्त करता हुआ सही अर्थों में वैभव युक्त बन जाता है।

> जिनके पास आचार अर्थात् संयमित, नियमित व्यवहार है, जिनके पास विचार अर्थात् सोचने समझने की बुद्धि है, ग्रहण करने की क्षमता है, जो कर्म भाव को सात्विक रूप से देखते हैं, जिनकी श्रद्धा, भक्ति तीव्र होती है, लक्ष्मी का वास वहीं होता है।
>
> —नारद संहिता–अ०-४/२९

१२-६-९१ लक्ष्मी अर्थात् कमला साधना हेतु अत्यन्त महत्वपूर्ण सिद्ध मुहूर्त है, इस दिन साधक को चाहिए कि प्रातःकाल उठ कर स्नान कर अपने पूजा स्थान में बैठ जांय, और फिर साधना प्रारम्भ करें, साधना प्रारम्भ करने से पूर्व पूजन सामग्री अपने सामने रख दें, जिसमें जलपात्र, केसर, अक्षत, नारियल, फल, दूध का प्रसाद, पुष्प, आदि हो, कमला साधना में अष्टगन्ध का प्रयोग ज्यादा महत्वपूर्ण माना गया है, अतः साधकों को चाहिए कि वे पहले से ही अष्ट गन्ध प्राप्त कर उसे घोल कर अपने सामने रख दें।

कमला यंत्र

तांत्रोक्त कमला साधना का आधार **"कमला यंत्र"** ही है, क्योंकि यह यंत्र पूर्ण रूप से प्रभाव युक्त और सिद्धि-दायक है, **कमला तंत्र** में यंत्र के बारे में बताया है, कि वह पूर्ण विधि के साथ षट्कोण सहित अष्ट दलों से युक्त महत्वपूर्ण यंत्र हो।

यह यंत्र ताम्र पत्र पर अंकित हो, साथ ही साथ "कमला यंत्र" **में बताया गया है, कि जब तक** "तंत्रोद्धार" **सम्पन्न यन्त्र न हो, तो उसका प्रभाव नहीं होता, तंत्रोद्धार में बारह तथ्य स्पष्ट किये हैं, बताया है**

पर नियंत्रण प्रदान करने वाला हो, ११-'ऐं' बीज के द्वारा वैभव प्रदान युक्त हो, तथा १२-रमा बीज के द्वारा सिद्धिदायक हो ।

वास्तव में ही कमला यंत्र पूर्ण रूप से सिद्ध करना अत्यन्त पेचीदा और श्रमसाध्य कार्य है, इस प्रकार का यंत्र पूजा स्थान में स्थापित कर साधना प्रारम्भ करें, ऐसा यंत्र जहां उनके स्वयं के जीवन के लिए तो सौभाग्यदायक रहेगा ही, आने वाली कई-कई पीढ़ियों के लिए भी यह यंत्र भाग्योदयकारक बना रहेगा।

साधना दिवस के दिन इस विशिष्ट यंत्र को जल से फिर दूध दही, घी, शक्कर, पचामृत से स्नान करा कर पुनः शुद्ध जल से धो कर लकड़ी के बाजोट पर पीला वस्त्र बिछा कर प्रतिष्ठापित करें, फिर साधक एक अलग पात्र में **"गणपति विग्रह"** की स्थापना करें, दूसरे एक बाजोट पर ताम्र पात्र में **"लघु नवग्रह यंत्र"** स्थापित करें, अब गणपति का पूजन कर नवग्रह पूजन तथा बीच में एक थाल रख कर उस पर नया पीला वस्त्र बिछा दें, कपड़े के ऊपर सिन्दूर से सोलह बिन्दियां लगायें, सबसे ऊपर चार बिन्दी, फिर उसके नीचे चार बिन्दियां लगा दें, इस प्रकार चार लाइनों में सोलह बिन्दियां स्थापित हो जाती हैं, तत्पश्चात् प्रत्येक बिन्दी पर एक लौंग तथा एक इलायची रख कर इसका अष्ट गन्ध से पूजन करें और फिर हाथ जोड़ कर लक्ष्मी का ध्यान करें, और **"कमला"** का आह्वान करें कि वे आपके स्थान पर अपनी शक्ति सहित प्रतिष्ठित हों, फिर अपने सामने **"ॐ शंखायै नमः"** मंत्र से शंख स्थापित करें और फिर पुष्प और अक्षत चढ़ा दें ।

कमला यन्त्र

कि इन तत्वों को सम्पन्न करके ही यंत्र का प्रयोग करना चाहिए ।

कमला तंत्र के अनुसार—

१-यह शुद्धता के साथ विजय काल में अंकित किया जाना चाहिए, २-इसका पूर्ण रूप से मंत्रोद्धार हो, ३-यह वाग् बीज से सम्पुटित हो, ४-लज्जा बीज के द्वारा इसका अभिषेक हो, ५-श्रीं बीज के द्वारा यह मंत्र सिद्ध हो, ६-काम बीज के द्वारा यह वशीकरण युक्त हो, ७-पद्मबीज के द्वारा यह प्रभाव युक्त हो, ८-जगत बीज के द्वारा यह शीघ्र सिद्धिदायक हो, ९-रूप बीज के द्वारा यह आकर्षण युक्त हो, तथा १०-मनुबीज के द्वारा मन

इसके पश्चात् मंत्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त कमला यंत्र को जहां सोलह बिन्दियां लगाई हुई हैं, उसके ऊपर पूर्ण श्रद्धा एवं विश्वास के साथ स्थापित कर दें और अष्ट गन्ध से इस यंत्र पर सोलह बिन्दियां लगा दें, ये सोलह बिन्दियां सोलह लक्ष्मी की प्रतीक हैं।

इसके बाद दोनों हाथों में पुष्प तथा अक्षत लेकर निम्न मंत्र से अपने घर में भगवती कमला का आह्वान करते हुए यंत्र पर पुष्प-अक्षत समर्पित करें।

कमला आह्वान मंत्र

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं कान्हेश्वरी सर्व-जन-मनोहारिणी, सर्व-मुख-स्तम्भिनी, सर्व-स्त्री पुरूषाकर्षिणी, बिन्दी शंखेनात्रोटय त्रोटय सर्वशत्रूना भंजय-भंजय द्वेषि दलय-दलय निर्दलय-निर्दलय सर्व-शत्रूणां स्तम्भय मोहनास्त्रेण द्वेषि उच्चाटय उच्चाटय सर्व वशं कुरु कुरु स्वाहा, देवि सर्व सिद्धेश्वरी कामिनी-गणेश्वरि इहागच्छ इह तिष्ठ ममचेषकल्पितां पूजां गृहाण मम सपरिवारं रक्ष रक्ष नमः।

इसके बाद साधक सामने शुद्ध घृत का दीपक लगावें उसका पूजन करें, तत्पश्चात् सुगन्धित अगरबत्ती प्रज्ज्वलित करें, ऐसा करने के बाद साधक इस यंत्र पर कुंकुम समर्पित करें, पुष्प तथा पुष्प माला पहनावें, अक्षत चढ़ावें, तथा नैवेद्य का भोग लगावें, सामने ताम्बूल, फल, और दक्षिणा समर्पित करें।

तत्पश्चात् **"कमला माला"** का पूजन करना चाहिए, यह कमला माला विशेष मंत्रों से सिद्ध और **सूर्य उपनिषद** से संगुफित होती है, जो कि वास्तव में ही अत्यन्त महत्वपूर्ण मानी गई है, इस माला को पहले से ही प्राप्त करके रख देना चाहिए।

इसके पश्चात् साधक घी के सोलह दीपक लगा लें, कमला मंत्र का जप प्रारम्भ करें, इसमें प्रथम माला का विधान अलग है, साधना सिद्धि में कमला के अर्पण हेतु

मरना तो एक दिन सभी को है, लेकिन जिस गृहस्थ के पास **'कमला सिद्धि'** नहीं है, उसे तो रोज-रोज तिल-तिल कर मरना पड़ता है।

-- शुक्ल-वेद-अ०-१६/४३

देवी के दस स्वरूपों में, भगवान विष्णु के पास कमला अर्थात् लक्ष्मी का प्रमुख स्थान है, जहां लक्ष्मी है वहां नारायण की कृपा भी सम्पूर्ण रूप से है।

"कमल बीज" विशेष महत्वपूर्ण हैं, १०८ कमल बीज प्रथम माला के मंत्र जप के समय, एक मंत्र बोल कर एक कमल बीज भगवती कमला को अर्पित करते रहें, इसके पश्चात् शेष १५ माला उसी स्थान पर आसन पर बैठ कर करें।

कमला मंत्र

।। ॐ ऐं ईं ह्रीं क्लीं हसौ जगत्प्रसूत्यै नमः ।।

जब सोलह माला मंत्र जप हो जाय, तब भगवती लक्ष्मी की विधि विधान के साथ आरती सम्पन्न करें, और उस यंत्र को पूजा स्थान में ही स्थापित कर लें, तथा कमला माला को इस यंत्र के सामने या यंत्र के ऊपर स्थापित कर दें, भविष्य में जब भी कमला मंत्र का जप करना हो, तो इसी माला से उपरोक्त मंत्र की एक माला फेरें।

कमला साधना साधक शुक्ल पक्ष के प्रत्येक प्रथम बुधवार को ऊपर दी गई विधि के अनुसार सम्पन्न कर सकता है, साधना हेतु बार-बार सामग्री बदलने की आवश्यकता नहीं है।

वस्तुतः यह मंत्र और यह तांत्रिक प्रयोग अपने आपमें ही दुर्लभ और महत्वपूर्ण है, साधकों को चाहिए कि वे अवश्य ही इस साधना को सम्पन्न करें और अनुभव करें कि आज के युग में भी साधनाएं कितनी शीघ्र और अचूक फल प्रदान करने में समर्थ हैं। ●

जीवन का नवीन निर्माण करना है

तो

कामाख्या तंत्र साधना

सम्पन्न कीजिये

शक्ति का साक्षात् लौकिक स्वरूप सिद्धि, इसी साधना से संभव है

कामाख्या साधना गुह्यतम साधना मानी गई है, इसकी सर्वोच्चता को प्राचीन काल से ऋषियों, मुनियों, योगियों, तांत्रिकों, साधकों ने मानी है, गृहस्थ तो क्या संन्यासी भी इस साधना को पूर्ण कर अपना जीवन धन्य समझते हैं, कामाख्या देवी निर्माण की मूल देवी है जिसमें शिव का शिवत्व, विष्णु का विष्णुत्व, चन्द्रमा का चन्द्रत्व, तथा सभी देवताओं का देवत्व समाहित हैं, साधकों के लिये पूज्य गुरुदेव के अमृत वचनों से सिंचित यह अनमोल उपहार, जो निश्चय ही प्रत्येक गृहस्थ, प्रत्येक पुरुष तथा स्त्री सम्पन्न कर अपने जीवन को नयी निर्माण प्रक्रिया दें।

कामाख्या देवी के सम्बन्ध में सामान्य रूप से साधकों के मन में बड़ी भ्रान्ति बनी हुई है, आद्या शक्ति देवी के इस स्वरूप की साधना के सम्बन्ध में न तो किसी प्रकार का स्पष्ट विधान पाठकों के समक्ष है और न ही इस सम्बन्ध में भ्रान्तियों का निराकरण स्पष्ट रूप से किया गया है, इस साधना को तन्त्र साधना का विशेष गुह्यतम रूप बता कर तन्त्र, मन्त्र के ज्ञाताओं ने साधकों को दूर रखने का ही प्रयास किया है, ऐसा क्यों ? आद्या शक्ति देवी के इस स्वरूप को क्यों छिपाया गया ?

कामाख्या देवी : पौराणिक कथा

पौराणिक मान्यता के अनुसार—भगवान विष्णु द्वारा सुदर्शन चक्र से सती की मृत देह को काट-काट कर जिन ५१

स्थानों पर गिराया गया वहां-वहां एक-एक शक्ति पीठ बन गया, इस मान्यता में सत्यता है कि ये ५१ स्थान शक्ति के स्रोत बिन्दु हैं, इन स्थानों पर जब साधक शुद्ध मन से, भक्ति भाव से जाता है, तो उसे अपने आप एक रहस्यमय शक्ति का आभास होने लगता है, अपने शरीर में एक तीव्र ऊर्जा सी बहने लगती है, स्थान का प्रभाव साधक को साधना के प्रति जाग्रत करता है, वर्तमान समय के आसाम प्रदेश में ब्रह्मपुत्र नदी के तट पर गोहाटी के कामगिरि पर्वत पर भगवती आद्या शक्ति कामाख्या देवी का पावन शक्ति पीठ है, यहां पर देवी का गुप्तांग गिरने से इस शक्ति पीठ को "योनि शक्ति पीठ" कहा गया है।

यह तो पौराणिक कथा है, वास्तविक स्थिति यह है कि यह शक्ति पीठ जीवन की मूल शक्ति-काम शक्ति, निर्माण शक्ति का पीठ है, और कामाख्या शक्ति काम-रूपिणि महाशक्ति है, ब्रह्मा का ब्रह्मत्व, विष्णु का विष्णुत्व, शिव का शिवत्व, चन्द्रमा का चन्द्रत्व और समस्त देवताओं का देवत्व इसी कामाख्या शक्ति में निहित है, शक्ति का शुद्ध लौकिक सांसारिक स्वरूप **"कामाख्या"** ही है।

कामाख्या शक्ति स्वरूप

कामाख्या देवी वरदायिनी, महामाया, नित्यस्वरूपा, आनन्ददात्री, देवी शक्ति है, **"गुप्त तन्त्र"** में लिखा है कि—कामाख्या ही सर्वविद्या स्वरूपिणी, सर्वसिद्धिप्रदात्री शक्ति है और जो कामाख्या के प्रति उदासीन रहता है उपेक्षा करता है, उसे कभी जीवन में आनन्द, सुख, सौभाग्य तथा सिद्धि प्राप्त नहीं हो पाती, कामाख्या चिन्ता मुक्त करने वाली, जीवन में धर्म, अर्थ, काम, और मोक्ष सभी स्वरूपों को पूर्ण रूप से प्रदान करने वाली देवी है।

"कौलकल्पतरु" में लिखा है, कि—कामाख्या साधना से मनुष्य तो क्या देव, दानव, गन्धर्व, किन्नर भी वश में हो जाते हैं।

"महेश्वरी तन्त्र" जो कि तन्त्र साहित्य में भगवान शिव द्वारा स्वरचित ग्रन्थ माना जाता है, लिखा है कि—

मन्त्रस्य पुरतो देवि ! राजानं सचिवादयः।
अन्ये च मानवाः सर्वं मेषादि जन्वो यथा ॥
मोहयेन्नगरं राज्ञः स हस्त्यश्व रथादिकम्।
उर्वश्याद्यास्तु स्वर्वेश्या राज पत्न्यादिकाः क्षणात् ॥
स्तम्भनं मोहनं देवि ! क्षोभणं जृम्भणं तथा।
द्रावणं भीषणं चैव विद्वेषोच्चाटने तथा ॥
आकर्षण च नारीणां विशेषेण महेश्वरि।
वशीकरणमन्यानि साधयेत् साधकोत्तमः ॥

अर्थात् कामाख्या मन्त्र साधना के सामने राजा, मंत्री, तथा अन्य सभी मनुष्य साधक के सामने भेड़ के समान वशीभूत हो जाते हैं, उच्च व्यक्ति तो क्या स्वर्ग की अप्सराएं भी कामाख्या साधना से वशीभूत हो जाती हैं, यह साधना स्तम्भन, मोहन, द्रावण, त्रासन, विद्वेषण, उच्चाटन, तथा पूर्ण वशीकरण करने में समर्थ है,

इसके प्रभाव से अग्नि, सूर्य, वायु और जल राशि सभी को स्तम्भित कर देने की शक्ति साधक में आ जाती है।

'मोहिनी तन्त्र' में लिखा है, कि कामाख्या मन्त्र का ज्ञाता कामदेव के समान हो जाता है, उसके लिए किसी को भी वशीकरण करना असाध्य नहीं रहता, और सबसे बड़ी बात यह है कि इस साधना में किसी प्रकार की हानि नहीं होती, अपितु सिद्धि की ओर ही वृद्धि होती है।

कामेश्वरी शक्ति : कामाख्या साधना

कामाख्या शक्ति साधना जीवन की रस साधना है, शरीर साधना है, लौकिक साधना है, जो जीवन में रसतत्व को हटा कर केवल मोक्ष भाव से साधना करते हैं, उन्हें जीवन में कभी सिद्धि प्राप्त नहीं हो सकती, जीवन सम्पूर्ण रूप से जीने की साधना कामाख्या साधना है, जिसमें साधक को अपने जीवन का पूर्ण आनन्द प्राप्त होता है, उसकी इच्छाओं की पूर्ति पूर्ण रूप से सहज संभव हो पाती है।

कामाख्या साधना कौन करें ?

- प्रत्येक विवाहित अथवा अविवाहित, पुरुष या स्त्री. दोनों को ही कामाख्या साधना जीवन में पूर्ण शारीरिक सुख प्राप्त करने हेतु अवश्य करनी चाहिए।
- जो भी साधक अपनी शारीरिक तथा मानसिक शक्तियों का पूर्ण विकास चाहता है, उसे कामाख्या शक्ति साधना अवश्य करनी चाहिए।
- अपनी इच्छानुसार जीवन में सहयोग चाहे वह मित्रों का हो, स्त्री का हो, अथवा अन्य व्यक्तियों का, इस सहयोग को पूर्ण रूप से प्राप्त करने के इच्छुक साधक को यह साधना करनी चाहिए।
- अपने आपको कामदेव के समान तीव्र वशीकरण युक्त बनाने हेतु, जिससे जो भी प्रभाव में आये वह पूर्ण रूप से वशीभूत हो जाय, उस हेतु यह साधना अवश्य करनी चाहिए।
- शारीरिक दृष्टि से कोई कमी हो, कोई विकृति हो, कोई बाधा हो, उसे दूर करने हेतु यह साधना अवश्य करनी चाहिए।
- यह साधना धन-धान्य, तथा पुत्र प्रदायक साधना है और दरिद्रता का सम्पूर्ण रूप से नाश होता है, इसमें कोई संदेह नहीं।
- इच्छा शक्ति, काम शक्ति, ज्ञान शक्ति तीनों में पूर्णता की साधना कामाख्या साधना ही है, जो सहज ही सिद्ध हो जाती है।
- कामाख्या साधना करने वाले साधक का लक्ष्मी स्वयं वरण करती है और सरस्वती उसके मुख में निवास करती है, ऐसा शास्त्रोक्त कथन है।

साधना कब करें ?

जैसा कि मैंने ऊपर स्पष्ट किया है, कि कामाख्या साधना ही जीवन की वास्तविक साधना है, लौकिक रूप से अर्थात् जीवन में पूर्णता प्राप्त करने वाला ही अपना पारलौकिक जीवन प्राप्त कर सकता है, यदि इच्छाएं अधूरी रहती हैं, तो मनुष्य को विकृत योनियों में आना पड़ता है, ये भूत, प्रेत, पिशाच इत्यादि अधूरे जीवन जिये प्राणी ही हैं।

यह साधना मूलरूप से रात्रि साधना है, और किसी भी बुधवार की रात्रि को प्रारम्भ कर तीन बुधवार की पूर्णता तक अर्थात् २१ दिन का प्रयोग सम्पन्न किया जाता है, तीनों बुधवारों को विशेष पूजन का विधान है।

साधना विधान-कामाख्या तन्त्र

इस साधना हेतु साधक विशेष सामग्री व्यवस्था पहले से ही कर लें, साधना सामग्री में कुंकुम, लाल पुष्प, कनेर के पुष्प, सिन्दूर, पचगव्य, पीला वस्त्र, मौली (कलावा) प्रमुख है।

साधना हेतु मूलरूप से मन्त्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त **कामाक्षी यन्त्र, काम रूप गुटिका,** तथा **सोलह कामवज्र** आवश्यक हैं।

Scanned by CamScanner

बुधवार के दिन रात्रि को साधक स्नान कर, शुद्ध पीली धोती पहने और बिना किसी से बातचीत किये सीधे अपने पूजा स्थान में प्रविष्ट हो कर अपना आसन ग्रहण करें, सर्वप्रथम गुरु का ध्यान करें, और गुरु पूजन प्रारम्भ करें, गुरु पूजन कर एक माला गुरु-मन्त्र का जप करें, इससे साधना काल में किसी प्रकार का विघ्न उपस्थित नहीं होता है, साधक अपनी साधना पूर्ण शक्ति के साथ सम्पन्न कर सकता है।

अब अपने सामने लकड़ी के पीठे पर पीला वस्त्र बिछा कर इस वस्त्र को मौली बांध दें, इस वस्त्र पर कामाक्षी यन्त्र स्थापित करें, इस यन्त्र के सामने सिन्दूर से एक गोला (वृत्त) बनाएं और इसके मध्य में एक त्रिकोण बना कर सिन्दूर से ही **"श्रीं श्रीं श्रीं"** लिखें, और इसके नीचे अपने नाम का पहला अक्षर लिखें, गोले के बाहर आठ दिशाओं में सोलह चावल की ढेरियां बना कर उस पर कामव्रज (कामबीज) स्थापित करें, ये सोलह बीज कामाख्या की सोलह शक्तियों के पीठ हैं, एक ओर दीपक अवश्य ही जला दें, अब देवी का ध्यान करें—

हे कामाख्या देवी ! आप सरस्वती तथा लक्ष्मी से युक्त हैं, शिवमोहिनी हैं, सम्पूर्ण ऐश्वर्य प्रदायनी हैं, डाकिनी, योगिनी, विद्याधरी, आदि समूह आपके आधीन हैं, सम्मोहन प्रदात्री, पुष्प धनुष-धारिणी, महामाया देवी मेरी पूजा (अपना नाम लें) स्वीकार करें।

अब यन्त्र पूजा में सर्वप्रथम कुंकुम चढ़ाएं फिर सिन्दूर और सुगन्धित लाल पुष्प चढ़ाएं, अब देवी को जल का अर्घ्य अर्पित करें तथा प्रसाद हेतु खीर का पात्र सामने रखें, अब देवी के मूल मन्त्र की पांच माला का जप करें।

कामाख्या मन्त्र

त्रीं त्रीं त्रीं हूं हूं स्त्रीं स्त्रीं कामाख्ये ! प्रसीद स्त्रीं स्त्रीं हूं हूं त्रीं त्रीं त्रीं स्वाहा ॥

यह मन्त्र नहीं, सभी तन्त्रों का सार है, इसीलिए इसे अत्यन्त दुर्लभ मन्त्र कहा जाता है, जिसके जप से सम्पूर्ण सिद्धियां प्राप्त हो कर तेजस्वी व्यक्तित्व बनता है, इस प्रकार पांच माला मन्त्र जप के पश्चात् इन्द्र की पूजा करें, और फिर सोलह पुष्प ले कर कामाख्या देवी की सोलह शक्तियों का पूजन करें, और प्रत्येक कामबीज पर शक्ति का नाम लेते हुए, ध्यान कर पुष्प अर्पित करें, ये सोलह शक्तियां हैं—

अन्नदा, धनदा, सुखदा, जयदा, रसदा, मोहदा, ऋद्धिदा, सिद्धिदा, वृद्धिका, शुद्धिदा, भुक्तिदा, मुक्तिदा, मोक्षदा, शुभदा, ज्ञानदा, कान्तिदा।

कामाख्या का पूजा विधान इन्हीं शक्तियों की पूजा से सम्पन्न होता है, अब साधक पुनः पांच माला मन्त्र जप कर कामख्या देवी को पुष्पांजलि अर्पित करें और यदि किसी विशेष इच्छा, कामना पूर्ति हेतु पूजा करता है, तो एक माला अतिरिक्त मन्त्र जप अवश्य करें।

पूर्ण पूजन के पश्चात् साधक पूरी रात्रि सभी सामग्री पूजा स्थान में ही रहने दें, खीर का प्रसाद अवश्य ग्रहण कर लें, दूसरे दिन प्रातः स्नान कर अपने पूजा स्थान में प्रवेश कर यन्त्र को तो पूजा स्थान में ही स्थापित करें, और कामरूप गुटिका को अपनी बांह पर बांध लें, स्त्रियां इसे काले धागे से अपनी कमर में बांधें।

प्रतिदिन एक माला मन्त्र जप अवश्य सम्पन्न करें, तथा अगले बुधवार को पुनः पूरा पूजा विधान सम्पन्न करें, इस हेतु साधक सभी सामग्री को सभांल कर रखें।

कामाख्या साधना जीवन की वह साधना है, जिससे साधक जीवन में सम्पूर्ण रस, आनन्द, प्राप्त कर सकता है, अपने जीवन की कमियों को दूर कर सकता है।

साधक में कामदेव स्वयं समाहित हो जाते हैं, जिससे साधक को वशीकरण शक्ति प्राप्त हो जाती है, और वह सबका प्रिय बन जाता है, जीवन के भोग-विलास उसे पूर्ण रूप से प्राप्त होते हैं।

'कामाख्या तन्त्र' में लिखा है, कि गृहस्थ धर्म, गृहस्थ व्यक्ति के लिए कामाख्या ही एक मात्र वरदायिनी अभीष्ट फलदात्री, सर्व विद्या स्वरूपिणी तथा सर्व सिद्धिदायिनी है, जो साधक कामाख्या के प्रति उदासीन रहता है, उसे जीवन में सुख प्राप्त हो ही नहीं सकता है। ●

Scanned by CamScanner

अब गर्व से कहो

मां लक्ष्मी ! हम तेरे याचक नहीं उपासक हैं

और

अब तो तुझे सिद्ध होना ही पड़ेगा

महालक्ष्मी कल्पवास

जिन तीन दिनों में लक्ष्मी भण्डार साधक के लिए खुल जाते हैं

लक्ष्मी—जो कि धन, वैभव, सौभाग्य की अधिष्ठात्री देवी है, उसकी पूजा, साधना, आराधना, उपासना, ध्यान व प्राप्ति की इच्छा हर व्यक्ति, स्त्री-पुरुष रखता है, जिसके पास निर्धनता है, वह धनवान बनना चाहता है, और जो धन से युक्त है, वह और अधिक धन प्राप्त करना चाहता है, लक्ष्मी एक ऐसी अमिट अमृत प्यास है, जो जितनी पिओ, इच्छा उतनी ही अधिक बढ़ने लगती है, जीवन की सारी आवश्यकताएं लक्ष्मी कृपा से ही पूर्ण होती हैं, लक्ष्मी के बिना जीवन नरक के समान हो जाता है।

ऐसा नहीं है कि इस कलियुग में ही लक्ष्मी का महत्व बढ़ गया है, लक्ष्मी की प्रधानता तो युगों-युगों से रही है, वेदों में भी लक्ष्मी की प्रशंसा में हजारों श्लोक लिखे गये हैं, महाभारत के रचियता महर्षि व्यास महाभारत में लिखते हैं, "**पुरुषा धनं वधः**" अर्थात् लक्ष्मी का अभाव तो मनुष्य के लिए मृत्यु का चिन्ह है।

"**भर्तृहरि संहिता**" में नीति वाक्य लिखा है, कि जिसके पास लक्ष्मी है, वही पंडित है, गुणवान है, विद्वान है, रूपवान है, आदर्श है, जिसके पास लक्ष्मी है, उसके पास सम्मान है, प्रतिष्ठा है।

लक्ष्मी के अभाव का तात्पर्य दरिद्रता है और शास्त्र कहते हैं, "सर्व कष्टा दरिद्रता" **अर्थात् दरिद्रता सब कष्टों को देने वाली है, जो दरिद्र है, उसके पास कष्ट एक के बाद एक आते ही रहते हैं।**

Scanned by CamScanner

लक्ष्मी ही क्यों ?

लक्ष्मी को चंचला भी कहा गया है, अर्थात् लक्ष्मी एक जगह स्थिर नहीं रह सकती, लक्ष्मी कहीं भी निवास नहीं कर सकती है, जो लक्ष्मी प्राप्ति हेतु कर्मशील है, लक्ष्मी उसी का वरण करती है, उसके पास न तो जात-पांत का नियम है, न ही रूप का नियम है, उसके पास तो एक ही नियम है, कि जो सच्चे अर्थों में उसकी पूजा साधना, आराधना सम्पन्न करेगा, लक्ष्मी उसी के पास रहेगी।

- लक्ष्मी केवल ऐसे घर में निवास कर सकती है, जहां उसकी नित्य पूजा, आराधना सम्पन्न होती हो।
- जहां कर्म को, परिश्रम को प्रधानता दी जाती है, आलस्य का त्याग किया जाता है, वहां लक्ष्मी निवास करती है।
- जहां आपस में प्रेम और स्नेह हो, मन में उत्साह, कामना हो, वहां लक्ष्मी स्थायी निवास रहता है।
- जहां सच्चाई, ईमानदारी, विश्वासपात्रता, दृढ़ निश्चय हो, वहां लक्ष्मी का निवास रहता है।
- लक्ष्मी योग्यता, चतुराई, श्रेष्ठ कर्मों से फलती-फूलती है, और 'ब्रह्मवैवर्त पुराण' के 'गणेश खण्ड' में लक्ष्मी का वचन है, कि मैं श्रेष्ठ कर्म करने वाले, नीति के अनुसार चलने वाले श्रेष्ठ व्यक्ति, चाहे वह गृहस्थ हो अथवा राजा, के घर में निवास करती हूं, जहां माता-पिता, गुरु, अतिथि का सत्कार नहीं, वहां मैं निवास नहीं कर सकती।
- दुराचारी, मिथ्यावादी, अविश्वासी, चिन्ताशील, पापी, कृपण, ऋणी के घर लक्ष्मी निवास नहीं करती, यदि ऐसा व्यक्ति थोड़ा धन कमा भी ले, तो थोड़े ही दिन में वह धन नष्ट हो जाता है।
- जहां पूजा, साधना, उपासना, व्यवहार कुशलता, कर्म है, वहां लक्ष्मी स्थायी रूप से रहती है, और लक्ष्मी युक्त जीवन ही श्रेष्ठ जीवन है, आदर्श जीवन है, जो लक्ष्मी प्राप्त कर उसका उचित उपयोग करता है, उसे श्रेष्ठ कार्यों में लगाता है, उसकी वृद्धि की ओर प्रेरित रहता है, वहां लक्ष्मी निरन्तर अपनी कृपा का प्रकाश देती रहती है।

लक्ष्मी पूजा—सिद्ध मुहूर्त

वर्ष में एक दिन अर्थात् दीपावली को लक्ष्मी पूजा, साधना का सिद्ध मुहूर्त है, और हर व्यक्ति अपने अनुसार इस दिन पूजा अवश्य करता है, इस पूजा साधना के भी कई भेद हैं, प्रकार हैं, उन्हें पूरी तरह से जानना आवश्यक है, बिना जाने-समझे पूजा करना, मन्त्र जप करना, ठीक उसी प्रकार है जैसे किसी को तैरना नहीं आता हो, और और वह बहती नदी में छलांग लगा दे, ऐसा व्यक्ति तो डूबेगा ही !

दीपावली का सिद्ध मुहूर्त धनत्रयोदशी से प्रारम्भ हो कर दीपावली की रात्रि तक, तीन दिन रहता है, लेकिन इसके अतिरिक्त भी कुछ ऐसे सिद्ध मुहूर्त हैं, जिनका प्रभाव चमत्कार से कम नहीं है, जिन साधकों ने साधनाएं की हैं उनके स्वयं के अनुभव निराले रहे हैं, ये सिद्ध मुहूर्त तो ऐसे मुहूर्त हैं, जैसे रेगिस्तान में, दरिद्रता के जंजाल में भटकते मनुष्य को मीठे जल का स्रोत मिल गया हो।

इस वर्ष ऐसा **'महालक्ष्मी कल्प'** भाद्रपद शुक्ल ६ शनिवार से भाद्रपद शुक्ल अष्टमी सोमवार, अर्थात् दिनांक १४ सितम्बर से १६ सितम्बर तक है, ये मुहूर्त ऐसा मुहूर्त है, जिसकी प्रतीक्षा तो इन्द्रादि देवता भी करते हैं।

"योग वशिष्ठ" **में नीति वाक्य लिखा है, कि सिद्ध मुहूर्त में जो कार्य संभव होता है, वही कार्य बिना मुहूर्त करने में सहस्त्र गुना अधिक परिश्रम लगता है।**

इस मुहूर्त की उतनी ही मान्यता है, जितनी दीपावली के मुहूर्त की, और ऐसा शुभ योग कई वर्षों में आता है, ये तीन दिन केवल साधारण दिनों

की तरह मत बिता देना, इन तीन दिनों में तो लक्ष्मी का आह्वान करना है, पूजन करना है, दिन-प्रतिदिन नया प्रयोग सम्पन्न करना है, इन तीन दिनों की सही साधना एक सुदृढ़, सुसम्पन्न, सुखी, सफल, भविष्य की नींव बनेगी, यदि कोई मूर्ख ये तीन दिन गंवा देता है तो बिल्कुल वैसा ही कार्य करता है, जिसे अपने सामने रास्ते पर चमकता हुआ हीरा पड़ा है, और वह आंख मींच कर अन्धों की तरह निकल जाता है, इन तीन दिनों का एक-एक क्षण कीमती है, और इन तीन दिनों में क्या करना है, क्या नहीं करना है, और किस प्रकार करना है, इसे विस्तार से समझ लेना आवश्यक है।

लक्ष्मी के ध्यान में मूल रूप से ही यही प्रार्थना रहती है, कि मेरे कार्य सिद्ध हों, मैं सही मार्ग पर चलते हुए उन्नति प्राप्त करूं, जिससे मेरे परिवार की सुख-शान्ति में वृद्धि हो।

लक्ष्मी के स्वरूप में शंख, चक्र, गदा, पद्म, मूल रूप से हैं, इसमें प्रत्येक वस्तु का विशेष प्रतीकात्मक महत्व है, शंख शुभता का प्रतीक है, जिससे यह तात्पर्य है कि धन को शुभ एवं मंगल कार्यों में ही प्रयुक्त किया जाना चाहिए, चक्र गति का प्रतीक है, जिस प्रकार चक्र निरन्तर चलता रहता है, उसी प्रकार आय का साधन भी निरन्तर चलते रहना चाहिए, जिसने अपनी गति रोक दी, उसके पास लक्ष्मी का आगमन रुक जाता है, धन को नये-नये कार्यों में लगाते रहना चाहिए, तभी वृद्धि हो सकती है, गदा कर्म का प्रतीक है, जो सही कर्म करेगा, निश्चित मार्ग पर चलेगा, उसे ही लक्ष्मी प्राप्त होती है, कमल सबसे सुन्दर प्रतीक है, कमल कीचड़ से उत्पन्न होता है, लेकिन उस पर एक भी दाग नहीं लगता है, अपनी सुन्दरता बनाये रखता है, इसी प्रकार गृहस्थ को भी संसार में रहते हुए लक्ष्मी की कामना करते हुए, स्वच्छ खिला हुआ रहना चाहिए, न कि अपने आपको जंजाल में डुबो दें, जो माया संसार में रहते हुए, माया का उपार्जन करते हुए भी विरक्त बना रहता है, वही लक्ष्मी का सच्चा उपासक है।

जैसा कि ऊपर स्पष्ट किया गया है, कि महालक्ष्मी साधना के ये तीन महत्वपूर्ण दिन अलग-अलग प्रयोग सम्पन्न करने में, प्रत्येक दिन विशेष प्रयोग सम्पन्न किया जायेगा, साधक इसी क्रम से चलते हुए पूजा विधान सम्पन्न करें।

प्रथम दिन पूजा विधान

भाद्रपद शुक्ल ६ शनिवार दिनांक १४-९-९१ को प्रारम्भ होने वाला प्रथम दिन लक्ष्मी के आह्वान का, पूजन का दिन है।

साधक प्रातःकाल जल्दी उठ कर स्नान कर अपना नित्य कर्म संध्या इत्यादि जो भी पूजन सम्पन्न करते हैं, वह पूजन अवश्य ही सम्पन्न कर दें, उसके पश्चात् इस विशेष पूजन का आयोजन करें।

लक्ष्मी पूजा में यह आवश्यक है कि सर्वप्रथम गणेश जी की पूजा की जाय, गुरु पूजा सम्पन्न की जाय, और फिर अनुष्ठान सम्पन्न किया जाय, क्रम के अनुसार चलने से ही साधना में अनुकूलता प्राप्त होती है।

प्रतिदिन पूजा में कुछ सामग्री तो काम में आयेगी ही, उस सामग्री की व्यवस्था तीन दिन के हिसाब से कर लेनी चाहिए, ये सामग्री निम्न हैं—

१-जलपात्र, २-गंगाजल, ३-दूध, ४-दही, ५-घी, ६-शहद, ७-शक्कर, ८-पंचामृत, ९-चन्दन, १०-केसर, ११-चावल, १२-पुष्प एवं पुष्प मालाएं, १३-घर में बना हुआ मिष्ठान-द्रव्य, १४-धूप, १५-दीप, १६-मौली, १७-नारियल, १८-सुपारी, १९-फल और २०-दक्षिणा।

विश्वामित्र प्रणीत पद्मावती महालक्ष्मी साधना

ऋषि विश्वामित्र को विद्वानों का भी विद्वान कहा जाता है, और शुद्ध साधनाओं के सम्बन्ध में उनके द्वारा

Scanned by CamScanner

जो ज्ञान वर्षा की गई, वे अपने आपमें पूर्ण सिद्ध एवं प्रामाणिक हैं, प्रत्येक साधना को ऋषि विश्वामित्र ने स्वयं सम्पन्न कर, उसे परख कर लिपिबद्ध कराया।

पद्मावती साधना महालक्ष्मी की सबसे अपूर्व साधना है, और यह साधना गृहस्थ व्यक्तियों के लिए अमृततुल्य है, व्यक्ति चाहे नौकरी पेशा हो अथवा व्यापारिक, लक्ष्मी से सम्पन्न हो अथवा निर्धन हो, लक्ष्मी को पूर्ण रूप से वश में करने के लिए सबसे सुन्दर यह साधना है।

साधना सामग्री

इस साधना में निम्न सामग्री आवश्यक है और प्रत्येक सामग्री का विशेष प्रयोग है—

१-विश्वामित्र प्रणीत पद्मावती चित्र, २-सियार सिंगी, ३-गोमती चक्र, ४-लघुशंख, ५-मधुरूपेण रुद्राक्ष, ६-त्रिवली हकीक, ७-कल्पवृक्ष वरद, ८-पद्मावती यन्त्र, ९-शत अष्टोत्तरी महालक्ष्मी सपर्या, १०-दुर्लभ विश्वामित्र चैतन्य पद्म, ११-महालक्ष्मी सिद्धि यन्त्र, १२-क्षीरोद्भुत कामधेनु विग्रह।

अपने पूजा स्थान को पूर्ण रूप से स्वच्छ कर दीवार पर सामने स्वास्तिक बनायें, और अपने सामने एक बाजोट बिछा कर उस पर पीला वस्त्र बिछा कर तांबे का कलश जल भर कर स्थापित करें, और कलश का पूजन करें, इसमें थोड़े चावल, सुपारी, दक्षिणा स्वरूप सवा रूपया, पुष्प डाल कर, पांच पीपल के पत्ते रख कर कलश के ऊपर नारियल स्थापित करें, नारियल स्थापित करने से पहले स्वास्तिक बना कर मौली लपेटें तथा गन्ध, अक्षत, पुष्प से पूजन करें, अब एक ओर घी का दीपक जलाएं और अग्नि देव का ध्यान करें।

सर्वप्रथम यदि पूजा स्थान में गुरु चित्र है तो गुरु पूजन कर गुरु का ध्यान करें, और गुरु मन्त्र का जप करें, फिर एक छोटे पात्र में गणपति प्रतिमा स्थापित करें और "गं गणपतयै नमः" मन्त्र का जप करते हुए गणपति पूजन सम्पन्न करें, जिससे सभी कार्य बिना विघ्न सुसम्पन्न हो सकें।

महत्वपूर्ण पूजा

अब अपने सामने एक दूसरे लकड़ी के पट्टे पर पीला वस्त्र बिछा कर बारह केसर की बिन्दियां लगायें, और उन पर चावल की ढेरियां बनावें, फिर प्रत्येक चावल की ढेरी पर एक-एक वस्तु रख दें, उदाहरण के लिए पहली ढेरी पर सियार सिंगी, दूसरी ढेरी पर गोमती चक्र आदि स्थापित कर दें, बारहवीं ढेरी के पास पद्मावती चित्र को स्थापित कर दें।

इसके पश्चात् भगवती महालक्ष्मी पद्मावती का ध्यान करें—

कान्त्या कांचन-सन्निभां हिम-गिरि-प्रख्यैश्चतुर्भिर्गजे-
र्हस्तोत्क्षिप्तहिरण्मयामृत-घटैरासिच्यमानांश्रियम्।
विप्राणां वरमब्ज-युग्ममभयं हस्तैः किरीटोज्ज्वलाम्,
क्षौमौबद्धनितम्ब विम्ब लसितां वन्दे रविन्द-स्थित॥

इसके बाद लकड़ी के पट्टे पर जो साधना के लिए बारह वस्तुएं रखी हैं, उनमें से प्रत्येक का पूजन करें, कहने का तात्पर्य यह है कि प्रत्येक ढेरी और उस पर रखे हुए पदार्थ का जल, कुंकुम, केसर, अक्षत, पुष्प आदि से पूजन करें, तत्पश्चात् बांएं हाथ में चावल ले कर केसर से रंग कर उन सब पर थोड़े-थोड़े चावल छिड़कते हुए उनकी प्राण प्रतिष्ठा करें।

प्राण प्रतिष्ठा

आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हों ॐ क्षं सं हंसः आवरण-सहिता महालक्ष्मी प्राणाः इह प्राणाः। आं ह्रीं महालक्ष्मी जीव इह स्थितः। आं ह्रीं महालक्ष्मी सर्वेन्द्रियाणि। आं ह्रीं महालक्ष्मी वांङ् मनश्चक्षु श्रोत्र-त्वक जिह्वा-घ्राण पद प्राण इहागत्य सुखं चिरं तिष्ठतु स्वाहा॥

इसके बाद उन बारह पदार्थों के सामने, प्रत्येक पदार्थ या ढेरी के सामने दीप प्रज्ज्वलित करें और प्रज्ज्वलित करते समय निम्न प्रकार से उच्चारण करते हुए दीपक स्थापित करें --

१-पद्मावती चित्र -पद्मावत्यै नमः दीपं स्थापयामि ।

१-सियार सिंगी-कालाग्नि रुद्राय नमः दीपं स्थापयामि ।

३-गोमती चक्र हेमपीठाय नमः दीपं स्थापयामि ।

४-लघु शंख–क्षीर सिन्धवे नमः दीपं स्थापयामि ।

५-मधुरूपेण रुद्राक्ष -ज्ञां ज्ञानाय नमः दीपं स्थापयामि ।

६-त्रिवली हकीक–ऐं ऐश्वर्यै नमः दीपं स्थापयामि ।

७-पद्मावती यन्त्र -पं पद्माय नमः दीपं स्थापयामि ।

८-कल्पवृक्ष वरद -कं कल्पवृक्षाय नमः दीपं स्थापयामि ।

९-शतष्टोत्तरी लक्ष्मी सपर्या–मं मणि हर्म्याय नमः - दीपं स्थापयामि ।

१०-विश्वामित्र चैतन्य - विं विद्या तत्वाय नमः दीप - स्थापयामि ।

११-महालक्ष्मी सिद्धि यन्त्र–श्रीं सिद्धलक्ष्म्यै नमः दीपं - स्थापयामि ।

१२-क्षीरोद्भुत कामधेनु विग्रह कं कामधेन्वै नमः दीप स्थापयामि ।

इसके बाद इन सभी बारह दुर्लभ पदार्थों की सामूहिक पूजा करे, सामूहिक पूजा में जल से, गंगाजल से, पंचामृत से, छींटे डालते हुए स्नान करावे और फिर केसर का तिलक करे, तत्पश्चात् उन पर अक्षत चढ़ावे और पुष्प समर्पित करे, इन सभी पदार्थों पर गुलाब का इत्र सम्भव हो तो समर्पित करे, और फिर इनके सामने रखे हुए सभी दीपक प्रज्जवलित कर दें, और सभी के सामने अलग-अलग अगरबत्ती लगावें, इसके बाद पद्मावती चित्र पर पुष्प का हार चढ़ावें और हाथ जोड़ कर निम्न प्रार्थना करें —

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं जूं सः अमृते अमृतोद्भवे अमृतेश्वरि अमृतवर्षिणि अमृत स्रावय स्रावय स्वाहा ।।

अब अपने दोनों हाथों में पुष्प भर कर देवी को अर्पित करें, और इस भावना के साथ अर्पित करें, कि "हे महालक्ष्मी ! मैं अपने जीवन को अमृत स्वरूप बनाने हेतु आपकी आराधना कर रहा हूं, मेरी समस्त कामनाएं पूर्ण करें", फिर देवी चित्र के आगे गन्ध, कुंकुम, अष्टगन्ध, अर्पित करें, नैवेद्य चढ़ाएं तथा निम्न बीज मन्त्र की ग्यारह माला "**कमल गट्टे की माला** से मन्त्र जप करें—

मन्त्र

।। ॐ ह्रीं ह्रीं क्लीं क्लीं नानोपलक्ष्मी श्री पद्मावती आगच्छ आगच्छ नमः ।।

मन्त्र जप के पश्चात् कपूर से समस्त देवताओं और भगवती लक्ष्मी की आरती करें, और आरती के ऊपर हाथ घुमा कर पूरे शरीर को स्पर्श करें, आरती के पश्चात् नैवेद्य परिवार के सभी सदस्यों को बांट कर स्वयं ग्रहण करें ।

सम्पूर्ण पूजन के पश्चात् सामग्री अपने पूजा स्थान में उसी पीले कपड़े में पोटली बांध कर रख दें ।

यह साधना जीवन में धन, यश, मान, पद, प्रतिष्ठा, और ऐश्वर्य अभिवृद्धि की साधना है, जीवन की कमियों को पूरा करने की साधना है, विश्वामित्र ने साधना के प्रारम्भ में लिखा है कि "चाहे भगवान शिव का त्रिशूल निरस्त हो जाय, चाहे विष्णु का सुदर्शन चक्र निस्तेज हो जाय, और चाहे ब्रह्मा का ब्रह्मास्त्र असफल हो जाय, पर यह साधना और इसका फल व्यर्थ नहीं होता ।"

द्वितीय दिवस

जहां पहला दिवस लक्ष्मी की मूल साधना, पद्मावती साधना सुसम्पन्न करने का है, वहीं दूसरे दिन दो छोटे-छोटे प्रयोग सम्पन्न करने भी आवश्यक हैं ।

Scanned by CamScanner

१-ऋण मोचन लक्ष्मी प्रयोग

दूसरे दिन प्रातः जल्दी उठ कर इस प्रयोग को सम्पन्न करना है, मुहूर्त की दृष्टि से प्रातः ५ बजकर ४८ मिनट से ६ बजकर ४१ मिनट का समय विशेष महत्वपूर्ण है।

सामग्री

ऋण मोचन लक्ष्मी तन्त्र फल (मन्त्र-सिद्ध), जल पात्र, अगरबत्ती, घी का दीपक।

मन्त्र

।। ॐ नमो ह्रीं श्रीं क्रीं श्रीं क्लीं क्लीं श्री लक्ष्मीममगृहे धनं चिंता दूर करोति स्वाहा ।।

पद्मावती यन्त्र

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं नमो भगवते पद्मावती
सर्व जन मोहनी सर्व कार्य
करणी विघ्न दूरणी विकट संकट
हरणी मम लक्ष्मी:
पूरय पूरय संकट
चूरय चूरय श्रीं
पद्मावती हूं फट्
ॐ विसा यंत्र नमः
ॐ

विधि

सर्व प्रथम साधक पूर्व की ओर मुंह करके बैठ जाय, सामने किसी पात्र में मन्त्र सिद्ध **'ऋण मोचन तन्त्रफल'** रख दें, और उस पर केसर से अपना नाम लिख दें, फिर उपरोक्त मन्त्र की पांच मालाएं फेरें इसके लिए **'मूंगे'** की अथवा **'स्फटिक'** की माला का प्रयोग किया जा सकता है।

जब मन्त्र जप पूरा हो जाय तब प्रयोगकर्त्ता स्वयं उस ऋण मोचन लक्ष्मी तन्त्रफल को दक्षिणा के साथ किसी गरीब या भिखारी को दे दें, कहा जाता है कि ऐसा करने से उस तन्त्रफल के साथ ही साथ ऋण बाधा तथा दरिद्रता भी दान में चली जाती है, और उसके घर में भविष्य में किसी प्रकार की दरिद्रता का वास नहीं रहता।

यदि भिखारी नहीं मिले तो प्रयोगकर्त्ता स्वयं किसी मन्दिर में जा कर दक्षिणा के साथ उस तन्त्रफल को भेंट कर दें।
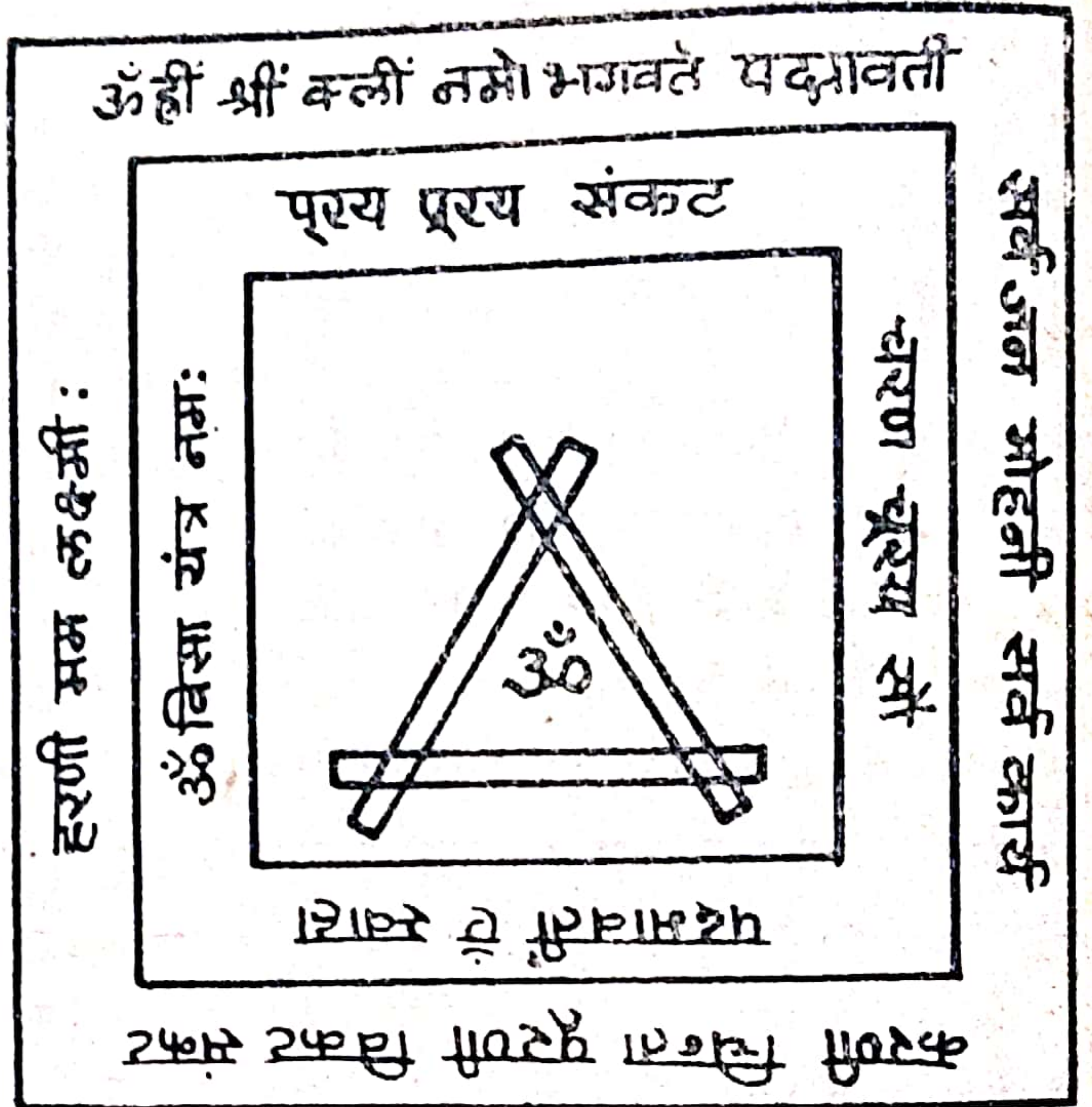
इस प्रकार करने से उसके जीवन में यदि कोई ग्रह बाधा या अन्य किसी प्रकार की कोई अशुभ बाधा योग होता है, तो वह समाप्त हो जाता है, उसके घर से दरिद्रता हमेशा-हमेशा के लिए समाप्त हो जाती है।

यह प्रयोग प्रातःकाल ही सम्पन्न करना है, इसका विशेष ध्यान रखें, प्रयोग के पश्चात् लक्ष्मी की आरती अवश्य सम्पन्न करें।

व्यापार वृद्धि एवं कार्य सिद्धि प्रयोग

लक्ष्मी का मूल आधार ही गति है, जहां वृद्धि नहीं, वहां लक्ष्मी का क्षय होने लग जाता है, इसीलिए एक बार धन उपार्जन करने के पश्चात् भी व्यक्ति को शान्त हो कर नहीं बैठ जाना चाहिए, कई बार कार्य में असफलताएं एक के बाद एक आती रहती है और उन्नति रुक जाती है।

महालक्ष्मी कल्प के दूसरे दिन सायंकाल को ६ बजे के बाद यह विशेष **'व्यापार वृद्धि एवं कार्य सिद्धि प्रयोग'** करने से साधक का भाग्य चाहे कितना ही रूठा हुआ क्यों न हो, उसे भाग्योदय अवश्य प्राप्त होता है।

सामग्री

जलपात्र, अगरबत्ती, घी का दीपक, **भाग्योदय यन्त्र** **शंखमाला** केसर।

मन्त्र

॥ ॐ ह्रीं धनधान्य समृद्धि दारिद्रय विनाशिनी महालक्ष्मी मम गृहे आगच्छ आगच्छ ह्रीं ह्रीं ॐ **नमः** ॥

विधि

साधक या प्रयोगकर्त्ता आसन बिछा कर पूर्व की ओर मुंह कर बैठ जाय, सामने पात्र में **भाग्योदय यन्त्र** रख दें, पहले उसे जल से धो लें, फिर पौंछ कर उस पर केसर का तिलक करें, और सामने स्थापित कर उसके सामने दूध का बना प्रसाद रखें, और अगरबत्ती तथा घी का दीपक प्रज्जवलित करें, फिर **शंखमाला** से उपरोक्त मन्त्र की पांच मालाएं फेरें।

इसके बाद प्रातःकाल होने पर इस यन्त्र को अपने घर के पूजा स्थान में, दुकान पर अथवा फैक्ट्री में स्थापित कर दें।

ऐसा करने पर उसके व्यापार में निरन्तर उन्नति होती रहती है, और जब तक वह यन्त्र दुकान में, कार्यालय या फैक्ट्री में, अथवा घर में स्थापित रहेगा, तब तक उसे निरन्तर सफलता प्राप्त होती रहेगी।

यह प्रयोग आजमाया हुआ है, और इस प्रयोग से सैकड़ों लोगों ने आश्चर्यजनक लाभ उठाया है।

तृतीय दिवस—धनाध्यक्ष कुबेर प्रयोग

महालक्ष्मी कल्पवास का यह तीसरा दिवस अपने जीवन में पूर्णता प्राप्त करने, लक्ष्मी का अक्षय भंडार बनाने हेतु, लक्ष्मी के प्रिय तथा देव कोषाध्यक्ष कुबेर की साधना करने का है, इस दिन जो कुबेर साधना विधि सहित सम्पन्न करता है, उस पर कुबेर की धन रूपी अमृत वर्षा निरन्तर होती रहती है।

इस विशेष मुहूर्त में तो कुबेर मन्त्र की ग्यारह माला जप करने से ही मन्त्र सिद्ध हो जाता है, इसमें साधक प्रातः जल्दी उठ कर स्नान कर, शुद्ध श्वेत वस्त्र धारण कर पूर्व की ओर मुंह कर बैठे, अपने सामने मन्त्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त **कुबेर यन्त्र** स्थापित करें, तत्पश्चात् एक घी का दीपक और अगरबत्ती लगाएं, यन्त्र की पूजा इस लेख के प्रारम्भ में दी गई सामग्री से करें, और गुड़ का नैवेद्य चढ़ाएं, तत्पश्चात् **कमल गट्टे की माला** से कुबेर मन्त्र का पांच अथवा ग्यारह माला मन्त्र जप करें।

मन्त्र

।। ॐ यक्षाय कुबेराय वैश्रवणाय धन धान्यादि पतयें धन धान्य समृद्धि मे देहि दापय स्वाहा ।।

अब मन्त्र जप के पश्चात् लक्ष्मी आरती सम्पन्न कर यन्त्र के सामने चढ़ाया हुआ नैवेद्य ग्रहण करें, यन्त्र को उसी स्थान पर स्थापित रखें।

लक्ष्मी साबर प्रयोग

लक्ष्मी साधना के इस अनूठे कल्पवास का समापन साधक साबर मन्त्र प्रयोग से सम्पन्न करे, तो उसके लिए हर दृष्टि से उचित रहता है, इस विशेष साबर मन्त्र का प्रयोग साधक कभी भी कर सकता है, कैसा भी संकट आ पड़े, साबर मन्त्र बाण की तरह कार्य करता है।

रात्रि को प्रथम पहर के पश्चात् लाल वस्त्र धारण कर अपने मस्तक पर कुंकुम से तिलक लगाये, और सामने एक **मोती शंख** स्थापित कर उसे भी कुंकुम से रंग दें, तेल का दीपक जलाएं और इस मन्त्र की एक माला का जप करें।

मन्त्र

।। ॐ नमो पद्मावती पद्मतनये लक्ष्मी दायिनी वांछा भूत प्रेत विन्ध्यवासिनी सर्व शत्रु संहारिणी दुर्जन मोहिनी ऋद्धि सिद्धि वृद्धि कुरु कुरु स्वाहा ॐ क्लीं श्रीं पद्मावत्यै नमः ।।

यदि पूजा स्थान में कोई हलचल हो तो चिन्ता नहीं करें, मन्त्र जप करते रहें।

तीन दिन का यह महानुष्ठान, महालक्ष्मी कल्प पूरा होने का उद्यापन, गुरु मन्त्र का जप, पूजन, गुरु आरती तथा गुरु से मानसिक आशीर्वाद प्राप्त कर सम्पन्न करने का है।

इन तीन दिनों में जो साधक अपने आपको गुरु के प्रति पूर्ण रूप से समर्पित करते हुए विधि विधान सहित यह सारा कल्प प्रयोग सम्पन्न कर देता है, तो उसका जीवन ऐसा हो जाता है, मानो वह साक्षात् कल्प वृक्ष के नीचे बैठा है, और उसकी इच्छाएं अपने आप पूर्ण हो रही हैं। ●
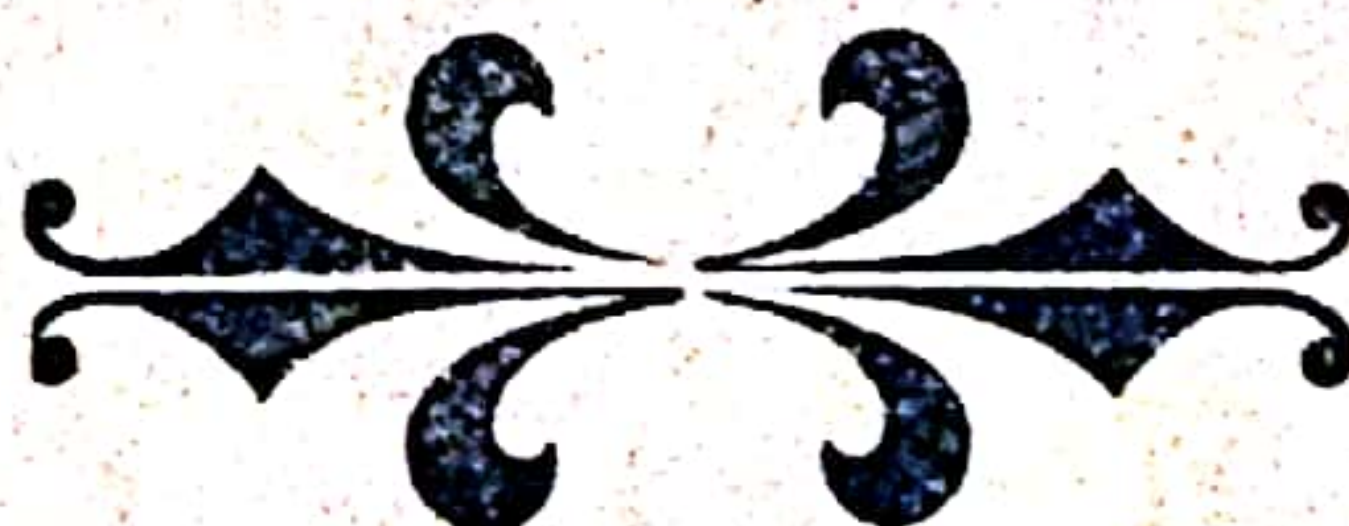
हम धनवान क्यों नहीं हैं

क्योंकि

हमने लक्ष्मी की साधना को सही ढंग से जाना ही नहीं

क्या गरीबी पूर्ण रूप से हट सकती है ? क्या इसमें लक्ष्मी साधना का ही योगदान है ? लक्ष्मी साधना के क्या नियम हैं ? —ये प्रश्न हर साधक के मन में उठते हैं ।

इसी से सम्बन्धित सम्पूर्ण व्याख्या, वैज्ञानिक विवेचन, प्रयोगात्मक उपाय पहली बार ।

मनुष्य की सारी भाग-दौड़ का केन्द्र बिन्दु लक्ष्मी-प्राप्ति ही है, सामान्य तौर पर लक्ष्मी से तात्पर्य धन प्राप्ति माना जाता है, जो कि गलत है, धन-प्राप्ति लक्ष्मी का सबसे बड़ा स्वरूप अवश्य है, यह धन की अधिष्ठात्री देवी है, जिसके बिना संसार का कोई भी काम-काज नहीं चल सकता, मनुष्य तो क्या देवताओं को भी अपने देवत्व कार्य हेतु लक्ष्मी की आराधना करनी ही पड़ती है, इन्द्र भी लक्ष्मी कृपा पर आश्रित हैं, जगत पालनकर्ता श्री विष्णु भी लक्ष्मी के सहयोग से यह कार्य करते हैं.।

लक्ष्मी के स्वरूपों की गणना करना संभव ही नहीं है, जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में लक्ष्मी का प्रभाव है, यह धन के अतिरिक्त यश अर्थात् प्रसिद्धि, उन्नति, कामना पूर्ति की देवी है, यह सौभाग्य, सुन्दरता, श्रेष्ठ गृहस्थ जीवन, सहयोग की देवी है, जिनकी कृपा बिना गृहस्थ जीवन, पारिवारिक जीवन सही रूप से चल ही नहीं सकता, इसीलिए हमारे शास्त्रों में पत्नी को गृह लक्ष्मी कहा गया है, लक्ष्मी भोग की अधिष्ठात्री देवी है, इसकी सिद्धि से ही जीवन में भौतिक सुख-सुविधाओं की प्राप्ति होती है ।

Scanned by CamScanner

एक सामान्य सा उदाहरण है, कि हम किसी को आदर देते हैं, तो उसके नाम के आगे 'श्री या श्रीमान्' शब्द का सम्बोधन करते हैं, 'श्री' का अर्थ है लक्ष्मी, और श्रीमान् का अर्थ है, लक्ष्मी युक्त, अतः यह स्पष्ट है, कि जो 'श्री' सम्पन्न है, लक्ष्मीवान है, वही सम्माननीय है, चाहे वह योगी हो, साधु हो, अथवा कोई श्रेष्ठ पुरुष।

हम गरीब क्यों हैं ?

कुछ धारणाएं हमारे मन में इस प्रकार बिठा दी गई हैं, कि हम उनका बिना विवेचन किये अनुसरण करते जाते हैं, इसका सबसे प्रमुख उदाहरण है कि अधकचरे शास्त्रों में धन को मनुष्य का सबसे बड़ा शत्रु बताया गया है, जब कि इससे बड़ा कोई असत्य हो ही नहीं सकता, धन तो मनुष्य का सबसे बड़ा मित्र है, जो कायर हैं, नपुंसक हैं, आलसी हैं, वे ही धन की निन्दा करते हैं, जो स्वयं कुछ नहीं कर सकते, वे ही इसकी निन्दा करते हैं, धन के बिना न तो बड़े-बड़े मन्दिर बन सकते हैं, न ही कोई सामाजिक कार्य, धार्मिक कार्य संभव हो सकता है, समाज के लिए वही व्यक्ति कुछ कर सकता है, जो धन से पूर्ण युक्त हो, आश्रम हो चाहे स्कूल, मन्दिर हो अथवा अस्पताल, सबके मूल में धन ही एक मात्र तत्व है। जिसके माध्यम से यह सब संभव है, इस धारणा को मन से पूरी तरह निकालना होगा, तभी लक्ष्मी की सच्चे मन से साधना संभव है, पहले मानसिक गुलामी की इन जंजीरों को तोड़ना ही होगा, पहले मन की इस गरीबी का त्याग करना पड़ेगा।

क्या गरीबी हट सकती है ?

यह प्रश्न, हर व्यक्ति के मन में उठता है, कि क्या मेरी गरीबी, दरिद्रता का नाश हो सकता है ? क्या मैं धनवान हो सकता हूं ? जिससे मैं जीवन की सभी सुख-सुविधाओं का भोग कर सकूं, अपने जीवन को नया स्वरूप दे सकूं, यह पूर्ण रूप से संभव है, इसके लिए कुछ महत्वपूर्ण बातों को समझना आवश्यक है, केवल परिश्रम से ही कोई धनपति नहीं बन सकता और केवल शिक्षा प्राप्ति से ही लक्ष्मीपति नहीं बन सकता, आज उच्च शिक्षा प्राप्त किये हुए व्यक्तियों को बेरोजगार देखते हैं, घोर परिश्रम करने वाले मजदूरों को देखते हैं, तो यह तथ्य स्पष्ट हो जाता है, एक व्यापारी दिन भर भाग-दौड़ करता है तो भी व्यापार में विस्तार नहीं होता, जब कि दूसरा कम परिश्रम में ही देखते ही देखते व्यापार को बढ़ा लेता है, क्या यह केवल भाग्य का ही खेल है ? ऐसा नहीं है, सम्पन्नता, लक्ष्मी वृद्धि, भाग्य और परिश्रम दोनों के संयोगों का नाम है, और इस संयोग को केवल एक ही विधि द्वारा संयुक्त किया जा सकता है, और वह विधि है, **"लक्ष्मी साधना"**।

'लक्ष्मी तन्त्र' जो कि लक्ष्मी तथा इन्द्र के संवाद का ग्रन्थ है, जिसमें इन्द्र ने लक्ष्मी कृपा का उपाय पूछा है, उसमें लक्ष्मी ने कहा है कि—

शास्त्रीय मा चरन्नेवं नित्य नैमित्ति कान्मकम् ।
मदारा धनकामः संशश्वत् प्रीणाति मां नरः ।।

अर्थात् जो नित्य शास्त्रोक्त विधि से नैमित्तिक कर्म का आचरण करते हुए मेरी आराधना की इच्छा करते हुए साधना करता है, उसी मनुष्य पर मैं पूर्ण रूप से प्रसन्न होती हूं।

गरीबी हटाने का एक मात्र उपाय लक्ष्मी साधना ही है, निश्चित अनुष्ठान से, निश्चित विधि से, सात्विक मन से, पूर्ण प्रीति से जो लक्ष्मी-साधना, अनुष्ठान सम्पन्न करता है, वह अपने जीवन की दरिद्रता को मिटा सकता है, लक्ष्मी-साधना के फलस्वरूप लक्ष्मी के ५१ स्वरूपों के समग्र लाभ स्वतः ही मिलने लग जाते हैं, क्योंकि लक्ष्मी केवल एक रूप में प्रसन्न नहीं होती, उसकी कृपा तो साधक को सम्पूर्ण रूप से प्राप्त होती है, और उसके सभी स्वरूपों का आनन्द उसे मिलता ही है।

लक्ष्मी साधना के अनेक विधान हैं, जिससे सामान्य साधक भ्रमित हो जाता है, उसे समझ में

Scanned by CamScanner

नहीं आता कि वह साधना क्रम कहां से प्रारम्भ करे ? उसकी प्रामाणिक विधि क्या है ? यह प्रश्न गूढ़ नहीं हैं, इसे जटिल बना दिया गया है, जो साधक किसी दूसरे ब्राह्मण से पूजा करवा कर, अनुष्ठान करना चाहता है, उससे हजार गुना अधिक लाभ स्वयं पूजा-साधना करने से प्राप्त होता है।

पत्रिका साधकों हेतु कुछ सरल उपाय आगे स्पष्ट किये जा रहे हैं, जिन्हें नियमित रूप से सम्पन्न अवश्य करना चाहिए, पूरे परिवार में लक्ष्मी आराधना, साधना, सम्पन्न होनी चाहिए—

१- बीजात्मक लक्ष्मी प्रयोग

यह प्रथम प्रयोग है, जो लक्ष्मी के उद्भव को जागृत करता है, जहां घोर दरिद्रता का निवास हो, वहां सर्वप्रथम यही अनुष्ठान सम्पन्न करना चाहिए, जब लक्ष्मी प्रगट होगी तभी तो विस्तार संभव है, यह प्रयोग कार्तिक मास के किसी भी दिन प्रारम्भ किया जा सकता है।

पूजा के प्रथम दिवस को साधक स्नान कर, शुद्ध पीले वस्त्र धारण कर अपने सामने लक्ष्मी चित्र पर पुष्पाहार चढ़ाएं, अगरवत्ती और घी का दीपक जला कर सामने **बीजात्मक लक्ष्मी स्वरूपा यन्त्र** स्थापित करें, उसके चारों कोनों पर केसर से चार बिन्दी लगायें, और तत्पश्चात् स्वयं के तिलक करें, अपने हांथ में जल ले कर अपने कुलदेवता को साक्षी रखते हुए संकल्प करें कि,— "मैं अपनी दरिद्रता को दूर करने हेतु बीजात्मक लक्ष्मी साधना सम्पन्न कर रहा हूं, लक्ष्मी बीज स्वरूप में मेरे घर में प्रवेश करें।"

अब साधक बीजात्मक लक्ष्मी मन्त्र का उच्चारण करते हुए एक-एक **'मन्त्र सिद्ध कमलबीज'** इस यन्त्र पर अर्पित करें, इस प्रकार १०८ **कमलबीज** का अर्पण करना है।

लक्ष्मी बीज मन्त्र

।। ऐं श्रीं ह्रीं क्लीं ।।

अब अपने हाथ में लाल पुष्प ले कर लक्ष्मी को अर्पित करें, तथा पुनः अपने आसन पर बैठ कर चार माला का जप और करें, मन्त्र जप पूरा हो जाने के पश्चात् लक्ष्मी आरती सम्पन्न करें।

लक्ष्मी बीज मन्त्र का जप एक माला तो प्रतिदिन अवश्य ही सम्पन्न करना चाहिए, ऐसा प्रयोग करने से स्पष्ट परिणाम शीघ्र प्राप्त होता है, लक्ष्मी का उद्भव होने लगता है और जब लक्ष्मी का उद्भव होता है तो दरिद्रता का नाश होना प्रारम्भ होता है।

२- ज्येष्ठा लक्ष्मी अनुष्ठान

'शारदा तिलक' में लिखा है, कि आद्या शक्ति लक्ष्मी की वृद्धि हेतु ज्येष्ठा लक्ष्मी जैसा सुन्दर एवं श्रेष्ठ कोई उपाय ही नहीं है, यदि त्रैलोक्य मोहिनी गौरी को सिद्ध करना है, तो ज्येष्ठा लक्ष्मी अनुष्ठान सम्पन्न करना चाहिए, इसकी आठ शक्तियां साधक के जीवन में आठ प्रकार के फल प्रदान करती हैं।

किसी भी बुधवार को यह प्रयोग प्रारम्भ किया जा सकता है, और उस दिन प्रातः जल्दी उठ कर पहले अपना नित्य पूजा क्रम सम्पूर्ण कर गुरु मन्त्र की एक माला का जप कर यह विशिष्ट प्रयोग सम्पन्न करना चाहिए।

स्वयं में कर्म शक्ति जागृत कर लक्ष्मी वृद्धि करने का यह अनुष्ठान अनोखा है, इस अनुष्ठान को सम्पन्न करने वाला व्यक्ति अपने स्वयं के बलबूते पर लक्ष्मी सिद्धि प्राप्त करता है, वृद्धि करता है, बुधवार के दिन प्रातः अपने सामने **मन्त्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त ज्येष्ठा लक्ष्मी यन्त्र** एक पात्र में स्थापित करें, इसमें सर्वप्रथम आठ शक्तियों का पूजन होता है, इन आठ शक्तियों की सिद्धि हेतु **'आठ शक्ति चक्र'** इस पात्र के चारों ओर स्थापित करें और प्रत्येक शक्ति का पूजन कुंकुम, केसर, चावल तथा पुष्प से

Scanned by CamScanner

सम्पन्न करें।

ये आठ शक्तियां—लोहिताक्षी, विरूपा, कराली, नीललोहिता, समदा, वारूणी, पुष्टि, अमोघा हैं।

प्रत्येक का पूजन कर मध्य में स्थित **ज्येष्ठा लक्ष्मी यन्त्र** पर एक **वक्ष्य मान चक्र** स्थापित कर ज्येष्ठा लक्ष्मी-विश्व मोहिनी, का पूजन सम्पन्न करें, स्वयं के तिलक लगा कर पांच पुष्पों का अर्पण सम्पन्न करें, और फिर धूप दीप से पूजन सम्पन्न करें, ज्येष्ठा लक्ष्मी का मन्त्र, साधक स्वयं उसी स्थान पर बैठे-बैठे **कमलगट्टे की माला** से सम्पन्न करें।

ज्येष्ठा लक्ष्मी मन्त्र

।। ऐं ह्रीं श्रीं आद्यलक्ष्मी स्वयं भुवै
ह्रीं ज्येष्ठायै नमः ।।

इस प्रकार पांच मालाएं मन्त्र जप पूरे हो जाने के पश्चात् अपना स्थान छोड़ें और अगले बुधवार को पुनः यह प्रयोग सम्पन्न करें, पूर्ण सिद्धि सात बुधवार तक प्रयोग सम्पन्न करने से ही प्राप्त होती है, ज्येष्ठा लक्ष्मी धन में वृद्धि, विस्तार की देवी है, और इसकी साधना से जीवन में, कार्यों में आर्थिक वृद्धि होती ही है।

३- इन्द्रकृत धनदा प्रयोग

लक्ष्मी के साधकों में इन्द्र का नाम सबसे ऊपर है, लक्ष्मी कृपा से ही इन्द्र देवताओं के अधिपति हैं, और सभी सुख प्राप्त हैं, धनदा प्रयोग, इन्द्रकृत लक्ष्मी प्रयोग है, जिसको सम्पन्न करने से साधक लक्ष्मी-कृपा से इन्द्र के समान शक्ति प्राप्त करने में समर्थ रहता है, इस विशेष प्रयोग से लक्ष्मी तथा सरस्वती दोनों की पूर्ण कृपा प्राप्त होती है, वाणी सिद्धि तथा लक्ष्मी सिद्धि का इससे अधिक सुन्दर कोई प्रयोग नहीं है।

शुभ मुहूर्त में प्रसन्न मन से यह प्रयोग प्रारम्भ करना चाहिए, निश्चित प्रयोग दिवस के दिन साधक पूर्ण रूप से प्रसन्न मन से अपने सामने **इन्द्राक्षी धनदा यन्त्र** स्थापित करें, इस साधना में यन्त्र के चारों ओर आठ दिशाओं में धनदा के **आठ शक्ति तन्त्र हेम्भोज** स्थापित करें **और** ये मन्त्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त हेम्भोज धनदा लक्ष्मी के आठ स्वरूप लक्ष्मी, पद्मालया, हरिप्रिया, कमला, अब्जा, चंचली, ललिताक्षी, विमला के स्वरूप हैं, और इन सभी स्वरूपों की सिद्धि साधक को प्राप्त होती है।

सर्वप्रथम धनदा देवी का ध्यान करते हुए, अपने हाथ में जल लेकर अपनी विशेष कामना-पूर्ति, सिद्धि हेतु सकल्प बोलें, यहां साधक अपनी विशेष कामना को अष्टगन्ध से एक कागज में लिख कर धनदा यन्त्र के नीचे अवश्य रखें, केवल कुंकुम और पुष्प से आठ शक्तियों का पूजन करें।

ॐ लक्ष्म्यै नमः, ॐ पद्मालयायै नमः, ॐ हरिप्रियायै नमः, ………………यथा।

अब साधक धनदा देवी को नैवेद्य अर्पित करें तथा इस विशेष अनुष्ठान में आवश्यक **'रतिप्रिया सिद्ध माला'** से मन्त्र जप सम्पन्न करें।

धनदा मन्त्र

।। धं ह्रीं श्रीं रतिप्रिये स्वाहा ।।

'इन्द्र संहिता' के अनुसार पांच हजार मन्त्र जप इस विशेष माला से सम्पन्न करने से साधक की सभी अभिलाषाएं, इच्छाएं पूर्ण होती हैं, अतः साधक को अपने अनुष्ठान क्रम को इस प्रकार निर्धारित करना चाहिए, कि वह एक मास में पाँच हजार मन्त्र जप अवश्य ही सम्पन्न कर दे।

पूजन का यह विधान सम्पन्न कर यह माला अपने गले में धारण कर ले, इस प्रकार आराधना करने से लक्ष्मी तथा सरस्वती दोनों का ही घर में स्थायी निवास होता है. और इन्द्र के समान सम्पूर्ण सुख प्राप्त होते हैं, समस्त मनोकामना निश्चित रूप से पूर्ण होती है।

ऊपर दिये गये तीनों प्रयोग लक्ष्मी साधना के, अटूट फल प्राप्ति के सरल प्रयोग हैं, जिन्हें लक्ष्मी कृपा के इच्छुक साधक को अवश्य ही सम्पन्न कर अपने जीवन को नया स्वरूप देना चाहिए। ●

Scanned by CamScanner

पीताम्बरा शक्ति

बगलामुखी साधना

जिसने भी सिद्ध की

उसने

भय, शत्रुबाधा, कलह से मुक्ति पाई

देवी बगलामुखी का स्थान शक्ति के दस महाविद्या स्वरूपों में प्रमुख है, शत्रु बाधा से मुक्ति, कलह-नाश, तिरस्कार से छुटकारा, भय-मुक्ति हेतु बगलामुखी देवी की साधना से तीव्र कोई साधना नहीं है।

आज हम यह विशेष तांत्रोक्त पद्धति साधकों हेतु स्पष्ट कर रहे हैं, यह गुह्यतम पद्धति से साधना गुरु भक्ति में पूर्ण ध्यान रखने वाले, गुरु पूजन करने वाले साधक भाइयो के लिए है, इस तीव्र साधना का आधार गुरु भक्ति ही है।

प्रत्येक व्यक्ति जीवन को अपनी इच्छानुसार, आनन्द से जीना चाहता है, और यह आनन्द, तुष्टि प्राप्त करने के लिए निरन्तर इच्छा रखता है, और प्रयत्न भी करता रहता है, लेकिन क्या सब जगह ऐसा ही होता है? इसका यही उत्तर मिलेगा, कि ऐसा संभव नहीं हो पाता, वास्तविक जीवन में तो कष्ट आते हैं, बार-बार बाधाएं उपस्थित होती हैं, इनके कारणों की व्याख्या करने से इनकी शान्ति नहीं होती, इनको दूर करने के उपाय से ही आनन्द की रस धारा बह सकती है।

अमृत या विष

एक बड़े बर्तन में सुस्वादु, श्रेष्ठ दूध भरा है, और आप इसका पान करना चाहते हैं, इस दूध में खटाई की कुछ बूंदें डाल दें तो क्या होगा? सारे के सारे पात्र का दूध अपना गुण खो देगा, फट जायेगा, पीने के लायक नहीं रहेगा, बाहर फेंकने के अलावा क्या चारा है?

अमृत में भी विष की बूंदें डाल दें, तो पूरा का पूरा अमृत विष समान हो जाता है, आपने बहुत प्रयत्न कर

Scanned by CamScanner

जीवन में अमृत का कलश भरा, आनन्द का प्रवाह करने का प्रयत्न किया, लेकिन किसी ने विष की बूंदें डाल ही दीं ।

इसी प्रकार जीवन में चार बड़े विष हैं, जिनके रहते जीवन में आनन्द आ ही नहीं सकता, ये चार जीवन विष हैं—१-शत्रु बाधा, २-कलह, ३-तिरस्कार, ४-भय ।

एक महापुरुष का लिखना है, कि शत्रु तो चौबीस घंटे आप पर सवार रहता है, मित्र से तो आप कभी-कभी मिलते हैं, लेकिन यदि आपका कोई शत्रु है तो आपका चिन्तन हर समय उसकी ओर रहेगा, आपका विचार प्रवाह बदल जायेगा, हर समय आशंकित रहेंगे, ऐसा जीवन क्या जीवन है ?

आपको कोई पुरस्कृत न करे, तो कोई अन्तर नहीं पड़ता, लेकिन कोई आपका तिरस्कार करे, कोई आपको तुच्छ समझे, तो यह मरण समान ही है ।

कलह जीवन की सभी कलाओं का नाश कर देता है, कलह शारीरिक क्षति तो पहुंचाता ही है, मानसिक दृष्टि से भी सामान्य व्यक्ति कमजोर हो जाता है, वह कुछ संरचनात्मक कार्य करना चाहता है, लेकिन यदि नित्य प्रति कलह का सामना करना पड़े, चाहे वह कलह परिवार से हो, अथवा बाहर के लोगों से, जीवन का आनन्द तत्व तो समाप्त हो ही जाता है ।

चौथी महत्वपूर्ण विपरीत स्थिति भय है, यह भय शत्रु से हो सकता है, अपने अधिकारी से हो सकता है, अपने व्यापारिक प्रतिस्पर्द्धी से हो सकता है, भय के तो सैंकड़ों प्रकार हैं, इसमें से एक भी भय यदि व्यक्ति को है तो सामान्य रूप से जीवनयापन नहीं कर सकता है ।

यह चारों स्थितियां विष हैं, और विष को अपने जीवन से दूर करने का, इस विष को नष्ट करने का एक उपाय है, वह है गुरु भक्ति, गुरु भक्ति से गुरु कृपा, गुरु कृपा से साधना में सिद्धि ।

बगलामुखी साधना

बगलामुखी देवी का स्वरूप ही दस महाविद्याओं में सबसे निराला है, त्रिनेत्री देवी अपने हाथ में मुग्दर, वज्र, पाश और शत्रु की जीभ लिये तीव्रतम रूप में तीनों लोकों को स्तम्मित कर देने वाला स्वरूप है ।

ऐसा तीव्र स्वरूप और इस तीव्र स्वरूप में सोलह शक्तियां समाहित हैं, ये १६ शक्तियां हैं—

१-मंगला, २-स्तम्भिनी, ३-जृम्भिणी, ४-मोहिनी, ५ वश्या, ६-चला, ७-वलाका ८-भूधरा, ९-कल्मषा, १०-धात्री, ११-कलना, १२-कालाकर्षिणी, १३-भ्रामिका, १४-मन्दगमा, १५-भोगस्था एवं १६-भाविका ।

यह तीव्र साधना विशेष उद्देश्य की पूर्ति हेतु की जानी चाहिए, ऊपर लिखे जो चार दोष हैं, उनके निवारण हेतु विशेष संकल्प लेकर यह प्रयोग करना चाहिए ।

कई सामान्य साधक जिन्हें पूजन विधि का पूर्ण ज्ञान नहीं होता, उनसे साधना में गलतियां हो सकती हैं, अतः शास्त्रों में विधान है, कि यदि पहले गुरु पूजन कर साधना की जाय, तो कोई भी साधनात्मक दोष नहीं रहता ।

बगलामुखी साधना किसी भी रविवार को प्रातः प्रारम्भ करें, विस्तृत साधना के तीन खण्ड हैं, इसमें प्रातः काल, मध्याह्न काल, तथा सायंकाल की साधना का विशेष क्रम है, और इस तांत्रोक्त साधना को इसी रूप में सम्पन्न करने से पूर्ण सिद्धि प्राप्त होती है ।

प्रातःकालीन क्रम

साधक स्नान कर शुद्ध श्वेत वस्त्र धारण कर अपने पूजा स्थान में बैठे और शिव स्वरूप गुरु का ध्यान करे, यहां यह बात प्रमुख है, कि आप अपने मस्तक सहस्रार चक्र में गुरु को स्थापित कर रहे हैं ।

Scanned by CamScanner

गुरु ध्यान

श्वेतं श्वेतविलेपमाल्यवसनं वामेन रक्तोत्पलं
विभ्रत्या प्रिययेतरेण तरसा श्लिष्टं प्रसन्नाननम् ।
हस्ताभ्यामभयं वरं च दधतं शम्भुस्वरूपं परं
हालालोहितलोचनोत्पलयुगं ध्यायेच्छिर:स्थं गुरुम् ।।

अर्थात्, "मस्तक ब्रह्मरन्ध्र के सहस्रार चक्र में, मेरे गुरु के देवता भगवान शिव विराजमान हैं; उनकी अंग कान्ति श्वेत है, श्वेत अनुलेपन, श्वेत वस्त्र और श्वेत पुष्प माला धारण किये हैं, दोनों हाथ अभय और वर की मुद्राओं से सुशोभित हैं, मुख पर सहज प्रसन्नता है, नेत्र हमारे दुःख रूपी विष का पान करने से लाल हैं, ऐसे सद्गुरु देव को मैं बार-बार ध्यान करता ।"

अब साधक अपने सामने एक पात्र में **गुरु पादुका** स्थापित करें, गुरु पादुकाओं पर चन्दन और पुष्प अर्पित करें तथा अपने दोनों हाथ जोड़ कर गुरु पादुका मन्त्र का दस बार जप करें—

गुरु पादुका मन्त्र

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्स्फ्रें ह स क्ष म ल व र यूं स ह क्ष म ल व र यीं ह्सौं स्हौं श्रीनिखिलेश्वरानन्द श्रीनाथपादुकां पूजयामि ।।

अब अपने हाथ में जल लेकर निम्न मन्त्र से आगे की जाने वाली साधना जप का समर्पण करें—

जप समर्पण मन्त्र

गुह्यातिगुह्यगोप्ता त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम् ।
सिद्धिर्भवतु मे देव त्वत्प्रसादात् सुरेश्वर ।।

अर्थात्, "देव ! सुरेश्वर !! आप गोपनीय से भी अति गोपनीय वस्तु के गोप्ता (संरक्षक) हैं, हमारे द्वारा किये गये इस जप को ग्रहण करें, प्रभो ! आपकी कृपा से मुझे सिद्धि प्राप्त हो ।"

जप समर्पण के पश्चात् यह चिन्तन करें कि गुरुदेव के चरणारविन्दों से अमृत की धारा झर रही है, और उसमें मैं आपादमस्तक निमग्न हो गया हूं ।

अब देवी की मूल पूजा का क्रम प्रारम्भ होता है, अपने सामने ताम्र पात्र में **विशिष्ट मन्त्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त बगलामुखी यन्त्र** स्थापित करें, और अपने हाथ में जल लेकर निम्न संकल्प कर विनियोग करें—

संकल्प मन्त्र

ॐ अस्य श्रीबगलामुखी महामन्त्रस्य नारद ऋषि: वृहतीश्छन्द: श्रीबगलामुखी देवता ह्लीं बीजं स्वाहा शक्ति: मम सकलकामनासिद्ध्यर्थे जपे विनियोग: ।

अब यन्त्र-पूजन, पुष्प, कुंकुम, रक्त चन्दन, अबीर, गुलाल, मौली से सम्पन्न करें, देवी के समक्ष नैवेद्य अर्पित करें।

अब देवी की सोलह शक्तियों का पूजन प्रारम्भ होता है, इस हेतु निम्न एक-एक मन्त्र पढ़ते हुए सोलह बगलामुखी शक्तियों की स्थापना स्वरूप **सोलह बगलामुखी शक्ति चक्र** अपने सामने यन्त्र के बाहर एक वृत्त रूप में (गोल घेरे में) स्थापित करें—

ॐ मंगलायै नम: ॐ बलकायै नम:
ॐ कालाकर्षिण्यै नम: ॐ स्तम्भिन्यै नम:
ॐ भूधरायै नम: ॐ भ्रामिकायै नम:
ॐ जृम्भिण्यै नम: ॐ कल्मषायै नम:
ॐ मन्दगमनायै नम: ॐ मोहिन्यै नम:
ॐ धात्र्यै नम: ॐ भोगस्थायै नम:
ॐ वश्यायै नम: ॐ कलनायै नम:
ॐ भाविकायै नम: ॐ चलायै नम:

प्रत्येक देवी शक्ति के आगे सुपारी रखें और अक्षत तथा सिन्दूर अर्पित करें।

जैसा कि पूर्व में लिखा है, बगलामुखी देवी का पूजन तीन क्रम में प्रातः मध्याह्न एवं सायंकाल करना है।

प्रातःकालीन ध्यान

गम्भीरां च मदोन्मत्तां स्वर्णकान्तिसमप्रभाम्।
चतुर्भुजां त्रिनयनां कमलासनसंस्थिताम्॥
मुग्दरं दक्षिणे पाशं वामे जिह्वां च वज्रकम्।
पीताम्बरधरां सान्द्रदृढपीनपयोधराम्॥
पीतभूषणभूषांगीं धृतचन्द्रार्धशेखराम्।
रत्नसिंहासनासीनामम्बां त्रैलोक्यसुन्दरीम्॥

मैं त्रिभुवन सुन्दरी माता बगलामुखी को जो रत्न सिंहासन पर कमल के आसन पर विराजमान है, गंभीर स्वभाव एवं मुख पर तीव्रता है, तीन नेत्र और चार भुजाओं वाली देवी बगलामुखी दाहिने भाग के दो हाथों में मुग्दर और पाश वाम भाग के दो हाथों में जिह्वा एवं वज्र लिये हुए है, मस्तक पर अर्द्ध चन्द्राकार मुकुट है, मैं भक्तों पर कृपा करने वाली ऐसी देवी बगलामुखी को अपनी सम्पूर्ण भक्ति से प्रणाम करता हूं!!

ध्यान मन्त्र का ग्यारह बार जप कर **पीताम्बरा शक्ति माला** से एक माला बगलामुखी गायत्री का जप करें—

बगला गायत्री मन्त्र

ॐ ह्लीं ब्रह्मास्त्रायै विद्महे। स्तम्भनबाणायै धीमहि। तन्नो बगला प्रचोदयात्॥

अब इसी माला से बगला के मूल मन्त्र का जप सम्पन्न करें, यहां यह आवश्यक है, कि प्रातःकालीन क्रम में जितनी माला का जप करें, मध्याह्न क्रम तथा सायंकालीन क्रम में भी उतनी ही माला का जप करना आवश्यक है, साधकों को चाहिए, कि पांच माला मन्त्र जप प्रत्येक क्रम में अवश्य सम्पन्न करें।

बगलामुखी मन्त्र

ॐ ह्लीं बगलामुखी सर्वदुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय जिह्वां कीलय कीलय बुद्धिं विनाशय ह्लीं ॐ॥

मध्याह्न साधना क्रम

इस क्रम में सबसे पहले मध्याह्न ध्यान मन्त्र का ग्यारह बार जप करें, फिर एक माला बगला गायत्री मन्त्र, शक्ति पूजन तथा बगलामुखी मन्त्र की पांच माला का जप करें।

मध्याह्न ध्यान मन्त्र

दुष्टस्तम्भनमुग्रविघ्नशमनं दारिद्र्यविच्छेदनं
भूभृद्भीशमनं चलन्मृगदृशां चेतः समाकर्षणम्।
सौभाग्यैकनिकेतन मम दृशोः कारुण्यपूर्णेक्षणे
शत्रोर्मारणमाविरस्तु पुरतो मातस्त्वदीयं वपुः॥

करुणापूर्ण नेत्रों वाली माता बगलामुखी मेरे समक्ष आपका वह स्वरूप प्रगट हो जो शत्रुओं का मारण, दुष्टों का स्तम्भन, भयंकर विघ्नों का निवारण, दरिद्रता का विनाश, राजभय का शमन करने वाला है, मेरे नेत्रों के लिए सौभाग्य का एक मात्र निकेतन है, तुम्हारे चरणों में सादर प्रणाम!!

सायंकालीन साधना क्रम

इस क्रम में सबसे पहले सायंकालीन ध्यान मन्त्र का ग्यारह बार जप करें, फिर एक मालाव गला गायत्री मन्त्र, शक्ति पूजन तथा बगलामुखी मन्त्र की पांच माला का जप करें—

सायंकालीन ध्यान

मातर्भंजय मद्विपक्षवदनं जिह्वाचलं कीलय
ब्राह्मीं मुद्रय मुद्रयाशु धिषणामग्रे गतिं स्तम्भय।
शत्रूं चूर्णय चूर्णयाशु गदया गौरांगि पीताम्बरे
विघ्नौघं बगले हर प्रणमतां कारुण्यपूर्णेक्षणे॥

(शेष भाग पृष्ठ संख्या २० पर)

करुणा भरे नेत्रों वाली, पीताम्बरा माता बगलामुखी मेरे शत्रु पक्ष का मुखभंजन कर दो, उनकी वाणी और बुद्धि को कुंठित कर दो, शत्रु वर्ग की उन्नति प्रगति को रोक दो, तथा मेरे उन शत्रुओं को अपने गदा से चूर-चूर कर दो, हे माता! तुम इस भक्त के समस्त विघ्नों का हरण कर लो।

इस प्रकार साधक त्रिकाल पीताम्बरा शक्ति साधना सम्पन्न कर अपने सारे जप को देवी को सर्मपित कर दें और अपने कार्य में सिद्धि हेतु प्रार्थना करें।

समर्पण मन्त्र

गुह्यातिगुह्यगोप्त्री त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम्।
सिद्धिर्भवतु मे देवि त्वत्प्रसादात् सुरेश्वरि॥

बगलामुखी साधना का प्रभाव साधक को अवश्य प्राप्त होता है, और मैंने अपने अनुभव में यह पाया है कि बड़े से बड़ा संकट हो जाय और साधक स्नान कर एक माला बगलामुखी मन्त्र का जप कर ले तो उसे समस्या, के संकट के हल हेतु मार्ग प्राप्त हो जाता है।

ऊपर जो साधना विवरण दिया गया है, यदि साधक तीन रविवार तक इसी क्रम में साधना सम्पन्न कर ले तो उसे बगलामुखी सिद्धि पूर्ण रूप से प्राप्त हो जाती है, जिस प्रकार अग्नि का स्पर्श होते ही कपूर जल जाता है, उसी प्रकार जहां बगलामुखी पीताम्बरा की स्थापना होती है, उस साधक के जीवन से शत्रु दोष, भय दोष, राज्य बाधा दोष, तिरस्कार दोष, कलह दोष भस्म हो जाते हैं। ●

Scanned by CamScanner

मां जगदम्बे

तेरे सहारे है मेरा यह संसार

ये विशेष सिद्धि प्रयोग

मां कृपा अमृत फल

"मां" तो अपने भक्तों को अपने पुत्रों के समान ही प्यार, कृपा का अमृत फल देती है, पुत्र ही अपने गर्व में 'मां' से विमुख हो जांय और जीवन में दुःख प्राप्त करते रहें, तो इसमें 'मां' दुर्गा का क्या दोष ?

भगवती दुर्गा के अनुष्ठान सरल हैं, और निश्चित कार्य सिद्धि प्रदान करने वाले हैं, साधक इन मन्त्रों के पीछे की भावना को समझते हुए, समर्पित होकर अनुष्ठान सम्पन्न करें, तो जीवन धन्य हो जाता है।

कलियुग में गणेश और दुर्गा साधना ही महत्वपूर्ण मानी गयी है, और यदि सही प्रकार से इन से सम्बन्धित अनुष्ठान सम्पन्न किये जांय, तो निश्चय ही तुरन्त कार्य सिद्धि होती है।

महायोगी स्वामी चंडीदास जी भगवती दुर्गा के अनन्य उपासक हैं, और मां जगदम्बा उनके सामने प्रत्यक्ष उपस्थित होकर भोजन ग्रहण करती हैं, मुझे इस महापुरुष से मिलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था, और मेरे द्वारा जिज्ञासा करने पर उन्होंने भगवती दुर्गा से सम्बन्धित कुछ गोपनीय रहस्य स्पष्ट किये थे, जिसके माध्यम से वर्तमान में दुःखी एवं संतप्त मानव अपनी समस्याओं से मुक्ति पाकर पूर्ण सफलता प्राप्त कर सकता है।

शारदीय नवरात्रि से चैत्र नवरात्रि तक का समय "चैतन्य काल" कहा जाता है, यह समय शिव और शक्ति दोनों की साधना का है, ऐसे शिव-शक्ति समय में नीचे दिये गये प्रयोगों को सम्पन्न किया जाय, तो साधक को अवश्य ही सफलता प्राप्त होती है।

इन प्रयोगों के लिए पांच सावधानियां अपेक्षित हैं—

१–इनमें से किसी भी साधना में सवा लाख मन्त्र जप होना आवश्यक है।

२–दिनों की संख्या निर्धारित नहीं है, पर फिर भी यदि यह मन्त्र जप या अनुष्ठान, ११ या

२१ दिनों में सम्पन्न हो जाय तो ज्यादा उचित रहता है ।

३-साधना काल में ब्रह्मचर्य व्रत का पूर्ण पालन करें, और रात्रि को ही मन्त्र जप सम्पन्न करें ।

४-मन्त्र जप के समय पीली धोती पहिनें, घी का दीपक लगावें और सम्बन्धित यन्त्र सामने रख कर उसकी तरफ दृष्टि रखते हुये, स्फटिक माला से मन्त्र जप सम्पन्न करें ।

५-साधना काल में एक समय भोजन करें ।

उपरोक्त सभी नियम सामान्य हैं, और सामान्य से सामान्य व्यक्ति भी सम्बन्धित साधना सम्पन्न कर आश्चर्यजनक परिणाम प्राप्त कर सकता है, इस साधना को पुरुष या स्त्री कोई भी सम्पन्न कर सकता है, रजस्वला समय में पांच दिनों तक स्त्रियां साधना या मन्त्र जप सम्पन्न न करें, इसके बाद पुनः मन्त्र जप प्रारम्भ कर सकती हैं, इससे अनुष्ठान अवधि खंडित नहीं होती है ।

१-समस्त प्रकार की कार्य की सिद्धि के लिए

अपने सामने **'कार्य सिद्धि यन्त्र'** तथा **'सिंहवाहिनी दुर्गा चित्र'** (मन्त्रसिद्ध) स्थापित कर **'स्फटिक माला'** से निम्न मन्त्र का जप करें, और ग्यारह अथवा इक्कीस दिनों में सवा लाख मन्त्र जप करने पर मनोवांछित कार्य में निश्चय ही सिद्धि प्राप्त होती है, सवा लाख मन्त्र जप करने के बाद उस यन्त्र को अपनी भुजा पर बांध लें, तो निश्चय ही मन में चाही गई कार्य सिद्धि हो जाती है ।

मन्त्र

ॐ जातवेदसे सुनवाम सोममरातीयतो निदहाति वेदः ।
सनः वर्षदति दुर्गाणि विश्वानावेव सिन्धुदुरीतात्यग्निः ॥

२- अकाल मृत्यु निवारण के लिए

अपने सामने **अपमृत्युनिवारण यन्त्र** स्थापित कर उसको बराबर देखते हुए, निम्न मन्त्र का सवा लाख जप करने पर अकाल मृत्यु या मृत्यु भय समाप्त हो जाता है, और यदि मरणासन्न व्यक्ति के लिए भी यह प्रयोग सम्पन्न किया जाय, तो वह पुनः स्वस्थ हो कर उठ खड़ा होता है ।

मन्त्र

शूलेन पाहि नो देवि पाहि खड्गेन चाम्बिके ।
घण्टास्वनेन नः पाहि चापज्याभिः स्वनेन च ॥

मन्त्र जप करने के बाद सम्बन्धित यन्त्र मरणासन्न रोगी को या व्यक्ति को पहिना दिया जाय, तो निश्चय ही उसका मृत्यु भय समाप्त हो जाता है ।

३-प्रत्येक साधना में पूर्ण सफलता प्राप्ति के लिए

यदि साधना में बार-बार असफलता प्राप्त हो रही हो, और बाधाएं आ रही हों तो साधना से पूर्व भगवती दुर्गा से अनुमति मांग कर निम्न मन्त्र का सवा लाख जप **"साधना सिद्धि यन्त्र"** के सामने सम्पन्न कर उस यन्त्र को अपनी भुजा पर बांध लें, और फिर साधना करें, तो उसे निश्चय ही साधना में सफलता प्राप्त होती है, और वह सिद्ध होने की सामर्थ्य प्राप्त कर लेता है—

मन्त्र

शरणागतदीनार्त परित्राण परायणे ।
सर्वस्यार्तिहरे देवि नारायणि नमोऽस्तुते ॥

४-निर्विघ्नता से कार्य सिद्धि के लिए

शादी, विवाह, व्यापार या कोई भी कार्य निर्विघ्न सम्पन्न हो जाय, इसके लिए उस कार्य के प्रारम्भ से पूर्व यदि निम्न मन्त्र के सवा लाख मन्त्र जप **"कार्य सिद्धि यन्त्र"** के सामने सम्पन्न कर घर का मुखिया अपने गले में धारण कर कार्य प्रारम्भ करे, तो उस कार्य में किसी प्रकार की बाधा नहीं आती है, और वह कार्य पूर्णता के साथ सम्पन्न हो जाता है ।

Scanned by CamScanner

मन्त्र

करोतु सा नः शुभ हेतुरीश्वरी ।
शुभानि भद्राण्यभिहन्तु चापदः ।।

५-मनचाहा पति प्राप्ति के लिए

कई कारणों से यदि लड़की का विवाह नहीं हो रहा हो, या सगाई-शादी में बाधाएं आ रही हों, अथवा मनोवांछित पति प्राप्त नहीं हो रहा हो, तो निम्न मन्त्र का जप **"कामदेव यन्त्र"** के सामने सम्पन्न कर उस यन्त्र को कन्या के गले में धारण करा दें, तो कुछ ही दिनों में उसे मनचाहा पति प्राप्त हो जाता है, उनकी तरफ से स्वीकृति मिल जाती है और शीघ्र ही कार्य सिद्धि हो जाती है ।

मन्त्र

एवं देव्या वरं लब्ध्वा सुरथः क्षत्रियर्षभः ।
सूर्याज्जन्म समासाद्य सावर्णिर्भविता मनुः ।।

६- समस्त प्रकार के शत्रुओं को समाप्त करने के लिए

यदि शत्रु बढ़ गये हों और प्राणों का खतरा हो, अथवा व्यापार में बाधाएं पहुंचा रहे हों तो अपने सामने **"शत्रु स्तम्भन यन्त्र"** रख कर उस पर नजर रखते हुए निम्न मन्त्र का अनुष्ठान करें, तो निश्चय ही कार्य सिद्धि होती है और शत्रु समाप्त हो जाते हैं—

मन्त्र

सर्वाबाधाप्रशमनं त्रैलोक्यस्याखिलेश्वरि
एवमेव त्वया कार्यमस्मद्वैरिविनाशनम् ।।

मन्त्र जप के बाद सम्बन्धित यन्त्र मंगलवार के दिन श्मशान में जाकर फेंक देना चाहिए, या जंगल में जाकर जमीन में गाड़ देना चाहिए, तो निश्चय ही वह मुकदमों में सफलता तथा शत्रुओं पर पूर्ण विजय प्राप्त करने में सफल हो पाता है ।

७-समस्त प्रकार के रोग शान्ति के लिए

यदि घर में रोग हो या कोई न कोई रोगी बना रहता हो, अथवा किसी पारिवारिक व्यक्ति को ऐसा रोग हो गया हो कि वह समाप्त ही नहीं हो रहा हो तो **"रोग मुक्ति यन्त्र"** सामने रख कर निम्न मन्त्र का जप अनुष्ठान के रूप में किया जाय, तो निश्चय ही वह रोग मुक्त हो जाता है ।

मन्त्र

रोगानशेषानपहंसि तुष्टा
रुष्टा तु कामान् सकलानभीष्टान्
त्वामाश्रितानां न विपन्नराणां
त्वामाश्रिता ह्याश्रयतां प्रयान्ति ।।

अनुष्ठान समाप्त होने के बाद वह यन्त्र या तो रोगी के गले में पहिना दे, या घर में किसी स्थान पर टांग दे, तो घर से रोग समाप्त हो जाता है, और व्यक्ति निरोग हो कर जीवन में पूर्ण सुख एवं आनन्द प्राप्त करने में सफल हो पाता है ।

ऊपर मैंने भगवती दुर्गा से सम्बन्धित कुछ महत्वपूर्ण प्रयोग दिये हैं, इनमें से प्रत्येक अनुष्ठान में सवा लाख जप करना चाहिए, सामने शुद्ध घी का दीपक व अगरबत्ती लगी रहनी चाहिए, आसन पीले रंग का सूती होना चाहिए, तथा साधक एक समय ही सात्विक भोजन ग्रहण करे, इस प्रकार नियमपूर्वक अनुष्ठान करने से निश्चय ही कार्य सिद्धि होती है ।

जहां भावना और आस्था प्रबल होती है, साधक की पुकार होती है, मन्त्र का अनुष्ठान होता है, वहां मां भगवती अपने सहस्र हाथों से कृपा के मोती बिखेर देती है । ●

सिद्ध से सिद्धतम

मेरा अनुभूत प्रयोग

तांत्रोक्त श्री वांछा कल्पलता सिद्धि

तन्त्र का उद्गम भगवान शिव के श्रीमुख से उत्पन्न अमृत वचन और उनके कार्य रूप का तत्व है, तन्त्र सम्पूर्ण विश्व की हर क्रिया-प्रक्रिया से सम्बन्ध अवश्य रखता है, ऐसे अपार तन्त्र सागर से पत्रिका साधकों के लिए एक अनमोल मोती—

तन्त्र का संसार विराट एवं अद्भुत है, यह ऐसा सागर है, जिसमें गोता लगाने वाले हर साधक को विशेष सूझ-बूझ से कार्य करना होता है, तन्त्र का तात्पर्य है वह विशेष प्रक्रिया जिसके सहयोगी मन्त्र और यन्त्र हों।

आपने पुस्तकीय ज्ञान से शुद्ध मन्त्र प्राप्त कर लिया, यन्त्र भी बना लिया, लेकिन यदि साधना प्रक्रिया में ही कोई दोष है, तो समझ लीजिये लाभ के स्थान पर हानि ही है, क्योंकि तन्त्र का सम्बन्ध केवल शरीर से ही नहीं अपितु मन, देह, प्राण, कुण्डलिनी सबसे होता है, ऐसी स्थिति में सद्गुरु अपने शिष्यों को विशेष प्रक्रिया का अर्थात् तन्त्र का ज्ञान कराते हैं, उसकी उंगली पकड़ कर मार्ग दिखाते हैं, जिससे जो उसके लिए सही है, वही करे, और तन्त्र प्रक्रिया में गलती से बचे, इस गुह्यतम शास्त्र में गृहस्थ व्यक्तियों के लिए वास्तव में बहुत कम प्रयोग हैं, क्योंकि गृहस्थ साधना के सभी नियमों का पूर्ण रूप से पालन नहीं करता, उसका अपनी चित्त वृत्तियों पर नियंत्रण नहीं रहता।

ऐसा ही एक दुर्लभ तांत्रोक्त प्रयोग है, "वांछा कल्पलता सिद्धि प्रयोग" जो केवल गृहस्थ साधकों के लिए उपयुक्त है, और अपनी इच्छाओं की पूर्ति हेतु अवश्य ही सम्पन्न करना चाहिए।

वांछा कल्पलता

'वांछा' शब्द का तात्पर्य है, मनुष्य की इच्छा, अभिलाषा, कामना और 'कल्पलता' शब्द का मतलब

Scanned by CamScanner

है, कल्प वृक्ष जैसे महत्वपूर्ण दैवी वृक्ष से ।

इसका तात्पर्य यह है, कि यह कल्पवृक्ष के समान, साधना करने वाले की सभी प्रकार की कामनाओं की पूर्ति करने की सामर्थ्य एवं शक्ति रखता है ।

तांत्रिक ग्रन्थों में इसके बारे में बताया गया है—

वांछा कल्पलतायास्तु न होमो न च तर्पणम
स्मरणादेव सिद्धिः स्यात् यदिच्छति हि तद् भवेत् ।।१।।
एकावृत्या वशे लक्ष्मी: पंचावृत्या वशं जगत् ।
दशावृत्या तथा विष्णू रुद्र शक्तिर्भवेदिह ।।२।।
सार्वभौम: शतावृत्या भवत्येव न संशय ।

अर्थात्, "यह वांछा कल्पलता साधना विश्व की दुर्लभ साधना है, इसके प्रयोग में होम, या तर्पण करने की जरूरत नहीं होती, केवल इस मन्त्र के जप से ही साधक की प्रत्येक इच्छा पूरी हो जाती है, इस मन्त्र की एक आवृत्ति से लक्ष्मी प्राप्ति होती है, पांच आवृत्तियों से पूरा संसार वश में होता है, और दस आवृत्तियों से भगवान विष्णु और रुद्र की पूर्ण शक्ति प्राप्त होती है, इसी प्रकार यदि कोई साधक इसकी सौ आवृत्तियां कर ले, तो वह सारे संसार में सम्माननीय होता है, इसमें कोई दो राय नहीं ।"

तन्त्र सार

तन्त्र सार ग्रन्थ में इस साधना के बारे कुछ महत्वपूर्ण तथ्य स्पष्ट किये गये हैं, उसके अनुसार—

१–यदि इस मन्त्र की केवल एक माला मन्त्र जप कर अर्थात् १०८ बार उच्चारण कर किसी से भी मिलने के लिए जायें, और कोई भी कार्य कहें, तो सामनें वाला तुरन्त कार्य कर देता है ।

२–यदि इस मन्त्र की पांच माला मन्त्र जप कर किसी अधिकारी या बहुत बड़े व्यापारी के सामने जाकर अपनी इच्छा प्रगट करें, अथवा प्रमोशन, स्थानान्तरण या कोई एजेन्सी प्राप्त करने की बात कहें, तो वह निश्चय ही स्वीकार कर ली जाती है ।

३–यदि शक्कर की बनी हुई किसी चीज (बतासा आदि) पर नाम लेकर मात्र ग्यारह माला मन्त्र जप कर वह चीज उसे खिला दें, तो निश्चय ही वह वश में हो जाता है (या हो जाती है), और जीवन भर वश में बनी रहती है, यह अनुभूत प्रयोग है और तुरन्त इसका प्रभाव होता है ।

४–यदि इस मन्त्र की गुलाब के पुष्पों के सामने पांच माला मन्त्र जप कर वे गुलाब के पुष्प दुकान या फैक्टरी में बिखेर दें, तो दुकान पर किया गया तांत्रिक प्रयोग समाप्त हो जाता है, और व्यापार में आश्चर्यजनक वृद्धि होने लगती है ।

५–यदि तांबे के गिलास में पानी भर कर इस मन्त्र का २१ बार उच्चारण कर वह पानी रोगी को पिला दिया जाय, तो वह रोग मुक्त हो जाता है, अथवा ऐसे पानी को बाल्टी में मिला कर स्नान कराया जाय, तो उसके शरीर का सारा रोग समाप्त हो जाता है ।

६- यदि काली मिर्च के १०१ दानों पर नाम ले कर इस मन्त्र की १५ माला मन्त्र जप कर वे काली मिर्च के दाने शत्रु के घर में किसी प्रकार से फेंक दिये जायें तो घर के सभी सदस्य बीमार बने रहते हैं, लक्ष्मी का नाश हो जाता है, तथा घर में कलह-लड़ाई बढ़ जाती है, यदि इस काली मिर्च को दक्षिण दिशा में जाकर मंगलवार के दिन जमीन में गाड़ दें, तो शत्रु का मरण हो जाता है ।

७- यदि इलायची के पांच दानों पर इस मन्त्र की एक माला मन्त्र जप कर इलायची के दाने

Scanned by CamScanner

रजस्वला समय में स्त्री को तीन दिन तक खिलाये जांय, तो निश्चय ही उसके गर्भधारण होता है, और योग्य पुत्र रत्न पैदा होता है।

८- यदि वांछा कल्पलता यन्त्र के सामने तेल का दीपक लगा कर नित्य तीन माला मन्त्र ११ दिन तक जप करें, तो सभी प्रकार का राज्य भय समाप्त हो जाता है, और स्थितियां अनुकूल होने लगती हैं।

मैंने इस प्रयोग को कई स्थानों पर कई प्रकार से आजमाया है, और इस कलियुग में भी इसका प्रभाव देख कर दंग रह गया हूं, वास्तव में ही इसकी मन्त्र रचना में कोई विशेषता है, जिससे कि इसका उच्चारण करने से कार्य सिद्धि होने लगती है, मैंने तो अपने जीवन में यह नियम बना लिया है, कि नित्य प्रातः उठ कर केवल तीन बार इस मन्त्र का उच्चारण कर लेता हूं, तो वह पूरा दिन मेरे लिए अनुकूल बना रहता है, और कार्य में सफलता मिलती रहती है।

साधना विधि

इस प्रयोग को किसी भी दिन से प्रारम्भ किया जाना चाहिए, अपने सामने मन्त्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त **"वांछा कल्पलता यन्त्र"** स्थापित कर देना चाहिए जो कि **"अथवर्ण सौभाग्य कांड"** से सिद्ध हो, आगे के सारे प्रयोग अथवा उपरोक्त सभी प्रयोग इस महत्वपूर्ण यन्त्र को सामने रख कर ही किये जा सकते हैं।

साधक चाहे तो इस यन्त्र में धागा पिरो कर उसे अपनी बांह पर बांध सकता है।

इस यन्त्र को किसी पात्र में या छोटा सा लाल कपड़ा बिछा कर उसके ऊपर स्थापित करें, और फिर मन्त्र जप प्रारम्भ करें, इसमें तेल का दीपक या घी का दीपक अथवा अगरबत्ती लगाना आवश्यक नहीं है, न तो इस साधना में किसी विशेष आसन का विधान है, और न किसी विशेष दिशा में बैठकर मन्त्र जप करने का निर्णय है, इस साधना में किसी भी माला का प्रयोग किया जा सकता है।

इस प्रकार से देखा जाय तो यह साधना अत्यन्त ही सरल और शीघ्र सिद्धिप्रद है।

ध्यान

श्रीविद्या ब्रह्म-विद्या च व्याप्तं ये सचराचरं।
निर्द्वन्द्वा नित्य-सन्तुष्टा निर्मोहा निरुपाधिका॥
कामेश्वरी मनोऽभीष्ट-कामेश्वर-स्वरूपिणी।
नमस्तेऽनन्त-रूपायै प्रसीद सुप्रसीद मे॥

मन्त्र

श्रीं श्रीं श्रीं, ह्लीं ह्लीं ह्लीं, क्लीं क्लीं क्लीं, ऐं ऐं ऐं, सौः सौः सौः, ॐ ॐ ॐ, ह्लीं ह्लीं ह्लीं, श्रीं श्रीं श्रीं, कं कं कं, एं एं एं, ईं ईं ईं, लं लं लं, ह्लीं ह्लीं ह्लीं, हं हं हं, सं सं सं, कं कं कं, हं हं हं, लं लं लं, ह्लीं ह्लीं ह्लीं, सं सं सं, कं कं कं, लं लं लं ह्लीं ह्लीं ह्लीं, सौः सौः सौः, ऐं ऐं ऐं, क्लीं क्लीं क्लीं, ह्लीं ह्लीं ह्लीं, श्रीं श्रीं श्रीं, प्रसीद प्रसीद, मम मनो ईप्सितं कुरु कुरु।

इस प्रकार साधक साधना प्रयोग कभी भी सम्पन्न कर सकता है, फिर भी साधना में एक क्रम अपना लें, तो उचित रहता है, एक माला, पांच माला, अथवा ग्यारह माला मन्त्र जप श्रेष्ठ रहता है, भगवान शिवकृत यह वांछा कल्पलता प्रयोग तो गृहस्थ के लिए वरदान स्वरूप ही है।

विशेष

पूज्य गुरुदेव के आदेशानुसार साधना के इच्छुक साधकों को यह वांछा कल्पलता यन्त्र उपहार स्वरूप प्रदान किया जा रहा है।

Scanned by CamScanner

अपने आपको कम नहीं समझें
क्योंकि
कृत्या साधना द्वारा सिद्धि संभव है
अद्भुत तांत्रिक-मांत्रिक प्रयोग

साधनाएं केवल पढ़ने के लिए ही आपकी इस पत्रिका में प्रकाशित नहीं की जातीं, अपितु इसलिए दी जाती हैं, कि उचित समय पर आप स्वयं साधनाएं सम्पन्न करें, उसके प्रभाव को समझें, यह प्रभाव किसी को जल्दी प्राप्त हो सकता है, और किसी को विलम्ब से, अतः तात्कालिक सफलता न मिलने पर साधक का दोष नहीं अपितु दोष आपके साधनात्मक स्तर का है, और इस स्तर का विकास सतत् प्रक्रिया द्वारा ही संभव है।

कुछ साधनाएं शान्त और सरल होती हैं, और कुछ तीव्र साधनाएं, तीव्र साधनाएं तो तब सम्पन्न की जाती हैं, जब और कोई उपाय काम ही न आएं, अथवा समस्याओं के सागर में साधक डूबने ही लग जाय; पत्रिका में प्रकाशित प्रयोगों को साधकों ने अपनाया, उसे वास्तविक रूप में साकार किया, और अपने जीवन में विशेष परिवर्तन प्राप्त किया, समस्याओं को सुलझाया, अपना ही नहीं दूसरों का दुःख दर्द भी दूर किया।

कृत्या साधना के बारे में पत्रिका कार्यालय को पत्र नियमित रूप से प्राप्त होते रहे हैं, लेकिन इस प्रयोग की तीक्ष्णता और कुछ अन्य विशेषताओं के कारण ज्यादा जानकारी नहीं दी गई, क्योंकि इसकी तीव्रता कमजोर, बीमार साधक झेल नहीं सकता है, यह साधना व्यक्ति पूर्ण रूप से स्वस्थ हो, तभी सम्पन्न की जानी चाहिए।

कृत्या

कृत्या उच्चकोटि का तांत्रिक-मांत्रिक प्रयोग है, जब भगवान शिव ने दक्ष का यज्ञ विध्वंस करने के लिए अपने गणों को भेजा और वीरभद्र जैसे बलशाली गण भी दक्ष के मन्त्रों के आगे बेबस और असहाय हो गये, तब भगवान शिव ने अपनी जटा में से एक कृत्या का निर्माण किया, जो कि अत्यन्त वीभत्स डरावनी, भयानक और पूरी सृष्टि का प्रलय करने में समर्थ थी, जमीन पर पैर रखते ही पृथ्वी अपने आप में नीचे धसकने लगी, दसों दिशाएं उसकी हुंकार से डोलने लगीं, और सम्पूर्ण विश्व में

खलबली सी मच गई, वह शिव की आज्ञा पा कर दूसरे ही क्षण दक्ष की यज्ञ शाला में जा पहुंची, और सारे यज्ञ को तहस-नहस कर दिया, अन्य लोगों की तो बात क्या, वहां बैठे सैकड़ों देवी देवताओं तक को उठा-उठा कर फेंक दिया, और यज्ञ के आयोजन कर्ता दक्ष का सिर एक ही झटके मे काट दिया, ऐसा लग रहा था कि मा ों कृत्या के रूप में कोई प्रलय उपस्थित हो गया हो, जिसके आगे न तो देवताओं की सिद्धि चल पा रही थी, और न दक्ष के मन्त्रों का ही कोई प्रभाव व्याप्त हो रहा था, उस कृत्या के सारे शरीर से आग की लपटें निकल रही थी, जिससे पूरा संसार झुलस रहा था, उसके क्रोध के आगे आकाश और पृथ्वी, पवन और दसों दिशाएं थरथर कांप रही थीं, और ऐसा लग रहा था, कि इसको शान्त करना अत्यधिक कठिन ही नहीं अपितु असंभव है।

तब सभी देवता भगवान शिव के आगे गिड़-गिड़ाने लगे, हाथ जोड़ कर क्षमा मांगने लगे, तब जाकर शिव का क्रोध कुछ शान्त हुआ और उन्होंने कृत्या को पुनः शान्त कर अपने पास बुला लिया।

ऐसी तीव्र कृत्या सिद्ध हो जाय, तो फिर साधक स्वयं शक्ति सम्पन्न बन जाता है, गुरुदेव से बहुत अनुनय विनय करने पर उन्होंने इस **कृत्या योग** का जो रहस्य प्रकट किया, उसे पाठकों के समक्ष प्रस्तुत किया जा रहा है।

कृत्या सिद्धि दिवस

तांत्रिक साधनाओं के लिए अमावस्या का दिन और रात्रि सर्वश्रेष्ठ सिद्ध समय कहा गया है, कृत्या साधना भी अमावस्या के दिन ही प्रारम्भ की जानी चाहिए, और इस वर्ष **पौष कृष्ण अमावस्या** को शनिवार भी है, तथा विशेष मुहूर्त है, यह दिवस **कृत्या दिवस** ही है, इस दिन साधना प्रारम्भ की जानी चाहिए।

यदि किसी कारणवश इस अमावस्या को साधना प्रारम्भ नहीं करें, तो इससे अगली अमावस्या को साधना प्रारम्भ की जा सकती है, अमावस्या का विशेष विधान है।

कृत्या साधना के कुछ विशेष नियम होते हैं, और साधना में इन नियमों का पालन करना आवश्यक है और पत्रिका के प्रत्येक सदस्य में से जो भी अपने आपको पूज्य गुरुदेव का शिष्य समझता है, वह यह साधना सम्पन्न कर सकता है।

विशेष नियम

१– यह साधना ११ दिन की है, रात्रिकालीन है, और इसमें काली धोती पहन कर, दक्षिण दिशा की ओर मुंह कर, काले आसन पर बैठ कर सामने तेल का दीपक लगा कर **"कृत्या माला"** से मन्त्र जप आवश्यक है, यह कृत्या माला अद्भुत तरीके से गुंथी हुई होती है, और इसका प्रत्येक मनका अपने आप में मन्त्र सिद्ध होता है।

२– यह कृत्या माला केवल इस प्रयोग में ही नहीं, अपितु किसी भी प्रकार की महाविद्या साधना में और उच्च कोटि के तांत्रिक प्रयोगों में प्रयोग की जा सकती है, वास्तव में ही यह माला साधनात्मक संसार का अद्भुत रहस्य है, जिसके गले में भी मात्र यह माला पड़ी होती है, उसके द्वारा स्वतः अद्भुत चमत्कार होते रहते हैं।

३- अपने सामने **पंच महामन्त्रों से अनुप्राणित, शिव शक्ति साधना से सिद्ध और ब्रह्मप्राणश्चेतना युक्त 'कृत्या यन्त्र'** किसी तांबे के पात्र में स्थापित कर देना चाहिए और उसकी पंचोपचार पूजा करती चाहिए, पंचोपचार में जल, कुंकुंम, अक्षत, पुष्प और नैवेद्य आता है।

इसके बाद वीरासन में बैठकर या सामान्य तरीके से पालथी मार कर कृत्या मन्त्र की ११ माला मन्त्र जप आवश्यक है।

४– इस साधना में पूर्ण ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करना, एक समय भोजन करना आवश्यक है।

५- साधना समाप्ति के बाद उस यन्त्र को बांह पर बांध लेना चाहिए या गले में पहिन लेना चाहिए, यदि लम्बे समय तक ऐसा सम्भव न हो सके तो तीस दिनों तक तो उस यन्त्र को धारण करना ही चाहिए, जिससे कि सारे शरीर में कृत्या रम सके, और साधक कृत्या का प्रयोग कर सके।

कृत्या प्रयोग सिद्धि

१- यह साधना सिद्ध होने पर साधक अजेय, शत्रुओं पर पूर्ण विजय प्राप्त करने वाला और मन में असीम बल धारण करने वाला हो जाता है।

२-ऐसे साधक को वचनसिद्धि प्राप्त हो जाती है, और साधना सिद्धि के बाद वह मात्र एक बार कृत्या मन्त्र का उच्चारण कर सामने वाले को जो भी कह देता है, वह तुरन्त हो जाता है, एक प्रकार से उसे वचन सिद्धि प्राप्त हो जाती है, या यूं कहा जाय कि उसमें श्राप या वरदान देने की अद्भुत क्षमता प्राप्त हो जाती है।

३-वह कृत्या मन्त्र का जिस व्यक्ति पर या किसी व्यक्ति के फोटो पर जिस प्रकार का प्रयोग करे, वह प्रयोग तुरन्त सम्पन्न हो जाता है, उदाहरण के लिए कृत्या प्रयोग के द्वारा मारण, मोहन, उच्चाटन और वशीकरण तुरन्त सिद्ध होता है, यदि वह कभी भी कृत्या प्रयोग का मन्त्र जप कर सामने वाले व्यक्ति को मन ही मन कहे, कि यह मुझसे माफी मांगे, या मेरा कहा माने, या मेरे सामने गिड़गिड़ाये, तो वह तत्क्षण सम्पन्न हो जाता है, इसी प्रकार इसके माध्यम से किसी पुरुष या स्त्री को तुरन्त वश में किया जा सकता है।

४-इस प्रयोग की सबसे बड़ी विशेषता है कि किसी भी प्रकार के रोगी व्यक्ति को देखकर यदि कृत्या मन्त्र से सिद्ध जल छिड़कें या पिला दें तो रोग में तुरन्त सफलता प्राप्त हो जाती है, कमजोर और अशक्त रोगियों को ताकत प्रदान की जा सकती है, और छोटे-मोटे रोग तो एक बार कहने से ही समाप्त हो जाते है।

५-इसके माध्यम से पति-पत्नी का कलह दूर किया जा सकता है, किसी को भी जीवन भर के लिए अपने वश में किया जा सकता है, और मनोवांछित कार्य सम्पन्न किया जा सकता है।

६-यदि किसी शत्रु का सर्वनाश करना हो, तो सिद्ध साधक के लिए अत्यन्त आसान है, इस प्रयोग से एक-एक करके शत्रु के पारिवारिक सदस्य मरते जाते हैं, अचानक घर में आग जाती है, या दूसरे शब्दों में कहा जाय, तो उसका सर्वनाश हो जाता है।

७-इस साधना से साधक को ऐसी सिद्धि प्राप्त हो जाती है, कि वह किसी भी प्रकार के असंभव कार्य को संभव कर सकता है, अकेला कहीं पर भी विचरण कर सकता है, उसे किसी प्रकार का कोई भय नहीं रहता, उस पर कोई भी मारण प्रयोग या तांत्रिक प्रयोग नहीं कर सकता, और संसार का कोई व्यक्ति उसको नुकसान नहीं पहुंचा सकता।

Scanned by CamScanner

कृत्या यन्त्र तीव्र यन्त्र है, और जिस घर में यह विशेष यन्त्र स्थापित रहता है, उस घर में रोग, शोक, दुःख अपने स्थान छोड़ देते हैं, क्योंकि कृत्या अपनी शक्ति से तीव्र बाधा को भी वश में कर देती है।

किसी अमावस्या की रात्रि को आसन पर बैठ जाय और यन्त्र की पूजा कर सबसे पहले दाहिने हाथ में जल ले कर कहे, कि मैं यह ११ दिन की साधना कृत्या सिद्धि के लिए कर रहा हूं।

इसके बाद बांएं हाथ में जल ले कर निम्न मन्त्र से अपने शरीर को वज्र की तरह मजबूत बना लें, जिससे आपके शरीर को नुकसान न पहुंचे।

देह रक्षा मन्त्र

।। ॐ ब्रह्म सूत्र समस्त मम देह आबद्ध-आबद्ध वज्र देह फट् ।।

इस प्रकार दस बार बोल कर अपने शरीर पर जल छिड़कें।

दस दिशा बन्धन

फिर बांएं हाथ में चावल लेकर दसों दिशाओं की ओर फेंकें जिससे कि दिशा बन्धन हो सके, और पूर्णता के साथ साधना सम्पन्न कर सकें।

दिशा बन्धन मन्त्र

।। ॐ शिवकृत्या प्रयोगायै दश दिशा बन्धनायै क्रीं क्रीं फट् ।।

इसके बाद शिव का और यन्त्र का पूजन करें, और फिर मूल मन्त्र जप करें—

कृत्या मूल मन्त्र

।। ॐ क्लीं-क्लीं शत्रुणां मोहयै उच्चाटयै मारयै वचनसिद्धि मम आज्ञा पालय पालय कृत्या सिद्धि फट् ।।

इस मन्त्र की ग्यारह माला मन्त्र जप उसी स्थान पर बैठे रहते हुए करना आवश्यक है, बीच में उठना नहीं है, कई बार इस साधना में साधक को ऐसा लगता है, कि कोई मुझे बुला रहा है, अथवा उसका ध्यान विचलित होता है, लेकिन साधक को अपना पूरा ध्यान केन्द्रित करते हुए मन्त्र जप करते रहना है।

इस प्रकार ११ दिन तक प्रयोग करें, और उसके बाद उस यन्त्र को अपने गले में धारण कर लें, या बांह पर बांध लें, तो साधक अद्भुत शक्ति और सामर्थ्य अनुभव करने लगता है, उसके चेहरे पर भव्य तेजस्विता दृष्टिगोचर होने लगती है, और एक प्रकार से उसे दसों महाविद्याओं से भी श्रेष्ठ तन्त्र की अद्भुत शक्ति कृत्या सिद्ध हो जाती है।

गुरु चिन्तन

गूढविद्या जगन्माया देहेचाज्ञानसंभवा।
उदय स्वप्रकाशेन गुरु शब्देन कथ्यते ।।

मैं जन्म लेता हूं, मैं मरता हूं, ये दृश्यमान वस्तुजात मेरे हैं, इस अज्ञान जन्य रहस्य पूर्ण भ्रम में आबद्ध जीव को अपनी विशिष्ट अनुकम्पा से मुक्ति पथ की ओर ले जाने वाला गुरु होता है।

गुरुर्मूर्ति स्मरेन्नित्यं गुरु नाम सदा जपेत्।
गुरोराज्ञां प्रकुर्वीत गुरोरन्यन्न भावयेत् ।।

गुरु मूर्ति का नित्य स्मरण, गुरु नाम का सदैव जप एवं गुरु आज्ञा का अहर्निश पालन करते हुए, शिष्य गुरु के अतिरिक्त अन्य कोई चिन्तन ही न करे।

प्रारम्भ कीजिए जीवन में
नये भाग्य उत्सव – वसन्त उत्सव को
इस
वसन्त पंचमी से

भाग्य का लेखन ईश्वर के साथ-साथ मनुष्य के अपने हाथ में भी है और यदि सरस्वती की कृपा हो जाये तो साधक अपना भाग्य स्वयं लिख सकता है, अपने भाग्य को संवार सकता है, क्योंकि वसन्त पंचमी तो सरस्वती जयन्ती भी है, अतः इस अवसर पर प्रस्तुत है एक अनूठा तांत्रिक प्रयोग—

मनुष्य की सबसे बड़ी शक्ति उसका वचन है, आप जो बोलते हैं वे शब्द ही आपके सबसे बड़े अस्त्र-शस्त्र हैं, दूसरों को प्रभावित कर अपनी उचित कार्य सिद्धि वाणी के माध्यम से ही संभव है और जब यह वाणी शब्द बन कर आपके भीतर के कुण्डलिनी चक्र के जाग्रत सहस्रार से निकले तो साधक को जो सिद्धि प्राप्त होती है वह वाक् सिद्धि कहलाती है।

वरदान और शाप वाक् सिद्धि के ही स्वरूप हैं, इस वाणी में जो क्षमता है, वह न तो खरीदी जा सकती है और न किसी से प्राप्त की जा सकती है, यह तो अपने भीतर क्षमता उत्पन्न कर प्राप्त की जा सकती है, ईश्वर की सर्वश्रेष्ठ संरचना मानव में कोई भेद नहीं है, शारीरिक रूप से सभी समान हैं, भेद केवल वाक् सिद्धि का ही है और यदि यह वाक् सिद्धि बचपन से ही जाग्रत होने लग जाये तो वह बालक निश्चय ही जीवन में उच्चतम शिखर पर अवश्य पहुंचता है।

वसन्त पंचमी

वसन्त पंचमी के दो मुख्य स्वरूप हैं, एक स्वरूप तो अपने जीवन में नया वसन्त प्रारम्भ करने का दिवस है अर्थात् अपनी भाग्य रेखा को मोड़ने का, अपने जीवन तन्त्र को अपने हाथ से लिखने का, नवीन निर्माण करने का सिद्ध दिवस है, आप क्या थे और अब क्या हैं, इस पर विचार कर पछताने की आवश्यकता नहीं है, विचार तो यह करना है कि अब क्या करना है और इस वसन्त पंचमी से, इस नये विचार को कार्य रूप देना ही है, ऐसा संकल्प ले कर आपको अपने लिए विशेष प्रयोग करना है—

पारिजातेश्वरी ब्रह्म शक्ति प्रयोग

वसन्त पंचमी के दिन प्रातः ब्रह्म मुहूर्त में उठ कर स्नान कर शुद्ध सफेद धवल वस्त्र धारण करें और बिना

Scanned by CamScanner

किसी ओर देखे सीधे अपने पूजा स्थान में जाएं, अपने सामने एक थाली में चन्दन से आठ बिन्दियां एक लाइन में लगाएं, प्रत्येक बिन्दी पर एक चावल की ढेरी बनाएं, प्रत्येक के आगे एक-एक दीपक जला दें, दीपक का मुंह आपकी ओर हो।

इससे पहले पूर्व रात्रि में तालाब अथवा सरोवर से लाई हुई गीली मिट्टी का एक बड़ा गोला बना दें और इस गोले के भीतर तांत्रोक्त सिद्ध **"पारिजातेश्वरी ब्रह्म शक्ति कंकण"** डाल दें, मिट्टी के गोले को कुंकम, अबीर, गुलाल अर्पित कर पूर्ण रूप से रंगीन कर दें, तथा इस पर तीन अगरबत्ती लगाएं, थाली में जो आठ चावल की ढेरियां हैं, उन पर एक-एक सुपारी रख कर सात भाग्य देवियों — ब्राह्मी, माहेश्वरी, कौमारी, वैष्णवी, वाराही, इन्द्राणी, महालक्ष्मी तथा चामुण्डा की स्थापना करें।

अब प्रत्येक ढेरी में से थोड़े-थोड़े चावल लें, और मिट्टी के गोले पर चढ़ा दें, फिर अपने दोनों हाथ इस ब्रह्म शक्ति गोलाकार पिण्ड पर रख कर निम्न मन्त्र का १०८ बार जप करें—

मन्त्र

।। ॐ ह्रीं हं सं कं लं ह्लैं ह्रीं ॐ सरस्वत्यै नमः ।।

अब खड़े हो कर सारे चावल एक साथ एकत्र कर अपने हाथों से लेकर पहिले मस्तक से फिर नेत्रों के, फिर मुख के स्पर्श कराएं और उसी स्थान पर बैठ कर मिट्टी के पिण्ड को फोड़ कर **पारिजातेश्वरी ब्रह्म शक्ति कंकण** अपने हाथ में धारण कर लें तथा शेष सभी सामग्री शुद्ध सफेद कपड़े में बांध कर नदी, सरोवर, तालाब अथवा पीपल वृक्ष में अर्पित कर दें।

यह प्रयोग एक विशेष प्रकार का तांत्रिक प्रयोग है, और शास्त्रोक्त कथन है कि यह पूजा करने के पश्चात् धारण किये जाने वाले कंकण को किसी भी व्यक्ति को दान में अथवा भेंट में न दें इसे अपनी सबसे बड़ी सम्पत्ति मानते हुए उसे हर समय शरीर से स्पर्श कराये हुए रखें तो उसका भाग्य चक्र बदलने लगता है और शीघ्र ही भाग्योदय होता है।

बालकों के लिए सरस्वती सिद्धि

बालकों में बचपन से ही अच्छे संस्कार मिलें तथा श्रेष्ठ बुद्धि का विकास हो तो बालक जीवन में आगे चल कर विशेष सफलता प्राप्त करता है उसकी स्मरण शक्ति का विकास होना आवश्यक है और इसके लिए वसन्त पंचमी जो कि सरस्वती सिद्धि दिवस है, को निम्न प्रयोग सम्पन्न करना ही है—

वसन्त पंचमी के दिन साधक स्वयं स्नान कर सफेद धोती धारण कर पूर्व दिशा की ओर मुंह करके बैठ जांय और अपने सामने बालकों को बिठा दें, फिर **सरस्वती यन्त्र** को अपने सामने रख दें तथा उस पर "ह्रीं" अक्षर लिख दें और प्रत्येक यन्त्र पर अष्टगन्ध लगा कर निम्न मन्त्र की एक माला फेरें—

मन्त्र

।। ॐ ह्रीं सरस्वत्यै नमः ।।

फिर उस यन्त्र के ऊपर से अष्टगन्ध उंगली से लेकर बालक की जीभ पर उंगली से या शलाका से **"ह्रीं सरस्वत्यै नमः"** लिख दें और वह यन्त्र किसी धागे में पिरो कर बालक के गले में पहना दें, यदि साधक स्वयं के लिए प्रयोग करे तो दर्पण में देख कर अष्टगन्ध से अपनी जीभ पर उपरोक्त मन्त्र लिख कर यह यन्त्र गले में धारण कर लें इस प्रकार घर के सभी बालक-बालिकाओं पर यह प्रयोग सम्पन्न करें, पर प्रत्येक के लिए अलग-अलग **सरस्वती यन्त्र** की आवश्यकता होती है।

समय रहते ही यन्त्र आप पत्रिका कार्यालय से सम्पर्क स्थापित कर ले लें, वसन्त पंचमी के पर्व पर इस प्रयोग को आजमा कर देखें, कि वास्तव में ही यह प्रयोग कितना अधिक चमत्कारिक और दिव्य है।

Scanned by CamScanner

ब्रह्माण्ड की समस्त सिद्धियों की स्वामिनी

श्री ललिताम्बा सिद्धि

महायोगी सिद्ध त्रिजटा अघोरी के नाम से पूरा भारतवर्ष परिचित है, उनकी साधनाओं में नित्य नये प्रयोग होते रहते हैं और प्राचीन हस्तलिखित ग्रन्थों का उनके पास अपूर्व खजाना है, जो कि अपने आप में सिद्ध, और तुरन्त प्रभाव उत्पन्न करने वाले मन्त्र, तन्त्र और साधनाएं हैं।

कई वर्षों से मेरे मन में **ललिताम्बा साधना** सिद्ध करने की भावना थी क्योंकि यह एक गोपनीय साधना है और अभी तक प्रकाश में नहीं आ सकी, यद्यपि कई तन्त्र ग्रन्थों में इस साधना की विवेचना की गई है और बताया गया है कि यह संसार की अद्वितीय साधना है।

नीचे मैं विभिन्न ग्रन्थों में इस साधना के बारे में जो कुछ लिखा गया है, उसे स्पष्ट कर रहा हूं —

१–"**गोरक्ष संहिता**" में बताया गया है कि ललिताम्बा साधना गोपनीय, महागोपनीय है, इस साधना को भूल करके भी अपने पुत्र या शिष्य को भी नहीं देना चाहिए।

२–"**शंकरभाष्य**" में कहा गया है कि ललिताम्बा सिद्ध करने के बाद साधक पूरे संसार में विजयी होता है और ललिताम्बा यन्त्र धारण करने के बाद वह जिस व्यक्ति से मिलता है, उस पर अपना प्रभाव डाल देता है और विजय प्राप्त करता है।

३–"**तन्त्रसार**" में बताया गया है कि सौभाग्यशाली साधक ही ललिताम्बा यन्त्र को प्राप्त कर सकते हैं, इसे सिद्ध करने पर उसके शत्रु स्वतः समाप्त हो जाते हैं, और जीवन में उसे किसी प्रकार का कोई भय नहीं रहता।

Scanned by CamScanner

४–"**रसतन्त्र**" में बताया है कि ललिताम्बा साधना **कायाकल्प साधना** है, इसके मन्त्र जप से नपुंसक व्यक्ति भी पूर्ण यौवनमय एवं कामदेव के समान सुन्दर बन जाता है, यह बुढ़ापे को समाप्त कर पुनः यौवन प्रदान करने में समर्थ है।

५–"**मन्त्र विज्ञान**" ग्रन्थ में स्पष्ट रूप से कहा गया है कि एक तो ललिताम्बा यन्त्र और उससे सम्बन्धित मन्त्र गोपनीय और सर्वथा दुर्लभ है, पर यदि किसी को यह प्राप्त हो जाय तो उसे **शून्य सिद्धि** स्वतः प्राप्त हो जाती है, और साधना सिद्ध होने पर वह वायु में से कोई भी पदार्थ प्राप्त करने में सफल हो जाता है।

६–"**विश्वामित्र संहिता**" में ललिताम्बा साधना की प्रशंसा करते हुए बताया गया है कि गुरु अपनी तेजस्विता से इस यन्त्र को सिद्ध कर अपने शिष्य को प्रदान करें, और जब शिष्य ऐसा यन्त्र धारण कर साधना सम्पन्न करता है तो साधक का तीसरा नेत्र खुल जाता है, और वह एक क्षण में किसी को भी भस्म करने की क्षमता प्राप्त कर लेता है।

७–"**व्यास समुच्चय**" ग्रन्थ में बताया गया है कि हजार काम छोड़ कर के भी साधक को ललिताम्बा साधना सम्पन्न करनी चाहिए, क्योंकि अन्य साधनाएं तो फिर भी प्राप्त हो सकती हैं पर यह साधना तो कई-कई जन्मों के पुण्यों से ही प्राप्त हो सकती है।

इसके अलावा भी सैकड़ों ग्रन्थों में ललिताम्बा साधना के बारे में विवरण वर्णन मिलता है और सर्वत्र इसकी प्रशंसा ही की गई है, परन्तु किसी भी ग्रन्थ में इस साधना से सम्बन्धित विधि, ललिताम्बा यन्त्र निर्माण के बारे में कोई प्रामाणिक विधि प्राप्त नहीं हो पाती।

ऐसी स्थिति में यह हमारा और हमारी पीढ़ी का सौभाग्य है कि त्रिजटा अघोरी जैसे महायोगी ने इस साधना रहस्य को ढूंढ निकाला, यन्त्र निर्माण करने और इसे सिद्ध करने की प्रक्रिया स्पष्ट की, और ललिताम्बा मन्त्र को प्रामाणिकता के साथ स्पष्ट किया।

वास्तव में ही यह साधना दिव्य साधना है, एक तरफ जहां ललिताम्बा सिद्ध होने पर धन-धान्य की निरन्तर वर्षा होती रहती है, जीवन में किसी प्रकार का कोई अभाव नहीं रहता, वहीं दूसरी ओर उसके शत्रु स्वतः समाप्त होते रहते हैं, और वह त्रिकालदर्शी बन जाता है, किसी के भूत भविष्य को जान लेना उसके लिए कठिन नहीं होता, ललिताम्बा की कृपा से उसका तीसरा नेत्र खुल जाता है और उसमें श्राप देने की और वरदान देने की अद्भुत क्षमता आ जाती है।

साधना विधि

यह साधना केवल तीन दिनों की है और रात्रिकालीन साधना है, साधक अपने स्थान को जल से धो ले फिर पीला आसन बिछा ले और पीली धोती पहिन कर उत्तर की ओर मुंह कर बैठ जाय, सामने '**ललिताम्बा महायन्त्र**' को स्थापित कर दे, जो पूर्णतः चैतन्य मन्त्र सिद्ध एवं प्राण प्रतिष्ठा युक्त हो।

इसके बाद अगरबत्ती व दीपक लगा कर "**हकीक-माला**" से निम्न मन्त्र का २१ बार उच्चारण करे, इस प्रकार नित्य इस महायन्त्र के २१ पाठ करे और तीन दिन तक करे, तीसरे दिन मन्त्र जप सम्पन्न होने के बाद उस यन्त्र को धागे में पिरोकर गले में धारण कर ले या बांह पर बांध ले, ऐसा होने पर उस साधक को यह साधना सिद्ध हो जाती है।

साधना सिद्ध होने के बाद ऊपर जो इस प्रयोग से लाभ बताये गये हैं, वे स्वतः होने लगते हैं और साधक कुछ ही दिनों में सिद्ध योगी बनने की क्षमता प्राप्त कर लेता है।

सबसे पहले हाथ में जल ले कर संकल्प करे कि मैं अमुक गोत्र, अमुक नाम का साधक भगवती ललिताम्बा के प्रत्यक्ष दर्शन करना चाहता हूं, साथ ही साथ सम्बन्धित सिद्धि भी प्राप्त करना चाहता हूं, इसके बाद गुरु पूजन करे और एक माला गुरु मन्त्र जप करे, और फिर निम्न मन्त्र के २१ पाठ करें—

ललिताम्बा मन्त्र

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं हंसः ॐ नमो भगवति, अक्षोभ्ये रुक्ष-कर्ण, राक्षसि, पक्ष-त्रणे, क्षपे, पिंगलाक्षि, अरुणे, क्षये लीले, लोले ललिते, लूते, लुलिने, लुम्बिके लंकेश्वरि लासे, विमले, हुताशिनि, विशालाक्षि, हुंकारे, वडवामुखि महा-रवे, महाक्रोड-क्रोधिनि, खरास्ये, सर्वज्ञे, तरले, तारे, दृष्टि-ह्रष्टे, खग-कन्धरे सारसि, रस-संग्रहिणि, ताल जंघ, करंकिणि, मेघनादे, प्रचण्डोग्रे, काल-कर्णि, चैल-प्रदे, चम्पे, चम्पावति, प्रचम्पे, मलयान्तकि, पितृ-वक्त्रे, पिशाचाक्षि पिशुनि, लोलुपे, वानति, वानरि, वायु-विकृतास्ये, वागु-वेगे, वृहत्-कुक्षि-विकृते, रिश्य रूपिणि।

कामाकर्षिणि, बुद्धयाकर्षिणि, अहंकाराकर्षिणि, शब्दाकर्षिणि, स्पर्शाकर्षिणि, रूपाकर्षिणि, रसाकर्षिणि, गन्धाकर्षिणि, चित्ताकर्षिणि, धैर्याकर्षिणि, स्मृत्याकर्षिणि, नामाकर्षिणि, बोजाकर्षिणि, आत्माकर्षिणि, अनात्माकर्षिणि, अमृताकर्षिणि, शरीराकर्षिणि, गुप्त-योगिनीशि, बौद्धदर्शनांगि, सर्वाशा-पूरक-चक्र-स्वामिनि।

तन्त्र से तीव्र वशीकरण

अघोर कपाल नाथ से प्राप्त यह प्रयोग कठोर से कठोर हृदय वाले पुरुष, स्त्री को वश में करता ही है।

अमावस्या की रात को श्मशान से थोड़ी सी राख लाकर आसन के नीचे रख ले और दक्षिण दिशा की ओर मुंह कर के **सिद्ध हकीक माला या सर्प अस्थियों की माला** से ५१ माला निम्न मन्त्र जप करें, तो सर्वथा विरोधी भी वशवर्ती बन जाता है।

मन्त्र

ॐ ऐं ऐं 'अमुक' वश्यमानाय मम
आज्ञा परिपालय ऐं ऐं फट्॥

"अमुक" के स्थान पर उस व्यक्ति का नाम बोलें।

Scanned by CamScanner

अनंग-कुसुमे, अनंग-मेखले, अनंग-मदने, अनंग मदनातुरे, अनंग-रेखे, अनंग-वेगिनि अनांगकुशे, अनंग-मालिनी, अति-गुप्त-योगिनीशि, रौद्र-दर्शनांगि, सर्व संक्षोभिणि-चक्र स्वामिनि, पूर्वाम्नायेशि सृष्टि-प्रदे।

सर्व-सिद्धि-प्रदे, सर्व-सम्पत-प्रदे, सर्व प्रियंकरि सर्व-मंगल कारिणी सर्व-काम-प्रदे, सर्व दुःख विमोचनि, सर्व-मृत्यु-प्रशमनि, सर्व विघ्न-निवारण सर्वांगसुन्दरी, सर्व-सौभाग्य-दायिनी, कुल-कौल-योगिनीशि, सर्वार्थ-साधक-चक्र-सेवामिनी ।।

ऊपर लिखे मन्त्र में शक्ति का संग्रह है, इस सम्पूर्ण मन्त्र को तो पूर्ण भक्ति भाव से, श्रद्धा से, विनय से, महायन्त्र को स्थापित कर जप करे तो साधक को तीन दिन बाद ही प्रत्यक्ष फल मिलना प्रारम्भ हो जाता है।

इसमें विशेष बात यह है कि यन्त्र "प्राण-संजीवन काल सिद्धि तन्त्र एवं मन्त्र" से आपूरित होना आवश्यक है, ललिताम्बा देवी तो तन्त्र की आधार शक्ति कही गई है और वास्तव में तन्त्र से वही व्यक्ति अपने जीवन में परिवर्तन ला सकता है, जो अपने भीतर शक्ति समेटने की इच्छा रखता हो, दृढ़ भावना रखता हो तथा अपने आपको शक्ति सम्पन्न कर विशेष कार्य सम्पन्न करना चाहता हो।

सौन्दर्य की दुनिया में तन्त्र का चमत्कार

आयुर्वेद के समान ही तन्त्र भी इस क्षेत्र में अचूक है, जिससे आश्चर्यजनक सौन्दर्य प्राप्त किया जा सकता है।

मन्त्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठायुक्त **"सौन्दर्य गुटिका"** सामने रख कर शुक्रवार की रात **"सिद्ध स्फटिक माला"** से इक्कीस माला नीचे लिखा मन्त्र जप करें—

मन्त्र

ॐ रतिप्रियायै काम देवायै मम अंगे उपांगे प्रविश्य सुदर्शनाय फट् ।।

कोई भी स्त्री पुरुष इस आजमाये हुए सिद्ध प्रयोग को सम्पन्न कर सकता है। ★

विश्व की श्रेष्ठ, सिद्धिदायक, धनदायक प्रत्यक्ष साधना

तारा साधना

परान्बा भगवती जगत् जननी मां तारा जीवन के समस्त पुरुषार्थों —धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष को देने वाली है, दस महाविद्याओं में से मां तारा की साधना प्रमुख मानी गई है, जीवन में आर्थिक, भौतिक एवं आध्यात्मिक उन्नति के लिए तारा साधना सर्वोत्कृष्ट कही गई है।

पत्रिका परिवार के सदस्यों के लिए तो यह लेख अत्यन्त महत्वपूर्ण है, उन्हें व्यक्तिगत निर्देश पूज्य गुरुदेव से प्राप्त हो सकते हैं, और साधनाएं तो उनका आशीर्वाद ही..............

संसार में जितनी भी साधनाएं हैं, उनमें मां तारा साधना महत्वपूर्ण और प्रमुख मानी गई है, जो अपने जीवन में तारा साधना सम्पन्न करता है, उसे आर्थिक दृष्टि से किसी प्रकार का कोई अभाव नहीं रहता।

तारा साधना कोई भी साधक कर सकता है, इसमें पुरुष या स्त्री का कोई भेद नहीं माना जाता, पूर्णविधि से इस साधना को सम्पन्न करने पर मानव की जो इच्छाएं होती हैं, वे पूर्ण हो जाती हैं।

कई साधकों ने यह अनुभव किया है, कि तारा साधना सम्पन्न करने के बाद आर्थिक व्यापारिक दृष्टि से उन्हें विशेष सफलता मिलने लगी है, और कुछ साधकों को तो मां तारा स्वयं उसके सिरहाने नित्य दो तोला स्वर्ण रख देती है, जिससे कि उसके जीवन में कभी भी दरिद्रता व्याप्त न हो।

साधना करने पर मां तारा के साक्षात् दर्शन भी सुलभ होते हैं, और इस प्रकार वह साधक अपने जीवन में परान्बा के दर्शन कर अपने आपको कृतकृत्य अनुभव करता है।

साधना समय

तारा साधना किसी भी महीने के शुक्ल पक्ष की प्रतिप्रदा से प्रारम्भ की जा सकती है, साधना को प्रारम्भ करने का शुभ समय प्रातः ६ बजे से लगा कर ८ बजे के बीच है, प्रातःकालीन समय शुभ साधनाओं के लिए श्रेष्ठ रहता है, शुद्ध मन से अपने जीवन में कुछ विशेष करने की भावना के साथ ही साधना का प्रारम्भ करना चाहिए।

उपकरण

साधना में गुलाबी रंग की प्राधान्यता दी गई है, अतः साधक साधनाकाल में लाल या गुलाबी रंग की धोती पहने तथा गुलाबी रंग की ही धोती ओढ़ ले, यदि महिला साधिका हो तो उसे भी गुलाबी साड़ी ही धारण करनी चाहिए।

साधना से पूर्व ही रुई को गुलाबी रंग में रंगकर तथा उसे सुखा कर रख देनी चाहिए, साथ ही प्रतिपदा के दिन प्रातः साधक को उत्तर की तरफ मुंह करके बैठ जाना चाहिए, अपने सामने लकड़ी का एक पट्टा रख देना

और उस पर गुलाबी कपड़ा बिछाना चाहिए, इस पट्टे पर गुलाबी रंगे हुए चावलों की सात ढेरियां बनाकर रख देनी चाहिए, ये चावल पहले से ही गुलाबी रंग में रंगकर सुखाकर रखने चाहिए, सातों ढेरियां बांएं से दाएं एक ही सीध में हों तथा प्रत्येक ढेरी पर एक लौंग रख देना चाहिए।

इसके बाद सामने ढेरियों के एक तरफ मां भगवती **"तारा का चित्र एवं यन्त्र"** स्थापित करना चाहिए, ढेरियों के दूसरी तरफ दीपक लगा लेना चाहिए, इसमें शुद्ध घी का प्रयोग किया जाता है।

साधक गुलाबी रंग का आसन बिछा कर बैठे, आसन सूती या ऊनी किसी प्रकार का हो सकता है।

एक बात का ध्यान रखें कि साधना प्रारम्भ करने से पूर्व जिस कमरे में साधना कर रहे हों, उस कमरे की दीवारों को गुलाबी रंग से रंगवा देनी चाहिए, कमरे की छत और फर्श भी गुलाबी रंग से रंगा हो, यदि ऐसा संभव न हो तो कमरे में चारों तरफ दीवारों पर तथा ऊपर भी गुलाबी रंग का कागज चिपका देना चाहिए, यदि कमरे में बिजली की रोशनी हो तो लट्टू या बल्ब भी गुलाबी या लाल रंग का ही होना चाहिए।

कहने का तात्पर्य है कि पूरा कमरा गुलाबी रंग से ही पुता होना चाहिए, यह कार्य साधना प्रारम्भ करने के एक या दो दिन पहले सम्पन्न कर लेना चाहिए।

साधना विधि

सर्वप्रथम साधक गुरु के चित्र या उसकी मूर्ति की पूजा करे, और उनसे प्रार्थना करे, कि साधना में सफलता प्राप्त हो, इसके बाद गणपति के चित्र या मूर्ति को प्रणाम कर याचना करे कि उसकी साधना निर्विघ्न सम्पन्न हो।

इसके बाद साधक हाथ में जल लेकर संकल्प करे—

"मैं **(अपना नाम उच्चारण करे)** भगवती तारा साधना सम्पन्न करना चाहता हूं और अष्टमी पर्यन्त सवा लाख मन्त्र जप सम्पन्न करूंगा, मैं यह साधना घर में सुख शान्ति एवं आर्थिक उन्नति के लिए कर रहा हूं, मुझे भगवती तारा प्रत्यक्ष दर्शन दें।"

ऐसा बोल कर हाथ का जल पात्र में छोड़ दें।

पूजन

इसके बाद साधक भगवती तारा के चित्र व यन्त्र का पूजन करे, पूजन में कोई विशेष जटिलता या विधि-विधान नहीं है, यन्त्र को जल से स्नान कराकर उस पर कुंकुम लगावे गुलाबी पुष्प समर्पित करे, तथा मां तारा का भी इसी प्रकार गुलाबी पुष्पों से पूजन करे।

मन्त्र जप

आठ दिन में सवा लाख मन्त्र जप करने होते हैं, इसलिए नित्य सोलह हजार मन्त्र जप होने चाहिए, इस प्रकार आठ दिन में एक लाख अट्ठाईस हजार जप हो जायेगा, इसमें सवा लाख आवश्यक है ही, तीन हजार मन्त्र जप इसलिए अतिरिक्त हो जाता है, जिससे कि कोई भूल चूक हो गई हो तो क्षम्य हो।

'तारा तान्त्रोक्त माला' का प्रयोग श्रेष्ठ माना गया है, माला में १०८ दाने होने चाहिए।

तारा ध्यान

सर्व प्रथम मां तारा को दोनों हाथों से प्रणाम कर निम्नलिखित ध्यान मन्त्र का उच्चारण करें—

ध्यान मन्त्र

प्रत्यालीढपदार्पिताङ्घ्रिशवहृद्घोराट्टहासापरा खड्गेन्दीवरकर्त्रिखर्प्परभुजाहुंकारबीजोद्भवा। खर्व्वा नीलविशालपिंगलजटाजूटेकनागैर्युता । जाड्य- न्न्यस्य कपालकर्तृ जगतां हन्त्युग्रतारा स्वयम् ।।

अर्थात् मां तारा महाविद्या है, जो नरमुण्डों को धारण किये हुए हैं, जिसके सिर पर भी नरमुण्डों का ताज पहना हुआ है, उसके चार हाथ हैं, कलाइयों पर सर्प लपेटे हुए हैं, और वह दरिद्रता रूपी शत्रु पर पांव रखकर खड़ी है, ऐसी ही तारा को मैं भक्ति-भाव से प्रणाम करता हूं।

इसके बाद बेसन की बनी हुई किसी मिठाई का भोग लगा दिया जाय, यह मिठाई नित्य घर पर ही बनी हो,

Scanned by CamScanner

बाजार की बनी हुई मिठाई या प्रसाद का उपयोग न किया जाय।

इसके बाद निम्न सात अक्षरों के मन्त्र का जप प्रारम्भ कर दिया जाय—

तारा मन्त्र

॥ ऐं ओं ह्रीं क्रीं हुं फट् ॥

यह मन्त्र अपने आप में चैतन्य एवं प्राणदायक है, साधक को निरन्तर इस मन्त्र का जप करना चाहिए, मन्त्र जप करते समय दीपक लगा रहना चाहिए।

साधनाकाल में ध्यान रखने योग्य तथ्य

- यह साधना दिन को या रात्रि को सम्पन्न की जा सकती है, यदि प्रातः काल पूजन करे तो दिन भर में सोलह हजार मन्त्र जप कर लेने चाहिए, यदि साधक चाहे तो प्रातः संक्षिप्त पूजन कर मन्त्र जप कर सकता है, और रात्रि को पुनः पूजन कर अपने काम पर जा सकता है, परन्तु साधक को यह ध्यान रखना चाहिए, कि या तो वह दिन को ही पूरा मन्त्र जप करे या रात्रि को ही।
- नित्य सोलह हजार मन्त्र जप आवश्यक है, गिनती के लिए किसी भी वस्तु का प्रयोग किया जा सकता है।
- यह साधना पुरुष या स्त्री कोई भी कर सकता है, पर साधना काल में रजस्वला समय हो जाय तो, स्त्री को साधना स्थगित कर देना चाहिए।
- साधना काल में स्त्री-संग, शराब, जुआ आदि व्यसन सर्वथा वर्जित हैं, तथा २४ घण्टों मे एक समय शुद्ध शाकाहारी भोजन करे, बाजार की बनी हुई किसी भी वस्तु या पदार्थ का सेवन वर्जित है।
- साधना में बैठने के बाद यदि साधक चाहे तो २१ मालाओं के मन्त्र जप के बाद पांच या दस मिनट का विश्राम ले सकता है, इस प्रकार प्रत्येक २१ मालाओं के बाद थोड़ा-थोड़ा विश्राम चाहे तो ले सकता है, पर बीच में उठे नहीं, यदि मल-मूत्र विसर्जन का दवाव हो जाय, तो साधक २१ मालाओं के बाद ऐसा कर सकता है, पर इसके बाद पुनः स्नान करके ही साधना में बैठ सकता है।

अनुभव

साधक जब साधना में बैठता है, तो तीसरे दिन उसे साधना कक्ष में सुगन्ध सी अनुभव होती है, यह सुगन्ध अपने आपमें अवर्णनीय होती है, पांचवे दिन उसे मधुर घुंघरुओं की आवाज सुनाई देती है और आठवें दिन जगत् जननी मां तारा के साक्षात् दर्शन हो जाते हैं, इसके लिए अखण्ड श्रद्धापूर्ण विश्वास और विधि-विधान आवश्यक है।

साधना समाप्त होने के बाद जल्दी से जल्दी साधक की कामना पूर्ण होती है।

समापन

आठवें दिन सवा लाख मन्त्र जप पूरे हो जाते हैं, तब नवें दिन जमीन पर या किसी पात्र में अग्नि लगा कर तारा मन्त्र से बारह हजार पांच सौ आहुतियां देनी चाहिए इसमें मात्र शुद्ध घी का ही प्रयोग किया जाता है, प्रत्येक आहुतियों के साथ तारा मन्त्र का उच्चारण आवश्यक है।

यज्ञ की समाप्ति के बाद अपने परिजनों, मित्रों, सम्बन्धियों को बुलाकर भोजन कराना चाहिए, और इसके बाद ही स्वयं भोजन करे, तभी साधना सम्पन्न मानी जाती है, फिर यन्त्र और चित्र को पूजा घर में स्थापित कर ले, तथा लकड़ी के पट्टे पर जो चावल की ढेरियां व लौंग हो, उसे किसी ब्राह्मण को दान दे दे या नदी अथवा तालाब में विसर्जित कर दे।

वस्तुतः यह हमारा सौभाग्य है कि हमें इस प्रकार का सुयोग्य अवसर प्राप्त हुआ है, जबकि हम एक श्रेष्ठ साधना में संलग्न हो सकते हैं, पत्रिका पाठक और सिद्धाश्रम साधक परिवार इस अवसर का लाभ उठा कर जीवन को पूर्णता प्रदान कर सकते हैं। ●

Scanned by CamScanner

॥ अथ श्री काली तंत्रम् ॥

काली कंकाली मेरा वचन न जाए खाली

शव पर आरुढ़, गले में मुण्ड-माला धारण किये हुए, हाथ में खड्ग, वर मुद्रा, कटा हुआ मुण्ड, श्मशान निवासनी महाकाली का स्वरूप तो सबसे निराला है, और जिस साधक ने काली की साधना नहीं की, वह तन्त्र में पूर्णता प्राप्त कर ही नहीं सकता, काली तो तन्त्र की आधार शक्ति है।

शत्रुओं का मर्दन करने वाली, भक्तों को अभय प्रदान करने वाली, जिसके अट्टहास से तीनों लोक गूंज उठते हैं, जिसकी तपस्या देवता भी करते हैं, जिसके बिना शिव भी शक्तिहीन हैं, उस महाकाली को मैं शत-शत नमन करता हूं।

महाकाली की साधना केवल तांत्रोक्त रूप से ही सम्पन्न की जा सकती है, और जो साधक विधि-विधान सहित काली साधना सम्पन्न करता है, वह अपने जीवन में भय, बाधा, और शत्रुओं का नाश कर देता है, महाकाली का अभय व वर प्राप्त साधक तो स्वयं काल के समान हो जाता है, तथा निर्विघ्न अपनी जीवन यात्रा में सम्पूर्णता के साथ विचरण करता है।

काली साधना के सम्बन्ध में तांत्रिक विधान की पुस्तकों की भरमार है, कहीं श्मशान में पूजा करने का विधान है, तो कहीं विशेष बलि देने का विधान है, कई पुस्तकों में शव पर बैठ कर अनुष्ठान का वर्णन है, तो कहीं नग्न हो कर नग्न स्त्री के साथ भोग करते हुए विशेष तांत्रिक क्रिया का विधान है, और तो और बिल्ली, मेंढ़, ऊंट, भैंसे तक की बलि का वर्णन आया है, यदि कोई इन पुस्तकों के आधार पर तांत्रिक क्रियाएं सम्पन्न करे तो या तो वह पागल हो जायेगा, अथवा लोग उसे पागल घोषित कर देंगे, तांत्रिक साधनाएं मूल रूप से तो अत्यन्त सरल हैं, इसे तो पंडितों, पुरोहितों ने अपने स्वार्थवश तोड़-मरोड़ दिया है, जिससे सामान्य साधक भयभीत रहें, आज आपके सामने एक अत्यन्त सरल काली तन्त्र विधान दिया जा रहा है, जिसे आप अपने घर में, अपने पूजा स्थान में बैठ कर सम्पन्न कर सकते हैं, जब काली को 'मां' कहा गया है, तो उस मां के आशीर्वाद की प्राप्ति तो पूर्ण निष्ठापूर्वक भक्ति करने वाले साधक को अवश्य प्राप्त होगी, उसके लिए गन्दी प्रक्रियाएं सम्पन्न करने की आवश्यकता ही नहीं है, पुत्र की पुकार सुन कर मां को तो आना ही है।

काली तन्त्र विधान

अमावस्या की रात्रि के अलावा रविवार मां काली की साधना करने के लिए श्रेष्ठ मुहूर्त है, इस दिन रात्रि

Scanned by CamScanner

को साधक स्नान कर शुद्ध लाल वस्त्र धारण कर अपने पूजा स्थान में दक्षिण दिशा की ओर मुंह कर बैठें और अपने सामने स्वर्ण अथवा ताम्र धातु से निर्मित **महाकाली यन्त्र** को सबसे पहले दूध से स्नान कराएं, फिर शुद्ध जल धारा से, तत्पश्चात् एक ताम्र पात्र में पुष्प रख कर निम्न मन्त्र से देवी का ध्यान करते हुए, पूजा कार्य प्रारम्भ करें—

"ॐ ह्रीं कालिका योग पीठात्मने नम:"

इस साधना में आठ दिशाओं में आठ भैरव तथा आठ भैरवियों की स्थापना करें, इस हेतु **तांत्रोक्त आठ भैरव चक्र, आठ भैरवी चक्र** की स्थापना करें, ये अष्ट भैरव व भैरवियां हैं :—

अष्ट भैरव –असितांग भैरव, रूरू भैरव, चण्ड भैरव क्रोध भैरव, उन्मत्त भैरव, कपालि भैरव, भीषण भैरव, संहार भैरव।

अष्ट भैरवी–श्री भैरवी, महा भैरवी, सिंह भैरवी, धूम्र भैरवी, भीम भैरवी, उन्मत्त भैरवी, वशीकरण भैरवी, मोहन भैरवी।

इन सब की पूजा सिंदूर, अबीर-गुलाल तथा लाल पुष्पों से करें, प्रत्येक के आगे एक-एक फल नैवेद्य के रूप में रखें, धूप और दीप निरन्तर जलता रहे, अब महाकाली मूर्ति यन्त्र के आगे साधक नैवेद्य रख कर देवी का ध्यान करें कि —

ॐ अभीष्टसिद्धि मे देही शरणागत वत्सले।
भक्तत्या समर्पये तुभ्यं इह सम्पूर्णपूजनम्।

अर्थात्, "हे महादेवी ! मैं तेरा भक्त तेरी शरण में हूं, मुझे सिद्धि प्रदान करो और यह सम्पूर्ण पूजन तुम्हें समर्पित है।" अब साधक पुष्पों की एक माला देवी पर चढ़ाएं तथा शान्त मुद्रा में बैठ कर मन्त्र जप प्रारम्भ करें।

मन्त्र

।। ॐ क्रीं क्रीं क्रीं ह्लीं ह्लीं हूं हूं दक्षिणे कालिके
क्रीं क्रीं क्रीं ह्लीं ह्लीं हूं हूं स्वाहा ।।

उसी स्थान पर बैठ कर पांच माला मन्त्र जप सम्पन्न करना है, बीच में किसी प्रकार का व्यवधान नहीं होना चाहिए, इस प्रकार पूजन कर देवी की आरती सम्पन्न करें, और अर्पित किया हुआ नैवेद्य ग्रहण करें।

यह साधना अत्यन्त सिद्ध साधना है और घोर से घोर संकट भी महाकाली की साधना से निश्चित रूप में दूर हो जाता है, साधक की मनोकामनाएं अवश्य ही पूर्ण होती हैं। ●

यदि जीवन को इन्द्र के समान ऐश्वर्यमय बनाना चाहते हैं

तो कीजिए

इन्द्रकृत

सिद्ध सहस्र लक्ष्मी प्रयोग

ऐसा दुर्लभ प्रयोग जिसकी महत्ता विश्वामित्र, वशिष्ठ, शंकराचार्य, गुरु गोरखनाथ सबने एक मत से स्वीकार की और प्रत्यक्ष साधना कर अपने अनुभव से अपने पूरे जीवन के लिए लक्ष्मी को आधीन कर लिया—

अभी-अभी पिछले दिनों हिरण्मयवासी तपोनिष्ठ योगीराज शैलन्द्र स्वामी जी से एक अद्‌भुत और आश्चर्यजनक प्रयोग प्राप्त हुआ है, यदि पाठकों ने शास्त्रों का अध्ययन किया हो, तो उन्हें पता चलेगा कि इन्द्रकृत सहस्र लक्ष्मी प्रयोग सर्वथा गोपनीय और दुर्लभ प्रयोग रहा है, यद्यपि इसकी चर्चा कई ग्रन्थों में आई है, परन्तु इसका विस्तृत वर्णन हमें अभी तक प्राप्त नहीं हुआ था, पत्रिका की टीम इस रहस्य को प्राप्त करने के लिए प्रयत्नशील थी, परन्तु इसकी प्रामाणिक विधि और इसका शुद्ध पाठ प्राप्त नहीं हो रहा था, पिछले दिनों कुम्भ के अवसर पर योगीराज शैलेन्द्र स्वामी जी से भेंट हुई और हमें ज्ञात था कि यह विद्या उनके कंठ में सुरक्षित है, हमने उनसे निवेदन किया तो उन्होंने कृपा पूर्वक यह दुर्लभ साधना रहस्य हमें अंकित करवा दिया, इसके लिए पत्रिका स्वामी जी

की आभारी है ।

महाविद्या प्रयोग

दस महाविद्याओं के बारे में तो पत्रिका के पाठक पढ़ ही चुके हैं, और उनमें से कई साधकों ने उन प्रयोगों को अपनाया भी है, परन्तु देवताओं के अधिपति इन्द्र ने भगवती लक्ष्मी को भी महाविद्या मान कर उनकी साधना की, और सहस्त्र रूपेण अर्थात् हजार-हजार रूपों में भगवती लक्ष्मी इन्द्र के निवास में स्थापित हुई और इन्द्र देवताओं में सर्वाधिक सुखी, सर्वाधिक ऐश्वर्य सम्पन्न और सर्वाधिक पूर्णता प्राप्त व्यक्तित्व बने ।

भगवती लक्ष्मी की साधना लक्ष्मी के रूप में तो कई स्थानों पर प्रचलित है, परन्तु महाविद्या का रूप देकर इस प्रकार की साधना इन्द्र ने ही स्पष्ट की है, और आगे के सभी ऋषियों ने एक स्वर से यह स्वीकार किया है, कि वास्तव में ही यह साधना अपने आप में शीघ्र फलदायक, निश्चित फलदायक और आश्चर्यजनक रूप से फलदायक है ।

सर्वाधिक तेजस्वी मन्त्र

और मैं यह दावे के साथ कह सकता हूं, कि यह मन्त्र अपने आप में अत्यन्त प्रभावयुक्त है, यद्यपि यह साधना अत्यन्त सरल प्रतीत होती है, परन्तु इसका प्रभाव अपने आप में अचूक है, आगे के ऋषियों ने भी इस साधना को सम्पन्न किया, इतिहास साक्षी है कि **वशिष्ठ** ने साधना को सम्पन्न कर अतुलनीय ऐश्वर्य प्राप्त किया, **विश्वामित्र** ने इस साधना को तन्त्र मान कर सम्पन्न किया, और वे आश्चर्यचकित रह गये कि तन्त्र की अपेक्षा यह जल्द और पूर्णता के साथ सम्पन्न हो सकी, इस साधना के द्वारा भगवती लक्ष्मी साक्षात् जाज्वल्यमान स्वरूप में प्रगट होती ही है, अदृश्य रूप में भी वह साधक के घर में निवास करती है और उसे सभी दृष्टियों से पूर्णता प्रदान करती है, **शंकराचार्य** ने स्वयं इस साधना की बृहद् प्रशंसा की है, और कहा है कि यह साधना कलियुग में गृहस्थ लोगों के लिए कल्पवृक्ष के समान वरदान स्वरूप है, **गुरु गोरखनाथ** ने तो अपने सभी शिष्यों को यह साधना सम्पन्न करने की आज्ञा दी थी, जिससे कि उनके शिष्य दरिद्री नहीं रहें, पूर्ण रूप से सम्पन्न व ऐश्वर्यवान बनें, जिससे कि पूरे विश्व में अपने ज्ञान का सुविधापूर्वक प्रसार कर सकें ।

शंकराचार्य के बाद यह साधना एक प्रकार से लुप्त ही हो गई, ग्रन्थों में इस साधना की बारीकियां और इसका प्रभावी प्रामाणिक मन्त्र प्राप्त नहीं हो सका, इसके प्रभाव और इसकी प्रामाणिकता के बारे में प्राचीन काल के ग्रन्थ भरे पड़े हैं ।

साधना प्रयोग

यह प्रयोग पुष्य नक्षत्र को किया जाना चाहिए, अगले तीन महीनों में पुष्य नक्षत्र इस प्रकार से घटित होते हैं —

तारीख १४-३-९२ रात ८।१८ से प्रारम्भ तथा तारीख १५-३-९२ सायं ५।४६ तक ।

तारीख १०-४-९२ रात २।१० से प्रारम्भ हो कर तारीख ११-४-९२ रात १२।३४ तक ।

तारीख ८-५-९२ प्रातः ७।४६ से प्रारम्भ हो कर तारीख ८-५-९२ रात ५।२६ पर समाप्त ।

इसके अलावा भी साधक कभी भी पुष्य नक्षत्र का प्रयोग कर सकता है, श्रेष्ठ साधक तो पूरे वर्ष भर प्रत्येक पुष्य नक्षत्र को यह प्रयोग सम्पन्न करते हैं ।

साधना सामग्री

इस साधना में पांच पदार्थों की आवश्यकता होती है, जो कि शास्त्र विधि के अनुसार निम्नलिखित हैं—

१-पूर्णता के लिए—**तांत्रोक्त नारियल**
२-समृद्धि के लिए—**कल्पवृक्ष फल**

Scanned by CamScanner

३-सिद्धि के लिए—**बिल्ली की नाल**
४-स्थापन के लिए—**महालक्ष्मी चित्र और**
५-ऐश्वर्य के लिए-**कमल गट्टे की इन्द्र सहस्र लक्ष्मी माला**

साधक इन पांचों वस्तुओं को कहीं से भी प्राप्त कर सकता है, पर इस बात का ध्यान रहे कि ये सारी वस्तुएं मन्त्र सिद्ध एवं प्रामाणिक हों।

पत्रिका की यह नीति रही है, कि वह उच्च कोटि के योगियों और पण्डितों से ऐसी दुर्लभ सामग्री प्राप्त कर आप तक पहुंचाने का प्रयास करती ही है, हमने इन पांचों वस्तुओं का समन्वित नाम **"इन्द्रकृत सहस्र लक्ष्मी महाविद्या पैकेट"** रखा है जिसमें ये पांचों वस्तु प्रामाणिकता के साथ हैं जिससे साधक इस पैकेट से ये वस्तुएं प्राप्त कर पूर्णता के साथ साधना सम्पन्न कर सकें।

इसके अलावा जलपात्र, केसर, पुष्पों की माला, कुछ खुले पुष्प, नारियल, फल, नैवेद्य, आदि पूजन सामग्री भी पहले से ही साधना कक्ष में या पूजा घर में रख देनी चाहिए।

साधना प्रयोग

जिस दिन साधक को साधना करनी है, उस दिन साधक को स्नान कर पीली धोती धारण करे, स्त्री साधिका हो तो बालों को धो ले और पीठ पर बालों को खुला रखे, यदि चाहें तो पति-पत्नी दोनों आसन पर बैठ कर साथ-साथ साधना सम्पन्न कर सकते हैं।

सबसे पहले साधक पहले से ही प्राप्त महालक्ष्मी चित्र को फ्रेम में मढ़वा कर अपने सामने रख दें और जल से धो कर उस पर केसर की बिन्दी लगावें, सामने नैवेद्य अर्पित करें और फिर लक्ष्मी के चित्र के सामने ही एक चावल की ढेरी बना कर तांबे का छोटा सा कलश जल से भर कर स्थापित करें, और उस पर लाल कपड़ा रख कर उस कपड़े को कलश से बांध दें, फिर उस पर चावलों की ढेरी बनाकर **तांत्रोक्त नारियल, कल्पवृक्ष फल और बिल्ली की नाल** स्थापित कर दें, फिर इनकी संक्षिप्त पूजा करें और पुष्प अर्पित करें, साथ ही साथ इस कलश के सामने पांच घी के दीपक लगायें, जब तक साधना सम्पन्न करें तब तक घी के दीपक लगे रहने चाहिए, जो पुष्पों की माला लाई हुई है, वह साधक स्वयं धारण कर लें, और शास्त्रों में विधान है, कि पहले से ही पान लगा कर मंगवा लेना चाहिए और यह ताम्बूल अर्थात् पान मुंह में ले कर उसे चबाकर फिर उसे थूक दें, तथा मुंह को धो कर मन्त्र प्रयोग प्रारम्भ करें।

मन्त्र प्रयोग

सबसे पहले हाथ में जल ले कर संकल्प करें कि मैं आज पुष्य नक्षत्र के मुहूर्त पर अटूट धन सम्पत्ति, ऐश्वर्य प्राप्त करने के लिए यह दुर्लभ साधना सम्पन्न कर रहा हूं।

तदुपरान्त पुनः हाथ में जल लेकर निम्न विनियोग पढ़ कर जल भूमि पर छोड़ दें—

विनियोग

ॐ अस्य श्री सर्व महाविद्या महारात्रि गोपनीय मन्त्र रहस्याति रहस्यमयी पराशक्ति श्री मदाद्या भगवती सिद्ध लक्ष्मी सहस्राक्षरी सहस्र रूपिणी महाविद्यायाः श्री इन्द्र ऋषि गायत्र्यादि नाना छन्दांसि, नवकोटि शक्तिरूपा श्री मदाद्या भगवति सिद्ध लक्ष्मी देवता श्री मदाद्या भगवती सिद्ध लक्ष्मी प्रसादादखिलेष्टार्थे जपे पाठे विनियोगः।

मन्त्र जप से पूर्व निम्न महत्वपूर्ण व गोपनीय न्यास अवश्य सम्पन्न करें—

ऋष्यादि-न्यास

श्री इन्द्र ऋषिभ्यां शिरसे नमः।

गायत्र्यादि नानाछन्देभ्यो नमः मुखे।

नवकोटि शक्ति रूपा श्रीमदाद्या भगवती सिद्ध लक्ष्मी प्रसादादखिलेष्टार्थे जपे पाठे विनियोगाय नमः सर्वांगे।

अंग-न्यास

ॐ श्रीं सहस्रारे ॐ ह्रीं नमः भाले
ॐ क्लीं नमो नेत्रयुगले ॐ ऐं नमो हस्त युगले
ॐ श्रीं नमः हृदये ॐ क्लीं नमः कटौ
ॐ ह्रीं नमः जंघा द्वये ॐ श्रीं नमः पादादि सर्वांगे

उपरोक्त न्यास आदि उच्चारण कर फिर चित्र के सामने भगवती लक्ष्मी को श्रद्धा युक्त प्रणाम कर निम्न महाविद्या मन्त्र का २१ बार उच्चारण करें—

सहस्राक्षरी सिद्ध लक्ष्मी महाविद्या मन्त्र

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौ श्रीं ऐं ह्रीं क्लीं सौः सौः ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं जय जय महालक्ष्मी, जगदाद्ये, विजये, सुरासुर त्रिभुवन निदाने, दयांकुरे, सर्व देव तेजो रूपिणी विरंचि संस्थिते, विधि वरदे, सच्चिदानन्दे, विष्णु देहावृते, महा मोहिनी, नित्य वरदान तत्परे, महा सुधाब्धि वासिनि, महा तेजो धारिणि, सर्वाधारे, सर्व कारण कारिणे, अचिन्त्य-रूपे, इन्द्रादि सकल निर्जर सेविते, साम गान गायन, परिपूर्णोदय कारिणी, विजये, जयन्ति, अपराजिते, सर्व सुन्दरि रक्तांशुके, सूर्य कोटि संकांशे, चन्द्र कोटि सुशीतले, अग्निकोटि दहन शीले, यम कोटि वहन शीले, ॐकार नाद बिन्दु रूपिणि, निगमागम भागदायिनि, त्रिदश राज्य दायिनी, सर्व स्त्री रत्न स्वरूपिणि, दिव्य देहिनी, निर्गुणो सगुणे, सद्-सद् रूपधारिणी, सुर वरदे, भक्त त्राण तत्परे, बहु वरदे, सहस्राक्षरे, अयुताक्षरे, सप्त कोटि लक्ष्मी रूपिणि, अनेकलक्ष-लक्ष स्वरूपे अनन्त कोटि ब्रह्माण्ड नायिके, चतुर्विशति मुनि जन संस्थिते, चतुर्दश भुवन भाव विकारणे, गगन वाहिनि, नाना मन्त्र-राज विराजते, सकल सुन्दरीगण सेविते चरणारविन्दे, महात्रिपुर सुन्दरि, कामेश दायिते, करुणा रस कल्लोलिनि, कल्प वृक्षादि स्थिते, चिन्तामणि द्वय मध्यावस्थिते, मणि मन्दिरे निवासिनी, विष्णु वक्षस्थल कारिणे, अजिते, अमिले, अनुपम चरिते, मुक्ति क्षेत्राधिष्ठा-यिनी, प्रसीद प्रसीद, सर्व मनोरथान पूरय पूरय, सर्वारिष्टान छेदय छेदय, सर्व ग्रह पीड़ा ज्वराग्र भयं विध्वसय विध्वंसय, सर्व त्रिभुवन जातं वशय वशय, मोक्ष मार्गाणि दर्शय दर्शय, ज्ञान मार्ग प्रकाशय प्रकाशय, अज्ञान तमो नाशय नाशय, धन धान्यादि वृद्धि कुरु कुरु, सर्व कल्याणानि कल्पय कल्पय, मां रक्ष रक्ष, सर्वायद्भ्यो निस्तारय निस्तारय, वज्र शरीरं साधय साधय ह्रीं क्लीं सहस्राक्षरी सिद्ध लक्ष्मी महा विद्यायै नमः।

पाठक स्वयं इस मन्त्र को पढ़ें और देखें कि यह मन्त्र कितना अधिक तेजस्वी और महत्वपूर्ण है, इस दिन केवल २१ बार इस मन्त्र का उच्चारण करना है, मन्त्र जप पूरा होने पर साधक तांत्रोक्त नारियल, कल्पवृक्ष फल और बिल्ली की नाल को सुरक्षित रख दें, यदि साधक की कोई दुकान या फैक्टरी हो तो वहां पर भी जल छिड़क दें, कलश के ऊपर जो चावल रखे हुए थे, वे घर में रखे हुए धान्य में मिला दें, माला को पहने रहें या पूजा स्थान में रख दें।

अष्टलक्ष्मी प्राप्ति संभव है

अन्नपूर्णा शंख पूजा से

विशेष तांत्रिक-मांत्रिक प्रयोग

साधना के जानकार अच्छी तरह से जानते हैं, कि सबसे सरल साधनाएं लक्ष्मी की साधनाएं ही हैं, लक्ष्मी साधना यदि विधि-विधान सहित सम्पन्न की जाय, तो साधक साधना का यह पहला अध्याय आसानी से पूर्ण कर सकता है, जो योगी होते हैं वे तो लक्ष्मी साधना में पूर्णता प्राप्त करने के पश्चात् ही आगे उच्च साधनाएं सम्पन्न करते हैं, विश्व भर में उनकी जय-जयकार उच्च साधनाओं के कारण ही होती है, लेकिन गृहस्थ के लिए तो सबसे महत्वपूर्ण साधना लक्ष्मी साधना ही है, लक्ष्मी का दूसरा नाम ही **श्री सुन्दरी** तथा **अन्नपूर्णा** कहा गया है, और इसका विधान गृहस्थ साधक के जीवन की प्रत्येक बाधा के निवारण हेतु विशेष फल प्रदायक है, श्री सुन्दरी देवी भोग और मोक्ष दोनों ही देने वाली है, भोग भौतिक पदार्थों से आनन्द प्राप्त करने की क्रिया को कहते हैं, भगवान शिव की पत्नी गौरी को श्री सुन्दरी अन्नपूर्णा कहा गया है, इसलिए प्रयोग के माध्यम से अन्नपूर्णा के एक सौ आठ ऐश्वर्य, जिन्हें श्री श्री १०८ कहा गया है, की प्राप्ति होती है।

आठ विशेष लाभ

इस साधना प्रयोग के आठ लाभ हैं, साधना प्रयोग सम्पन्न करने से पहले साधक को चाहिए कि वह गुरु का स्मरण करके गणपति का ध्यान करते हुए, मन्त्र और श्री सुन्दरी देवी में पूर्ण आस्था व्यक्त करते हुए जीवन के निम्नलिखित आठ सुखों की प्राप्ति चाहते हुए, पूर्ण आस्था के साथ मन्त्र प्रयोग करें—

१- पूर्ण निरोग शरीर
२- आनन्दयुक्त स्वनिर्मित भवन
३- आज्ञाकारी बुद्धिमान और चतुर पुत्र
४- मनोहारिणी कान्ता (पत्नी)
५- **सुधनम्**-जीवन में पर्याप्त धन की प्राप्ति
६- **आतिथ्य**-घर में नित्य अतिथियों का सम्मान
७- **देवाभिमानम्**-घर में नित्य देवताओं का पूजन अर्चन
८- जीवन में हर प्रकार से पूर्ण मानसिक शान्ति, निश्चिन्तता

Scanned by CamScanner

साधना क्रम

यह प्रयोग विशेष प्रभावशाली और तुरन्त फलदायक है, जिसे सम्पन्न करने के लिए एक विशेष क्रम से निम्न-लिखित नियमों का दृढ़ता से पालन करते हुए, मन्त्र सिद्ध और प्राण प्रतिष्ठायुक्त **अन्नपूर्णा शंख** प्राप्त करके, सदगुरु का आशीर्वाद प्राप्त करने के बाद ही यह प्रयोग सम्पन्न किया जाता है।

१-किसी भी अष्टमी से साधना प्रारम्भ करें, १४ दिनों का यह साधना प्रयोग एक ही स्थान पर रह कर संपन्न करें।

२-पूर्ण स्वच्छता के साथ, पवित्रता का ध्यान रखते हुए साधना प्रयोग करें।

३-उत्तर दिशा की ओर मुंह करके पीला आसन बिछाकर पीली धोती अर्थात् पीले वस्त्र धारण कर प्रयोग करें।

४-अपने सामने लकड़ी के बाजोट पर लाल वस्त्र बिछा कर उस पर चावल की ढेरी बना कर उस पर प्राण प्रतिष्ठा युक्त 'अन्नपूर्णा शंख' स्थापित कर दें।

५-अपने सामने घी और तेल के दो अलग-अलग दीपक जला कर रखें।

६-जल पात्र कुंकुम, अक्षत, गणपति विग्रह अथवा सुपारी में गणपति को स्थापित कर के शंख के बराबर में रख दें, फिर शंख को कच्चे दूध से फिर गंगाजल से स्नान करा के सात बार यह क्रम दोहराएं, तत्पश्चात् शंख को यज्ञोपवीत धारण कराएं, पंचोपचार विधि से गुरु का, गणपति का और अन्नपूर्णा शंख का पूजन करें।

७-अष्ट लक्ष्मियों की प्रतीक आठ बिन्दियां केसर से 'अन्नपूर्णा शंख' पर निम्न मन्त्रों का क्रम धारण करके लगाएं—

ॐ धन लक्ष्म्यै नमः ॐ धान्य लक्ष्म्यै नमः
ॐ धरा लक्ष्म्यै नमः ॐ कीर्ति लक्ष्म्यै नमः
ॐ आयु लक्ष्म्यै नमः ॐ यश लक्ष्म्यै नमः
ॐ पुत्र लक्ष्म्यै नमः ॐ वाहन लक्ष्म्यै नमः

इस शंख के सामने अक्षत, आठ गुलाब के पुष्प, दूध का बना नैवेद्य, आठ सुपारी, अबीर गुलाल, एक नारियल, आठ लौंग, आठ इलायची समर्पित करें और फिर हाथ जोड़ कर निम्न मन्त्रों का उच्चारण करते हुए हृदय से प्रणाम करें—

१–ॐ महालक्ष्म्यै नमः
२–ॐ अन्नपूर्णायै नमः
३–ॐ शिवायै नमः

फिर कपूर या घी से शिव की आरती करें, पूर्ण पूजन के बाद **रुद्राक्ष, हकीक** या **स्फटिक माला** से नीचे लिखे अन्नपूर्णा मन्त्र चौदह दिन तक नित्य ११ माला मन्त्र जप करें।

अन्नपूर्णा मन्त्र

॥ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अन्नपूर्णाय शिवायै नमः ॥

साधक को चाहिए कि अष्टमी से शुरू करके अष्टमी को ही यह साधना पूर्ण करें, अष्टमी के दिन आठ छोटी-छोटी कन्याओं को भोजन कराये और सामर्थ्य के अनुसार दक्षिणा दे कर उनका सम्मान पूजन करे, क्योंकि कन्याओं को भी अन्नपूर्णा रूप माना गया है, प्रेम से उन्हें विदा करे और फिर प्रयोग किये गए **अन्नपूर्णा शंख** को लाल कपड़े में लपेट कर तिजोरी, सेफ में या पूजा स्थल में रख दे, सुपारी, अक्षत, जो शंख पर चढ़ाए हुए हैं, उसी के साथ वस्त्र में लपेट ले, शेष पदार्थ, नैवेद्य आदि परिवार में बांट कर ग्रहण कर ले।

इस प्रकार से किया गया अन्नपूर्णा शंख प्रयोग साधक के जीवन में निश्चय ही चालीस दिन के अन्दर अपना फल देता ही है, यह पूर्णता की साधना का प्रयोग कहलाता है जिसे प्रत्येक साधक को अपने जीवन में सम्पन्न करना चाहिए। ●

Scanned by CamScanner

स्वप्न तो दर्पण है जीवन का
जिसमें देख सकते हैं आने वाली समस्याओं को
और
संभव है इनका सरल निराकरण

स्वप्न प्रत्येक व्यक्ति के जीवन का आवश्यक अंग है, जो भी व्यक्ति नींद लेता है, उसे स्वप्न आना अनिवार्य है, यह अलग बात है कि उसे वह स्वप्न याद रहे या न रहे, कई स्वप्न आंख खुलने पर याद रह जाते हैं, और अधिकांश स्वप्न हम भूल जाते हैं, इस सम्बन्ध में कई प्रकार की धारणाएं हैं, कुछ लोगों के अनुसार स्वप्न के समय जीव इस शरीर से निकल कर कहीं अन्यत्र चला जाता है, और वहां के विचित्र दृश्य देख कर निद्रा भंग होने तक पुनः शरीर में लौटा आता है, कुछ लोगों के अनुसार स्वप्न में भविष्य के संकेत हैं।

स्वप्न शास्त्रियों के अनुसार सोने के बाद घण्टे भर के अन्दर-अन्दर पहला स्वप्न मानव देख लेता है, स्वप्नों की तीव्रता होने पर नेत्रों की पुतलियां घूमने लग जाती हैं, सामान्यतः प्रत्येक व्यक्ति हर रात पांच-छः स्वप्न देखता है।

नोबल प्राइज विजेता प्रो० एडगर एड्राइन के अनुसार सोने के समय हमारे मस्तिष्क का अवचेतन क्रमशः सक्रिय होता जाता है, क्योंकि उस पर धीरे-धीरे दबाव कम होने लगता है, यह दबाव कम होने पर मस्तिष्क तरंगों का कंपन-क्रम बदलता है और मस्तिष्क तरगें एक विशेष गति से दौड़ती हैं, इसी से स्वप्न दिखाई देते हैं।

हिमालय के प्रसिद्ध योगी **स्वामी विरूपानन्दजी** ने इस सम्बन्ध में कई वर्षों तक प्रयोग किये हैं, और इस क्षेत्र के वे अधिकारी व्यक्ति माने जाते हैं, उन्होंने एक विशिष्ट विधि बताई है, जिसके अनुसार व्यक्ति स्वप्न के माध्यम से अपनी दैनिक समस्याओं का हल प्राप्त कर सकता है।

रात्रि को सोने से पूर्व अपने हाथ-पैर ठंडे पानी से धो लें, फिर अपनी समस्या का एक साफ कागज पर लिख लें और उस कागज को अपने सिरहाने रख दें, तथा स्वप्नेश्वरी देवी **का निम्न ध्यान उच्चरित कर निवेदन करे कि मुझे इस समस्या का हल आप स्वप्न में बता दें तथा हल बताने के साथ ही मेरी निद्रा खुल जाय।**

स्वप्नेश्वरी देवी का ध्यान

स्वप्नेश्वरी महादेवी, श्री श्रीमन्तर साधने।
मम सिद्धि असिद्धि वां स्वप्ने सर्व प्रदर्शय: ॥

इस प्रकार ध्यान कर अपने प्रश्न को पुनः उच्चरित करें और आंख बन्द करके सो जायें, रात्रि को अवश्य ही स्वप्न में इस समस्या का निराकरण स्वप्नेश्वरी देवी स्पष्ट करती हैं।

नित्य कई प्रकार की समस्याएं हमारे सामने आती हैं, जिसमें मन डांवाडोल हो ही जाता है, कि यह कार्य किया जाय या नहीं एवं तुरन्त निर्णय नहीं लिया जा पाता, ऐसी स्थिति में यह विधि अत्यन्त ही अनुकूल मानी गई है।

स्वामी जी के अनुसार पहले इस मन्त्र को सिद्ध कर लेना चाहिए, सवा लाख मन्त्र जप करने पर यह मन्त्र सिद्ध हो जाता है, और इसके बाद मन्त्र उच्चारण कर अपनी समस्या को स्पष्ट कर के सोने पर स्वप्न में उस समस्या का सही हल प्राप्त हो जाता है, जिससे कि जीवन में सही निर्णय लेने में अनुकूलता होती है।

पीछे जो ध्यान लिखा गया है, वही ध्यान, मन्त्र भी है, अतः इसी ध्यान या मन्त्र का सवा लाख मन्त्र जप २१ दिन में पूरा करना चाहिए।

स्वप्न में सही हल प्राप्त हो, इसके लिए तांत्रोक्त विधान भी अनुभूत है, और इसे केरल के प्रसिद्ध योगी स्वामी पुट्टपनाथ ने बताया था, यह मन्त्र मात्र ११ सौ बार जप से ही सिद्ध हो जाता हैं, सिद्ध होने पर रात्रि को सोते समय मन्त्र उच्चारण कर अपनी समस्या बोल कर सो जाना चाहिए, एक घण्टे के भीतर-भीतर समस्या का हल स्वप्न में दिखाई देता है।

मन्त्र

ॐ क्लीं स्वप्नमोहिनी ह्रीं मलयाल भगवति सकलसम्भूत सम्मोहिनीं क्लीं कोडूमारू बुद्धि कड़तु पुमाकि कोडवा मलयाल भगवति कोडूवा ईश्वराणे उमक् उमाणे उमुच्छु मुपतु मवकोटि देरा ववलाणे कोडुवा मलयाल भगवति क्लीं।

यह मन्त्र अनुभूत है. कोई भी साधक इसे सिद्ध करके पूर्ण सफलता प्राप्त कर सकता है. स्वामी जी के अनुसार यह मन्त्र अत्यन्त गोपनीय है, और किसी पर विशेष कृपा होने पर ही स्वामी जी इस मन्त्र को बताते थे।

वास्तव में ही स्वप्न जीवन में सहायक हैं और इनके माध्यम से हम सही और तुरन्त निर्णय लेने में समर्थ हो पाते हैं। ●

आपको शिकायत है.......

पाठकों को शिकायत है कि उन्हें पूरे साल की पत्रिका नहीं मिली है किसी सदस्य को कोई अंक प्राप्त नहीं हुआ है, ऐसा होने का कारण डाक में पत्रिका का गुम हो जाना हो सकता है अथवा कोई अन्य कारण, लेकिन हमने आपको विश्वास दिया था और अब फिर देते हैं कि आपको पूरे अंक प्राप्त कराएंगे, अतः जिन्हें अपने सेट में कोई अंक नहीं मिला है तो वे पत्र लिख भेजें।

भविष्य हेतु यह निश्चय किया गया है, कि हर महीने १२ तारीख को आपको पत्रिका भेज दी जायेगी, यदि यह पत्रिका आपको प्राप्त नहीं होती है तो तत्काल पत्र अवश्य लिख भेजें, सम्बन्धित महीने की शिकायत/अप्राप्ति सूचना उसके अगले महीने के अन्त तक अवश्य हमें मिल जानी चाहिए हम आपको तत्काल नयी पत्रिका भेज देगें ऐसा न हो कि फरवरी का अंक प्राप्त न होने की सूचना आप हमें जुलाई में दें, ऐसे में कार्यवाही कैसे संभव है ?

Scanned by CamScanner

साधना सिद्धि द्वारा ऐसा भी संभव है—

★ जब आपके घर में परिपूर्णता हो

★ जब आप दूसरों को कुछ देने में समर्थ हों

★ जब आप पर कोई तांत्रिक प्रयोग न कर सके

★ जब आपके जीवन में रक्षा कवच बन जाए

दो साधनाएं जो आपका जीवन बदल सकती हैं

साधना क्षेत्र में जब सिद्धि प्राप्त योगियों का वर्णन पढ़ते हैं, तो एक अजीब तार्किक प्रश्न मन में उमड़ते हैं, कि क्या साधना द्वारा ऐसा भी सम्भव है, क्या साधना का इतना उच्च स्तर प्राप्त किया जा सकता है, क्या साधना द्वारा सिद्धि प्राप्त कर साधक कल्याण के साथ-साथ जन कल्याण का मार्ग भी प्राप्त कर सकता है, इनकी व्याख्या कुछ पृष्ठों में सम्भव नहीं है, साधना का क्षेत्र तो अत्यन्त वृहद है।

यह अंक शक्ति, और सिद्धि का अंक है और गुरु श्रीमुख से दो ऐसी साधनाओं का विधान प्राप्त हुआ है, जिनमें पूर्णता, गुरु कृपा से ही सम्भव है।

अन्नपूर्णा साधना

अन्न का तात्पर्य केवल धान्य से ही नहीं है, अन्न का तात्पर्य है, धन-धान्य, पुत्र-पौत्र, लाभ, यश, कीर्ति और जिस घर में यह सब बातें होती हैं, जहां आने वाले कल की चिन्ता नहीं रहती, जहां स्वयं निश्चिन्त होकर जीवन जिया जाता है, और जहां दूसरों को दान देने की जन कल्याण की भावना निहित रहती है, जहां साधु महात्माओं का आदर सम्मान होता है, जहां भिक्षुकों को भोजन वस्त्र दान दिया जाता है, वहां यह सब कृपा अन्नपूर्णा देवी की कृपा से ही सम्भव है।

क्या आपने कभी यह अनुभव किया है कि स्वयं स्वादिष्ट वस्तुओं का आनन्द लेने के साथ यदि दूसरों

Scanned by CamScanner

को यह आनन्द का अनुभव कराया जाय तो कितनी बड़ी खुशी मिलती है और यह दाता की स्थिति 'अन्नपूर्णा सिद्धि' द्वारा प्राप्त हो सकती है, अन्नपूर्णा वह शक्ति है, जिसके द्वारा आपके पास कुछ भी नहीं होते हुए भी आप हजारों को भोजन कराने की सामर्थ्य प्राप्त कर सकते हैं, दान दे सकते हैं, घर में कभी कोई कमी नहीं रह सकती है, यह प्रयोग तो अत्यन्त ही सरल एवं शुद्ध मन से किया जाने वाला प्रयोग है, गृहस्थ व्यक्ति अपनी पत्नी के साथ पूजन सम्पन्न करे तो शीघ्र फल प्राप्ति होती है।

साधना विधि

इस साधना को पुरुष या स्त्री कोई भी सम्पन्न कर सकता है, इस साधना को किसी भी पुष्य नक्षत्र से प्रारम्भ करना चाहिए, यह एक महीने की साधना है, पुष्य नक्षत्र से यह साधना प्रारम्भ कर, अगले पुष्य नक्षत्र में ही इस साधना को समाप्त किया जाता है, नित्य रात्रि को इक्यावन माला मन्त्र जप होना आवश्यक है, इस कार्य में नित्य ज्यादा से ज्यादा तीन घण्टे लगते हैं।

साधक स्नान कर पीली धोती पहन लें और कन्धों पर पीली धोती डाल दें, यह रेशम की धोती होनी चाहिए, फिर सामने घी का दीपक लगा लें और अगरबत्ती प्रज्वलित कर दें।

इस साधना में निम्न उपकरणों की अनिवार्यता होती है, जो मन्त्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त होनी चाहिए।

१-अन्नपूर्णक सपर्य्या चित्र, २-अन्नपूर्णा विग्रह यन्त्र, ३-मयूर शिखा, ४-दक्षिणेश्वरी हृदय यन्त्र, ५-शतपुष्पा, ६-घोरकुच्ची माला, ७-आजीवन अन्नपूर्णा सामीप्य सिद्ध विग्रह।

पुष्य नक्षत्र की रात्रि को उत्तर की ओर मुंह कर रेशम के बने हुए आसन पर बैठ जांय, सामने एक हाथ चौड़ा पीला रेशमी वस्त्र बिछा दें और सामने अन्नपूर्णा चित्र को स्थापित कर दें, फिर बाकी यन्त्रों को भी उसके सामने ही स्थापित कर दें, इसके बाद सात जायफल रख दें और पास में जल पात्र, दीपक, अगरबत्ती, केसर, कुंकुम, अक्षत तथा नारियल रख दें।

इसके बाद कुंकुम या केसर से अन्नपूर्णा चित्र का पूजन करें सभी यन्त्रों को जल से धो कर पौंछ कर कुंकुम की बिन्दिया लगावें, अगरबत्ती दीपक लगा लें और प्रत्येक जायफल के सामने एक बदाम एक लौंग तथा एक इलायची का भोग लगावें और फिर इक्यावन माला मन्त्र जप करें।

मन्त्र जप से पूर्व विनियोग और न्यास कर दें, विनियोग का तात्पर्य उस को अनुष्ठान रूप में सम्पन्न करने की अनुज्ञा है और न्यास का तात्पर्य अपने शरीर में अन्नपूर्णा को स्थापित करने की प्रक्रिया है।

विनियोग

ॐ अस्य श्री अन्नपूर्णा महादेवी हृदय स्तोत्र महा मन्त्रस्य श्री महाकाल भैरव ऋषि, उष्णिक् छन्दः महाषोढा स्वरूपिणी महाकाल सिद्धा श्री अन्नपूर्णा अम्ब देवता, ह्रीं बीजं, ह्रूं शक्तिः क्रीं कीलकं, श्री अन्नपूर्णा अम्ब प्रसादात् समस्त पदार्थ प्राप्त्यर्थे मन्त्र जपे विनियोगः।

हाथ में जल ले कर उच्चारण करता हुआ जल जमीन पर छोड़ दें।

इसके बाद न्यास करें और उच्चारण करता हुआ पूरे शरीर के अंगों को दाहिने हाथ से स्पर्श करता हुआ अपने पूरे शरीर में अन्नपूर्णा को स्थापित करें।

न्यास

श्रीमहाकाल भैरव ऋषये नमः शिरसि
उष्णिक् छन्दसे नमः मुखे,
महाषोढा स्वरूपिणी महाकाल सिद्धि श्री अन्नपूर्णा अम्ब देवतायै नमः हृदि,

Scanned by CamScanner

ह्रीं बीजाय नमः लिंगे
ह्रीं शक्तये नमः नाभौ,
क्रीं कीलकाय नमः पादयो
समस्त पदार्थ प्राप्त्यर्थे मन्त्र जपे विनियोगाय नमः सर्वांगे।

मन्त्र

।। ॐ क्रीं क्रूं क्रौं हूं हूं हूं ह्रीं ह्रीं
ॐ ॐ ॐ अन्नपूर्णायै नमः ।।

पूरे साधना काल में तीन बातों का पालन आवश्यक है—

१-पूर्ण ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करें।

२-मध्याह्न में एक समय भोजन करें पर उसमें स्वादिष्ट एवं विविध व्यंजन तथा खाद्य पदार्थ हों।

३-बीच में व्यवधान या अनियमितता न रखते हुए, अगले पुष्य नक्षत्र तक नित्य रात्रि को इक्यावन माला मन्त्र जप **चैतन्य स्फटिक माला** से करें।

अगले पुष्य नक्षत्र को मन्त्र पूरा होने पर अन्नपूर्णा सिद्धि स्वतः प्राप्त हो जाती है, दूसरे दिन सुबह सात कन्याओं को भोजन करवा दें और इन सभी यन्त्रों और चित्रों को अपने पूजा स्थान में या किसी एकान्त स्थान में स्थापित कर दें।

विंध्यवासिनी साधना

जीवन जीना वास्तव में तलवार के धार पर चलने के समान है, और गृहस्थ व्यक्ति के लिए तो परेशानियों का अन्त ही नहीं रहता, इन परेशानियों से गुजरते हुए यदि व्यक्ति कुछ विशेष कर दिखाता है, तो वास्तव में ही उसका जीवन धन्य है, कहते हैं कि आपदाएं, बाधाएं, निमन्त्रण दे कर नहीं आतीं, कभी आर्थिक तंगी, तो कभी बीमारी, कभी शत्रुओं द्वारा पीड़ा, कभी राज्य बाधा, कभी व्यापार बाधा, एक न एक बाधा चलती रहती है और यदि इन बाधाओं के साथ किसी प्रकार की अन्य तांत्रिक बाधा हो जाय तो जीवन में कष्ट ही कष्ट बढ़ जाते हैं।

जो व्यक्ति अपनी रक्षा स्वयं नहीं कर सकता, वह दूसरों की क्या रक्षा करेगा और क्या बाधाओं से रक्षा हो सकती है, साधना क्षेत्र में विंध्यवासिनी देवी का स्थान बहुत उच्च है, विंध्यवासिनी मां दुर्गा का रक्षा स्वरूप है, और उच्च कोटि के तांत्रिकों ने भी यह माना है, कि यदि किसी साधक द्वारा विंध्यवासिनी सिद्धि प्राप्त कर ली जाती है, तो उस पर किसी प्रकार की बाधा का प्रकोप प्रभाव नहीं डाल सकता है यहां तक कि कोई तांत्रिक कृत्या वार भी हो, वह भी निष्फल हो जाता है, और तन्त्र क्षेत्र में साधना करने वाले जानते हैं कि कृत्या साधना कितनी तीव्र साधना है।

इसके अतिरिक्त तन्त्र साधना करने वाले साधक को यह जान लेना चाहिए कि तन्त्र में यदि प्रयोग अनुष्ठान ठीक तरीके से सम्पन्न नहीं किया गया तो उसका उलटा वार भी पड़ सकता है और लाभ के स्थान पर हानि हो सकती है, इस हेतु यदि साधक विंध्यवासिनी साधना सम्पन्न कर लेता है, तो वह तन्त्र साधना के किसी भी क्षेत्र में प्रवेश कर पूर्ण सफलता प्राप्त कर सकता है क्यों कि विंध्यवासिनी देवी उस साधक को अभेद्य कवच प्रदान कर देती है जिससे साधक भय रहित, बाधा रहित, कष्ट रहित हो जाता है।

विंध्यवासिनी साधना केवल ग्यारह दिन का प्रयोग है जब ग्यारहवें दिन अनुष्ठान पूर्ण होता है तो विंध्येश्वरी निश्चय ही सम्मुख प्रकट हो कर साधक को पूर्ण आशीर्वाद देते हुए एक ऊर्जा के रूप में उसके भीतर समाहित हो जाती है।

साधना प्रयोग

इस साधना में विनियोग, न्यास, करन्यास करना आवश्यक है, और जो सात सुपारी पूजा में रखी जाती

है, उन को साधक ग्यारहवें दिन के पश्चात् एक काले कपड़े में बांध कर अपने घर में किसी प्रमुख स्थान पर रख दें तो बाधाओं का पूर्ण निराकरण हो जाता है।

विनियोग

ॐ अस्य विंध्यवासिनी मन्त्रस्य, विश्रवा ऋषि: अनुष्टुपछन्द: विध्यवासिनी देवता ममाभीष्ट-सिद्धयर्थे जपे विनियोग: ।

न्यास

ॐ विश्रवऋषये नम: शिरसि
अनुष्टुप्छंदसे नम: मुखे
विंध्यवासिनी देवतायै नम: हृदि
विनियोगाय नम: सर्वांगे

करन्यास

एह्येहि अंगुष्ठाभ्यां नम:
यक्षि-यक्षि तर्जनीभ्यां नम:
महायक्षि मध्यमाभ्यां नम:
वटवृक्षनिवासिनी अनामिकाभ्यां नम:
शीघ्रं मे सर्वसौख्यं कनिष्ठिकाभ्यां नम:
कुरु-कुरु स्वाहा करतलकरपृष्ठाभ्यां नम:

ध्यान

अरुणचंदनवस्त्रविभूषितां
सजलतोयदतुल्यनरूरुहाम् ।
स्मरकुरंगदृशं विंध्यवासिनी
क्रमुकनागलतादलपुष्कराम् ।।

प्रयोग विधि

इस महत्वपूर्ण साधना को सौभाग्यशाली साधक सम्पन्न कर सकता है, किसी भी अमावस्या की रात्रि को साधक स्नान कर शुद्ध वस्त्र धारण कर अपने सामने "विंध्येश्वरी साधना यन्त्र" स्थापित कर दें, उसके सामने सात गोल सुपारियां रख दें, फिर सामने घी का दीपक एवं अगरबत्ती लगाएं।

सुपारी पूजा

ॐ कामदायै नम: ॐ माना यै नम:
ॐ नक्तायै नम: ॐ मधुरायै नम:
ॐ मधुराननायै नम: ॐ नर्मदायै नम:
ॐ भोगदायै नम:

इसके बाद सोने के अत्यधिक पतले तार को विंध्येश्वरी यन्त्र पर लपेटें तथा पूर्ण सिद्धि के लिए प्रार्थना करें।

पूजन के बाद स्फटिक माला से मन्त्र जप सम्पन्न करें, नित्य इक्यावन माला मन्त्र जप इस यन्त्र के सामने आवश्यक है।

मन्त्र

एह्येहि यक्षि महायक्षि विंध्यवासिनी शीघ्रं मे सर्व तन्त्र सिद्धि कुरु कुरु स्वाहा ।।

यदि आश्चर्यजनक सिद्धि प्राप्त करना हो तो नित्य एक सौ एक माला मन्त्र जप आवश्यक है।

ये दोनों महत्वपूर्ण साधनाएं सरल भाव से, शुद्ध हृदय से, शुद्ध कामनाओं के साथ सम्पन्न करनी है अन्नपूर्णा और विंध्यवासिनी तो इस युग में गृहस्थ के लिए प्रधान अधिष्ठात्री देवियां हैं, जहां इन दोनों का निवास रहता है वह घर तो वास्तव में धरती पर स्वर्ग ही बन जाता है। ●

Scanned by CamScanner

नवरात्रि-पर्व—(४ अप्रैल से १० अप्रैल ९२ तक)

या श्रीः स्वयं स्वकृतिनां भवनेष्वलक्ष्मीः
पापात्मनां कृतधियां हृदयेषु बुद्धिः ।
श्रद्धा शतां कुलजनप्रभवस्य लज्जा
ता त्वां नतास्म परिपालय देवि विश्वम् ।।

जो पुण्यात्माओं के घरों में स्वयं ही लक्ष्मी रूप से, पापियों के यहां दरिद्रता रूप से, शुद्ध अन्तःकरण वाले पुरुषों के हृदय में बुद्धि रूप से, सत्पुरुषों में श्रद्धा रूप से तथा कुलीन मनुष्य में लज्जा रूप से निवास करती हैं। देवी ! विश्व का सर्वथा पालन कीजिये।

जगत् जननी आदि शक्ति जिनके विभिन्न स्वरूप हैं, अपने विभिन्न स्वरूपों में अपने भक्तों का कल्याण करते हुए, इस चराचर जगत में विचरण करती है, जो मनुष्य तो क्या शिव के लिए भी शक्ति है, जिसके बिना ब्रह्मा, विष्णु, महेश भी अपूर्ण हैं, उस आदि शक्ति का ध्यान न करने वाला, साधना न करने वाला, दुर्भाग्यशाली ही कहा जायेगा, जो जगत् माता भगवती अपने विभिन्न स्वरूपों में कल्याण करती है, जिसके एक-एक स्वरूप की माया निराली है, जो शीघ्र प्रसन्न होने वाली है और अपने भक्तों को अभय प्रदान करती है, जिसका पर्व वर्ष के चार नवरात्रि पर्व हैं, उस देवी मां के आशीर्वाद की कामना करना साधक का कर्त्तव्य है।

शक्ति साधना : सिद्धि परिशिष्ट

नवरात्रि का उत्सव एक महान उत्सव है, जो साधक के लिए कुछ करने का समय है, इस चैतन्य समय में अपने जीवन की न्यूनताओं को दूर करने हेतु और उसमें पूर्णता भरने हेतु साधना का पर्व है।

आगे के पृष्ठों में देवी के २१ प्रधान स्वरूप और उन स्वरूपों में भी जो विभेद हैं, उनकी व्याख्या, ध्यान, शक्ति, मन्त्र, बीज मन्त्र का विवेचन किया जा रहा है आशा है, साधक इन्हें ध्यान से पढ़ते हुए शक्ति के इन स्वरूपों की साधना कर अपने जीवन को उत्तम बनाएंगे—

१-सर्व मंगला, २-चण्डिका, ३-अष्टभुजा काली, ४-प्रत्यंगिरा,
५-अपराजिता, ६-प्राणशक्तिदेवता, ७-तुलसी देवी, ८-चतुर्भुजान्नपूर्णा,
९-शीतला, १०-त्वरिता, ११-विजया, १२-वन दुर्गा,
१३-नित्या—

१४-नव दुर्गा

१-शैल पुत्री, २-ब्रह्मचारिणी दुर्गा, ३-चण्ड-खण्डा दुर्गा, ४-कूष्माण्डा दुर्गा, ५-स्कन्द दुर्गा, ६-कात्यायनी दुर्गा, ७-कालरात्रि दुर्गा, ८-महागौरी दुर्गा, ९-सिद्धि दायिनी दुर्गा ।

१५-अष्ट लक्ष्मी

१-द्विभुजा लक्ष्मी, २-गजलक्ष्मी, ३-महालक्ष्मी, ४-श्रीदेवी, ५-वीरलक्ष्मी, ६-द्विभुजा वीर लक्ष्मी, ७-अष्ट भुजा वीर लक्ष्मी, ८-प्रसन्न लक्ष्मी ।

१६-चतुः षष्टयोगिनी

१-दिव्य योगा, २-महायोगा, ३-सिद्ध योगा, ४-माहेश्वरी, ५-पिशाचिनी, ६-डाकिनी, ७-कालरात्रि, ८-निशाचरी, ९-कंकाली, १०-रौद्रवेताली, ११-हुंकारी, १२-भुवनेश्वरी, १३-ऊर्ध्वकेशी, १४-विरुपाक्षी, १५-शुष्कांगी, १६-नरभोजिनि, १७-फट्कारी, १८-वीरभद्रा, १९-धूम्राक्षी, २०-कलहप्रिया, २१-रक्ताक्षी, २२-घोरा राक्षसी, २३-विश्वरूपा, २४-भयंकरी, २५-कामाक्षी, २६-उग्र चामुण्डा, २७-भीषणा, २८-त्रिपुरान्तका, २९-वीरकौमारिका, ३०-चण्डी, ३१-वाराही, ३२-मुण्डधारिणी, ३३-भैरवी, ३४-हस्तिनी, ३५-क्रोधदुर्मुखी, ३६-प्रेतवाहिनी, ३७-खट्वांगदीर्घलम्बोष्टी, ३८-मालती, ३९-मन्त्रयोगिनी, ४०-अस्थिनी, ४१-चक्रिणी, ४२-ग्राहा, ४३-कण्टकी, ४४-काटकी, ४५-शुभ्रा, ४६-क्रियादूती, ४७-करालिनी, ४८-शंखिनी, ४९-पद्मिनी, ५०-क्षीरा, ५१-असंधा, ५२-प्रहारिणी, ५३-लक्ष्मी, ५४-कामुकी, ५५-लोला, ५६-काकदृष्टि, ५७-अधोमुखी, ५८-धूर्जटी, ५९-मालिनी, ६०-घोरा, ६१-कपाली, ६२-विषभोजिनी, ६३-चतुर्मुखी, ६४-वैताली ।

१७-षोडशमातृकाएं

१-गौरी, २-पद्मा, ३-शची, ४-मेधा, ५-सावित्री, ६-विजया, ७-जया, ८-देवसेना, ९-स्वधा, १०-स्वाहा, ११-माता, १२-लोकमाता, १३-धृति, १४-पुष्टि, १५-तुष्टि, १६-आत्म कुलदेवी ।

१८-सप्तघृतमातृकाएं

१-श्री, २-लक्ष्मी, ३-धृति, ४-मेधा, ५-पुष्टि, ६-श्रद्धा, ७-सरस्वती ।

१९-सप्तमातृकाएं

१-ब्राह्मी, २-माहेश्वरी, ३-कौमारी, ४-वैष्णवी, ५-वाराही, ६-ऐन्द्री, ७-चामुण्डा ।

२०-दस महाविद्याएं

१-काली, २-तारा, ३-त्रिपुर सुन्दरी, ४-भुवनेश्वरी, ५-छिन्नमस्ता, ६-त्रिपुर भैरवी, ७-धूमावती, ८-कमला, ९-बगलामुखी, १०-मातंगी ।

Scanned by CamScanner

त्वरिता शक्ति साधना

सांसारिक सुख, प्रेम, सौन्दर्य, वशीकरण शक्ति

सांसारिक सुख भी अनायास प्राप्त नहीं हो जाते हैं, उसके लिए भी एक साधना का बल, और सिद्धि आवश्यक है, सुख प्राप्त करना और उन सुखों को भोगना भी उतना ही महत्वपूर्ण है, वशीकरण, स्त्री सुख, गृहस्थ अनुकूलता, सुन्दर पत्नी की प्राप्ति हेतु, प्रेम में सफलता हेतु त्वरिता साधना सबसे महत्वपूर्ण साधना कही गई है।

त्वरिता शक्ति स्वरूप में देवी का ध्यान प्रिया रूप में जो षोडश वर्षीय, हाथों में पाश, अंकुश, वरद और अभय मुद्रा धारण किये हुए है जो ऊपर पत्तों के आसन पर निवास करती है, नाग आभूषणों से सज्जित और गुंथे हुए गुंजा फल का हार धारण किए हुए है, वशीकरण शक्ति, मोहिनी शक्ति, अनंग शक्ति प्रदान करने वाली है, उस ऐसी देवी की साधना तत्क्षण फल प्रदायिनी है।

यह साधना किसी भी शुक्रवार को प्रारम्भ कर अगले आठ दिन नित्य रात्रि को सम्पन्न करना है, साधक संकल्प ले कर साधना प्रारम्भ करें प्रतिदिन वह संकल्प अवश्य दोहराएं, इस साधना में केवल दो सामग्री **त्वरिता यन्त्र** तथा **त्वरिता सपर्या**, को अपने सामने एक बाजोट पर पीला वस्त्र बिछा कर स्थापित करना चाहिए, यन्त्र के सामने तांबे का बना हुआ सर्प अवश्य स्थापित करें और केवल केसर से पूजन करें अपने पूजा स्थान में सुगन्धित पुष्प रखें, ऊनी आसन पर बैठ कर शरीर पर इत्र लगाएं।

इस साधना में चार दिशाओं में चार मयूर पंख स्थापित कर ऊनी आसन पर बैठ कर अपने हाथ में जल ले कर संकल्प लें तथा इत्र का टीका यन्त्र पर लगाएं, सुगन्धित धूप, अगरबत्ती, पूरे समय लगी रहनी चाहिए और **स्फटिक माला** से पांच माला मन्त्र जप अवश्य सम्पन्न करें।

मन्त्र

।। ॐ ह्रीं हुं खेचछे क्षः स्त्रीं हूं क्षे ह्रीं फट् ।।

यह क्रम अगले शुक्रवार तक बराबर जारी रहना चाहिए, इस साधना में तीसरे-चौथे दिन साधक को एक अद्वितीय सुगन्ध का अनुभव अपने पूजा स्थान में होता है और देवी त्वरिता अपने सुन्दरतम स्वरूप में साधक के सामने आकर उसे वर प्रदान करती है, पूजा में नित्य नये सुगन्धित पुष्प चढ़ाएं तथा देवी के सम्मुख केवल खीर का प्रसाद (नैवेद्य) अर्पित करें तथा साधना के पश्चात् इसे ग्रहण करें।

इस साधना में प्रयुक्त यन्त्र व सपर्या को साधक पीले कपड़े में बांध कर अपनी जेब में अवश्य रखें, प्रेम, वशीकरण और अनंग शक्ति में उसे अवश्य ही सफलता प्राप्त होती है। ✶

अष्टभुजा काली शक्ति साधना

शक्ति, संकल्प, बाधा शान्ति साधना

शक्ति साधना के इस कल्प में काली स्वरूप की साधना आवश्यक एवं महत्वपूर्ण है और इसमें भी सर्वश्रेष्ठ स्वरूप अष्टभुजा काली का है, बाधाओं की शान्ति हेतु चाहे वह कितनी ही विशाल क्यों न हो, अष्टभुजा काली साधना शीघ्र फलदायी रहती है, अष्टभुजा देवी के आठ हाथों में आठ शस्त्र—शंख, चक्र, गदा, कुम्भ, मूसल, अंकुश, पाश और वज्र धारण किये हुए हैं।

काली की साधना जीवन में बाधाओं की पूर्ण शान्ति सहित दुष्ट ग्रहों के दुष्प्रभाव शान्ति, भूत-प्रेत भय बाधा शान्ति हेतु करना आवश्यक है काली तो शक्ति की विकराल एवं स्पष्ट स्वरूप हैं।

इस साधना को सम्पन्न करने के लिए निम्न तीन पदार्थों की विशेष आवश्यकता रहती है—

१-अष्टभुजा काली यन्त्र, २-उग्रेश्वरी चक्र, ३-आठ कपाल कोटि चक्र बीज।

उपरोक्त तीनों सामग्रियों का क्रमानुसार प्रयोग करना है।

अपने सामने लाल वस्त्र बिछा कर सबसे पहले **अष्टभुजा काली यन्त्र** स्थापित करें, ध्यान रहे कि केवल सिन्दूर और काजल से ही पूजन करना है साधक को लाल वस्त्र धारण कर उत्तर दिशा की ओर मुंह कर आसन बिछा कर साधना सम्पन्न करनी चाहिए, साधना के पूरे समय तेल का दीपक जलते रहना चाहिए।

साधना में प्रयुक्त **उग्रेश्वरी चक्र** अपने हाथ में ले कर जो बाधा की शान्ति करनी हो, वह संकल्प लेना आवश्यक है, उसके पश्चात् दो मिट्टी के दीपक के बीच में इस चक्र को रख कर काले डोरे से बांध देना चाहिए और आठ दिशाओं में **आठ कपाल कोटि चक्र बीज** स्थापित करने चाहिए, विधान के अनुसार अष्टभुजा काली साधना में देवी का ध्यान करते हुए आठ माला मन्त्र जप आवश्यक है, यह साधना कृष्ण पक्ष में रविवार को प्रारम्भ की जा सकती है, पूर्ण साधना में २१ दिन में २१ हजार मन्त्र जप आवश्यक है।

मन्त्र

।। ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं अष्टभुजे कालिके ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं ।।

मन्त्र जप की पूर्णता के पश्चात् उग्रेश्वरी चक्र **दीपक सहित घर के बाहर गाड़ दें और उस पर भारी पत्थर रख दें तथा** आठों कपाल कोटि चक्र बीज **आठ दिशा में फेंक दें, इस साधना द्वारा भारी से भारी बाधा की** शान्ति शीघ्र ही प्राप्त हो जाती है। ✱

Scanned by CamScanner

प्रत्यंगिरा साधना

जड़ मूल से नाश कर दीजिए शत्रुओं को, इस प्रबल साधना से

शक्ति के इस स्वरूप की व्याख्या करना साधकों के वश में नहीं है, यह तो आदि शक्ति का सबसे अधिक तीव्र ज्वलनशील स्वरूप है, जब शत्रु बाधा अत्यधिक बढ़ जाय, जब साधक को अपना धन, धर्म और मान का तथा जीवन का संकट आन पड़े तो साधक को प्रत्यंगिरा साधना सम्पन्न करनी चाहिए।

प्रत्यंगिरा देवी के स्वरूप वर्णन में लिखा है कि—दिगम्बरा, खुले केश, मेघ के समान श्याम वर्ण, हाथों में तलवार, सर्प, डमरू और कपाल धारण किए, शत्रु समूह को ग्रसित करने वाली, शंकर के तेज प्रदीप्त मुख से ज्वाला निकालने वाली देवी प्रत्यंगिरा अपने भक्तों की रक्षा करती है और शत्रुओं का नाश कर देती है।

यह साधना केवल शनिवार को ही सम्पन्न करनी चाहिए, और वह भी अर्द्ध रात्रि के समय जिस विशेष कार्य हेतु यह साधना सम्पन्न करनी है, वह कार्य एक कागज पर अष्टगन्ध से लिख देना चाहिए, शत्रु का नाम, बड़े अक्षरों में लिखना आवश्यक है, इस कागज को अपने सामने रख कर उस पर मध्य में प्रत्यंगिरा यन्त्र स्थापित कर दस दिशाओं में स्थित, दस दिग्पालों का बलि मन्त्र आह्वान करना चाहिए—

बलि मन्त्र

ॐ यो मे (पूर्व) गतः पाप्मापापकेनेह कर्मणा इन्द्र तं (देवराजो) भंजयतु अंजयतु मोहयतु नाशयतु मारयतु बलिन्तस्मै प्रयच्छतु कृतं मम शिवं मम शान्तिः स्वस्त्ययनं चास्तु। इसी प्रकार अन्य दिशाओं में—

आग्नेय दिशा में— तेजराज	पश्चिम दिशा में— जलराज	ईशान दिशा में—ताराराज
दक्षिण दिशा में— प्रेतराज	वायव्य दिशा में— प्राणराज	ऊर्ध्व दिशा में— गणराज
नैर्ऋत्य दिशा में—रक्षराज	उत्तर दिशा में— प्रजाराज	अधो दिशा में— नागराज

इस प्रकार दस दिशाओं में इन मन्त्रों से बलि देने हेतु दस **'दिग्पाल चक्र'** तथा उस पर दस सुपारी स्थापित कर एक-एक दिशा की ओर हाथ में जल ले कर बलि मन्त्र पढ़ना चाहिए, ऐसा करने से शत्रु द्वारा किये हुए कृत्य नष्ट हो जाते हैं।

अब साधक एक विशेष **पंचरत्न प्रत्यंगिरा माला** से प्रत्यंगिरा मन्त्र की तीन माला का जप उसी स्थान पर बैठ कर सम्पन्न करें—

मन्त्र

॥ ॐ ह्रीं यां कल्पयंतिनोरयः क्रूरांकृत्यां वधूमिव ह्रां
ब्रह्मणा अपनिर्णुदमः प्रत्यवकर्तारमृच्छतु ह्रीं ॐ ॥

साधना के पश्चात् साधक देवी को हाथ जोड़ कर अपने कार्य पूर्ति की प्रार्थना कर स्नान अवश्य सम्पन्न करें, अगले शनिवार को यही प्रयोग इसी रूप में दोहराएं केवल दो शनिवार प्रयोग करने से ही साधक को शत्रुओं के सम्बन्ध में अनुकूल स्थिति प्राप्त होने लगती है, यह प्रयोग अत्यन्त सिद्ध प्रयोग है और भयंकर संकट आने पर ही इसे सम्पन्न करना चाहिए। ✱

Scanned by CamScanner

सिद्ध महालक्ष्मी साधना

सिद्ध महालक्ष्मी की साधना दुःख दारिद्रय नाश हेतु और रुके हुए कार्यों की सिद्धि हेतु सम्पन्न की जाती है, देवी के इस स्वरूप के सम्बन्ध में लिखा है कि श्वेत वस्त्र धारण करने वाली शुभमयी चतुर्भुजा सिद्ध लक्ष्मी, कमल, कलश, बेल और शंख धारण किये हुए, बेल उन्नति प्रतीक है, शंख विजय प्रतीक, कमल धन प्रतीक, कलश पीड़ा का निवारण प्रतीक है।

सिद्ध महालक्ष्मी की साधना साधक को किसी भी बुधवार को प्रातः प्रारम्भ कर १५ दिन तक निरन्तर सम्पन्न करनी चाहिए।

विनियोग

ॐ अस्य श्रीसिद्धमहालक्ष्मीमन्त्रस्य हिरण्यगर्भऋषिः अनुष्टुप् छन्दः श्रीमहाकालीमहालक्ष्मी-महासरस्वती देवताः श्रीं बीजं ह्रीं शक्तिः क्लीं कीलकं मम सर्वक्लेशपीड़ापरिहारार्थ सर्वदुःखदारिद्रय-नाशनार्थ सर्वकार्यसिद्धयर्थ च श्रीसिद्धलक्ष्मीमन्त्रजपे विनियोगः।

इस प्रकार संकल्प लेकर ताम्र पात्र में अथवा थाली में **सिद्ध महालक्ष्मी यन्त्र** स्थापित कर यन्त्र को घी, दूध, तथा जल से धो कर स्वच्छ वस्त्र से पोंछ कर स्वस्तिक बना कर मध्य में एक पुष्प रख कर निम्न आसन मन्त्र से आसन देकर **चार शक्ति चक्र** स्थापित करें फिर ग्यारह बत्तियों का दीपक जलाएं, साधक ११ दीपक अलग-अलग भी जला सकते हैं—

आसन मन्त्र

।। ॐ सिद्ध महालक्ष्मी पद्मपीठाय नमः ।।

पूर्व की ओर मुंह कर बैठें, सामने केवल यन्त्र व चक्र ही स्थापित होने चाहिए तथा लक्ष्मी तस्वीर अथवा चित्र रखें, शास्त्रोक्त कथन है कि केवल शक्कर का नैवेद्य ही महालक्ष्मी को अर्पित करना चाहिए और अब इस सिद्ध महालक्ष्मी देवी का मन्त्र १०८ बार यह जप करना चाहिए, यह केवल **स्फटिक माला** से ही सम्पन्न करें—

सिद्ध महालक्ष्मी मन्त्र

।। ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं श्रीं सिद्धमहालक्ष्म्यै नमः ।।

इसी प्रकार यह विधान १५ दिन तक निरन्तर मन्त्र अनुष्ठान सम्पन्न कर ब्राह्मण भोजन कराएं और संभव हा तो मन्त्र जप का दशांश हवन करें।

जैसा कि विनियोग में लिखा है, सिद्ध महालक्ष्मी साधना से सर्व क्लेश पीड़ा का परिहार्य होता है, दुःख दारिद्रय का नाश होकर साधक के कार्य सिद्ध होते हैं, इसमें कोई संशय नहीं है, इस मन्त्र को तो साधक नित्य प्रति जप करें तो और भी अधिक उत्तम है। ★

Scanned by CamScanner

महागौरी दुर्गा साधना

दुर्गा के स्वरूप तीव्र और शान्त दोनों प्रकार के हैं, जहां तामसी कार्यों अर्थात् शत्रु बाधा, भूत-प्रेत आदि दोष निवारण के लिए देवी के स्वरूप चण्डिका, काली, प्रत्यंगिरा इत्यादि की साधना की जाती है, वहीं विभिन्न प्रकार की कार्य सिद्धि, आर्थिक उन्नति हेतु मां दुर्गा के शान्तगौरी स्वरूप की साधना की जाती है, इसी प्रकार जीवन में शान्ति, मानसिक सुख, शुद्धता, पारिवारिक उन्नति, कन्या विवाह, पुत्र-पौत्र प्राप्ति हेतु देवी के महागौरी स्वरूप की साधना की जाती है ।

आद्या शक्ति दुर्गा शिव की शक्ति है, महागौरी दुर्गा साधना शिव की साधना के साथ सम्पन्न करनी चाहिए, और किसी भी सोमवार को साधना की जा सकती है, इस साधना में शिव पूजा हेतु बिल्व पत्र आवश्यक है तथा महागौरी की साधना हेतु **तीन त्र्यम्बक गौरी रुद्राक्ष, मन्त्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त महागौरी दुर्गा यन्त्र तथा रुद्राक्ष बीज माला** आवश्यक है ।

साधक अथवा साधिका श्वेत वस्त्र धारण करें, अपने सामने शिव तथा महागौरी का चित्र स्थापित कर एक ताम्र पात्र में अपने सामने पूजा में प्रयोग आने वाला शिवलिंग जल से धो कर स्थापित करें उस पर (ॐ नमः शिवाय) **मन्त्र का उच्चारण करते हुए ग्यारह बिल्व पत्र अर्पित करें तत्पश्चात् महागौरी दुर्गा का ध्यान तथा आह्वान करते हुए** महागौरी दुर्गा यन्त्र **स्थापित कर कुंकुम, केसर, अबीर, गुलाल, सुगन्ध अर्पित करें तथा महागौरी का ध्यान करते हुए अपने हाथ में** जल ले **कर सुख, शान्ति, श्रेष्ठ वर प्राप्ति, पुत्र प्राप्ति, संतान विवाह, इत्यादि का जो भी संकल्प हो, वह बोल कर जल भूमि पर छोड़ दें ।**

अब इक्कीस बार महागौरी के निम्न आह्वान मन्त्र का उच्चारण करें—

आह्वान मन्त्र

।। ॐ सर्वमंगलमांगल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके शरण्ये त्र्यम्बके गौरी नारायणि नमोऽस्तुते ।।

अब इस मन्त्र का इक्कीस बार जप करने के साथ ही महागौरी यन्त्र को अपने दोनों हाथों से एक त्र्यम्बक गौरी रुद्राक्ष दूध से धो कर अर्पित करें, महागौरी का और शिव का संयुक्त फलदायक यह रुद्राक्ष दोनों ओर से ढका होता है, तथा महागौरी का प्रिय फल है, अब साधक देवी को एक कटोरे में दूध का नैवेद्य अर्पित करें तथा मन्त्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त **मूंगा मणि रुद्राक्ष बीज माला** से निम्न बीज मन्त्र की पांच माला का जप उसी स्थान पर बैठ कर करें—

बीज मन्त्र

।। ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं महागौरी विद्महे शिवशक्ति धीमहि तन्नो देवी प्रचोदयात् ।।

इस सोमवार के दिन साधक साधिका व्रत अवश्य रखें, केवल दूध अथवा फलाहार ग्रहण करें, किसी प्रकार का तामसी व्यवहार न करें, अगले दो सोमवार को इस प्रयोग को इसी रूप में सम्पन्न करते हुए दूसरा तथा तीसरा **त्र्यम्बक गौरी रुद्राक्ष** अर्पित करें, तीन सोमवार के बाद तीनों त्र्यम्बक गौरी रुद्राक्ष को एक सफेद डोरे में बांध कर धारण कर लें अथवा अपने शरीर के स्पर्श अवश्य कराएं ।

इस साधना द्वारा कुंवारी कन्याओं को इच्छानुसार वर प्राप्ति होती है, निःसंतान दम्पत्तियों को संतान प्राप्ति होती है, कलह युक्त परिवार में शान्ति स्थापित होती है, महागौरी दुर्गा की शान्त महिमा तो अपार है । ★

Scanned by CamScanner

प्रसन्न लक्ष्मी साधना

यश, धन, स्वर्ण प्राप्ति की साधना

देवी के महालक्ष्मी स्वरूप में प्रसन्न लक्ष्मी का स्थान सर्वोपरि है, धन की इच्छा रखने वाले साधक को नित्य प्रति प्रसन्न लक्ष्मी की वन्दना अवश्य करनी चाहिए, यह देवी स्वरूप विष्णु की शक्ति है, और शीघ्र प्रसन्न हो कर साधक को अतुल धन प्रदान करने वाली है।

वरिवश्या रहस्य ग्रन्थ जो कि भाष्कर राय द्वारा रचित है तथा **शक्ति सिद्धान्त मंजरी** ग्रन्थ में लिखा है, कि रंक से राजा केवल प्रसन्न लक्ष्मी साधना से ही तथा प्रसन्न लक्ष्मी कृपा से ही संभव है।

यह साधना केवल शुक्ल पक्ष में ही चतुर्थी से पूर्णिमा तक सम्पन्न की जानी चाहिए, तथा देवी के स्वरूप में लिखा है कि प्रसन्न लक्ष्मी परमकल्याणमयी, शुद्ध स्वर्ण की आभा वाली, तेज स्वरूपा सुनहरे वस्त्र धारण करने वाली, आभूषणों से सुशोभित, अपने हाथों में स्वर्ण घट, स्वर्ण कमल, निम्बू तथा वर मुद्रा धारण किये हुए विष्णु की शक्ति है और जो साधक यह साधना सम्पन्न करता है, उसके जीवन में प्रसन्न लक्ष्मी कृपा से धन की वर्षा सी होने लगती है।

इस साधना में तीन वस्तुएं प्रधान हैं— **१-स्वर्णाकर्षण लक्ष्मी चक्र, २-प्रसन्न लक्ष्मी महायन्त्र, ३-रत्नकल्प मुद्रिका,** इन तीनों पदार्थों का अलग-अलग उपयोग है, जहां यन्त्र साधना का प्रधान तत्व है, वहां **स्वर्णाकर्षण-चक्र** कार्य सिद्धि का शक्ति तत्व है, **और रत्नकल्प मुद्रिका** आकस्मिक धन प्राप्ति की शक्ति तत्व प्रसन्न लक्ष्मी फल है।

इस साधना में चतुर्थी के दिन अपने पूजा स्थान में पीला वस्त्र बिछा कर यह सामग्री स्थापित करें, साधक स्वयं भी पीले वस्त्र धारण करें तथा स्वर्ण आभूषण धारण कर पूजा सम्पन्न करें, स्त्री साधिका सुन्दर सुनहरी साड़ी तथा अपने सभी आभूषण धारण कर प्रसन्न लक्ष्मी साधना करें।

प्रसन्न लक्ष्मी साधना में देवी का पूजन केवल केसर, इत्र तथा सुगन्धित पुष्पों से करें, साधक पूर्व की ओर मुंह कर अपने सामने सामग्री की स्थापना कर तीन घी के दीपक अवश्य लगाएं।

इस साधना में चतुर्थी से पूर्णिमा पर्यन्त १२ दिन में सवा लाख मन्त्र जप आवश्यक है।

मन्त्र

।। ॐ ग्लौं श्रीं धन्नं मह्य धन्नं मे देह्यन्नाधिपतते ममान्नं प्रदापय स्वाहा श्रीं ग्लौं ॐ ।।

प्रसन्न लक्ष्मी महायन्त्र को मध्य में स्थापित कर बांईं ओर स्वर्णाकर्षण लक्ष्मी चक्र तथा दायीं ओर रत्न-कल्प मुद्रिका स्थापित करनी है, प्रत्येक के आगे एक-एक घी का दीपक जलाएं, मन्त्र जपते समय दीपक बुझने नहीं चाहिए, प्रतिदिन नये पुष्प लाएं तथा १२ दिन का अनुष्ठान पूर्ण होने पर लक्ष्मी चक्र को पीले कपड़े में सिलाई कर गले अथवा बांह पर बांध दें, तथा रत्नकल्प मुद्रिका धारण कर लें।

प्रसन्न लक्ष्मी कर्मयोगी साधक पर उसकी भक्ति से, उसकी साधना से शीघ्र प्रसन्न होकर प्रत्यक्ष दर्शन देकर वर सहित इच्छित फल प्रदान करती है।

शुद्ध वैदिक पद्धति से

नवरात्रि पूजन विधान

गृहस्थ साधकों हेतु

वर्ष में चार नवरात्रि महत्वपूर्ण मानी गई हैं जो कि चैत्र शुक्ल पक्ष प्रतिपदा आषाढ़ शुक्ल प्रतिपदा, आश्विन शुक्ल प्रतिपदा तथा माघ-शुक्ल प्रतिपदा से अष्टमी पर्यन्त तिथियों को नवरात्रि शब्द से सम्बोधित किया गया है, इसमें आषाढ़ और माघ की नवरात्रि गुप्त नवरात्रि कहलाती है जो कि तांत्रिकों के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण है, चैत्र और आश्विन नवरात्रि को प्रकट नवरात्रि कहते हैं जिसका पूरे विश्व में महत्व है, इनमें भी चैत्र नवरात्रि का सर्वाधिक महत्व माना गया है।

इस वर्ष नवरात्रि ४-४-६२ से प्रारम्भ हो रही है, इस नवरात्रि का विशेष महत्व है, और पूरे विश्व में चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से प्रारम्भ होने वाली नवरात्रि को अत्यन्त सम्मान के साथ देखा जाता है, इसके कई कारण हैं, प्रथम तो यह कि इस दिन से नया वर्ष प्रारम्भ होता है, द्वितीय संवत्सर का प्रारम्भ भी इसी तिथि से प्रारम्भ होता है, तृतीय यह नवरात्रि सकाम्य नवरात्रि कहलाती है, जिस व्यक्ति को भी यदि किसी प्रकार की कामना होती है, चाहे वह अर्थ प्राप्ति से सम्बन्धित हो, रोग मुक्ति, कर्ज उतारना, शीघ्र विवाह, व्यापार वृद्धि या अन्य किसी भी प्रकार की कामना हो तो इस नवरात्रि में देवी साधना करने से निश्चय ही सफलता प्राप्त होती है।

नवरात्रि पूजन के कई उपाय हैं, कई प्रयोग हैं, और कई तरीके हैं, परन्तु जो साधक गुरु के घर नहीं जा सकते या गुरु के सान्निध्य में बैठ कर

समय अर्थात् शाम को ही भोजन करना चाहिए, रात में भूमि शयन करता हुआ नवरात्रि के अन्त में यथोचित दान आदि दे कर प्रकट रूप में गुरु-पूजन सम्पन्न करने से ही उसके मनोरथ सिद्ध होते हैं।

भूमो शयीत चामन्त्र्य कुमारी–
भैंजयेन्मुदा ।
वस्त्रालंकारदानैश्च सन्तोष्या–
प्रतिवासरम् ॥

—देवीपुराण

नवरात्रि साधना के लिए देवी पुराण में स्पष्ट आलेख है कि साधना तभी सफल हो पाती है, जब साधना के बाद नित्य प्रकट गुरु पूजन सम्पन्न करें, ऐसा करने पर गुरु नित्य उसकी गलतियों को सुधारते रहते, हैं और नित्य शाम को अपने चरणों का स्पर्श करा कर आशीर्वाद देते हुए अपनी तपस्या का अंश प्रदान करते रहते हैं, जिससे उसके शरीर के चक्र जागृत होते हैं, और देवी साधना में सफलता प्राप्त होती है।

साधना सम्पन्न नहीं कर सकते, वे घर पर इस साधना को सम्पन्न कर सकते हैं, उनके लिए वैदिक नवरात्रि पूजन प्रयोग ही अनुकूल है।

नवरात्रि व्रत करने वालों को नौ दिन तक केवल एक

'देवी भागवत' में तो स्पष्ट कहा गया है, कि यदि साधक गुरु के समीप रह कर चैत्र नवरात्रि में कामना सहित साधना करता है तो उसे अवश्य ही सिद्धि प्राप्त होती है, उच्चकोटि के योगी और संन्यासी भी सूक्ष्म शरीर से गुरु के समीप रह कर

ही साधनाएं सम्पन्न करते हैं ऐसा करने पर उन्हें भगवती दुर्गा के जाज्वल्यमान स्वरूप के दर्शन हो जाते हैं।

फिर भी यदि कोई साधक गुरु के समीप न पहुंच सके तो शुद्ध वैदिक पद्धति से चैत्र शुक्ल प्रतिपदा अर्थात् ४-४-९२ से निम्न प्रकार से पूजन कर मन्त्र जप प्रारम्भ करें।

प्रातः जल्दी उठकर स्नान आदि से निवृत्त होकर लाल आसन बिछा दें, सबसे पहले अपना नित्य पूजा सम्पन्न कर अपने आराध्य सद्गुरुदेव से नवरात्रि पूजन का संकल्प सम्पन्न करें, जिस रूप से भी गुरु पूजन की जानकारी हो उस रूप से गुरु पूजन कर गुरु मन्त्र की १ माला का जप अवश्य करें।

पूजन के समय अपनी पत्नी को अपने दाहिने हाथ की ओर बिठाएं, जैसा कि मैंने ऊपर शीर्षक में लिखा है कि यह प्रयोग गृहस्थ व्यक्तियों के लिए है, इसका तात्पर्य यह है कि जिस व्यक्ति ने संन्यास ग्रहण नहीं किया हो वह गृहस्थी ही है, अर्थात् गृहस्थ में रहता है, चाहे माता-पिता के साथ ही रहता हो या अविवाहित हो, उन सब के लिए यह पूजन मान्य है।

साधना सामग्री

इस साधना हेतु तीन साधनात्मक मन्त्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठायुक्त सामग्री आवश्यक है—**१-मन्त्र सिद्ध सकाम्य साफल्य दुर्गार्चन यन्त्र, २-नवरात्रि सिद्धि नवग्रह यन्त्र, ३-षष्टादश देवी साफल्य चक्र,** इन तीनों सामग्री का क्रमानुसार जो प्रयोग है वह मैं आगे स्पष्ट करूंगा, इसके अतिरिक्त पूजन हेतु निम्न पूजन सामग्री की व्यवस्था भी पहले कर लें जिससे कि पूजन प्रारम्भ कर बीच में उठना न पड़े, शास्त्रोक्त विधान है कि संकल्प मन्त्र पढ़कर पूजन प्रारम्भ कर देते हैं तो उसके पश्चात् साधक को अपना आसन पूजन पूर्ण होने से पहले नहीं छोड़ना चाहिए—

१-जल पात्र, २-नारियल, ३-चावल, ४-कुंकुम, ५-मौली, ६-गोलसुपारी, ७-दूध, ८-दही, ९-घी, १०-शहद, ११-शक्कर, १२-गुलाल, १३-लौंग इलायची, १४-फल, १५-दूध का बना प्रसाद, १६-दक्षिणा।

सर्वप्रथम अपने सामने एक लकड़ी के तख्ते पर मध्य में चावलों की ढेरी पर कलश स्थापित करें, पूरे नवरात्रि के दौरान कलश इसी स्थान पर स्थापित रहेगा, फिर एक दूसरे तख्ते पर चावलों की नौ ढेरियां बनाकर मध्य में **नवरात्रि सिद्धि नवग्रह यन्त्र** की स्थापना करें, और अपने सामने भगवती दुर्गा का सुन्दर चित्र फ्रेम में मढ़ाकर स्थापित करें, अब कलश के पास **सकाम्य साफल्य दुर्गार्चन यन्त्र** स्थापित करें, तथा पूजन प्रारम्भ करें सबसे पहले हाथ में जल लेकर संकल्प लें —

ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः श्री श्वेत वाराह कल्पे जम्बू द्वीपे भारतखण्डे आर्यावर्तैकदेशान्तर्गते पुण्यक्षेत्रे कलियुगे कलिप्रथमचरणे सम्वत् २०४९ चैत्रमासे शुक्ल पक्षे प्रतिपदा तिथौ शनिवासरे (अमुक) गोत्रोत्पन्नो (**अपने गोत्र का उच्चारण करें यदि गोत्र न ज्ञात हो तो कश्यप गोत्र मानें**) (अमुक) नाम शर्माहं (**यहां पर अपने नाम का उच्चारण करें**) मम इह जन्मनि दुर्गाप्रीतिद्वारा चतुर्विधपुरुषार्थ सिद्धयर्थ (**यहां अपनी विशेष मनोकामना उच्चारित करें**) चैत्र नवरात्रे प्रतिपदायां दुर्गापूजन मन्त्र जप करिष्ये॥

इसके बाद अपने सामने गणपति का चित्र या उनकी मूर्ति स्थापित करें और उस पर जल चढ़ा कर पोंछ लें, कुंकुम का तिलक करें, भोग लगावें और फिर हाथ जोड़ कर मंगल कामना करें—

सुमुखश्चैवदन्तश्च कपिलो गजकर्णकः।
लम्बोदरश्च विकटो विघ्ननाशो विनायकः॥१॥
धूम्रकेतुर्गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजाननः।
द्वादशैतानि नामानि यः पठेच्छृणुयादपि॥२॥
विद्यारम्भे विवाहे च विदेशगमने तथा।
संग्रामे संकटे चैव विघ्नस्तस्य न जायते॥३॥

Scanned by CamScanner

शुक्लाम्बरधरं देवं शशिवर्णं चतुर्भुजम् ।
प्रसन्नवदनं ध्यायेत सर्वविघ्नोपशान्तये ।।४।।
सर्व मंगलमांगल्ये शिवे सर्वार्थ साधिके ।
शरण्ये त्र्यम्बके गौरी नारायणि नमोऽस्तुते ।।५।।

मंगल पाठ करने के बाद सामने रखे हुए कलश का पूजन करें, उस पर कुंकुम या केसर की नौ बिन्दियां लगावें, स्वस्तिक का चित्र अंकित करें, कलश के अन्दर एक सुपारी तथा एक रुपया डालें, कलश के ऊपर लाल वस्त्र लपेट कर नारियल रखें और उस पर अबीर गुलाल चढ़ा कर कलश के अन्दर जल डालें और फिर हाथ जोड़ कर प्रार्थना करें —

सरित: सागरा: सकलास्तीर्थानि जलदा नदा: ।
आयान्तु यजमानस्य दुरितक्षयकारक: ।।१।।
कलशस्य मुखे विष्णु कण्ठे रुद्र: समाश्रित: ।
मूले तस्य स्थितो ब्रह्मा मध्येतातृगणा स्मृता ।।२।।
कुक्षो तु सागरा: सप्त सप्तद्वीपा वसुन्धरा ।
ऋग्वेदो यजुर्वेद: सामवेदोप्यथर्वण ।।३।।
अगैश्च सहिता: सर्व कलशं तु समाश्रिता: ।
देवदानव संवादे मध्यमाने महोदधौ ।।४।।
उत्पन्नोऽसि तदाकुम्भ विधृतो विष्णुना स्वयम् ।
त्वत्त: सर्वाणितीर्थानि देवा: सर्वे त्वयि स्थिता ।।५।।

तत्पश्चात् **नवग्रह यन्त्र** का पूजन करें, अपने बांएं हाथ में अक्षत लेकर निम्न क्रम से मन्त्र जप करते हुए अक्षत नवग्रह यन्त्रों पर डालें—

ॐ सूर्याय नम: ॐ सोमाय नम:
ॐ भौमाय नम: ॐ बुधाय नम:
ॐ बृहस्पताय नम: ॐ शुक्राय नम:
ॐ शनिश्चर्ये नम: ॐ राहवे नम:
ॐ केतव्ये नम: ।।

इसके बाद **नवग्रह यन्त्र** पर अक्षत, कुंकुम, पुष्प आदि चढ़ा कर हाथ जोड़ कर प्रार्थना करें—

**ब्रह्मामुरारी त्रिपुरान्तकारी भानु: शशी भूमिसुतो बुधश्च ।
गुरुश्च शुक्र: शनि-राहु केतव: सर्वे ग्रहा शान्तिकरा भवन्तु ।।**

इसके बाद सामने जो भगवती दुर्गा की तस्वीर स्थापित की है, उसे जल एवं केसर से पूजन कर उसके सामने **१६ देवी साफल्य चक्र** स्थापित करें, इन पर कुंकुम, केसर की टीकी लगाएं, ये १६ चक्र देवी में स्थित निम्न १६ देवियों के सिद्ध साफल्य स्वरूप हैं—

१ गौरी, २-पद्मा, ३-शची, ४-मेधा, ५-सावित्री, ६-विजया, ७-जया, ८-देवसेना, ९-स्वधा, १०-स्वाहा, ११-मातरो, १२-लोकमातरा:, १३-धृति, १४-पुष्टि, १५-तुष्टि, १६-कुलदेवी ।

फिर हाथ जोड़ कर प्रार्थना करें—

ते सम्मता जनदेपु धनानि तेषां ।
तेषां यशांसि न च सीदति धर्मवर्ग: ।।
धन्यास्त एव निभृतात्मज भर्त्यदारा ।
येषां सदाभ्युदयदा भवती प्रसन्ना ।।
जयन्ती मंगला काली भद्रकाली कपालिनी ।
दुर्गाक्षमा शिवा धात्री स्वाहा स्वधा नमोऽस्तुते ।।
आगच्छ वरदे देवि दैत्यदर्पनिसूधनि ।
पूजां गृहाण सुमुखि नमस्ते शकरप्रिये ।।

इसके पश्चात् सामने पात्र में रखे हुए यन्त्र की जल से कुंकुम तथा केसर से पूजा करें तथा अन्य सभी सामग्री प्रसाद, मौली, सुपारी, पंचामृत, फल इत्यादि अर्पित कर पूजन करें, तथा अपने मन की इच्छा व्यक्त कर निम्न नवार्ण मन्त्र की पांच माला जप सम्पन्न करें

नवार्ण मन्त्र

।। ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे ।।

अब निम्न प्रार्थना सम्पन्न करते हुए मां दुर्गा से अपनी भूलों की क्षमा याचना करते हुए निम्न प्रार्थना सम्पन्न कर यह पूजन पूर्ण करें—

मन्त्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं सुरेश्वरि ।
मया यत्पूजितं देवि परिपूर्णं तदस्तु मे ।।
महिषघ्नि महामाये चामुण्डे मुण्ड मालिनी ।
यशो देहि जयं देहि सर्वान्कामांश्च देहि मे ।।

Scanned by CamScanner

धन्य-धन्य है उनका जीवन

जिन्हें सिद्ध है

महात्रिपुर सुन्दरी

आप भी सिद्ध कर सकते हैं

क्षणों को पकड़ कर उनका पूर्ण उपयोग कर अपनी इच्छाओं की पूर्ति ही तो जीवन है, ऐसा ही साधना के लिए भी माना जाता है, कुछ साधना काल ऐसे होते हैं, जो चैतन्य समय कहे जाते हैं।

प्रस्तुत आलेख त्रिपुर सुन्दरी साधना का महत्वपूर्ण गुप्ततर विधान है, जिसका प्रभाव स्थायी और रोम-रोम में आनन्द भर देने वाला है।

जीवन एक क्रम ही नहीं है, और न ही एक संग्राम है, जिसमें दिन-रात संघर्ष ही सघर्ष किया जाय, जीवन तो एक मधुर संगीत लय है, जिसमें सभी राग छिपे हैं, आनन्द के साथ जिएं और दूसरों के आनन्द में भी बढ़ोत्तरी हो, इस के लिए ही तो गृहस्थ की रचना हुई है।

दस महाविद्याओं का जब उल्लेख शास्त्रों में आता है, और साधक जब इनके विधान सम्पन्न करता है, तो एक विशेष अनुभूति प्राप्त होती है, शक्ति के लिए चामुण्डा की साधना करता है तो शत्रुनाश के लिए बगलामुखी की, समृद्धि के लिए तारा की, तो संकट मुक्ति के लिए त्रिपुर भैरवी की, प्रेत निवारण हेतु अदृश्य बाधा शान्ति हेतु धूमावती साधना करता है, तो लक्ष्मी के लिए कमला की साधना, ये सारी साधनाएं एक विशिष्ट उद्देश्य, एक कार्य विशेष के लिए सम्पन्न की जाती हैं, लेकिन जीवन में आनन्द का रस घोलना है, हर क्षण मधुरता प्राप्त करनी

Scanned by CamScanner

है तो केवल एक ही साधना आवश्यक है, और वह है **"षोडशी त्रिपुर सुन्दरी"** साधना और यह साधना पुरुषों के लिए जितना आवश्यक है, उतनी ही स्त्रियों के लिए भी, युवा अथवा प्रौढ़ जीवन में मधुरता आनन्द से कोई वंचित नहीं रहना चाहता, षोडशी त्रिपुर सुन्दरी तो पुरुषार्थ, पराक्रम, आनन्द, सौभाग्य, गृहस्थ सुख की पूर्ण देवी है जिसका भौतिक प्रभाव के साथ-साथ आध्यात्मिक प्रभाव भी उतना ही निराला है।

विराट त्रिपुर सुन्दरी

षोडशी त्रिपुर सुन्दरी के एक स्वरूप की साधना का उल्लेख तो कई ग्रन्थों में आया है, लेकिन योगीजन जानते हैं, कि त्रिपुर सुन्दरी का विराट स्वरूप नौ स्वरूपों से युक्त है और जो साधक इन सभी स्वरूपों की साधना सम्पन्न कर लेता है, तो अपने जीवन को धन्य-धन्य कर लेता है।

यह कहना कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी कि विराट त्रिपुर सुन्दरी साधना जीवन का सौभाग्य है और साधना सम्पन्न होने पर त्रिपुर सुन्दरी साक्षात् प्रकट हो कर साधक को दर्शन देती है, और उसके सारे मनोरथ पूर्ण करती है।

इसे केवल भोग विलास की साधना ही न समझें यह तो आनन्ददायिनी साधना है, जिसको सम्पन्न करने से निम्न मनोरथ अवश्य पूर्ण होते हैं—

१-श्रेष्ठ स्वास्थ्य, २-श्रेष्ठ गृहस्थ सुख, ३-पराक्रम, ४-शक्ति में वृद्धि, ५-उत्तम पति, या पत्नी की प्राप्ति, ६-पुत्र प्राप्ति और पुत्र सुख, ७-जीवन के भोगों की प्राप्ति, ८-भाग्योदय, ९-जीवन की चिन्ताओं से मुक्ति।

जब पुण्य जागृत होते हैं तो जीवन में कार्य अपने आप ही सम्पन्न होने लगते हैं, और जो अपने जीवन में पूर्ण सुख और सौभाग्य की कामना करते हैं, तथा सही अर्थों में साधक हैं, वे इस साधना को अवश्य ही सम्पन्न करते हैं, और जब तक साधक अपने सांसारिक जीवन में पूर्णता प्राप्त नहीं कर लेता, वह पूर्ण योगी भी नहीं बन सकता।

ये विशिष्ट नौ दिन

किसी भी महीने की शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा से प्रारम्भ कर नवमी तक इस साधना को सम्पन्न करना है, इन नौ दिनों में पूजन का एक निश्चित क्रम रहता है और उसी नियम से तथा क्रम से साधना सम्पन्न करनी आवश्यक है, प्रत्येक दिन महात्रिपुर सुन्दरी के एक विशिष्ट स्वरूप की साधना की जाती है।

इस साधना में साधक स्नान कर पीली धोती धारण कर पीले आसन पर बैठें तथा सभी पूजन सामग्री की व्यवस्था पहले से ही कर लें।

पूजन सामग्री

इस पूजन सामग्री का प्रयोग नित्य होता है—१-जलपात्र, २-कुंकुम, ३-केसर, ४-चावल, ५-पुष्प, ६-अगरबत्ती ७-शुद्ध घृत का दीपक, ८-अबीर गुलाल, ९-मौली, १०-सुपारी, ११-लौंग इलायची, १२-फल, १३-दूध का बना हुआ प्रसाद और १४-दक्षिणा।

यह सामग्री पहले से ही प्राप्त करके रख देनी चाहिए जिससे कि नित्य पूजन में इसका प्रयोग किया जा सके।

विशिष्ट साधना सामग्री

इसके अलावा इस साधना में नित्य पूजन क्रम में अलग-अलग यन्त्रों की आवश्यकता होती है जिसका पूजन और प्रयोग अति आवश्यक है, ये यन्त्र अपने आप में अत्यन्त दुर्लभ और महत्वपूर्ण होते हैं, और पूरे जीवन भर के लिए इन यन्त्रों को अपने घर में स्थापना सभी दृष्टियों में सौभाग्यशाली कही गई है।

शास्त्रों के अनुसार निम्न तिथियों को निम्न यन्त्र की पूजा स्थापना, प्राण प्रतिष्ठा और मन्त्र जप सम्पन्न किया

जाता है ।

१-प्रतिपदा	– पहला दिन	–इन्दुरूपिणी विश्वरूपा महादेवी यन्त्र
२-द्वितीया	– दूसरा दिन	–अग्निरूपिणी दक्षिण-काली यन्त्र
३-तृतीया	– तीसरा दिन	–तेजस्वरूपा सनातनी देवी यन्त्र
४-चतुर्थी	– चौथा दिन	–अनाहत रूपिणी परा-देवी यन्त्र
५-पंचमी	– पांचवां दिन	–विशुद्धरूपिणी परमेश्वरी देवी यन्त्र
६-षष्टी	– छठा दिन	–आज्ञारूपिणी महा-चक्रेश्वरी देवी यन्त्र
७-सप्तमी	– सातवां दिन	–कामरूपिणी कामेश्वरी यन्त्र
८-अष्टमी	– आठवां दिन	–सहस्रारूपिणी दिव्ये-श्वरी यन्त्र
९-नवमी	– नवां दिन	–शिवरूपिणी त्रिगुणा देवी यन्त्र

उपरोक्त प्रकार से ही सम्बन्धित देवी का ध्यान और सम्बन्धित यन्त्र की पूजा सम्पन्न करते हुए सम्बन्धित मन्त्र का जप किया जाता है, इस साधना के अनुसार नित्य केवल ग्यारह माला मन्त्र जप होना चाहिए, उदाहरण के लिए पहले दिन विश्वरूपा महादेवी यन्त्र की पूजा करते हुए विश्वरूपा देवी का ध्यान कर विश्वरूपा महामन्त्र का ग्यारह माला मन्त्र जप किया जाता है ।

यह मन्त्र जप **"मनोहरा माला"** से ही सम्पन्न करने का शास्त्रों में विधान है, यह माला मन्त्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठायुक्त होनी चाहिए, साधकों को चाहिए कि उपरोक्त नौ प्रकार के दुर्लभ यन्त्रों को, जो कि सभी मन्त्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त हों, पहले से ही प्राप्त कर लेना चाहिए, जिससे कि समय पर इस अद्वितीय साधना को सम्पन्न किया जा सके ये सभी यन्त्र और माला आप कहीं से भी प्राप्त कर सकते हैं

साधना रहस्य

साधक प्रतिपदा अर्थात् प्रथम दिन को स्नान कर पीली धोती पहन करपीले आसन पर पूर्व की ओर मुंह कर बैठ जाए और सामने एक थाली में स्वस्तिक कुंकुम या केसर से बना कर उस पर प्रथम दिन ऊपर बताये हुए अनुसार **"विश्वरूपा महादेवी यन्त्र"** को स्थापित करें और उसे जल से स्नान करावें, पौंछ कर केसर का तिलक करें, अक्षत, पुष्प, नैवेद्य चढ़ावें और फिर **मनोहरा माला** से विश्वरूपा महादेवी मन्त्र का ग्यारह माला मन्त्र जप करें, इसी प्रकार मैं आगे की पंक्तियों में प्रत्येक दिन स्थापित होने वाली देवी के ध्यान और उसके मन्त्र को स्पष्ट कर रहा हूं—

१- प्रथम दिवस—

इन्दुरूपिणी विश्वरूपा महादेवी साधना

ध्यान

अभयं वरदं चैव हस्तं च सुर-सुन्दरि ।
धनुर्बाणधरां देवीं पाशांकुश धरां पुनः ।।

मन्त्र

।। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं जूं सः अमृतं
विश्वरूपायै महादेव्यै नमः ।।

२- द्वितीय दिवस—

अग्निरूपिणी दक्षिण काली यन्त्र साधना

ध्यान

अभयं च वरं चैव दक्षिणे धारिणी सदा ।
खड्गं मुण्डं चैव मेऽस्मिन् धारयन्ति सनातनीम् ।।

मन्त्र

।। ॐ क्रां कालाग्नि रुद्रायै अग्निरूपिणी
दक्षिण काल्यै नमः ।।

३- तृतीय दिवस—

तेजस्वरूपा सनातनी देवी साधना

ध्यान

सर्व सिद्धि प्रदां देवीं जगच्च मोहिनीं पुनः ।
महामायां मोहिनीं च ज्ञानिनां ज्ञानदां सतीम् ।।

मन्त्र

।। ॐ काम-प्रद षोडशी कलात्मने
तेजस्वरूपा सनातनी देव्यै नमः ।।

४- चतुर्थ दिवस

अनाहत रूपिणी परादेवी साधना

ध्यान

अष्टभुजां महादेवीं रक्तवर्णां त्रि-शक्तिकाम् ।
धनुर्बाणं च खड्गं च चक्रं च दधतीं शिवाम् ।

मन्त्र

।। ॐ ह्रीं ऐं ईश्वरीं अनाहत रूपिणी
परा देव्यै नमः ।।

५- पंचम दिवस

विशुद्ध रूपिणी परमेश्वरी साधना

ध्यान

दश भुजां महादेवीं पीतवर्णां सनातनीं ।
कपालं खेटकं शंखं दर्पणं चामरं तथा ।।

मन्त्र

।। ॐ अं अर्थप्रद द्वादश कलात्मने विशुद्ध
रूपिणी परमेश्वरी देव्यै नमः ।।

६- षष्टम दिवस—

आज्ञा रूपिणी महाचक्रेश्वरी साधना

ध्यान

रक्त वस्त्र परीधानां कमलापति सेविताम् ।
संसार दुःख शमनीं संसारार्णव तारिणीम् ।।

मन्त्र

।। ॐ चं कुण्डलिनी जाग्रतं आज्ञारूपिणी
महाचक्रेश्वरी देव्यै नमः ।।

७- सप्तम दिवस —

काम रूपिणी कामेश्वरी साधन

ध्यान

पद्मासनां महा-मायां महापद्मासन स्थिताम् ।
एवं संचिन्त्येद् देवीं ब्रह्म मार्गेण गामिनीम् ।।

मन्त्र

।। ॐ कं कामरूपिणी कामेश्वरी देव्यै नमः ।।

८- अष्टम दिवस—

सहस्रार रूपिणी दिव्येश्वरी साधना

ध्यान

चिन्मयं परं शिवं देवि ध्यान-गम्यं सनातनम् ।
सारात् सार तरं देवी परमतत्व गोचराम् ।।

मन्त्र

।। ॐ अमृते अमृतोद्भवे अमृतेश्वरि
सहस्रार रूपिणी दिव्येश्वरी नमः ।।

९- नवम दिवस —

शिव रूपिणी त्रिगुणा देवी साधना

ध्यान

नित्यानन्द निरन्तरं निरूपमं वेदैरपारं परम् ।
शिव शक्ति वरं देवि निर्गुणं सगुणात्मकम् ।।

मन्त्र

।। ॐ पं परमतत्वायै शिवरूपिणी
त्रिगुणात्मिका देव्यै नमः ।।

इस प्रकार नित्य पूजन करते हुए सम्बन्धित साधनाएं सम्पन्न करनी है, साधकों द्वारा पूर्ण आहुति अर्थात् नवम दिवस को पांच माला त्रिपुर सुन्दरी बीज मन्त्र का जप कर आरती इत्यादि सम्पन्न करनी चाहिए—

त्रिपुर सुन्दरी मन्त्र

।। ह्रीं कएलई ह्रीं हसकल ह्रीं सकलह ह्रीं ।।

इसके बाद नवें दिन नौ कुमारी कन्याओं को भोजन कराए और अपने समस्त अनुष्ठान को षोडशी त्रिपुर सुन्दरी के विराट स्वरूप को समर्पित करते हुए आशीर्वाद प्राप्ति की इच्छा रखें।

Scanned by CamScanner

तीव्र ज्वलन्त

धूम मचाते हुए धूमावती के ये प्रयोग

शक्ति साधना केवल परिकल्पना नहीं है, तांत्रिक क्रियाएं केवल पढ़ने योग्य चमत्कारिक विवरण नहीं हैं, शक्ति तो साक्षात् जीवन्त तत्व है, और इसे किसी भी चैलेन्ज के साथ सिद्ध करके बताया जा सकता है—
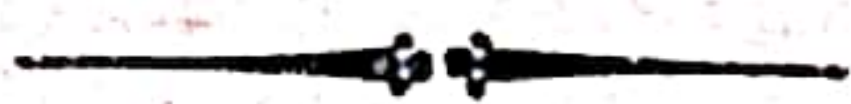
एक बार गुरुदेव अपने आसन पर प्रातः अपनी नित्य साधना के पश्चात् बैठे थे, और आगन्तुकों की भीड़ लगी हुई थी, प्रथम व्यक्ति व्यापारी था और बोला कि गुरुदेव दो साल हो गये पता नहीं मेरे व्यापार को क्या हो गया है, जो भी काम करता हूं, उलटा ही उलटा पड़ रहा है, कहां मैं लाखों में खेलता था और आज लाखों का कर्जा है, मैं क्या करूं? गुरुदेव ने उसे एक पुष्प दिया और कहा कि **'धूमावती साधना'** तथास्तु।

दूसरे सज्जन एक नेता जी थे, राजनीति में जबरदस्त दबदबा था, मुख्य मन्त्री तक पहुंच रखते थे, और उन्होंने कहा कि अब यह हालत हो गई है कि मेरे क्षेत्र का प्रधान तक मेरे विरुद्ध हो गया, मुझे टके भाव कोई नहीं पूछता, ऐसा अपमान बरदास्त नहीं होता। राजनीति से मैं संन्यास भी ले लूं तो करूंगा क्या? नेताओं की तो एक ही जाति होती है, वह है— 'पोलिटिक्स', इसके अलावा तो उन्हें कुछ आता नहीं, नेताजी ने कहा, प्रभु! कुछ करिए। गुरुदेव ने कहा **'धूमावती साधना'**।

तीसरे सज्जन की बाधा तो न्यारी थी, वे बोले कि मेरे घर में पिछले छः महीने से कमरे में कभी कोयला मिलता है, कभी मिट्टी की पोटली तो कभी तिल और सरसों, कभी रंगीन चावल, और कई बार तो ऐसा होता है कि घर में किसी कपड़े में अचानक आग लग जाती है और इन छः महीनों में कभी पत्नी बीमार रहती है तो कभी लड़की बीमार पड़ जाती है, और जहां मैं अच्छा खासा स्वस्थ था, अब मुझे इतना ब्लड प्रेसर रहने लगा कि थोड़ी देर भी निश्चिन्त हो कर काम नहीं कर सकता,

गुरुदेव ने कहा कि बहुत दुःख भोग रहे हो, करो— 'धूमावती साधना'।

पूज्य गुरुदेव के एक पुराने शिष्य पीलीभीत के पास रहने वाले मिश्राजी थे, खेती भी है, थोड़ा बहुत खाद बीज इत्यादि का व्यापार भी करते हैं, और गन्ने की पिराई का काम अपने यहां लगा रखा है। गांव में किसी की हत्या हो गई, किसी ने हत्या कर लाश को उनके खेत के किनारे डाल दिया, मिश्राजी गुटबाजी में विश्वास नहीं रखते थे, गांव की राजनीति से दूर रहते थे, पूजा पाठ और अपने कार्य की ओर ही मगन रहते थे, अब पुलिस पकड़ कर ले गई और कत्ल का मुकदमा चला दिया। मजिस्ट्रेट के यहां तो क्या सेशन कोर्ट में भी जमानत नहीं हुई। जेल से ही उन्होंने गुरुदेव को पत्र लिखा कि प्रभु! आपका शिष्य महान संकट में फंस गया है, मैंने तो कोई दुष्कर्म नहीं किया और मुझे झूठा फंसा दिया गया है, थोड़ी सी अनबन तो उस व्यक्ति के साथ अवश्य थी, और जिस हिसाब से केस चल रहा है, उससे ऐसा लगता है कि फांसी नहीं तो उम्र कैद तो हो ही जायेगी। कुछ करिये वरना मेरी तो लुटिया ही डूब जायेगी।

गुरुदेव ने कहा इसके लिए यहीं आश्रम में **'धूमावती अनुष्ठान'** संपन्न करते हैं, फिर देखता हूं कि मिश्राजी का कोई बाल भी बांका कैसे कर दे।

फिजी से श्री ज्ञान प्रकाश **(नाम बदल दिया गया है)** का पत्र आया कि गुरुदेव मैं सात समुद्र पार अपनी धरती से दूर यहां इस देश में विदेश विभाग में कार्यरत हूं, सन्तानों के उचित विवाह में बहुत परेशानियां आ रही हैं, बात चलती है और टूट जाती है, गूरुदेव ने कहा तुम वहां **'धूमावती अनुष्ठान'** करो, और पुनः पत्र आया कि मुझे पूर्ण विधि का ज्ञान नहीं है, यहां फिजी में योग्य पंडित नहीं हैं, क्या केन्द्र में सम्भव है? उनके विशेष अनुरोध पर यहां अनुष्ठान सम्पन्न कर उन्हें विशेष विधि और यन्त्र भेज दिया गया, सब कुछ ठीक हो गया।

ये तो केवल कुछ उदाहरण हैं, जो सौ टंच खरे उतरे अलग-अलग क्षेत्रों के लोग, अलग-अलग उनका व्यक्तित्व, अलग-अलग उनका लक्ष्य और विशेष बात यह है कि लक्ष्य पूर्ति केवल एक ही साधन द्वारा और वह साधन है- **धूमावती साधना** का पूर्ण कल्प, जिसे एक बार शुरू करें तो पूरा अवश्य किया जाय और यदि सब कुछ सही रूप से पूर्ण हो जाय तो फिर कमी किसी बात की नहीं।

आखिर ऐसा क्या है?

यदि आप साधक हैं, भक्ति में आपकी रुचि है, साधना आपका जीवन दर्शन है तो निश्चय ही आपका दृष्टिकोण दूसरों से अलग होगा, आपके चित्त में एक निर्मलता होगी, सात्विक भाव होगा, दूसरों को पीड़ा पहुंचाने में अथवा किसी की हानि में आपको प्रसन्नता नहीं होगी।

इसका तात्पर्य यह तो नहीं कि आप निर्बल बन जांय, किसी भी शास्त्र में ऐसा नहीं लिखा है कि व्यक्ति को साधक को दूसरों का आघात सहन करना चाहिए, दुष्टों से डरते रहना चाहिए, अपने जीवन में व्यर्थ की पीड़ा झेलते हुए भी प्रसन्नता का नाटक करते रहना चाहिए, ऐसा करना तो उस महान शक्ति का अपमान होगा, उस गुरु का अपमान होगा, जिसके आप शिष्य हैं। जब तक जीवन की पीड़ाओं को हटा कर जीवन में निर्मलता नहीं ला सकते, तब तक शुद्ध भाव जागृत कर अपना अंतिम लक्ष्य निराकार परब्रह्म में विलीन हो कर जीवन में पूर्णता प्राप्त करने का लक्ष्य अधूरा ही रहेगा।

किसी हिंसक जानवर से सामना होने पर उसे हाथ जोड़ कर नमस्कार नहीं करेंगे उसे निवेदन भी नहीं करेंगे कि आप मुझे छोड़ दीजिये, उसका तो अपने सम्पूर्ण अस्त्र शस्त्र सहित मुकाबला कर उसे परास्त करना ही पड़ेगा।

और जीवन क्या है? इसमें भी तो हिंस्र पशु आपकी बीमारियों के रूप मे, शत्रुओं के रूप में, दुर्घटना के रूप में, तांत्रिक प्रयोगों के रूप में, धोखा देने वालों के रूप में,

Scanned by CamScanner

गरीबी, मुकदमे के रूप में पग-पग पर भरे पड़े हैं, और इनका मुकाबला कर इन पर विजय प्राप्त कर ही इन्हें वश में किया जा सकता है।

धूमावती स्वरूप आख्यान

धूमवती की कथा में तो दो बातें विशेष रूप से हैं, प्रथम तो यह दुर्गा की विशेष कलह निवारिणी शक्ति है, दूसरी कथा के अनुसार यह पार्वती का यह विशाल एवं रुक्ष स्वरूप है, जो क्षुधा से विकलित कृष्ण वर्णीय कलह-कारी, कुटिल रूप है, जो भक्तों को अभय देने वाली तथा उनके शत्रुओं के लिए साक्षात काल स्वरूप है, जहां धूमावती साधना संपन्न होती है वहां इसके प्रभाव से शत्रुनाश का विग्रह, बाधा नाश का कार्य अवश्य ही प्रारम्भ हो जाता है। धूमावती साधना मूल रूप से तांत्रिक साधना है, भूत-प्रेत पिशाच तो धूमावती साधना से इस प्रकार गायब होते हैं, जैसे जल को अग्नि देने पर वाष्प रूप में विलीन हो जाता है। धूमावती का स्वरूप क्षुधा अर्थात् भूख से पीड़ित स्वरूप है और इसे अपने भक्षण के लिए कुछ न कुछ अवश्य चाहिए। अतः जब साधक इसकी साधना करता है तो वह प्रसन्न होकर साधक के शत्रुओं का भक्षण ही कर लेती है।

ध्यान मन्त्र

विकर्णा चंचला दुष्टा दीर्घा च मलिनाम्बरा।
विमुक्तकुन्तला रूक्षा विधवाविरलद्विजा।।
काकध्वजरथारूढ़ा विलम्बित पयोधरा।
सूर्पहस्तातिरक्ताक्षीवृत्तहस्ता परान्धिता।।
प्रवृद्धघोणा तु मृशं कुटिला कुटिलेक्षणा।
क्षुत्पिपासार्दिता नित्यं भयहा कलहास्पदा।।

धूमावती जयन्ती

धूमावती साधना केवल कुछ विशेष दिनों में ही प्रारम्भ की जा सकती है, तन्त्र विद्या के जानकार और नित्य प्रति तन्त्र साधना करने वाले तांत्रिक और कोई साधना करें अथवा न करें, अष्टमी और अमावस्या के दिन धूमामती अनुष्ठान अवश्य ही संपन्न करते हैं।

इस वर्ष ८ जून १९९२ ज्येष्ठ शुक्ल अष्टमी को धूमावती जयन्ती है, इस दिन दुर्गाष्टमी का एक विशेष योग भी बना है, अतः साधक को इस दिन धूमावती अनुष्ठान अवश्य ही संपन्न करना चाहिए।

काश्मीर क्षेत्र में तो हरसाल इस धूमावती जयन्ती पर एक विशेष मेला लगता है, जिसे क्षीर भवानी का मेला कहते हैं और यह मान्यता है, कि इस दिन का व्रत इत्यादि सम्पन्न करने से तथा क्षीर भवानी जो कि धूमावती का ही एक दूसरा नाम है समस्त पाप दोष से मुक्ति मिलती है, इच्छाओं कामनाओं की पूर्ति होती है।

अनुष्ठान

साधक स्नान कर काली धोती धारण कर, व्याघ्र चर्म अथवा मृग चर्म पर बैठ जांय, यदि संभव न हो तो, ऊनी आसन बिछा कर दक्षिण दिशा की ओर मुंह कर बैठ जांय। सामने लकड़ी का बाजोट बिछा कर काला कपड़ा बिछा कर उसके ऊपर स्टील या लोहे की थाली रख दें, इस थाली के अन्दर पूरी तरह से काजल लगा दें।

इसके बाद साधक चांदी की शलाका से या किसी तिनके की सहायता से एक बूढ़ी स्त्री का चित्र अंकित करें जिसके बाल बिखरे हुए हों और जिसके गले में नरमुण्ड माला धारण की हुई हो, यह धूमावती का प्रतीक चिन्ह है। इसके मस्तक पर धूमावती यन्त्र स्थापित करें।

इसके बाद साधक एक दूसरी स्टील की थाली में ग्यारह तेल के दीपक लगावें, इसमें किसी भी प्रकार के तेल का प्रयोग किया जा सकता है, इस साधना में अगरबत्ती आदि को आवश्यकता नहीं होती।

Scanned by CamScanner

इसके बाद साधक थाली में जो धूमावती का चित्र बनाना है, उसके सिर के चारों ओर 'ग्यारह हकीक नग' रखें, धूमावती के बांएं पैर के पास 'लघुनारियल' स्थापित करें और दाहिने पैर के पास 'सियारसिंगी' स्थापित करें। धूमावती के वक्षस्थल पर या हृदय पर 'मोतीशंख' रखें और उसके चारों ओर पांच रुद्राक्ष के दाने रखें।

इसके बाद साधक हाथ में जल लेकर संकल्प लें, कि मैं अमुक गोत्र अमुक पिता का पुत्र अमुक नाम का साधक पूर्ण क्षमता के साथ जालधन्र पीठ सिद्ध धूमावती को सिद्ध कर रहा हूं, ऐसा कह कर जल को जमीन पर छोड़ दें।

इसके बाद हाथ में जल लेकर निम्न मन्त्र पढ़ें, इसे विनियोग कहते हैं।

विनियोग

अस्य धूमावतीमन्त्रस्य पिप्पलादऋषिः निवृच्छन्दः ज्येष्ठा देवता धूं बीजं स्वाहा शक्तिः धूमावती कीलकं ममाभीष्टसिद्धयर्थे (शत्रुहनने) जपे विनियोगः।

विनियोग के बाद निम्न अंगों को स्पर्श करते हुए हृदयन्यास सम्पन्न करें—

ॐ धूं धूं हृदयाय नमः
ॐ धूं शिरसे स्वाहा
मां शिखायै वषट्
ॐ वं कवचाय हुं
ॐ तिं नेत्र त्रयाय वौषट्
ॐ स्वहा अस्त्राय फट्

इसके बाद साधक करन्यास सम्पन्न करें इसमें अंगूठे तथा जिन उंगलिओं का वर्णन है उनको देखते हुए मन्त्र उच्चारण करें—

करन्यास

ॐ धूं धूं अंगुष्ठाभ्यां नमः
ॐ धूं तर्जनीभ्यां नमः
ॐ मां मध्यमाभ्यां नमः
ॐ वं अनामिकाभ्यां नमः
ॐ तीं कनिष्ठिकाभ्यां नमः
ॐ स्वाहा करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः

इसके बाद बांएं हाथ में थोड़ा चावल लेकर इन चावलों को कुंकुम से रंग कर यन्त्र पर निम्न मन्त्र पढ़ते हुए थोड़ा-थोड़ा डालें, जिससे कि प्राण प्रतिष्ठा प्रयोग सम्पन्न किया जा सके।

प्राण प्रतिष्ठा मन्त्र

आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं ॐ क्ष सं हंसः ह्रीं ॐ हंसः श्री मद्धमावत्या प्राणा इह प्राणाः। आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं क्षं स ह ॐ क्षं स हंसः ह्रीं ॐ हसः श्री धूमावत्या जीवन इह स्थितः ॐ ह्रीं क्रों यं रं लं व श क्षं स हं ॐ क्षं सं हं हंसः ह्रीं ॐ हंसः श्री मद्धमावत्यास्सर्वेन्द्रियाणि इह स्थितानि। आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं क्षं सं हं ॐ क्षं सं हंसः श्री मद्धमावत्या वाङ्मनश्चक्षूश्रोत्रघ्राण-प्राणा इहागत्य सुखञ्चिरन्तिष्ठन्तु स्वाहा ॥

इसके बाद साधक दोनों हाथों में पुष्प लेकर **धूमावती यन्त्र** पर चढ़ाते हुए ध्यान करें।

इसके बाद साधक **'सफेद हकीक माला'** से निम्न धूमावती मन्त्र की ११ माला मन्त्र जप करें, इस अवधि में साधक उठे नहीं और पूरी ११ माला मन्त्र जप होने के बाद ही उठें, साथ ही साथ इस बात का भी ध्यान रखें कि जो ग्यारह तेल के दीपक लगाएं वे बराबर जलते रहें।

धूमावती मन्त्र

॥ धूं धूं धूमावती ठः ठः ॥

Scanned by CamScanner

जब मन्त्र जप पूरा हो जाय तब साधक थाली में जो कुछ तांत्रोक्त सामग्री है, उसमें से **धूमावती यन्त्र** थता **हकीक माला** को छोड़कर सारी सामग्री घर के बाहर दक्षिण दिशा की ओर जमीन में गाड़ दें अथवा नदी या तालाब में विसर्जित कर दें, यदि साधक दिन में साधना कर रहा है तो रात्रि को यह सामग्री विसर्जित कर सकता है अथवा दिन में पूरी सामग्री की जो थाली में है, जमीन में गाड़ सकता है अथवा नदी, तालाव या समुद्र में विसर्जित कर सकता है।

धूमावती साधना का यह विधान अत्यन्त विलक्षण एवं विशिष्ट फलप्रदायक विधान है, बाधाएं चाहे कितनी ही विकराल अथवा विशाल हों, धूमावती साधना से बाधाओं पर विजय प्राप्त होती ही है। इस साधना के संबंध में ज्यादा लिखने के बजाय यह कहना उपयुक्त होगा कि इसे सम्पन्न कर इसका प्रत्यक्ष लाभ प्राप्त कर साधक स्वयं ही निर्णय करें।

निवेदन है कि इस साधना का प्रयोग किसी गलत कार्य हेतु नहीं करें। गलत कार्यों हेतु किये गये तांत्रिक प्रयोगों से प्रारम्भ में तो लाभ मिलता है लेकिन अन्ततः ऐसे तन्त्र प्रयोग करने वाले व्यक्ति को ही हानि उठानी पड़ती है। ●

Scanned by CamScanner

सूर्य ग्रहण की तांत्रोक्त तारा साधना

धन प्राप्ति की इच्छा रखना और धन प्राप्ति के लिए कार्य करने में न तो कोई दोष है और न अपराध, गृहस्थ जीवन के लिए धन ही मूल है, जिसके ऊपर उसका गृहस्थ रूपी वृक्ष फलता फूलता और वृद्धि करता है।

धन की साधना हेतु दस महाविद्याओं में तारा साधना सर्वश्रेष्ठ मानी गयी है, और ऐसा भी कहा जाता है कि तारा महाविद्या सिद्ध होने पर साधक को प्रतिदिन स्वर्ण प्रदान करती है, अर्थात् यह निश्चित है कि तारा सिद्धि प्राप्त साधक की आय में वृद्धि हो जाती है, और उसे आय के नये-नये स्रोत प्राप्त होते हैं, आकस्मिक धन प्राप्ति भी सम्भव होती है।

सूर्य ग्रहण तारा साधना के लिए श्रेष्ठ सिद्ध मुहूर्त दिवस है, और इस दिन ग्रहण कालिक तांत्रोक्त तारा साधना अवश्य करनी चाहिए।

इस प्रयोग हेतु पांच सामग्रियों की आवश्यकता रहती है, जिनमें **ग्रहण कालोक्त तारा यन्त्र,** तारा चित्र, ग्रहण अभिषेक युक्त **तारा माला,** सिद्धिदायक **सूर्य यन्त्र** तथा **सिद्धोय यन्त्र** आवश्यक है, इसे **सूर्य ग्रहण तारा पैकेट** कहा गया है।

सूर्य ग्रहण मंगलवार ३० जून को है, और साधक को यह साधना २९ जून सोमवार की रात्रि को सम्पन्न करनी चाहिए।

विधान

सूर्योदय से तीन घण्टे पहले उठ कर स्नान कर शुद्ध पीली धोती धारण कर उत्तराभिमुख बैठ कर उपकरणों में प्राप्त यन्त्र को धागे में पिरो कर गले में पहिन लें और **सूर्य यन्त्र, तारा यन्त्र** की पूजा करें और तारा चित्र के सामने पुष्प आदि रखें फिर **तारा माला** से निम्न मन्त्र की मात्र ग्यारह माला मन्त्र जप करें।

मन्त्र

॥ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं त्रं तारायै श्रीं ह्रीं ऐं ॐ नमः ॥

जब ग्यारह माला मन्त्र जप पूर्ण हो जाय तब यन्त्र और चित्र को अपने पूजा स्थान में रख दें और गले में पहिने हुए यन्त्र को उस स्थान पर रख दें जो आपके लिए विशेष महत्वपूर्ण हो, जैसे कि आपका कार्यालय, आपका सोने का कमरा या अन्य कोई महत्वपूर्ण स्थान हो, ऐसा करने पर तारा साधना सिद्ध होती है और साधक शीघ्र ही मनोवांछित सफलता प्राप्त कर सकता है। ●

Scanned by CamScanner

लक्ष्मी का एक अद्भुत तन्त्र

लक्ष्मी किस स्वरूप में और कब अपने साधक का उद्धार कर देती है, यह कोई निश्चित रूप से नहीं कह सकता परन्तु इतना निश्चित है कि जो साधक निश्चित रूप से लक्ष्मी साधना करते रहते हैं, उन पर लक्ष्मी कृपा अवश्य होती है। एक विशेष प्रयोग पाठकों हेतु स्पष्ट किया जा रहा है, इस प्रयोग के सम्बन्ध में इतना निश्चित है कि साधक को फल किसी न किसी रूप में अवश्य ही मिलता है।

लक्ष्मी साधना के सम्बन्ध में जो विधियां तन्त्र साहित्य में तथा अन्य शास्त्रों में दी गयी हैं, साधक उनका पालन पूर्णतया नहीं करते, कुछ दिन मन्त्र अनुष्ठान करने के पश्चात् उसे छोड़ देते हैं, कई बार तो साधना में उचित सामग्री अथवा उचित विधि का अभाव होने से ही इस साधना में सफलता नहीं मिलती। लक्ष्मी साधना में कुछ बातों का ध्यान रखना आवश्यक है—

- वास्तविक रूप से तो लक्ष्मी की साधना अर्द्ध-रात्रि को ही सम्पन्न करनी चाहिए और यदि नक्षत्र ग्रह योग श्रेष्ठ हों तो उस दिन ही ऐसा प्रयोग प्रारम्भ करना चाहिए।
- **सर्वार्थ सिद्धि योग रवि पुष्य** उत्तम कहे गये हैं, विशेष बात यह है कि लक्ष्मी साधना में **हस्त-नक्षत्र** का विशेष योग माना गया है।
- आने वाले समय में १३ मई १९९२, १० जून ९२, ७ जुलाई ९२, ३ अगस्त ९२ **हस्त नक्षत्र** से युक्त हैं। इनका विशेष ध्यान रखते हुए इस दिन लक्ष्मी प्रयोग अवश्य करें।
- लक्ष्मी साधना में साधक को अपना मुंह पश्चिम दिशा की ओर कर बैठना चाहिए।
- लक्ष्मी साधना में आसन ऊनी हो और उस पर पीला रेशमी वस्त्र बिछा कर लक्ष्मी पूजा सम्पन्न करनी चाहिए।
- लक्ष्मी साधना में मन्त्र जप केवल कमलगट्टा माला से ही सम्पन्न किया जाता है, तथा कमलगट्टा का

ही अर्पण किया जाना उचित रहता है।

- यदि कमल के पुष्प की व्यवस्था हो सके तो यह पुष्प अर्पित करना चाहिए।
- साधक की मुद्रा पद्म मुद्रा होनी चाहिए, अर्थात् दोनों हाथों की उंगलियों तथा अंगूठों को मिला कर खुले हुए कमल के आकार की मुद्रा को पद्म मुद्रा कहा जाता है, उसी मुद्रा में लक्ष्मी आह्वान तथा प्रार्थना करनी चाहिए।
- लक्ष्मी साधना में दूब (दुर्वा) का विशेष महत्व है और इस दुर्वा को दूध में डुबो कर देवी को अवश्य अर्पित करें।

ऊपर लिखे गये नियम सभी प्रकार के लक्ष्मी साधनाओं के लिए आवश्यक भी हैं, इसके अतिरिक्त निश्चित संख्या में मन्त्र जप इत्यादि करना चाहिए, नित्य ताजा शक्कर का प्रसाद खीर, बताशे आदि देवी महा लक्ष्मी को अर्पित किया जाता है।

सामग्री

इस विशिष्ट प्रयोग हेतु केवल. **श्री कामेश्वरी महालक्ष्मी यन्त्र** तथा **कमलगट्टा माला** आवश्यक है।

विधान

अर्द्ध रात्रि को स्नान कर शुद्ध वस्त्र पहिन कर ऊनी आसन पर पीला रेशमी वस्त्र बिछा कर पश्चिम दिशा की ओर मुंह कर साधक अपने पूजा स्थान में बैठें, अपने सामने एक लकड़ी के बाजोट पर पीला वस्त्र बिछा कर उस पर चावल की ढेरी बना कर ताम्र कलश स्थापित करें, कलश में जल डालें तथा इसके साथ ही **ग्यारह कमल गट्टा** तथा दूब डालें, तत्पश्चात् अपने सामने एक तांबे का दीपक जलाएं, इस दीपक में जो बत्तियां हों वे कम से कम पांच अवश्य हों, तथा इससे अधिक बत्तियों का प्रयोग करें तो वे विषम संख्या में ही होनी चाहिए। दीपक में शुद्ध घी का ही प्रयोग करें।

अब साधक चन्दन तथा अबीर गुलाल से कलश का पूजन कर दूसरे ताम्र पात्र में **श्री कामेश्वरी महालक्ष्मी यन्त्र** स्थापित करें, चन्दन, गुलाल तथा सिन्दूर से यन्त्र का पूजन करें तथा यन्त्र के आगे पुष्प स्थापित करें।

अब साधक पद्म मुद्रा में बैठ कर प्रसाद अर्पित करते हुए प्रार्थना मन्त्र का इक्यावन बार उच्चारण करें।

प्रार्थना मन्त्र

।। ॐ महालक्ष्मी नमस्तुभ्यं,
गृह-वासो करोसि त्वम् ।।

अब साधक जल को अपने नेत्रों से लगावें तथा सामान्य मुद्रा में बैठ कर **कमकगट्टा माला** से इस विशिष्ट कामेश्वरी बीज मन्त्र का जप करें। विशेष अनुष्ठान हेतु ४१ हजार मन्त्र जप का विधान है, इसी के अनुसार नित्य प्रति की जप संख्या निश्चित कर लें।

मन्त्र

।। ॐ महालक्ष्मी श्रीं श्रीं श्रीं कामबीजाय फट् ।।

इस प्रकार मन्त्र जप पूर्ण कर प्रसाद ग्रहण करें और जितने दिन भी यह अनुष्ठान चल रहा हो उतने दिन तक एक समय भोजन करें।

इस अनुष्ठान की पूर्णता होने पर महालक्ष्मी की पूजा से साधक को निश्चित फल प्राप्ति अवश्य होती ही है, इसमें संदेह रखने वाला जीवन भर दरिद्री ही रहता है। *

Scanned by CamScanner

भगवती दिगम्बरी

दक्षिण काली साधना

जो केवल सूर्य ग्रहण के अवसर पर ही सम्पन्न की जाती है

यों तो काली, महाकाली और दक्षिण काली से सम्बन्धित कई साधनएं साधना ग्रन्थों में प्रकाशित हैं, परन्तु दिगम्बरी दक्षिण काली साधना, साधना क्षेत्र में अत्यन्त उच्चस्तरीय साधना मानी गयी है, वामा खेपा जैसे तांत्रिक ने भी स्वीकार किया है कि दिगम्बरी दक्षिण काली साधना सर्वाधिक गुह्य, गुप्त, अलौकिक, अद्वितीय और अनुपम है, पूरे जीवन काल में विरले लोगों को ही यह सौभाग्य प्राप्त होता है, कि वे ऐसी उच्च स्तरीय साधना को प्राप्त करें, इसके अलावा रहस्य को समझें, जब जीवन में पुण्योदय होते हैं तभी ऐसी साधना साधक सम्पन्न करता है।

त्रिजटा अघोरी तो विश्व का अद्वितीय आचार्य है और उसने साधनाओं के क्षेत्र में कीर्तिमान कायम किये हैं, उसने भी अपने **'तन्त्र समुच्चय सपर्या'** ग्रन्थ में स्वीकार किया है कि कई वर्ष भटकने के बाद और हजारों तांत्रिकों से मिलने के उपरान्त ही स्वामी निखिलेश्वरान्द जी से मुझे दिगम्बरी दक्षिण काली साधना प्राप्त हुई और मेरे पास तन्त्र के हजारों रत्नों में से यह अपने आपमें अलौकिक अनुपम रत्न है।

दिगम्बरी दक्षिण काली साधना जन साधारण में कम प्रचलित है, इसका कारण इस साधना का महत्वपूर्ण होना है, यह साधना एक प्रकार से पूरे जीवन का वरदान है और उच्च स्तरीय योगी उसी शिष्य को यह साधना प्रदान करते थे जो जीवन भर उनकी सेवा करता था, और जो मन-वचन-कर्म से उनके प्रति अनुरक्त रहता हुआ साधना मार्ग पर अग्रसर होता था, जीवन के अंतिम समय में उसी को यह दिव्य साधना प्रदान की जाती थी।

Scanned by CamScanner

१-जिसकी साधना करने से काल का क्षय होता है, और व्यक्ति दीर्घायु एवं इच्छा मृत्यु प्राप्त करने में सक्षम हो जाता है।

२-काली का तात्पर्य है काल को पहिचानने की क्षमता प्राप्त करने वाला, ऐसा साधक भूत भविष्य और वर्तमान को एक पल में पहिचान लेता है।

३-काली का तात्पर्य जीवन में शत्रुओं पर प्रबल रूप से प्रहार करने वाली और शत्रुओं को समाप्त करने वाली महादेवी।

४-काली जीवन के समस्त विकारों, दोषों, अपराधों को समाप्त करने वाली है, शराब का व्यसन और अन्य बुरी आदतों को एक ही क्षण में समाप्त कर काम, क्रोध, लोभ मोह तथा अहंकार से परे हटा कर साधक को मोक्ष के मार्ग की ओर प्रवृत्त करने वाली है।

५-काली को राज राजेश्वरी भी कहा गया है, इसका तात्पर्य यह उच्च स्तरीय लक्ष्मी प्रदाता है, काली की साधना करने से साधक जीवन में स्वतः व्यापार वृद्धि एवं आर्थिक उन्नति होती ही रहती है।

६-काली विन्ध्यवासिनी है, इसका तात्पर्य जीवन में यह साधना पूर्ण भोग और मोक्ष को प्रदान करने वाली है।

काली का तात्पर्य

भारतीय आचार्यों ने भगवती काली को दस महाविद्याओं में सर्व प्रमुख स्थान दिया है, आचार्य भट्ट ने काली के तेरह अर्थ बताये हैं—

७-इसे 'शरण्य' कहा गया है, यह जीवन के समस्त दु:खों को समाप्त कर पूर्ण ध्यान लगाने में समर्थ और सहायक है।

८-यह विज्ञान रूपा है और इसकी साधना से जीवन में किसी प्रकार का कोई अभाव नहीं रहता और साधक सभी क्षेत्रों में निरन्तर उन्नति करता रहता है।

९ यह दुर्गा स्वरूप है, अत: जीवन में आने वाली बाधाओं को तुरन्त समाप्त करने में सहायक है।

१०-यह आपत्ति उद्धारक महादेवी है, इसकी साधना करने से पूरे जीवन काल में किसी प्रकार की कोई बाधा या अड़चन नहीं आती है।

११-यह सर्व सिद्धि प्रदायक है, छोटी-मोटी साधनाओं या विविध साधनाओं में समय बरबाद करने की अपेक्षा एक ही साधना में पूर्णता प्राप्त करने से समस्त रूपों में अनुकूलता प्राप्त हो जाती है।

१२-काली को प्रबल रोग मुक्ता कहा गया है यह समस्त प्रकार के रोगों को समाप्त करने वाली और वृद्धावस्था को यौवनावस्था में बदलने वाली है, यही एक मात्र ऐसी साधना है, जिसके द्वारा व्यक्ति सभी प्रकार के रोगों से मुक्त हो सकता है।

१३-यह महाविद्याओं में प्रमुख है, इसकी साधना करने से अन्य सभी महाविद्याएं स्वत: सिद्ध हो जाती है।

सूर्य ग्रहण

यह सौभाग्य है कि इस वर्ष सूर्य ग्रहण का योग बन रहा है और सूर्य ग्रहण के संबंध में शास्त्रोक्त कथन है कि जो साधना सौ बार करने पर भी सिद्ध नहीं होती वह सूर्य ग्रहण के अवसर पर विधि-विधान सहित सम्पन्न कर दिया जाय तो निश्चित रूप से फल प्राप्त होता है। इसीलिए तीव्र साधनाओं के लिए सूर्य ग्रहण का तथा प्रेम, सौन्दर्य की साधनाओं के लिए चन्द्र ग्रहण का प्रत्येक साधक को प्रतीक्षा रहती है, जब ये दोनों अवसर आते हैं तो साधना के लिए किसी अन्य मुहूर्त को देखना व्यर्थ है।

सूर्य अग्नि युक्त तेजस्वी ग्रह है, और इस सृष्टि का संचालन कर्ता है, जिसके चारों ओर पृथ्वी चक्कर लगाती है, सूर्य की शक्ति से ही सभी प्राणियों को शक्ति प्राप्त होती है, यह वैज्ञानिक मत है और आज से हजारों वर्ष पहिले हमारे ऋषि मुनियों ने इस मत को जानते हुए सूर्य की उपासना पर विशेष जोर दिया तथा पंचदेव उपासना में शिव गणेश, विष्णु, शक्ति के साथ सूर्य उपासना को प्रधानता दी गयी है।

इस वर्ष सूर्य ग्रहण ३० जून ९२ मंगलवार **आर्द्रा नक्षत्र** से युक्त **वृद्धि योग** संयुक्त ग्रहण योग है, इस विशेष दिवस को मिथुन का चन्द्रमा और मिथुन का सूर्य है, इन दोनों का संयोग एक तीव्र शक्ति संयोग बना है, भारत में यह सूर्य ग्रहण नहीं दिखाई देगा, लेकिन इसका प्रभाव उतना ही रहेगा जैसा कि साक्षात् ग्रहण दिखाई देने पर रहता है।

यह सूर्य ग्रहण प्रात: १० बज कर ४९ मिनट से प्रारम्भ होगा तथा १ बज कर ३ मिनट पर समाप्त होगा, परन्तु सूर्यकालिक ग्रहण साधना नियमों के अनुसार सूर्य ग्रहण उदय होने से १२ घण्टे पूर्व तथा ग्रहण समाप्ति तक साधना योग माना गया है, अत: साधक २९ जुन की रात्रि के १० बजकर ४९ मिनट से ३० जून के १ बजकर ३ मिनट तक साधना सम्पन्न कर सकता है।

सूर्य ग्रहण के समय सबसे प्रधान साधना तो दिगम्बरी दक्षिण काली की ही साधना है, और आगे पूरे वर्ष में इतना महत्वपूर्ण योग नहीं बन रहा है, अत: साधक को ऐसा महत्वपूर्ण अवसर गंवाना नहीं चाहिए।

Scanned by CamScanner

दिगम्बरी दक्षिण काली

वशिष्ठ, विश्वामित्र, ब्रह्मा सहित शंकराचार्य तथा अन्य महत्वपूर्ण योगियों ने, तान्त्रिकों ने दक्षिण काली साधना के सम्बन्ध में जो वर्णन किया है, उस वर्णन से यह स्पष्ट है कि यह साधना कल्याणकारी और मनोवांछित पूर्णता सिद्धि साधना है, शक्ति तथा लक्ष्मी के साथ-साथ तेजस की साधना मूल रूप से दिगम्बरी दक्षिण काली साधना है।

इस साधना को संपन्न करने में न तो आयु का बन्धन है, और न ही गृहस्थ अर्थात् विवाहित, अविवाहित, स्त्री अथवा पुरुष का बन्धन है।

साधना विधान

शास्त्रोक्त नियमों के अनुसार साधक को २६ जून की रात्रि को ही ११ बजे के पश्चात् यह साधना प्रारम्भ कर देनी चाहिए, जिससे सभी अनुष्ठान पूरा हो सके।

साधना में साधक लाल वस्त्र धारण करें, नीचे लाल धोती पहिनी हुई हो, और लाल धोती ही ऊपर कन्धों पर डाली हुई हो, इसी प्रकार साधिकाएं भी लाल साड़ी और लाल कंचुकी ही धारण करें।

इस साधना में पूर्ण सिद्धि प्राप्ति के लिए पांच दुर्लभ वस्तुओं की आवश्यकता होती है, जिसके माध्यम से यह साधना पूर्ण सिद्ध की जा सकती है।

सूर्यग्रहण की रात्रि को साधक-साधिका लाल आसन पर दक्षिण की ओर मुंह कर बैठ जांय और सामने तेल का दीपक लगा लें, फिर सामने ही लाल वस्त्र बिछाकर दीपक के आगे ही भृंगाटकी अर्थात् **सियारसिंगी** रख दें और उस पर सिन्दूर का तिलक लगाएं, फिर अपने ललाट पर भी सिन्दूर का तिलक लगाएं, इसके बाद सामने ही **दिगम्बरी दक्षिण काली यन्त्र** और **चित्र** को स्थापित कर दें, और उसके सामने **मधुरूपेण एकमुखी रुद्राक्ष** एवं **काल यन्त्र** को स्थापित कर इन दोनों पर भी सिन्दूर का तिलक करें।

इसके बाद इन सभी तत्वों का सामूहिक पंच पूजन करें, पंच पूजन में जल, केसर, अक्षत, पुष्प एवं प्रसाद समर्पित करें, पुष्प यथा संभव लाल रंग के ही उपयोग में लाने चाहिए और प्रसाद दूध का बना हुआ किसी भी प्रकार का पदार्थ भोग में रखा जा सकता है।

इस पूरे साधना काल में केवल इक्यावन माला मन्त्र जप करने का विधान है, साधक चाहें तो इससे ज्यादा भी मन्त्र जप संपन्न कर सकते हैं।

दिगम्बरी दक्षिण काली मन्त्र

।। ॐ क्रीं क्रीं क्लीं क्लीं दिगम्बरी दक्षिण कालिके क्लीं क्लीं क्रीं क्रीं फट् ।।

यह मन्त्र अपने आपमें अत्यन्त गोपनीय और दुर्लभ है, साधकों को चाहिए कि वे मन्त्र को गलत लोगों के हाथ में न दें, और कुकर्मी, आलोचक और निन्दक लोगों को भी इस साधना का रहस्य नहीं समझाएं।

इस प्रकार सूर्य ग्रहण की यह साधना साधक के लिए शीघ्र फलदायी सिद्ध होती है, दरिद्रता निवारण, विकार निवारण, पाप दोष निवारण, शक्ति प्राप्ति, शत्रु भय शान्ति हेतु सूर्य ग्रहण साधना सर्वश्रेष्ठ है।

एक बात विशेष रूप से ध्यान रखनी है, कि ग्रहण काल के दौरान सूर्य की ओर नहीं देखना है, ऐसा करने से नेत्रों को हानि पहुंच सकती है, और साथ ही साधनात्मक दोष भी बनता है।

साधना की पूर्णता के पश्चात् चित्र, रुद्राक्ष और काल यन्त्र को पूजा स्थान में ही रख दें, सियारसिंगी साधक को काले कपड़े में बांध कर अपने घर में रुपये पैसे के स्थान पर अर्थात् तिजोरी की जगह रखना चाहिए। ऐसा करने से धन की अभिवृद्धि होती है।

Scanned by CamScanner

तीन लक्ष्मी यन्त्र

स्वयं निर्माण कर नित्य पूजन करें

जहां यन्त्र का पूजन होता है, और उसके साथ मन्त्र का उच्चारण होता है, तो सफलता निश्चित ही रहती है, केवल अपनी पूर्ण श्रद्धा से यदि कोई नित्य प्रति यन्त्र पूजन करे तो उसे चमत्कारिक अनुभव अवश्य ही होते हैं।

आगे लक्ष्मी साधना से सम्बन्धित तीन यन्त्र दिये जा रहे हैं, इन्हें भोज पत्र पर लिख कर तथा यन्त्र के नीचे ही उसका मन्त्र लिख कर नित्य प्रति अगरबत्ती करने से फल प्राप्ति होती है, साधक यन्त्र को फ्रेम में मढ़ा कर अपने घर में, पूजा स्थान में, कार्यालय में, अपने टेबल की दराज में अथवा टेबल के कांच के नीचे या अपनी दुकान में टांग कर नित्य प्रति पूजा करें तो परिणाम शीघ्र प्राप्त होता है।

अष्टगन्ध से भोज पत्र पर अनार की कलम से लिख कर पहले इसकी पूजा कर लें और फिर जहां भी इसे स्थापित करना हो वहां रखें।

१-श्री महालक्ष्मी सर्वतोभद्र यन्त्र

प्रथम पूजा में गुग्गल का धूप देते हुए १०८ बार मन्त्र जप करना चाहिए, यह यन्त्र जहां भी स्थापित होता है वहां सदैव प्रगति, सुरक्षा एवं समृद्धि रहती है, कुदृष्टि, अभिशाप आदि का दुष्प्रभाव नष्ट होता है।

मन्त्र

॥ ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ महालक्ष्म्यै नमः ॥

२२	३	९	१५	१६
१४	२०	२१	२	८
१	७	१३	१९	२५
१८	२४	५	६	१२
१०	११	११	२३	४

Scanned by CamScanner

२-व्यापार वर्धक लक्ष्मी यन्त्र

प्रथम बार पूजन के समय इस यन्त्र की रात्रि में रचना कर धूप, दीप, कुंकुम केसर से पूजा कर फिर निम्न मन्त्र की ग्यारह माला जप करें, पूरे जप के दौरान घी का अखण्ड दीपक जलते रहना चाहिए। इसके पश्चात् इस यन्त्र को अपनी दुकान अथवा कार्यालय में स्थापित कर दें। इससे निश्चय ही व्यापार में वृद्धि होगी, रुके हुए कार्य सिद्ध होंगे।

मन्त्र

॥ ॐ महालक्ष्म्यै नमः ॥

१६	९	४	५
३	६	१५	१०
१३	१२	१	८
२	७	१४	११

३-श्री महालक्ष्मी सम्पुट यन्त्र

श्री महालक्ष्मी सम्पुट यन्त्र तो चमत्कारिक प्रभाव देने वाला ही है, प्रथम पूजा के दिन साधक लाल वस्त्र धारण कर गणेश, लक्ष्मी तथा सरस्वती का ध्यान कर लाल चन्दन, लाल पुष्प, अक्षत, धूप, दीप, नैवेद्य आदि अर्पित कर तीनों महाशक्तियों के मन्त्र की एक-एक माला का जप करना चाहिए, तीनों साधनाओं के लिए रुद्राक्ष माला श्रेष्ठ मानी गयी है।

मन्त्र

गणेश मन्त्र— ॥ ॐ गं गणपतये नमः ॥

लक्ष्मी मन्त्र— ॥ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं ॥

सरस्वती मन्त्र— ॥ ॐ ऐं सरस्वत्यै नमः ॥

<table>
<tr><td>महालक्ष्म्यै</td><td colspan="2"></td><td>नमः</td></tr>
<tr><td>९</td><td colspan="2">श्रीं</td><td>६</td></tr>
<tr><td rowspan="2">ॐ</td><td>१</td><td>४</td><td rowspan="2">ह्रीं</td></tr>
<tr><td>७</td><td>८</td></tr>
<tr><td>३</td><td colspan="2">क्लीं</td><td>२</td></tr>
</table>

महालक्ष्मी सम्पुट यन्त्र से गणेश कृपा से सुरक्षा, विघ्न नाश प्राप्त होता है, लक्ष्मी कृपा से श्री एव समृद्धि तथा सरस्वती कृपा से शान्ति प्राप्त होती है, इस यन्त्र को अपने घर में प्रमुख स्थान पर अवश्य ही रखना चाहिए तथा नित्य प्रति अगरबत्ती कर तीनों शक्तियों के मन्त्र का उच्चारण अवश्य ही करना चाहिए।

卐

Scanned by CamScanner

श्रीकृष्ण भी जिसकी उपासना करते हैं
जो श्रीकृष्ण की शक्ति है
श्रीराधा महाविद्या साधना

श्री कृष्ण तो छः ऐश्वर्यों से पूर्ण सर्वेश्वर जिनका स्वरूप नारायण है, जो अखिल ब्रह्माण्डों के अधीश्वर हैं, वे कृष्ण भी श्रीराधा की साधना करते हैं और उनकी अधीष्ठात्री देवी है ।

श्रीराधा महाविद्या के सम्बन्ध में तो दो प्रामाणिक ग्रन्थ **श्री राधोपनिषद** एवं **नारद पंचरात्र** हैं, जिनमें इस महाशक्ति के सम्बन्ध में पूर्ण विवरण है ।

जब तक मूल शक्ति की साधना नहीं की जाती तब तक साधना में सिद्धि कैसे संभव है ? यह शक्ति ही किसी महापुरुष, देव अथवा साक्षात् भगवान का आधार है, अतः साधक को इस मूल रहस्य को समझते हुए मूल शक्ति की आराधना की ओर विशेष ध्यान देना चाहिए। लेकिन जब तक श्री कृष्ण की शक्ति श्रीराधा महाविद्या की उपासना नहीं की जाती तब तक साधक को कृष्ण भक्ति तथा कृष्ण उपासना में सफलता नहीं मिल सकती। इसी लिए **देवी भागवत** में लिखा है कि ब्रह्मा आदि सम्पूर्ण देवता नित्य प्रसन्न हो भगवती राधा का ध्यान करते हैं क्योंकि यदि श्रीराधा की पूजा न की जाय तो पुरुष भगवान श्रीकृष्ण की पूजा का अनाधिकारी समझा जाता है ।

राद्धनोति सकलान् कामांस्तस्मात् राधेति कीर्तिता ।

अर्थात् सम्पूर्ण कामनाओं को सिद्ध करने के कारण इस देवी का नाम "श्रीराधा" हुआ है ।

नारद पंचरात्र में श्री नारद द्वारा भगवान शंकर को साधनाओं के संबध में पूछे गये विशेष प्रश्न और उनके द्वारा दिये गये समाधान का विवरण है । उसमें

श्रीराधा के संबंध में लिखा है कि श्रीराधा प्राण की अधिष्ठात्री देवी है ।

श्रीराधा विशेष पूज्य और उपास्य इसलिए है कि कृष्ण को जगत् पिता और श्रीराधा को जगत् माता माना गया है और माता तो पिता से सौगुना अधिक वन्द्य होती है । जो कार्य बहुत काल तक श्रीकृष्ण की आराधना के बाद सिद्ध नहीं होता है वह श्रीराधा की उपासना से बहुत शीघ्र सम्पन्न हो जाता है ।

श्रीकृष्ण भी जिसकी उपासना करते हैं वह षडक्षरी महाविद्या तो कामधेनु स्वरूपिणी है । इसकी उपासना से बल, पुत्र, लक्ष्मी, भक्ति और ईशित्व की प्राप्ति होती है । श्रीलक्ष्मी तो श्रीराधा की अंश स्वरूपा है, अतः श्रीराधा की उपासना से लक्ष्मी की उपासना अपने आप हो जाती है तथा आह्लादिनी, सन्धिनी, ज्ञान, इच्छा और क्रिया श्रीकृष्ण की शक्तियां हैं और इसमें प्रमुख आह्लादिनी शक्ति है और यही श्रीराधा स्वरूप है ।

श्रीराधा शक्ति स्वरूप

राधा रासेश्वरी रम्भा कृष्णमन्त्राधिदेवता ।
सर्वथा सर्ववन्द्या च वृन्दावनविहारिणी ।।
वृन्दाराध्या रमाशेषगोपीमण्डल पूजिता ।
सत्यसत्यपरा सत्यभामा श्रीकृष्णवल्लभा ।।
वृषभानुसुता गोपी मूलप्रकृतिरीश्वरी ।
गन्धर्वा राधिका रम्भा रुक्मिणी परमेश्वरी ।।
परात्परतरा पूर्णा पूर्णचन्द्रविमानना ।
भुक्तिमुक्तिप्रदा नित्यं भवव्याधिविनाशिनी ।।

१-राधा, २-रासेश्वरी, ३-रम्भा, ४-कृष्णमन्त्राधिदेवता, ५-सर्वाभा, ६-सर्ववन्द्या, ७-वृन्दावनविहारिणी, ८-वृन्दाराध्या, ९-रमा, १०-अशे ,गोपीमण्डलपूजिता, ११-सात्या, १२-सात्यपरा, १३-सत्यभामा, १४-श्रीकृष्ण-वल्लभा, १५-वृषभानुसुता, १६-गोपी, १७-मूलप्रकृति, १८-ईश्वरी, १९-गान्धर्वा, २०-राधिका, २१-आरम्या, २२-रुक्मिणी, २३-परमेश्वरी, २४-परात्परतरा, २५-पूर्णा, २६-पूर्णाचन्द्र निमानना, २७-भुक्तिमुक्तिप्रदा तथा २८-व्याधि-विनाशिनी ।

ये २८ नाम श्रीराधा के २८ स्वरूप हैं, प्रत्येक स्वरूप विशेष शक्ति युक्त है ।

कामना पूर्ति साधना

- जिस शक्ति ने योगेश्वर श्रीकृष्ण को भी अपने आधीन कर लिया हो, उस शक्ति की साधना करने से साधक को वशीकरण साधना में सिद्धि अवश्य प्राप्त हो जाती है ।
- श्रीराधा प्रेम और आह्लाद की शक्ति है, जीवन में पूर्ण प्रसन्नता, प्रेम, अनुराग की पूर्णता श्रीराधा साधना से ही सम्भव है ।
- श्रीराधा सौन्दर्य शक्ति की प्रतीक है, जो स्त्रियां श्रीराधा की साधना करती हैं, उनके सौन्दर्य में अतीव वृद्धि होती है ।
- श्रीराधा की उपासना से दाम्पत्य सुख की पूर्णतः प्राप्ति होती है ।
- श्रीराधा उपासना से साधक को संतानहीन या पुत्र प्राप्ति के इच्छुक दम्पत्ति को पुत्र की प्राप्ति होती है ।
- श्री लक्ष्मी तो राधा की एक शक्ति है, अतः इनकी उपासना से साधक को लक्ष्मी का पूर्ण फल प्राप्त होता है ।
- श्रीराधा शक्ति पूर्णतम जागृति का आधार है, और यह शक्ति स्वरूप में मूलाधार चक्र से जागृत होकर कुण्डलिनी महा शक्ति सहस्रार चक्र में स्थित हो जाती है ।

Scanned by CamScanner

- श्रीराधा उपासना से कृष्ण की उपासना के सारे फल अपने आप प्राप्त होते हैं।

श्रीराधा उपासना

इस महाशक्ति की उपासना स्त्री अथवा पुरुष विवाहित अथवा अविवाहित, कोई भी साधक सम्पन्न कर सकता है क्योंकि इस साधना हेतु केवल दास्य भाव और भक्ति की आवश्यकता है इसकी साधना से तो जीवन में प्रेम और आनन्द की वर्षा होती है।

यह साधना किसी भी बुधवार को प्रारम्भ की जा सकती है, इस साधना हेतु विशेष सामग्री स्वरूप में **श्रीराधा महाविद्या महायन्त्र** जो 'क्लीं' कृष्ण मन्त्रों से आपूरित हो, इसके अलावा **१५ राधा शक्ति चक्र, राधा वशीकरण माला** आवश्यक है।

इसके अलावा पूजन में सफेद पुष्प, चन्दन तथा दुर्वा की व्यवस्था अवश्य कर लेनी चाहिए। साधक तथा साधिका सुन्दर वस्त्र धारण कर यह साधना करें।

यह साधना प्रातःकाल स्नान कर शुद्ध वस्त्र धारण कर अपने सामने श्रीकृष्ण और राधा का संयुक्त चित्र स्थापित कर उसके आगे एक थाली के मध्य में सुगन्धित पुष्प रख कर उस पर **श्रीराधा महाविद्या यन्त्र** स्थापित करें इसके बाद हाथ में जल लेकर संकल्प करें कि मैं (अपना नाम) जीवन की अमुक इच्छाओं की पूर्ति हेतु यह संकल्प लेते हुए यह अनुष्ठान संपन्न कर रहा हूं, कि श्रीराधा षडक्षरी शक्ति मुझ पर प्रसन्न हो, मेरा कार्य पूर्ण हो।

अब हाथ में पुष्प लेकर निम्न स्तोत्र का तीन बार पाठ करते हुए यन्त्र तथा चित्र के मध्य में पुष्प अर्पित करें, चित्र पर चन्दन का टीका लगाएं तथा यन्त्र पर भी चन्दन, दुर्वा अर्पित करें इसके साथ ही सुगन्धित द्रव्य, नैवेद्य अर्पित करें और सुगन्धित अगरबत्ती लगाएं।

प्रार्थना

नारायणि महामाये विष्णुमाये सनातनि।
प्राणाधिदेवि कृष्णस्य मामुद्धर भवार्णवात् ॥
संसारसागरे घोरे भीतं मां शरणागतम्।
प्रपन्नं पतितं मातर्मामुद्धर हरिप्रिये ॥

हे नारायणि! विष्णुमाये महामये! **सनातनि श्रीकृष्ण प्राणप्रिया, संसार सागर की पीड़ाओं से मेरा उद्धार कीजिए, इस संसार सागर के भय से मुझे मुक्ति प्रदान करें। मेरे जीवन में रस, आनन्द, प्रेम और सुख की वर्षा करें।**

पंचादस श्रीराधा दास्य पूजन

राधा की शक्तियां उसके दास्य रूप में निवास करती हैं, और उनकी पूजा करना आवश्यक है। इनमें प्रेम, सौन्दर्य, वशीकरण, लक्ष्मी, शक्ति, सारस्वती सभी गुणों से युक्त अलग-अलग शक्तियां हैं, इस हेतु जो **१५ श्रीराधा शक्ति चक्र** हैं उन्हें चन्दन में डुबो कर क्रमशः इन शक्तियों का ध्यान करते हुए **श्रीराधा महायन्त्र** के आगे स्थापित करें, तथा एक श्रीराधा शक्ति चक्र की स्थापना के बाद एक अगरबत्ती जलाएं, ये १५ शक्तियां हैं—

१-मालती, २-माधवी, ३-रत्नमालावती, ४-चम्पावती, ५-मधुमती, ६-सुशीला, ७-वनमालिका, ८-चन्द्रवली, ९-चन्द्रमुखी, १०-पद्मा, ११-पद्ममुखी, १२-कमला, १३-कालिका, १४-कृष्णप्रिया, १५-विद्याधरी।

इस प्रकार इनका प्रेम सहित पूजन कर **श्रीराधा वशीकरण माला** अपने नेत्रों के तथा मस्तक के लगा कर राधा षडक्षरी महविद्या मन्त्र की पांच माला का जप उसी स्थान पर बैठ कर सम्पन्न करें।

Scanned by CamScanner

षडक्षरी महाविद्या मन्त्र

।। रां ॐ श्रां यं स्वाहा ।।

अब जप अनुष्ठान पूर्ण हो जाने के पश्चात् श्रीराधा स्तोत्र का पाठ करना चाहिए।

श्रीराधा स्तोत्र

राधा रासेश्वरी रम्भा रामा च परमात्मनः।
रासोद्भवा कृष्णकान्ता कृष्णवक्षःस्थलस्थिता ।।
कृष्णप्राणाधिदेवी च महाविष्णोः प्रर्हपणो ।
सर्वथा विष्णुमाया च सत्या नित्या सनातनी ।।
ब्रह्मस्वरूपा परमा निर्लिप्त निर्गुणा परा।
वृन्दा वृन्दावने सा च विरजातटवासिनी ।।
गोलोकवासिनी गोपी गोपीशा गोपमातृका ।
सानन्दा परमानन्दा नन्दनन्दनकामिनी ।।
वृषभानुसुता शान्ता कान्ता पूर्णतमा च सा ।
काम्या कलावती कन्या तीर्थपूता सती शुभा ।।

जो साधक श्रीराधा के इन ३७ नामों से युक्त स्तोत्र का नित्य प्रति पाठ करता है वह अचल लक्ष्मी सभी सुखों सहित प्राप्त करता है।

स्तोत्र पाठ के पश्चात् राधा कवच अर्थात् परमानन्द संदोह कवच का पाठ अवश्य ही करना चाहिए, जिसके पठन से परमानन्द अर्थात् परम आनन्द की प्राप्ति होती है, **नारद पंचरात्र** में लिखा है कि श्रीकृष्ण ने तो इस कवच को अपने कण्ठ में धारण कर लिया और है, और इसीलिए श्रीकृष्ण को राधा की सभी शक्तियां निर्विघ्न रूप से प्राप्त हैं।

परमानन्द संदोह कवच

सर्वाद्या मे शिरः पातु केशं केशकामिनी ।
भालं भगवती लोला लोचनयुग्मकम् ।।
नासां नारायणी पातु सानन्दा चाधरोष्ठकम् ।
जिह्वां पातु जगन्माता दन्तं दामोदरप्रिया ।।
कपोलयुग्मं कृष्णेशा कण्ठं कृष्णप्रिया तथा ।
कर्णयुग्मं सदा पातु कालिन्दी कूलवासिनी ।।
वसुन्धरेशा वक्षो मे परमा सा पयोधरम् ।
पदमनाभप्रिया नाभि जठरं जाह्नवीश्वरी ।।
नित्या नितम्बयुग्मं मे कंकालं कृष्ण सेविता ।
परात्परा पातु पृष्ठं सुश्रोणी श्रोणिकायुगम् ।।
परमाया पादयुग्मं नखरांश्च नरोत्तमा ।
सर्वांगं मे सदा पातु सर्वेशा सर्वमंगला ।।
पातु रासेश्वरी राधा स्वप्ने जागरणे च माम् ।
जले स्थले चान्तरिक्षे सेविता जलशायिनी ।।
प्राच्यां मे सततं पातु परिपूर्णतमप्रिया ।
वह्नीश्वरी वह्निकोणे दक्षिणे दुःखनाशिनी ।।
नैर्ऋत्ये सततं पातु नरकार्णवतारिणी ।
वारुणे वनमालीशा वायव्यां वायुपूजिता ।।
कौवेरे मां सदा पातु कूर्मेश परिसेविता ।
ईशान्यामीश्वरी पातु शतभृंग निवासिनी ।।
वने वनचरी पातु वृन्दावनविनोदिनी ।
सर्वत्र सततं पातु सर्वेशा विरजेश्वरी ।।
प्रथमे पूजिता या च कृष्णेन परमात्मना ।
षडक्षर्या विजया च सा मां रक्षतु कातरम् ।।

अब श्रीकृष्ण और राधा की आरती सम्पन्न कर साधक प्रणाम कर प्रसाद ग्रहण करें— त्रैलोक्यपावनीं राधां सन्तो सेवन्त नित्यशः **श्रीराधा की साधना से तो इस लोक की तो बात ही क्या तीनों लोक पावन हो जाते हैं, वास्तव में श्रीकृष्ण आराध्य शक्ति षडक्षरी महाविद्या श्रीराधा की साधना, उपासना तो परम सिद्धिप्रदा एवं परमानन्द परम सुखदायिनी है। साधक को श्रीराधा की कृपा का फल नित्य प्रति प्राप्त होता ही रहता है। प्रेम सौन्दर्य की इससे श्रेष्ठ कोई उपासना नहीं है।** ●

Scanned by CamScanner

श्री वांछा कल्प लता साधना

साधनाओं के अथाह सागर में साधक को संकल्प अर्थात् विचार और क्रिया (विधि), दोनों पक्षों पर समान रूप से ध्यान देते हुए साधना सम्पन्न करनी चाहिए, श्री वांछा कल्पलता साधना अद्भुत वेदोक्त, तांत्रोक्त साधना है, इस सम्बन्ध में पूर्ण विवरण प्रथम बार—

आज जब मैं "श्री वांछा कल्प लता" के सम्बन्ध में लिख रहा हूं तो मुझे एक अपार प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है, मन्त्रों के गहन अध्ययन के पश्चात् मेरा यह निष्कर्ष है कि 'श्री वांछा कल्प लता' के समान सुन्दर कोई मन्त्र नहीं है, इस उपहार को जब मेरा प्रत्येक साधक, शिष्य सम्पन्न करेगा और उसके फल को भोगेगा, तभी मुझे पूर्ण प्रसन्नता होगी और मेरा उपहार सफल होगा।

'श्री वांछा कल्पलता' शब्द ही अपने आपमें अद्भुत है, इसकी सन्धि विच्छेद करने पर दो अलग-अलग शब्द बनते हैं, प्रथम है—'वांछा' जिसका तात्पर्य है इच्छा, कामना, अभिलाषा, और 'कल्पलता' का तात्पर्य है— कल्प वृक्ष, जो साधक को उसकी कामना के अनुरूप तत्काल फल प्रदान करता है अतः 'वांछा कल्प लता मन्त्र' का तात्पर्य है, जो मन्त्र साधक को उसकी इच्छानुसार, कामनानुसार फल प्रदान करे।

वेदों में वांछा कल्प लता

अथर्ववेद के सौभाग्य काण्ड में 'श्री वांछा कल्प लता' प्रयोग का विस्तार से वर्णन प्राप्त होता है, लेकिन इसके साथ ही ऋग्वेद में भी कुछ मन्त्र लिखे हुए हैं, ऋग्वेद में इसके द्रष्टा वैवस्वत मनु कहे गये हैं, इसके अतिरिक्त विभिन्न ग्रन्थों में इसके प्रयोग की जानकारी मिलती है, और इसके सम्बन्ध में अलग-अलग मन्त्रों की रचना आनन्द भैरव, अंगिरा ऋषि, कश्यप ऋषि, वशिष्ठ, विश्वामित्र, गणक ऋषि द्वारा की गई है, इससे ही यह स्पष्ट हो जाता है, कि इन सभी महान ऋषियों ने इस प्रयोग को स्वयं सिद्ध किया, इसमें सिद्धि प्राप्त की

Scanned by CamScanner

और अपने प्रयोग विधान को भविष्य की पीढ़ियों के लिए छोड़ गये।

प्रयोग पारिजात नाम ग्रन्थ में इस सम्बन्ध में एक विशेष बात लिखी है जो कि अब तक किसी भी मन्त्र के सम्बन्ध में नहीं लिखी गई है—

वांछा कल्पलतायास्तु न होमो न च तर्पणम।
स्मरणादेव सिद्धि: स्यात् यदिच्छति हि तद्भवेत् ।।
एकवृत्या वशे लक्ष्मी: पंचावृत्या वशं जगत्।
दशावृत्या तथा विष्णु-रुद्र-शक्तिर्भवेदिह ।।
सार्वभौम: शतावृत्या भवत्येव न संशय:।

अर्थात्, "श्री वांछा कल्प लता मन्त्र के प्रयोग में होम तर्पण करने की आवश्यकता नहीं होती, इसके साधक की जो भी इच्छा होती है, वह इस मन्त्र का स्मरण करने मात्र से ही पूरी हो जाती है। इस मन्त्र की एक आवृत्ति से लक्ष्मी मिलती है और पांच आवृत्तियों से संसार वशीभूत होता है, दस आवृत्तियों से विष्णु और रुद्र की शक्ति प्राप्त होती है, एक सौ आवृत्ति करने से साधक सारे विश्व में माननीय होता है, इसमें संदेह नहीं।"

इसका विधान अत्यन्त सरल है, अलग-अलग ग्रन्थों में थोड़ा बहुत भेद अवश्य प्राप्त होता है। पत्रिका पाठकों हेतु जो विशेष विधान स्पष्ट कर रहा हूं, इसे मैंने स्वयं बार-बार सम्पन्न किया है और प्रत्येक बार पूर्ण सफलता प्राप्त की है।

'श्री वांछा कल्प लता प्रयोग' मूल रूप से महा त्रिपुर सुन्दरी की साधना है, जो कि आदि शक्ति है, इसके साथ ही महागणपति और रुद्र की भी साधना सम्पन्न की जाती है। इस विशिष्ट मन्त्र में क्षिप्र भैरव, क्षिप्र भैरवी, आनन्द भैरव, तथा आनन्द भैरवी का ध्यान किया जाता है, इतनी महान साधना एक साथ किसी एक विधान को सम्पन्न करने से प्राप्त होना असंभव है।

साधना सामग्री

इस साधना हेतु सामान्य पूजन सामग्री अबीर-गुलाल, मोली, कुंकुम, चन्दन, सिन्दूर, पुष्प, प्रसाद, फल, नैवेद्य के अतिरिक्त—१-श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी चित्र, २-महागणपति यन्त्र, ३-श्री वांछा कल्प लता महायन्त्र, ४-क्षिप्र भैरव चक्र, ५-क्षिप्र भैरवी चक्र, ६-आनन्द भैरव चक्र, ७-आनन्द भैरवी चक्र, तथा ८-चार अमृत रुद्राक्ष आवश्यक हैं।

इस सम्पूर्ण अनुष्ठान में मन्त्र जप में केवल स्फटिक मुक्ता माला का ही प्रयोग किया जाना चाहिए।

एतज्जपस्य कालस्तु रात्रौ यामत्रयावधि।
रात्रे चतुर्थ-प्रहरात् तथा सूर्योदयावधि ।।

एक विशेष बात का ध्यान रखें कि वांछा कल्प लता साधना दिन में सम्पन्न नहीं की जाती है, इसे केवल रात्रि के अन्तिम प्रहर से प्रारम्भ कर सूर्योदय तक ही सम्पन्न करना है।

जैसा कि मैंने ऊपर लिखा कि यह प्रयोग काल रात्रि अर्थात् अमावस्या से प्रारम्भ कर इस पूरे अनुष्ठान को अमावस्या तक अवश्य सम्पन्न करें। एक महीने तक प्रति दिन जो मन्त्र संख्या निश्चित करें, वह पूर्ण रूप से निभाते हुए मन्त्र जप अवश्य करें।

अमावस्या की रात्रि के चौथे प्रहर उठ कर स्नान कर शुद्ध सफेद वस्त्र धारण कर अपने पूजा स्थान को पुष्पों, पत्तों और मालाओं से सजा दें, अगरबत्ती, इत्र इत्यादि से पवित्र सुगन्धित वातावरण हो।

अब अपने सामने एक बाजोट पर सभी सामग्रियों का एक-एक कर पूजन करें, सर्वप्रथम गणपति का पूजन कर महागणपति यन्त्र स्थापित करें, तत्पश्चात् क्षिप्र भैरव चक्र तथा क्षिप्र भैरवी चक्र का पूजन कर अपने बांई ओर स्थापित कर सिन्दूर चढ़ाएं, दाहिनी ओर आनन्द भैरव चक्र तथा आनन्द भैरवी चक्र स्थापित

Scanned by CamScanner

करें, सामने एक ताम्र पात्र में पुष्प का आसन दे कर वांछा कल्प लता महायन्त्र स्थापित करें, शिव मन्त्र का जप करते हुए चारों दिशाओं में सामने बाजोट पर ही चार अमृत रुद्राक्ष स्थापित करें, पूजन में प्रयुक्त होने वाली सभी सामग्रियों को प्रयोग में लाएं।

अब विनियोग तथा करन्यास, अंगन्यास, ध्यान और पंचोपचार मानस पूजन सम्पन्न करें।

विनियोग

ॐ अस्य श्री वांछाकल्पलता मन्त्रस्य श्रीआनन्द भैरवागस्त्यांगिरस कश्यप वशिष्ठ विश्वामित्र संवाद ऋषयः, देवी गायत्री नृचृद् गायत्री त्रिपदा गायत्र्यनुष्टुप् नानाविधानि छन्दांसि, श्रीमहागण-पति-ललिता-सम्वादात्यमृत-रुद्रो देवता, श्रीं बीजं, ह्रीं शक्तिः, क्लीं कीलकं, श्रीपरा-विद्या प्रसाद सिद्धयर्थं वांछितार्थ-प्राप्तये च जपे विनियोगः।

न्यास

ॐ ऐं क्लीं सौं ह्रीं सर्व ज्ञतायै ह्रांगां ब्रह्मात्मने

ॐ-५ नित्य तृप्तये ह्रींगीं विश्वात्मने

ॐ-५ अनादि बोधितायै ह्रूंगूं रुद्रात्मने

ॐ-५ स्वतन्त्रतायै ह्रैंगैं परमेश्वरात्मने

ॐ-५ नित्यमलुप्तायै ह्रौंगौं सदाशिवात्मने

ॐ-५ अनन्तायै ह्रः गः सर्वात्मने

करन्यास

अंगुष्ठाभ्यां नमः
तर्जनीभ्यां स्वाहा
मध्यमाभ्यां वषट्
अनामिकाभ्यां हुं
कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्
करतल-करपृष्ठाभ्यां फट्

अंगन्यास

हृदयाय नमः
शिरसे स्वाहा
शिखायै वषट्
कवचाय हुं
नेत्र त्रयाय वौषट्
अस्त्राय फट्

ध्यान मन्त्र

धवल-नलिने-राजच्चन्द्र-मध्ये निषण्णम्
स्व-कर-कलित-पाशं साभयं सांकुशं च।
अमृत वपुषमिन्दु-क्षीर-वर्ण त्रिनेत्रम्,
प्रणमित-सुर-वृन्दं दिक्षु सम्वादयन्तम्॥
स्फुटित नलिन-संस्थं मौलि बद्धेन्दु-रेखा-
गलदमृतभरसार्द्रं चन्द्र बह्यर्क नेत्रम्।
स्व-कर-कलित-मुद्रा-वेद-पाशाक्ष-मालं,
स्फटिक-रक्त-मुक्ता-गौरमीशं नमामि॥

पंचोपचार मानस पूजन

१-श्रीमन्महा-त्रिपुरसुन्दर महागणपति सुंवादाम्यमृत रुद्रेभ्यः लं पृथिव्यात्मकं गन्धं समर्पयामि नमः
अंगुष्ठ कनिष्ठिकाभ्यां

२-श्रीमन्महा त्रिपुरसुन्दरी महागणपति सम्वादाम्यमृत रुद्रेभ्यः हं आकाशात्मकं पुष्पं समर्पयामि नमः
तर्जन्यंगुष्ठाभ्यां

३-श्रीमन्महा त्रिपुरसुन्दर महागणपति सम्वादाम्यमृत रुद्रेभ्यः यं वाय्वात्मकं धूप समर्पयामि नमः
अंगुष्ठ तर्जनीभ्यां

४-श्रीमन्महा त्रिपुरसुन्दर महागणपति सम्वादाम्यमृत रुद्रेभ्यः वं वह्न्यात्मक दीपं समर्पयामि नमः
अंगुष्ठ मध्यमाभ्यां

५-श्रीमन्महा त्रिपुरसुन्दर महागणपति सम्वादाम्यमृत रुद्रेभ्यः रं अमृतात्मकं नवेद्य समर्पयामि नमः अंगुष्ठानामिकाभ्यां

इसमें जिस प्रकार पंचोपचार मानस पूजन में गन्ध, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य समर्पण का जो विवरण आया है, उसी क्रम में बोलते हुए समर्पण करें। 'श्री वांछा कल्प लता साधना' में पूरे मन्त्र जप के दौरान घी का दीपक निरन्तर जलते रहना चाहिए। इस अनुष्ठान के चार भाग हैं और यदि आप ध्यान से इनका अध्ययन करेंगे, तो यह स्पष्ट होगा कि ये मन्त्र कितने महान मन्त्र । हैं

श्री वांछा कल्प लता सम्पूर्ण अनुष्ठान मन्त्र

१-श्रीं ह्रीं क्लीं ह्स्सौः सौः गुं गुं गुं ग्लौं ग्लौं ग्लौं अमृत कुम्भाय गं गं गं ऐं ऐं ऐं ह्रीं ह्रीं ह्रीं क्लीं क्लीं क्लीं वं वं वं सं सं सं क्षं क्षं क्षं ह्स्ख्फ्रें क्षिप्र- भैरवाय प्रसीद।

ॐ वं ठं अमृत-रुद्राय श्रां ह्रीं क्रौं प्रतिकूलं मे नश्यत्वनुकूलं मे वशमानय स्वाहा।

२-ह्रीं ह्रीं ह्रीं, क्लीं क्लीं क्लीं, ह्रीं ह्रीं ह्रीं, श्रीं श्रीं श्रीं, ह्रीं ह्रीं ह्रीं, क्लीं क्लीं क्लीं, ह् स् क्ष् म् ल् व् र् य् आनन्द-भैरवाय भैरवी-सहिताय वं अमृत कुरु कुरु।

ॐ ह्रीं वं ठं अमृत रुद्राय श्रां ह्रीं क्रौं प्रतिकूलं मे नश्यत्वनुकूलं मे वशमानय स्वाहा।

३-ऐं ठं ठं ठं, कं ठं ठं ठं, एं ठं ठं ठं, ईं ठं ठं ठं, ह्रीं ठं ठं ठं, क्लीं ठं ठं ठं, सं ठं ठं ठं, कं ठं ठं ठं, हं ठं ठं ठं, लं ठं ठं ठं, ह्रीं ठं ठं ठं, ह्रीं ठं ठं ठं, सौः ठं ठं ठं, सं ठं ठं ठं, कं ठं ठं ठं, लं ठं ठं ठं, ह्रीं ठं ठं ठं।

ॐ ह्रीं वं ठं अमृत रुद्राय श्रां ह्रीं क्रौं प्रतिकूलं मे नश्यत्वनुकूलं मे वशमानाय स्वाहा।

४-श्रीं श्रीं श्रीं, ह्रीं ह्रीं ह्रीं, क्लीं क्लीं क्लीं, ऐं ऐं ऐं, सौः सौः सौः, ॐ ॐ, ह्रीं ह्रीं ह्रीं, श्रीं श्रीं श्रीं, कं कं कं, एं एं एं, ईं ईं ईं, लं लं लं, ह्रीं ह्रीं ह्रीं, हं हं हं, सं सं सं, कं कं कं, हं हं हं, लं लं लं, ह्रीं ह्रीं ह्रीं, सं सं सं, कं कं कं, लं लं लं, ह्रीं ह्रीं ह्रीं, सौः सौः सौः, ऐं ऐं ऐं, क्लीं क्लीं क्लीं, ह्रीं ह्रीं ह्रीं, श्रीं श्रीं श्रीं, प्रसीद प्रसीद, मम मनो ईप्सितं कुरु कुरु।

ॐ ह्रीं वं ठं अमृत-रुद्राय श्रां ह्रीं क्रौं प्रतिकूलं मे नश्यत्वनुकूलं मे वशमानय स्वाहा।

प्रतिदिन इन चारों मन्त्रों का २१ बार जप अवश्य ही करना है, जब इस मन्त्र जप का अनुष्ठान २१ दिन तक पूरा हो जाय तो इसका विशेष प्रभाव सामने आता है। मन्त्र अनुष्ठान के पश्चात् साधक वांछा कल्पलता यन्त्र धारण कर लें अथवा गले में पहन लें, अन्य सामग्री अपने पूजा स्थान में ही रहने दें।

इस अनुष्ठान के अलग-अलग कुछ विशेष प्रयोग भी हैं, जिनका निम्न प्रकार से प्रयोग किया जा सकता है -

१-यदि इस मन्त्र की एक माला मन्त्र जप कर अर्थात् १०८ बार उच्चारण कर किसी से मिलने के लिए जाएं और कोई भी कार्य कहें तो सामने वाला तुरन्त वह कार्य कर देता है।

२-यदि इस मन्त्र की पांच माला मन्त्र जप कर किसी अधिकारी या बहुत बड़े व्यापारी के सामने जाकर अपनी इच्छा प्रकट करें अथवा प्रमोशन, स्थानान्तरण या कोई एजेन्सी प्राप्त करने की इच्छा व्यक्त करें, तो वह निश्चय ही स्वीकार कर ली जाती है।

३- यदि इस मन्त्र की गुलाब के पुष्पों के सामने पांच माला मन्त्र जप कर वे गुलाब के पुष्प दुकान या फैक्टरी में बिखेर दें तो दुकान पर किया गया तांत्रिक प्रयोग समाप्त हो जाता है और व्यापार में आश्चर्यजनक वृद्धि होने लगती है।

(शेष भाग पृष्ठ संख्या २० पर देखें)

Scanned by CamScanner

(पृष्ठ संख्या १६ का शेष भाग)

४- यदि तांबे के गिलास में पानी भर कर इस मन्त्र का २१ बार उच्चारण कर वह पानी रोगी को पिला दिया जाय तो वह रोग मुक्त हो जाता है अथवा ऐसे पानी को बाल्टी में मिला कर स्नान कराया जाय तो उसके शरीर का सारा रोग समाप्त हो जाता है।

५- यदि काली मिर्च के १०१ दानों पर नाम लेकर इस मन्त्र की १५ माला मन्त्र जप कर दे काली मिर्च के दाने शत्रु के घर में किसी प्रकार से फेंक दिये जांय तो उसके घर के सभी सदस्य बीमार बने रहते हैं, लक्ष्मी का नाश हो जाता है तथा घर में कलह लड़ाई बढ़ जाती है, यदि इन काली मिर्च को दक्षिण दिशा में जाकर मंगलवार के दिन जमीन में गाड़ दें तो शत्रु का मरण हो जाता है।

६- यदि वांछा कल्प लता यन्त्र के सामने तेल का दीपक लगा कर नित्य तीन माला मन्त्र जप ११ दिन तक करे तो सभी प्रकार का राज्य भय समाप्त हो जाता है और स्थितियां अनुकूल होने लगती हैं।

संक्षेप में कहा जाय तो यह निश्चित है कि जिसने वांछा कल्पलता सिद्धि प्राप्त कर ली तो उसने अपने जीवन में एक श्रेष्ठ स्थिति प्राप्त कर ली।

शिष्य का व्यवहार

शिष्य को सदैव यह बात याद रखनी चाहिए कि गुरु प्रेम के प्रभाव से ही जिस प्रकार अन्तःकरण की शुद्धता और सात्विकता दिन-प्रतिदिन बढ़ती है उसी प्रकार ईर्ष्या, द्वेष, आडम्बर, विषयाचरण वृत्ति से ये शुभ भावनाएं दिन प्रतिदिन घटती हैं। गुरु आश्रम, गुरु दरबार, गुरु सन्निध्य तो धधकती हुई प्रज्वलित योगाग्नि का केन्द्र है, जिस प्रकार ये अग्नि शिष्य के पाप को जला कर शिवत्व जाग्रत कर देती है, उसी प्रकार शिष्य को आश्रम में रहते हुए अथवा बाहर रहते हुए साधना रहित विषय विकारों से युक्त जीवन जीने से पुण्य नितेस्ज हो जाता है। सभी शिष्यों को अपने अन्य गुरु भाइयों में आत्मवत् गुरुदेव को ही देखना चाहिए, कभी भी एक दूसरे के गुण-दोषों को न देखें, जो दोष देखते हैं वे अपने ही दोष बढ़ाते हैं, अपनी ही योग-शक्ति घटा लेते हैं।

आश्रम में जाने वालों को अमर्यादित, स्वच्छन्द तथा मनमाना व्यवहार कर अपनी प्राप्त शक्ति को नष्ट नहीं करना चाहिए। जहां तहां बैठक जमाना, गप्पबाजी करना, लोकनिन्दा करना, एक दूसरे पर दोषारोपण करना योग सिद्धि को नष्ट कर देता है, आश्रम के प्रति निष्ठा, श्रेष्ठ आचरण, सत्कर्म नियमित जीवन होने से कुण्डलिनी शक्ति के जागरण का महान अनुभव सहज ही प्राप्त होता है। गुरु तो शिष्यों की परीक्षा लेते रहते हैं, इसलिए शिष्य को हर समय अपने व्यवहार में पूर्ण सन्तुलन बनाये रखते हुए कार्य करना चाहिए।

Scanned by CamScanner

भविष्य आइने के समान देखा जा सकता है

केवल

पञ्चांगुली साधना से

भविष्य दर्शन तथा हाथ की रेखाओं की देवी पञ्चांगुली देवी है और जिसने यह साधना सिद्ध नहीं की वह सही रूप से न तो ज्योतिषी बन सकता है और न ही अपने स्वयं के भविष्य के बारे में देख सकता है, यह साधना सरल, दिव्य और सुगम है—

व्यक्ति किसी दूसरे का भविष्य कथन करता है, तो उसमें आत्मविश्वास अवश्य होना चाहिए, केवल गोल माल बात कहने से भविष्य कथन की सार्थकता नहीं है और यह आत्मविश्वास तभी उत्पन्न हो सकता है जब उसने स्वयं कोई साधना अथवा सिद्धि प्राप्त की हो। साधना का बल ही उसका वास्तविक बल होता है जो उसे हाथ की रेखाओं अथवा जन्मकुण्डली का ज्ञान कराता है।

अब प्रश्न यह उठता है कि सामान्य व्यक्ति के लिए इस विशेष साधना की क्या उपयोगिता है, हर व्यक्ति अपने जीवन में आगे घटित होने वाली घटनाओं की जानकारी के सम्बन्ध में उत्सुक रहता है, यदि आज आपको यह जानकारी हो जाय कि आने वाले समय में मेरे घर में बीमारी आने वाली है तो इस सम्बन्ध में आप उचित उपाय कर घटना की तीव्रता को कम कर सकते है, समय रहते ऐसा उपचार कर सकते है, कि जो दुष्प्रभाव आपको आकस्मिक रूप से मिलता है वह कम से कम बन पड़े। यदि व्यापार

में आगे अच्छे योग और आर्थिक लाभ की जानकारी पूर्ण रूप से मिल जाय तो व्यापारी आदमी बड़ी रिस्क ले सकता है बड़ा पूंजीनिवेश कर सकता है और हजारों के लाभ को लाखों के लाभ में बदल सकता है।

पञ्चांगुली साधना के पूर्ण जानकार ज्योतिषियों को तो उंगलियों पर गिना जा सकता है, जबकि पञ्चांगुली साधना में सिद्ध साधक योगी कई हैं लेकिन वे प्रचार से मुक्त केवल अपने लिए ही इस साधना के श्रेष्ठ लाभ को उपयोग में लाते हुए अपना कार्य करते रहते हैं। जिस प्रकार भगवान पर या अपने इष्ट पर किसी एक व्यक्ति का अधिकार नहीं है, ऐसा कहीं नहीं लिखा है कि केवल ब्राह्मण को ही साधना सिद्धि प्राप्त होगी अथवा जिसके माता-पिता महान हैं तो पुत्र को साधना का लाभ अपने आप मिल जायेगा, साधना करने वाले को ही सिद्धि प्राप्त होगी और यह सिद्धि प्राप्त कर वास्तव में साधक ईश्वर को धन्यवाद देता है कि तुमने मुझे जिस निमित्त बनाया मैंने उसका उपयोग किया है।

पञ्चाङ्गुली यन्त्र

वर्तमान समय में पञ्चांगुली साधना की उपयोगिता तो विशेष है, जीवन में साधनाओं के अवसरों का तो भली भांति उपयोग कर लेता है, वही सफल हो सकता है, जो जीवन की दौड़ में पीछे रह जाता है, उसे परिवार के सदस्य भी महत्व नहीं देते। आपका व्यापारिक सहयोगी आपके साथ भविष्य में कैसा बरताव करेगा, आपके अधिकारी से आगे आपके संबंध कैसे रहेंगे, कौन सी संतान जीवन में विशेष उन्नति करेगी, आगे जीवन में बीमारी कब-कब आने वाली है, पत्नी के साथ कैसे संबंध रहेंगे, कौन आपका सहयोगी है और कौन शत्रु, इन सबका ज्ञान पञ्चांगुली साधना से सहज ही प्राप्त किया जा सकता है।
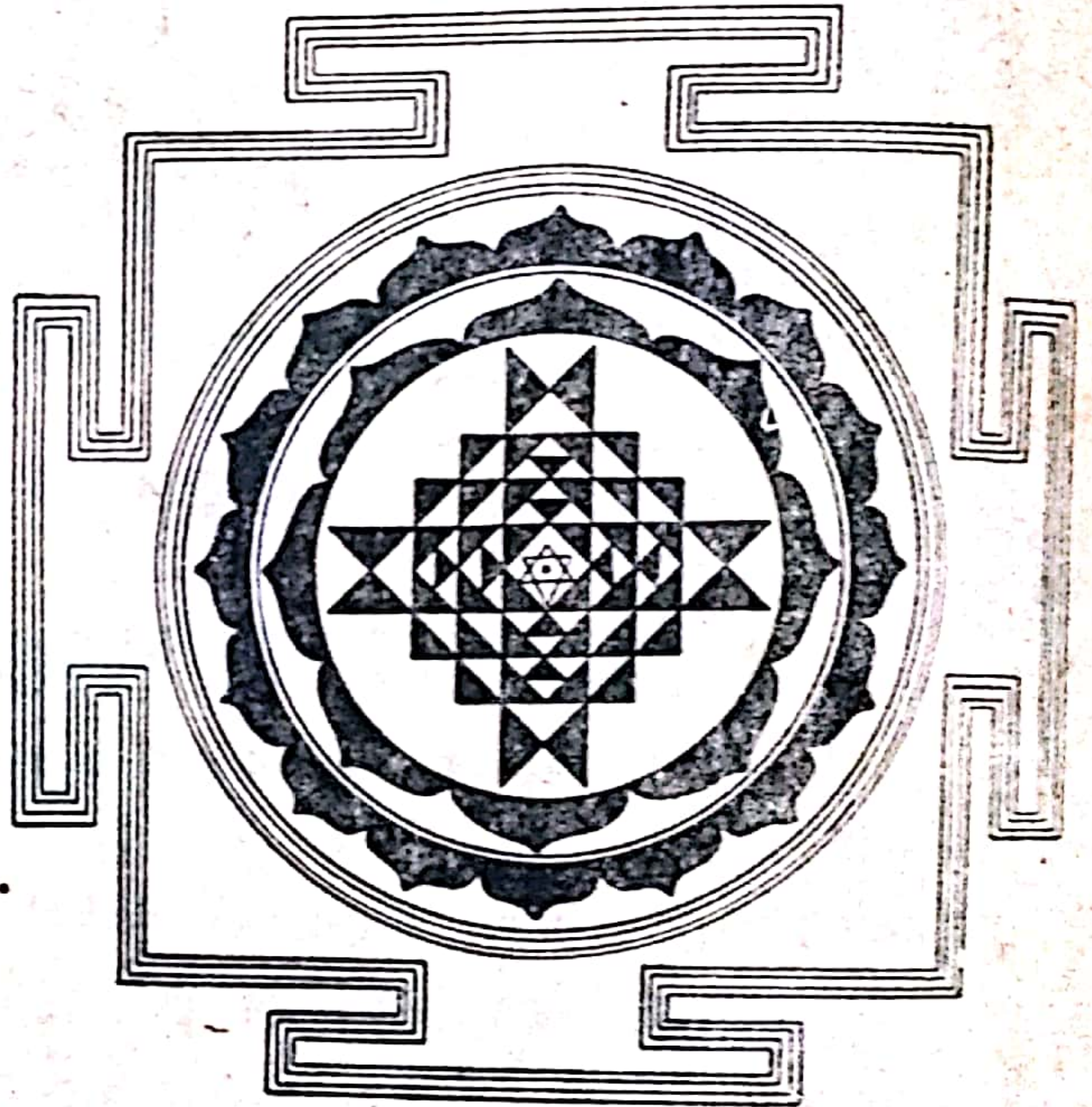
आगे कुछ विशेष विवरण दिया जा रहा है, जो कि पञ्चांगुली यन्त्र के निर्माण से सम्बन्धित है। ताम्र पत्र पर अंकित पञ्चांगुली यन्त्र का निर्माण तथा उसकी प्राण प्रतिष्ठा प्रक्रिया गुरु के निर्देशन में सम्पन्न करनी चाहिए। और जब एक बार पञ्चांगुली साधना का निर्णय ले लें, तो उसे पूर्ण अवश्य करें, नित्य प्रति मन्त्र जप में कुछ भी समय नहीं लगता है, मैं यह आशा करता हूं कि आप सभी साधक पञ्चांगुली साधना सम्पन्न कर अपने भविष्य दर्शन का नया मार्ग खोलेंगे।

पञ्चांगुली साधना

यह साधना किसी भी समय से प्रारम्भ की जा सकती है, परन्तु साधक को चाहिए कि वह पूर्ण

विधि विधान के साथ इस साधना को सम्पन्न करें, मन्त्र जप किसी तीर्थ भूमि, गंगा यमुना का संगम, नदी, पर्वत गुफा या किसी मन्दिर में की जा सकती है, साधक चाहे तो साधना के लिए घर के एकान्त कमरे का उपयोग कर सकते हैं।

पञ्चांगुली यन्त्र

इस साधना में यह आवश्यक है कि शुभ दिन शुद्ध समय में साधना स्थल को स्वच्छ पानी से धो लें, कच्चा आंगन हो तो गोबर से लीप लें, इसके पश्चात् चौकोर बाजोट पर धुला हुआ श्वेत वस्त्र बिछा दें और उस पर चावलों से यन्त्र का निर्माण करें, चावलों को पहले अलग-अलग पांच रंगों में रंग दें यन्त्र को सुघड़ता से सही रूप में बनावें, यन्त्र की बनावट में जरा सी भी गलती सारे परिश्रम को व्यर्थ कर देती है।

इसके पश्चात् यन्त्र के मध्य में ताम्र कलश स्थापित करें और उस पर लाल वस्त्र आच्छादित कर ऊपर नारियल रखें और फिर उस पर पञ्चांगुली देवी की मूर्ति स्थापित करें, इसके बाद पूर्ण षोडशोपचार से नौ दिन तक नित्य पूजन कर पञ्चांगुली मन्त्र का जप करें।

यह सही है कि आधुनिक समय में प्रत्येक स्थान पर प्रामाणिक विद्वान प्राप्त नहीं होते, जो कि यन्त्र का स्वरूप और विधि समझा सकें, परन्तु साधना में प्रामाणिक 'पञ्चांगुली यन्त्र' तथा 'पञ्चांगुली देवी चित्र' आवश्यक है।

सर्वप्रथम मुख शोधन कर पञ्चांगुली मन्त्र चैतन्य करें पञ्चांगुली देवी की साधना में चैतन्य मन्त्र "ई" है, अतः मन्त्र के प्रारम्भ और अन्त में "ई" सम्पुट देने से मन्त्र चैतन्य हो जाता हैं।

मन्त्र चैतन्य के बाद योनि-मुद्रा का अनुष्ठान किया जाय यदि योनि मुद्रा अनुष्ठान का ज्ञान न हो तो भूत लिपि विधान करना चाहिए।

इसके पश्चात् यन्त्र पूजन करके पञ्चांगुली देवी का ध्यान करें।

पञ्चांगुली ध्यान

पञ्चांगुली देवी महादेवी श्रीं सीमन्धर शासने।
अधिष्ठात्री करस्यासौ शक्तिः श्री त्रिदशोशितुः ॥

श्री पञ्चाङ्गुली देवी

पञ्चांगुली देवी के सामने यह ध्यान करके निम्न पञ्चांगुली मन्त्र का जप करना चाहिए—

पञ्चांगुली मन्त्र

ॐ नमो पञ्चांगुली पञ्चांगुली परशरी माता मयंगल वशीकरणी लोहमय दडमणिनी चौसठ काम विहंडिनी रणमध्ये राउलमध्ये शत्रुमध्ये दीपान-मध्ये भूतमध्ये प्रेतमध्ये पिशाचमध्ये झोटिगमध्ये

Scanned by CamScanner

डाकिनीमध्ये शंखिनीमध्ये यक्षिणीमध्ये दोषाणि-मध्ये गुणिमध्ये गारुणीमध्ये विनारिमध्ये दोषमध्ये दोषशरण्यमध्ये दुष्टमध्ये घोर कष्ट मुझ ऊपर बुरो जो कोई करे करावे जड़े जड़ावे चिन्ते चिन्तावे तस माथे श्री माता पञ्चांगुली देवी तपोवज्र निर्धार पड़े ॐ ठं ठं ठं स्वाहा ।।

वस्तुतः यह साधना लम्बी और श्रम साध्य है, प्रारम्भ में गणपति पूजन, संकल्प, न्यास, मन्त्र, पूजा, प्रथमावरण पूजा, द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ, पंचम, षष्टम्, सप्तम, अष्टम और नवमावरण के बाद भूपतिसंहार करके यन्त्र से प्राण प्रतिष्ठा करनी करनी चाहिए।

इसके बाद पञ्चांगुली देवी को संजीवनी बनाने के लिए ध्यान, अन्तर्मातृका न्यास, कर न्यास, बहिर्मातृका न्यास करनी चाहिए, यद्यपि इस सारी विधि को लिखा जाय तो लगभग चालीस पचास पृष्ठों में आयेगी, यहां मेरा उद्देश्य पाठकों को मात्र इस साधना से परिचित कराना है।

देश के श्रेष्ठ साधकों का मत है कि यदि साधक ये सारे क्रिया कलाप न करके केवल घर में ताम्र पत्र अंकित मन्त्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठायुक्त पञ्चांगुली यन्त्र तथा संजीवनी संपुटयुक्त मन्त्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठायुक्त पञ्चांगुली देवी चित्र स्थापित कर उसके सामने नित्य पञ्चांगुली मन्त्र २१ बार जप करे तो कुछ समय बाद स्वतः पञ्चांगुली साधना सिद्ध हो सकती है।

यह सुविधाजनक है और इसमें किसी प्रकार की त्रुटि सभव नहीं होती, पाठकों के आग्रह बराबर केन्द्र को प्राप्त होते रहे हैं अतः इस प्रकार पूर्ण विधि-विधान से सिद्ध कराकर मन्त्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठायुक्त पञ्चांगुली देवी चित्र केन्द्र से भेजने की व्यवस्था की जा सकती है।

वस्तुतः यह साधना सरल है, क्योंकि इसमें किसी प्रकार की जटिलता का सामना नहीं करना पड़ता है, लेखक का स्वयं का यह अनुभव रहा है और उसने अपने शिष्यों से इस प्रकार की साधनाएं सम्पन्न करवाई हैं और वे इस साधना में सफल हुए हैं।

अपने पूजा स्थान में पञ्चांगुली देवी चित्र की स्थापना साधक को यन्त्र के साथ ही कर देनी चाहिए और नित्य प्रातः स्नान कर २१ बार पञ्चांगुली मन्त्र का उच्चारण अवश्य करना चाहिए।

कुछ साधकों को एक मास में ही मन्त्र सिद्धि प्राप्त हो जाती है, कुछ को तीन मास में और कुछ को छः मास में सिद्धि प्राप्त होती है अतः धैर्य रखते हुए पूर्ण श्रद्धा एवं विश्वास के साथ अपने गुरु को साक्षी रखते हुए यह साधना अवश्य ही सम्पन्न करता रहे और जब मन्त्र सिद्धि प्राप्त हो जाय तो इसका उपयोग अपने कल्याण के अतिरिक्त दूसरों के कल्याण हेतु भी अवश्य करें। पञ्चांगुली देवी के साधक के सामने तो हाथ की रेखाएं इस प्रकार स्पष्ट होती हैं मानों उस पर स्पष्ट रूप से अक्षर लिखे हैं और उसे केवल पढ़ना ही पढ़ना है। ●

तांत्रोक्त, तीव्र एवं तीक्ष्ण साधना

छिन्नमस्ता साधना

छिन्नमस्ता-साधना ही एक ऐसी साधना है, जिसको सम्पन्न कर सामान्य गृहस्थ भी योगी का पद प्राप्त कर सकता है, वायु वेग से शून्य के माध्यम से एक स्थान से दूसरे स्थान पर जा सकता है, जमीन से उठ कर हवा में स्थिर हो सकता है, एक शरीर स्वरूप को कई शरीरों में बदल सकता है और अनेक ऐसी सिद्धियों का स्वामी बन सकता है, जो आश्चर्य की गणना में आती हैं।

'छिन्नमस्ता भवेत्सुखी' अर्थात् जो छिन्नमस्ता साधना सम्पन्न कर लेता है वह साधक जीवन में सभी दृष्टियों से सुखी रहता है, पूज्य गुरुदेव के प्रिय शिष्य **प्रज्ञानन्द** के द्वारा प्रस्तुत एक महत्वपूर्ण साधना विधि, जो प्रामाणिकता के साथ प्रस्तुत है —

मैं अपने जीवन में साधना का अनुगामी ही रहा हूं, मैंने बचपन से ही निश्चय कर लिया था कि जीवन में एक-एक करके दसों महाविद्याओं को सिद्ध करूंगा और एक ऐसा आदर्श उपस्थित करूंगा, जिससे कि साधक लाभान्वित हो सकें।

मैंने यह सुना था कि अन्य साधनाएं फिर भी सम्पन्न की जा सकती हैं, परन्तु छिन्नमस्ता साधना अपने आपमें इतनी सूक्ष्म और संवेदनशील है कि थोड़ी सी गलती भी अनर्थ कर देती है, इसलिए छिन्नमस्ता साधना करने से पूर्व साधक को शारीरिक और मानसिक दोनों ही

Scanned by CamScanner

दृष्टियों से सक्षम और तत्पर होना चाहिए।

मैं अपने गुरु के सान्निध्य में छः महाविद्या साधनाएं सिद्ध कर चुका था, यद्यपि इन महाविद्या साधनाओं को सम्पन्न करने में मुझे काफी कठिनाइयां उठानी पड़ी थीं, परन्तु फिर भी मैं इन सभी महाविद्या साधनाओं को सम्पन्न कर सका, इसके पीछे जहां मेरी लगन और परिश्रम था, एकात्म भाव और पूर्णता के प्रति ललक थी, वहीं अपने गुरुदेव का साहचर्य और उनकी कृपा भी थी, कि जिनकी वजह से मैं सभी साधनाओं को सिद्ध कर सका।

परन्तु छिन्नमस्ता साधना का अनुभव तो अपने आपमें विचित्र था, इस साधना का प्रारम्भ ही नहीं हो पा रहा था, मैं जब भी इस साधना के लिए तैयार होता तभी कोई न कोई बाधा या परेशानी उपस्थित हो जाती जिसकी वजह से प्रयत्न करके भी मैं साधना में बैठ नहीं पा रहा था।

कहा जाता है कि साधक जिस दिन से छिन्नमस्ता साधना को सम्पन्न करने का विचार करता है, तभी से उसकी कसौटी की परीक्षा प्रारम्भ हो जाती है, और कोई बिरला ही इस साधना को सम्पन्न कर सकता है।

परन्तु आज जब मैं इस साधना को भली प्रकार से सम्पन्न कर चुका हूं, तो मैं यह स्वीकार करता हूं कि इससे बढ़ कर और कोई अन्य श्रेष्ठ साधना नहीं है, शास्त्रों में इस साधना के निम्न विशेष गुण बताये गये हैं—

- छिन्नमस्ता साधना सम्पन्न करने पर आर्थिक दृष्टि से वह पूर्ण समर्थ और सुदृढ़ बन जाता है, मां छिन्नमस्ता स्वयं उसका मनोरथ पूरा करती जाती है, साधक जिस संदूक या तिजोरी में धन रखता है उसमें से वह दोनों हाथों से चाहे जितना खर्च करे, उसमें न्यूनता नहीं आती।
- इस साधना मन्त्र में 'क्लीं' बीज लगता है, जो कि समस्त पापों का नाश करने वाला है, इसलिए यह साधना जीवन के समस्त पापों का नाश कर मुक्ति देने में समर्थ है।
- इसमें त्रैलोक्य विजयिनी देवी का बीज है, फलस्वरूप ऐसा साधक जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में सफलता प्राप्त करता जाता है, वह राजनीति आदि के क्षेत्र में विशेष पूर्णता प्राप्त कर सकता है।
- इस साधना की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इस साधना के बाद अन्य साधनाएं सुगम और सरल हो जाती हैं, फलस्वरूप उन साधनाओं में जल्दी ही सफलताएं मिलती रहती हैं।
- इस मन्त्र में माया बीज होने से साधक का शरीर स्वस्थ, सुन्दर और आकर्षक हो जाता है, फलस्वरूप वह जीवन में पूर्णत: यौवनवान बना रहता है।
- छिन्नमस्ता साधना आठों सिद्धियों और ऋद्धियों को देने में समर्थ है, जो इस साधना को सिद्ध कर लेता है, उसके जीवन में धन, धान्य, पृथ्वी, विलासमय भवन, कीर्ति, दीर्घायु, ख्याति, यश, वाहन, पुत्र, पौत्र और अन्य सभी भौतिक सुख स्वत: ही प्राप्त होते रहते हैं तथा जीवन में उसे किसी प्रकार का अभाव देखने को नहीं मिलता।
- छिन्नमस्ता साधना से सिद्ध व्यक्ति का शरीर लोहे के समान दृढ़ हो जाता है, वह बर्फ में नंगा बैठ कर साधना कर सकता है, अग्नि में प्रवेश कर सकुशल बाहर निकल सकता है और किसी भी प्रकार की विपत्ति को सहन कर सकता है।
- छिन्नमस्ता साधना में त्रिपुर सुन्दरी साधना समाहित है, फलस्वरूप यह इच्छानुसार देवी-देवताओं के साक्षात् दर्शन कर सकता है।
- इस साधना की विशेषता यह है, कि इसके माध्यम से व्यक्ति को वाक् सिद्धि प्राप्त हो जाती

Scanned by CamScanner

है, और वह जो भी कहता है, वह सफल हो जाता है।

वास्तव में छिन्नमस्ता साधना में कुछ विशेष साधनाओं का समावेश है, जिसमे कि इस एक साधना को करने से कई अन्य साधनाएं सम्पन्न हो जाती हैं।

छिन्नमस्ता साधना का जो स्वरूप पूज्य गुरुदेव ने मुझे स्पष्ट किया वह अत्यन्त ही सरल स्वरूप है, जिसको सिद्ध करने से साधना में सफलता निश्चित रूप से प्राप्त हो जाती है। आगे इस रूप में यह सरल रूप प्रस्तुत किया जा रहा है और इससे कुछ विशेष नियमों का पालन करना आवश्यक है।

छिन्नमस्ता साधना

छिन्नमस्ता साधना रात्रि को ही सम्पन्न की जाती है, और यह ध्यान रहे कि रात्रि के प्रथम प्रहर के पश्चात् अर्थात् १० बजे के बाद ही साधना प्रारम्भ करें। क्योंकि अर्द्ध रात्रि का समय इसके लिए सर्वश्रेष्ठ है।

साधना में पूर्ण अनुष्ठान सवा लाख मन्त्र जप का है और यह साधना ११ अथवा २१ दिन में पूरी अवश्य हो जानी चाहिए। साधना काल में ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करें, एक समय सात्विक भोजन ग्रहण करें, यथा सम्भव फलाहार दूध इत्यादि ही लें।

साधना विधान

छिन्नमस्ता साधना कृष्ण पक्ष में प्रतिपदा से अष्टमी तक किसी भी तिथि को प्रारम्भ की जा सकती है, साधक रात्रि को १० बजे स्नान कर काली धोती धारण कर, काले ऊनी आसन पर बैठें, साधना कक्ष का दरवाजा बन्द कर दें जिससे कि किसी प्रकार का व्यवधान न हो। इस साधना में विशेष रूप से आवश्यक तो मन्त्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त '**ह्रीं**' बीज मन्त्र सम्पुटित '**छिन्नमस्ता यन्त्र**' तथा प्रामाणिक '**छिन्नमस्ता चित्र**' और '**सिद्ध वज्र वैरोचन**' है। साधना के बाद इस वज्र वैरोचन को काले कपड़े से बांह में बांध लें। मन्त्र जप तुलसी की माला को छोड़ कर किसी भी माला से किया जा सकता है। छिन्नमस्ता साधना में प्रयुक्त माला का प्रयोग विशेष तांत्रिक साधनाओं हेतु ही किया जाना चाहिए।

अपने सामने छिन्नमस्ता चित्र स्थापित कर उसकी पूजा करें, कुंकुंम, पुष्प, अक्षत तथा प्रसाद चढ़ाएं, यह प्रसाद प्रतिदिन मन्त्र जप के पश्चात् साधक स्वयं ग्रहण करें किसी अन्य को न दे। पूरे मन्त्र जप के दौरान दीपक एवं धूप लोबान अवश्य ही जलते रहना चाहिए। छिन्नमस्ता चित्र का पूजन करने के पश्चात् आगे दिये गये विधान के अनुसार **छिन्नमस्ता यन्त्र** का पूजन करें और **सिद्ध वज्रवैरोचन** के सामने स्थापित कर दें। पूरी साधना में यन्त्र चित्र इत्यादि को हटाना नहीं है, उसी स्थान पर रखे रहें।

विनियोग

ॐ अस्य शिरश्छन्ना मन्त्रस्य, भैरव ऋषिः, सम्राट् छन्दः, छिन्नमस्ता देवता, ह्रीं ह्रीं बीजं, स्वाहा शक्तिः अभीष्ट सिद्धये जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास

ॐ भैरव ऋषये नमः शिरसि।
सम्राट छन्दसे नमः मुखे।
छिन्नमस्ता देवतायै नमः हृदये।
ह्रीं ह्रीं बीजाय नमः गुह्ये।
स्वाहा शक्तये नमः।
पादयोः विनियोगाय नमः सर्वांगे।

करन्यास

ॐ आं खड्गाय स्वाहा अंगुष्ठये।
ॐ ईं सुखड्गाय स्वाहा तर्जन्यै।

Scanned by CamScanner

ॐ ऊं वज्राय स्वाहा मध्यमयोः ।
ॐ ऐं पाशाय स्वाहा अनामिकयोः ।
ॐ ओं अंकुशाय स्वाहा कनिष्ठिकयोः ।
ॐ अः सुरक्ष रक्ष ह्रीं ह्रीं स्वाहा करतल कर-पृष्ठयोः ।

अंगन्यास

ॐ आं खड्गाय हृदयाय नमः स्वाहा ।
ॐ ईं सुखड्गाय वज्राय शिखायै वषट् स्वाहा ।
ॐ ऐं पाशाय कवचाय हुं स्वाहा ।
ॐ ओं अंकुशाय नेत्र त्रयाय वौषट् स्वाहा ।
ॐ अः सुरक्ष रक्ष ह्रीं ह्रीं अस्त्राय फट् स्वाहा ।

इस प्रकार न्यास सम्पन्न करने के बाद हाथ जोड़ कर भगवती छिन्नमस्ता का ध्यान करें —

ध्यान

भास्वन्मण्डल मध्यगांचित शिरश्छिन्नं विकीर्णालकम्
स्फारास्यंप्रपिद्गलत्स्व-रुधिरंवामे करेविभ्रतीम् ।
याभासक्त रति स्मरोपरि गतांसख्यो निजे डाकिनी
वर्णिनयौ परि-दृश्य मोद कलितां श्रीछिन्नमस्तां भजे ।।

मन्त्र

।। श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं वज्र वैरोचनीये
हूं हूं फट् स्वाहा ।।

उपरोक्त १६ अक्षरों का छिन्नमस्ता मन्त्र सर्वाधिक महत्वपूर्ण है, जिसमें प्रत्येक बीज अक्षर चैतन्य है ।

श्रीं—लक्ष्मी बीज
ह्रीं—लज्जा बीज
क्लीं - पापनाशक मनोजव बीज
ऐं संजीवनी विद्या प्रदायक बीज
वं—वरुणदेव बीज मन्त्र
जं —इन्द्र प्रतीक बीज मन्त्र
रं—अग्नि देवता प्रतीक पूर्णता प्रदायक
वं पृथ्वी बीज मन्त्र
एं —त्रिपुर देवी बीज मन्त्र
रं - त्रिपुर सुन्दरी बीजाक्षर
ओं आत्म रूप त्रैलोक्य विजयिनी बीज मन्त्र
चं—चन्द्र प्रतीक
नं —ऋद्धि सिद्धि प्रदायक गणेश प्रतीक
ई —साक्षात् कमला बीजाक्षर
य - सरस्वती बीजाक्षर वाक् सिद्धि प्रदायक
हूं हूं --माया युग्म बीज
स्वा— कामदेव बीज स्वस्थता प्रदायक
हां—रति बीज पौरुष प्रदायक

इस प्रकार इन १६ अक्षरों का विन्यास करने से स्पष्ट होता है कि मन्त्र का प्रत्येक अक्षर विशेष प्रतीक युक्त है जब सवा लाख मन्त्र जप अनुष्ठान पूर्ण हो जाय तब साधक को हवन अवश्य करना चाहिए और आरती आदि सम्पन्न कर मन्त्र अनुष्ठान सम्पन्न करें ।

छिन्नमस्ता साधना में गुरु आशीर्वाद से, गुरु कृपा से साधक सफलता प्राप्त कर जीवन में विशेष सिद्धियों का स्वामी अवश्य ही बन सकता है इसमें साधक को धैर्य और विश्वास से पूरा अनुष्ठान करने की आवश्यकता है ।

Scanned by CamScanner

शिवोक्त

महातत्व शतअष्टोत्तरी लक्ष्मी साधना

कथा प्रसिद्ध है कि एक बार भगवान शंकर ने २४ वर्ष की समाधि लगाई और जब उनकी आंख खुली तो उन्होंने अपने आपको श्मशान में ही पाया जहां चारों ओर श्मशान की राख, हड्डियां, जलते हुए शव और सांय-सांय करती हवा थी, एक प्रकार से चारों ओर दरिद्रता का वास था।

इन सब को देख कर भगवान शंकर अत्यन्त क्षुब्ध हुए और उन्होंने भगवती लक्ष्मी की आराधना और उनकी प्रत्यक्ष प्रसन्नता के लिए १२ वर्ष की समाधि लगाई, १२ वर्ष बाद जब भगवती लक्ष्मी प्रसन्न हुई और प्रत्यक्ष प्रगट हुई तो भगवान शिव ने कहा मैं आपसे कोई ऐसा साधना रहस्य जानना चाहता हूं जो अभी तक गोपनीय रही हो, जिस साधना को करने से आप स्थाई रूप से जन्म-जन्म के लिए घर में निवास करें, किसी प्रकार का कोई अभाव, दुःख दारिद्रय, अकाल मृत्यु या कष्ट न रहे, जीवन में उत्तम पुत्रों की प्राप्ति तथा आनन्द युक्त भोग प्राप्त हो।

भगवती लक्ष्मी ने उचटती दृष्टि से श्मशान की ओर देखा जहां चारों तरफ भूख और अभाव मंडरा रहा था, भगवान शिव को देखा जिनके शरीर पर भस्म लगी हुई थी और सांप विचरण कर रहे थे, तब भगवती लक्ष्मी ने एक दुर्लभ तथा गोपनीय साधना रहस्य भगवान शिव को बताया और अदृश्य हो गयी।

इस साधना को सम्पन्न करने से जगत जननी अन्नपूर्णा लक्ष्मी स्वरूप पार्वती से भगवान शिव का विवाह हुआ और ऋद्धि-सिद्धि प्रदाता गणेश जैसा पुत्र उत्पन्न हुआ, श्मशान वासी रहते हुए भी भगवान शिव त्रैलोक्य सम्पदा के स्वामी बने और रावण आदि साधकों ने शिव को प्रसन्न कर स्वर्णमयी लका प्राप्त की।

इस साधना को भगवान शिव के द्वारा करने से ही इस साधना का "**शिवोक्त महातत्व शतअष्टोत्तरी लक्ष्मी साधना**" नाम पड़ा।

Scanned by CamScanner

यह साधना पूरे वर्ष में केवल एक बार महालक्ष्मी उत्थापन दिवस के अवसर पर ही सम्पन्न हो सकती है, यह दिवस इस वर्ष ४ सितम्बर को प्रारम्भ हो रहा है, और मात्र तीन दिन में यह साधना सम्पन्न की जाती है, ज्योतिष नियमों के अनुसार भी महालक्ष्मी उत्थापन दिवस भाद्रपद शुक्ल अष्टमी को है और समापन दिवस भाद्रपद शुक्ल दशमी को है, इस प्रकार यह साधना ४ सितम्बर ९२ शुक्रवार से प्रारम्भ होकर ६ सितम्बर ९२ रविवार को समाप्त हो जाती है, इस साधना को दिन या रात्रि में किसी भी समय सम्पन्न की जा सकती है, पर यदि रात्रि को यह साधना सम्पन्न करें तो ज्यादा उचित रहता है

साधना विधि

पुराणों में वर्णित लक्ष्मी उत्पत्ति से पूर्व भगवती लक्ष्मी को "श्री" कहा गया है, इसलिए यह उच्चकोटि की "श्री" बीज साधना है, ४ सितम्बर की रात्रि को लगभग ९ बजे साधक पूर्ण शुद्धता के साथ स्नान कर सफेद धोती धारण करें और सफेद आसन बिछा कर उस पर उत्तर की ओर मुंह कर बैठें, सामने भगवती लक्ष्मी का चित्र हो।

इसके बाद तेल का दीपक और घी का दीपक जला कर भगवती लक्ष्मी के चित्र का संक्षिप्त पूजन करें, अर्थात् भगवती लक्ष्मी के चित्र को कुंकुम या केसर अर्पित करें, अक्षत व पुष्प समर्पित करें तथा दूध का बना हुआ प्रसाद अर्पित करें, इसके बाद गुरु के चित्र को सामने रख कर संक्षिप्त गुरु पूजन करें, सर्वप्रथम निम्न चार मन्त्रों से हाथ में जल लेकर आचमन करें —

ह्रीं-आत्म-तत्वाय स्वाहा
ह्रीं-विद्या-तत्वाय स्वाहा
ह्रीं-शिव-तत्वाय स्वाहा
ह्रीं-सर्व-तत्वाय स्वाहा

इसके बाद गुरुदेव को अपने सिर के भीतर स्थित सहस्र दल कमल के बीच में स्थापित कर ध्यान करें और निम्न स्तोत्र उच्चारण करें—

सहस्र-दल पंकजे सकल शील रश्मि प्रभम्।
वराभय-कराम्बुजं विमल-गन्ध पुष्पांम्बरम्॥
प्रसन्न वदनंक्षणं सकल देवता रूपिणम्।
स्मरेत् शिरसि संगं तदभिधान-पूर्व गुरुम्॥१॥
ब्रह्मानन्द परम-सुखदं केवलं ज्ञान-मूर्तिम्।
द्वन्द्वातीतं गगन-सदृशं तत्वमस्यादिलक्ष्यम्॥
एकं नित्यं विमलमचलं सर्व-धी-साक्षि-भूतम्।
भावातीतं त्रिगुणरहितं सद्गुरुं तं नमामि॥२॥
हंसो हंस-गुरुः श्रेष्ठः सुखानन्दः सुखात्मनः।
तस्य स्मरण-मात्रेण मुक्तिस्तत्र न संशयः॥३॥

शतअष्टोत्तरी के पूजा विधान में कुछ विशेष प्रकार से लक्ष्मी का आह्वान और पूजा की जाती है। इस साधना में महालक्ष्मी के जिन १०८ स्वरूपों की साधना की जाती है, उन सभी स्वरूपों में प्रत्येक का पूजन आवश्यक है, इस हेतु **१०८ शिवोक्त लक्ष्मी चक्र** की स्थापना की जाती है। इसके साथ ही **"शिवोक्त महातत्व लक्ष्मी महायन्त्र"** जो कि स्थायी रूप से प्रत्येक लक्ष्मी साधना करने वाले साधक के घर में रहना ही चाहिए, स्थापना करनी ही आवश्यक है। शतअष्टोत्तरी के नाम इस प्रकार है—

१-लक्ष्मी, २-माहेश्वरी, ३-कौमारी, ४-ब्रह्माणी, ५-महामाया, ६-महाविद्या, ७-महायोगा, ८-ऋण-हर्ता, ९-सिद्धिदेवी, १०-जया, ११-विजया, १२-आनन्दा, १३-सर्व मंगला, १४-विलासी, १५-ईश्वरी, १६-शुभगा, १७-कुलदेवी, १८-विष्णु-प्रिया, १९-पद्मावती, २०-पद्मनेत्रा, २१-मातंगी, २२-दिनेश्वरी, २३-उमा, २४-सुकेशी, २५-जलोदरी, २६-विभूषणा, २७-मोक्षदा, २८-कामदायिनी,

Scanned by CamScanner

२९-भोगदा, ३०-सुरारि, ३१-वत्सला, ३२-विद्या, ३३-पापनाशिनी, ३४-क्षयकरी, ३५-तेजस्विनी, ३६-शम्भुरूपा, ३७-भाग्यजननी, ३८-भाग्यदेवी, ३९-भाग्यरूपिणी, ४०-भाग्या, ४१-भीतनाशिनी, ४२-भुवना, ४३-भुवनानन्द कारिणी, ४४-मुक्तिदा, ४५-भोगरक्षिणी, ४६-भोगेश्वरी, ४७-भोगस्था, ४८-भोगवती, ४९-भूधरा, ५०-भोगविलासिनी, ५१-भव्या, ५२-भव्यतरा, ५३-भव वल्लभा, ५४-भास्करा, ५५-उदया, ५६-दिव्या, ५७-चक्रिणी, ५८-भव नाशिनी, ५९-भवाब्धि करणी, ६०-सुख-वर्द्धिनी, ६१-कार्य करणी, ७२-करुणानिधि, ६३-काल शमनी, ६४-वरदायिनी, ६५-नित्या, ६६-निशा, ६७-काम्या, ६८-कला, ६९-शुभदायिनी, ७०-सकलानन्दा ७१-सकलाकला, ७२-सकलासिद्धि, ७३-सकलानिधि, ७४-सकलसारा, ७५-सकलार्थदा, ७६-भवनामूर्ति, ७७-भवनाकृति, ७८-भवनाभव्या, ७९-मदनारूपा, ८०-मदनातुरा, ८१-मदनेश्वरी, ८२-भाग्यरचना, ८३-भाग्यदाकूला, ८४-भाग्य-विरता, ८५-भाग्यसंचिता, ८६-भाग्यसुपथा, ८७-भाग्यसुप्रदा, ८८-भोगसम्प्रदा, ८९-भोग-गुम्फिता, ९०-भोगयोगिनी, ९१-भोगरसना, ९२-भोगरंजिता, ९३-भोगविभवा, ९४-भोगवरदा, ९५-भोगकुशला, ९६-भद्रा, ९७-भद्रेश्वरी, ९८-भद्र-क्रिया, ९९-भद्रक्रीड़ा, १००-भद्रविद्या, १०१-मंगलदा १०२-भवदानन्दलहरी, १०३-भवदानन्ददायिनी, १०४-शिवदा, १०५-महामाया, १०६-कुबेरा, १०७-गुरु प्रिया, १०८-भाग्य भविता।

साधना के विशेष विधान के अन्तर्गत इन सभी लक्ष्मियों का आह्वान तथा पूजन करना है जो १०८ लक्ष्मी चक्र सामग्री में हैं, उनमें से एक-एक लक्ष्मीं चक्र लेकर अपने सामने स्थापित करना है, उस पर कुंकुम तथा चन्दन की टीकी लगानी है तथा हाथ जोड़कर निम्न क्रमा-नुसार आह्वान एवं पूजन करना है —

ॐ लक्ष्मीं आवाहयामि । ॐ लक्ष्म्यै नमः ।
ॐ माहेश्वरीं आवाहयामि । ॐ माहेश्वर्यै नमः ।
ॐ कौमारीं आवाहयामि । ॐ कौमार्यै नमः ।

इस प्रकार सभी १०८ लक्ष्मियों का आह्वान करना है, इस साधना में इन १०८ मन्त्रों से सिद्ध विशिष्ट शांकरी माला से ही मन्त्र अनुष्ठान सम्पन्न करना है ।

इस माला को अपने हाथ में लेकर निम्न मन्त्र से माला को प्रणाम करें—

माले माले महा-माये सर्व शक्ति स्वरूपिणी ।
चतुर्वर्गस्त्वयि न्यस्तः तस्मान्मे सिद्धिदा भव ।।

माला को प्रणाम कर फिर इस साधना को सम्पन्न करने के लिए साधक आसन पर खड़ा हो जाय और एक पात्र में तेल का दीपक रख कर बाएं हाथ में लें तथा दाहिने हाथ से उपरोक्त माला के द्वारा पांच माला निम्न मूल मन्त्र का जप करें, यह साधना आसन पर खड़े-खड़े ही सम्पन्न की जाती है ।

शांकरी माहात्म्य षोडशी इष्ट लक्ष्मी मन्त्र

।। ॐ श्रीं श्रीं श्रीं श्रीं श्रीं आगच्छ वरद
शांकरे श्रीं श्रीं श्रीं श्रीं श्रीं ॐ ।।

इस प्रकार जब पांच माला मन्त्र जप हो जाय तो साधक दीपक को अपने स्थान पर रखें और आसन पर बैठ कर लक्ष्मी यन्त्र तथा माला को प्रणाम करें तथा माला यथा स्थान रख दें ।

इस प्रकार तीन दिन तक यही प्रयोग अर्थात् प्रतिदिन पांच माला मन्त्र जप करना है, इसके साथ ही एक अमृत

Scanned by CamScanner
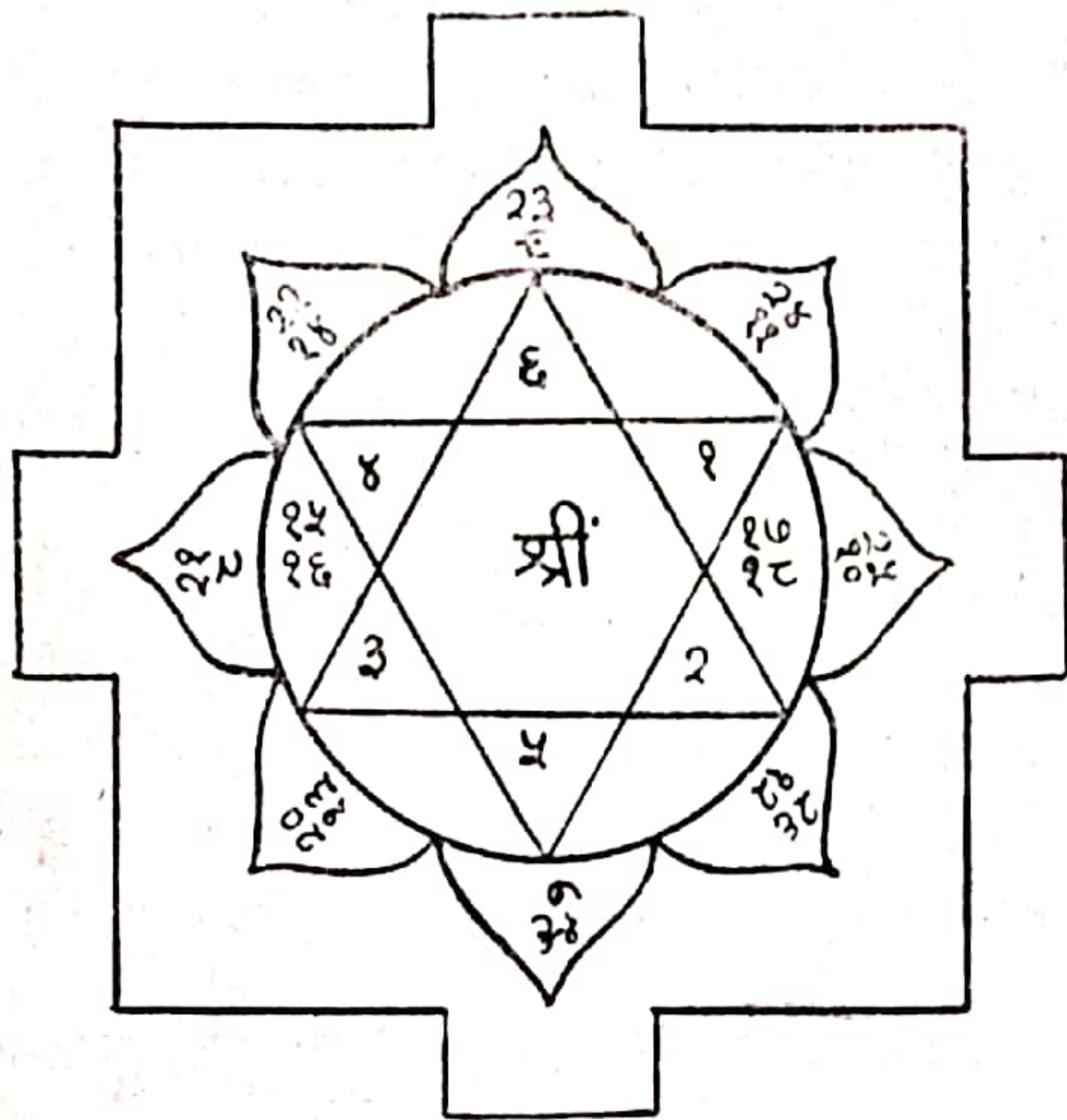
पान का विशेष अनुष्ठान भी प्रतिदिन सम्पन्न किया जाता है, इसमें सद्गुरुदेव में भगवान शंकर की प्रतिमूर्ति देखते हुए यह कार्य सम्पन्न करना है।

सामने रखे जलपात्र में से थोड़ा जल गुरु चरण कमलों का ध्यान करते हुए एक अन्य पात्र में डालें तथा गुरु मन्त्र का जप करें। यह मन्त्र जप करते समय १०८ बार किसी चम्मच द्वारा मूल ताम्रपात्र में से जल लेकर दूसरे पात्र में डालना तत्पश्चात् मूल जलपात्र (कलश) में रखे हुए जल को अपने हाथ में लेकर निम्न मन्त्र का जप कर अमृत पान करना है। इसमें चार मन्त्र हैं और इन चारों मन्त्रों को शुद्ध रूप में पढ़ते हुए यह प्रक्रिया सम्पन्न करनी है—

१- ह्रीं श्रीं शिव शक्ति सदाशिवेश्वर विद्या कलात्मने अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं लृं लॄं एं ऐं ओं औं अं अः ऐं (मूलं) आत्म तत्वेन स्थूलदेहं शोधयामि स्वाहा।

२- ह्रीं श्रीं माला कला विद्या राग कला नियतिपुरुषात्मने कं खं गं घं ङं चं छं जं झं टं ठं डं ढं णं तं थं दं धं नं पं फं बं भं मं क्लीं (मूल) विद्या तत्वेन सूक्ष्म देहं शोधयामि स्वाहा।

३- ह्रीं श्रीं प्रकृत्यहंकार बुद्धि-मनः श्रोत्र त्वक् चक्षु जिह्वा-घ्राण-वाक्-पाणि-पादपायूस्थ शब्द-स्पर्श-रूप-रस-गन्धाकाश-वायग्नि-सलिल भूम्यात्मने यं रं लं वं शं षं सं हं लं क्षं सौः (मूल) शिव तत्वेन पर देहं शोधयामि स्वाहा।

४- ह्रीं श्रीं शिव-शक्ति सदाशिवेश्वर-विद्या-कलात्मने माया-कला-विद्या-राग-काल नियति-पुरुषात्मने प्रकृत्यहंकार- बुद्धि-मनः श्रोत्र-त्वक्-चक्षु जिह्वा-घ्राण-वाक्-पाणि-पाद-पायूस्थ शब्द स्पर्श रूप-रस-गन्धाश वायग्नि-सलिल भूम्यात्मने अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं लृं लॄं एं ऐं ओं औं अं अः कं खं गं घं ङं चं छं जं झं ञं टं ठं डं ढं णं तं थं दं धं नं पं फं बं भं मं यं रं लं वं शं षं सं हं लं क्षं ऐं क्लीं सौः (मूल) सर्व-तत्वेन तत्व-त्र्यान्वित बीजं शोधयामि स्वाहा।

इस प्रकार अमृत पान अनुष्ठान तीनों दिन तक संपन्न करना है, जब तीन दिन का यह अनुष्ठान पूर्ण हो जाय तो चौथे दिन प्रातः लक्ष्मी आरती सम्पन्न करें। पांच कुंवारी कन्याओं को भोजन कराएं और दक्षिणा दें। पूरे साधना के समय दीपक पूरे समय तक निरन्तर अवश्य ही जलते रहना चाहिए। साधना में प्रयुक्त शांकरी माला को विशेष लक्ष्मी साधनाओं हेतु ही प्रयोग में लाएं।

लक्ष्मी साधना का यह विशिष्ट अनुष्ठान हर दृष्टि से सरल एवं विशेष फलदायक है।

काली जयन्ती — (१६-६-६२)

जीवन संवारना है तो सम्पन्न कीजिए

महा चण्डी दिव्य अनुष्ठान

दुर्गा साधना के सम्बन्ध में कई ग्रन्थ प्रकाशित हो चुके हैं, लेकिन विशेष बात यह है कि यह सर्वाधिक महत्वपूर्ण तांत्रोक्त ग्रन्थ है, इस ग्रन्थ की थाह पा लेना असम्भव है। पूज्य गुरुदेव के शिष्यों में दुर्गा महाकाली के साधक विशेष रूप से हैं, उन सबके अनुरोध पर पूज्य गुरुदेव ने महाकाली चण्डी साधना का विशेष अनुष्ठान प्रदान किया वह अक्षरशः प्रस्तुत किया जा रहा है—

जब तक साधक साधना में लीन नहीं हो जाता अपने आपको पूर्ण समर्पण भाव से डुबा नहीं लेता, तब तक साधना में पूर्ण सफलता प्राप्त नहीं होती है, कुछ अनुभूतियां साधकों को बीच-बीच में होती हैं और प्रभाव भी देखने को मिलता है, लेकिन यह अनुभूतियां इतनी क्षीण होती हैं कि साधक शंका आशंका से घिरा रहता है।

भगवती दुर्गा की साधना में समर्पण भाव और जिस रूप से अनुष्ठान सम्पन्न करना है उसी रूप में होना आवश्यक है, मन्त्र शुद्धि, प्राण प्रतिष्ठा, मन्त्र संख्या, पूजन क्रम सभी बातों का ध्यान रखना आवश्यक है। जो साधक साधना में सिद्धि हेतु 'शॉर्टकट' मार्ग चाहता है, वह कभी भी सफलता प्राप्त नहीं कर सकता। जीवन की कुछ विशेष भौतिक बाधाएं, ग्रहों का दोष, दरिद्रता,

मुकदमा, विवाह में रुकावट, रोजगार, कारोबार में बाधा इत्यादि जीवन को कष्टमय बना देते हैं और मेरी यह बात निश्चित मान लीजिए कि जीवन में बाधाओं को हटाने के लिए महादुर्गा का अनुष्ठान व साधना करने के अलावा निश्चित कोई उपाय नहीं है । दुर्गा तो बाधा-हारिणी, शक्ति प्रदायक है, और जहां शक्ति है वहां जान लीजिए कि सब कुछ है ।

चण्डी साधना

चण्डी साधना जो साधक सम्पन्न करता है, उस साधक का स्वरूप ही बदल जाता है, उसकी विचार शक्ति सकारात्मक रूप से कार्य करने लग जाती है और जैसे-जैसे मन्त्र जप अनुष्ठान बढ़ता है, वैसे-वैसे वह नवीनता, दिव्यता अनुभव करता है । चण्डी साधना का यह विशेष अनुष्ठान इस महत्वपूर्ण काली जयन्ती के अतिरिक्त जब भी रवि पुष्य हो, नवरात्रि हो, ग्रहण योग हो, दीपावली का पर्व हो तब भी इसे सम्पन्न किया जा सकता है ।

इस साधना का विशेष विधान है और उसे उसी रूप में सम्पन्न करना चाहिए, मूल प्रयोग ११ दिन का है, कुछ पुस्तकों में इसे बढ़ा कर २१ तथा ४१ दिन का कर दिया गया है । साधना में मूल यन्त्र के अलावा ग्यारह दिन प्रतिदिन अष्टगन्ध से नवीन यन्त्र का निर्माण कर उसकी प्राण प्रतिष्ठा सम्पन्न की जानी आवश्यक है । और यह यन्त्र निर्माण किसी भी कागज पर, भोज पत्र पर अथवा रजतपत्र पर बनाया जा सकता है । यन्त्र निर्माण हेतु जो अष्ट गन्ध का प्रयोग किया जाता है, उसमें आठ वस्तुएं - चन्दन, अगर, केसर, कुंकुंम, गोरोचन, शिलाएस, जटा-मासी तथा कपूर इनको पीस कर यन्त्र निर्माण हेतु स्याही बनाई जाती है। साधना के दौरान संयमित जीवन सात्विक भोजन और भूमि शयन निश्चित रूप से आवश्यक है ।

चण्डी साधना अनुष्ठान में विशेष ध्यान रखने योग्य बात यह है कि साधक अपनी साधना तथा अपनी मनो-कामना दोनों को ही गुप्त रखें ।

इस साधना में नवार्ण मन्त्र सिद्ध **'चण्डी यन्त्र'** जो कि ताम्र पत्र पर अंकित होता है, की स्थापना आवश्यक है, इसके साथ यन्त्र के दोनों ओर **'गणपति चक्र'** तथा **'गायत्री चक्र'** की स्थापना अवश्य करें ।

साधक को जो प्रतिदिन नवीन यन्त्र बनाना है, उसका चित्र नीचे दिया हुआ है जो ताम्र पत्र पर अंकित चण्डी यन्त्र स्थापित है वह तो मन्त्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त है लेकिन साधक को अपने बनाये गये यन्त्रों की नित्य प्राण प्रतिष्ठा करना आवश्यक है ।

इसके साथ ही पूजा में जलपात्र, गंगाजल, धूप, दीप, दूध, घी, पुष्प, शहद, चन्दन, अक्षत, मिष्ठान प्रसाद, सुपारी, फल आवश्यक है ।

साधना विधान

अपने सामने एक लकड़ी का बाजोट बिछा कर उस पर लाल वस्त्र बिछा दें और उसके मध्य में दो थाली रखें एक थाली में ताम्रपत्र अंकित प्राण प्रतिष्ठा युक्त **चण्डी यन्त्र** स्थापित कर यन्त्र के आगे उसी थाली में **गणपति चक्र** तथा **गायत्री चक्र** स्थापित कर दें । धूप दीप जला दें तथा दूसरी थाली में अष्टगन्ध से नीचे दिये गये चित्र के अनु-सार यन्त्र बना कर पूजन कार्य प्रारम्भ करें ।

ओं	ऐं	ओं

ओं	१	९	१०	ओं
श्रीं	१४	७ २ ओं ३ ८	६	क्लीं
ओं	५	११	४	ओं

ओं	क्लीं	ओं

प्राण प्रतिष्ठा

अपना बायां हाथ हृदय पर रखें तथा दाहिने हाथ में पुष्प लेकर यन्त्र को स्पर्श करें तथा निम्न मन्त्र को जोर से बोल कर अवश्य पढ़ें।

ऑ आं ह्रीं क्रौं यं रं लं वं शं षं सं हं हंसः सोऽहं मम प्राणाः इह प्राणाः ऑं आं ह्रीं क्रौं यं रं लं वं शं षं सं हं हंसः सोऽहं सर्व-इन्द्रियाणि इह मम ऑं आं ह्रीं क्रौं यं रं लं वं शं षं सं हं हंसः सोऽहं मम वाक्-मन-चक्षु-श्रोत्र-जिह्वा घ्राण प्राणा इहागत्य सुख चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा।

इसके पश्चात् सर्वप्रथम गणपति पूजन एवं गुरु पूजन सम्पन्न करें, गणपति पूजा स्थापित किये गये गणपति चक्र से करें, तथा गुरु चित्र स्थापित कर गुरु पूजन सम्पन्न करें।

अब सामने दोनों थालियों मे रखे हुए यन्त्रों की पूजा करें, यह पूजा क्रम निम्न प्रकार से रहेगा —

समर्पण मन्त्र

पाद्यं समर्पयामि चण्डी यन्त्रे नमो नमः

अर्घ्यं	,,	,,	,,
आचमनं	,,	,,	,,
गंगाजलं	,,	,,	,,
दुग्धं	,,	,,	,,
घृत	,,	,,	,,
तरु पुष्पं	,,	,,	,,
इक्षु क्षरं	,,	,,	,,
पंचामृतं	,,	,,	,,
गन्धं	,,	,,	,,
अक्षतान्	,,	,,	,,
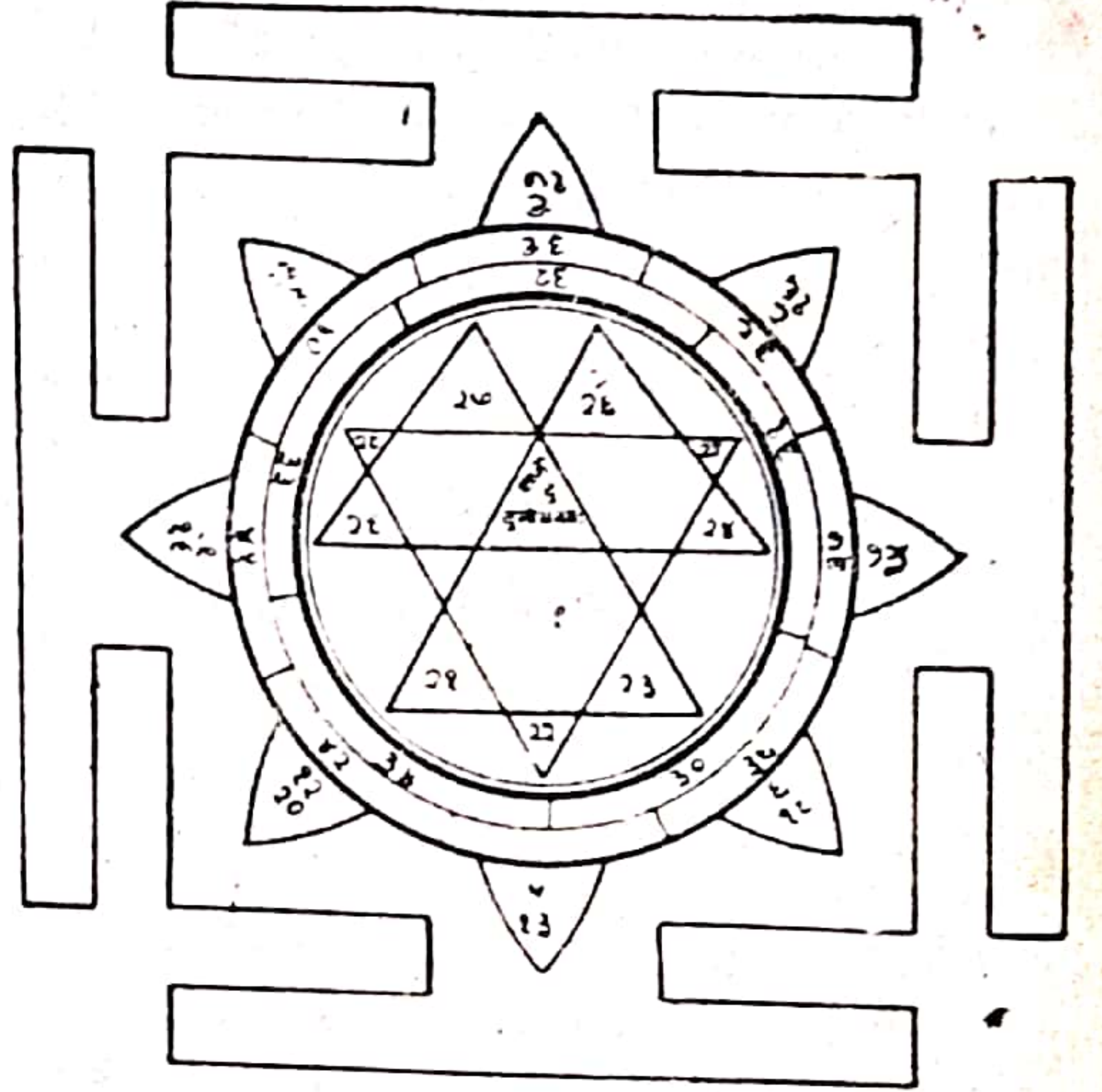
दुर्गा यन्त्र

पुष्प मालां	,,	,,	,,
मिष्ठान्न	,,	,,	,,
द्रव्यं	,,	,,	,,
धूपं	,,	,,	,,
दीपं	,,	,,	,,
पूंगी-फलं	,,	,,	,,
फलं	,,	,,	,,
दक्षिणां	,,	,,	,,

इन मन्त्रों में जिन-जिन वस्तुओं का नाम आया है, वे वस्तुएं अर्पित करते हुए पूजन करना है। तत्पश्चात् दोनों यन्त्रों पर पुष्प चढ़ाएं।

अब साधना का सबसे मूल क्रम प्रारम्भ होता है, इस क्रम में सबसे पहले एक माला गणपति मन्त्र का जप करें—

गणपति मन्त्र

।। ॐ गं गणपतये नमः ।।

Scanned by CamScanner

तत्पश्चात् एक माला गायत्री मन्त्र का जप करें, और इसके बाद मूल मन्त्र का जप ५१ बार या १०८ बार अवश्य करें। इस चण्डी मन्त्र जप में समय अवश्य लगेगा लेकिन साधक शान्त रूप से पूर्ण मन्त्र जप अवश्य सम्पन्न करें।

गायत्री मन्त्र

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गोदेवस्य धीमहि धियो योनः प्रचोदयात् ।।

चण्डी अनुष्ठान मन्त्र

ओं ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे। ओं ग्लौं हुं क्लीं जूं सः ज्वालय ज्वालय ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे। ज्वल हं सं लं क्षं फट् स्वाहा ।।

कुंजिका स्तोत्र

नमस्ते रुद्ररूपिण्यै नमस्ते मधु-मर्दिनी।
नमः कैटभ हारिण्यै नमस्ते महिषा-मर्दिनी।
नमस्ते शम्भु हन्त्र्यै च निशुम्भासुर-घातिनी।
जाग्रतं हि महादेवि ! जप सिद्धि कुरुष्व मे ।।
ऐंकारी सृष्टि रूपायै ह्रींकारी प्रति-पालिका।
क्लींकारी काम-रूपिण्यै बीज-रूपे ! नमोऽस्तु ते।
चामुण्डा चण्डघाती च यैकरी वर-दायिनी।
विच्चे चाभयदा नित्यं नमस्ते मन्त्र रूपिणी।
धां धीं धूं धूर्जटेः पत्नी वां वीं वूं वागधीश्वरी।
क्रां क्रीं क्रूं कालिका-देवि ! शां शीं शूं मे शुभं कुरु।
हुं हुं हुंकार-रूपिण्यै जं जं जं जम्भनादिनी।
भ्रां भ्रीं भ्रूं भैरवी भद्रे ! भवान्यै ते नमो नमः।
अं कं चं टं तं पं यं शं वीं दुं ऐं वीं हं क्षं।
धिजाग्रं धिजाग्रं त्रोटय त्रोटय दीप्तं कुरु कुरु स्वाहा।
पां पीं पूं पार्वति ! पूर्णा खां खीं खूं खेचरी तथा।
सां सीं सूं सप्तशती-देव्या मन्त्र सिद्धिं कुरुष्व मे।

इदं तु कुंजिक-स्तोत्रं मन्त्र जागर्ति हेतवे, अभक्ते नैव दातव्यं गोपितं रक्ष पार्वति ! यस्तु कुंजिकया देवि ! हीनां सप्तशतीं पठेत् न तस्य जायते सिद्धिर अरण्ये रोदनं यथा।

अब कागज पर लिखे यन्त्र को अपने नेत्रों मे लगाएं तथा नमस्कार कर निम्न मन्त्र पढ़ें –

एतस्यास्त्वं प्रसादेन सर्व मान्यो भविष्यसि, सर्व रूप मयी देवी सर्व-देवी-मयं जगत्, अतोऽहं विश्व-रूपां तां नमामि परमेश्वरीम्।

प्रत्येक दिन के पूजा किये हुए यन्त्र को लाल कपड़े में बांध कर अलग रख दें, दूसरे दिन पूजा के समय नये यन्त्र का निर्माण कर इसी क्रम से पूजा सम्पन्न करें। ग्यारहवें दिन पूजा सम्पन्न करने के पश्चात् साधक इन सभी कागज पर अंकित यन्त्रों को ताबीजों में डाल कर बन्द करवा कर प्रथम यन्त्र स्वयं गले में अथवा बांह पर धारण करें बाकी यन्त्र अपने परिवार के सदस्यों में अथवा जनहितार्थ किसी पीड़ित व्यक्तियों को दे दें।

ताम्रपत्र पर अंकित यन्त्र को अपने पूजा स्थान में प्रमुख स्थान पर रखें और अपने नित्य प्रति की पूजा में नमस्कार करते हुए अगरबत्ती, दीपक अवश्य जलाएं।

यह विशेष तांत्रिक अनुष्ठान आस्थावान साधकों के लिए पूर्ण सफलता कारक एवं शीघ्र फलदायक है। जीवन में कभी भी कोई संकट उपस्थित हो तो उस समय भी साधक यदि स्नान कर इस यन्त्र का निर्माण कर विशेष चण्डी मन्त्र का ११ बार उच्चारण कर ले तो भी संकट टल जाता है। ●

Scanned by CamScanner

लक्ष्मी इस संसार में सब तेरी माया है

लक्ष्मी साधना

चार अनूठे सरल प्रयोग

सिद्धि बुद्धि प्रदे देवि ! भुक्ति मुक्ति प्रदायिनी !
मन्त्र मूर्तः सदा देवि ! महालक्ष्मि ! नमोऽस्तुते ।।
आद्यन्त रहिते देवि ! आदिशक्ते ! महेश्वरि !
योगजे योग-सम्भूते ! महालक्ष्मि ! नमोऽस्तुते ।।

लक्ष्मी साधना के कुछ विशेष नियम होते हैं, जिनकी परिपालना अत्यन्त आवश्यक है, आगे चार विशेष प्रयोग दिये जा रहे हैं, इन सरल प्रयोगों का महत्व साधक इन्हें सम्पन्न कर ही समझ सकते हैं —

माया रूपी इस संसार में जो माया है, वह लक्ष्मी ही है, इसके बिना संसार रसहीन, स्वादहीन एवं नीरस हो जाता है और जो लक्ष्मी सिद्धि प्राप्त कर लेता है, वही सांसारिक विजेता माना जाता है, लक्ष्मी साधना के कुछ विशेष नियम हैं, जिनकी पालना तो अत्यन्त आवश्यक है।

लक्ष्मी साधना हेतु भाद्रपद आश्विन एवं कार्तिक माह सर्वश्रेष्ठ माने गये हैं, इन तीन महीनों में नियम से लक्ष्मी साधना करने वाला साधक इच्छित फल अवश्य ही प्राप्त करता है, ऐसा विधान् है कि शुक्ल पक्ष में बृहस्पतिवार श्रेष्ठ माना गया है, और इस दिन यदि पञ्चमी, दशमी तथा पूर्णिमा तिथि हो तो श्रेष्ठ योग कहा गया है। यदि

Scanned by CamScanner

किसी गुरुवार को श्रेष्ठ योग न हो तो रवि तथा सोमवार को लक्ष्मी साधना सम्पन्न की जा सकती है, इसके अतिरिक्त गुरु पुष्य योग भी श्रेष्ठ योग है। आने वाले समय में विजयादशमी, दीपावली के अतिरिक्त लक्ष्मी साधना का सर्वश्रेष्ठ योग आश्विन पूर्णिमा जिसे शरद पूर्णिमा भी कहा जाता है श्रेष्ठतम योग है. यह दिवस और रात्रि संयुक्त रूप से सिद्धि दिवस कहा गया है, इस दिन को जागरी लक्ष्मी साधना सम्पन्न की जाती है।

यह दिवस कुबेर सिद्धि दिवस भी है, शास्त्रोक्त विधान है कि जब भी लक्ष्मी साधना सम्पन्न करें, तो लक्ष्मी के साथ-साथ नारायण और कुबेर की साधना अवश्य सम्पन्न करनी चाहिए। लक्ष्मी की पूजा यदि स्त्री करे तो उसके लिए विशेष सौभाग्य प्राप्त होता है, तथा विवाहित व्यक्ति को जोड़े में अर्थात् पति-पत्नी दोनों को बैठ कर यह साधना सम्पन्न करनी चाहिए। लक्ष्मी अन्नपूर्णा भी कही गई है, और जिसके घर में लक्ष्मी की कृपा होती है वहां धन-धान्य की कमी नहीं रहती, जो साधक लकड़ी के एक बर्तन में चार सेर धान्य भर कर पूर्व दिशा की ओर मुंह कर पुष्पों से सजा कर पूजा करता है, उसके घर-परिवार में धन-धान्य की वृद्धि होती है।

यद्यपि लक्ष्मी तथा सरस्वती के सम्बन्ध में आपसी विरोध की बातें बहुत सारी पुस्तकों में लिखी गई हैं, जब कि वास्तविक स्थिति यह है कि जब भी लक्ष्मी पूजन करें उस दिन प्रातः सरस्वती पूजन अवश्य करनी चाहिए। सरस्वती रहित अर्थात् बुद्धिहीन व्यक्ति के पास लक्ष्मी कभी भी वास नहीं करती, यह ध्यान रहे। लक्ष्मी साधना में सुगन्धित श्वेत पुष्पों का प्रयोग श्रेष्ठ माना गया है, और यदि संभव हो तो कमल पुष्पों द्वारा लक्ष्मी की पूजा सम्पन्न करनी चाहिए, क्योंकि लक्ष्मी का आसन ही कमल है। लक्ष्मी पूजा में घण्टा नहीं बजाना चाहिए। सुगन्धित द्रव्यों द्वारा अपने सामने लक्ष्मी मूर्ति अथवा चित्र को स्वर्ण आभूषण इत्यादि से विभूषित कर लक्ष्मी पूजा करना चाहिए।

आगे के चार प्रयोग लक्ष्मी साधना के सिद्ध लघु प्रयोग है, जिनकी सरलता में ही इनका प्रभाव छिपा है और जो साधक पूर्ण श्रद्धापूर्वक लक्ष्मी साधना के ये प्रयोग सम्पन्न करता है, उसके घर में लक्ष्मी का वास होता है।

१-गौरवर्णा कमलधारिणी लक्ष्मी प्रयोग

यह विशेष प्रयोग शुक्रवार के दिन सम्पन्न किया जाता है तथा लक्ष्मी के गौर स्वरूप की प्रार्थना कर उनका पूजन किया जाता है, साधक स्वयं भी श्वेत वस्त्र पहिनें श्वेत आसन हो, अपने सामने एक सफेद थाली में श्वेत वस्त्र बिछा कर उस पर सवा पाव चावल की ढेरी बनाएं उस पर गिरी का गोला रखें, गोले पर सफेद चन्दन से लक्ष्मी बीज मन्त्र "श्रीं" लिखें तथा गोले का पूजन करें। अपने सामने लक्ष्मी जी का हाथ में कमल पुष्प धारण किये हुए गरुड़ आसन पर बैठी लक्ष्मी का चित्र स्थापित कर उसका पूजन करें।

नारियल के गोले के आगे चावल की तीन ढेरी बनाएं एक ढेरी पर **कुबेर गुटिका**, दूसरी ढेरी पर **लक्ष्मी कमल चक्र** तथा तीसरी ढेरी पर **नारायण सिद्धि फल** स्थापित करें, अब मूल पूजन प्रारम्भ होता है. पूजन से पहले घी का दीपक जला दें तथा जब तक पूजन और मन्त्र जप चलता रहे तब तक यह दीपक अवश्य ही जलते रहना चाहिए। सर्वप्रथम गुरु पूजन सम्पन्न कर गुरु आज्ञा प्राप्त करें, तत्पश्चात् कुबेर पूजन सम्पन्न करे, कुबेर का ध्यान कर निम्न कुबेर मन्त्र की एक माला का जप करें—

मन्त्र

।। ॐ वैश्रवणाय स्वाहा ।।

तत्पश्चात् नारायण पूजन सम्पन्न करें, इस पूजन में **नारायण सिद्धि फल** पर केसर, कुंकुम विशेष रूप से

Scanned by CamScanner

अर्पित करें हाथ में जल लेकर निम्न मन्त्र की एक माला फेरें—

मन्त्र

।। ॐ नमो नारायणाय ।।

अब लक्ष्मी पूजन सम्पन्न होता है, सर्वप्रथम एक पुष्प **लक्ष्मी चक्र** के नीचे स्थापित कर ॐ आधार शक्त्यै कमलधारिण्यै सर्व शक्ति सिद्धयै नमः । मन्त्र बोल कर लक्ष्मी का आह्वान करे तत्पश्चत् आगे दूध का बना नैवेद्य तथा सुपारी, पान, लौंग आदि अर्पण करें, तब हाथ जोड़ कर "श्री महालक्ष्म्यै दीपंदर्शयामि नमः" कह कर लक्ष्मी के आगे दीपक रखें।

अब साधक अपने पास एक कटोरा पुष्पों से भर कर रखें तथा निम्न महामन्त्र बोलते हुए एक-एक पुष्प लक्ष्मी मूर्ति तथा लक्ष्मी चक्र के आगे अर्पित करें—

मन्त्र

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं महालक्ष्म्यै कमल धारिण्यै
गरुड़-वाहिन्यै श्रीं ह्रीं ऐं स्वाहा ।।

इस प्रकार १०८ बार मन्त्र जप करना है और यह प्रयोग सात दिन तक सम्पन्न करना आवश्यक है, यदि १०८ पुष्प की व्यवस्था न हो सके तो साधक १०८ पुष्प पंखुड़ियां भी प्रयोग में ला सकते हैं। यह प्रयोग सिद्ध प्रयोग है और रोजगार, व्यापार आदि से सम्बन्धित बाधा हो तो निश्चय ही दूर हो जाती है और मनोवांछित फल की प्राप्ति होती है।

२- स्वर्ण कान्ती लक्ष्मी प्रयोग

यह प्रयोग उन साधकों के लिए है जो आर्थिक दृष्टि से थोड़े ठीक हैं, लेकिन इतने अधिक उन्नत नहीं हैं कि अपनी इच्छानुसार धन-वैभव प्राप्त कर रहे हों, उन्हें यह प्रयोग अवश्य ही सम्पन्न करना चाहिए।

इस प्रयोग में भगवती लक्ष्मी की स्वर्ण मूर्ति अथवा भगवती लक्ष्मी की अन्य मूर्ति को सम्पूर्ण रूप से स्वर्ण आभूषणों से मण्डित कर पूजन करना आवश्यक है। इस साधना में लक्ष्मी की नौ शक्तियों का भी विशेष पूजन किया जाता है, ये नौ शक्तियां हैं—

१-विभूति, २-उन्नति, ३-कान्ति, ४-सृष्टि, ५-कीर्ति, ६-सन्नति, ७-पुष्टि, ८-उत्कृष्टि, ९-ऋद्धि।

शुक्रवार के दिन प्रातः अपने सामने बाजोट पर अष्ट-गन्ध से कमलदल बनाएं, मध्य में लक्ष्मी मूर्ति जो कि आभूषणों से मण्डित हो, को स्थापित करें, तत्पश्चात नौ चावल की ढेरियां बनाएं और क्रमशः निम्न नौ सामग्रियां रखें—

१-कार्यसिद्धि चक्र, २-उन्नति चक्र, ३-सिद्धि चक्र ४-तांत्रोक्त फल, ५-सर्पाकार मुद्रिका, ६-श्री चक्र, ७-कमला-फल, ८-महालक्ष्मी फल, ९-सर्वसिद्धि चैतन्य चक्र।

अब इन शक्तियों का पूजन निम्न प्रकार से करना है-

विं विभूत्यै। उं उन्नत्यै। कां कान्त्यै। सृं सृष्ट्यै। कीं कीर्त्यै। सं सन्नत्यै। पुं पुष्ट्यै। उं उत्कृष्ट्यै। ऋं ऋद्धयै। श्रीं सर्वशक्ति कमलासनाय। श्रीं महालक्ष्मी अमृत चैतन्य मूर्त्यै।

इस पूजन में लक्ष्मी की प्रत्येक शक्ति को कुंकुम, केसर, पुष्प, फल, चावल, नैवेद्य अर्पण करना है, और प्रत्येक शक्ति के पूजन के साथ उस शक्ति को नमस्कार करते हुए अपनी श्रद्धा व्यक्त करनी है। यह प्रयोग मूल रूप से तो एक लाख पच्चीस हजार मन्त्र जप का है और साधक प्रतिदिन ग्यारह माला सुबह ग्यारह माला शाम अथवा इससे अधिक भी मन्त्र जप **कमलगट्टे की माला**

से सम्पन्न करें। लक्ष्मी साधना में कमलगट्टे की माला का विशेष प्रयोग है।

मन्त्र

श्रीं ह्रीं श्रीं हिरण्यवर्णां हरिणीं सुवर्णां रजत-स्त्रजां। चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह।

प्रतिदिन शाम को गाय को कुछ भोजन अवश्य दें, तथा जब मन्त्र अनुष्ठान पूरा हो जाय तो दशांश हवन अवश्य करें, लक्ष्मी की यह विशेष साधना महा साधना है और साधक को अपरिमित धन-धान्य, कीर्ति, समृद्धि प्रदान करने वाली है। इसे सम्पन्न करने वाला साधक लक्ष्मी कृपा से जीवन में कभी भी वंचित नहीं रहता।

३- कनकधारा यन्त्र साधना
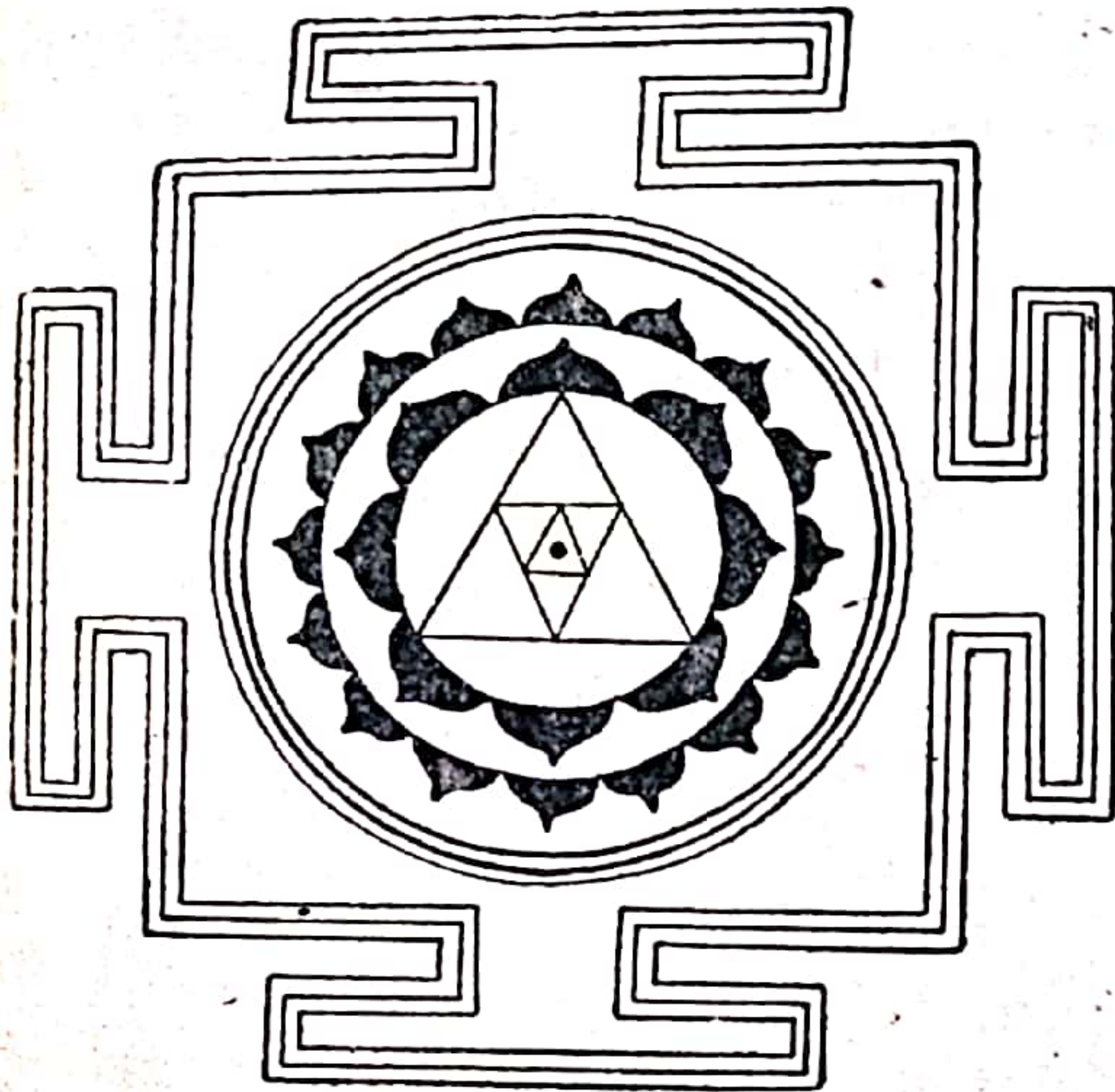
अपने सामने लकड़ी के पीढ़े पर पीला वस्त्र बिछा कर उस पर **कनकधारा यन्त्र** स्थापित कर वस्त्र पर ही चारों ओर 'श्रीं' बीज मन्त्र लिखें, यन्त्र का विधिवत पूजन कर **हल्दी की माला** से निम्न मन्त्र का १०८ बार जप करें—

मन्त्र

॥ ॐ श्रीं महालक्ष्म्यै स्वाहा ॥

तत्पश्चात् श्री सूक्त के तीन पाठ नित्य तथा शुक्रवार को सोलह पाठ करें, इस प्रकार २१ दिन तक मन्त्र जप अनुष्ठान कर हवन करें तो ३८ दिन के भीतर-भीतर इच्छित धन प्राप्त होता है, इसमें कोई संदेह नहीं है, यन्त्र ताम्र पत्र पर अंकित शुद्ध एवं प्राण प्रतिष्ठा युक्त होना चाहिए।

अनुष्ठान के पश्चात् यन्त्र को अपने पूजा स्थान में रख दें और नित्य ११ बार उपरोक्त मन्त्र अवश्य बोलें।

४- भक्ति प्रयोग

ऐसा भी माना गया है कि जो साधक नित्य प्रति किसी देव मन्दिर में जाकर श्रीसूक्त अथवा लक्ष्मी बीज मन्त्र से कमला पूजा सम्पन्न करता है, तो उसे निश्चित रूप से आर्थिक दृष्टि से अनुकूलता प्राप्त होती है इसमें नियम केवल इतना ही है कि यह प्रयोग नित्य प्रति निश्चित समय में सम्पन्न किया जाय इस साधना में संकल्प शक्ति का विशेष महत्व है, ऐसा नहीं है कि कभी सुबह पूजन कर लिया तो कभी शाम को, कोई दिन छुट्टी मना ली। साधना में नियम का पालन अवश्य ही होना चाहिए।

लक्ष्मी साधना के उपरोक्त चारों प्रयोग अत्यन्त सरल प्रयोग हैं और लक्ष्मी अपने भक्तों के गुण अवगुण को न देखते हुए जो उनकी साधना करता है, भक्ति करता है उस पर निश्चित रूप से प्रसन्न होकर शीघ्र फल प्रदान करती है।

Scanned by CamScanner

शारदीय नवरात्रि के अवसर पर

(२७-६-६२ से ४-१०-६२ तक)

सर्व सिद्धिदायक पर्व : भगवती जगदम्बा की आराधना

सिद्धेश्वरी एवं शूलिनी

दो महासाधनाएं

पूज्य गुरुदेव के सान्निध्य में नवरात्रि पर्व मनाने का आनन्द ही कुछ और है, वहां तो शक्ति प्रवाह पूरे वातावरण में रहता है, साधक एक उत्तेजना, एक विद्युत प्रवाह के बीच अपने आपको भुला कर साधना के चरम सीमा पर पहुंच जाता है। जो साधक इस अवसर पर गुरु शक्ति पीठ नहीं पहुंच सकते हैं, उनके लिए पूज्य गुरुदेव ने अपने ही घर में बैठ कर, ये दो साधनाएं करने का आदेश दिये हैं।

भगवती दुर्गा के स्वरूपों में दो शक्ति स्वरूप सबसे अधिक महत्वपूर्ण हैं, इनमें प्रथम है-सिद्धेश्वरी जो कि जीवन में साधक को अभीष्ट सिद्धि प्रदायक है, साधक स्वयं अपने आपको सिद्ध पुरुष बना लेता है, जिससे वह जो भी कार्य हाथ में लेता है, अवश्य ही पूर्ण होता है। दूसरा महत्वपूर्ण स्वरूप है-शूलिनी स्वरूप, जो कि साधक के समस्त रोग, शोक, कष्ट, पीड़ा काटने में समर्थ है। शत्रु सम्बन्धी बाधा, कार्य सम्बन्धी बाधा, धन सम्बन्धी बाधा, पाप दोष निवारण में यही साधना सबसे अधिक अचूक मानी गई है।

Scanned by CamScanner

शारदीय नवरात्रि के सम्बन्ध में अधिक कुछ लिखना यहां आवश्यक नहीं है। क्योंकि यह समय केवल साधना का समय है, इन नौ दिनों में साधक को सब कुछ भुला कर केवल साधना की ओर ध्यान देना चाहिए। जो कार्य अन्य समयों में सिद्ध नहीं होते, वे कार्य इस नवरात्रि में सरल रूप से सिद्ध हो जाते हैं। क्योंकि भगवती दुर्गा तो विद्युत पुंज है, जिसके आकार से करोड़ों चन्द्रमाओं की शान्त और मोहक ज्योति निकलती है, जिसके तेज और वाणी का निरन्तर जप वाक् काम और शक्ति पुंज कहलाता है जो स्वभाव से नित्य एवं समस्त कारणों की मूल कारण है, वही मां दुर्गा साधक के लिए सर्वाधिक महत्वपूर्ण है।

१-शूलिनी दुर्गा साधाना

बाधाओं के निवारण हेतु शूलिनी साधना से सर्वश्रेष्ठ कहा गया हैं। रोग निवारण, शत्रु संहार, आर्थिक बाधा निवारण हेतु साधक जब शूलिनी दुर्गा साधना करता है तो उसे देवी के प्रत्यक्ष दर्शन होते हैं। **महाशैव तन्त्र** में कहा गया है कि—

एतद् यन्त्रं महावीर्य सर्व काम फल-प्रदम्।
युद्धे शत्रु-भये चैव रोगे आपद सकटे॥
समाराध्या शूलिनी वै सर्व कार्याणि साधयेत्॥

अर्थात् जो शूलिनी दुर्गा साधना कर यन्त्र धारण करता है तो यह महाशक्तिमान यन्त्र सभी कामनाओं की पूर्ति करता है। शत्रु रोग, आपत्ति आदि सकटों का मोचन करता है।

यह साधना सोमवार, द्वितीया दिनांक २७-९-९२ को अथवा षष्ठी शुक्रवार, दिनांक २-१०-९२ को प्रारम्भ की जा सकती है।

साधना सामग्री

शास्त्रों के अनुसार साधना स्थल शुद्ध और पवित्र करने के लिए गंगाजल से धो लेना चाहिए या शुद्ध पानी से पवित्र कर लेना चाहिए। फिर साधना स्थल पर ही अच्छी लकड़ी का बाजोट रखना चाहिए और उस पर लाल वस्त्र बिछा कर उसके मध्य में चावलों की ढेरी पर दीपक लगाना चाहिए, यह दीपक इस प्रकार का हो जिसकी आठ बत्तियां हों, अर्थात् पीतल या मिट्टी के एक ही दीपक में एक साथ आठ बत्तियां लगानी चाहिए, जो अष्ट दुर्गाओं का प्रतीक है, पूरा मन्त्र जप इसी दीपक पर ध्यान केन्द्रित करके करना है।

उस बाजोट पर बीच में यह दीपक स्थापित हो और बाजोट के चारों कोने पर चार चावल की ढेरियां बना कर प्रत्येक ढेरी पर एक-एक सुपारी रखें, ये सभी महावीर हैं, जो कि कार्य सिद्धि में पूर्ण सहायक हैं, फिर दीपक के दाहिनी ओर गणेश और बायीं ओर क्षेत्रपाल, चावलों की ढेरी बना कर उस पर सुपारी रख कर गणेश एवं क्षेत्रपाल की भावना मन में रखते हुए उनकी स्थापना करनी चाहिए।

इसके बाद दीपक के आगे उसी बाजोट पर एक पात्र में **शूलिनी यन्त्र** की स्थापना करें, तथा इसके चारों ओर आठ चावल की ढेरियां बना कर उस पर सिन्दूर चढ़ावें तथा **अष्ट शूलिनी शक्ति चक्र** स्थापित करें, ये आठ स्वरूप निम्न हैं, इनका ध्यान करते हुए ही ये चक्र स्थापित करने हैं —

१-दुर्गा, २-विन्ध्यवासिनी, ३ असुर मर्दिनी, ४-पातालवालिनी, ५-युद्ध प्रिया, ६-महायोगेश्वरी, ७-जया, ८-विजया।

इसके अलावा जल पात्र, केसर, कुंकुंम, अक्षत, नारियल, पुष्प, फल और नैवेद्य आदि सामग्री की व्यवस्था पहले से ही करके रख लेनी चाहिए, दीपक में शुद्ध घृत का प्रयोग करना चाहिए।

साधना प्रयोग

साधक स्नान कर शुद्ध वस्त्र धारण कर पूर्व या उत्तर की ओर मुंह कर बैठ जाएं और फिर सर्वप्रथम

Scanned by CamScanner

कुंकुम तथा केसर को मिला कर दीपक की पूजा करें—

ॐ नमो भगवति दीप-ज्योति-त्रिकोण-सध्ये अखण्ड ज्योति अखण्ड त्रिंशतकोटि-देवता-मालिनी-निर्मल, अर्द्ध-रात्रि-निगम-स्तुते, ज्वाला मालिनी दीप ज्योति, सर्व कार्य सिद्धि कुरु कुरु नमः ।।

इसके बाद दीपक को जो आठ बत्तियां लगी हुई हैं, उन अष्ट सिद्धियों की पूजा पुष्पों के माध्यम से करें और प्रत्येक सिद्धि को तीन-तीन पुष्प समर्पित करें, इस प्रकार २४ पुष्प समर्पित किये जाते हैं—

ॐ श्रीं ह्रीं अणिमा सिद्धयै नमः ।
ॐ श्रीं ह्रीं गरिमा सिद्धयै नमः ।
ॐ श्रीं ह्रीं महिमा सिद्धयै नमः ।
ॐ श्रीं ह्रीं लघिमा सिद्धयै नमः ।
ॐ श्रीं ह्रीं प्राप्ति सिद्धयै नमः ।
ॐ श्रीं ह्रीं प्राकाम्य सिद्धयै नमः।
ॐ श्रीं ह्रीं ईशित्व सिद्धयै नमः ।
ॐ श्रीं ह्रीं वशित्व सिद्धयै नमः ।

इसके बाद तीन पुष्प पात्र में स्थापित यन्त्र को निम्न मन्त्र का उच्चारण करते हुए समर्पित करें—

।। ॐ ह्रीं श्रीं सर्व सिद्धि दात्र्यै नमः ।।

इसके बाद जो यन्त्र स्थापित किया हुआ है उनके नैऋत्य कोण में एक चावल की ढेरी बना कर उस पर महासिंह का आह्वान इस मन्त्र से करें—

ॐ आं वज्र नख वज्र दष्ट्रायुधाय
महा-सिंहाय हुं फट् नमः ।

इस प्रकार पूजन कर साधक अपने गुरु के चित्र को स्थापित कर उसका संक्षिप्त पूजन करें, गुरु चरणों का ध्यान कर यह इच्छा प्रकट करें कि उसे शूलिनी साधना में सिद्धि प्राप्त हो ।

इसके बाद सामने जो दीपक लगा हुआ है, उस दीपक की सामने वाली ज्योति पर शूलिनी दुर्गा का ध्यान निम्न निम्न प्रकार से करें—

ध्यान

विभ्राणां शूल-बाणान् असि-हरि-परिघा चाप-पाशान्-कराभ्य,
वन्दे सिंहाधिरूढां मम जननीमहं, श्रद्धया वीर-मद्राम् ।
एषां माता सर्वेषां सुर-मुनि विनुता शत्रु संहार दक्षा,
नित्या बुद्धा विशुद्धा ज्वलयतु सततं मामकं चित्त दीपम् ।।

विशेष चिन्तन

साधक को दीपक के सामने की ज्योति में दृष्टि रखते हुए, यह ध्यान तब तक करते रहना चाहिए जब तक कि दीपक में भगवती शूलिनी के दर्शन न हो जाय, इसके लिए यदि साधक चाहें तो त्रिशूल के आकार का दीपक तैयार करवा सकते हैं, और एक ही दीपक में जो आठ बत्तियां लगाई जाती हैं उनमें से बाकी बत्तियां भले ही धीमी गति से प्रज्वलित हों पर सामने जो दीप शिखा है वह रुई की मोटी बाती हो, जिससे कि लौ थोड़ी ऊंची उठी हुई रह सके और उसमें भगवती शूलिनी के साक्षात् दर्शन हो सकें।

कई साधकों को तो ११ बार या २१ बार ध्यान करने पर ही दर्शन या ज्वाला रूप में प्रकाश दिखाई दे जाता है, अतः साधकों से पूर्ण मनोयोग पूर्वक इस ध्यान का उच्चारण करना चाहिए, ज्यादा से ज्यादा २१ बार उच्चारण कर सकता है ।

यह साधना रात्रि को या दिन को कभी भी सम्पन्न की जा सकती है, इसके बाद साधक को चाहिए कि वह तांत्रोक्त चण्डी माला से १०८ माला मन्त्र जप करें, इसमें दो विधान हैं, साधक एक ही रात में १०८ माला मन्त्र जप करे या पहले दिन ५४ माला मन्त्र जप करें और शेष दूसरे दिन ५४ माला मन्त्र जप कर साधना को पूर्णता प्रदान करे ।

दूसरे दिन भी साधक मन्त्र जप कर सकता है, पर दिन को ही मन्त्र जप करना चाहिए और मन्त्र जप के

Scanned by CamScanner

बाद १०८ आहुतियां मूल मन्त्र की दी जानी चाहिए।

किसी पात्र में अग्नि को स्थापित कर एक पात्र में तिल, चावल, शहद, गुड़ और राई मिला कर उसमें घी डाल कर मूल मन्त्र के साथ १०८ आहुतियां दी जानी चाहिए।

मूल मन्त्र

।। ॐ ऐं श्रीं क्लीं ह्रीं क्ष्मूं दुं दुर्गायै नमः ।।

दूसरे दिन जब मन्त्र जप पूरा हो जाय तब तक अखण्ड दीपक जलते रहना चाहिए, साधक प्रथम दिन रात्रि को साधना प्रारम्भ करें और दूसरे दिन सुबह स्नान आदि से निवृत्त होकर शेष मन्त्र जप सम्पन्न कर १०८ आहुतियां पूरी कर दें, इस प्रकार यह साधना सम्पन्न हो जाती है।

साधना सम्पन्न करने के बाद यदि सम्भव हो तो किसी ब्राह्मण के यहां भोजन सामग्री भिजवा देनी चाहिए, अथवा किसी कुमारी कन्या को घर में बुला कर उसे भोजन करा कर यथोचित वस्त्र दक्षिणा आदि प्रदान करनी चाहिए, यदि यह सभव न हो तो किसी मन्दिर में जाकर संक्षिप्त भेंट करके साधना सम्पन्न माननी चाहिए।

इसके बाद इस यन्त्र को धागे में पिरो कर अपने गले में बांध लेना चाहिए, या पूजा स्थान में रख देना चाहिए, दीपक में धीरे-धीरे घी समाप्त होने पर अपने आप विसर्जित होने पर उठा कर एक तरफ रख दें, या मिट्टी का दीपक हो तो बाहर फेंक दें, लाल वस्त्र और उस पर जो चावलों की ढेरियां बनाई थी उन सब को इसी लाल वस्त्र में बांध कर किसी मन्दिर में रख देना चाहिए अथवा तालाब में विसर्जित कर देना चाहिए।

वास्तव में शत्रु संहार, रोग निवारण, साधना सिद्धि और प्रत्यक्ष दर्शन के लिए यह पूर्ण सफल और समस्त कार्यों में सिद्धि प्रदायक साधना है।

२-सिद्धेश्वरी साधना

सिद्धेश्वरी साधना जीवन में तीव्र गति से सफलता प्राप्त करने की, अपने कार्यों में सिद्धि प्राप्त करने की साधना है। जब जीवन में एक बार सिद्धि तत्व का समावेश हो जाता है, तो आगे सभी कार्य अपने आप सफल होने लगते हैं। पूर्ण सिद्धि पुरुष बनने के लिए सिद्धेश्वरी साधना से अतिरिक्त अन्य कोई साधना नहीं है। उच्चाटन आकर्षण, कामना-पूर्ति, परिवार रक्षा, शत्रु नाश, स्तम्भन, वशीकरण आदि सभी कार्य इस साधना से सफल होते हैं।

नवरात्रि में विशेष विधान

नवरात्रि के आठ दिनों में यह साधना एक बार अथवा एक से अधिक बार सम्पन्न कर सकता है, इसमें जीवन की विशेष आधार शक्तियों की, नवग्रहों का पूजन किया जाता है, जिससे आधार शक्ति प्रबल होती है, नवग्रह बाधा शान्त होती है।

विधान

यह साधना नवरात्रि के प्रथम दिन अथवा चतुर्थी को प्रारम्भ करनी चाहिए और अष्टमी के दिन इसकी पूर्णाहुति सम्पन्न करें। अपने सामने बाई ओर एक बाजोट पर पांच चावल की ढेरी बना कर उस पर पांच सुपारी स्थापित करें और निम्न उच्चारण करें—

१-पृथिव्यै नमः, २-आधार शक्त्यै नमः, ३-अनन्ताय नमः, ४-कूर्माय नमः, ५-शेष नागाय नमः,

इस प्रकार से इन पांचों को स्थापित करते हुए इनको प्रणाम करें।

फिर हाथ में जल लेकर संकल्प करें कि मैं समस्त कामनाओं की पूर्ति और पूर्णतः भोग, यश, सम्मान के साथ मनोवांछित कामना पूर्ति के लिए मैं अमुक गोत्र का व्यक्ति अमुक नाम का साधक यह साधना सम्पन्न कर रहा

Scanned by CamScanner

हूं।

फिर अपनी दाहिनी ओर एक दूसरे बाजोट पर मन्त्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त **नवग्रह यन्त्र** स्थापित करें, प्रत्येक ग्रह के शान्ति हेतु सामने सुपारी दक्षिणा तथा नैवेद्य रखें और प्रत्येक ग्रह का ध्यान कर हाथ जोड़ कर प्रणाम करें—

१-श्री सूर्याय नमः, २-श्री चन्द्राय नमः, ३-श्री भौमाय नमः, ४-श्री बुधाय नमः, ५-श्री गुरवे नमः, ६-श्री शुक्राय नमः, ७-श्री शनिश्चर्यै नमः, ८-श्री राहवे नमः, ९-श्री केतवे नमः।

इस प्रकार नवग्रहों का पूजन कर गुरु ध्यान कर गुरु पूजन सम्पन्न करें।

सिद्धेश्वरी बिधान

अब अपने सामने एक पात्र में सिद्धेश्वरी साधना से सम्बन्धित तीन प्रमुख वस्तुएं पूर्ण भक्ति भाव सहित स्थापित करें, इस हेतु पात्र के मध्य में कुंकुंम से एक त्रिकोण बनाएं, सबसे ऊपर मन्त्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त **सिद्धेश्वरी सिद्धि चक्र** स्थापित करें नीचे त्रिकोण के दोनों बिन्दुओं पर **सिद्धेश्वरी तांत्रोक्त फल** तथा तीसरे कोने पर **सिद्धेश्वरी वशीकरण चक्र** स्थापित करें और मध्य में शुद्ध घी का एक दीपक स्थापित करें।

साधना में इन तीनों वस्तुओं की विशेष उपयोगिता है, **सिद्धेश्वरी यन्त्र** सर्व सिद्धि प्रदाता है, **सिद्धेश्वरी तांत्रोक्त फल** उच्चाटन, स्तम्भन के लिए प्रयोग होता है, और **सिद्धेश्वरी वशीकरण चक्र** आकर्षण तथा मनो-हारी कार्यों के लिए सिद्धि प्रदाता।

अब हाथ में पुष्प लेकर सिद्धेश्वरी देवी का ध्यान करें और यन्त्र के आगे केसर का तिलक कर अक्षत, पुष्प, नैवेद्य चढ़ाएं। तांत्रोक्त फल के आगे सरसों, काले तिल तथा काली मिर्च अर्पण करें तथा सिद्धेश्वरी वशीकरण चक्र के आगे सिन्दूर, सुगन्धित पुष्प तथा काजल से पूजन करें।

अब सिद्धेश्वरी देवी का आह्वान करना चाहिए। यह मन्त्र इस साधना में सर्वाधिक महत्वपूर्ण है, यह आह्वान मन्त्र २१ बार अवश्य ही उच्चारण करना चाहिए।

आह्वान मन्त्र

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सिद्धेश्वरी सर्व जन मनोहारिणी दुष्ट जन मुख स्तम्भनी सर्व स्त्री पुरुषार्कषिणी शत्रु भाग्यं त्रोटय त्रोटय सर्व शत्रून् भंजय भंजय सर्व शत्रून् दलय दलय निर्दलय निर्दलय स्तम्भय स्तम्भय उच्चाटय उच्चाटय सर्व जन वशं कुरु कुरु स्वाहा। देवि सिद्धेश्वरि इहागच्छ इहातिष्ठ मम मनोवांछित कामना सिद्धयर्थ मम सपरिवारं रक्ष रक्ष सिद्धि देहि देहि नमः।

अब साधक पुनः सिद्धेश्वरी देवी को नारियल की गिरी का नैवेद्य अर्पित करें तथा अपने हाथ में जल लेकर जिस कार्य हेतु, जिस कामना हेतु, जिस इच्छा हेतु जो अनुष्ठान सम्पन्न करना चाहता है वह संकल्प अवश्य बोलें।

विनियोग

ॐ अस्य श्री सिद्धेश्वरी महामाया वशिष्ठ ऋषिः श्री सिद्धेश्वरी देवता, सकल कार्यार्थ सिद्धये जपे विनियोगः।

कई स्थानों पर सिद्धेश्वरी कवच का विशेष महत्व दिया गया है, लेकिन सिद्धेश्वरी साधना में सिद्धेश्वरी की शक्तियों की ही पूजा की जानी चाहिए। और इस हेतु दोनों ओर एक-एक पुष्प रख कर निम्न मन्त्रों द्वारा सिद्धेश्वरी शक्तियों का आह्वान तथा पूजन करना चाहिए। साधना के समय दीपक निरन्तर जलते रहना चाहिए।

अपने बायीं ओर सिद्धेश्वरी की निम्न शक्तियों का ध्यान करते हुए आह्वान निम्न मन्त्र बोलते हुए करना

चाहिए।

वाम दिशा में

ॐ कालिकायै नमः, ॐ सिद्धेश्वर्यै नमः, ॐ तारायै नमः, ॐ भगवत्यै नमः, ॐ बगला मुख्यै नमः, ॐ कुंजिकायै नमः, ॐशीतलायै नमः, ॐ त्रिपुरयै नमः, ॐ मात्रिकायै नमः, ॐ लक्ष्म्यै नमः, ॐ दिगीशायै नमः।

मध्यै

ऐं ह्रीं श्रीं हिलि हिलि बन्दी-देव्यै नम, ॐ सम्मोहिन्यै नमः, ॐ मोहिन्यै नमः, ॐ विमोहिन्यै नमः, ॐ वस्वादि-षडंगेस्यो नमः, ॐ ब्राह्मणेभ्यो नमः, ॐ विष्णवेभ्यो नमः, ॐ शिवायै नमः, ॐ उर्वश्यै नमः, ॐ मंजुघोषायै नमः, ॐ सहजन्यै नमः, ॐ सुकेशिन्यै नमः, ॐ तिलोत्तमायै नमः, ॐ गुप्तायै नमः, ॐ सिद्ध कन्याभ्यो नमः ॐ किन्नरीभ्यो नमः, ॐ नाग कन्याभ्यो नमः, ॐ विद्याधरीभ्यो नमः, ॐ किंपुरुषेभ्यो नमः, ॐ यक्षिणीभ्यो नमः, ॐ पिशाचीभ्यो नमः, ॐ ब्रह्माण्यै नमः, ॐ वैष्णव्यै नमः, ॐ इष्ट शान्तयै नम, ॐ गुणाय नमः, ॐ क्रिया शान्त्यै नमः, ॐ ज्ञान शक्त्यै नमः, ॐ रजोगुणायै नमः, ॐ तमोगुणायै नमः।

अर्पण के लिए जल देकर अक्षत, पुष्प, धूप, दीप और नैवेद्य प्रदान करें।

दक्षिण (दाहिनी) दिशा में

निम्न नाम मन्त्रों से पुष्पाक्षत प्रदान करें—

ॐ ह्लं कार्येभ्यो नमः, ॐ खेचरीभ्यो नमः, ॐ चण्डाख्यायै नमः, ॐ अक्षोहिण्यै नमः, ॐ हुंकार्यै नमः, ॐ क्षेमकार्यै नमः, ॐ पंच भैरवीभ्यो नमः, ॐ सिद्धेश्वर्यै नमः, ॐ तारायै नमः, ॐ भगवत्यै नमः, ॐ बगलामुख्यै नमः, ॐ कुंजिकायै नमः, ॐ शीतलायै नमः, ॐ त्रिपुण्यै नमः, ॐ मातृ वृकायै नमः, ॐ लक्ष्म्यै नमः, ॐ जगदीशायै नमः।

पश्चिम दिशा में

ऐं ह्रीं श्रीं हिलि हिलि बन्दी देव्यै नमः। ॐ सम्मोहिन्यै नमः, ॐ मोहिन्यै नमः, ॐ विमोहिन्यै नमः, ॐ वस्वादि षडंगेभ्यो नमः, ॐ ब्राह्मणेभ्यो नमः, ॐ वैष्णवीभ्यो नमः, ॐ शिवायै नम।, ॐ उर्वश्यै नमः, ॐ मेनकायै नमः, ॐ रम्भायै नमः, ॐ धृताच्यै नमः, ॐ मंजुघोषायै नमः, ॐ सहजन्यै नमः, ॐ सुकेशिन्यै नमः, ॐ महा भैरवीभ्यो नमः, ॐ इन्द्राण्यै नमः, ॐ असितांगायै नमः, ॐ संहारिण्यै नम, ॐ छिन्नमस्तकायै नमः।

अब साधक उन सभी शक्तियों का पूजन कर अपने हाथ में दीपक लेकर सकल्प करें कि मैं यह साधना अपने कार्य सिद्धि हेतु सिद्धेश्वरी देवी को समर्पित करता हूं, सिद्धेश्वरी देवी प्रसन्न हों।

साधक यह साधना नवरात्रि में एक से अधिक बार सम्पन्न कर सकते हैं। नवरात्रि में इस साधना का सर्वोत्कृष्ट फल प्राप्त होता है।

नवरात्रि और नवार्ण मन्त्र

शाक्त विज्ञान भगवती दुर्गा का ही सम्पूर्ण स्वरूप है और इसका मूल मन्त्र नवार्ण मन्त्र है। नवरात्रि में ही पूजा क्यों? और नवार्ण मन्त्र का शक्ति स्वरूप अर्थ क्या है? यह जानना आवश्यक है।

आद्या शक्ति मां जगदम्बा भगवती स्वयं कहती हैं—

शरत्काले महापूजा क्रियते या च वार्षिकी।
तस्यां ममेतन्माहात्म्यं श्रुत्वा भक्ति समन्वितः॥
सर्वाबाधा विनिर्मुक्तो धनधान्य समन्वितः।
मनुष्यो मत्प्रसादेन भविष्यति न संशयः॥

"शरद ऋतु में अर्थात् शारदीय नवरात्रि में जो साधक पूर्ण भक्ति भाव से मेरी पूजा साधना करता है तो वह मेरी कृपा से सभी बाधाओं से मुक्त हो जाता है। धन-धान्य, पशु, पुत्र-लाभ और सम्पत्ति से सम्पन्न हो जाता है।

यहां यह ध्यान देने योग्य बात है कि नवरात्रि साधना आदि शक्ति भगवती की उपासना से साधक को भुक्ति अर्थात् भोग और मुक्ति अर्थात् मोक्ष दोनों ही कार्यों में पूर्णता प्राप्त होती है। उपरोक्त श्लोक में मां स्वयं साधक को सम्पूर्ण भोगों का आशीर्वाद दे रही है।

वर्ष में दो नवरात्रियां सबसे अधिक प्रमुख मानी गई हैं। शरद् काल के प्रारम्भ में शारदीय नवरात्रि तथा वर्ष के प्रारम्भ में चैत्र नवरात्रि। दुर्गा सप्तशती में जो सात सौ श्लोक हैं, उनमें महाकाली, महालक्ष्मी, महासरस्वती के स्वरूपों का विधान है और शेष रह जाता है नवरात्रि में तथा इस दुर्गा सप्तशती के पाठ के पहले अनिवार्य रूप से किया जाने वाला नवार्ण मन्त्र का जप। ये दोनों विषय ही दुर्गा पूजा के प्रमुख बिन्दु हैं।

नवरात्रि का तात्पर्य

नवरात्रि शब्द दो अक्षरों से मिल कर बना है, अर्थात् नव+रात्रि, नव शब्द संख्यात्मक है और रात्रि का अर्थ है-काल विशेष। इस प्रकार नवरात्रि शब्द में संख्या तथा काल अर्थात् समय का अद्भुत् संयोग है।

नवरात्रि में अखण्ड दीपक जला कर हम अपनी इस "नव की संख्या" पर जो रात्रि का अन्धकार का आवरण छा गया है उसे अप्रत्यक्षतः साधना से हटा कर उसे "विजया के रूप" आत्म विजय का उत्सव मनाते हैं। ध्यान रहे कि यह 'नव सख्या" अखण्ड तथा एक रस ब्रह्म स्वरूप ही है। नौ के किसी भी गुणनफल में अर्थात्— ९, १८–१+८=९, २७–२+७=९, ३६–३+६=९, ४५-४+५=९, ५४-५+४=९, ६३–६+३=९,

Scanned by CamScanner

७२–७+२=९, ८१–८+१=९, इस प्रकार सब 'नव' की माया है।

भारतीय शास्त्रों के अनुसार वर्ष को ३६० दिनों का माना गया है और इसमें यदि नव की संख्या का भाग देंगे तो उत्तर४० नवरात्रि आएंगे। तांत्रिक शास्त्र के अनुसार भी ४० की संख्या का विशेष महत्व है। ४० दिनों का एक मण्डल कहलाता है और कोई भी विशेष अनुष्ठान हो ता ४० दिन तक जप करने से ही पूर्ण सफलता प्राप्त होती है। और ४० का दशांश अर्थात् शून्य हटा देने से चार बचता है, और ये चार ही प्रधान नवरात्रि हैं—१-चैत्र नवरात्रि, २-आषाढ़ नवरात्रि, ३-आश्विन नवरात्रि तथा ४-पौष नवरात्रि के स्वरूप हैं और ये चारों मनुष्य के जीवन के चार प्रधान पुरुषार्थ-धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष के प्रतीक हैं। इनमें भी धर्म का समन्वय अर्थ से है और काम का समन्वय मोक्ष से है, इस प्रकार मुख्य पुरुषार्थ दो ही नवरात्रि बचते हैं–१-वार्षिक या वासन्तिक नवरात्रि (चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से नवमी तक), २-शारदीय नवरात्रि (आश्विन शुक्ल प्रतिपदा से नवमी तक)।

इन दोनों नवरात्रियों की प्रमुखता का विशेष कारण है। मानव जीवन में छः ऋतुओं में से दो ऋतुएं प्रमुख हैं, १-शीत ऋतु, २-ग्रीष्म ऋतु। और दोनों नवरात्रि के युग्म से प्रकृति द्वारा एक में गेहूं अर्थात् (अग्नि) और दूसरे से चावल अर्थात् (सोम) तत्व का उपहार प्राप्त होता है। इसी कारण चैत्र नवरात्रि- १-नवगौरी या परब्रह्म-श्रीराम की नवरात्रि और २-नवदुर्गा या सबकी आराध्या महालक्ष्मी की नवरात्रि के रूप में सर्वमान्य है। इसमें भी किसी प्रकार का कोई भेद न रहे, इस कारण शक्ति तत्व की साधना हेतु भगवती दुर्गा ने अपने स्वयं के वचनों द्वारा ऊपर लिखे श्लोक में शारदीय नवरात्रि की उपासना की बात कही है।

नवार्ण मन्त्र

॥ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे ॥

साधक के लिए यह आवश्यक है कि उसे मन्त्र का पूर्ण अर्थ प्राप्त हो क्योंकि शब्द राशि के अर्थ की भावना ही उसका वास्तविक जप है, अर्थ भावनात्मक मन्त्र जप है. अर्थ भावनात्मक मन्त्र जप से ही इष्ट देव का साक्षात्कार होता है।

"ऐं" यह सरस्वती बीज है, इसमें दो ही अंश हैं–ऐ+बिन्दु। ऐ का अर्थ है सरस्वती और बिन्दु का अर्थ है दुःख नाशक। अर्थात् सरस्वती हमारे दुःख को दूर करें।

"ह्रीं" बीज मन्त्र भुवनेश्वरी बीज मन्त्र है और इस बीज मन्त्र का तात्पर्य है महालक्ष्मी। सदुपात्मक महालक्ष्मी स्वरूप।

"क्लीं" यह कृष्ण बीज, काली बीज एवं काम बीज माना गया है, इसमें क, ल, ई और बिन्दु, चार अंश हैं, जिसका है–कृष्ण या काम, सर्वश्रेष्ठ या इन्द्र, कमनीय, तुष्टी और सुखकर, अर्थात् कमनीय कृष्ण हमें सुख और तुष्टि-पुष्टि दें।

"चामुण्डायै" में चा–चित्त, मु–मूर्त सद्रूप और ण्डा (न्दा)–आनन्द रूप। अर्थात् सत् चित् आनन्द रूपा चामुण्डा देवी को। विच्चे-विद् अर्थात् जानने योग्य 'च'-चिन्तयाम अर्थात् चिन्तन करें। 'ई' अर्थात् गच्छाम् चेष्टा करें, इसमें भी अन्तिम 'ई' शब्द का तात्पर्य है कि (यान्चामहें) अर्थात् याचना करते हैं।

इस प्रकार पूरे मन्त्र का भावार्थ यह निकलता है कि हम महाकाली, महालक्ष्मी तथा महासरस्वती नामक तीन मूर्तियों से विशेष तथा सत्तचित्त आनन्ददायक आध्यायोग माया को प्राप्त करने के लिए पूजा एवं ध्यान द्वारा उसे जानते हैं, याचना करते हैं, यही शक्ति पूर्ण शक्ति है और यह भावना सद्गुरुदेव द्वारा ही शिष्य में प्रवाहित की जाती है। **भावनोपनिषद** में लिखा है कि—श्रीगुरुः सर्वकारणभूता शक्तिः। तेन नवरंध्ररूपो देहः।

शक्ति उपासना में समस्त क्रियाओं के कारणभूत शक्ति श्री गुरुदेव ही हैं और उनके साथ नवरन्ध्र रूप देह अभिन्न है।

लक्ष्मी की नौ कलाएं

विभूति, नम्रता, कान्ति, तुष्टि, कीर्ति, सन्नति, पुष्टि, उत्कृष्टि तथा ऋद्धि, लक्ष्मी की ये नौ पीठ, नौ कलाएं हैं, जिस व्यक्ति में इन पीठ शक्तियों का विकास होता है, वहीं लक्ष्मी विराजमान होती है

सांसारिक कर्त्तव्य करते हुए दान रूपी कर्त्तव्य जहां विद्यमान होता है, अर्थात् शिक्षा दान, रोगी सेवा, जल दान इत्यादि कर्त्तव्य लक्ष्मी की **'विभूति'** नामक लक्ष्मी पीठिका है, यह लक्ष्मी निवास की पहली शक्ति है, दूसरी शक्ति **'नम्रता'** है, जितना व्यक्ति नम्र होता है, लक्ष्मी उसे उतना ही ऊंचा उठाती है । जब 'विभूति' व 'नम्रता' दोनों कलाएं आ जाती हैं, तो वह लक्ष्मी की तीसरी कला **'कान्ति'** का पात्र हो जाता है, चेहरे पर एक तेज आता है और इन तीनों कलाओं की प्राप्ति होने पर **'तुष्टि'** नामक चतुर्थ कला का आगमन होता है, वाणी सिद्धि, व्यवहार, गति, नये-नये कार्य पुत्र प्राप्ति, नई दिव्यता सब उसमें एकरस होती हैं। इसके बाद आगमन होता है लक्ष्मी की पांचवीं पीठ अधिष्ठात्री कला **'कीर्ति'** का, कीर्ति की उपासना करने से साधक अपने जीवन में धन्य हो जाता है, संसार के आधार का अधिकारी हो जाता है ।

कीर्ति साधना से लक्ष्मी की छटी कला **'सन्नति'** मुग्ध होकर विराजमान होती है, और इसके बाद आगमन होता है **'पुष्टि'** नामक सातवीं कला का, जिससे साधक जीवन में एक संतुष्टि अनुभव करता है । उसे अपने जीवन का सार मालूम पड़ता है, फिर इसकी साधना से उत्पन्न होती है आठवीं कला जिसे **'उत्कृष्टि'** नाम प्राप्त है, जिसके जीवन में जो क्षय दोष होता है, वह समाप्त हो जाता है । केवल वृद्धि ही वृद्धि होती है, और इसके पश्चात् सबसे महत्वपूर्ण सर्वोत्तम **'ऋद्धि'** नामक पीठाधिष्ठात्री अपने आप आ ही जाती है ।

इन नौ पीठों, नौ कलाओं से हीन व्यक्ति के पास लक्ष्मी नहीं आ सकती और न ही स्थायी रहती है, लेकिन इन नौ पीठ शक्तियों का आधार है **"दया"** और जहां दया की साधना है वहां सब कुछ है, क्योंकि दया के गर्भ में ही तो महालक्ष्मी और विष्णुपद विराजमान है ।

जो आपत्ति झेलने में, कष्ट उठाने में, परिश्रम करने में सहनशील नहीं है, उस पर भगवती लक्ष्मी कभी प्रसन्न नहीं रहती । ●

सर्व बाधा निवारण एवं ज्ञान सिद्धि हेंतु

शक्ति दुर्गा प्रयोग

सर्व बाधा निवारण एवं विशेष ज्ञान प्राप्ति हेतु साधक को वन दुर्गा साधना का यह लघु प्रयोग अवश्य ही सम्पन्न करना चाहिए, इससे उसके जीवन में आने वाली बाधाओं का नाश होता है।

यह प्रयोग किसी भी दिन रात ९ बजे के बाद प्रारम्भ करें पूजा स्थान में अपने सामने भगवती दुर्गा का एक बड़ा चित्र अथवा तस्वीर लगावें, तत्पश्चात् चित्र के सामने एक पात्र में **'सर्व बाधा मुक्ति यन्त्र' 'जीवन दुर्गा शक्ति फल'** स्थापित कर आगे शुद्ध घी का दीपक और अगरबत्ती जलावें, यन्त्र एवं फल की पूजा केवल दूब (दुर्वा), इलायची एवं अष्टगन्ध से करें। प्रसाद रूप में केवल फलों का ही अर्पण करना है।

अब हाथ में जल लेकर संकल्प लें और जिस बाधा की शान्ति चाहते हैं वह बाधा विशेष रूप से दोहराएं।

संकल्प

ॐ ह्रीं सर्वा-बाधा इति मन्त्रस्य किरात ईश्वर ऋषि:, अनुष्टुप् छन्द:, आं आं बीजम्, ई ई शक्ति:, ऊं ऊं कीलकं, महाविद्या वनदुर्गा देवता, मम (अमुक) गोत्रस्य स्वाभीष्ट सिद्धयर्थं जपे विनियोग:।

ध्यान

चार भुजाओं वाली, चन्द्रमा की कलाओं जैसी शोभायमान, उन्नत स्तनों वाली, कुंकुम की लालिमा के समान रक्तवर्ण वाली, कमल के समान आंखों वाली, धनुष, बाण, अंकुश और पाश हाथों में ली हुई, लोकमाता भगवती दुर्गा को मैं नमस्कार करता हूं।

न्यास	कर-न्यास	अंग-न्यास
ॐ आं ह्रीं क्रौं सर्वा बाधा विनिर्मुक्तो क्रौं ह्रीं आं ॐ	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
ॐ आं ह्रीं क्रौं धन-धान्य समन्वित: क्रौं ह्रीं आं ॐ	तर्जनीभ्यां नमः	शिरसे स्वाहा
ॐ आं ह्रीं क्रौं मनुष्यो क्रौं ह्रीं आं ॐ	मध्यमाभ्यां नमः	शिखायै वषट्
ॐ आं ह्रीं क्रौं मत्प्रसादेन क्रौं ह्रीं आं ॐ	अनामिकाभ्यां नमः	कवचाय हुं
ॐ आं ह्रीं क्रौं भविष्यति क्रौं ह्रीं आं ॐ	कनिष्ठिकाभ्यां नमः	नेत्र-त्रयाय वौषट्
ॐ आं ह्रीं क्रौं न संशय: क्रौं ह्रीं आं ॐ	करतल-करपृष्ठाभ्याम नमः	अस्त्राय फट्

मन्त्र

ॐ आं ह्रीं क्रौं सर्वा-बाधा विनिर्मुक्तो धन-धान्य समन्वित:
मनुष्यो मत्प्रसादेन भविष्यति न संशय: क्रौं ह्रीं आं ॐ ॥

शास्त्रोक्त विधानुसार पूर्ण सिद्धि हेतु सवालाख मन्त्र जप का विधान है, तथा मन्त्र अनुष्ठान पूरा होने पर इसका दशांश हवन करना चाहिए, हवन-तिल, घी तथा छोटी इलायची से करें हवन की आहुति निम्न मंत्र से करें—

॥ ॐ वनदुर्गा तर्पयामि नमः ॥

किसी भी प्रकार की बाधा हो इस अनुष्ठान से शान्त अवश्य हो ही जाती है, इसमें कोई सन्देह नहीं। ●

Scanned by CamScanner

विजया दशमी

विजय सिद्धि पर्व

रात्रिकालीन तांत्रोक्त तीव्र विजय प्रयोग

पौराणिक कथा के अनुसार भगवान श्रीराम ने इस दिन रावण का विनाश किया था, जो कि पाप पर पुण्य की विजय का प्रतीक था। वास्तविक रूप में तो भगवान राम ने अपने कार्यों में पूर्णता देने हेतु और शक्तियों को तीव्र रूप से जाग्रत करने के लिए नवरात्रि अनुष्ठान सम्पन्न किया था और विजया दशमी इस अनुष्ठान की पूर्णता का सुखद मुहूर्त बना।

यह दिवस विजय दिवस है, और युद्ध क्षेत्र में वानरों की सेना को लेकर शक्तिशाली रावण से युद्ध कर रहे थे, लेकिन युद्ध का पार नहीं पड़ रहा था तब नारद ने कहा- "हे राघव! रावण के विनाश का उपाय बताता हूं, इसके लिए आप श्रद्धा पूर्वक आश्विन मास में नवरात्रि व्रत करिये, हे राम! नवरात्रि में उपवास, भगवती का पूजन तथा विधिवत् जप-हवन करने से सभी कामनाएं पूरी होती हैं, देवी को पवित्र वस्तुएं अर्पण कर जप का दशांश हवन करके आप शक्ति सम्पन्न हो जाएंगे। सबसे पहले भगवान् विष्णु ने यह व्रत किया था, फिर शंकर जी ने और ब्रह्मा जी ने किया। उनके बाद इन्द्र ने इस व्रत का पालन किया महर्षि विश्वामित्र ने यह व्रत किया था। भृगु वशिष्ठ तथा कश्यप भी इसे कर चुके हैं। जब देव गुरु बृहस्पति की भार्या को चन्द्रमा ने हर लिया था, तब उन्होंने भी नवरात्रि व्रत किया था। अतः हे राजेन्द्र! रावण का वध करने के लिए आप भी यह व्रत करिये। वृत्रासुर का वध करने के लिए इन्द्र ने और त्रिपुरासुर के नाशार्थ भगवान् शंकर ने इस उत्तम व्रत को किया था। मधु दैत्य के वध के लिए भगवान् विष्णु ने सुमेरु पर्वत के शिखर पर इस व्रत का पालन किया था। अतएव हे महामते! आप भी पूर्ण तत्परता के साथ यही व्रत कीजिये और आप की इस सफलता के कारण विजया दशमी पर्व महा सिद्धि पर्व, विजय पर्व के रूप में विख्यात होगा।"

Scanned by CamScanner

इस प्रकार विजया दशमी के दिन शक्ति की विशेष आराधना और विशेष प्रकार के प्रयोग अवश्य ही सम्पन्न करने चाहिए। अब तक का यह अनुभव रहा है कि जब भी सिद्ध मुहूर्त में कोई कार्य सम्पन्न किया जाता है तो उसका फल अवश्य ही प्राप्त होता है।

विजया दशमी के दिन शक्ति प्रतीकों की अर्थात् अस्त्र-शस्त्रों की पूजा की जाती है। आजकल यह प्रचलन अवश्य ही कम हो गया है, लेकिन जिसके घर में यदि किसी प्रकार का अस्त्र-शस्त्र हो तो उसकी पूजा अवश्य करें। व्यापारिक बन्धु इस दिन अपने प्रधान अस्त्र–कलम दवात का पूजन करें बालक अपनी पुस्तकों का पूजन करें, स्त्रियां अपने विशेष स्वर्ण आभूषणों की पूजा करें। पूजा चाहे सूक्ष्म रूप से करें अथवा वृहद रूप में, लेकिन विजया दशमी जैसे शुभ मुहूर्त के दिन शक्ति साधना अवश्य ही करनी चाहिए।

विजया दशमी मुहूर्त

इस बार ग्रहों की गति के अनुसार विजया दशमी का मुहूर्त विशिष्ट रूप से आया है, जैसा कि आपको विदित है कि चार अक्टूबर को दुर्गाष्टमी है, तथा पांच अक्टूबर को दुर्गा नवमी का योग है, लेकिन विजया दशमी इस नवमी के दिन ही रात्रि १२.१४ बजे से छः अक्टूबर को प्रातः ६.४८ बजे तक विजया दशमी का 'विजय काल' 'सिद्धि पर्व' है, और इस दिन ही यह साधना सम्पन्न करनी चाहिए, क्योंकि आगे भद्रा योग आ गया है, तथा पंचक भी प्रारम्भ हो रहा है, जो कि शास्त्रोक्त सिद्ध मुहूर्त नहीं है। साधकगण उपरोक्त बात का विशेष ध्यान रखें।

विजय शक्ति की दो साधनाएं

१-उच्छिष्ट चाण्डालिनी प्रयोग

उच्छिष्ट चाण्डालिनी, देवी का तीव्रतम स्वरूप है, जिसमें देवी अपने शत्रुओं का नाश तीव्र गति से करते हुए उन्हें शत्रु से शत्र बना देती है। जीवन में रोग, दुःख, पीड़ा, बन्धन, दुर्भाग्य शत्रु ही तो हैं, और जब तक इन शत्रुओं को पूर्णतः मार ही नहीं दिया जाता, तब तक जीवन के पाप नष्ट नहीं होते, और जीवन में सुख, मुक्ति, सौभाग्य तथा पराक्रम की प्राप्ति नहीं होती। यह अभीष्ट सिद्धि की साधना है। इसमें तीन प्रकार के मन्त्र हैं—

१-सर्व पाप दोष नाश हेतु—

ऐं ह्रीं क्लीं सौः ऐं ज्येष्ठ मातंगी नमामि उच्छिष्ट चाण्डालिनी त्रैलोक्यं वशंकरी स्वाहा हुं।

२-शत्रु नाश हेतु—

उच्छिष्ट चाण्डालिनी सुमुखी देवी महापिशचिनी ह्रीं ठः ठः ठः ॥

३-सर्व सिद्धि हेतु—

उच्छिष्ट चाण्डालिनी मातंगी सर्व वशंकरी नमः स्वाहा ॥

साधना रहस्य

यह साधना तात्कालिक सफलता की, विजय की महाविद्या साधना है। इसमें विशेष प्रकार की सामग्री का प्रयोग होता है। साधक लाल वस्त्र धारण करें, तथा रात्रि में विजया दशमी का मुहूर्त सिद्ध समय प्रारम्भ होते पर यह साधना प्रारम्भ कर दें। इस साधना में मुख्य रूप से तीन वस्तुओं की आवश्यकता रहती है—

१-आठ उच्छिष्ट चाण्डालिनी चक्र।
२-तन्त्र विजय यन्त्र।
३-तांत्रोक्त बिल्ली की नाल।

इसके अतिरिक्त आठ लोहे कीलें, तिल, तेल का दीपक, सिन्दूर तथा नैवेद्य के रूप में लड्डू के अतिरिक्त सायंकाल किये गये भोजन का अंश भोग के रूप में रखें। इस साधना में साधक को कैंची अपने पास अवश्य रखनी

चाहिए ।

दक्षिण दिशा की ओर मुंह कर साधक अपने सामने एक बाजोट पर लोहे की थाली में त्रिकोण सिन्दूर से बनावें, सिन्दूर से स्वयं के तिलक करें। तत्पश्चात् अपने सामने उस थाली में त्रिकोण के मध्य में **तन्त्र विजय यन्त्र** स्थापित कर बाजोट पर आठ दिशाओं में उच्छिष्ट चाण्डालिनी की आठ शक्तियों का ध्यान करते हुए प्रत्येक उच्छिष्ट चाण्डालिनी चक्र को कैंची से स्पर्श कराकर आठ दिशाओं में स्थापित कर दें। **तांत्रोक्त बिल्ली नाल** को सिन्दूर से लेपन कर उसके साथ एक सुपारी रख कर लाल कपड़े में बांध कर अपनी बाईं दिशा में रख दें। साधना प्रारम्भ करने से पहले ही साधक तेल का दीपक तथा धूप अवश्य जला दें, जब तक अनुष्ठान चल रहा हो कमरे के भीतर कोई प्रवेश न करे।

अब अपने हाथ में जल लेकर संकल्प करें कि मैं अमुक कार्य हेतु अथवा अमुक कार्य में विजय प्राप्त करने हेतु, अमुक मुकदमे में सफलता प्राप्त करने हेतु अथवा अमुक बाधा हटाने हेतु। (जिस प्रकार का भी कार्य हो), उसका संकल्प लेते हुए उच्छिष्ट चाण्डालिनी देवी को साक्षी रखते हुए यह जल भूमि पर छोड़ दें। अब आठ लोहे की कलें, आठ चाण्डालिनी चक्र को ऊपर रख दें तथा वीर मुद्रा में बैठ कर उच्छिष्ट चाण्डालिनी का ध्यान करें।

ध्यान मन्त्र

शवोपरि समासीनां रक्ताम्बर-परिच्छदाम्।
रक्तालंकार-संयुक्तां गुंजा-हार-विभूषिताम्॥
षोडशाब्दां च युवतीं पीनोन्नत-पयोधरम्।
कपाल-कर्तृका-हस्तां परां ज्योतिः स्वरूपिणीम्॥

शवासन पर स्थित रक्त वर्ण के वस्त्र पहिने तथा रक्त वर्ण आभूषणों से विभूषित देवी उच्छिष्ट चाण्डालिनी षोडश वर्षीय, ज्योति अलंकृत गुंजाहार से सुशोभित बाएं हाथ में नर कपाल तथा दाहिने हाथ में कैंची लिये हुए, पूर्ण ज्योति स्वरूपा एवं अपने साधक पर पूर्ण कृपा कर विजय प्रदात्री देवी को इस साधक का प्रणाम।

अब साधक नैवेद्य का अर्पण कर दोनों हाथ जोड़ कर शान्त मुद्रा में बैठें, तत्पश्चात् अपने कार्य के अनुसार पीछे दिये गये मन्त्र का उच्चारण प्रारम्भ करें। इस सिद्ध विद्या हेतु एक हजार आठ बार मन्त्र का जप आवश्यक है, मन्त्र जप करते समय वीर मुद्रा में बैठें और कैंची अपने आसन के नीचे रखें।

मन्त्र जप अनुष्ठान पूर्ण होते ही अपने स्थान से उठ कर सामने जो सामग्रियां रखी हैं उनमें उच्छिष्ट चाण्डालिनी चक्र लोहे की कीलों सहित तांत्रोक्त बिल्ली नाल को घर के बाहर कहीं पर भी गड्ढा खोद कर गाड़ दें और उस पर एक भारी पत्थर रख दें तथा पीछे मुड़ कर न देखें।

घर आकर स्नान कर अपने पूजा स्थान में जाकर तन्त्र विजय यन्त्र को धूप दीप देकर काले डोरे से गले या बांह में धारण कर लें।

यह विजय प्रयोग प्रबल प्रयोग है, इससे भयंकर से भयंकर बाधा शान्त हो जाती है।

ध्यान रखें कि अपनी तांत्रोक्त साधना की चर्चा किसी से भी न करें।

२-विजया दशमी दुर्गा दीप दान तीव्र प्रयोग

नवरात्रि साधना के पश्चात् अष्टमी के दिन पूर्णाहुति अवश्य सम्पन्न की जाती है, लेकिन वास्तव में प्रत्येक साधक को नवरात्रि साधना में पूर्ण सिद्धि हेतु विजया दशमी के दिन विजय प्राप्ति का दुर्गा दीप दान प्रयोग अवश्य ही करना चाहिए। इस प्रयोग के अन्तर्गत दुर्गा की सभी शक्तियों का इनके देवताओं का आह्वान कर उन्हें दीप दान कर साधना में पूर्ण सफलता की प्रार्थना कर पूर्ण विजय का मार्ग प्रशस्त किया जाता है।

जो साधक नवरात्रि में चाहे लघु अनुष्ठान करे अथवा आठ दिन निरन्तर, उसे विजया दशमी का यह अनुष्ठान अवश्य ही सम्पन्न करना चाहिए।

इस साधना में मुख्य रूप से **"महादुर्गा सिद्ध महायन्त्र" "गुरु चरण पादुका" "५१ हकीक पत्थर" "५१ शक्तिचक्र"** ५१ सुपारी तथा ५१ दीपक आवश्यक है।

इसके अतिरिक्त पुष्प, चन्दन, फल, अक्षत, सुपारी, वस्त्र तथा दक्षिणा आवश्यक है। दक्षिणा हेतु एक-एक रुपये के सिक्कों की व्यवस्था कर लें।

विजया दशमी के दिन रात्रि में मुहूर्त अनुसार अपने सामने एक तांबे के बर्तन में यन्त्र स्थापित कर उसकी पूजा करें। पूजा सामान्य रूप से उपरोक्त सामग्री से पुष्प, चन्दन इत्यादि से करनी है। अब हाथ में जल लेकर संकल्प कर जल को भूमि पर छोड़ दें। उसके आगे पुष्प का आसन देकर **गुरु चरण पादुकाएं** स्थापित करें और उनका पूजन कर प्रसाद अर्पित करें तथा ध्यान कर एक माला गुरु मन्त्र का जप करें।

गुरु मन्त्र

।। ॐ परम तत्वाय नारायणाय गुरुभ्यो नमः ।।

अब साधना का विशेष दीप दान प्रयोग प्रारम्भ होता है, इस हेतु आवश्यक दीपकों को तेल से भर कर पहले से ही जला कर रख लेना चाहिए। इसका पूजन निम्न क्रम से करते हुए मन्त्र बोलें तथा एक सुपारी, एक हकीक पत्थर तथा एक शक्ति चक्र रखें।

प्रथम क्रम

ॐ ह्रीं ग्लां ग्लीं ग्लूं गणपतये नमः।
ॐ ह्रीं क्षां क्षीं क्षूं क्षेत्रपालाय नमः।
ॐ ह्रीं तीक्ष्ण श्रृंगाय महिषाय नमः।
ॐ ह्रीं वंनस्पति-पुत्राय सिंहाय नमः।
ॐ ह्रीं गुरु-मण्डल-पादुकाभ्यो नमः।
ॐ ह्रीं विष्णुलक्ष्मीभ्यां नमः।
ॐ ह्रीं रुद्र गौरीभ्यां नमः।
ॐ ह्रीं ब्रह्मा वागीश्वरीभ्यां नमः।

द्वितीय क्रम

ॐ ह्रीं नन्दायै नमः।
ॐ ह्रीं रक्त दन्तिकायै नमः।
ॐ ह्रीं शाकम्भर्यै नमः।
ॐ ह्रीं भीमायै नमः।
ॐ ह्रीं भ्रमर्यै नमः।
ॐ ह्रीं शिव दूत्यै नमः।

तृतीय क्रम

ॐ ह्रीं ब्रह्माण्यै नमः।
ॐ ह्रीं माहेश्वर्यै नमः।
ॐ ह्रीं कौमार्यै नमः।
ॐ ह्रीं वैष्णव्यै नमः।
ॐ ह्रीं वाराह्यै नमः।
ॐ ह्रीं नरसिंह्यै नमः।
ॐ ह्रीं ऐन्द्राण्यै नमः।
ॐ ह्रीं चामुण्डायै नमः।

चतुर्थ क्रम

ॐ ह्रीं असितांग भैरवाय नमः।
ॐ ह्रीं रुरु-भैरवाय नमः।
ॐ ह्रीं चण्ड भैरवाय नमः।
ॐ ह्रीं क्रोध भैरवायं नमः।
ॐ ह्रीं उन्मत्त भैरवाय नमः।
ॐ ह्रीं कपाली भैरवाय नमः।
ॐ ह्रीं भीषण भैरवाय नमः।
ॐ ह्रीं संहार भैरवाय नमः।

(शेष भाग पृष्ठ संख्या ४० पर देखें)

(पृष्ठ संख्या १६ का शेष भाग)

पंचम क्रम

ॐ ह्रीं इन्द्राय नमः । ॐ ह्रीं अग्नये नमः ।
ॐ ह्रीं वरुणाय नमः । ॐ ह्रीं वायवे नमः ।
ॐ ह्रीं यमाय नमः । ॐ ह्रीं निर्ऋतये नमः ।
ॐ ह्रीं कुबेराय नमः । ॐ ह्रीं ईशानाय नमः ।
ॐ ह्रीं ब्रह्मणे नमः । ॐ ह्रीं अनन्ताय नमः ।

षष्टम क्रम

ॐ ह्रीं वज्राय नमः । ॐ ह्रीं शक्तये नमः ।
ॐ ह्रीं दण्डाय नमः । ॐ ह्रीं खड्गाय नमः ।
ॐ ह्रीं पाशाय नमः । ॐ ह्रीं ध्वजायै नमः ।
ॐ ह्रीं गदायै नमः । ॐ ह्रीं त्रिशूलाय नमः ।
ॐ ह्रीं पद्मायै नमः । ॐ ह्रीं चक्राय नमः ।

इस प्रकार देवी दुर्गा के आगे एक महा दीपक मिला कर कुल ५१-५१ दीपक शक्ति चक्र तथा हकीक पत्थर आवश्यक हैं। जब यह अनुष्ठान पूर्ण हो जाये तो दुर्गा को पुष्पांजलि अर्पित करते हुए दीपक के आगे पुष्प अर्पित करें तथा निम्न दुर्गा मन्त्र का नौ बार पाठ करें—

शक्ति सिद्धि प्रद दुर्गा मन्त्र

सृष्टिस्थितिविनाशानां शक्तिभूते सनातनि ।
गुणाश्रये गुणमये नारायणि नमोऽस्तुते ॥

अब साधक उसी स्थान पर बैठ कर एक माला नवार्ण मन्त्र का जप करें, तत्पश्चात् गुरु आरती तथा दुर्गा आरती सम्पन्न करें।

नवार्ण मन्त्र

॥ ऐं ह्री क्लीं चामुण्डायै विच्चे ॥

शक्ति साधना का यह विजय प्रयोग ऐसा विशिष्ट प्रयोग है, जिससे नवरात्रि में की गई साधनाओं में पूर्णता तो प्राप्त होती है और साधक अपने कार्यों में सदैव विजयी रहता है। साधक पूरी रात दीपकों को उसी प्रकार जलते रहने दें तथा प्रातः उठ कर अपना नित्य का पूजन सम्पन्न कर इन दीपकों को आगे दीपावली में प्रयोग हेतु रख लें।

Scanned by CamScanner

त्रिकाल संध्या विधान

गायत्री साधना

वर्तमान युग में नियम पूर्वक संध्या की जानकारी बहुत कम लोगों को रह गई है, जब नित्य प्रति पूजा करनी है तो क्यों नहीं विधि पूर्वक ही की जाय, संध्या गायत्री उपासना शक्ति उपासना का श्रेष्ठतम रूप है, जिस घर में नित्य प्रति गायत्री साधना संध्या विधि से सम्पन्न होता है वहां आदि शक्ति अपनी समस्त शक्तियों सहित उस घर को आलोकित करती है।

संध्या का तात्पर्य समीपता से है, सर्दी-गर्मी की ऋतुओं के मिलन की तरह, दिन और रात के मिलन को संध्याकाल कहा जाता है, यह समय पूजा उपासना और आत्म साधन के लिए बहुत ही उपयोगी माना गया है, इस समय का किया गया थोड़ा श्रम भी अधिक लाभ-दायक होता है, इस तरह दिन और रात्रि के संधिकाल में पाप निवृत्ति और ब्रह्मवर्चस्व के लिए जो कर्मकांडात्मक द्विजों के लिए अत्यन्त आवश्यक नित्य कर्म माना गया है, इसे शास्त्रों का इतना उच्च मूल्यांकन प्राप्त है, कि इसकी अवहेलना उचित नहीं है।

संध्या की व्युत्पत्ति इस प्रकार है—सम-ध्यै-जन आप, "ध्यै" धातु का अर्थ होता है –ध्यान करना, अतः संध्या का अभिप्राय हुआ-तन, मन और वाणी से अपने आराध्य के समीप बैठना, उनसे एक रूपता प्राप्त करना, त्रिपदा की तीन रूपों में त्रिकाल संध्या का विधान है, प्रातःकाल की ब्राह्मी, मध्याह्न की वैष्णवी और सायंकाल की शांभवी कही जाती है, इनमें जो निर्देश प्रेरणाएं एक समता भरी पड़ी हैं, उन्हें आस्तिकता, आध्यात्मिकता एवं धार्मिकता कहा गया है।

संध्या का समय शास्त्र मर्यादित है, शास्त्रों में इसके नियमों पर भी प्रकाश डाला गया है।

उत्तम तारकोपेता मध्यमा लुप्तारका।
कनिष्ठा सूर्य सहिता प्रातः संध्या त्रिधा स्मृता ।।

—देवी भागवत

Scanned by CamScanner

प्रात:कालीन संध्या तारों के रहते हुए की जाती है, यदि ब्रह्म मुहूर्त में ही इसे सम्पन्न कर लिया जाय तो उत्तम माना गया है, तारे लुप्त होने पर उसे मध्यम और सूर्योदय होने पर कनिष्ठ होता है ।

सायंकालीन संध्या के लिए—

उत्तमा सूर्य सहिता मध्यमा लुप्त सूर्यका ।
कनिष्ठा तारकोपेता सायं संध्या त्रिधास्मृता ।।

—देवी भागवत

सायंकाल की संध्या सूर्यास्त के तीन घड़ी पहले की की जाती है, तब उसे श्रेष्ठ माना जाता है, तारों के निकलने से पहले मध्यम और तारों के दिखाई देने पर कनिष्ठ मानी जाती है ।

विधि

साधक का कर्त्तव्य है, कि प्रात:काल ब्रह्म मुहूर्त में उठकर शौच, स्नान आदि से निवृत्त होकर शुद्ध वस्त्र धारण करें, पवित्र मन से एकान्त स्थान अथवा अपने पूजा कक्ष में संध्या के लिए उपयुक्त आसन पर बैठें, तीन काल की संध्या में पूर्व, ईशान और उत्तर दिशा की ओर मुख करके बैठना चाहिए, गायत्री साधना और सूर्योपस्थान के लिए प्रात:काल पूर्व और सायंकाल पश्चिम दिशा की ओर मुख करना चाहिए, संध्या के लिए साधकों के पास यज्ञोपवीत होना आवश्यक है ।

पवित्रीकरण

पवित्रीकरण के लिए अपने बाएं हाथ की हथेली में जल लें और दाहिने हाथ से ढक कर निम्न मन्त्र बोलें, मन्त्र पूरा हो जाने पर उस जल को दाहिने हाथ की उंगलियों से अपने शरीर पर छिड़क दें—

ॐ अपवित्र: पवित्रो वा सर्वावस्थांगतोऽपि वा ।
य: स्मरेत्पुण्डरीकांक्षं स बाह्याभ्यन्तर: शुचि: ।।

तत्पश्चात् अपने हाथ में तीन बार जल ले कर आचमन क्रिया सम्पन्न करें, मस्तिष्क में स्थिर चिद्-रूपिणी महामाया दिव्य तेज शक्ति का ध्यान करते हुए अपने सिर पर अपना दाहिना हाथ रखें ।

निम्न मन्त्र का उच्चारण करते हुए प्राणायाम करते समय बाएं हाथ की हथेली पर दाहिने हाथ की कोहनी रखें और उंगलियां बन्द करके केवल अंगूठे से नाक का दाहिना स्वर बन्द कर लें, और बाएं से श्वास खींचते समय तेजस्वी प्राण का ध्यान करना चाहिए, कुछ देर श्वास अन्दर रोके रखें, तत्पश्चात् कनिष्ठिका एवं मध्यमा उंगलियों से नाक का बायां छिद्र बन्द करके दाहिने से श्वास छोड़ देना चाहिए, श्वास बहुत ही शनै: शनै: छोड़ते समय भी निम्न मन्त्र को मन ही मन जपते रहना चाहिए—

ॐ भू: ॐ भुव: ॐ स्व: ॐ मह: ॐ जन: ॐ तप: ॐ सत्यम् तत्सवितुर्वरेण्यम् भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो न: प्रचोदयात् । ॐ आपोज्योति-रसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुव: स्वरोम् ।

न्यास

बाएं हाथ में जल लेकर दाहिने हाथ की समूह बद्ध पांचों उंगलियों से निम्न मन्त्रों के साथ शरीर के विभिन्न अंगों को स्पर्श करते समय ऐसी भावना रखनी चाहिए, कि वे सभी अंग शक्तिशाली, पवित्र और महा तेजस्वी बन रहे हैं—

ॐ वाङ् मे आस्येऽस्तु (मुख को पहले दाहिने फिर बाएं)
ॐ नसोऽर्मे प्राणोऽस्तु (नासिका के दोनों छिद्रों को)
ॐ अक्ष्णोर्मे चक्षुरस्तु (दोनो नेत्रों को)
ॐ कर्णयोर्मे श्रोत्रमस्तु (दोनों कानों को)
ॐ बाह्वोर्मे बलमस्तु (दोनों बाहों को)
ॐ ऊर्वोर्मे ओजोऽस्तु (दोनों जंघाओं को)
ॐ अरिष्टानि मेऽगांनि तनूस्तन्वा मे सह सन्तु ।।
(शरीर के सभी अंगों पर जल छिड़कें)

अब पृथ्वी माता का ध्यान करें, सामने जल, अक्षत, पुष्प आदि चढ़ाएं तथा धूप-दीप अर्पित करें एवं हाथ

Scanned by CamScanner

जोड़ कर वेद माता गायत्री का आह्वान करें तथा गायत्री प्रतिमा अथवा यन्त्र पर अक्षत चढ़ाएं, अब आसन पूजा, स्नान और फिर **"गायत्री यन्त्र-चित्र'** तथा प्रतिमा पर चन्दन, अक्षत, पुष्प, धूप-दीप अर्पित करें और मां गायत्री के आगे एक पात्र में आचमन हेतु जल रखें।

अब गुरुदेव का ध्यान करते हुए निम्न मन्त्र बोलना चाहिए—

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णु गुरर्देवो महेश्वरः।
गुरुः साक्षात् परब्रह्म तस्मै श्रीगुरवे नमः॥
अखण्डमण्डलाकारं व्याप्तं येन चराचरम्।
तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः॥
ध्यान मूलं गुरोर्मूर्तिः पूजा मूलं गुरोः पदम्।
मन्त्र मूलं गुरोर्वाक्यं मोक्ष मूलं गुरोः कृपा॥

इसके बाद एक माला गुरु मन्त्र की जप करनी चाहिए—

गुरु मन्त्र

॥ ॐ परमतत्त्वाय नारायणाय गुरुभ्यो नमः॥

फिर चेतना मत्र की एक माला जप करें—

चेतना मन्त्र

॥ ॐ ह्रीं मम प्राण देह रोम प्रतिरोम
चैतन्यं जाग्रय ह्रीं ॐ नमः॥

इसके बाद गायत्री मन्त्र की दो माला जप करना अनिवार्य है, एक माला आत्म कल्याण के लिए और दूसरी माला विश्व कल्याण के लिए।

प्रातःकाल ब्रह्म रूप गायत्री का ध्यान करें—

ॐ वालांविद्यान्तु गायत्री लोहितां चतुराननाम्।
रक्ताम्वरद्वयोपेतामक्षसूत्रकरीं तथा॥
कमण्डलुधरां देवीं हंसवाहन संस्थिताम्॥
ब्रह्माणीं ब्रह्मलैवत्याम् ब्रह्मलोकनिवासिनीम्।
मन्त्रेणावाहयेद्देवीमायन्तीं सूर्यमण्डलात्॥

ब्रह्मलोक में निवास करने वाली, कन्या की तरह रूप, शील तथा गुण से सम्पन्न, हंसारूढ़, लाल वर्ण, चार मुख और चार हस्त वाली, रक्तवसना, हाथों में कमण्डल, पुस्तक, दंड और रुद्राक्ष की माला लिए हुए आदित्य मंडल से आने वाली गायत्री देवी का मैं ध्यान करता हूं।

गायत्री मन्त्र

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गोदेवस्य धीमहि।
धियो यो नः प्रचोदयात्। शिवो रजसे शिवातुम्॥

मध्याह्न काल में विष्णु रूप गायत्री का ध्यान करें—

ॐ मध्याह्ने विष्णुरूपां च तार्क्ष्यस्थां पीतवाससम्।
युवतीं च यजुर्वेदां सूर्य मण्डल संस्थिताम्॥

विष्णुरूपा हाथों में शंख, चक्र, गदा और पद्म लिए गरुड़ पर स्थित पीतवसना युवती के रूप में यजुर्वेद से युक्त सूर्य मण्डल में स्थित गायत्री देवी का मैं ध्यान करता हूं।

Scanned by CamScanner

सायंकाल में शिव रूप गायत्री का ध्यान—

ॐ सायाह्ने विश्वरूपांच वृद्धां वृषभवाहिनीम् ।
सूर्यमण्डलमध्यस्थां सामवेदसमायुताम् ।।

शिव रूप, हाथों में त्रिशूल, डमरू, पाश और पात्र धारण किये हुए वृषभ रूढ़ा सूर्य मण्डल में स्थित, सामवेद से युक्त गायत्री देवी का मैं ध्यान करता हूं ।

ध्यान विधि

पालथी मार कर पद्मासन, सिद्धासन अथवा सुखासन लगा कर बैठें, मेरुदण्ड सीधा रखें, आंखें अर्द्ध निमीलित, ध्यान नाशाग्र पर, भावना यह कि सारी सृष्टि में प्रलय की स्थिति हो गई है, ऊपर विस्तृत नील गगन है और नीचे जलप्लावन । जल के सिवा और कुछ भी नजर नहीं आता है, सिर्फ जल के ऊपर कमल पत्र पर एक नवजात शिशु लेटा अपने पैर के अंगूठे को मुख में डाले सुधारस का पान कर रहा है, यह कमल पत्र जल के ऊपर तैरता जा रहा है इस कल्पना चित्र को भावना लोक में भली-भांति स्थिर करने पर बहुत दूर तक एक ज्योति पिण्ड देखना चाहिए, सूर्य की तरह प्रकाशित होने वाले नक्षत्र के रूप में गायत्री का श्रेष्ठ ध्यान है, ध्यान के साथ यह भावना रखनी चाहिए कि जिस तरह सूर्य की किरणों में गर्मी, गतिशीलता और तेजस्विता होती है, इसी तरह गायत्री के ज्योतिपिण्ड में से सद्बुद्धि, सात्विकता और सशक्तता की किरणें निःसृत हो रही हैं और मैं इन शक्तियों का एक पुंज बनता जा रहा हूं ।

कल्पना नेत्रों से यह अनुभव करना चाहिए कि मैं निरन्तर विराट पुरुष को अपने चारों ओर देख रहा हूं, मुझमें तेजस्विता, श्रेष्ठता और दिव्यता बढ़ती जा रही है, उसके संरक्षण में गन्तव्य की ओर मैं बढ़ता चला जा रहा हू आसुरी प्रवृत्तियां मेरे पास आने का साहस नहीं कर पा रही हैं, मैं प्रसन्नचित्त हूं, मेरा रोम-रोम प्रसन्नता और सन्तोष से खिल रहा है, दुःख और चिन्ता की रेखाएं मेरे मस्तक पर नहीं हैं, मैं हर प्रकार से सुखी हूं, क्योंकि मेरी बुद्धि में सात्विकता, तेजस्विता दिव्यता और सशक्तता है ।

उपर्युक्त संकल्प का मनन धीरे-धीरे करते रहना चाहिए, ताकि इन विचारों की स्थायी छाप मन पर पड़ती रहे ।

विसर्जन

हाथ में अक्षत लेकर निम्न मन्त्र का उच्चारण करते हुए देवी की प्रतिमा पर छिड़क दें ।

ॐ उत्तमे शिखरे जाता भूम्यां पर्वतमूर्धनि ।
ब्राह्मणेभ्योऽभ्यनुज्ञाता गच्छ देवि ! यथासुखम् ।।

सूर्यार्घ्य

जलपात्र के बचे हुए जल में अक्षत, कुंकुम और पुष्प डाल लें, फिर सूर्य के सामने जाकर इस प्रकार अर्घ्य दें, कि ऊपर से गिरता हुआ जल आपके चेहरे और हृदय के समानान्तर हो, जिसकी सूर्य रश्मियां भेदन करते हुए आपके चेहरे और हृदय का भी स्पर्श करे । साथ में निम्न मन्त्र का उच्चारण करें—

ॐ सूर्य देव सहस्रांशो तेजो राशे जगत्पते ।
अनुकम्पय मां भक्त्या गृहाणार्घ्य दिवाकर ।।

मध्यरात्रि में भी एक संध्या की जाती है, जिसे तुरीया संध्या कहते हैं, लेकिन यह सभी साधकों के लिए अभीष्ट नहीं है, साधना की उच्चतर स्थिति तथा विशिष्ट गुरु कृपा प्राप्त साधक ही इसे गुरु आज्ञा से करते हैं ।

इस प्रकार साधारण साधकों को कम से कम नित्य प्रति प्रातः सायं संध्या करना नितान्त आवश्यक एवं जीवन की अनिवार्य आवश्यकता है ।

गायत्र्येव तपोयोगः साधनं ध्यानमुच्यते ।
ब्रह्मवर्चस रूपा च नातः किंचित् ब्रह्मतरम् ।।

गायत्री ही तप है, गायत्री ही योग है, गायत्री ही ध्यान और साधना है, गायत्री ब्रह्मवर्चस्व रूपा है, इससे बढ़कर सिद्धिदायक साधना और कोई नहीं ।

लक्ष्मी का शुद्ध स्वरूप कमला ही है

तांत्रोक्त कमला साधना

तन्त्र शास्त्रों में लक्ष्मी की पूजा कमला स्वरूप में की जाती है और लक्ष्मी से सम्बन्धित पूर्ण तन्त्र को कमला तन्त्र कहा जाता है। दीपावली के दूसरे दिन किया जावे वाला एक विशेष प्रयोग—

देवी कमला महालक्ष्मी स्वरूपा जगत की आधार हैं जिनके बिना सृष्टि के सारे चक्र अधूरे रह जाते हैं। महामाया कमला आद्या शक्ति हैं, जिनकी कृपा दृष्टि से ही ब्रह्मा एवं अन्य देवता शक्ति प्राप्त करते हैं, और जो साधक महामाया पूर्ण लक्ष्मी भगवती कमला को हृदय से नमन करता है, उसकी कभी भी दुर्गति नहीं हो सकती। ऐसा साधक निश्चय ही पूर्ण सिद्धि प्राप्त कर अनन्त, अलौकिक वैभव, धन-धान्य, सम्मान, कीर्ति प्राप्त करता है।

कमला तन्त्र

वास्तव में ही लक्ष्मी की साधना तन्त्र मार्ग से ही सम्भव है और यह कमला साधना द्वारा सहज सम्भव है। **कमला तन्त्र** में तो स्पष्ट रूप से बताया गया है, कि जीवन में अतुलनीय धन वैभव प्राप्त करने के लिए कमला साधना आवश्यक है, क्योंकि इस साधना के द्वारा ही जीवन में वह सब कुछ प्राप्त हो सकता है, जो कि आज के मनुष्य को चाहिए।

सबसे बड़ी बात यह है कि कमला साधना एक तरफ जहां पूर्ण मानसिक शान्ति और सिद्धि प्रदान करती है, वहीं दूसरी ओर इसके माध्यम से अतुलनीय वैभव और अनायास धन प्राप्ति होती रहती है। तन्त्र में इसके द्वादश नाम स्पष्ट हुए हैं। यदि कोई साधक केवल इन द्वादश नामों का उच्चारण नित्य कर लेता है, तो भी उसे

सिद्धि प्राप्त हो जाती है। फिर यदि कोई कमला जयन्ती के अवसर पर एक बार भली प्रकार से कमला साधना सम्पन्न कर लेता है, तो उसके जीवन में किसी प्रकार का कोई अभाव रह ही कैसे सकता है। कमला के द्वादश नाम निम्नवत् हैं—

१-महालक्ष्मी, २-ऋणमुक्ता, ३-हिरण्मयी, ४-राजतनया, ५-दारिद्रय हारिणी, ६-कांचना, ७-जया, ८-राजराजेश्वरी, ९-वरदा, १०-कनकवर्णा, ११-पद्मासना, १२-सर्वमांगल्य युक्ता।

कमला प्रयोग

यदि तांत्रिक दृष्टि से कमला साधना सम्पन्न की जाती है, तो निश्चित ही साधक आश्चर्यजनक उपलब्धियां अनुभव करने लगता है, जो तन्त्र के क्षेत्र में थोड़ी बहुत भी रुचि रखते हैं, वे कमला तन्त्र के नाम से परिचित हैं, और वे यह भी जानते हैं कि यह तन्त्र कितना महत्वपूर्ण और दुर्लभ है। एक प्रकार से देखा जाय तो कमला तन्त्र सर्वथा गोपनीय ही रहा है, मगर जो साधक पूर्ण निष्ठा के साथ इस कमला तन्त्र को सिद्ध कर लेता है, उसे जीवन में समस्त सुख, वैभव और सौभाग्य प्राप्त हो जाता है। दरिद्रता तो हमेशा-हमेशा के लिए समाप्त हो जाती है, अनायास धन प्राप्ति की सम्भावनाएं बन जाती हैं, और साधक अपने जीवन में सभी दृष्टियों से पूर्णता प्राप्त करता हुआ सही अर्थों में वैभव युक्त बन जाता है।

इस वर्ष २८-१०-९१ को कमला जयन्ती है, साधकों को चाहिए कि वे प्रातःकाल उठकर स्नान कर अपने पूजा स्थान में बैठ जांय और फिर साधना प्रारम्भ करें। साधना प्रारम्भ करने मे पूर्व पूजन सामग्री अपने सामने रख दें, जिसमें जलपात्र, केसर, अक्षत, नारियल, फल, दूध का बना प्रसाद, पुष्प आदि हो। कमला साधना में अष्ट-गन्ध का प्रयोग ज्यादा महत्वपूर्ण माना गया है, अतः साधकों को चाहिए कि वे पहले से ही अष्टगन्ध प्राप्त कर उसे घोल कर अपने सामने रख लें।

कमला यन्त्र

तांत्रोक्त कमला साधना का आधार **कमला यन्त्र** ही है। क्योंकि यह पूर्ण रूप से प्रभाव युक्त और सिद्धिदायक है। कमला तन्त्र में यन्त्र के बारे में बताया है, कि यह पूर्ण विधि के साथ षट्कोण सहित अष्टदलों से युक्त महत्वपूर्ण यन्त्र हो—

अनुक्तकल्पे यन्त्रस्तु लिखेत्पद्मन्दलाष्टकम्। षट्कोणकर्णिकतन्त्र वेदद्वारोपशोभितम्॥

यह यन्त्र ताम्र पत्र पर अंकित हो, साथ ही साथ कमला तन्त्र में बताया गया है, कि जब तक 'तन्त्रोद्धार' सम्पन्न यन्त्र न हो तो उसका प्रभाव नहीं होता, तन्त्रोद्धार में बारह तथ्य स्पष्ट किये गये हैं, बताया है कि इन तत्वों को सम्पन्न करके ही यन्त्र का प्रयोग करना चाहिए।

कमला तन्त्र के अनुसार—

१- यह शुद्धता के साथ विजय काल में अंकित किया जाना चाहिए, २-इसका पूर्ण रूप से मन्त्रोद्धार हो, ३-यह वाग् बीज से सम्पुटित हो, ४-लज्जा बीज के द्वारा इसका अभिषेक हो, ५-श्री बोज के द्वारा यह यन्त्र सिद्ध हो, ६-काम बीज के द्वारा यह वशीकरण युक्त हो, ७-पद्म बीज के द्वारा यह प्रभाव युक्त हो, ८-जगत् बीज के द्वारा यह आकर्षण युक्त हो, ९-रुद बीज के द्वारा वह आकर्षण युक्त हो, १०-मनु बीज के द्वारा मन पर नियन्त्रण प्रदान करने वाला हो, ११-ऐं बीज के द्वारा वैभव प्रदान युक्त हो, १२-रमा बीज के द्वारा सिद्धि दायक हो।

Scanned by CamScanner

तारं पूर्वं लिखित्वा परमलममलं वाग्भवं बीजमन्य
ल्लज्जा श्री बीज-पूर्ववश-करण-तमं काम-बीजं परस्तात् ।
ह्सौः पश्चाद् जनोयंनसूयुतमधः जगत् पूर्विकायः प्रसूत्या
हेन्तं रूपं नमोत्तं निखिल-मनु-विदुर्मन्त्रमुक्तं रमायाः ॥

वास्तव में ही कमला यन्त्र पूर्ण रूप से सिद्ध करना अत्यन्त पेचीदा और श्रमसाध्य कार्य है । इस प्रकार का यन्त्र पूजा स्थान में स्थापित कर साधना प्रारम्भ करें । ऐसा यन्त्र जहां उनके स्वयं के जीवन के लिए तो सौभाग्यदायक तो रहेगा ही, आने वाली कई-कई पीढ़ियों के लिए भी यह यन्त्र भाग्योदयकारक बना रहेगा ।

इस प्रकार के यन्त्र को जल से फिर पचामृत (दूध, दही, घी, शहद और शक्कर) मे स्नान कराकर पुनः शुद्ध जल से धोकर लकड़ी के बाजोट पर पीला वस्त्र बिछा कर इस यन्त्र को स्थापित करना चाहिए । फिर साधक अलग पात्र में गणपति की स्थापना करें । दूसरे बाजोट पर नवग्रहों को स्थापित करें और फिर एक थाली रख कर उस पर नया पीला वस्त्र बिछा दें, कपड़े के ऊपर सिन्दूर से सोलह बिन्दियां लगावें सबसे ऊपर चार फिर उनके नीचे चार-चार बिन्दियां चार पंक्तियों में, इस प्रकार कुल १६ बिन्दियां लगा कर प्रत्येक बिन्दी पर एक-एक लौंग तथा इलायची रख कर फिर इसका अष्टगन्ध से पूजन करें और हाथ जोड़ कर निम्न ध्यान मन्त्र का उच्चारण करें—

उद्यन्मार्तण्ड-कान्ति-विगलित कवरीं कृष्ण वस्त्रवृतांगाम् ।
दण्ड लिंगं कराब्जैर्वरमथ भुवन सन्दधतीं त्रिनेत्राम् ॥
नाना रत्नैर्विभातां स्मित-मुख-कमलां सेवितां देव-देव-सर्वै ।
भार्यां राज्ञीं नमो भूत स-रवि-कल-तनुमाश्रये ईश्वरीं त्वाम् ॥

जो साधक संस्कृत पढ़े-लिखे नहीं हैं, उनको चिन्ता नहीं करनी चाहिए और धीरे-धीरे शब्द उच्चारण करते हुए यह ध्यान पढ़ सकते हैं ।

फिर अपने सामने 'ॐ नमः शिवाय' मन्त्र से **लक्ष्मी पद्म शंख** स्थापित करें और पुष्प तथा अक्षत अपने सिर पर चढ़ा लें ।

इसके बाद ताम्र पत्र पर अंकित **"कमला यन्त्र"** को जहां सोलह बिन्दियां लगाई हैं, उसी पर पूर्ण श्रद्धा के साथ स्थापित करें, और अष्टगन्ध से इस यन्त्र पर सोलह बिन्दियां लगा दें । ये सोलह बिन्दियां सोलह लक्ष्मी की प्रतीक मानी जाती हैं ।

इसके बाद दोनों हाथों में पुष्प तथा अक्षत लेकर निम्न मन्त्र से अपने घर में भगवती कमला का आह्वान करते हुए यन्त्र पर पुष्प, अक्षत समर्पित करें—

आह्वान मन्त्र

ॐ ब्रह्मा ऋषये नमः शिरसि । गायत्रीश्छन्दसे नमः मुखे । श्री जगन्मातृ महालक्ष्म्यै देवतायै नमः हृदि । श्रीं बीजाय नमः गुह्ये । सर्वेष्ट सिद्धये मम धनाप्तये ममाभीष्टप्राप्तये जपे विनियोगाय नमः सर्वांगे ।

इसके बाद साधक सामने शुद्ध घृत का दीपक लगावें उसका पूजन करें तत्पश्चात् सुगन्धित अगरबत्ती प्रज्वलित करें, ऐसा करने के बाद साधक इस यन्त्र पर कुंकुम समर्पित करें, पुष्प तथा पुष्प माला पहिनाएं, अक्षत चढ़ावें तथा नैवेद्य का भोग लगावें। सामने ताम्बूल, फल, और दक्षिणा समर्पित करें।

तत्पश्चात् साधक को चाहिए कि वह निम्न दुर्लभ कवच का पांच बार पाठ करे जो महत्वपूर्ण है, इसके द्वारा उस यन्त्र का साधक के प्राणों से सीधा सम्बन्ध स्थापित हो जाता है, और साधना सम्पन्न करने पर साधक को ओज, तेज, बल, बुद्धि तथा वैभव प्राप्त होने लग जाता है।

इस कवच का उच्चारण सनत्कुमार ने भगवती लक्ष्मी को प्रसन्न करने के लिए किया था। कमला उपनिषद् में भी इस लघु कवच का अत्यन्त महत्वपूर्ण प्रयोग है—

ऐंकारो मस्तके पातु वाग्भवी सर्व सिद्धिदा। ह्रीं पातु चक्षुषोर्मध्ये चक्षुयुग्मे च शांकरी।
जिह्वायां मुख-वृत्ते च कर्णयोर्दन्तयोर्नसि। ओष्ठाधरे दन्त पंक्तौ तालु-मूले हनौ पुनः॥
पातु मां विष्णु वनिता लक्ष्मीः श्रीविष्णु रूपिणी। कर्ण-युग्मे भुज-द्वये-स्तन-द्वन्द्वे च पार्वती॥
हृदये मणि-बन्धे च ग्रीवायां पार्श्वयोर्द्वयोः। पृष्ठदेशे तथा गुह्ये वामे च दक्षिणे तथा॥
स्वधा तु-प्राण-शक्त्यां वा सीमन्ते मस्तके तथा। सर्वांगे पातु कामेशी महादेवी समुन्नतिः॥
पुष्टिः पातु महा-माया उत्कृष्टिः सर्वदावतु। ऋद्धिः पातु सदादेवी सर्वत्र शम्भु-वल्लभा॥
वाग्भवी सर्वदा पातु, पातु मां हर-गेहिनी। रमा पातु महा-देवी, पातु माया स्वराट् स्वयं॥
सर्वांगे पातु मां लक्ष्मीर्विष्णु-माया सुरेश्वरी। विजया पातु भवने जया पातु सदा मम॥
शिव-दूती सदा पातु सुन्दरी पातु सर्वदा। भैरवी पातु सर्वत्र भैरुण्डा सर्वदावतु॥
पातु मां देव-देवी च लक्ष्मीः सर्व-समृद्धिदा। इति ते कथितं दिव्य कवच सर्व-सिद्धये॥

वास्तव में ही यह कवच जो कि ऊपर स्पष्ट किया गया है यह अपने आप में महत्वपूर्ण है, यदि साधक नित्य इसके ग्यारह पाठ करता है, तो भी उसके जीवन में धन, वैभव, यश, सम्मान प्राप्त होता रहता है।

प्रयोग में इसका पांच पाठ करें, फिर "कमला माला" का पूजन करना चाहिए। यह कमला माला विशेष मन्त्रों से सिद्ध और सूर्य उपनिषद् से संगुफित होती है, जो कि वास्तव में ही अत्यन्त महत्वपूर्ण मानी गई है। इस माला को पहले से ही प्राप्त कर रख लेनी चाहिए।

इसके बाद साधक घी के सोलह दीपक लगा लें, फिर निम्न कमला मन्त्र की सोलह माला मन्त्र जप उसी आसन पर बैठे-बैठे करें—

कमला मन्त्र

॥ ॐ ऐं ईं ह्रीं श्रीं क्लीं ह्सौः जगत्प्रसूत्यै नमः ॥

जब सोलह माला मन्त्र जप हो जाय तब भगवती लक्ष्मी की विधि-विधान के साथ आरती सम्पन्न करें और उस यन्त्र को पूजा स्थान में ही स्थापित रहने दें, तथा **कमला माला** को इस यन्त्र के सामने या यन्त्र के ऊपर स्थापित कर दे। भविष्य में जब भी कमला मन्त्र का जप करना हो तो इसी कमला माला से उपरोक्त मन्त्र की एक माला फेरें।

वस्तुतः यह मन्त्र और यह तांत्रिक प्रयोग अपने आपमें ही दुर्लभ और महत्वपूर्ण है, साधकों को चाहिए कि वे अवश्य ही इस साधना को सम्पन्न करें और अनुभव करें कि आज के युग में भी साधनाएं कितनी शीघ्र और अचूक फल प्रदान करने में समर्थ हैं। ✱

Scanned by CamScanner

लक्ष्मी वशीकरण साधना

त्रिलोकी माया लक्ष्मी के ये तीन प्रयोग

जिनकी सिद्धि से लक्ष्मी वशीभूत हो जाती है

लक्ष्मी साधना के अनुष्ठानों में सबसे बड़ी बात यह होती है कि यह सभी प्रयोग बड़े ही सहज और सरल होते हैं, लेकिन जो साधक अनिश्चित मन से भ्रम में और आस्थाहीन होकर प्रयोग करता है तो उसे सफलता कैसे मिल सकती है ? लक्ष्मी का वास तो उसके अपने भक्तों के यहां ही रहता है, और अपने जिस भक्त पर वह कृपा कर देती है वह निहाल हो जाता है और जिस कर्महीन भाग्यहीन व्यक्ति पर लक्ष्मी की कृपा नहीं होती वह तो दर-दर की ठोकरें ही खाता है।

तन्त्र, साधना का सर्वोत्तम स्वरूप है, जो कार्य केवल मन्त्र के माध्यम से नहीं हो सकता, वह तन्त्र के माध्यम से सहज सरल रूप से सम्भव हो जाते हैं, तन्त्र हमेशा शुद्ध रूप में ही किया जाना चाहिए, और इसका उद्देश्य भी शुद्ध होना आवश्यक है। तन्त्र का तात्पर्य केवल मारण, मोहन, वशीकरण ही नहीं है, तन्त्र का तात्पर्य है कि शुद्धतम रूप से शास्त्रोक्त विधि से कार्य का संपादन करना।

आगे कुछ विशिष्ट प्रयोग जो कि कार्तिक मास में ही सम्पन्न किये जाने चाहिए, स्पष्ट किये जा रहे हैं। और इनकी सरलता में ही इनकी सफलता छिपी है, ये सभी प्रयोग पूर्ण भक्ति भाव से साधक अवश्य ही सम्पन्न करें—

Scanned by CamScanner

शास्त्रों में केवल कार्तिक कृष्ण अमावस्या को ही दीपावली नहीं कहते, अपितु पूरे कार्तिक मास को ही "लक्ष्मी मास" या "दीपावली मास" कहा गया है, कई साधकों ने तो कार्तिक के तीस दिनों में तीस प्रयोग सम्पन्न किये और रंक से राजा बन कर दिखा दिया कि यदि कोई साधक पक्का निश्चय कर ही ले तो वह अद्वितीय रूप ने लक्ष्मी सिद्ध कर सकता है।

नीचे कुछ अत्यन्त ही दुर्लभ प्रयोग साधकों के लिए स्पष्ट कर रहा हूं उनको चाहिए कि वे इन प्रयोगों को सम्पन्न करें और मेरा तो अनुभव यह रहा है कि तन्त्र के इन तीनों प्रयोगों को वे सम्पन्न करें, जिससे कि उनके जीवन में अद्वितीय सफलता प्राप्त हो सके।

१-गुरु गोरखनाथ कृत लक्ष्मी कीलन प्रयोग

गोरखनाथ ने इस प्रयोग को अत्यन्त ही महत्वपूर्ण बताया है और यह कहा है कि अन्य कोई भी तन्त्र खण्डित हो सकता है, परन्तु यह प्रयोग अपने आप में कभी कमजोर नहीं होता, इसका निश्चित और अनुकूल परिणाम प्राप्त होता ही है, मेरे व्यक्तिगत अनुभव में भी यह अपने आप में दुर्लभ और महत्वपूर्ण प्रयोग है और इसमें निश्चय ही पूर्ण सफलता प्राप्त होती है।

यह प्रयोग कार्तिक शुक्ल पक्ष नवमी को ही सम्पन्न किया जाता है, इस वर्ष यह दिवस ३-११-९२ को ही आ रहा है अतः साधकों को चाहिए कि इस दिन इस प्रयोग को अवश्य ही सम्पन्न करें।

इस दिन, रात्रि को साधक नित्य क्रिया सम्पन्न कर पीले आसन पर या मृगछाला पर उत्तराभिमुख होकर बैठें सामने पांच तेल के दीपक लगा दें फिर एक सफेद कागज पर गोरखनाथ प्रणीत निम्न लक्ष्मी कीलन यन्त्र अंकित करें इसे चन्दन से, केसर से, अथवा कुंकुम से अंकित किया जा सकता है—

लक्ष्मी कीलन यन्त्र

९	९
९	९

इसके बाद इस यन्त्र के बीच में गोरखनाथ मन्त्रसिद्ध **"सियारसिंगी"** को स्थापित करें इस बात का ध्यान रखें कि पहले किसी पूजा या प्रयोग में उपयोग की गई सियारसिंगी का उपयोग नहीं किया जा सकता, इसके अलावा यह प्रामाणिक सियारसिंगी होनी चाहिए, और गुरु गोरखनाथ ने अपने ग्रन्थ में जिस प्रकार से बताया है उस प्रकार से सिद्ध होनी चाहिए।

इसके बाद सियारसिंगी पर निम्न मन्त्र का उच्चारण करते हुए पुष्प चढ़ावें, इसमें किसी भी प्रकार के पुष्पों का प्रयोग किया जा सकता है, दो बार मन्त्र पढ़ कर एक पुष्प चढ़ावें, इस प्रकार साधकों को मात्र १०८ पुष्प चढ़ाने हैं और २१६ बार मन्त्र का उच्चारण करना है, इसे सम्पुटित प्रयोग कहा जाता है, इसका तात्पर्य यह है कि पुष्प के ऊपर और नीचे लक्ष्मी को आबद्ध किया जाता है।

मन्त्र

कामरूपदेश कामाख्या देवी जहां बसे लक्ष्मी महारानी। आवे घर में जम कर बैठे, सिद्ध होय, मेरो सब कारज सिद्ध करे, जो चाहूं सो होय ह्रीं ह्रीं फट्॥

जब मन्त्र जप पूरा हो जाय तो साधक रात को वहीं पर शयन करे, इस बात का ध्यान रहे कि सारी रात एक घी और एक तेल का दीपक जलता रहे। सोने से पहले साधक जिन-जिन प्रश्नों के उत्तर जानना चाहता है, वे सारे प्रश्न एक कागज पर लिख कर अपने सिरहाने तकिये के नीचे रख कर सोवे या अपनी जो इच्छाएं हों, उनको लिख कर भी सिर के नीचे रख कर सो सकता है।

Scanned by CamScanner

रात में अवश्य ही पूछे गये प्रश्नों का उत्तर प्राप्त होता है, उदाहरण के लिए लाटरी का नम्बर क्या हो सकता है, या अमुक के साथ व्यापार करना ठीक रहेगा या नहीं, आदि किसी भी प्रकार के प्रश्न हो सकते हैं।

प्रातःकाल उठ कर उस सियारसिंगी को घर में जहां रुपये पैसे रखते हैं, वहां भली प्रकार से स्थापित कर दें और जो कागज पर लक्ष्मी कीलन यन्त्र अंकित किया था, उसको समेट कर एक तावीज में भर कर उसे गले अथवा बांह में धारण कर लें।

यों लक्ष्मी आबद्ध यन्त्र जो आप पहिनेंगे, वह तो अक्षय भण्डार और अटूट लक्ष्मी प्राप्ति के लिए वरदान स्वरूप है ही।

२-मत्स्येन्द्र नाथ कृत लक्ष्मी आबद्ध प्रयोग

गुरु मत्स्येन्द्र नाथ तो गोरखनाथ से भी ज्यादा सिद्ध योगी हुए हैं, तन्त्र के वे साक्षात् अवतार थे, उन्होंने अपनी संहिता में लक्ष्मी आबद्ध प्रयोग को देकर ससार का महान उपकार किया है यह प्रयोग कार्तिक कृष्ण पक्ष की अष्टमी को सम्पन्न किया जाता है, इस दिन को "अहोई दिवस" या "आठा दिवस" कहा जाता है यह शब्द "अष्ट लक्ष्मी" का अपभ्रंश है, इस वर्ष कार्तिक कृष्ण पक्ष की अष्टमी दिनांक १९-१०-९२ को आ रही है, महत्वपूर्ण बात यह है कि इस दिन "अहोई अष्टमी के साथ-साथ चन्द्र पुष्य का योग बन रहा है, अतः साधकों को इस दिन अवश्य ही साधना करनी चाहिए।

इस दिन साधक प्रातःकाल उठ कर स्नान कर, पूजा स्थान में बैठ जांय सामने जलपात्र, कुंकुंम, अक्षत आदि हों, इस दिन लक्ष्मी को आबद्ध करने के लिए **"वरदायक लक्ष्मीयुक्त गणेश विग्रह"** पूजा का विधान है, यह मत्स्येद्र नाथ द्वारा सम्पादित वरदायक लक्ष्मी गणेश मन्त्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त होना चाहिए।

इसके बाद साधक लक्ष्मी गणपति विग्रह को जल से स्नान करा कर फिर पौंछ कर उसके पूरे शरीर पर केसर लगाएं और "ॐ वरदायक महालक्ष्म्यै नमः" मन्त्र से १०८ बार थोड़े-थोड़े पीले रंग के रंगे हुए अक्षत चढ़ावें।

इसके बाद मूल प्रयोग प्रारम्भ होता है, साधक को चाहिए कि वे पहले से ही १०८ पुष्प लाकर रख दें, इस बात का ध्यान रखें कि न तो एक भी पुष्प ज्यादा हो और न ही कम, फिर निम्न मन्त्र का उच्चारण कर, पुष्प चढ़ावें, इस प्रकार क्रम से एक-एक मन्त्र पढ़ता हुआ, एक-एक पुष्प विग्रह पर चढ़ाता रहे।

मन्त्र

ॐ नमो वैताल धरणि गगन बांधूं, आठों दिशा नव नाथ बांधूं, लछमी को घर में बांधूं, वैपार चढ़े, गज तुरंग बढ़े, कनक सरै, सब सिद्ध होय, जो न होय, रुद्र को त्रिशूल खण्डित होय ठं ठं ठं ॥

जब पूरे १०८ पुष्प लक्ष्मी गणपति विग्रह पर चढ़ा दिये जांय तो हाथ जोड़ कर उनसे प्रार्थना करें कि लक्ष्मी गणेश मेरे घर में चिरस्थायी रूप से निवास करें, और फिर उसी दिन उस विग्रह को अपने पूजा स्थान में रख दें या तिजोरी में रख दें अथवा यदि व्यापार हो, या दुकान हो तो उसमें जहां रुपये पैसे रखते हैं, वहां स्थापित कर दें।

३-रावणकृत लक्ष्मी कीलन प्रयोग

रावण अपने आप में तन्त्र का अद्भुत् जानकार था, उसने ऋषि कुल में उत्पन्न हो कर उच्चकोटि की तन्त्र साधनाएं सम्पन्न की, और अपने घर को धन धान्य और समृद्धि से सम्पन्न कर दिया "रावण संहिता" में इस प्रयोग को अत्यन्त दुर्लभ और महत्वपूर्ण बताया है।

यह प्रयोग प्रति वर्ष कार्तिक शुक्ल पक्ष तृतिया को सम्पन्न होता है, इस बार बुधवार, तारीख-२८-१०-९२ को कार्तिक शुक्ल पक्ष तृतिया आती

Scanned by CamScanner

है, अतः साधकों को चाहिए कि इस वर्ष यह प्रयोग अवश्य ही सम्पन्न करें।

साधक इस दिन रात्रि को स्नान कर लाल वस्त्र पहन कर उत्तर की ओर मुंह कर बैठ जांय और सामने किसी तांबे के पात्र में कुंकुंम या केसर से निम्न प्रकार का लक्ष्मी आबद्ध यन्त्र बनावें, फिर इस यन्त्र की पूजा करें इस यन्त्र पर अक्षत और पुष्प चढ़ावें।

लक्ष्मी आबद्ध यन्त्र

२	४	६
५	५	५
८	१	६

इसके बाद पहले से ही प्राप्त किये हुए **"नौ लक्ष्मी वरवरद"** प्रत्येक कोष्ठक में एक-एक स्थापित कर दें ये नौ लक्ष्मी वर वरद नौ सिद्धियों के प्रतीक हैं, जो रावण कृत 'ऋषि प्रयोग से मन्त्रसिद्ध प्राणप्रतिष्टयुक्त हो।

इसके बाद प्रत्येक का जल से, कुंकुंम से, अक्षत और पुष्प से पूजन करें, फिर कमलगटटे की माला से मन्त्र जप वहीं पर बैठे-बैठे करें —

मन्त्र

।। ॐ ह्रीं श्रीं ह्रीं श्रीं ह्रीं श्रीं वर वरद
लक्ष्मी आबद्ध आबद्ध फट् ।।

मन्त्र जप समाप्त होने पर उन सभी लक्ष्मी वरवरद को एक धागे में पिरो कर घर के द्वार पर टांग दें या घर में किसी भी स्थान पर टांग दे, जिससे कि उनको हवा स्पर्श करती रहे, ये लक्ष्मी वरवरद दुकान के द्वार पर टांगे जा सकते हैं।

जितने समय तक इनको स्पर्श कर हवा घर में या दुकान में स्पर्श करेगी तब तक निरन्तर आर्थिक व्यापारिक उन्नति होती रहेगी, प्रयत्न यह करना चाहिए कि धागा मजबूत हो और पूरे वर्ष भर ये लक्ष्मी वर वरद टंगे रहने चाहिए, जिससे कि इनसे स्पर्श कर वायु घर में या दुकान मे प्रवेश होती रहे।

वास्तव में ही यह एक दुर्लभ और महत्वपूर्ण प्रयोग है जो साधकों को ठीक समय पर सम्पन्न करना चाहिए। ●

शक्तिर्नारायणस्याहं नित्या देवी सदोदिता। तस्या मे पंचकर्माणि नित्यानि त्रिदशेश्वर ।।
तिरोभावस्तथा सृष्टि-स्थिति-संहृतिरेव च। अनुग्रह इति प्रोक्तं कर्म रूपं च पंचकम् ।।
तस्य या परमा शक्तिर्ज्योत्स्नेव हिम दीधितेः। सर्वावस्थां गता देवी स्वात्म-भूतानपायिनी ।।
अहंता ब्रह्मणस्तस्य सोहमस्मि सनातनी। नित्य-निर्दोष-निस्सीम-कल्याण गुण शालिनी ।।
अहं नारायणी नाम सा सत्ता वैष्णवी परा ।।

हे इन्द्र ! भगवान नारायण की शक्ति रूपा, दिव्य गुणों से युक्त तथा नित्य स्थित रहने वाली हूं, इस संसार में मेरे पांच कर्म नियत हैं—शक्ति रूप में सभी जीवों में स्थित रहना, सृष्टि की रचना, पालन, संहार तथा सभी जीवों पर दया करना।

चन्द्रमा की चांदनी की तरह, उस परम सत्ता की शक्ति स्वरूपा हूं, सर्वत्र विद्यमान रहने वाली, सभी जीवों में मैं ही व्याप्त हूं।

सनातनी, सोऽहं रूपा, ब्रह्म स्वरूपा, नित्य, दोष रहित, असीम, कल्याणमयी हूं। वह परा-शक्ति रूपा नारायणी तथा वैष्णवी मैं ही हूं।

Scanned by CamScanner

विशेष साधनाएं

जिनसे लक्ष्मी सिद्धि सम्भव है

लक्ष्मी स्थायी निवास करती है

लक्ष्मी की साधना करना तो प्रत्येक साधक का कर्त्तव्य ही है, क्योंकि दरिद्रता जीवन का अभिशाप है और इस अभिशाप का निवारण लक्ष्मी साधना से ही सम्भव है ।

अलग-अलग स्वरूपों की साधना अलग-अलग कार्यों के लिए की जाती है, नीचे कुछ विशेष अद्भुत प्रयोग दिये जा रहे हैं—

लक्ष्मी से सम्बन्धित साधनाओं के कुछ विशेष नियम हैं, जो कि साधक को पूर्ण सिद्धि प्रदान कराते हैं, लक्ष्मी की साधना पूर्ण निष्ठा एवं आत्मविश्वास के साथ करनी चाहिए, लक्ष्मी मन्त्र का जप किसी भी समय सम्पन्न किया जा सकता है, लक्ष्मी साधना में साधक को शुद्ध एवं पवित्र वस्त्र पहिनने चाहिए, स्त्री को सुन्दर वस्त्र पूर्ण साज सज्जा के साथ पहिन कर लक्ष्मी पूजन करना चाहिए ।

लक्ष्मी पूजन के समय वातावरण अत्यन्त सुगन्धित होना चाहिए, वस्त्रों पर इत्र, सुगन्धित द्रव्य आदि का प्रयोग करना चाहिए ।

पूजन में सुगन्धित पुष्पों का प्रयोग करना चाहिए, आसन के लिए पीला आसन उपयुक्त रहता है तथा सुन्दर वस्त्र धारण कर अथवा पीले वस्त्र धारण कर लक्ष्मी साधना सम्पन्न करें ।

साधक के बाईं ओर तेल का तथा दाहिनी ओर शुद्ध

Scanned by CamScanner

घी का दीपक प्रज्वलित करना चाहिए, दोनों दीपकों के बीच सुगन्धित अगरबत्ती लगानी चाहिए ।

साधक का मुंह पूर्व या उत्तर की ओर होना चाहिए, उनके सामने साधना से सम्बन्धित यन्त्र, चित्र, मूर्ति आदि स्थापित करनी चाहिए ।

लक्ष्मी साधना, साधक अपनी धर्म पत्नी के साथ बैठ कर कर सकता है, ऐसी स्थिति में साधक को चाहिए कि वह अपने दाहिनी ओर पत्नी को बिठाएं ।

लक्ष्मी से सम्बन्धित निरन्तर साधना, करने वाले साधक के लिए यह पूर्ण अभीष्ट फलदायक रहता है, कि उसके पूजा स्थान में लक्ष्मी से सम्बन्धित तीन महायन्त्र— **श्रीयन्त्र, कुबेर यन्त्र, कनकधारा यन्त्र** में कम से कम एक को अवश्य ही स्थापित होना चाहिए, यन्त्र पूर्णतया शुद्ध एवं प्राण प्रतिष्ठा युक्त हो ।

लक्ष्मी साधना से पूर्व गणपति पूजन एवं गुरु पूजन शास्त्रों में आवश्यक माना गया है ।

१-अष्टलक्ष्मी प्रयोग

यह प्रयोग शनिवार या मंगलवार को छोड़ कर किसी भी दिन प्रारम्भ किया जा सकता है, यदि नित्य ग्यारह मालाएं जप किया जाय तो निश्चय ही साधक को धन, धान्य, कुटुम्ब-सुख, व्यापार-वृद्धि, कीर्ति, सम्मान एवं भाग्योदय सम्भव होता है, इस साधना में साधक को अपने पूजा स्थान में ताम्रपत्र पर अंकित मन्त्र सिद्ध **'अष्टलक्ष्मी यन्त्र'** स्थापित करना चाहिए । यन्त्र एवं चित्र का पूजन कुंकुम, केसर, अबीर-गुलाल, मौली, अक्षत, पंचामृत, गंगाजल, सुपारी, इत्र, दूध के प्रसाद से सम्पन्न करना चाहिए ।

मन्त्र

ॐ ह्रीं श्रीं रूपे प्रसीद । ॐ श्रीं दिव्यानुभावे प्रसीद प्रसीद । ॐ श्रीं उज्वले प्रसीद प्रसीद । ॐ ह्रीं श्रीं उज्वल रूपे प्रसीद प्रसीद । ॐ ह्रीं श्रीं ज्योतिमयि प्रसीद प्रसीद । ॐ श्रीं ज्योतिरूपधरे प्रसीद प्रसीद । मम गृहं मम गृहस्य अंगणं नन्दनवनं कुरु कुरु । ॐ अमृत कुम्भे प्रसीद प्रसीद । ॐ अमृतकुम्भ रूपे प्रसीद प्रसीद । मम वांछितं देहि देहि । ॐ ऋद्धिदे प्रसीद प्रसीद । ॐ समृद्धिदे प्रसीद प्रसीद । ॐ महालक्ष्मी प्रसीद प्रसीद । ॐ श्रीं लोकमातः प्रसीद प्रसीद । ॐ श्रीं लोकजननि प्रसीद प्रसीद ।
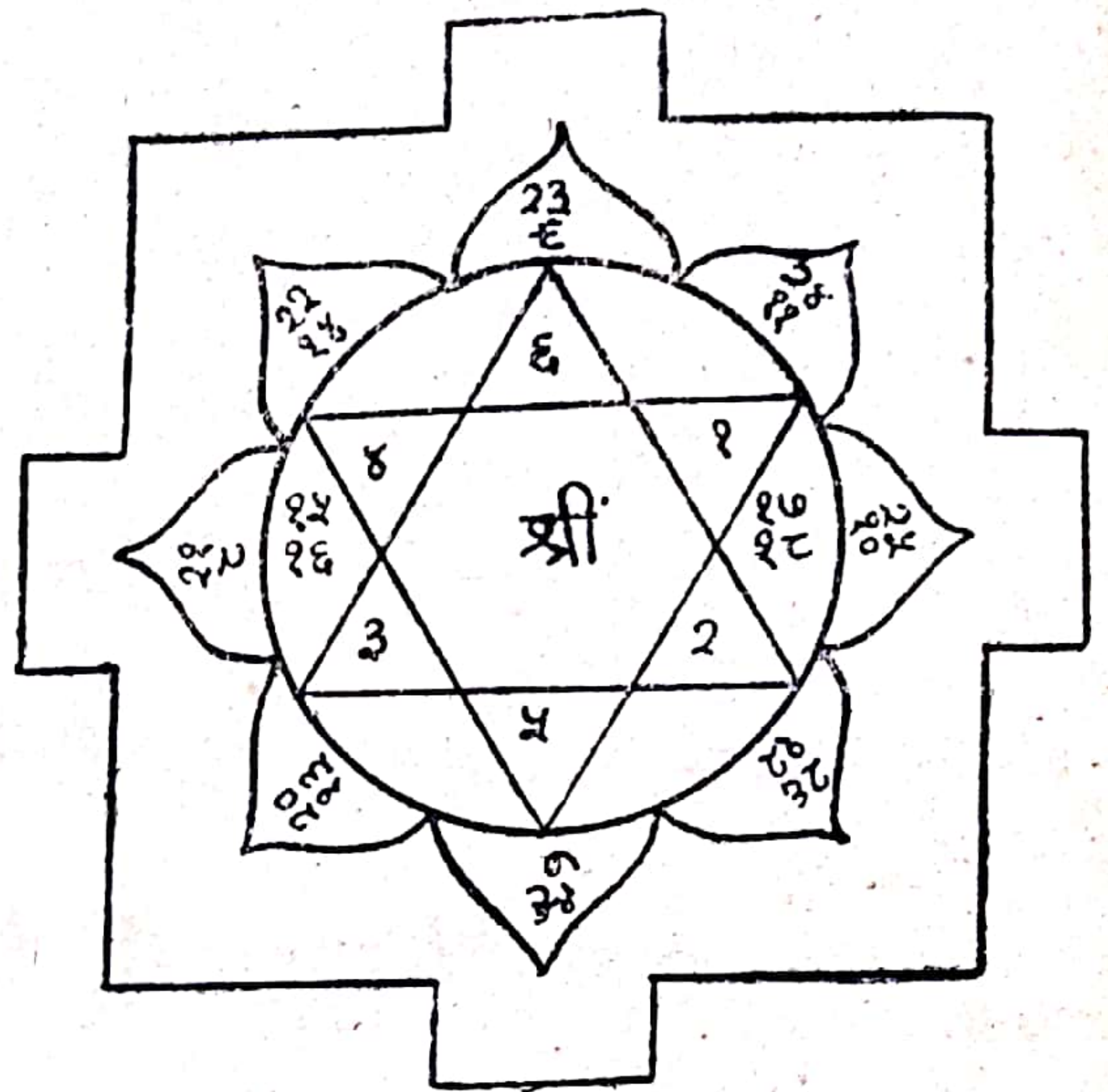
ॐ श्रीं शोभा वर्द्धिनि प्रसीद प्रसीद । ॐ श्रीं अमृत संजीवनी प्रसीद प्रसीद । ॐ श्रीं शान्त लहरि प्रसीद प्रसीद । ॐ श्रीं प्रशान्तलहरि प्रसीद प्रसीद । ॐ श्रीं ॐ श्रीं शान्तप्रशान्तलहरि प्रसीद प्रसीद । ॐ श्रीं ग्लौं श्रीं नमः । ॐ ह्रीं सर्वशत्रु दमनि सर्वशत्रु निवारय निवारय, विघ्नं छिन्धि छिन्धि प्रसीद । धरणेन्द्रपद्मावति मम सुखं कुरु कुरु प्रसीद प्रसीद ।

इस मन्त्र का जप **कमलगट्टा माला** से ही सम्पन्न करना चाहिए ।

Scanned by CamScanner

२-बाधा निवारण : शिव-लक्ष्मी प्रयोग

जिस साधक अथवा साधिका को अपने कार्यों की पूर्णता में बार-बार बाधाओं का सामना करना पड़ रहा हो, उन्नति के उचित साधन प्राप्त नहीं होते हों, शत्रुओं का भय अधिक रहता हो, उसे यह शिव प्रयोग अवश्य सम्पन्न करना चाहिए।

किसी भी सोमवार को प्रारम्भ किये जाने वाले इस साधना प्रयोग हेतु मन्त्रसिद्ध प्राणप्रतिष्ठायुक्त 'स्फटिक शिवलिंग' अथवा 'नर्मदेश्वर शिवलिंग' अत्यन्त उत्तम रहता है, मन्त्र जप 'शंख माला' से सम्पन्न करना चाहिए, साधना के समय सर्वप्रथम गुरु पूजन एवं गणपति पूजन करने के पश्चात् शंख माला से "ॐ नमः शिवाय" मन्त्र की एक माला का जप करें साथ ही साथ निरन्तर दूध मिश्रित जल शिवलिंग पर अर्पित करते रहें, इसके पश्चात् नीचे लिखे शिव लक्ष्मी मन्त्र जप के साथ ही साथ बिल्व पत्र शिवलिंग पर अर्पित कर एक माला मन्त्र जप करें।

यह साधना प्रयोग सात दिन तक सम्पन्न करने से साधक को सभी कार्यों में सिद्धि प्राप्त होती है, और उसकी विपत्तियां दूर होती हैं. शत्रुओं का तेज क्षीण होता है।

मन्त्र

ॐ ह्रीं श्रीं ठं ठ ठं नमो भगवते मम सर्वकार्याणि साधय साधय मां रक्ष रक्ष शीघ्रं मां धनिनं कुरु कुरु हुं फट् श्रियं देहि प्रज्ञां देहि ममापत्ति निवारय निवारय स्वाहा ॥

३-स्थिर लक्ष्मी प्रयोग

यह प्रयोग लक्ष्मी प्राप्ति का तंत्र प्रयोग है, इस प्रयोग में साधक को मृग चर्म का आसन बिछा कर मन्त्र जप करना चाहिए, इस साधना में साधक अपने सामने पूजा स्थान में लकड़ी के बाजोट पर लाल वस्त्र बिछा कर चौकोर रूप में **'२१ लक्ष्मी प्राकाम्य'** स्थापित करें और बीच में **'गणपति लक्ष्मी यन्त्र चित्र'** तथा **'गुरु यन्त्र-चित्र'** स्थापित करें, मौन रूप से प्रतिदिन एक माला मन्त्र जप कर, एक लक्ष्मी प्राकाम्य किसी सरोवर, जलाशय अथवा कुएं में अर्पित कर दें।

२१ दिन की इस विशिष्ट साधना काल में ही साधक को विशेष अनुभव होते हैं, रुके हुए कार्य पूरे होने प्रारम्भ हो जाते हैं, इस साधना में **'स्फटिक माला'** का प्रयोग करना चाहिए।

मन्त्र

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं श्रीं क्रीं क्रीं क्रीं स्थिरां स्थिरां ॐ ॥

४-ऋणमोचन लक्ष्मी प्रयोग

इस साधना में साधक को अपने पूजा स्थान में **'लक्ष्मी यन्त्र-चित्र'** स्थापित करने के पश्चात् बहुत सारा चन्दन घिस कर थाली में लगा कर उस थाली में मन्त्रसिद्ध प्राणप्रतिष्ठायुक्त **'तीन मोतीशंख'** एक साथ स्थापित करने चाहिए, इन तीनों मोतीशंख
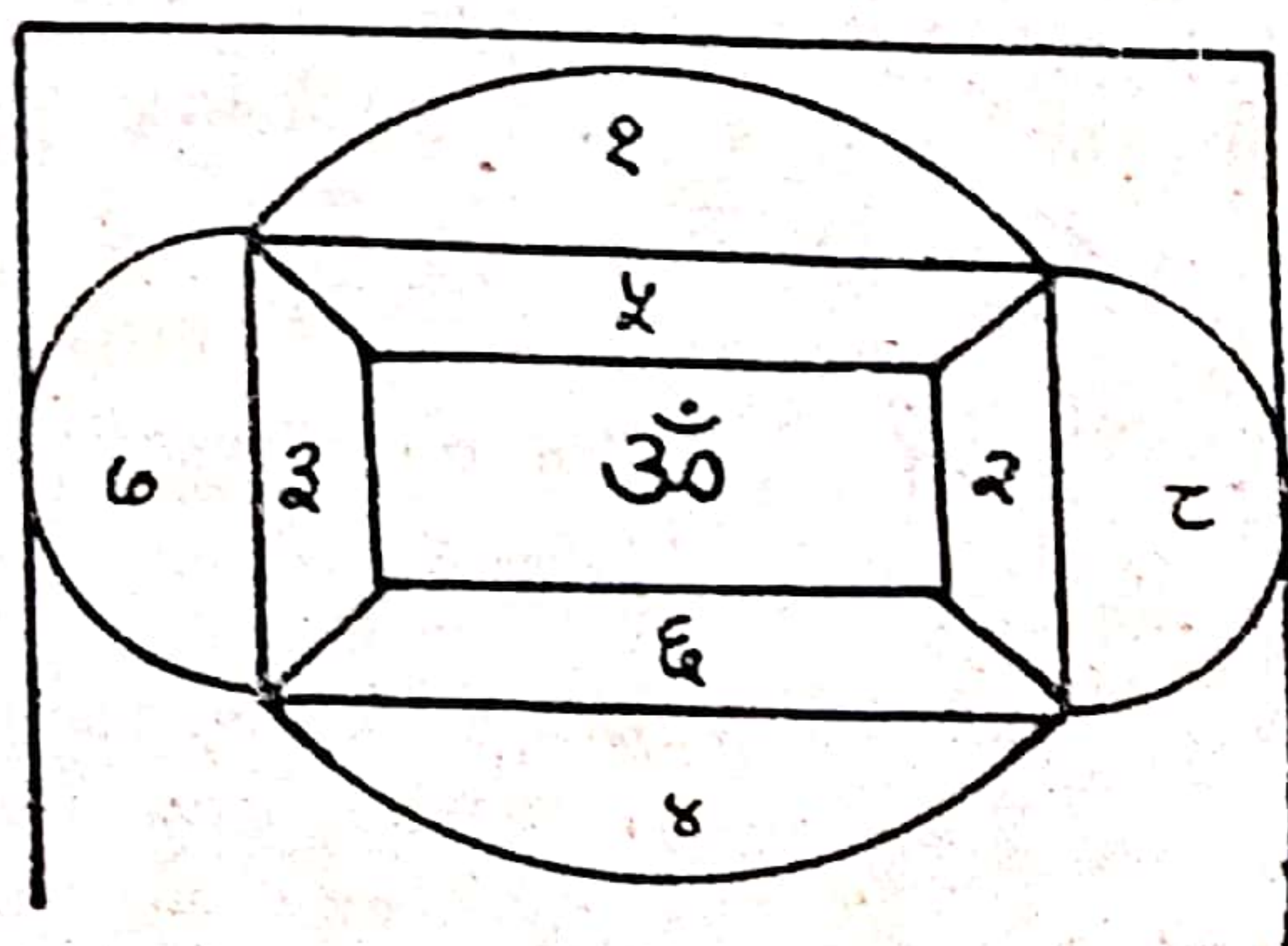
ऋण मोचन यन्त्र

१ ५ ७ ३ ॐ २ ८ ६ ४

पर "श्रीं" बीज मन्त्र का जप करते हुए सिन्दूर अर्पित करें, बीजमन्त्र की एक माला जप के पश्चात सुगन्धित अगरबत्तियां जलाएं और ऋणमोचन लक्ष्मी मन्त्र का जप **कमलगट्टा माला** से सम्पन्न करें, इस साधना में तेल का दीपक होना चाहिए । प्रतिदिन एक माला मन्त्र जप सम्पन्न करने से साधक के ऋणों का नाश होता है तथा मानसिक शान्ति प्राप्त होती है ।

सात दिन की इस साधना में सफलता पूर्ण रूप से प्राप्त न हो तो ४४ दिन तक यह मन्त्र जप करें, साधना की पूर्णता के पश्चात् तीनों मोती शंख अपने पूजा स्थान में ही लाल वस्त्र में बांध कर रख दें ।

मन्त्र

ॐ ह्रीं क्रीं श्रीं श्रियै नम मम लक्ष्मीं मामृणोत्तीर्ण कुरु कुरु सम्पदं वर्धय वर्धय नमः ।।

५·कुबेर लक्ष्मी प्रयोग

यह सरल प्रयोग एक दिन का है, और बाद में नित्य प्रति एक माला इस विशेष मन्त्र का जप करना आवश्यक है, इस प्रयोग में पूजा स्थान में **'लक्ष्मी चित्र'** के साथ साथ **'कुबेर यन्त्र'** स्थापित करना आवश्यक है, इस प्रयोग में अपने सामने घी का दीपक और अगरबत्ती अवश्य जलाएं ।

मन्त्र

कुबेर त्वं धनाधीश गृहे ते कमला स्थिता ।
तां देवीं प्रेषयाशु त्वं मद्गृहे ते नमो नमः ।।

यह साधना प्रयोग बुधवार को प्रारम्भ करना चाहिए, पूजन कक्ष में कुबेर यन्त्र, अबीर-गुलाल, अक्षत, फल इत्यादि समर्पित करने के पश्चात् मन्त्र जप के साथ-साथ दूब, कमलबीज अवश्य अर्पित करने चाहिए, यह प्रयोग सम्पूर्ण दरिद्रता नाशक प्रयोग है, इस मन्त्र का **'स्फटिक माला'** से निरन्तर जप करने से दरिद्रता दूर होती है, और लक्ष्मी साधक के घर में स्थिर होती है ।

६-नित्य लक्ष्मी प्रयोग

यह प्रयोग प्रत्येक साधक को नियमित रूप से सम्पन्न करना चाहिए इस साधना में अपने पूजा स्थान में **'कनकधारा यन्त्र'** स्थापित कर प्रतिदिन पुष्प आदि से पूजा करनी चाहिए, तत्पश्चात नित्य प्रति का पूजन सम्पन्न किया जाता है, फिर गणपति एवं गुरु पूजन के पश्चात् एक माला निम्न मन्त्र का जप अवश्य करना चाहिए ।
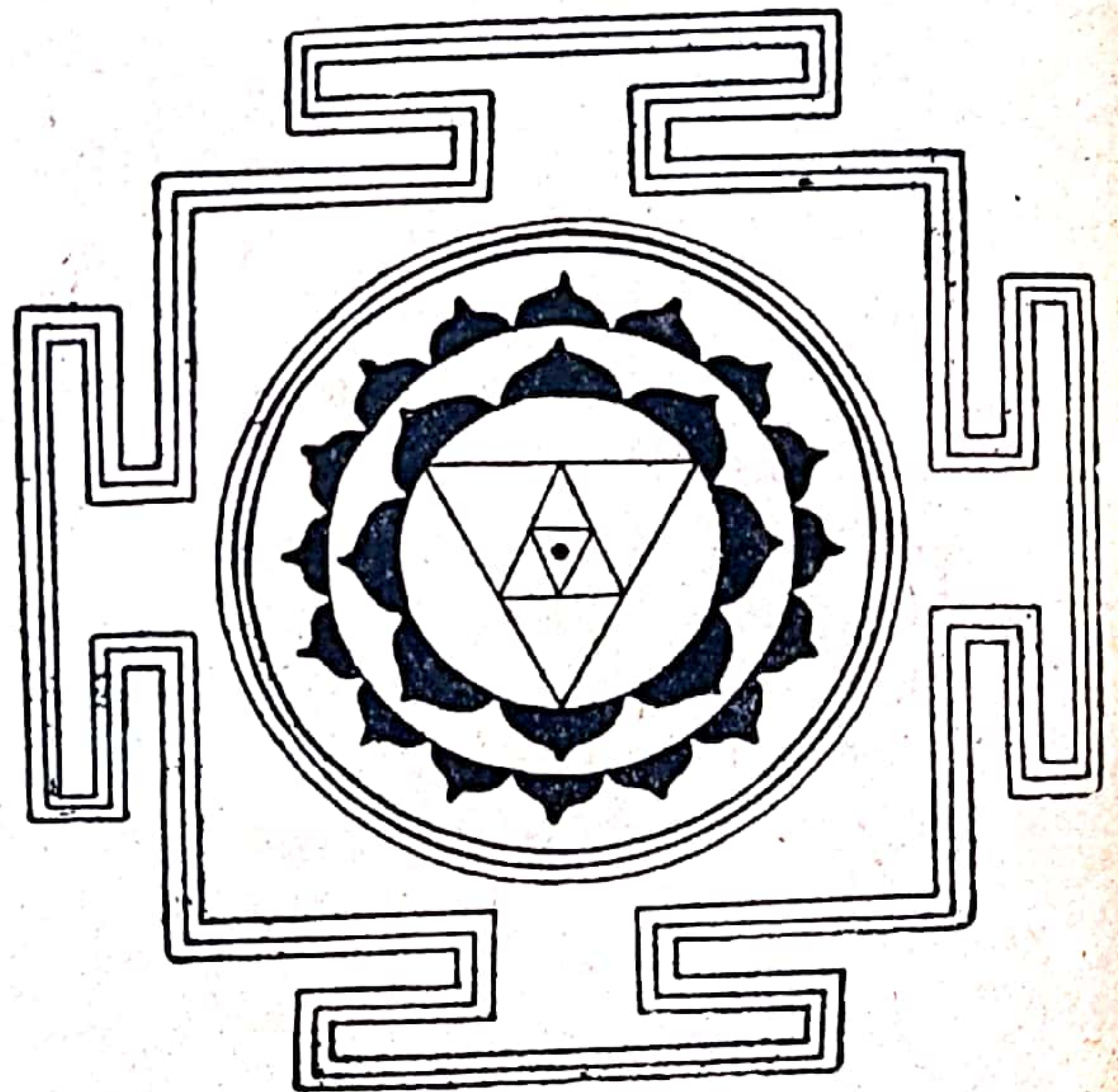
मन्त्र

ॐ नमो ह्रीं श्रीं क्रीं श्रीं क्लीं क्लीं श्रीं लक्ष्मी मम गृहे धनं चिन्ता दूरं करोति स्वाहा ।।

इस मन्त्र का जप किसी भी समय किया जा सकता है, इस मन्त्र के निरन्तर जप से नित्य प्रति की चिन्ताएं कम होती हैं तथा खर्च के अनुपात में आमदनी में वृद्धि होती है मन में हर समय प्रसन्नता बनी रहती है ।

Scanned by CamScanner

श्री विद्या तंत्र

षोडशी त्रिपुर सुन्दरी महासाधना

त्रिपुर सुन्दरी का स्थान दस महाविद्याओं में सबसे मुख्य है, क्योंकि यह शान्त स्वरूप और उग्र स्वरूप दोनों की ही साधना है। जीवन में काम, सौभाग्य, शरीर सुख के साथ-साथ वशीकरण, सरस्वती सिद्धि, लक्ष्मी सिद्धि, आरोग्य सिद्धि की भी यही साधना है। वास्तव में त्रिपुर सुन्दरी को तो राज-राजेश्वरी ही कहा गया है, क्योंकि यह अपनी कृपा से साधारण व्यक्ति को भी राजा बनाने में समर्थ है।

वैसे तो इस साधना के सहस्र स्वरूप हैं, क्योंकि इसका नाम ही "सहस्र रूपिणी" है और प्रत्येक स्वरूप की साधना अलग-अलग रूप में की जाती है। प्रस्तुत पंक्तियों में इस साधना के प्रमुख तथ्यों को ध्यान में रख कर एक गहन विश्लेषण प्रस्तुत किया जा रहा है—

विश्वामित्र एवं वशिष्ठ का विवाद तो शास्त्रों में विस्तार से लिखा है, उस विवाद के अन्तर्गत आखिर एक दिन क्षत्रिय विश्वामित्र ने जो कि विभिन्न साधनाएं एवं सिद्धियां प्राप्त कर राजर्षि विश्वामित्र कहलाने लग गये थे, उन्होंनेवशिष्ठ से पूछा कि ऐसी कौन सी साधना है जिसको सम्पन्न करने से मैं ब्रह्मर्षि बन सकता हूं और जगत में मेरा नाम आपके बराबर हो सकता है वशिष्ठ ने कहा कि हे राजर्षि विश्वामित्र ! जीवन में पूर्णता के लिए दस प्रकार की सिद्धियां आवश्यक हैं, ये सिद्धियां हैं—

१-अणिमा सिद्धि, २-लघिमा सिद्धि, ३-महिमा सिद्धि, ४-ईशित्व सिद्धि, ५-वशित्व सिद्धि, ६-प्राकाम्य सिद्धि, ७-भक्ति सिद्धि, ८-इच्छा सिद्धि, ९-प्राप्ति सिद्धि, १०-सर्वकाम सिद्धि।

ये दस सिद्धियां आपके प्राप्त करनी आवश्यक हैं, और इसका एक ही उपाय है कि आप राजराजेश्वरी त्रिपुर

Scanned by CamScanner

सुन्दरी की कृपा से ये सिद्धियां प्राप्त कर लेने से आपके जीवन में पूर्णता आ जायेगी और इतिहास गवाह है कि विश्वामित्र ने अन्ततः त्रिपुर सुन्दरी साधना सम्पन्न कर ब्रह्मर्षि पद प्राप्त कर ही लिया।

अपनी हिमालय यात्रा के दौरान पूज्य गुरुदेव जब अपने गुरु श्री सच्चिदानन्द जी महाराज के पास पहुंचे तो उन्होंने अपने इस शिष्य को दीक्षा देने के पश्चात् बोले कि निखिल ! तुमने स्थान-स्थान पर यात्रा कर ज्ञानियों से ज्ञान प्राप्त कर कई तरह की सिद्धियां प्राप्त कर ली है, लेकिन इन सिद्धियों के कारण तुम यह मत समझ लेना कि बहुत कुछ हो गया है, अभी तो बहुत कुछ बाकी है, तुम्हें यदि अष्टादश सिद्धियां प्राप्त करनी हैं तो विराट शक्ति स्वरूप श्रीचक्र स्थित त्रिपुर सुन्दरी की साधना सम्पन्न करनी ही पड़ेगी, और जब यह साधना सम्पन्न हो जायेगी तो तुम्हें अन्य साधनाएं बच्चों के खेल जैसी लगेंगी, इसलिए मेरे मानसपुत्र मैं तुम्हें सबसे पहले राजराजेश्वरी त्रिपुर सुन्दरी साधना सम्पन्न कराऊंगा, जिससे इस कलयुग में संसार को तुम कुछ दे सकोगे, क्योंकि लक्ष्मी पति और राजा तो कई होते हैं, आते हैं और चले जाते हैं, उन्हें उनके जीवन काल में ही लोग याद करते हैं, लेकिन जो संसार का कल्याण करने की इच्छा रखता है और जो कुछ देने की सामर्थ्य रखता है और संसार को ज्ञान का अमृत देता है और खुद कमलवत् निस्पृह तथा सामान्य बना रहता है, वह चाहे विश्व के किसी कोने में हो, जगत् उसे हजारों-हजारों वर्षों तक याद रखता है, और तुम्हारा जन्म इसीलिए हुआ है, अतः मैं तुम्हें यह साधना सम्पूर्ण रूप से सम्पन्न कराऊंगा।
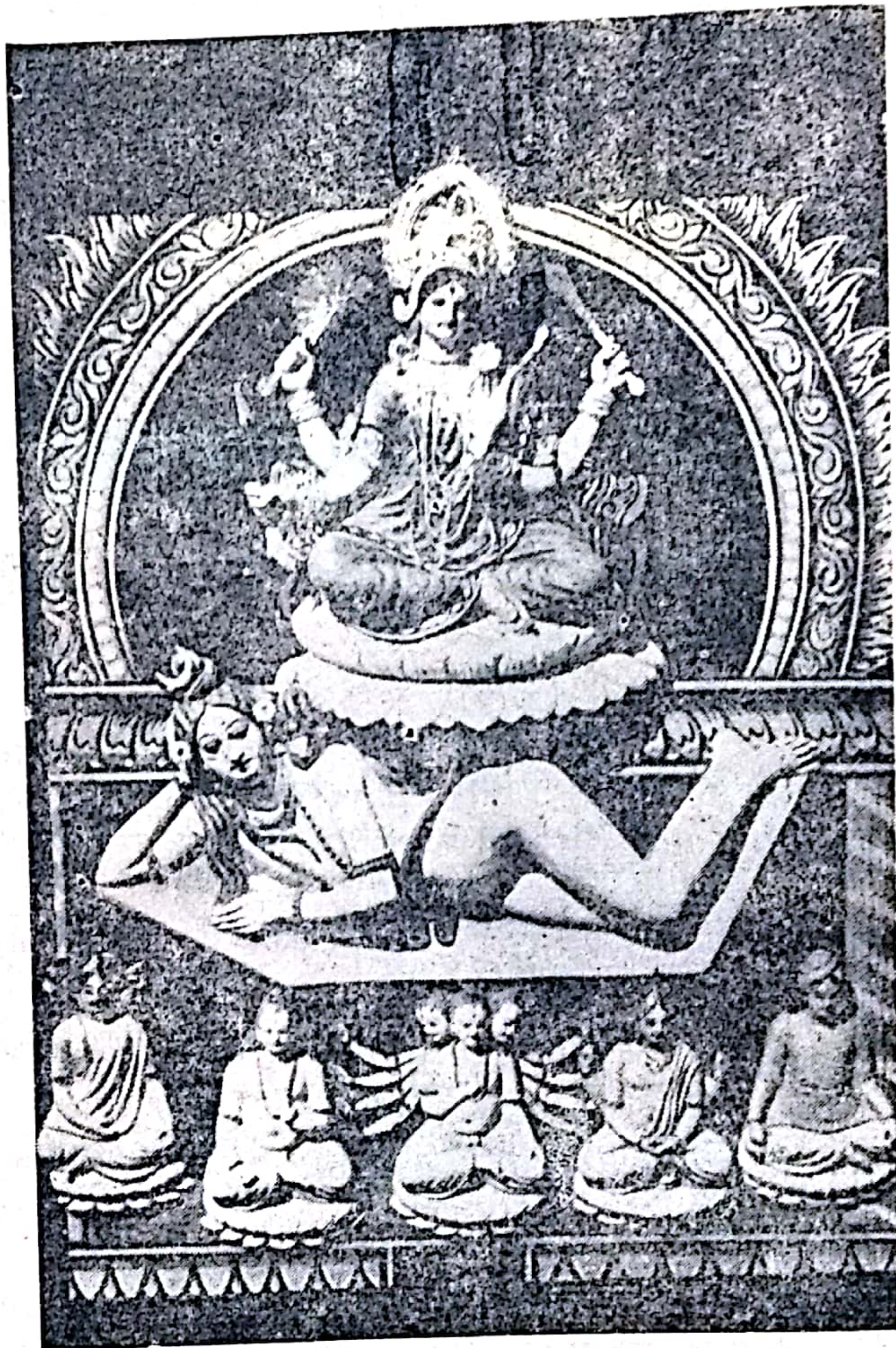
आज उसी विद्या का एक अध्याय जैसा श्रीगुरुमुख से

Scanned by CamScanner

मुझे प्राप्त हुआ वह पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत किया जा रहा है—

राज राजेश्वरी त्रिपुर सुन्दरी

राज राजेश्वरी त्रिपुर सुन्दरी सिद्ध विद्या साधना कही जाती है, क्योंकि इसके विभिन्न रूपों की विभिन्न काम्य सिद्धि के लिए साधना की जाती है, ज्ञान प्राप्ति अर्थात् सरस्वती वाक् सिद्धि, लक्ष्मी सिद्धि, आरोग्य सिद्धि, विशेष वशीकरण सिद्धि, अनंग सुख सिद्धि, सर्व वांछित सिद्धि, मर्दन सिद्धि इत्यादि इसी साधना से सम्भव है, इन साधनाओं को एक-एक क्रम से करना चाहिए। जब राज राजेश्वरी त्रिपुर सुन्दरी साधक पर प्रसन्न होती है तो उसे अपनी सिद्धियों में एक के बाद एक सफलता मिलने लग जाती है, क्योंकि हर सिद्धि दूसरी सिद्धि से जुड़ी है।

साधना कब करें

त्रिपुर सुन्दरी साधना चारों नवरात्रियों में बिना कोई मुहूर्त देखे सम्पन्न की जा सकती है, इसके अतिरिक्त चन्द्र ग्रहण का दिन भी साधना प्रारम्भ करने के लिए सर्वश्रेष्ठ सिद्ध मुहूर्त है, इसके अतिरिक्त प्रत्येक माह के कृष्ण पक्ष की प्रतिपदा से भी साधना प्रारम्भ की जा सकती है और सबसे अन्त में ये जान लेना आवश्यक है कि सबसे सिद्ध मुहूर्त वही होता है, जब सद्गुरुदेव अपने शिष्य को साधना प्रारम्भ करने को कहते हैं।

निकट भविष्य में सबसे महत्वपूर्ण और श्रेष्ठ मुहूर्त ९ दिसम्बर सन् १९९२ को आ रहा है, क्योंकि इस दिन चन्द्र ग्रहण है तथा मार्गशीर्ष मास की पूर्णिमा समाप्त हो कर पौष मास के कृष्ण पक्ष की प्रतिपदा प्रारम्भ होती है और विशेष बात देखिये कि इस दिन योग भी **'सिद्ध योग'** है और रोहिणी नक्षत्र अपने चतुर्थ चरण में है तथा प्रतिपदा के दिन **'साध्य योग'** है, ऐसा सुन्दर योग बहुत कम बनता है, क्योंकि साधना तो सिद्धि और साध्य के लिए ही की जाती है और यही दोनों योग पड़ रहे हैं।

नौ दिन के साधना क्रम में साधक प्रत्येक दिन देवी के अलग-अलग स्वरूप का ध्यान कर अलग-अलग कार्य सिद्धि के लिए साधना करें तो यह उनके लिए उचित रहेगा। हां जो साधक किसी एक कार्य विशेष के लिए साधना करना चाहते हैं तो वे नौ दिनों तक इसी क्रम को दोहरा सकते हैं।

त्रिपुर सुन्दरी के ध्यान

राज राजेश्वरी त्रिपुर सुन्दरी का सबसे प्रमुख ध्यान तो सूर्य का तेज धारण किये हुए त्रिनेत्री जो कि कमल-दल पर आसीन है और रक्ताम्बर धारण किये हुए हैं। चारों हाथों में धनुष, पाश, मुसर धारण किये है, जो अपने पूर्ण स्वरूप में शिव के ऊपर विराजमान है और त्रिजगत की आधार शक्तियां सरस्वती, ब्रह्मा, कुबेर आसन के नीचे स्थित हैं। वह भगवती आधारभूता त्रिपुर सुन्दरी राज राजेश्वरी को स्मरण करने मात्र से सिद्धि प्राप्त हो जाती है।

इसके अतिरिक्त लक्ष्मी प्राप्ति, वाक् सिद्धि, ज्ञान प्राप्ति, आरोग्य सिद्धि, वशीकरण सिद्धि, काम सिद्धि आदि के अलग-अलग ध्यान आवश्यक हैं।

लक्ष्मी प्राप्ति के लिए

दोनों हाथों में बीजपूर तथा कमल धारण करने वाली, सुवर्ण के समान आभा वाली तथा पद्मासन पर विराजमान त्रिपुर सुन्दरी का लक्ष्मी प्राप्ति के लिए चिन्तन करता हूं।

ज्ञान प्राप्ति के लिए

चारों हाथों में—वरद मुद्रा, अमृत कलश, पुस्तक एवं अभय मुद्रा धारण करने वाली, अमृत की धारा फैलाने वाली त्रिपुर सुन्दरी का ब्रह्मरन्ध्र में ध्यान करता हूं।

Scanned by CamScanner

आरोग्य के लिए

चारों हाथों में वरद मुद्रा आदि धारण करने वाली, श्वेत वस्त्र वाली, चन्द्रमा के समान आभा वाली तथा अकार से लेकर क्षकार तक समस्त वर्णों के अवयव वाली त्रिपुर सुन्दरी का ध्यान करता हूं।

वशीकरण के लिए

दोनों हाथों में अंकुश एवं पाश धारण करने वाली रत्न एवं आभूषणों से अलंकृत, प्रसन्नवदना एवं अरुण आभा वाली देवी त्रिपुर सुन्दर का ध्यान करता हूं।

काम सिद्धि–अनंग सिद्धि हेतु

कल्पवृक्ष के नीचे कान्तिमान रत्न सिंहासन पर विराजान मद से आघूर्णित नेत्र वाली चारों हाथों में क्रमशः बीजापूर, कपाल, धनुष बाण एवं अंकुश धारण करने वाली रक्तवर्णा त्रिपुर सुन्दरी का ध्यान करता हूं।

साधना सामग्री

नौ दिनों की इस साधना महाकल्प के लिए नौ अलग-अलग सामग्री आवश्यक है और प्रत्येक सामग्री पूर्ण मन्त्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठायुक्त होनी चाहिए। जिससे साधक उस सामग्री के प्रभाव को प्राप्त कर जो साधना करे, उसमें उसे सिद्धि अवश्य प्राप्त हो, इसके अतिरिक्त निम्न साधना सामग्री भी आवश्यक है, जिसकी व्यवस्था साधक अपने यहां स्वयं कर सकते हैं—१-आसन (किसी भी रंग का हो सकता है), २-जलपात्र, ३-गंगाजल यदि हो तो, ४-चांदी या स्टील की प्लेट, ५-कुंकुंम (रोली), ६-अक्षत, ७-केसर, ८-पुष्प, ९-बिल्व पत्र, १०-पुष्प माला, ११-दूध, दही, घी, चीनी, शहद अनुमान से, १२-नारियल, १३-रक्त सूत्र या मौली अथवा कलावा, १४-यज्ञोपवीत, १५-अबीर गुलाल, १६-अगरबत्ती, १७-कपूर, १८-घी का दीपक, १९-नैवेद्य हेतु दूध का प्रसाद, २०-पांच फल, २१-इलायची।

इसके अतिरिक्त इस साधना में कुछ विशेष सामग्री की आवश्यकता रहती है, जो कि साधक को पहले से ही व्यवस्था करके रख लेनी चाहिए, जिससे कि साधना प्रारम्भ करने के पश्चात् किसी सामग्री के अभाव में उसकी साधना अधूरी न रहे।

१-अद्वितीय सर्वकामना सिद्धि युक्त **त्रिपुर सुन्दरी यन्त्र** जो कि चैतन्य एवं सिद्धि मन्त्र से सम्पूरित हो।

२-**स्वर्णावती यन्त्र** जो अखण्ड एवं अनायास धन प्राप्ति युक्त सिद्ध विग्रह हो।

३-**वरदायक गृहस्थ सुख यन्त्र** जो सभी प्रकार से पूर्ण गृहस्थ सुख में उपयोगी हो।

४-**मृत्युंजयी शिव रुद्राक्ष** जो अकाल मृत्यु निवारण एवं पूर्ण आयु प्रदान करने से सम्बन्धित मन्त्रों से सम्पूरित हो।

५-**नवदुर्गा त्रिभुवन मोहिनी माला** जो कि गले में पहिनने व मन्त्र जप के लिए और पूर्ण सिद्धि देने में समर्थ हो।

६-**कल्पवृक्ष साफल्य** जो प्रत्येक प्रकार की इच्छा पूर्ति के लिए रावण कृत प्रयोग से सिद्ध हो।

७-अद्वितीय **त्रिपुर सुन्दरी पारद गुटिका** जो भगवती त्रिपुर सुन्दरी के प्रत्यक्ष दर्शन कराने में समर्थ हो।

८-ऋद्धि-सिद्धि युक्त दुर्लभ **तांत्रोक्त सियारसिंगी** जो जीवन के समस्त विघ्नों का नाश कर, पूर्ण सिद्धि देने में समर्थ हो।

९-**मनोवांछा सिद्धि यन्त्र** जो समस्त कामनाओं की पूर्ति में सहायक हो।

पत्रिका पाठकों की सुविधा हेतु तथा पूरे साधना काल में निर्विघ्न साधना सम्पन्न हो सके और प्रामाणिक व शुद्ध सामग्री प्राप्त हो सके, इस हेतु हम सभी सामग्रियों का एक पैकेट बना दिया गया है, जो कि केवल पत्रिका पाठकों को ही भेजे जाने की व्यवस्था है, यह मन्त्र सिद्ध, चैतन्य,

प्राण प्रतिष्ठायुक्त सामग्री सम्पूर्ण साधना के साथ साधक को साधना में अभीष्ट सिद्धि प्रदान करने में समर्थ है।

पूजन विधान

षोडशी त्रिपुर सुन्दरी साधना में नौ दिन के इस अनुष्ठान में प्रथम दिन जो पूजन करें वह पूजन तो आने वाले आठ दिनों तक और करना ही है, विशेष कार्यों हेतु विशेष सामग्री के साथ उसका पूजन एवं मन्त्र जप करना है। किसी भी अनुष्ठान में सबसे पहले संकल्प लिया जाता है, तत्पश्चात् गणपति पूजन करना आवश्यक रहता है, और फिर त्रिपुर सुन्दरी ध्यान। इन तीनों के पश्चात् एक पात्र में सामग्री जमा लें और मध्य में **त्रिपुर सुन्दरी महायन्त्र** को स्थापित करें, अब अपने पास पुष्प लेकर सबसे पहले त्रिपुर सुन्दरी की विशेष अनंग शक्तियों का दो क्रम से पूजन करना है, प्रथम क्रम में यन्त्र के चारों ओर गोलाकार रूप में नौ पुष्प स्थापित करते हुए निम्न मन्त्र का उच्चारण करें—

प्रथम क्रम—ॐ ज्ञानायै नमः, ॐ क्रियायै नमः, ॐ कामिन्यै नमः, ॐ कामदायिन्यै नमः, ॐ रत्यै नमः, ॐ रतिप्रियायै नमः, ॐ नन्दायै नमः, ॐ मनोन्मन्यै नमः, ॐ इच्छायै नमः।

द्वितीय क्रम में—ॐ शुभगायै नमः, ॐ भगायै नमः, ॐ भगसर्पिण्यै नमः, ॐ भगमाल्यै नमः, ॐ अनंगनगायै नमः, ॐ अनंगमेखलायै नमः, ॐ अनंगमदनायै नमः।

अब यन्त्र को घी उसके पश्चात् दूध और फिर जल से धो कर उसे पुष्प के आसन पर विराजमान करना चाहिए, तत्पश्चात् भैरव पूजन सम्पन्न किया जाता है और यन्त्र के आठ दलों में कामरूप पीठ, मलय पीठ, कोल्ल-गिरि पीठ, चौहारा पीठ, कुलान्तक पीठ, जालन्धर पीठ, उड्डयान पीठ, कोट्ठ पीठ। इस प्रकार आठ पीठ पूजन की कल्पना की जाती है कि इन सभी पीठों की शक्तियां हमारे पूजन में सहायक हों।

प्रथम दिवस

इस दिन देवी पूजन प्रारम्भ करने के साथ ही दीपक जला देना चाहिए और सम्पूर्ण पूजन पूर्ण कर देवी के मूल मन्त्र की ११ माला का जप करना आवश्यक है।

त्रिपुर सुन्दरी महामन्त्र

श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं सौः ॐ त्रिपुर सुन्दर्यै सर्व शक्ति समन्वित सौः ऐं क्लीं ह्रीं श्रीं ॥

यह मन्त्र जप **मोहिनी माला** से ही सम्पन्न किया जाना चाहिए।

अब अलग-अलग कार्यों के लिए किस प्रकार अलग-अलग सामग्री को प्रयोग में लानी है, यह ध्यान से देखें।

द्वितीय दिवस

इस दिन सर्वप्रथम त्रिपुर सुन्दरी का पूजन ऊपर दी गई विधि के अनुसार ही सम्पन्न करना है उसके पश्चात् **स्वर्णावती यन्त्र** को त्रिपुर सुन्दरी यन्त्र के आगे स्थापित कर उसका पूजन सम्पन्न करें इस दिन साधक लाल वस्त्र धारण करें तथा निम्न मन्त्र का जप करें—

स्क्लीं क्षम्यौं ऐं त्रिपुर सर्व वांछितं देहि नमः स्वाहा ॥

तृतीय दिवस

गृहस्थ सुख यन्त्र का पूजन कर निम्न मन्त्र का जप सम्पन्न करे—

क्लीं क्लीं श्रीं श्रीं ह्रीं त्रिपुराललिते मदीप्सितां योषितं देहि वांछितं कुरु स्वाहा ॥

Scanned by CamScanner

चतुर्थ दिवस

मृत्युंजय शिव रुद्राक्ष का पूजन कर शिव का ध्यान करें, और शिव की महाशक्ति त्रिपुर सुन्दरी की आराधना में निम्न मन्त्र का जप करें—

ह्लीं ह्लीं ह्लीं महा त्रिपुरे आरोग्यमैश्वर्यं च देहि स्वाहा ॥

पंचम दिवस

तांत्रोक्त सियारसिंगी का पूजन कर निम्न मन्त्र का जप करें—

ह्लीं श्रीं क्लीं परापरे त्रिपुरे सर्वमीप्सितं साधय स्वाहा ॥

षष्ठम दिवस

त्रिपुर सुन्दरी मनोवांछा यन्त्र का पूर्ण विधि से पूजन कर निम्न मन्त्र जप सम्पन्न करें—

क्लीं त्रिपुरादेवि विद्महे कामेश्वरी धीमहि तन्नः क्लिन्ने प्रचोदयात् ॥

सप्तम दिवस

इच्छा, कवित्व एवं वाक्सिद्धि के लिए **कल्पवृक्ष साफल्य** का पूजन कर देवी के विशेष स्वरूप का ध्यान कर निम्न मन्त्र का विशेष जप अवश्य करना चाहिए—

ह्लीं क्लीं ह्सौः सौः क्लीं ह्लीं ॥

अष्टम दिवस

इस दिन देवी के विशेष स्वरूप का ध्यान कर वशीकरण सिद्धि हेतु साधना सम्पन्न करनी है। इसलिए **त्रिपुर सुन्दरी पारद गुटिका** का विशेष पूजन सम्पन्न करें तथा निम्न मन्त्र का जितना अधिक जप कर सकें अवश्य करें—
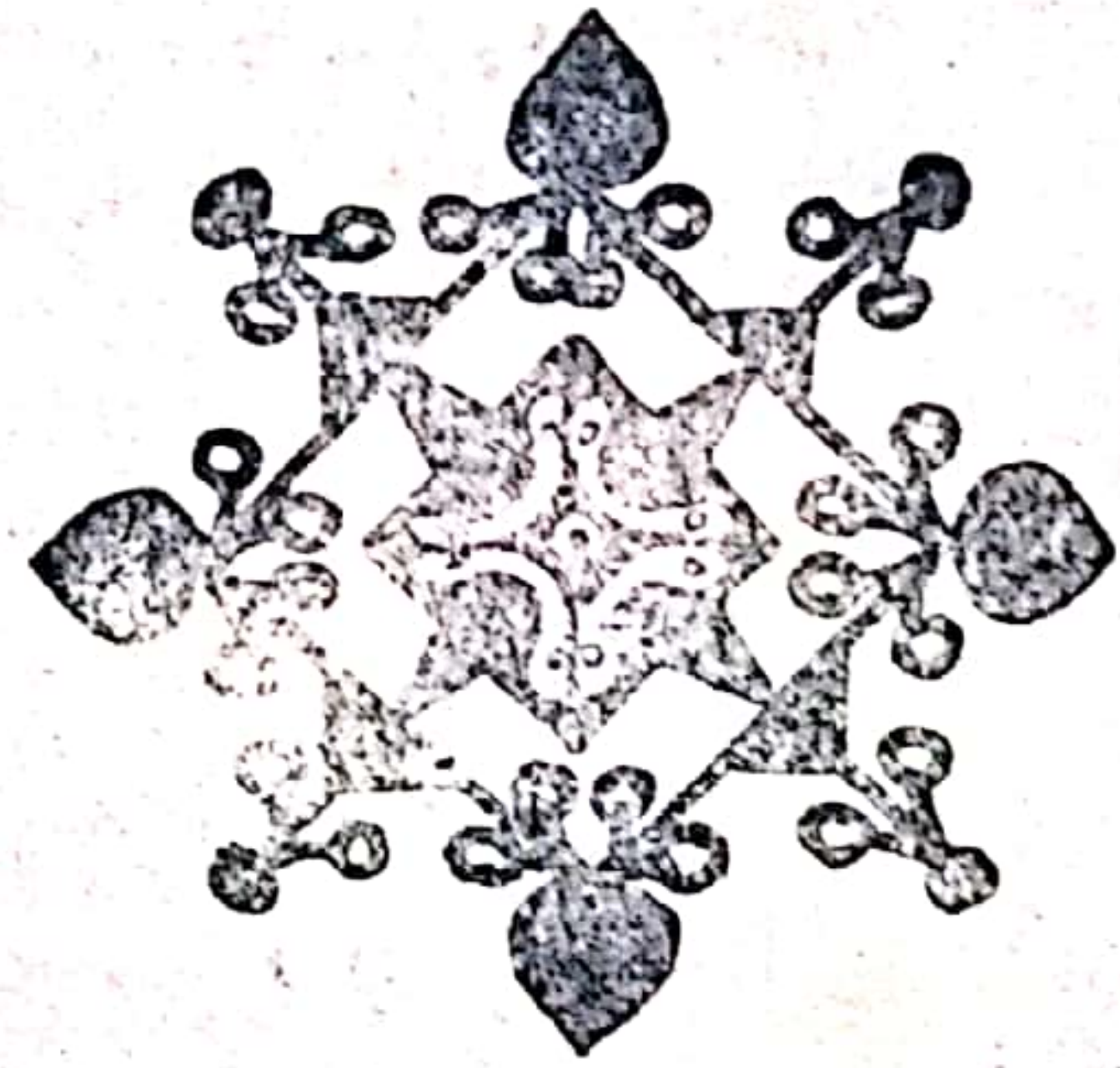
क्लीं क्लीं क्लीं श्रीं श्रीं श्रीं ह्लीं ह्लीं ह्लीं त्रिपुर सुन्दरि सर्व जगत् मम वश कुरु कुरु मह्यं बलं देहि स्वाहा ॥

नवम् दिवस

आज साधना का पूर्णाहुति दिवस है, इस कारण अब जिन-जिन सामग्रियों का पूजन कर मन्त्र जप किया है, उनका प्रत्येक का पूजन कर ऊपर लिखे गये आठों मन्त्र ११-११ बार अवश्य बोलें, इस दिन नौ दीपक जलाएंगे, क्योंकि प्रथम दिन एक दीपक, दूसरे दिन दो, इसी प्रकार यह क्रम बढ़ेगा। सर्व सिद्धि के लिए आज साधना अनुष्ठान पूर्ण होता है, इस कारण देवी के आगे पुष्प का निरन्तर अर्पण करते हुए निम्न मन्त्र जप करें—

ऐं क्लीं सौं बालात्रिपुरे सिद्धि देहि नमः ॥

त्रिपुर सुन्दरी साधना को कुछ लोग केवल वशीकरण की ही साधना कहते हैं, जो कि उचित नहीं है, वास्तव में तो त्रिपुर सुन्दरी साधना से साधक जगत वशीकरण कर जीवन में उच्चता पूर्णता प्राप्त करने में समर्थ हो सकता है, उसे अपने जीवन में धन-धान्य, पशु-धन, पुत्र-सुख, लाभ, कार्य वृद्धि, ऐश्वर्य वृद्धि, व्यापार वृद्धि, लक्ष्मी वृद्धि, सम्मान वृद्धि इत्यादि अपने आप आने लगते हैं।

इस अनुष्ठान के पश्चात् नौ कुमारी कन्याओं को भोजन कराकर दक्षिणा अवश्य प्रदान करनी चाहिए। ●

यदि रहना है जीवन में अपराजित

तो कीजिये

विष्णु अपराजिता महाविद्या साधना

अपराजिता का तात्पर्य है कि बुरी शक्तियों से पराजय न होना और विपरीत स्थितियों का मुकाबला कर उन्हें अनुकूल बना लेना। कहावत है कि समय बड़ा बलवान होता है और उसके हाथों सबको हार माननी पड़ती है, लेकिन जो समय पर हावी हो जाता है वही तो जीवन में सफल रहता है, परिस्थितियों के आगे धक्के खाता व्यक्ति अपने जीवन में इधर से उधर होता रहता है और उसे अपना लक्ष्य प्राप्त नहीं हो पाता। अपराजित रहने का तात्पर्य है अपने आपको उस स्थिति तक बलवान बना देना कि शक्ति सिद्ध रूप में मूलाधार में आसीन हो जाय।

शक्ति समन्वित होना और शक्तिशाली होना कोई खराब बात नहीं है, इसमें कोई दोष भी नहीं है, उल्टे शक्तिहीन होना जीवन का सबसे बड़ा दुर्भाग्य है। दीन हीन होकर तो लाखों करोड़ों रहते हैं और उनको भिखारी ही कहा जाता है, और जो शक्ति सम्पन्न होते हैं वे दाता कहलाते हैं और यदि शक्ति शुद्ध रूप में आती है, साधना के बल से आती है तो उसका उपयोग श्रेष्ठ कार्यों के लिए ही होता है। उस शक्ति का दुरुपयोग नहीं हो सकता, ऐसा साधक स्वयं अपने साथ-साथ दूसरों का भी कल्याण करने में समर्थ रहता है।

शक्ति सम्पन्न श्रीविष्णु

विष्णु की शक्ति मूल रूप से शिव की ही शक्ति है, क्योंकि शिव जगत् के कर्ता और हर्ता दोनों ही हैं। 'फलश्रुति' नामक ग्रन्थ में लिखा है कि जब देवता और असुरों का संग्राम हुआ तो देवताओं द्वारा अनुनय विनय करने पर विष्णु ने कहा कि यदि मुझे भगवान शिव द्वारा अपराजय का वरदान मिल जाय और अपराजय अस्त्र-शस्त्र प्राप्त हो जाय तो मैं संग्राम के लिए तत्पर हूं, तब भगवान सदाशिव ने श्रीहरि विष्णु के कान में एक साधना-

त्मक उपदेश दिया और यह विशेष साधनात्मक ज्ञान विष्णु अपराजिता साधना के नाम से विख्यात हुआ । श्रीविष्णु द्वारा इस साधना को सम्पन्न करने से वे जगत् में वन्दनीय हुए और देवताओं के देव के रूप में पूजनीय हुए ।

इस साधना में विशेष नियम हैं, उनका पालन करना अत्यन्त आवश्यक है । सर्वप्रथम तो जिस कार्य के लिए साधना की जानी है वह कार्य निश्चित कर लें और एक साथ सभी कार्यों के लिए साधना नहीं करें, इस साधना में साधक किस दिशा की ओर मुंह कर बैठें, यह महत्वपूर्ण है ।

साधना नियम

१–यह साधना रात्रि में सम्पन्न की जाती है तो विशेष फलदायी रहती है ।

२–साधक द्वारा पीला आसन और पीले ही वस्त्र धारण करने चाहिए।

३–पीले रंग के पुष्प तथा पीले रंग की गन्ध अर्थात् अबीर का ही पूजन में प्रयोग करें ।

४–पूरे साधना काल के दौरान नित्य शिव मन्दिर में जाकर गुग्गल का धूप अवश्य जलाना चाहिए ।

५–साधना काल के दौरान घी का दीपक जलते रहना चाहिए ।

६–सबसे महत्वपूर्ण यह है कि वशीकरण सिद्धि हेतु पूर्व दिशा की ओर मुंह, मारण कार्य हेतु दक्षिण दिशा की ओर मुंह, लक्ष्मी प्राप्ति हेतु उत्तर दिशा की ओर मुंह और रोग नाश हेतु पश्चिम दिशा की ओर, और आकर्षण साधन कार्य हेतु वायव्य कोण दिशा की ओर, स्तम्भन साधना हेतु, ईशान कोण की ओर, भूत-प्रेत नाश हेतु नैऋत्य कोण की ओर तथा सर्व कामना पूर्ति हेतु आग्नेय कोण की ओर मुंह करना चाहिए ।

साधना सामग्री

इस साधना में सबसे विशेष बात यह है कि केवल दो सामग्री का ही विशेष महत्व है, प्रथम **विष्णु अपराजिता महायन्त्र** तथा दूसरा **विष्णु महाविद्या माला,** इसके अलावा अन्य सामान्य पूजन सामग्री अर्थात् गुलाल कुंकुम, धूप, दीप, प्रसाद, फल, पुष्प इत्यादि का भी प्रयोग होता है ।

विष्णु अपराजिता महायन्त्र जिस पर आप साधना करें वह किसी को भी दान में अथवा उपहार में न दें, चाहे वह व्यक्ति कितना ही निकटस्थ क्यों न हो । इस महायन्त्र को सदैव अपने पूजा स्थान में स्थापित रखना चाहिए ।

जहां तक साधना प्रारम्भ करने का प्रश्न है, यह साधना किसी भी शुभ मुहूर्त में शुभ तिथि से प्रारम्भ की जा सकती है । शुक्ल पक्ष इसके लिए विशेष श्रेष्ठ रहता है ।

साधना विधान

अपने सामने एक पीढ़े पर पीला वस्त्र बिछाकर उस पर एक थाली में यन्त्र को स्थापित कर उसका पूजन

Scanned by CamScanner

करें, सर्वप्रथम गुरु पूजन सम्पन्न कर मानसिक आज्ञा प्राप्त करें, तत्पश्चात् पूजन सामग्री से इस यन्त्र का पूजन करें, इस पूजन में सर्वप्रथम विनियोग फिर न्यास तत्पश्चात् दिग्बन्ध और ध्यान कर साधना प्रारम्भ करना है—

विनियोग

ॐ अस्य श्रीविष्णु अपराजिता महाविद्या माला मन्त्रस्य ईश्वर ऋषिः पंक्तिश्छन्दः । श्रीविष्णु अपराजिता महाविद्या देवता । ॐ ह्रां ब्रां बीजं । ॐ ह्रीं ब्रीं शक्तिः । ॐ ह्रूं ब्रूं कीलकं । मम सर्वाभीष्ट सिद्धयर्थ श्रीविष्णु अपराजिता महाविद्या माला मन्त्र जपे विनियोगः ।।

न्यास

ॐ ह्रां ब्रां महाविद्यायै नमः अंगुष्ठाभ्यां । ॐ ह्रीं ब्रीं महामायायै नमः तर्जनीभ्यां नमः । ॐ ह्रूं ब्रूं महामेधायै नमः मध्यमाभ्यां । ॐ ह्रैं ब्रैं महामन्त्रायै नमः अनामिकाभ्यां । ॐ ह्रौं ब्रौं महासिद्धायै नमः कनिष्ठिकाभ्यां । ॐ ह्रः ब्रः महापराजित यै नमः करतल करपृष्ठाभ्यां ।

दिग्बन्ध

ॐ ह्रीं सर्व भूत निवारणाय सांगाय सशरायास्त्र राजाय सुदर्शनाय हुं फट् ह्रीं ॐ स्वाहा ।।

अपने हाथ में जल ले कर दिग्बन्ध का जप तीन बार करना है, और तीनों बार जल सामने पीढ़े पर स्थापित यन्त्र के चारों ओर तथा अपने स्वयं के चारों ओर गोल घेरे के रूप में डालना है, इससे साधना काल के दौरान किसी प्रकार का विघ्न उत्पन्न नहीं होता तथा दुष्टात्माएं, भूत-प्रेत पिशाच साधना को खण्डित नहीं कर सकते ।

ध्यान

चतुर्भुजां पीतवस्त्रां शंख-चक्र गदा धराम् । मुक्ताभरण भूषणां पद्म नेत्रां द्विलोचनाम् ।।
पीत गन्ध विलेपांगीं पीताभरण भूषिताम् । पद्म हस्तां सुपद्मांगीं गरुडासन संस्थिताम् ।।
दैत्य दानव संहारीं महाविष्णु वर प्रदाम् । ध्यायै महाविद्यामहं विष्णु साम्राज्य दायिनीम् ।।

इस प्रकार दोनों हाथ जोड़ कर भगवान श्रीविष्णु का ध्यान करना है और उनसे वर प्राप्ति की प्रार्थना करनी है ।

अब मुख्य रूप से **श्रीविष्णु महाविद्या माला** का पूजन एक दूसरी थाली में सम्पन्न करना है तथा गले में माला धारण कर निम्न अपराजिता मन्त्र का जप प्रारम्भ कर दें—

ॐ नमो भगवती ह्रीं ऐं श्रीं क्लीं श्री भगवती वज्र प्रस्तारिणी प्रत्यंगिरे बगले तारे वज्र वैरोचनीये धूमावती छिन्नमस्तके भग मालिनी मां रक्ष रक्ष पालय पालय स्व-सुतानिव महदानन्दं कुरु कुरु सर्व मंगलाभीष्टं देहि देहि एहि एहि मम हृदयं निवासय निवासय सर्व दुःख दारिद्रयं निर्मूलय

निर्मूलय सर्व शत्रून निवृत्तय निवृत्तय सर्व विघ्न त्रिताप सन्ताप महा पापादि सर्व दुष्टोपद्रव भंजय भंजय हन हन कालेश्वरी गौरी धर्मिणी विद्ये आले ताले माले गन्धे बन्धे पच पच विघ्नान्नाशय विघ्नान्नाशय संहारय संहारय दुःस्वप्नान् विनाशय विनाशय रजनी संध्ये साधक संजीवनी कालमृत्यु महामृत्यु अपमृत्यु विनाशिनी विश्वेश्वरी द्रविडी द्राविडी केशव दनिते पशुपति सहिते विरचि वनिते दुन्दुभि शमने शबरी किराती मातंगी ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ज्रां ज्रां ज्रां क्रां क्रां क्रां तुरु तुरु मुरु मुरु तुट् तुट् ये मां द्विषन्ति निन्दन्ति प्रत्यक्षं परोक्षं वा सर्वान् तान् दम् दम् मर्द मर्द तापय तापय शोषय शोषय उत्सादय उत्सादय कालरात्रि महारात्रि मोहरात्रि महामाये रेणुके दक्षिण काली षोडशी श्रीचक्र कृति धारिणी श्री विद्या परमेश्वरी जय जय जगदीश्वरी सर्व काम वर प्रद सर्व भूतेषु मां प्रियं कुरु कुरु धन धान्यादि महदैश्वर्यं मम प्रद प्रद भग भाग्यादि सर्व मंगलं देहि देहि पुत्र पौत्रादि सुफलं फलय फलय गजाश्व शिविकादि सकल राज चिन्ह दापय दापय प्रतिष्ठय प्रतिष्ठय सर्वानन्दायुर्विद्यारोग्यं प्रद प्रद वरद वरद मम रक्ष मम रक्ष पालय पालय पोषय पोषय तोषय तोषय संजीवय संजीवय आनन्दय आनन्दय सन्तोषय सन्तोषय हर्षय हर्षय ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं सर्व जन मनोरंजिनी सर्व दुष्ट निर्दलिनी।

ॐ भूः स्वाहा ॐ भुवः स्वाहा ॐ स्वः स्वाहा ॐ भूर्भुवः स्वः स्वाहा ॐ महः स्वाहा ॐ जनः स्वाहा ॐ तपः स्वाहा। ॐ सत्यः स्वाहा ॐ अतल वितल सुतल स्वाहा ॐ। ॐ ब्रह्मा विष्णु महेश्वरार्क गणेश दुर्गेन्द्रादि सुरासुराय नम स्वाहा।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं महाकाली महालक्ष्मी महासरस्वती चामुण्डा योगिनी कात्यायन्यादि सर्व शक्त्यै नमः स्वाहा। यत एवागतं पापं तत्रैव प्रतिगच्छतु स्वाहा। ॐ ह्रीं बलाकिनी बले महाबले अतिबले सर्व असाध्य साधिनि स्वाहा। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं नमः स्वाहा॥

इस पूरे मन्त्र को शान्त रूप से जप धीरे-धीरे करना है, शास्त्रोक्त कथन है कि इसका पाठ श्रीविष्णु महा यन्त्र से आगे करने से ही साधक को सिद्धि प्राप्त हो जाती है, इस मन्त्र का एक सौ बार जप करने से छोटे-मोटे मनोरथ पूर्ण होते हैं। एक हजार मन्त्र जप आवृत्ति करने से सिद्धि प्राप्त होती है। दस हजार मन्त्र जप आवृत्ति करने से सब प्रकार का मंगल प्राप्त होता है और एक लाख मन्त्र जप करने से तो साक्षात् भगवान विष्णु साधक के भीतर स्थित हो जाते हैं।

इस प्रकार का यह महाअनुष्ठान सिद्ध अनुष्ठान है और सभी वैष्णव साधकों के लिए यह उचित रहेगा कि वे कम से कम एक बार तो अपनी पूजा में इस मन्त्र का जप रात्रि में अवश्य ही करें। ●

Scanned by CamScanner

कालरात्रि महाअनुष्ठान

तीव्र तन्त्र का प्रयोग साधक को उस स्थिति में करना चाहिए जब उसके प्राणों पर संकट आ पड़े, जब उसकी इज्जत मान मर्यादा पर चोट पहुंचने की स्थिति आ जाय अथवा उसकी सम्पत्ति का शत्रुओं द्वारा हरण कर लिया गया है, ऐसी तीव्र परिस्थिति में शास्त्र के अनुसार साधकों को तीव्र तन्त्र अनुष्ठान सम्पन्न करना चाहिए।

कालरात्रि तन्त्र अनुष्ठान, शत्रु बाधा पूर्ण निवारण के साथ-साथ स्तम्भन, उच्चाटन, विद्वेषण तथा मारण का भी श्रेष्ठतम प्रयोग है।

यह महाविद्या महाराज्ञी विश्व मोहिनी विद्या कहलाती है, क्योंकि इसकी मूल शक्ति कालिका है और इसके शक्ति चक्र आवरण में सम्मोहिनी और विमोहिनी शक्तियां निवास करती हैं।

यह अनुष्ठान शनिवार को या अमावस्या को ही सम्पन्न किया जाना चाहिए, अन्य सभी दिन पूर्ण रूप से वर्जित है।

कालरात्रि अनुष्ठान में अष्टगन्ध का प्रयोग अनिवार्य है, इसके अतिरिक्त यन्त्र पूजन में सिन्दूर एवं हिंगुल का ही प्रयोग किया जाता है और एक कागज पर अथवा पीपल के पत्ते पर किसी भी वृक्ष की पतली टहनी की कलम बनाकर उससे इसका बीज मन्त्र लिखना चाहिए।

इस साधना में साधक को यह अनुष्ठान मध्यरात्रि में कमरे का द्वार बन्द करके सम्पन्न करना चाहिए और जब तक पूरा अनुष्ठान नहीं हो जाय तब तक द्वार नहीं खोलना चाहिए।

कालरात्रि महायन्त्र का निर्माण भी विशिष्ट समय में ही सम्पन्न किया जाता है, ताम्रपत्र पर अंकित इस यन्त्र को जब शनिवार और अमावस्या का संयोग होता है तब दक्ष ऋषि द्वारा प्रदत्त मन्त्रों से जाग्रत कर प्राण-प्रतिष्ठा की जाती है, इस प्राणप्रतिष्ठा में प्रथम इच्छाशक्ति, क्रियाशक्ति एवं ज्ञानशक्ति के मन्त्रों से, द्वितीय क्रम में रुद्र, विष्णु एवं ब्रह्मा मन्त्रों से आपूरण और तृतीय क्रम में सत्व, रज एवं तमोगुण मन्त्रों से वामावर्त क्रम में षडंग अनुष्ठान सम्पन्न किया जाता है, इस प्रकार सिद्ध यन्त्र का प्रयोग ही कालरात्रि अनुष्ठान में किया जाना चाहिए, इसके अतिरिक्त इस अनुष्ठान में प्रत्येक दिशा में तीन-तीन देवियों का पूजन कालरात्रि शक्तिबीज से किया जाता है।

विधान

शनिवार अमावस्या की अर्द्धरात्रि के पश्चात् साधक लाल वस्त्र पहन कर अपने पूजा स्थान में जाय, यह आवश्यक है कि वह पूजन की तैयारी पहले से कर ले। पूजा स्थान में सबसे पहले बाजोट (चौकी) पर लाल वस्त्र बिछाकर उसके सामने बाईं ओर एक तांबे के पात्र में भैरव की स्थापना करे, जिससे अनुष्ठान में विघ्न उपस्थित न हो, अब एक दूसरे तांबे के पात्र में एक पुष्प रखे और उस पर **"कालरात्रि महायन्त्र"** स्थापित करे तथा निम्न विनियोग हाथ में जल लेकर करे—

विनियोग

अस्य कालरात्रि मन्त्रस्य, दक्ष ऋषिः, अति जगती छन्दः, अलर्क निवासिनी, कालरात्रिर्देवता क्रीं बीजं, महाराज्ञी शक्तिः ममाभीष्ट सिद्धये जपे विनियोगः।

अब साधक कलम को सिन्दूर में डुबो कर भोज पत्र अथवा पीपल के बारह पत्तों पर "क्रीं" बीज मन्त्र लिखे, विनियोग के साथ ही साधक को वीर मुद्रा में बैठ कर हाथ में चावल लेकर उन्हें सिन्दूर से रंग कर अपना संकल्प बोलकर इन चावलों को अपने पीछे फेंक दें।

साधक कालरात्रि महाविद्या की महा शक्तियों का पूजन उनके नाम मन्त्रों से करे, प्रत्येक मन्त्र बोल कर उस दिशा में एक पीपल का पत्ता जो कि 'क्रीं' बीज मन्त्र लिखा है उस पर सरसों की ढेरी बना कर मन्त्र बोलते हुए उस पर कालरात्रि शक्तिबीज स्थापित करे —

पूर्व दिशा में—	ॐ मायायै नमः।	ॐ कालरात्र्यै नमः।	ॐ वटवासिन्यै नमः।
दक्षिण दिशा में—	ॐ गणेश्वर्यै नमः।	ॐ कान्हायै नमः।	ॐ व्यापिकायै नमः।
पश्चिम दिशा में—	ॐ अलर्कवासिन्यै नमः।	ॐ मायाराज्ञै नमः।	ॐ मदनप्रियायै नमः।
उत्तर दिशा में—	ॐ रत्यै नमः।	ॐ लक्ष्म्यै नमः।	ॐ कान्हेश्वर्यै नमः।

अब महायन्त्र का पूजन धूप, दीप, नैवेद्य सिन्दूर एवं हिंगुल आदि से सम्पन्न करे, विशेष अनुष्ठान हेतु देवी को मद्य का भोग भी अर्पित किया जाता है।

अब साधक कालरात्रि देवी का ध्यान करे और उसकी भक्ति से प्रसन्न होकर वर प्राप्ति की प्रार्थना करे।

अब साधक एक दीपक और जलाये और उसे अपने सामने स्थापित करें, धूप में लोबान इत्यादि थोड़ा और डाले, फिर इसके बाद कालरात्रि महामन्त्र का उच्चारण स्पष्ट शब्दों में **वीर मुद्रा में बैठ कर सम्पन्न करे—**

कालरात्रि महामन्त्र—

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं कान्हेश्वरि सर्वजनमनोहरि सर्वमुखस्तम्भनि सर्वराजवशंकरि सर्वदुष्ट निर्दलनि सर्वस्त्रीपुरुषाकर्षिणि बन्दी श्रृंखलास्त्रोटय त्रोटय सर्वशत्रू भजय भंजय द्वेष्टृननिर्दलय निर्दलय सर्वस्तम्भय स्तम्भय मोहनास्त्रेण द्वेषिण उच्चाटय उच्चाटय सर्व वशं कुरु कुरु स्वाहा देहि देहि सर्व कालरात्रि कामिनि गणेश्वरि नमः।।

प्रति शनिवार को इस प्रकार पूजन करने से प्रबल से प्रबल शत्रु परास्त हो जाता है और कालरात्रि प्रसन्न होकर साधक को अभीष्ट वर प्रदान करती है। कैसा भी तन्त्र प्रयोग हो, जीवन में महासंकट हो, इस अनुष्ठान से वह संकट शान्त हो जाता है।

शास्त्रों के अनुसार साधक को कम से कम एक हजार मन्त्र जप करना चाहिए, पूर्ण सिद्धि के लिए दस हजार मन्त्र जप सम्पन्न करना आवश्यक है। ●

कालरात्रि महायन्त्र—३००)रु० तथा बारह कालरात्रि शक्तिबीज—६०)रु०।

Scanned by CamScanner

गुरुधाम दिल्ली में

त्रैलोक्य मोहन : गौरी वशीकरण साधना

दिनांक–३१-१२-९२ (गुरुवार)

वशीकरण सिद्धि के दो स्वरूप हैं—प्रथम तो आप अपने जीवन को सही दिशा में चलाने के लिए जो आपका विरोधी है उसे इस प्रकार बदलना चाहते हैं कि वह आपकी इच्छानुसार कार्य करे, दूसरे प्रकार के वशीकरण में आप जिस स्त्री अथवा पुरुष को चाहते हैं वह आपके बिल्कुल अनुकूल हो जाय, पति चाहता है कि पत्नी उसके मन के अनुकूल हो, युवक चाहता है कि उसे अपनी इच्छानुसार कन्या मिले अथवा प्रेमिका के साथ उसका विवाह हो अथवा प्रेम में सफलता मिले, इसके अतिरिक्त मां-बाप चाहते हैं कि उनकी कन्या का विवाह उचित समय पर श्रेष्ठ युवक के साथ हो, जिससे चिन्ता भार हलका हो सके ।

इन सभी वशीकरण सम्बन्धी कार्यों हेतु त्रैलोक्य मोहन गौरी वशीकरण प्रयोग अवश्य सम्पन्न किया जाना चाहिए । इस अनुष्ठान में जहां साधक एक विशेष संकल्प लेकर कार्य करता है उसी भाव में उसके मन में इच्छा शक्ति भी होनी चाहिए और गुरु भक्ति गुरु आशीर्वाद तो आवश्यक ही है, इस प्रकार आज के दिन इस अनुष्ठान में प्रत्येक व्यक्ति अपनी-अपनी इच्छानुसार अपने-अपने कार्य के अनुसार विशेष संकल्प लेंगे— दाहिने हाथ में जल लेकर गुरु को साक्षी रखते हुए यह संकल्प लेना है ।

इस प्रयोग में दो प्रकार के विशेष मन्त्रों का प्रयोग होता है साधना सामग्री का उपयोग किस प्रकार करना है, और विशेष पूजा विधि का ज्ञान प्रयोग के दौरान ही साधकों को बताया जायेगा ।

गौरी आकर्षण मन्त्र

।। ॐ नमः कालिकायै सर्वाकर्षिण्यै अमुकमाकर्षय शीघ्रमानयानय श्रां ह्रीं क्रों भद्रकाल्यै नमः ।।

त्रैलोक्य मोहन वशीकरण मन्त्र

।। ॐ ऐं क्लीं ह्रीं श्रीं ग्लौं ब्लूं हसौ नमः कामेश्वरि सर्वं सम्मोहय कृष्णे कृष्णवर्णे कृष्णाम्बरसमन्विते सर्वानाकर्षयाकर्षय शीघ्रं वशं कुरु कुरु हुं ऐं क्लीं श्रीं ।।

साधकों को अपने-अपने कार्य व संकल्प के अनुसार इन दोनों मन्त्रों की पांच-पांच माला का जप करना है।

गुरु धाम में, गुरु शक्ति पीठ में गुरु के समक्ष गुरु को साक्षीभूत रखते हुए जब वशीकरण जैसी साधनाएं सम्पन्न की जाती हैं तो किसी प्रकार की हानि होने की सम्भावना रहती ही नहीं, अपितु कार्य शीघ्रातिशीघ्र सम्पन्न होता है ।

वशीकरण साधनाओं में साधक को तत्काल सफलता मिल सकती है, उसके लिए आवश्यक है कि वह अपना भाव शुद्ध बनाये रखें और ऐसी कोई गलत वशीकरण साधना न करें, जो कि लौकिक दृष्ठि से, सामाजिक दृष्टि से अनुचित हो । ●

Scanned by CamScanner

आद्याशक्ति

भुवनेश्वरी साधना रहस्य

तांत्रिक ग्रन्थों में भगवती भुवनेश्वरी को आद्या शक्ति कहा गया है, और जो भी व्यक्ति तन्त्र अथवा मन्त्र में सफल होना चाहता है उसे भगवती भुवनेश्वरी की उपासना करनी ही पड़ती है, उसके बाद ही साधना क्रम आगे बढ़ सकता है।

महर्षि अगस्त्य से लगा कर विश्वामित्र, कणाद, शंकराचार्य और गुरु गोरखनाथ तक ने यह माना है कि भौतिक और आध्यात्मिक दोनों ही जीवन में पूर्ण सफलता हेतु भगवती भुवनेश्वरी साधना आवश्यक है।

शाक्त प्रमोद के अनुसार जीवन की सर्वश्रेष्ठ और महत्वपूर्ण साधना भुवनेश्वरी साधना ही है, जीवन में अन्य साधनाएं कर सकें या न कर सकें, जीवन में अन्य महाविद्याओं को सिद्ध न कर सकें, पर साधक को अपने जीवन में भुवनेश्वरी साधना तो अवश्य ही सम्पन्न करनी चाहिए।

उपरोक्त 'शाक्त प्रमोद' के प्रामाणिक श्लोक के अनुसार इस दिवस पर भुवनेश्वरी साधना सम्पन्न करने पर निम्न लाभ निश्चय ही प्राप्त होते हैं—

- इस साधना को सम्पन्न करने पर गृहस्थ व्यक्ति भी उसी प्रकार योगी कहला सकता है, जिस प्रकार भगवान श्रीकृष्ण पूर्ण गृहस्थ और सोलह हजार रानियों के पति होते हुए भी योगीराज कहलाये थे।

- इस साधना को सिद्ध करने पर निश्चय ही व्यक्ति में विशेष क्षमता आ जाती है और वह अपने शरीर को लघु रूप बना कर संसार में कहीं पर भी विचरण कर सकता है और वापिस अपने मूल आकार में आ सकता है, जिस प्रकार हनुमानजी ने लंका जाते समय अत्यन्त लघु रूप धारण कर लिया था और समुद्र पार करने के बाद अपने मूल रूप में आ गये थे, यह इस साधना की सर्वश्रेष्ठ विशेषता है।

- इस साधना को सम्पन्न करने पर व्यक्ति दीर्घायु सुखी और वाणी सिद्ध हो जाता है, वह दूसरों

Scanned by CamScanner

को पूर्ण रूप से प्रभावित करने की क्षमता प्राप्त कर लेता है।

- ऐसा व्यक्ति धनवान तो होता ही है, साथ ही साथ अनेक गुणों से विभूषित हो कर अपने व्यापार को कई गुना बढ़ा देता है।
- इस साधना की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि दूसरे प्रकार में यह गुरु साधना ही है और इस साधना को सम्पन्न करने से स्वतः गुरु सिद्धि प्राप्त हो जाती है।
- इस साधना को सम्पन्न करने पर संसार में जितने भी मन्त्र हों, उन मन्त्रों में सिद्धि मिल जाती है, और वह कुबेर के समान धनवान तथा सम्पत्तिवान बन जाता है।
- यदि कोई स्त्री दुर्भाग्यशाली हो और उसके पुत्र नहीं हो, या पुत्र आज्ञाकारी न हो तो घर का कोई सदस्य इस साधना को सम्पन्न करता है तो उसका दुःख समाप्त हो जाता है और वह पुत्रवती हो जाती है।
- इस साधना को सिद्ध करने से दस महाविद्याओं में सर्वश्रेष्ठ भगवती भुवनेश्वरी सिद्ध हो जाती है और उसके साक्षात् दर्शन हो पाते हैं।
- शास्त्रों में कहा गया है, कि भगवती भुवनेश्वरी आद्य शक्ति है, अतः इसे सिद्ध करने पर महाकाली, महासरस्वती और महालक्ष्मी तीनों महादेवियां स्वतः सिद्ध हो जाती हैं।

वस्तुतः भुवनेश्वरी साधना जीवन की अनुपम और अद्वितीय साधना है और शास्त्रों में भुवनेश्वरी साधना के बारे में जितना लिखा गया है उतना और किसी साधना के बारे में नहीं कहा गया है, समस्त तांत्रिकों, योगियों और साधकों ने यह स्पष्ट रूप से बताया है, कि भुवनेश्वरी साधना ही जीवन की पूर्ण और प्रामाणिक साधना है।

भुवनेश्वरी साधना के दो प्रयोग मुख्य है, इनमें प्रथम प्रयोग तांत्रोक्त प्रयोग है और दूसरा मांत्रोक्त प्रयोग।

तांत्रोक्त प्रयोग रक्षात्मक प्रयोग है जिसके प्रभाव स्वरूप साधक को जीवन में किसी प्रकार की क्षति नहीं पहुंच सकती, शत्रु उस पर कितना ही प्रहार करें, पीड़ा पहुंचाने का प्रयास करें, लेकिन भुवनेश्वरी साधक विजय ही प्राप्त करता है।

तांत्रोक्त भुवनेश्वरी साधना रहस्य

साधक प्रातःकाल उठ कर स्नान संध्या आदि से निवृत्त होकर पूर्व की ओर मुंह कर आसन पर बैठ जाय इस साधना में सफेद ऊनी आसन या मृग चर्म का प्रयोग किया जाना चाहिए। साधक स्वयं सफेद धोती धारण करे, साधिका यदि इस साधना को सम्पन्न करना चाहे तो सफेद साड़ी पहिने, प्रातःकाल अपने सिर के बाल धो ले और बिना तेल लगाये बालों को खुला रखे।

इसके बाद साधक अपने सामने **'तांत्रोक्त सिद्ध भुवनेश्वरी यन्त्र'** को स्थापित करें जो कि महर्षि विश्वामित्र द्वारा प्रणीत प्राण संजीवनी मुद्रा से सिद्ध एवं प्राणप्रतिष्ठा युक्त हो। वास्तव में ही इस प्रकार से प्राण प्रतिष्ठित यन्त्र ही प्रयोग में लाया जा सकता है, यद्यपि इस प्रकार से प्राणप्रतिष्ठा करना अत्यन्त कठिन कार्य है और बहुत कम पण्डित ही इस प्रकार के यन्त्र को प्राण प्रतिष्ठित एवं मन्त्र सिद्ध कर पाते हैं, पर ऐसा यन्त्र कई-कई पीढ़ियों के लिए साधक के लिए लाभदायक बना रहता है।

अपने सामने लकड़ी का बाजोट बिछा कर उस पर सफेद रेशमी वस्त्र बिछाए और उस पर थाली रखें, थाली के चारों कोनों पर कुंकुंम से पंच कोण बनावें और थाली के मध्य में त्रिकोण अंकित करें। इसके बाद थाली के मध्य में ही इस प्रकार का मन्त्रसिद्ध यन्त्र स्थापित करें, और उसे **"ॐ भुवनेश्वर्यै नमः"** मन्त्र का उच्चारण करते हुए शुद्ध जल से स्नान करावें, इनके बाद इसी नाम का उच्चारण करता हुआ, उसे दूध से, दही से, घृत से,

Scanned by CamScanner

मधु से और शर्करा से स्नान करावें फिर इन पांचों चीजों को मिलाकर पंचामृत से स्नान करावें, स्नान कराते समय बराबर इसी मन्त्र का उच्चारण करता रहे। इसके बाद पुनः शुद्ध जल से यन्त्र को स्नान करा कर अलग किसी पात्र में रख दें, और उस पात्र का जल अलग कटोरे में ले कर एक तरफ रख दें, जिसे पूजा समाप्त होने के बाद जमीन में गाड़ दें।

इसके बाद उस थाली को मांज कर पोंछ कर सिन्दूर से मध्य में पंच कोण बनावें और थाली के अन्दर ही चारों कोनों पर सिन्दूर से ही त्रिकोण अंकित करे और मध्य में चावल की ढेरी बनाकर उस पर यन्त्र को स्थापित करे।

इसके बाद सामने अगरबत्ती व शुद्ध घी का दीपक प्रज्वलित करें और यन्त्र पर जहां दस स्थानों पर सिन्दूर की दस बिन्दियां लगाई थी, वहां से थोड़ा-थोड़ा सिन्दूर लेकर अपने ललाट के मध्य में तिलक करे।

इसके बाद थाली में जो चारों कोनों पर त्रिकोण बनाये हैं, उनमें से प्रत्येक त्रिकोण पर छोटी-छोटी चावल की ढेरियां बना कर प्रत्येक पर एक-एक **'लघु नारियल'** स्थापित करें, और लघु नारियल पर सिन्दूर का तिलक करे। यन्त्र के सामने **'दस हकीक नग'** पत्थर रख दे, जो कि मन्त्र सिद्ध हो, और प्रत्येक हकीक नग पर सिन्दूर का तिलक करे, यह दस महा शक्तियों के प्रतीक चिन्ह है। इसके बाद यन्त्र के बाईं ओर चावल की ढेरी बना कर **'मोती शंख'** स्थापित करें और दाहिनी ओर चावल की ढेरी बनाकर **'सिद्धि फल'** स्थापित करें। फिर इन दोनों की संक्षिप्त पूजा करें, सिन्दूर का तिलक करें और पुष्प समर्पित करें।

इसके बाद यन्त्र के सामने दूध का बना हुआ प्रसाद अर्पित करें तथा एक पात्र में पंचामृत बना कर रखें (पंचामृत-दूध, दही, घी, शहद और शक्कर को मिलाकर बनाया जाता है) इसके पास ही पानी से भरा हुआ लोटा रख दें और फिर प्रयोग प्रारम्भ करें।

भुवनेश्वरी तांत्रोक्त सपर्या प्रयोग

साधक सबसे पहले अपनी चोटी के गांठ लगावें, अपने अंगूठे से अपने ललाट पर सिन्दूर का तिलक करें और फिर सिन्दूर का तिलक अपने सिर के मध्य भाग में हृदय तथा नाभि पर भी करें। इसके बाद हाथ में जल लेकर संकल्प करें।

विनियोग

ॐ अस्य भुवनेश्वरी पंजर मन्त्रस्य श्री शक्तिः ऋषिः। गायत्री छन्दः। श्री भुवनेश्वरी देवता। हं बीजं। ईं शक्तिः। रं कीलकं। सकलमनोवांछित-सिद्धयर्थे पाठे विनियोग.॥

ऐसा कह कर हाथ में लिया जल भूमि पर छोड़ दें, और इसके बाद न्यास करें—

ऋष्यादिन्यास

श्री शक्ति-ऋषये नमः शिरसि।
गायत्री-छन्दसे नमः मुखे।
श्री भुवनेश्वरी-देवतायै नमः हृदि।
हं बीजाय नमः गुह्ये।
ईं शक्तये नमः नाभौ।
रं कीलकाय नमः पादयोः।
सकल मनोवांछित सिद्धयर्थे पाठे विनियोगाय नमः सर्वांगे।

न्यास का तात्पर्य है कि उसमें शरीर के जिन-जिन अंगों का वर्णन आया है, साधक मन्त्र का उच्चारण करते हुए शरीर के उस-उस अंग को दाहिने हाथ से स्पर्श करे, जिससे कि भगवती भुवनेश्वरी पूर्ण रूप से शरीर के सभी अंगों में समाहित हो सके।

इसके बाद साधक षडंग न्यास करे।

षडंग न्यास अंग न्यास		कर न्यास
ह्लीं श्रीं ऐं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
,,	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
,,	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
,,	अनामिकाभ्यां हुं	कवचाय हुं
,,	कनिष्ठिकाभ्यां वषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
,,	करतल करपृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

इस प्रकार के न्यास करने के बाद दोनों हाथ जोड़कर भगवती भुवनेश्वरी का ध्यान करे।

ध्यान

ध्यायेद् ब्रह्मादिकानां कृत-जनि-जननी योगिनीं योगयोनिम् ।
देवानां जीवनायोज्ज्वलित-जय-परं ज्योतिरूपांगधात्रीम् ।।
शंख चक्रं च बाणं च मनुरपि दधतीं दोश्चतुष्काम्बुजातैः ।
मायामांद्यां विशिष्टां भव-भव-भुवनां भू-भवा भार-भूमिम् ।।

ध्यान करने के बाद साधक **'स्फटिक माला'** से वहीं पर बैठे-बैठे निम्न दुर्लभ गोपनीय मन्त्र की २१ माला मन्त्र जप करें।

भगवती भुवनेश्वरी तांत्रोक्त पिंजर महामन्त्र

।। ॐ क्रों श्रीं ह्लीं ऐं सौं ह्रीं नमः ।।

जब मन्त्र जप पूरा हो जाय तब साधक दस बत्तियां लगा कर भगवती भुवनेश्वरी की आरती सम्पन्न करे, या जगदम्बा अथवा दुर्गा की आरती स्मरण हो तो उसे करे, इसके बाद भगवती भुवनेश्वरी के सामने जो प्रसाद चढ़ाया हुआ है, वह थोड़ा सा स्वयं भक्षण करे और अपने परिवार वालों को बांटे।

इसके बाद पूर्ण सिद्धि के लिए किसी पात्र में समिधाएं (लकड़ियां) जला कर इसी मन्त्र की पूरी एक सौ आहुतियां दे दें तब यह प्रयोग पूर्ण माना जाता है।

भुवनेश्वरी यन्त्र के आस-पास जो लघु नारियल आदि सामग्री है, उसे एक सफेद रेशमी वस्त्र में बांध कर घर के भण्डार गृह में या जहां धनराशि आदि रखी जाती है, अथवा तिजोरी में सम्मानपूर्वक स्थापित कर दें और यन्त्र को पूजा स्थान में सफेद रेशमी वस्त्र बिछा कर स्थापित करे।

इसके बाद यदि श्रद्धा हो तो एक ब्राह्मण को या एक कुंवारी कन्या को भोजन करा दें अथवा मन्दिर में दान दक्षिणा आदि भिजवा दें।

भुवनेश्वरी मांत्रोक्त साधना रहस्य

वाणी सिद्धि कुबेर साधना एवं दुर्भाग्य नाश के लिए मांत्रोक्त भुवनेश्वरी साधना सम्पन्न की जानी आवश्यक है।

मैं आगे के पृष्ठों में गोपनीय और दुर्लभ भुवनेश्वरी साधना रहस्य को स्पष्ट कर रहा हूं, इसका मन्त्र अपने आप में अत्यन्त सरल है और कोई भी कम पढ़ा लिखा साधक भी इस साधना को सम्पन्न कर सकता है।

साधक प्रातःकाल उठ कर स्नानादि से निवृत्त हो श्वेत वस्त्र धारण कर स्वयं या अपनी पत्नी के साथ पूजा स्थान में बैठ जांय और अपने सामने **"त्रैलोक्य मोहन भुवनेश्वरी यन्त्र"** को स्थापित कर दें, यह अपने आप में दुर्लभ और अद्वितीय यन्त्र है जिसकी साधकों ने अत्यधिक प्रशंसा की है, इस यन्त्र का निर्माण जटिल है, परन्तु पत्रिका कार्यालय ने इस अवसर पर बहुत ही कम यन्त्रों का निर्माण कराया है, जिससे कि साधक ऐसा दुर्लभ यन्त्र अपने घर में स्थापित कर सकें शास्त्र में तो यन्त्र निर्माण के बारे में कहा गया है कि यह यन्त्र जटिल है, कठिन है और सौभाग्यशाली व्यक्तियों के घर में ही ऐसा यन्त्र स्थापित हो सकता है, इसके बारे में बताया है—

पद्ममष्टदलम्बाह्ये वृत्तं षोडशभिर्दलैः
विलिखेत्त्वकर्णिकामध्ये षट्कोणमतिसुन्दरम्
चतुरस्त्रश्चतुद्द्वारमेवम्मण्डलमालिखेत्

Scanned by CamScanner

उपरोक्त पंक्तियों को पढ़ कर आप अनुमान लगा सकेंगे, कि इस यन्त्र का निर्माण कितना अधिक जटिल और कठिन है, इसके साथ ही साथ भगवती भुवनेश्वरी का प्रामाणिक चित्र भी अपने पूजा स्थान में इस दिन स्थापित कर देना चाहिए।

इसके बाद यन्त्र को शुद्ध जल से धो कर पोंछें और किसी दूसरे पात्र में केसर से "ह्रीं" अक्षर लिख कर उस पर यन्त्र को स्थापित करें, यन्त्र को उस पात्र में रख कर उसके चारों कोनों पर "ह्रीं" अंकित करें और फिर साधक उसकी प्राणप्रतिष्ठा करें।

ॐ आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं हौं हंसः मम शरीरे अमुक देवतायाः प्राणाः इह प्राणाः, जीव इह स्थितः, सर्वेन्द्रियाणि इह स्थितानि, वाक्-मन-श्चक्षु: श्रोत्र-जिह्वा प्राण पाद पायूपस्थानि इहैवा-गत्य सुख चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा ।।

ऐसा करने के बाद तांत्रोक्त रूप से भुवनेश्वरी सिद्ध करने के लिए अपने आसन का शोधन करें, आसन के नीचे जो भूमि है, उस भूमि को दाहिने हाथ से छूकर यह मन्त्र पढ़ें—

ॐ पवित्र-वज्र-भूमे ! हुं फट् स्वाहा।

इसके बाद भूमि को मन्त्र सिद्ध करने के बाद भूमि पर जल अक्षत चढ़ा कर निम्न मन्त्र पढ़ते हुए उसका पूजन करें—

ॐ आधार-शक्त्यै नमः जलाक्षत-चन्दनं समर्पयामि।

आधार शक्ति अर्थात् भूमि की पूजा करने के बाद आसन का शोधन करें, इसके लिए पहले दाहिने हाथ में जल लेकर निम्न मन्त्र पढ़ता हुआ जल भूमि पर छोड़ दें—

ॐ अस्य आसन शोधन मन्त्रस्य श्री मेरु-पृष्ठ ऋषिः, सुतलं छन्दः, कूर्मोदेवता आसनोपवेशने विनियोगः ।।

विनियोग करने के बाद आसन के ऊपर दाहिना हाथ रख कर नीचे लिखा हुआ मन्त्र उच्चारण करें—

ॐ पृथ्वी ! त्वया धृता लोका, देवि ! त्वं विष्णुना धृता त्वं च धारय मां देवि ! पवित्रं कुरु आसनम् ।।

इसके बाद अपनी दाहिनी ओर चावलों की ढेरी बना कर उस पर एक सुपारी रखें और कुंकुम का तिलक करें, उसे भैरव मान कर उसके सामने गुड़ का भोग लगावें, और हाथ जोड़ कर प्रार्थना करें कि वे निरन्तर साधक की रक्षा करते हुए सभी विघ्नों का नाश करें—

ह्रीं तीक्ष्ण-दंष्ट्र ! महाकाय ! कल्पान्त दहनोपम ! भैरव नमस्तुभ्यमनुज्ञां दातुमर्हसि ।।

ऐसा करने के बाद साधक अपना रक्षा विधान निम्न प्रकार से करें—

तीन बार दोनों हाथों की हथेली से आवाज करते हुए "फट्" शब्द करें और बाएं पैर की एड़ी से तीन बार प्रहार करें इससे भूमि पर होने वाले विघ्नों का निवारण होता है।

भुवनेश्वरी मन्त्र प्रयोग

अपने सामने जो दुर्लभ भुवनेश्वरी यन्त्र रखा है और जो सामने भुवनेश्वरी चित्र स्थापित किया है, उसके सामने साधक निम्न प्रकार से विनियोग, न्यास एवं ध्यान करें—

विनियोग

ॐ अस्य श्री भुवनेश्वरी हृदय स्तोत्रस्य श्री शक्तिः ऋषिः। गायत्री छन्दः। श्री भुवनेश्वरी देवता। हं बीजं। ईं शक्तिः। रं कीलकं सकल-मनोवांछित-सिद्धयर्थ पाठे विनियोगः ।।

Scanned by CamScanner

ऋष्यादिन्यास

श्री शक्ति ऋषये नमः शिरसि ।
गायत्री छन्दसे नमः मुखे ।
श्री भुवनेश्वरी देवतायै नमः हृदि ।
हं बीजाय नमः गुह्ये ।
ईं शक्तये नमः नाभौ ।
रं कीलकाय नमः पादयोः।
सकल-मनोवांछित सिद्धयर्थे पाठे विनियोगाय नमः सर्वांगे ।

षडंग न्यास अंग न्यास कर न्यास

	अंग न्यास	कर न्यास
ह्रीं श्रीं ऐं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
,,	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
,,	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
,,	अनामिकाभ्यां हुं	कवचाय हुं
,,	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्रत्रयाय वौषट्
,,	करतल करपृष्ठाभ्यां फट	अस्त्राय फट्

इस प्रकार न्यास के बाद साधक दोनों हाथ जोड़ कर भगवती भुवनेश्वरी का ध्यान करें —

सरोजनयनां चलत् कनक कुण्डलां शैशवी,
घनुर्जप वटी करामुदित सूर्य कोटि प्रभाम् ।
शशांक कृत शेखरां शव शरीर सस्था शिवाम्,
प्रातःस्मरामि भुवनेश्वरीं शत्रु गति स्तम्भनीम् ।।

ध्यान करने के बाद साधक 'स्फटिक माला' से मन्त्र जप प्रारम्भ करे, पर मन्त्र जप से पूर्व भुवनेश्वरी महायन्त्र के सामने शुद्ध घृत का दीपक और अगरबत्ती जला लें।

इसके बाद शान्त मनोयोग पूर्वक भुवनेश्वरी बीज मन्त्र का जप करें, यह मन्त्र एक अक्षर का है और शास्त्रों के विधान के अनुसार यदि भुवनेश्वरी साधना दिवस के दिन इस मन्त्र की १०८ माला मन्त्र जप हो जाता है, तो निश्चय ही भुवनेश्वरी सिद्ध हो जाती ।
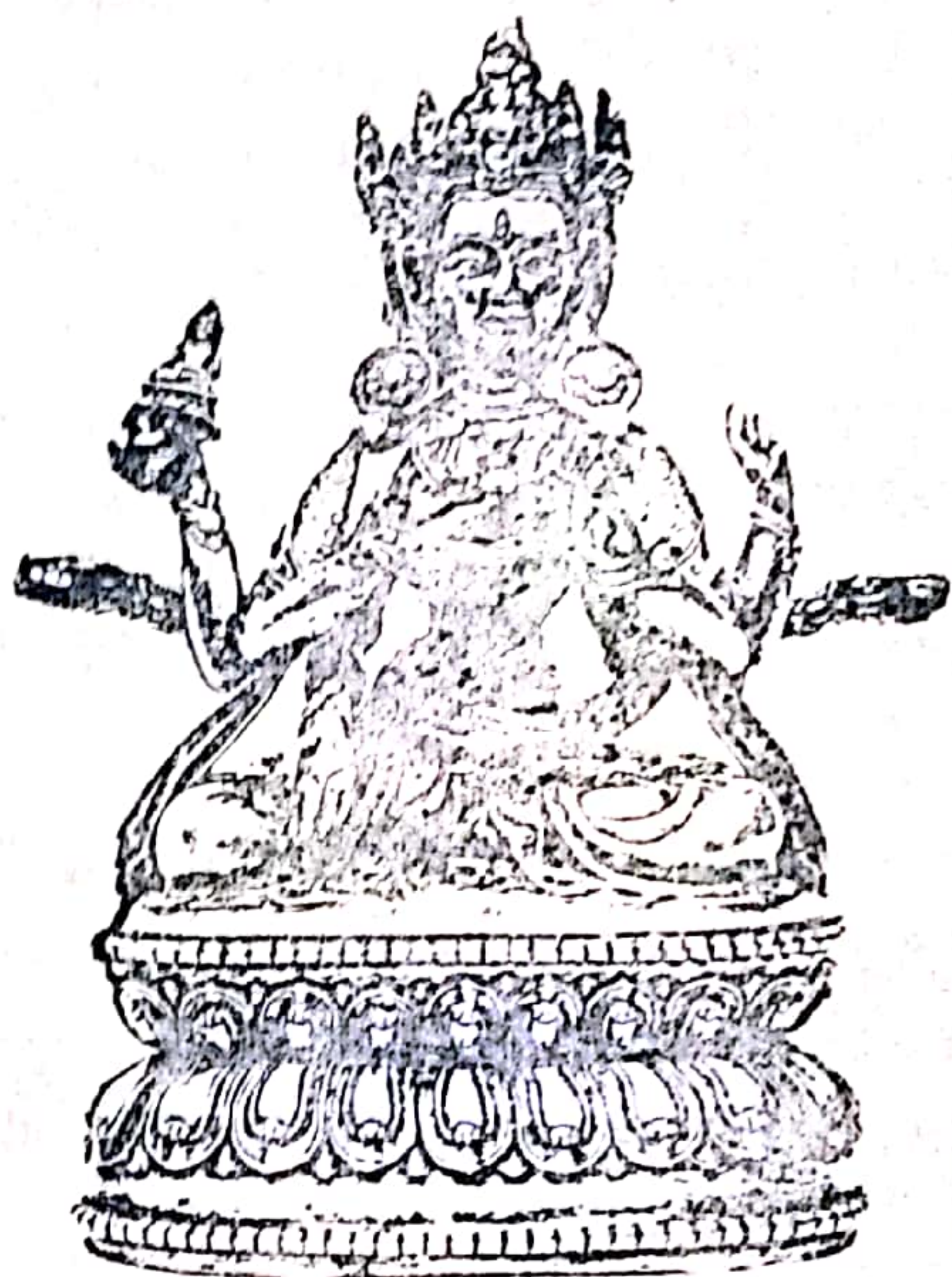
पढ़ने में १०८ माला बड़ी लगती है, एक वर्ण का मन्त्र होने के कारण इस पूरे मन्त्र जप एवं साधना मे चार या पांच घण्टे से ज्यादा समय नहीं लगता ।

भुवनेश्वरी मूल मन्त्र

"ह्रीं"

उपरोक्त मन्त्र अपने आप में सर्वश्रेष्ठ और अद्वितीय मन्त्र है, इस मन्त्र को चैतन्य करने के लिए इस मन्त्र से पहले पांच बार गुरु मन्त्र उच्चारण और बाद में भी गुरु मन्त्र उच्चारण कर लें, यह सिर्फ एक बार किया जाता है, उसके बाद मन्त्र जप प्रारम्भ कर दें ।

जब मन्त्र जप सम्पन्न हो रहा हो, और बीच में ही भगवती भुवनेश्वरी विग्रह के साक्षात् दर्शन सुलभ हो जाय, तब दोनो हाथ जोड़ कर भक्ति भाव से भगवती भुवनेश्वरी के दर्शन कर लें और प्रणाम कर आशीर्वाद प्राप्त करें, कि वह सिद्ध हो और साधक के जीवन के सारे मनोरथ पूर्ण करे । ●

Scanned by CamScanner